कुरआन मजीद

हिंदी अनुवाद

HINDI

क़ुरआन मजीद

हिंदी अनुवाद

अनुवादक

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ

GOODWORD BOOKS

This translation of the Quran is copyright free

First published by Goodword Books 2019
This edition published 2026

Goodword Books
A-21, Sector 4, NOIDA-201301, Delhi NCR, India
Mob. +91-8588822672
email: info@goodwordbooks.com
www.goodwordbooks.com

CPS International
Centre for Peace and Spirituality International
1, Nizamuddin West Market, New Delhi-110013
Mob. +91-9999944119
email: info@cpsglobal.org
www.cpsglobal.org

Center for Peace and Spirituality USA
391 Totten Pond Road
Suite 402, Waltham MA 02451, USA
Mob. +1 617 960 7156
info@cpsusa.net

विषय-सूची

सूरह	पेज नं०	सूरह	पेज नं०
परिचय	5	27. सूरह अन-नम्ल	320
1. सूरह अल-फ़ातिहा	17	28. सूरह अल-क़सस	327
2. सूरह अल-बक़रह	17	29. सूरह अल-अनकबूत	336
3. सूरह आले-इमरान	53	30. सूरह अर-रूम	342
4. सूरह अन-निसा	74	31. सूरह लुक़मान	347
5. सूरह अल-माइदह	96	32. सूरह अस-सज्दह	351
6. सूरह अल-अनआम	112	33. सूरह अल-अहज़ाब	353
7. सूरह अल-आराफ़	131	34. सूरह सबा	361
8. सूरह अल-अनफ़ाल	152	35. सूरह फ़ातिर	367
9. सूरह अत-तौबा	160	36. सूरह या०सीन०	371
10. सूरह यूनुस	175	37. सूरह अस-साफ़्फ़ात	376
11. सूरह हूद	187	38. सूरह साद	382
12. सूरह यूसुफ़	199	39. सूरह अज़-ज़ुमर	387
13. सूरह अर-रअद	210	40. सूरह अल-मोमिन	394
14. सूरह इब्राहीम	216	41. सूरह हा०मीम० अस-सज्दह	402
15. सूरह अल-हिज्र	221	42. सूरह अश-शूरा	407
16. सूरह अन-नहल	226	43. सूरह अज़-ज़ुख़रुफ़	413
17. सूरह बनी इस्राईल	238	44. सूरह अद-दुख़ान	418
18. सूरह अल-कहफ़	248	45. सूरह अल-जासियह	420
19. सूरह मरयम	259	46. सूरह अल-अहक़ाफ़	424
20. सूरह ता०हा०	265	47. सूरह मुहम्मद	428
21. सूरह अल-अंबिया	274	48. सूरह अल-फ़तह	432
22. सूरह अल-हज	282	49. सूरह अल-हुजुरात	435
23. सूरह अल-मोमिनून	291	50. सूरह क़ाफ़०	438
24. सूरह अन-नूर	297	51. सूरह अज़-ज़ारियात	440
25. सूरह अल-फ़ुरक़ान	306	52. सूरह अत-तूर	442
26. सूरह अश-शुअरा	311	53. सूरह अन-नज्म	445

54. सूरह अल-क़मर	447
55. सूरह अर-रहमान	449
56. सूरह अल-वाक़िअह	452
57. सूरह अल-ह़दीद	454
58. सूरह अल-मुजादलह	458
59. सूरह अल-हश्र	461
60. सूरह अल-मुमतहिनह	464
61. सूरह अस-सफ़्फ़	466
62. सूरह अल-जुमुअह	468
63. सूरह अल-मुनाफ़िक़ून	469
64. सूरह अत-तग़ाबुन	470
65. सूरह अत-तलाक़	472
66. सूरह अत-तहरीम	474
67. सूरह अल-मुल्क	475
68. सूरह अल-क़लम	477
69. सूरह अल-ह़ाक़्क़ह	479
70. सूरह अल-मआरिज	481
71. सूरह नूह़	483
72. सूरह अल-जिन्न	484
73. सूरह अल-मुज़्ज़म्मिल	486
74. सूरह अल-मुद्दस्सिर	487
75. सूरह अल-क़ियामह	489
76. सूरह अद-दह्र	490
77. सूरह अल-मुरसलात	492
78. सूरह अन-नबा	493
79. सूरह अन-नाज़िआत	494
80. सूरह अबस	496
81. सूरह अत-तकवीर	497
82. सूरह अल-इनफ़ितार	497
83. सूरह अल-मुतफ़्फ़िफ़ीन	498
84. सूरह अल-इनशिक़ाक़	499
85. सूरह अल-बुरूज	500
86. सूरह अत-तारिक़	501
87. सूरह अल-आला	501
88. सूरह अल-ग़ाशियह	502
89. सूरह अल-फ़ज्र	502
90. सूरह अल-बलद	503
91. सूरह अश-शम्स	504
92. सूरह अल-लैल	504
93. सूरह अज़-ज़ुहा	505
94. सूरह अश-शरह़	505
95. सूरह अत-तीन	506
96. सूरह अल-अलक़	506
97. सूरह अल-क़द्र	507
98. सूरह अल-बय्यिनह	507
99. सूरह अज़-ज़िलज़ाल	508
100. सूरह अल-आदियात	508
101. सूरह अल-क़ारिअह	508
102. सूरह अत-तकासुर	509
103. सूरह अल-अस्र	509
104. सूरह अल-हुमज़ह	509
105. सूरह अल-फ़ील	509
106. सूरह क़ुरैश	510
107. सूरह अल-माऊन	510
108. सूरह अल कौसर	510
109. सूरह अल-काफ़िरून	510
110. सूरह अन-नस्र	511
111. सूरह अल-मसद	511
112. सूरह अल-इख़लास	511
113. सूरह अल-फ़लक़	511
114. सूरह अन-नास	512

परिचय

क़ुरआन अल्लाह की किताब है। वह अपनी मूल अरबी भाषा में पूर्णतः सुरक्षित है। ऐसी एक किताब का अनुवाद कभी मूल किताब का विकल्प नहीं बन सकता। क़ुरआन के अनुवाद का उद्देश्य उसको बोधगम्य बनाना है, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि जो व्यक्ति अरबी भाषा न जानता हो, वह क़ुरआन को समझ नहीं सकता। क़ुरआन, अरबी भाषा न जानने वाले के लिए भी एक बोधगम्य किताब है। क़ुरआन प्रत्यक्षतः अरबी भाषा में है, परन्तु वास्तविकता यह है कि वह प्रकृति की भाषा में है, अर्थात वह भाषा जिसमें अल्लाह ने रचना के समय समस्त मनुष्यों से प्रत्यक्ष सम्बोधन किया था। यह सम्बोधन प्रत्येक महिला और पुरुष के अन्दर सहज रूप में सदैव विद्यमान रहता है। इसलिए क़ुरआन प्रत्येक मनुष्य के लिए एक बोधगम्य किताब है, किसी के लिए चेतन रूप से और किसी के लिए अचेतन रूप से।

इस वास्तविकता का क़ुरआन में इन शब्दों में उल्लेख हैः "यह खुली हुई आयतें हैं उन लोगों के सीनों में जिनको ज्ञान प्रदान हुआ है।" (49: 49)

इसका अर्थ यह है कि क़ुरआन जिस आसमानी वास्तविकता को चेतना की भाषा में बता रहा है, वह सहज भाषा में पहले से मनुष्य के अन्दर मौजूद है। क़ुरआन का सन्देष मनुष्य के लिए कोई अजनबी सन्देष नहीं, वह उसी ज्ञान की एक शाब्दिक अभिव्यक्ति है जिससे मनुष्य प्रकृति के स्तर पर पहले से परिचित है।

क़ुरआन में बताया गया है कि जो मनुष्य बाद के युग में पैदा हो रहे हैं, वह सब प्रारम्भिक रूप से आदम की रचना के समय ही पैदा कर दिये गये थे। उस समय अल्लाह ने उन मानव आत्माओं से प्रत्यक्ष सम्बोधन किया। इस मामले का क़ुरआन में इस तरह वर्रणन हैः

> "और जब तेरे पालनहार ने आदम की सन्तान की पीठों से उनकी सन्तान को निकाला और उनको साक्षी ठहराया था स्वंय उनके ऊपर, "क्या मैं तुम्हारा पालनहार नहीं हूँ" उन्होंने कहा हाँ, हम स्वीकार करते हैं। यह

इसलिए हुआ कि कहीं तुम क़ियामत के दिन कहने लगो कि हमको तो इस बात की ख़बर ही न थी''। (7:172)

अल्लाह और बन्दे के बीच एक और वार्त्ता का उल्लेख क़ुरआन में इस प्रकार आया हैः

''हमने अमानत (ऐच्छिक कर्म) को आसमानों और धरती और पहाड़ों के समक्ष प्रस्तुत किया तो उन्होंने उसको उठाने से मना किया और वह इससे डर गये और मनुष्य ने इसको अर्थात अमानत को उठा लिया। निस्सन्देह, वह अत्याचारी और अज्ञानी था।'' (33:72)

इन दोनों आयतों से पता चलता है कि रचना के प्रारम्भ में अल्लाह ने सभी मनुष्यों को प्रत्यक्ष रूप से सम्बोधित किया था। इस सम्बोधन में जो बात कही गयी थी, वह समस्त मनुष्यों के अवचेतन में सुरक्षित कर दी गयी। मानो अल्लाह की जिस वाणी को मनुष्य, क़ुरआन के रूप में पढ़ रहा है, इससे पहले प्रत्यक्षतः अल्लाह के सम्बोधन के अन्तर्गत वह उस वाणी को सुन चुका है और समझ चुका है। क़ुरआन, मनुष्य के लिए एक जानी हुई बात को जानना है, न कि किसी अनजानी बात को अचानक सुनना। वास्तविकता यह है कि क़ुरआन इन्सान की चेतना का प्रकटन (unfolding) है।

इस बात को सामने रखा जाये तो यह जानना कठिन नहीं कि क़ुरआन को समझने के लिए क़ुरआन का अनुवाद भी एक पर्याप्त साधन की हैसियत रखता है। जिस व्यक्ति की प्रकृत्ति जीवित हो, जिसने अपने आप को बाद की कंडीशनिंग (conditioning) से बचाया हो, वह जब क़ुरआन का अनुवाद पढ़ेगा तो उसके मन के वह खाने खुल जायेंगे जहाँ संरचना के समय किया गया अल्लाह का सम्बोधन पहले से सुरक्षित है। ''अलस्तु बिरब्बिकुम'' (क्या मैं तुम्हारा पालनहार नहीं हूँ) की प्रतीज्ञा यदि यह अल्लाह का पहला सम्बोधन है तो क़ुरआन अल्लाह का दूसरा सम्बोधन है। दोनों एक दूसरे के लिए पुष्टि की हैसियत रखते हैं। कोई व्यक्ति यदि अरबी भाषा न जानता हो, अथवा

कम जानता हो और वह मात्र क़ुरआन का अनुवाद पढ़ने की स्थिति में हो तो उसको क़ुरआन बोध के सम्बन्ध में निराशा का शिकार नहीं होना चाहिए- क़ुरआन की यह मानव धारणा वर्तमान युग में एक वैज्ञानिक तथ्य बन चुकी है। वर्तमान युग में जेनेटिक (आनुवशिंक) कोड का विज्ञान और एन्थ्रोपोलोजी (मानव विज्ञान) का अध्ययन, दोनों क़ुरआन के इस दृष्टिकोण की पूर्णतः पुष्टि करते हैं।

क़ुरआन अल्लाह की किताब

क़ुरआन अल्लाह की किताब है, जो इस्लाम के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) को प्रदान की गयी। क़ुरआन एक संकलन के रूप में नहीं उतरा है, बल्कि वह 23 वर्ष की अवधि में भिन्न भिन्न अंशों के रूप में उतारा गया। इस्लाम के पैग़म्बर मक्का में थे, जबकि 610 ई. में क़ुरआन का पहला भाग उतरा। उसके बाद निरन्तर उसके विभिन्न भाग आप पर उतरते रहे। क़ुरआन का अन्तिम भाग आप पर 632 ई. में उतरा, जबकि आप मदीने में थे। क़ुरआन का यह अवतरण फ़रिश्ता जिब्रील के माध्यम से होता था। अन्त में स्वंय फ़रिश्ता जिब्रील के निर्देशा अनुसार, क़ुरआन के विभिन्न अंशों को एक ग्रन्थ के रूप में संकलित किया गया।

क़ुरआन में कुल 114 सूरतें हैं, कुछ बड़ी सूरतें हैं और कुछ छोटी सूरतें। आयतों की संख्या कुल 6236 है। तिलावत (वाचन) की सुविधा के लिए क़ुरआन को तीस भाग और सात मंज़िल के रूप में बाँटा गया है। क़ुरआन सातवीं शताब्दी की प्रथम चौथाई में उतरा। उस समय काग़ज़ अस्तित्व में आ चुका था। यह काग़ज़ कुछ विशेष वृक्षों के रेशे से लेकर हस्त उद्योग के रूप में बनाया जाता था। उसको पपायरस (Papyrus) कहा जाता है। क़ुरआन का कोई अंश जब भी उतरता तो उसको उस काग़ज़ पर लिख लिया जाता था, जिसको अरबी भाषा में 'क़िरतास' कहा जाता है। इसी के साथ लोग क़ुरआन को अपनी स्मृति में सुरिक्षत कर लेते थे, क्योंकि उस समय क़ुरआन ही एक

मात्र इस्लामी साहित्य था। क़ुरआन को नमाज़ों में पढ़ा जाता था और इस्लाम की ओर आमन्त्रित करने के लिए उसको लोगों के समक्ष पढ़कर सुनाया जाता था। इस प्रकार क़ुरआन एक ही साथ लिखा भी जाता रहा और इसी के साथ उसको कण्ठस्थ भी किया जाता रहा।

इस्लाम के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) के अन्तिम जीवन काल तक क़ुरआन को सुरक्षित करने का यही तरीक़ा प्रचलित रहा। आपकी मृत्यु 632 ई. में हुई, इसके बाद अबू बक्र सिद्दीक (रज़ि.) इस्लाम के पहले ख़लीफ़ा बने। उन्होंने नियमित रूप से अपनी देख रेख में क़ुरआन की एक जिल्द चढ़ाई हुई संकलित प्रति बनाई। यह प्रति प्राचीन काल के काग़ज़ अथवा क़िरतास पर बनायी गयी थी। क़ुरआन की इस प्रति की जिल्द का साइज़ चौकोर था, अतः उसको रबआ (वर्ग) कहा जाता था। इस प्रकार क़ुरआन, पहले ख़लीफ़ा के युग में एक जिल्द चढ़ी हुई किताब के रूप में सुरक्षित हो गया। तीसरे ख़लीफा उस्मान बिन अफ्फान के युग में इस जिल्द वाले क़ुरआन की अतिरिक्त प्रतियाँ तैयार की गयीं और उनको विभिन्न नगरों में भेज दिया गया। यह प्रतियाँ नगर की जामा मस्जिदों में उपलब्ध रहती थीं। लोग उनको पढ़ते भी थे और उनसे अतिरिक्त प्रतियाँ तैयार करते थे।

क़ुरआन के लिखने का यह अनुक्रम 19वीं शताब्दी तक जारी रहा। 19वीं शताब्दी में प्रिंटिंग प्रेस का अविष्कार हुआ और साथ ही काग़ज़ भी आधुनिक औद्योगिक ढंग से अधिक मात्र में तैयार किया जाने लगा। इस प्रकार 19वीं शताब्दी में नियमित रूप से प्रिंटिंग प्रेस के द्वारा छपाई का आरम्भ हो गया। छपाई की विधियों में निरन्तर विकास होता रहा। इसी के साथ क़ुरआन की मुद्रित प्रतियाँ भी अधिक उत्कृष्ट रूप में तैयार होने लगीं। अब क़ुरआन की मुद्रित प्रतियाँ इतनी सामान्य हो गयी हैं कि वह प्रत्येक घर में और प्रत्येक मस्जिद में और प्रत्येक पुस्तकालय में और प्रत्येक बाजार में इस प्रकार प्रचूर संख्या में उपलब्ध हैं कि प्रत्येक मनुष्य विभिन्न भाषा में क़ुरआन की छपी हुए सुन्दर प्रतियाँ प्राप्त कर सकता है, चाहे वह पृथ्वी के किसी भी भाग में हो।

अल्लाह की सृष्टि निर्माण योजना

प्रत्येक किताब का एक विषय (subject) होता है। क़ुरआन का विषय यह है कि अल्लाह की सृश्शिट निर्माण योजना (Creation Plan of God) से मनुष्य को अवगत कराया जाये, अर्थात मनुष्य को यह बताया जाये कि अल्लाह ने यह संसार किस लिए बनाया है। मनुष्य को धरती पर बसाने का उद्देश्य क्या है। मृत्यु से पहले के जीवन काल में मनुष्य से क्या वांछित है, और मृत्यु के बाद के जीवनकाल में मनुष्य के साथ क्या घटित होने वाला है। मनुष्य एक अमर रचना है। उसकी जीवन यात्रा मृत्यु के बाद भी जारी रहती है। क़ुरआन इस सम्पूर्ण जीवन यात्रा के लिए एक मार्गदर्शक किताब की हैसियत रखता है। मनुष्य को इस वास्तविकता से अवगत करना, यही क़ुरआन का उद्देश्य है और यही क़ुरआन की वार्त्ता का विषय है।

अल्लाह ने मनुष्य को एक अमर रचना की हैसियत से पैदा किया। फिर उसके जीवन काल को दो भागों में बाँट दिया। उसका बहुत थोड़ा भाग मृत्यु से पहले के समय में रखा और उसका अधिक बड़ा भाग मृत्यु के बाद के जीवन काल में रख दिया। मृत्यु से पहले का जो काल है, वह परीक्षा काल है और मृत्यु के बाद का जो काल है वह परीक्षाफल के अनुसार, अच्छा या बुरा परिणाम पाने का काल। क़ुरआन, जीवन की इसी वास्तविकता के लिए एक परिचयात्मक पुस्तक की हैसियत रखता है।

क़ुरआन एक दृष्टि से उपकार करने वाले की ओर से पुरस्कार का अनुस्मरण है। अल्लाह ने मनुष्य को विशेष गुणों के साथ पैदा किया। फिर उसको पृथ्वी जैसे ग्रह पर बसाया, जहाँ मनुष्य के लिए प्रत्येक क़िस्म का लाईफ सपोर्ट सिस्टम (Life Support System) उपलब्ध है। क़ुरआन का उद्देश्य यह है कि मनुष्य, प्रकृति के इन पुरस्कारों से लाभान्वित होते हुए उपकार करने वाले को याद रखे। वह पुरस्कारों के रचयिता पर आस्था रखे। पुरस्कारों का उपभोग करते हुए उपकारक को मानना और उसके तगादों को पूरा करना, यही सदैव रहने वाली जन्नत का सर्टिफिकेट (certificate) है। और पुरस्कारों का उपभोग

करते हुए उपकारक को भूल जाना, मनुष्य को नरक (जहन्नम) का भागी बना देता है। क़ुरआन वास्तव में इसी सबसे बड़ी वास्तविकता का अनुस्मरण है।

आप क़ुरआन को पढ़ें तो आप उसमें बार बार इस तरह के वर्णन पायेंगे कि यह अल्लाह की उतारी हुई वाणी (Word of God) है। प्रत्यक्ष रूप से यह एक साधारण सी बात है, परन्तु जब इसको तुलनात्मक रूप से देखा जाये तो पता चलेगा कि यह अत्यन्त असाधारण बात है। संसार में बहुत सी किताबें हैं जिनके सम्बन्ध में लोगों का विश्वास है कि वह आसमानी किताबें हैं। परन्तु क़ुरआन के अतिरिक्त किसी भी पवित्र धर्म ग्रन्थ में आपको यह लिखा हुआ नहीं मिलेगा कि - यह अल्लाह की वाणी है। इस तरह का वर्णन विशेष रूप से मात्र क़ुरआन में पाया जाता है। क़ुरआन में इस तरह वर्णन का होना, उसके पाठक को एक प्रारंभिक बिन्दु (Starting Point) देता है। वह क़ुरआन का अध्ययन एक विशेष प्रकार की पुस्तक के रूप में करता है, न कि साधारण मानवीय पुस्तक के रूप में।

क़ुरआन की शैली भी एक अनोखी शैली है। साधारण मानवकृत पुस्तकों का तरीका यह है कि उसमें चीज़े एक लेखन क्रम के साथ लिखी होती हैं। उसमें A से Z तक क्रमबद्ध रूप से चीज़ों का वर्णन किया जाता है। परन्तु क़ुरआन में इस प्रकार की शैली मौजूद नहीं। साधारण मनुष्य को प्रत्यक्षतः क़ुरआन एक अक्रमबद्ध वाणी प्रतीत होती है, परन्तु वास्तविकता के अनुसार देखा जाये तो वह एक अत्यन्त व्यवस्थित और क्रमबद्ध वाणी दिखायी देगा। क़ुरआन की वाक् शैली के सम्बन्ध में यह कहना उपयुक्त होगा कि उसकी शैली एक राजसी शैली है। क़ुरआन को पढ़ते हुए ऐसा लगता है जैसे उसका लेखक एक ऐसे उच्चतम स्थान पर है जहाँ से वह सम्पूर्ण मानवता को देख रहा है, सम्पूर्ण मानवता उसका कन्सर्न (concern) है, वह अपनी महानता के स्थान से सम्पूर्ण मानवता को सम्बोधित कर रहा है। यद्यपि, इस सम्बोधन के बीच वह कभी एक समूह की ओर मुड़ जाता है और कभी दूसरे समूह की ओर।

क़ुरआन का एक विशेष पहलू यह है कि उसका पाठक किसी भी क्षण उसके लेखक से कन्सल्ट (consult) कर सकता है। क़ुरआन का लेखक अल्लाह है। वह एक जीवन्त हस्ती है। वह सम्पूर्ण मानवता को घेरे हुए है। वह किसी मध्यस्थ के बिना आदमी की बात को सुनता है और उसका उत्तर देता है। इसलिए क़ुरआन के पाठक के लिए प्रतिक्षण यह संभव है कि वह अल्लाह से सम्पर्क स्थापित कर सके। वह अल्लाह से पूछे और अल्लाह से अपने प्रश्नों का उत्तर पा ले।

जो लोग मात्र मीडिया के माध्यम से क़ुरआन को जानते हैं, वह सामान्य रूप से समझते हैं कि क़ुरआन जिहाद की किताब है और जिहाद उनके दृष्टिकोण के अनुसार, नाम है- हिंसा के माध्यम से अपने उद्देश्य को प्राप्त करने का। परन्तु यह मात्र ग़लतफ़हमी (भ्रम) है। जो व्यक्ति भी क़ुरआन को प्रत्यक्ष रूप से पढ़े, उसके लिए यह समझना मुष्किल नहीं होगा कि क़ुरआन का हिंसा से कोई सम्बन्ध नहीं। क़ुरआन पूर्ण रूप से शान्ति की पुस्तक है, वह हिंसा की पुस्तक नहीं।

जिहाद क्या है?

यह एक वास्तविकता है कि क़ुरआन की शिक्षाओं में एक शिक्षा वह है जिसको जिहाद कहा जाता है। परन्तु जिहाद शान्तिपूर्ण प्रयास का नाम है, न कि किसी तरह की हिंसात्मक कारवाई का। क़ुरआन में बताई गई जिहाद की धारणा क़ुरआन की इस आयत से ज्ञात होती हैः ‘‘और इसके (क़ुरआन) माध्यम से तुम उनके साथ बड़ा जिहाद करो।’’ (25:52)

क़ुरआन की इस आयत में, क़ुरआन के माध्यम से जिहाद करने की शिक्षा दी गयी है। स्पष्ट है कि क़ुरआन कोई हथियार नहीं, क़ुरआन एक वैचारिक पुस्तक है। क़ुरआन, अल्लाह की आडियॉलोजी (विचारधारा) का परिचय है। इससे क़ुरआन में बताई गई जिहाद की धारणा स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। क़ुरआन के अनुसार, जिहाद वास्तव में शान्तिपूर्ण वैचारिक संघर्ष (peaceful

ideological struggle) का नाम है। इस वैचारिक संघर्ष का लक्ष्य क़ुरआन में यह बताया गया है कि क़ुरआन का शान्तिपूर्ण संदेश लोगों के दिलों में उतर जाये। (4:63)

इस आयत के अनुसार, क़ुरआन का वांछित कथन वह है जो क़ौल-ए बलीग़ (बोधगम्य कथन) हो, अर्थात ऐसी वाणी जो लोगों के मन को सम्बोधित करे, जो लोगों को सन्तुष्ट करने वाली हो, जिसके माध्यम से लोगों को क़ुरआन की सच्चाई पर विश्वास पैदा हो, जिसके माध्यम से लोगों के अन्दर वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न हो जाये। यह क़ुरआन का मिशन है। और इस प्रकार का वैचारिक मिशन मात्र तर्कों के माध्यम से पूरा किया जा सकता है। हिंसा अथवा किसी भी सशस्त्र कारवाई के माध्यम से इस लक्ष्य को पाना संभव नहीं।

यह सही है कि क़ुरआन में कुछ ऐसी आयतें हैं जो क़िताल (युद्ध) की अनुमति देती हैं, परन्तु यह आयतें मात्र युद्ध स्थिति के लिए हैं, वह मात्र आक्रमण के समय बचाव के अर्थ में हैं। रक्षात्मक युद्ध के अतिरिक्त, कोई युद्ध इस्लाम में वैध नहीं। यह रक्षात्मक युद्ध भी मात्र एक स्थापित राज्य (established state) कर सकता है। राज्य के अतिरिक्त किसी भी व्यक्ति, अथवा संगठन को जिहाद छेड़ने की अनुमति नहीं। देखिए 2:190, 3:28, 9:5, 9:12-13-14, 9:29, 9:123, 47:4, 48:29। निम्न लिखित सूरतों में जो जंग की बात है, या सख्त रहने कि बात है, वह सब केवल जंग के वक्त के लिए है।

क़ुरआन को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण बात यह है कि क़ुरआन कोई क़ानूनी किताब नहीं है, क़ुरआन एक दावती (आहवाहक) किताब है। क़ुरआन की वाक् शैली क़ानूनी नहीं है, बल्कि आहवाहक है। क़ानून की भाषा निर्धारण करने वाली भाषा होती है। क़ानूनी लेख में चीज़ें शाब्दिक रूप से वांछित होती हैं, जबकि आहवाहक लेखन का मामला ऐसा नहीं। आहवाहक लेख में उसके अर्थ पर विशेष ध्यान दिया जाता है। आहवाहक किताब में शब्दों की हैसियत मात्र एक माध्यम की हो जाती है, जबकि क़ानूनी किताब में शब्द स्वंय अपने आप में वांछित बन जाते हैं।

इसका एक पहलू यह है कि दावती लेख में विशेष बल देकर उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए तीव्रता की शैली को अपनाया जाता है। आहवाहक लेख में ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है जो प्रत्यक्षतः अत्यन्त कठोर प्रतीत होते हैं, परन्तु आहवाहक वाणी में यह कठोरता विवेक पर आधारित होती है। ऐसी किसी वाणी में कठोरता को देखकर उसको क़ानूनी कठोरता के अर्थ में लेना, पूर्णतः नासमझी की बात होगी। इसी तत्वदर्शिता का यह परिणाम है कि आहवाहक भाषा में अधिकतर ऐसा होता है कि उसमें एक ऐसी बात कही जाती है जो क़ानूनी शैली के अनुसार अत्यन्त कठोर प्रतीत होती है, परन्तु आहवाहक शैली के अनुसार वह मात्र झिंझोड़ने के लिए होती है, वह मात्र इसलिए होती है कि मनुष्य की प्रकृति को जगाया जाये, उसके अन्दर छिपे हुए भावों को गतिमान किया जाये। एक उदाहरण से इसका स्पष्टीकरण होता है।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) के जीवन काल में बद्र (2 हिजरी) का युद्ध हुआ। यह युद्ध आक्रमण के समय आपने बचाव के लिए लड़ा था। इस युद्ध में आपको विजय प्राप्त हुई। युद्ध के बाद आपने विरोधियों के 70 व्यक्तियों को गिरफ़्तार कर लिया। इसके बाद यह लोग युद्ध बंदी की हैसियत से मदीना लाये गये। इस घटना पर क़ुरआन में यह आयत अवतरित हुईः "किसी पैग़म्बर के लिए उपयुक्त नहीं कि उसके पास क़ैदी हों, जब तक वह धरती में अच्छी तरह रक्तपात न कर ले।" (8:67)

इस आयत के शब्दों को यदि क़ानूनी अर्थ में लिया जाये तो इसका अर्थ यह होगा कि युद्ध बंदियों की आवश्यक रूप से हत्या की जानी चाहिए। जैसा कि ज्ञात है, यह युद्ध बंदी क़ुरआन के अवतरण के समय पूर्णतः मुहम्मद (सल्ल.) के नियंत्रण में थे। ऐसी स्थिति में यह आयत यदि क़ानून की भाषा में होती तो उसमें इस तरह के शब्द होने चाहिए थे कि जिन 70 व्यक्तियों को तुम युद्ध के मैदान से गिरफ़्तार करके मदीना लाये हो, वह सब के सब अपने अपराध के कारण गर्दन उड़ा देने योग्य हैं, इसलिए तुरन्त इनकी हत्या करके इन्हें समाप्त कर दो। परन्तु न क़ुरआन में ऐसी आयत उतरी और न रसूल

(सल्ल.) ने इस आयत को क़ानूनी आयत समझकर उस पर शाब्दिक रूप से अमल किया।

यह घटना स्पष्ट रूप से बताती है कि यह आयत अपने प्रकट अर्थों के अनुसार वांछित न थी, बल्कि वह अपनी वास्तविकता के अनुसार वांछित थी, यह भाषा की कठोरता का मामला था जो इसलिए था कि युद्ध बंदियों के अन्दर अपने सुधार की भावना उत्पन्न हो। दूसरे शब्दों में यह कि क़ुरआन की उपर्युक्त आयत में जो बात थी, वह कोई क़ानूनी आदेश न था बल्कि वह मात्र हैमरिंग की भाषा (language of hammering) थी। इस आयत का अर्थ अपराधियों का सुधार था, न कि अपराधियों की हत्या। अतः उन क़ैदियों में से अधिकतर लोग बाद में इस्लाम में प्रविष्ट हो गये। उदाहरण के रूप में सुहैल बिन अम्र आदि।

करने का काम

जो लोग क़ुरआन के माध्यम से सच्चाई की खोज करें, उनको क़ुरआन काम करने का दो सूत्रीय कार्यक्रम देता है। अपने जीवन में अल्लाह के मार्गदर्शन का पूर्ण रूप से आज्ञापालन, और दूसरे मनुष्यों को इस आसमानी मार्गदर्शन से अवगत कराना। आसमानी मार्गदर्शन के आज्ञापालन का प्रारम्भ, बोध अथवा आसमानी वास्तविकता की खोज से होता है। एक व्यक्ति जब क़ुरआन के माध्यम से सच्चाई की खोज करता है तो उसके अन्दर एक मानसिक क्रान्ति पैदा होती है। उसकी सोच बदल जाती है। उसके चाहने और न चाहने के मानक बदल जाते हैं। उसका जीवन अन्दर से बाहर तक एक नये दिव्य नक़्शे में ढल जाता है।

अल्लाह के बोध की यह अभिव्यक्ति जिन रूपों में होती है, उसको ज़िक्र (गुणगान) और इबादत (उपासना) और उत्तम व्यवहार और ईश परायण जीवन जैसे शब्दों में प्रस्तुत किया गया है। सच्चाई की खोज कोई मेकेनिकल खोज नहीं है। सच्चाई की खोज जीवन की वास्तविक्ता की खोज है, और जिस व्यक्ति

को जीवन की वास्तविकता का बोध हो जाये, वह स्वंय अपनी प्रकृति के बल पर एक नया मनुष्य बन जाता है। सच्चाई की खोज किसी मनुष्य के लिए एक जन्म के बाद दूसरा जन्म लेना है। यह नया जन्म एक ऐसे विकासशील वृक्ष जैसा है जो सदैव बढ़ता रहे, जिसके विकास की यात्रा कभी समाप्त न हो।

क़ुरआन के माध्यम से जो लोग सच्चाई की खोज करें, उनके व्यवहारिक कार्यक्रम का दूसरा भाग वह है जिसको क़ुरआन में अल्लाह की ओर आवाहन कहा गया है, अर्थात आसमानी सच्चाई से दूसरों को अवगत कराना। यह आवाहन प्रक्रिया एक अत्यन्त गम्भीर प्रक्रिया है। यह पूर्ण डेडीकेशन (dedication) चाहता है। इसी पहलू से इसको जिहाद भी कहा गया है।

क़ुरआन के अनुसार, जिहाद पूर्ण रूप से एक अराजनैतिक (non political) प्रक्रिया है। आहवाहक जिहाद का लक्ष्य मनुष्य के दिल को और उसके मन को बदलना है। और दिल व मन में परिवर्तन मात्र शान्तिपूर्ण प्रचार के माध्यम से होता है, न कि किसी तरह के बलात् अथवा हिंसात्मक कार्य के माध्यम से।

क़ुरआन का वांछित मनुष्य दिव्य मनुष्य (3:79) है, अर्थात वह मनुष्य जो इस संसार में ख़ुदा वाला मनुष्य बने, जो पालनहार की ओर एकाग्र रहकर जीवन व्यतीत करे। पालनहार का पसन्दीदा मनुष्य बनने की इसी प्रक्रिया को क़ुरआन में तज़्कियः (शुद्धिकरण) (2:129) कहा गया है। क़ुरआन के अनुसार, जन्नत उन्हीं व्यक्तियों के लिए है जो इस संसार में अपना शुद्धिकरण करें, जो मुज़क्का (शुद्ध) मनुष्य बनकर अगले जीवन में प्रवेश हों। (ता.हा.: 76)

तज़्कियः का अर्थ हैः शुद्धिकरण (purification), अर्थात अपने व्यक्तित्व को अवांछित चीज़ों से बचाना। व्यक्तित्व को पवित्र करने की यह प्रक्रिया एक सतत् प्रक्रिया है, वह कभी समाप्त नहीं होती। क़ुरआन के मानने वाले (आस्थावान) के अन्दर यह प्रक्रिया उसके जीवन के अन्तिम क्षण तक जारी रहती है।

वास्तविक्ता यह है कि प्रत्येक मनुष्य अपने जन्म के अनुसार, मूल प्रकृति पर पैदा होता है। जन्म के अनुसार, प्रत्येक मनुष्य मिस्टर नेचर (Mr. Nature)

होता है, परन्तु जीवन में प्रतिदिन ऐसे अनुभव सामने आते हैं जो उसके प्राकृतिक व्यक्तित्व पर नकारात्मक धब्बे डालते रहते हैं, क्रोध और द्वेष और ईर्ष्या और लालच और भेदभाव और घमण्ड और अस्वीकारोक्ति और बदले की भावना, यह सब वही नकारात्मक धब्बे हैं, जो मनुष्य के प्राकृतिक व्यक्तित्व को दूषित करते रहते हैं। ऐसी स्थिति में प्रत्येक स्त्री और पुरुष को यह करना है कि वह आत्मनिरीक्षण (introspection) के माध्यम से अपना शुद्धिकरण करता रहे, वह अपने मन में पाये जाने वाले दूषित व्यक्तित्व को प्राकृतिक व्यक्तित्व बनाता रहे। प्रत्येक व्यक्ति का वातावरण उसको एक कंडीशन्ड (conditioned) मनुष्य बना देता है। अब प्रत्येक व्यक्ति को यह करना है वह डी-कंडीशनिंग (de-conditioning) के माध्यम से अपने आप को पुनः मिस्टर नेचर बनाये। इसी मिस्टर नेचर का क़ुरआनी नाम दिव्य व्यक्तित्व अथवा अल्लाह का पसन्दीदा इन्सान है।

वहीदुद्दीन खाँ

www.mwkhan.com

सूरह-1. अल-फ़ातिहा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहमवाला है।

सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो सारे जहान का मालिक है। बहुत महरबान, निहायत रहम वाला है। इंसाफ़ के दिन का मालिक है। हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद चाहते हैं। हमें सीधा रास्ता दिखा। उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने फ़ज़्ल किया। उनका रास्ता नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ और न उन लोगों का रास्ता जो रास्ते से भटक गए। (1-7)

सूरह-2. अल-बक़रह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।

अलिफ़० लाम० मीम०। यह अल्लाह की किताब है। इसमें कोई शक नहीं। राह दिखाती है डर रखने वालों को। जो यक़ीन करते हैं बिन देखे और नमाज़ क़ायम करते हैं। और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। और जो ईमान लाते हैं उस पर जो तुम्हारे ऊपर उतरा और जो तुमसे पहले उतारा गया। और वे आख़िरत (परलोक) पर यक़ीन रखते हैं। इन्हीं लोगों ने अपने रब की राह पाई है और वही कामयाबी को पहुँचने वाले हैं। (1-5)

जिन लोगों ने इंकार किया, उनके लिए समान है डराओ या न डराओ, वे मानने वाले नहीं हैं। अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर मुहर लगा दी है। और उनकी आँखों पर पर्दा है। और उनके लिए बड़ा अज़ाब है। (6-7)

और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर, हालाँकि वे ईमान वाले नहीं हैं। वे अल्लाह को और मोमिनों को धोखा देना चाहते हैं। मगर वे सिर्फ़ अपने आपको धोखा दे रहे हैं और वे इसका शुऊर नहीं रखते। उनके दिलों में रोग है तो अल्लाह ने उनके रोग को बढ़ा दिया और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। इस वजह से कि वे झूठ कहते थे। और जब उनसे कहा जाता है कि धरती पर फ़साद (उपद्रव, बिगाड़) न करो तो वे जवाब देते हैं हम तो सुधार करने वाले है।

जान लो, यही लोग फ़साद करने वाले हैं, मगर वे नहीं समझते। और जब उनसे कहा जाता है तुम भी उसी तरह ईमान ले आओ जिस तरह अन्य लोग ईमान लाए हैं तो कहते हैं कि क्या हम उस तरह ईमान लाएँ जिस तरह मूर्ख लोग ईमान लाए हैं। जान लो, कि मूर्ख यही लोग हैं, मगर वे नहीं जानते। और जब वे ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हैं, और जब अपने शैतानों की बैठक में पहुँचते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो उनसे महज़ हंसी करते हैं। अल्लाह उनसे हंसी कर रहा है और उन्हें उनकी सरकशी में ढील दे रहा है। वे भटकते फिर रहे हैं। ये वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत (मार्गदर्शन) के बदले गुमराही ख़रीदी तो उनकी तिजारत फ़ायदेमंद नहीं हुई, और वे न हुए राह (सन्मार्ग) पाने वाले। (8-16)

उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक शख़्स ने आग जलाई। जब आग ने उसके इर्द-गिर्द को रोशन कर दिया तो अल्लाह ने उनकी आँख की रोशनी छीन ली और उन्हें अंधेरे में छोड़ दिया कि उन्हें कुछ दिखाई नहीं पड़ता। वे बहरे हैं, गूँगे हैं, अंधे हैं। अब ये लौटने वाले नहीं हैं। या उनकी मिसाल ऐसी है जैसे आसमान से बारिश हो रही हो, उसमें अंधकार भी हो और गरज-चमक भी। वे कड़क से डर कर मौत से बचने के लिए अपनी उंगलियाँ अपने कानों में ठूंस रहे हों। हालाँकि अल्लाह इंकार करने वालों को अपने घेरे में लिए हुए है। क़रीब है कि बिजली उनकी निगाहों को उचक ले। जब भी उन पर बिजली चमकती है उसमें वे चल पड़ते हैं और जब उन पर अंधेरा छा जाता है तो वे रुक जाते हैं। और अगर अल्लाह चाहे तो उनके कान और उनकी आंखों को छीन ले। अल्लाह यक़ीनन हर चीज़ पर क़ादिर है। (17-20)

ऐ लोगो! अपने रब की इबादत करो जिसने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को भी जो तुम से पहले गुज़र चुके हैं ताकि तुम दोज़ख़ (नरक) से बच जाओ। वह ज़ात जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिए बिछौना बनाया और आसमान को छत बनाया, और उतारा आसमान से पानी और उससे पैदा किए फल तुम्हारी ग़िज़ा के लिए। पस तुम किसी को अल्लाह के बराबर न ठहराओ, हालाँकि तुम जानते हो। अगर तुम इस कलाम के संबंध में शक में हो जो

हमने अपने बंदे के ऊपर उतारा है तो लाओ इस जैसी एक सूरह और बुला लो अपने हिमायतियों को भी अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर तुम यह न कर सको और हरगिज़ न कर सकोगे तो डरो उस आग से जिसका ईंधन बनेंगे आदमी और पत्थर। वह तैयार की गई है हक़ (सत्य) का इंकार करने वालों के लिए। और ख़ुशख़बरी दे दो उन लोगों को जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक काम किए, इस बात की कि उनके लिए ऐसे बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। जब भी उन्हें इन बाग़ों में से कोई फल खाने को मिलेगा, तो वे कहेंगे : यह वही है जो इससे पहले हमें दिया गया था। और मिलेगा उन्हें एक-दूसरे से मिलता-जुलता। और उनके लिए वहां साफ़-सुथरी औरतें होंगी। और वे इसमें हमेशा रहेंगे। (21-25)

अल्लाह इससे नहीं शर्माता कि बयान करे मिसाल मच्छर की या इससे भी किसी छोटी चीज़ की। फिर जो ईमान वाले हैं वे जानते हैं कि वह हक़ (सत्य) है उनके रब की जानिब से। और जो इंकार करने वाले हैं वे कहते हैं कि इस मिसाल को बयान करके अल्लाह ने क्या चाहा है। अल्लाह इसके ज़रिए बहुतों को गुमराह करता है और बहुतों को इससे राह (सन्मार्ग) दिखाता है। और वह गुमराह करता है उन लोगों को जो नाफ़रमानी (अवज्ञा) करने वाले हैं। जो अल्लाह के अहद (वचन) को उसके बांधने के बाद तोड़ते हैं और उस चीज़ को तोड़ते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं। यही लोग हैं नुक़सान उठाने वाले। तुम किस तरह अल्लाह का इंकार करते हो, हालाँकि तुम बेजान थे तो उसने तुम्हें ज़िंदगी अता की। फिर वह तुम्हें मौत देगा। फिर ज़िंदा करेगा। फिर उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे। वही है जिसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा किया जो ज़मीन में है। फिर आसमान की तरफ़ तवज्जोह की और सात आसमान दुरुस्त किए। और वह हर चीज़ को जानने वाला है। (26-29)

और जब तेरे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में एक ख़लीफ़ा बनाने वाला हूं। फ़रिश्तों ने कहा : क्या तू ज़मीन में ऐसे लोगों को बसाएगा जो इसमें फ़साद करें और ख़ून बहाएं। और हम तेरी हम्द (स्तुति, गुणगान)

करते हैं और तेरी पाकी बयान करते हैं। अल्लाह ने कहा मैं जानता हूं जो तुम नहीं जानते, और अल्लाह ने सिखा दिए आदम को सारे नाम, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने पेश किया और कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इन लोगों के नाम बताओ। फ़रिश्तों ने कहा कि तू पाक है। हम तो वही जानते हैं जो तूने हमें बताया। बेशक तू ही इल्म वाला और हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। अल्लाह ने कहा ऐ आदम उन्हें बताओ उन लोगों के नाम। तो जब आदम ने बताए उन्हें उन लोगों के नाम तो अल्लाह ने कहा : क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि आसमानों और ज़मीन के भेद को मैं ही जानता हूं। और मुझे मालूम है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (30-33)

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया, मगर इब्लीस ने नहीं किया। उसने इंकार किया और घमंड किया और मुंकिरों में से हो गया। और हमने कहा ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी दोनों जन्नत में रहो और उसमें से खाओ खुले रूप में जहां से चाहो। और उस दरख़्त (वृक्ष) के नज़दीक मत जाना वरना तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे। फिर शैतान ने उस दरख़्त के ज़रिए दोनों को लग़ज़िश (ग़लती) में मुब्तिला कर दिया और उन्हें उस ऐश से निकलवा दिया जिसमें वे थे। और हमने कहा तुम सब उतरो यहां से। तुम एक-दूसरे के दुश्मन होगे। और तुम्हारे लिए ज़मीन में ठहरना और काम चलाना है एक मुद्दत तक। फिर आदम ने सीख लिए अपने रब से कुछ बोल तो अल्लाह उस पर मुतवज्जह हुआ। बेशक वह तौबा क़ुबूल करने वाला और रहम करने वाला है। हमने कहा तुम सब यहां से उतरो। फिर जब आए तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से कोई हिदायत तो जो मेरी हिदायत की पैरवी करेंगे उनके लिए न कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे। और जो लोग इंकार करेंगे और हमारी निशानियों को झुठलाएंगे तो वही लोग दोज़ख़ (नरक) वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। (34-39)

ऐ बनी इस्राईल! याद करो मेरे उस एहसान को जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया। और मेरे अहद (वचन) को पूरा करो, मैं तुम्हारे अहद को पूरा करूंगा। और मेरा ही डर रखो। और ईमान लाओ उस चीज़ पर जो मैंने उतारी है।

तस्दीक़ (पुष्टि) करती हुई उस चीज़ की जो तुम्हारे पास है। और तुम सबसे पहले इसका इंकार करने वाले न बनो। और न लो मेरी आयतों पर मोल थोड़ा। और मुझ से डरो। और सही में ग़लत को न मिलाओ और सच को न छुपाओ हालाँकि तुम जानते हो। और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और झुकने वालों के साथ झुक जाओ। तुम लोगों से नेक काम करने को कहते हो और अपने आपको भूल जाते हो। हालाँकि तुम किताब की तिलावत करते हो, क्या तुम समझते नहीं। और मदद चाहो सब्र और नमाज़ से, और बेशक वह भारी है मगर उन लोगों पर नहीं जो डरने वाले हैं। जो गुमान रखते हैं कि उन्हें अपने रब से मिलना है और वे उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं। (40-46)

ऐ बनी इस्राईल मेरे उस एहसान को याद करो जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया और इस बात को कि मैंने तुम्हें दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत दी। और डरो उस दिन से कि कोई जान किसी दूसरी जान के कुछ काम न आएगी। न उसकी तरफ़ से कोई सिफ़ारिश क़ुबूल होगी। और न उससे बदले में कुछ लिया जाएगा और न उनकी कोई मदद की जाएगी। और जब हमने तुम्हें फ़िरऔन के लोगों से छुड़ाया। वे तुम्हें बड़ी तकलीफ़ देते थे। तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी औरतों को जीवित रखते। और इसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से भारी आज़माइश थी। और जब हमने दरिया को फाड़कर तुम्हें पार कराया। फिर बचाया तुम्हें और डुबा दिया फ़िरऔन के लोगों को और तुम देखते रहे। और जब हमने मूसा से वादा किया चालीस रात का। फिर तुमने इसके बाद बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया और तुम ज़ालिम थे। फिर हमने इसके बाद तुम्हें माफ़ कर दिया ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो। और जब हमने मूसा को किताब दी और फ़ैसला करने वाली चीज़ ताकि तुम राह पाओ। और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम! तुमने बछड़े को माबूद बनाकर अपनी जानों पर ज़ुल्म किया है। अब अपने पैदा करने वाले की तरफ़ मुतवज्जह हो और अपने मुजरिमों को अपने हाथों से क़त्ल करो। यह तुम्हारे लिए तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक बेहतर है। तो अल्लाह ने तुम्हारी

तौबा क़ुबूल फ़रमाई। बेशक वही तौबा क़ुबूल करने वाला, रहम करने वाला है। और जब तुमने कहा कि ऐ मूसा हम तुम्हारा यक़ीन नहीं करेंगे जब तक हम अल्लाह को सामने न देख लें तो तुम्हें बिजली ने पकड़ लिया और तुम देख रहे थे। फिर हमने तुम्हारी मौत के बाद तुम्हें उठाया ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो। और हमने तुम्हारे ऊपर बदलियों का साया किया और तुम पर मन्न व सलवा उतारा। खाओ सुथरी चीज़ों में से जो हमने तुम्हें दी हैं और उन्होंने हमारा कुछ नुक़सान नहीं किया, वे अपना ही नुक़सान करते रहे। (47-57)

और जब हमने कहा कि दाख़िल हो जाओ इस शहर में और खाओ उसमें से जहां से चाहो खुले रूप में और दाख़िल हो दरवाज़े में सिर झुकाए हुए और कहो कि ऐ रब! हमारी ख़ताओं को बख़्श दे। हम तुम्हारी ख़ताओं को बख़्श देंगे और नेकी करने वालों को ज़्यादा भी देंगे। तो उन्होंने बदल दिया उस बात को जो उनसे कही गई थी दूसरी बात से। इस पर हमने उन लोगों के ऊपर जिन्होंने ज़ुल्म किया, उनकी नाफ़रमानी के सबब से आसमान से अज़ाब (प्रकोप) उतारा। और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी मांगा तो हमने कहा अपना असा (डंडा) पत्थर पर मारो तो उससे फूट निकले बारह चश्मे (जलस्रोत)। हर गिरोह ने अपना-अपना घाट पहचान लिया। खाओ और पियो अल्लाह के रिज़्क़ से और न फिरो ज़मीन में फ़साद मचाने वाले बन कर। और जब तुमने कहा ऐ मूसा हम एक ही क़िस्म के खाने पर हरगिज़ सब्र नहीं कर सकते। अपने रब को हमारे लिए पुकारो कि वह निकाले हमारे लिए जो उगता है ज़मीन से साग, ककड़ी, गेहूं, मसूर, प्याज़। मूसा ने कहा कि क्या तुम एक बेहतर चीज़ के बदले एक अदना (तुच्छ) चीज़ लेना चाहते हो। किसी शहर में उतरो तो तुम्हें मिलेगी वह चीज़ जो तुम मांगते हो। और डाल दी गई उन पर ज़िल्लत और मोहताजी और वे अल्लाह के ग़ज़ब के मुस्तहिक़ हो गए। यह इस वजह से हुआ कि वे अल्लाह की निशानियों का इंकार करते थे और नबियों को नाहक़ क़त्ल करते थे। यह इस वजह से कि उन्होंने नाफ़रमानी की और वे हद पर न रहते थे। (58-61)

यूं है कि जो लोग मुसलमान हुए और जो लोग यहूदी हुए और नसारा

(ईसाई) और साबी, इनमें से जो शख़्स ईमान लाया अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और उसने नेक काम किया तो उसके लिए उसके रब के पास अज्र (प्रतिफल) है। और उनके लिए न कोई डर है और न वे ग़मगीन होंगे। (62)

और जब हमने तुमसे तुम्हारा अहद (वचन) लिया और तूर पहाड़ को तुम्हारे ऊपर उठाया। पकड़ो उस चीज़ को जो हमने तुम्हें दी है मज़बूती के साथ, और जो कुछ इसमें है उसे याद रखो ताकि तुम बचो। इसके बाद तुम इससे फिर गए। अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो ज़रूर तुम हलाक हो जाते। और उन लोगों का हाल तुम जानते हो जो सब्त (सनीचर) के मामले में अल्लाह के हुक्म से निकल गए तो हमने उनको कहा कि तुम लोग ज़लील बंदर बन जाओ। फिर हमने इसे इबरत बना दिया उन लोगों के लिए जो उसके रूबरू थे और उन लोगों के लिए जो इसके बाद आए। और इसमें हमने नसीहत रख दी डर वालों के लिए। (63-66)

और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि तुम एक गाय ज़बह करो। उन्होंने कहा : क्या तुम हमसे हंसी कर रहे हो। मूसा ने कहा कि मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं कि मैं ऐसा नादान बनूं। उन्होंने कहा, अपने रब से दरख़्वास्त करो कि वह हमसे बयान करे कि वह गाय कैसी हो। मूसा ने कहा, अल्लाह फ़रमाता है कि वह गाय न बूढ़ी हो न बच्चा, उनके बीच की हो। अब कर डालो जो हुक्म तुमको मिला है। उन्होंने कहा, अपने रब से दरख़्वास्त करो, वह बयान करे कि उसका रंग कैसा हो। मूसा ने कहा, अल्लाह फ़रमाता है वह सुनहरे रंग की हो, देखने वालों को अच्छी मालूम होती हो। उन्होंने कहा, अपने रब से दरख़्वास्त करो कि वह हमसे बयान कर दे कि वह कैसी हो। क्योंकि गाय में हमें शुबह पड़ गया है और अल्लाह ने चाहा तो हम राह पा लेंगे। मूसा ने कहा अल्लाह फ़रमाता है कि वह ऐसी गाय हो कि मेहनत करने वाली न हो, ज़मीन को जोतने वाली और खेतों को पानी देने वाली न हो। वह सालिम हो, उसमें कोई दाग़ न हो। उन्होंने कहा : अब तुम स्पष्ट बात लाए। फिर उन्होंने उसे ज़बह किया। और वे ज़बह करते नज़र न आते थे। और जब तुमने एक शख़्स को मार डाला

फिर एक-दूसरे पर इसका इल्ज़ाम डालने लगे। हालाँकि अल्लाह को ज़ाहिर करना मंज़ूर था जो कुछ तुम छुपाना चाहते थे। पस हमने हुक्म दिया कि मारो उस मुर्दे को इस गाय का एक टुकड़ा। इस तरह ज़िंदा करता है अल्लाह मुर्दों को। और वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है ताकि तुम समझो। (67-73)

फिर इसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए। पस वे पत्थर की तरह हो गए या इससे भी ज़्यादा सख़्त। पत्थरों में कुछ ऐसे भी होते हैं जिनसे नहरें फूट निकलती हैं। कुछ पत्थर फट जाते हैं और उनसे पानी निकल आता है। और कुछ पत्थर ऐसे भी होते हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं। और अल्लाह इससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (74)

क्या तुम यह उम्मीद रखते हो कि ये यहूद तुम्हारे कहने से ईमान ले आएंगे। हालाँकि इनमें से कुछ लोग ऐसे हैं कि वे अल्लाह का कलाम सुनते थे और फिर उसे बदल डालते थे समझने के बाद, और वे जानते हैं। जब वे ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हुए हैं। और जब आपस में एक-दूसरे से मिलते हैं तो कहते हैं: क्या तुम उन्हें वे बातें बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोली हैं कि वे तुम्हारे रब के पास तुमसे हुज्जत करें। क्या तुम समझते नहीं। क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह को मालूम है जो वे छुपाते हैं और जो वे ज़ाहिर करते हैं। (75-77)

और उनमें अनपढ़ हैं जो नहीं जानते किताब को मगर आरज़ुएं। इनके पास गुमान के सिवा और कुछ नहीं। पस ख़राबी है उन लोगों के लिए जो अपने हाथ से किताब लिखते हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की जानिब से है। ताकि इसके ज़रिए थोड़ी-सी पूंजी हासिल कर लें। पस ख़राबी है उस चीज़ की बदौलत जो उनके हाथों ने लिखी। और उनके लिए ख़राबी है अपनी इस कमाई से। और वे कहते हैं हमें दोज़ख़ की आग नहीं छुएगी मगर गिनती के कुछ दिन। कहो क्या तुमने अल्लाह के पास से कोई अहद (वचन) ले लिया है कि अल्लाह अपने अहद के ख़िलाफ़ नहीं करेगा। या अल्लाह के ऊपर ऐसी बात कहते हो जो तुम नहीं जानते। हां जिसने कोई बुराई की और

उसके गुनाह ने उसे अपने घेरे में ले लिया। तो वही लोग दोज़ख़ वाले हैं वे इसमें हमेशा रहेंगे। और जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए, वे जन्नत वाले लोग हैं, वे इसमें हमेशा रहेंगे। (78-82)

और जब हमने बनी इस्राईल से अहद (वचन) लिया कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत नहीं करोगे और नेक सुलूक करोगे मां-बाप के साथ, रिश्तेदारों के साथ, यतीमों और मिस्कीनों के साथ। और यह कि लोगों से अच्छी बात कहो। और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो। फिर तुम इससे फिर गए सिवा थोड़े लोगों के। और तुम इक़रार करके इससे हट जाने वाले लोग हो। (83)

और जब हमने तुमसे यह अहद (वचन) लिया कि तुम अपनों का ख़ून न बहाओगे। और अपने लोगों को अपनी बस्तियों से नहीं निकालोगे। फिर तुमने इक़रार किया और तुम इसके गवाह हो। फिर तुम ही वे हो कि अपनों को क़त्ल करते हो और अपने ही एक गिरोह को उनकी बस्तियों से निकालते हो। इनके मुक़ाबले में इनके दुश्मनों की मदद करते हो गुनाह और ज़ुल्म के साथ। फिर अगर वे तुम्हारे पास क़ैद होकर आते हैं तो तुम फ़िदया (अर्थदण्ड) देकर उन्हें छुड़ाते हो। हालाँकि खुद इनका निकालना तुम्हारे ऊपर हराम था। क्या तुम किताबे इलाही के एक हिस्से को मानते हो और एक हिस्से का इंकार करते हो। पस तुममें से जो लोग ऐसा करें उनकी सज़ा इसके सिवा क्या है कि उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में रुस्वाई हो और क़ियामत के दिन इन्हें सख़्त अज़ाब में डाल दिया जाए। और अल्लाह उस चीज़ से बेख़बर नहीं जो तुम कर रहे हो। यही लोग हैं जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िंदगी ख़रीदी। पस न इनका अज़ाब हल्का किया जाएगा और न इन्हें मदद पहुंचेगी। (84-86)

और हमने मूसा को किताब दी और इसके बाद पे दरपे रसूल भेजे। और ईसा बिन मरयम को खुली-खुली निशानियां दीं और रूहे पाक से उसकी ताईद की। तो जब भी कोई रसूल तुम्हारे पास वह चीज़ लेकर आया जिसे तुम्हारा दिल नहीं चाहता था तो तुमने घमंड किया। फिर एक जमाअत को

झुठलाया और एक जमाअत को मार डाला। और यहूद कहते हैं कि हमारे दिल महफ़ूज़ (सुरक्षित) हैं। नहीं, बल्कि अल्लाह ने उनके इंकार की वजह से उन पर लानत कर दी है। इसलिए वे बहुत कम ईमान लाते हैं। और जब आई अल्लाह की तरफ़ से उनके पास एक किताब जो सच्चा करने वाली है उसे जो उनके पास है और वे पहले से मुंकिरों पर फ़तह मांगा करते थे। फिर जब आई उनके पास वह चीज़ जिसे उन्होंने पहचान रखा था तो उन्होंने इसका इंकार कर दिया। पस अल्लाह की लानत है इंकार करने वालों पर। कैसी बुरी है वह चीज़ जिसमें उन्होंने अपनी जानों का मोल किया कि वे इंकार कर रहे हैं अल्लाह के उतारे हुए कलाम का इस ज़िद की बुनियाद पर कि अल्लाह अपने फ़ज़्ल से अपने बंदों में से जिस पर चाहे उतारे। पस वे ग़ुस्से पर ग़ुस्सा कमाकर लाए और इंकार करने वालों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। (87-90)

और जब उनसे कहा जाता है उस कलाम पर ईमान लाओ जो अल्लाह ने उतारा है तो वे कहते हैं कि हम उस पर ईमान रखते हैं जो हमारे ऊपर उतरा है। और वे इसका इंकार करते हैं जो इसके पीछे आया है। हालाँकि वह हक़ है और सच्चा करने वाला है उसे जो इनके पास है। कहो, अगर तुम ईमान वाले हो तो तुम अल्लाह के पैग़म्बरों को इससे पहले क्यों क़त्ल करते रहे हो। और मूसा तुम्हारे पास खुली निशानियां लेकर आया। फिर तुमने उसके पीछे बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया और तुम ज़ुल्म करने वाले हो। और जब हमने तुमसे अहद (वचन) लिया और तूर पहाड़ को तुम्हारे ऊपर खड़ा किया— जो हुक्म हमने तुम्हें दिया है उसे मज़बूती के साथ पकड़ो और सुनो। उन्होंने कहा : हमने सुना और हमने नहीं माना। और उनके कुफ़्र के सबब से बछड़ा उनके दिलों में रच-बस गया। कहो, अगर तुम ईमान वाले हो तो कैसी बुरी है वह चीज़ जो तुम्हारा ईमान तुम्हें सिखाता है। कहो, अगर अल्लाह के यहां आख़िरत का घर ख़ास तुम्हारे लिए है, तो दूसरों को छोड़कर तुम मरने की आरज़ू करो अगर तुम सच्चे हो। मगर वे कभी इसकी आरज़ू नहीं करेंगे, इस सबब से वे जो अपने आगे भेज चुके हैं। और अल्लाह ख़ूब जानता है

ज़ालिमों को। और तुम उन्हें ज़िंदगी का सबसे ज़्यादा हरीस (लालसा रखने वाला) पाओगे, उन लोगों से भी ज़्यादा जो मुशरिक हैं। इनमें से हर एक यह चाहता है कि हज़ार वर्ष की उम्र पाए। हालाँकि इतना जीना भी उसे अज़ाब से बचा नहीं सकता। और अल्लाह देखता है जो कुछ वे कर रहे हैं। (91-96)

कहो कि जो कोई जिब्रील का मुख़ालिफ़ है तो उसने इस कलाम को तुम्हारे दिल पर अल्लाह के हुक्म से उतारा है, वह सच्चा करने वाला है उसे जो उसके आगे है और वह हिदायत और ख़ुशख़बरी है ईमान वालों के लिए। जो कोई दुश्मन हो अल्लाह का और उसके फ़रिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्रील व मीकाईल का तो अल्लाह ऐसे मुंकिरों का दुश्मन है। और हमने तुम्हारे ऊपर वाज़ेह निशानियां उतारीं और कोई इनका इंकार नहीं करता मगर वही लोग जो फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) हैं। क्या जब भी वे कोई अहद (वचन) बाधेंगे तो उनका एक गिरोह उसे तोड़ फेंकेगा। बल्कि उनमें से अक्सर ईमान नहीं रखते। और जब उनके पास अल्लाह की तरफ़ से एक रसूल आया जो सच्चा करने वाला था उस चीज़ का जो उनके पास है तो उन लोगों ने जिन्हें किताब दी गई थी, अल्लाह की किताब को इस तरह पीठ पीछे फेंक दिया गोया वे इसे जानते ही नहीं। (97-101)

और वे उस चीज़ के पीछे पड़ गए जिसे शैतान सुलेमान की सल्तनत पर लगाकर पढ़ते थे। हालाँकि सुलेमान ने कुफ्र नहीं किया बल्कि ये शैतान थे जिन्होंने कुफ्र किया। वे लोगों को जादू सिखाते थे। और वे उस चीज़ में पड़ गए जो बाबिल में दो फ़रिश्तों हारूत और मारूत पर उतारी गई, जबकि उनका हाल यह था कि जब भी किसी को अपना यह फ़न (कला) सिखाते तो उससे कह देते कि हम तो आज़माइश के लिए हैं। पस तुम मुंकिर न बनो। मगर वे उनसे वह चीज़ सीखते जिससे मर्द और उसकी औरत के दर्मियान जुदाई डाल दें। हालाँकि वे अल्लाह के इज़्न (आज्ञा) के बग़ैर इससे किसी का कुछ बिगाड़ नहीं सकते थे। और वे ऐसी चीज़ सीखते जो उन्हें नुक़सान पहुंचाए और नफ़ा न दे। और वे जानते थे कि जो कोई इस चीज़ का ख़रीदार हो, आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। कैसी बुरी चीज़ है जिसके बदले

उन्होंने अपनी जानों को बेच डाला। काश वे इसे समझते। और अगर वे मोमिन बनते और तक़वा (ईशभय) इख़्तियार करते तो अल्लाह का बदला उनके लिए बेहतर था, काश! वे इसे समझते। (102-103)

ऐ ईमान वालो तुम 'राइना' न कहो, बल्कि 'उंज़ुरना' कहो और सुनो। और कुफ़्र करने वालों के लिए दर्दनाक सज़ा है। जिन लोगों ने इंकार किया, चाहे अहले-किताब हों या मुशरिकीन, वे नहीं चाहते कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई भलाई उतरे। और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी रहमत के लिए चुन लेता है। अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। हम जिस आयत को मौक़ूफ़ (निरस्त) करते हैं या भुला देते हैं तो इससे बेहतर या इस जैसी दूसरी लाते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ही के लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई दोस्त है और न कोई मददगार। क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से सवालात करो जिस तरह इससे पहले मूसा से सवालात किए गए। और जिस शख़्स ने ईमान को कुफ़्र से बदल दिया, वह यक़ीनन सीधी राह से भटक गया। (104-108)

बहुत से अहले-किताब दिल से चाहते हैं कि तुम्हारे मोमिन हो जाने के बाद वे किसी तरह फिर तुम्हें मुंकिर बना दें, अपने हसद (ईर्ष्या) की वजह से, बावजूद यह कि हक़ उनके सामने वाज़ेह हो चुका है। पस माफ़ करो और दरगुज़र करो यहां तक कि अल्लाह का फ़ैसला आ जाए। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो। और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे तुम अल्लाह के पास पाओगे। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह यक़ीनन उसे देख रहा है। और वे कहते हैं कि जन्नत में सिर्फ़ वही लोग जाऐंगे जो यहूदी हों या ईसाई हों, यह महज़ उनकी आरज़ुए हैं। कहो कि लाओ अपनी दलील अगर तुम सच्चे हो। बल्कि जिसने अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया और वह मुख़्लिस भी है तो ऐसे शख़्स के लिए अज्र है उसके रब के पास, इनके लिए न कोई डर है और न कोई ग़म। (109-112)

और यहूद ने कहा कि नसारा (ईसाई) किसी चीज़ पर नहीं और नसारा ने कहा कि यहूद किसी चीज़ पर नहीं। और वे सब आसमानी किताब पढ़ते हैं। इसी तरह उन लोगों ने कहा जिनके पास इल्म नहीं, उन्हीं का सा क़ौल। पस अल्लाह क़ियामत के दिन इस बात का फ़ैसला करेगा जिसमें ये झगड़ रहे थे। और उससे बढ़कर ज़ालिम और कौन होगा जो अल्लाह की मस्जिदों को इससे रोके कि वहां अल्लाह के नाम की याद की जाए और उन्हें उजाड़ने की कोशिश करे। उनका हाल तो यह होना चाहिए था कि मस्जिदों में अल्लाह से डरते हुए दाख़िल हों। उनके लिए दुनिया में रुस्वाई है और आख़िरत में उनके लिए भारी सज़ा है। और पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के लिए है। तुम जिधर रुख़ करो उसी तरफ़ अल्लाह है। यक़ीनन अल्लाह वुस्अत (व्यापकता) वाला है, इल्म वाला है। और कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है। वह इससे पाक है। बल्कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब उसी का है। उसी का हुक्म मानने वाले हैं सारे। वह आसमानों और ज़मीन को वुजूद में लाने वाला है। वह जब किसी काम को करना तय कर लेता है तो बस उसके लिए फ़रमा देता है कि हो जा तो वह हो जाता है। (113-117)

और जो लोग इल्म नहीं रखते, उन्होंने कहा : अल्लाह क्यों नहीं कलाम करता हमसे या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती। इसी तरह उनके अगले भी उन्हीं की-सी बात कह चुके हैं, इन सबके दिल एक जैसे हैं, हमने पेश कर दी हैं निशानियां उन लोगों के लिए जो यक़ीन करने वाले हैं। हमने तुम्हें ठीक बात लेकर भेजा है, ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर। और तुम से दोज़ख़ में जाने वालों की बाबत कोई पूछ नहीं होगी। और यहूद और नसारा हरगिज़ तुमसे राज़ी नहीं होंगे जब तक कि तुम उनके पंथ पर न चलने लगो। तुम कहो कि जो राह अल्लाह दिखाता है वही अस्ल राह है। और अगर बाद उस इल्म के जो तुम तक पहुंच चुका है तुमने उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी की तो अल्लाह के मुक़ाबले में न तुम्हारा कोई दोस्त होगा और न कोई मददगार। जिन लोगों को हमने किताब दी है वे इसे पढ़ते हैं

जैसा कि हक़ है पढ़ने का। यही लोग ईमान लाते हैं इस पर। और जो इसका इंकार करते हैं वही घाटे में रहने वाले हैं। (118-121)

ऐ बनी इस्राईल! मेरे उस एहसान को याद करो जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया और उस बात को कि मैंने तुम्हें दुनिया की तमाम क़ौमों पर फ़ज़ीलत दी। और उस दिन से डरो जिसमें कोई शख़्स किसी शख़्स के कुछ काम न आएगा और न किसी की तरफ़ से कोई मुआवज़ा क़ुबूल किया जाएगा और न किसी को कोई सिफ़ारिश फ़ायदा देगी और न कहीं से उन्हें कोई मदद पहुंचेगी। और जब इब्राहीम को उसके रब ने कई बातों में आज़माया तो उसने पूरा कर दिखाया। अल्लाह ने कहा मैं तुम्हें सब लोगों का इमाम बनाऊंगा। इब्राहीम ने कहा : और मेरी औलाद में से भी। अल्लाह ने कहा : मेरा अहद (वचन) ज़ालिमों तक नहीं पहुंचता। (122-124)

और जब हमने काबे को लोगों के इज्तिमाअ (जमा होने) की जगह और अम्न का मक़ाम ठहराया और हुक्म दिया कि मक़ामे-इब्राहीम को नमाज़ पढ़ने की जगह बना लो। और इब्राहीम और इस्माईल को ताकीद की कि मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) करने वालों, एतकाफ़ करने वालों और रुकूअ व सज्दे करने वालों के लिए पाक रखो। और जब इब्राहीम ने कहा के ऐ मेरे रब। इस शहर को अम्न का शहर बना दे। और इसके बाशिंदों को, जो इनमें से अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखें, फलों की रोज़ी अता फ़रमा। अल्लाह ने कहा जो इंकार करेगा मैं उसे भी थोड़े दिनों फ़ायदा दूंगा। फिर उसे आग के अज़ाब की तरफ़ धकेल दूंगा, और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (125-126)

और जब इब्राहीम और इस्माईल बैतुल्लाह की दीवारें उठा रहे थे और यह कहते जाते थे: ऐ हमारे रब! क़ुबूल कर हमसे, यक़ीनन तू ही सुनने वाला और जानने वाला है। ऐ हमारे रब! हमें अपना फ़रमांबरदार बना और हमारी नस्ल में से अपनी एक फ़रमांबरदार उम्मत उठा और हमें हमारे इबादत के तरीक़े बता और हमको माफ़ फ़रमा, तू माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है। ऐ हमारे रब! और इनमें इन्हीं में का एक रसूल उठा जो इन्हें तेरी आयतें सुनाए और इन्हें किताब और हिक्मत की तालीम दे और इनका

तज़्किया (पवित्रीकरण, शुद्धीकरण) करे। बेशक तू ज़बरदस्त है हिक्मत वाला है। (127-129)

और कौन है जो इब्राहीम के दीन को पसंद न करे मगर वह जिसने अपने आपको अहमक़ (मूर्ख) बना लिया हो। हालाँकि हमने उसे दुनिया में चुन लिया था और आख़िरत में वह सालेहीन (सत्यवादी लोगों) में से होगा। जब उसके रब ने कहा कि अपने आपको हवाले कर दो तो उसने कहा : मैंने अपने आपको सारे जहान के रब के हवाले किया। और इसी की नसीहत की इब्राहीम ने अपनी औलाद को और इसी की नसीहत की याक़ूब ने अपनी औलाद को। ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए इसी दीन को चुन लिया है। पस इस्लाम के सिवा किसी और हालत पर तुम्हें मौत न आए। क्या तुम मौजूद थे जब याक़ूब की मौत का वक़्त आया। जब उसने अपने बेटों से कहा कि मेरे बाद तुम किसकी इबादत करोगे। उन्होंने कहा : हम उसी ख़ुदा की इबादत करेंगे जिसकी इबादत आप और आपके बुज़ुर्ग इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़ करते आए हैं। वही एक माबूद है और हम उसके फ़रमांबरदार हैं। यह एक जमाअत थी जो गुज़र गई। उसे मिलेगा जो उसने कमाया और तुम्हें मिलेगा जो तुमने कमाया। और तुमसे उनके किए हुए की पूछ न होगी। (130-134)

और कहते हैं कि यहूदी या ईसाई बन जाओ तो हिदायत पाओगे। कहो कि नहीं, बल्कि हम तो पैरवी करते हैं इब्राहीम के दीन की जो अल्लाह की तरफ़ यकसू (एकाग्रचित्त) था और वह शरीक करने वालों में न था। कहो हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस चीज़ पर ईमान लाए जो हमारी तरफ़ उतारी गई है। और उस पर भी जो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याक़ूब और उसकी औलाद पर उतारी गई और जो मिला मूसा और ईसा को और जो मिला सब नबियों को उनके रब की तरफ़ से। हम इनमें से किसी के दर्मियान फ़र्क़ नहीं करते और हम अल्लाह ही के फ़रमांबरदार हैं। फिर अगर वे ईमान लाएं जिस तरह तुम ईमान लाए हो तो बेशक वे राह पा गए और अगर वे फिर जाएं तो अब वे ज़िद पर हैं। पस तुम्हारी तरफ़ से अल्लाह इनके लिए काफ़ी है और वह सुनने वाला जानने वाला है। कहो हमने लिया अल्लाह का

रंग और अल्लाह के रंग से किसका रंग अच्छा है और हम उसी की इबादत करने वाले हैं। कहो क्या तुम अल्लाह के बारे में हमसे झगड़ते हो। हालाँकि वह हमारा रब भी है और तुम्हारा रब भी। हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं। और हम ख़ालिस उसके लिए हैं। क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उसकी औलाद सब यहूदी या ईसाई थे। कहो कि तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह। और उससे बड़ा ज़ालिम और कौन होगा जो उस गवाही को छुपाए जो अल्लाह की तरफ़ से उसके पास आई हुई है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं। यह एक जमाअत थी जो गुज़र गई। उसे मिलेगा जो उसने कमाया और तुम्हें मिलेगा जो तुमने कमाया। और तुमसे उनके किए हुए की पूछ न होगी। (135-141)

अब बेवक़ूफ़ लोग कहेंगे कि मुसलमानों को किस चीज़ ने उनके क़िबले से फेर दिया। कहो कि पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के हैं। वह जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है। और इस तरह हमने तुम्हें बीच की उम्मत बना दिया ताकि तुम हो बताने वाले लोगों पर और रसूल हो तुम पर बताने वाला। और जिस क़िबले पर तुम थे, हमने उसे सिर्फ़ इसलिए ठहराया था कि हम जान लें कि कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन उससे उल्टे पांव फिर जाता है। और बेशक यह बात भारी है मगर उन लोगों पर जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी है। और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान को ज़ाया (विनष्ट) कर दे। बेशक अल्लाह लोगों के साथ शफ़क़त (स्नेह) करने वाला महरबान है। (142-143)

हम तुम्हारे मुंह का बार-बार आसमान की तरफ़ उठना देख रहे हैं। पस हम तुम्हें उसी क़िबले की तरफ़ फेर देंगे जिसे तुम पसंद करते हो। अब अपना रुख़ मस्जिदे-हराम (काबा) की तरफ़ फेर दो। और तुम जहां कहीं भी हो अपने रुख़ को उसी की तरफ़ करो। और अहले-किताब ख़ूब जानते हैं कि यह हक़ है और उनके रब की जानिब से है। और अल्लाह बेख़बर नहीं उससे जो वे कर रहे हैं। और अगर तुम इन अहले-किताब के सामने तमाम

दलीलें पेश कर दो तब भी वे तुम्हारे क़िबले को नहीं मानेंगे। और न तुम उनके क़िबले की पैरवी कर सकते हो। और न वे ख़ुद एक-दूसरे के क़िबले को मानते हैं। और इस इल्म के बाद जो तुम्हारे पास आ चुका है, अगर तुम उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी करोगे तो यक़ीनन तुम ज़ालिमों में हो जाओगे। जिन्हें हमने किताब दी है वे उसे इस तरह पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं। और उनमें से एक गिरोह हक़ को छुपा रहा है हालाँकि वह उसे जानता है। हक़ वह है जो तेरा रब कहे। पस तुम हरगिज़ शक करने वालों में से न बनो। (144-147)

हर एक के लिए एक रुख़ है जिधर वह मुंह करता है। पस तुम भलाइयों की तरफ़ दौड़ो। तुम जहां कहीं होगे अल्लाह तुम सबको ले आएगा। बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है। और तुम जहां से भी निकलो अपना रुख़ मस्जिदे-हराम की तरफ़ करो। बेशक यह हक़ है, तुम्हारे रब की तरफ़ से है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं। और तुम जहां से भी निकलो अपना रुख़ मस्जिदे-हराम की तरफ़ करो और तुम जहां भी हो अपना रुख़ उसी की तरफ़ रखो ताकि लोगों को तुम्हारे ऊपर कोई हुज्जत बाक़ी न रहे, सिवाए उन लोगों के जो इनमें बेइंसाफ़ हैं। पस तुम उनसे न डरो और मुझसे डरो। और ताकि मैं अपनी नेमत तुम्हारे ऊपर पूरी कर दूं। और ताकि तुम राह पा जाओ। जिस तरह हमने तुम्हारे दर्मियान एक रसूल तुम्हीं में से भेजा जो तुम्हें हमारी आयतें पढ़कर सुनाता है और तुम्हें पाक करता है और तुम्हें किताब की और हिक्मत (तत्वदर्शिता, सूझबूझ) की तालीम देता है और तुम्हें वे चीज़ें सिखा रहा है जिन्हें तुम नहीं जानते थे। पस तुम मुझे याद रखो मैं तुम्हें याद रखूंगा। और मेरा एहसान मानो, मेरी नाशुक्री मत करो। (148-152)

ऐ ईमान वालो, सब्र और नमाज़ से मदद हासिल करो। यक़ीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा मत कहो बल्कि वे ज़िंदा हैं मगर तुम्हें ख़बर नहीं। और हम ज़रूर तुम्हें आज़माएंगे कुछ डर और भूख से और मालों और जानों और फलों की कमी

से। और साबित क़दम रहने वालों को ख़ुशख़बरी दे दो जिनका हाल यह है कि जब उन्हें कोई मुसीबत पहुंचती है तो वे कहते हैं : हम अल्लाह के हैं और हम उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं। यही लोग हैं जिनके ऊपर उनके रब की शाबाशियां हैं और रहमत है। और यही लोग हैं जो राह पर हैं। (153-157)

सफ़ा और मरवह बेशक अल्लाह की यादगारों में से हैं। पस जो शख़्स बैतुल्लाह का हज करे या उमरा करे तो उस पर कोई हरज नहीं कि वह इनका तवाफ़ (परिक्रमा) करे ओर जो कोई शौक़ से कुछ नेकी करे तो अल्लाह क़द्र करने वाला है, जानने वाला है। जो लोग छुपाते हैं हमारी उतारी हुई खुली निशानियों को और हमारी हिदायत को, बाद इसके कि हम इसे लोगों के लिए किताब में खोल चुके हैं तो वही लोग हैं जिन पर अल्लाह लानत करता है और उन पर लानत करने वाले लानत करते हैं। अलबत्ता जिन्होंने तौबा की और इस्लाह कर ली और बयान किया तो उन्हें मैं माफ़ कर दूंगा और मैं हूं माफ़ करने वाला, महरबान। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और उसी हाल में मर गए तो वही लोग हैं कि उन पर अल्लाह की, फ़रिश्तों की और आदमियों की सबकी लानत है। उसी हाल में वे हमेशा रहेंगे। उन पर से अज़ाब हल्का नहीं किया जाएगा और न उन्हें ढील दी जाएगी। (158-162)

और तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह बड़ा महरबान है, निहायत रहम वाला है। बेशक आसमानों और ज़मीन की बनावट में और रात और दिन के आने जाने में और उन कश्तियों में जो इंसानों के काम आने वाली चीज़ें लेकर समुद्र में चलती हैं और उस पानी में जिसको अल्लाह ने आसमान से उतारा, फिर उससे मुर्दा ज़मीन को ज़िंदगी बख़्शी, और उसने ज़मीन में सब क़िस्म के जानवर फ़ैला दिए। और हवाओं की गर्दिश में और बादलों में जो आसमान और ज़मीन के दर्मियान हुक्म के ताबेअ हैं, उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो अक़्ल से काम लेते हैं। (163-164)

और कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उसके बराबर ठहराते हैं। उनसे ऐसी मुहब्बत रखते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह से रखना चाहिए। और जो ईमान वाले हैं वे सबसे ज़्यादा अल्लाह से मुहब्बत रखने

वाले हैं। और अगर ये ज़ालिम उस वक़्त को देख लें जबकि वे अज़ाब को देखेंगे कि ज़ोर सारा-का-सारा अल्लाह का है और अल्लाह बड़ा सख़्त अज़ाब देने वाला है। जबकि वे लोग जिनके कहने पर दूसरे चलते थे उन लोगों से अलग हो जाएंगे जो इनके कहने पर चलते थे। अज़ाब उनके सामने होगा और उनके सब तरफ़ के रिश्ते टूट चुके होंगे। वे लोग जो पीछे चले थे कहेंगे काश! हमें दुनिया की तरफ़ लौटना मिल जाता तो हम भी उनसे अलग हो जाते जैसे ये हमसे अलग हो गए। इस तरह अल्लाह इनके आमाल को उन्हें हसरत बनाकर दिखाएगा और वे आग से निकल नहीं सकेंगे। (165-167)

लोगो! ज़मीन की चीज़ों में से हलाल और सुथरी चीज़ें खाओ और शैतान के क़दमों पर मत चलो, बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। वह तुमको सिर्फ़ बुरे काम और बेहयाई की तलक़ीन करता है और इस बात की कि तुम अल्लाह की तरफ़ वे बाते मंसूब करो जिनके बारे में तुम्हें कोई इल्म नहीं। और जब उनसे कहा जाता है कि उस पर चलो जो अल्लाह ने उतारा है तो वे कहते हैं कि हम उस पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है। क्या उस सूरत में भी कि उनके बाप-दादा न अक़्ल रखते हों और न सीधी राह जानते हों। और इन मुंकिरों की मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स ऐसे जानवर के पीछे चिल्ला रहा हो जो बुलाने और पुकारने के सिवा और कुछ नहीं सुनता। ये बहरे हैं, गूंगे हैं, अंधे हैं। वे कुछ नहीं समझते। (168-171)

ऐ ईमान वालो हमारी दी हुई पाक चीज़ों को खाओ और अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम उसकी इबादत करने वाले हो। अल्लाह ने तुम पर हराम किया है सिर्फ़ मुर्दार को और ख़ून को और सुअर के गोश्त को। और जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो। फिर जो शख़्स मजबूर हो जाए, वह न ख़्वाहिशमंद हो और न हद से आगे बढ़ने वाला हो तो उस पर कोई गुनाह नहीं। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। जो लोग उस चीज़ को छुपाते हैं जो अल्लाह ने अपनी किताब में उतारी है और इसके बदले में थोड़ा मोल लेते हैं, वे अपने पेट में सिर्फ़ आग भर रहे हैं। क़ियामत के दिन अल्लाह न उनसे बात करेगा और न उन्हें पाक करेगा

और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। ये वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही का सौदा किया और बख़्शिश के बदले अज़ाब का, तो कैसी सहार है उन्हें आग की। यह इसलिए कि अल्लाह ने अपनी किताब को ठीक-ठीक उतारा मगर जिन लोगों ने किताब में कई राहें निकाल लीं वे ज़िद में दूर जा पड़े। (172-176)

नेकी यह नहीं कि तुम अपने मुंह पूर्व और पश्चिम की तरफ़ कर लो। बल्कि नेकी यह है कि आदमी ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और फ़रिश्तों पर और किताब पर और पैग़म्बरों पर। और माल दे अल्लाह की मुहब्बत में रिश्तेदारों को और यतीमों को और मोहताजों को और मुसाफ़िरों को और मांगने वालों को और गर्दनें छुड़ाने में। और नमाज़ क़ायम करे और ज़कात अदा करे और जब अहद कर लें तो उसे पूरा करें। और सब्र करने वाले सख़्ती और तकलीफ़ में और लड़ाई के वक़्त। यही लोग हैं जो सच्चे निकले और यही हैं डर रखने वाले। (177)

ऐ ईमान वालो! तुम पर मक़्तूलों (मारे जाने वालों) का क़िसास (समान बदला) लेना फ़र्ज़ किया जाता है। आज़ाद के बदले आज़ाद, ग़ुलाम के बदले ग़ुलाम, औरत के बदले औरत। फिर जिसे उसके भाई की तरफ़ से कुछ माफ़ी हो जाए तो उसे चाहिए कि मारूफ़ (सामान्य तरीक़ा) की पैरवी करे और ख़ूबी के साथ उसे अदा करे। यह तुम्हारे रब की तरफ़ से एक आसानी और महरबानी है। अब इसके बाद भी जो शख़्स ज़्यादती करे उसके लिए दर्दनाक अज़ाब है। और ऐ अक़्ल वालो, क़िसास में तुम्हारे लिए ज़िंदगी है ताकि तुम बचो। तुम पर फ़र्ज़ किया जाता है कि जब तुममें से किसी की मौत का वक़्त आ जाए और वह अपने पीछे, माल छोड़ रहा हो तो वह मारूफ़ के मुताबिक़ वसीअत कर दे अपने मां-बाप के लिए और अपने रिश्तेदारों के लिए। यह ज़रूरी है ख़ुदा से डरने वालों के लिए। फिर जो कोई वसीयत को सुनने के बाद उसे बदल डाले तो इसका गुनाह उसी पर होगा जिसने इसे बदला, यक़ीनन अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। अलबत्ता जिसे वसीयत करने वाले के बारे में यह अंदेशा हो कि उसने जानिबदारी या हक़तलफ़ी की है

और वह आपस में सुलह करा दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं। अल्लाह माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है। (178-182)

ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़ा फ़र्ज़ किया गया जिस तरह तुमसे अगलों पर फ़र्ज़ किया गया था ताकि तुम परहेज़गार बनो। गिनती के कुछ दिन। फिर जो कोई तुममें बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में तादाद पूरी कर ले। और जिनको ताक़त है तो एक रोज़े का बदला एक मिस्कीन का खाना है। जो कोई मज़ीद (अतिरिक्त) नेकी करे तो वह उसके लिए बेहतर है। और तुम रोज़ा रखो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, अगर तुम जानो। रमज़ान का महीना जिसमें क़ुरआन उतारा गया, हिदायत है लोगों के लिए और खुली निशानियां रास्ते की और हक़ व बातिल के दर्मियान फ़ैसला करने वाला। पस तुममें से जो कोई इस महीने को पाए वह इसके रोज़े रखे। और जो बीमार हो या सफ़र पर हो तो दूसरे दिनों में गिनती पूरी कर ले। अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख़्ती करना नहीं चाहता। और इसलिए कि तुम गिनती पूरी कर लो और अल्लाह की बड़ाई करो इस पर कि उसने तुम्हें राह बताई और ताकि तुम उसके शुक्रगुज़ार बनो। (183-185)

और जब मेरे बंदे तुमसे मेरे बारे में पूछें तो मैं नज़दीक हूं, पुकारने वाले की पुकार का जवाब देता हूं जबकि वह मुझे पुकारता है। तो चाहिए कि वे मेरा हुक्म मानें और मुझ पर यक़ीन रखें ताकि वे हिदायत पाएं। तुम्हारे लिए रोज़े की रात में अपनी बीवियों के पास जाना जाइज़ किया गया। वे तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उनके लिए लिबास हो। अल्लाह ने जाना कि तुम अपने आपसे ख़ियानत कर रहे थे तो उसने तुम पर इनायत की और तुम्हें माफ़ कर दिया। तो अब तुम उनसे मिलो और चाहो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है। और खाओ और पियो यहां तक कि सुबह की सफ़ेद धारी काली धारी से अलग ज़ाहिर हो जाए। फिर पूरा करो रोज़ा रात तक। और जब तुम मस्जिद में एतकाफ़ में हो तो बीवियों से ख़लवत (संभोग) न करो। ये अल्लाह की हदें हैं तो इनके नज़दीक न जाओ। इस तरह अल्लाह अपनी आयतें लोगों के लिए बयान करता है ताकि वे बचें। और तुम आपस

में एक-दूसरे के माल को नाहक़ तौर पर न खाओ और उन्हें हाकिमों तक न पहुंचाओ ताकि दूसरों के माल का कोई हिस्सा गुनाह के तौर पर खा जाओ। हालाँकि तुम इसे जानते हो। (186-188)

वे तुमसे चांदों के बारे में पूछते हैं। कह दो कि वे औक़ात (समय) हैं लोगों के लिए और हज के लिए। और नेकी यह नहीं कि तुम घरों में आओ छत पर से। बल्कि नेकी यह है कि आदमी परहेज़गारी करे। और घरों में उनके दरवाज़ों से आओ और अल्लाह से डरो ताकि तुम कामयाब हो। और अल्लाह की राह में उन लोगों से लड़ो जो लड़ते हैं तुमसे। और ज़्यादती न करो। अल्लाह ज़्यादती करने वालों को पसंद नहीं करता। और क़त्ल करो उन्हें जिस जगह पाओ, और निकाल दो उन्हें जहां से उन्होंने तुम्हें निकाला है। और फ़ितना सख़्ततर है क़त्ल से। और उनसे मस्जिदे-हराम के पास न लड़ो जब तक कि वे तुमसे इसमें जंग न छेड़ें। पस अगर वे तुमसे जंग छेड़ें तो उन्हें क़त्ल करो। यही सज़ा है इंकार करने वालों की। फिर अगर वे बाज़ आ जाएं तो अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। और उनसे जंग करो यहां तक कि फ़ितना बाक़ी न रहे और दीन अल्लाह का हो जाए। फिर अगर वे बाज़ आ जाएं तो इसके बाद सख़्ती नहीं है मगर ज़ालिमों पर। (189-193)

हुरमत (प्रतिष्ठा) वाला महीना हुरमत वाले महीने का बदला है और हुरमतों का भी क़िसास (समान बदला) है। पस जिसने तुम पर ज़्यादती की तुम भी उस पर ज़्यादती करो जैसी उसने तुम पर ज़्यादती की है। और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है। और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और अपने आपको हलाकत में न डालो। और काम अच्छी तरह करो। बेशक अल्लाह पसंद करता है अच्छी तरह काम करने वालों को। (194-195)

और पूरा करो हज और उमरा अल्लाह के लिए। फिर अगर तुम घिर जाओ तो जो क़ुर्बानी का जानवर मयस्सर हो वह पेश कर दो और अपने सिरों को न मुंडवाओ जब तक कि क़ुर्बानी अपने ठिकाने पर न पहुंच जाए। तुममें से जो बीमार हो या उसके सिर में कोई तकलीफ़ हो तो वह फ़िदया (अर्थदंड) दे रोज़ा या सदक़ा या क़ुर्बानी का। जब अम्न की हालत हो और

कोई हज तक उमरा का फ़ायदा हासिल करना चाहे तो वह क़ुर्बानी पेश करे जो उसे मयस्सर आए। फिर जिसे मयस्सर न आए तो वह हज के दिनों में तीन दिन के रोज़े रखे और सात दिन के रोज़े जबकि तुम घरों को लौटो। ये पूरे दस हुए। यह उस शख़्स के लिए है जिसका ख़ानदान मस्जिदे-हराम के पास आबाद न हो। अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। हज के निर्धारित महीने हैं। पस जिसने हज का अज़्म कर लिया तो फिर उसे हज के दौरान न कोई फ़हेश (अश्लील) बात करनी चाहिए और न गुनाह की और न लड़ाई-झगड़े की। और जो नेक काम तुम करोगे अल्लाह उसे जान लेगा। और तुम ज़ादेराह (यात्रा-सामग्री) लो। बेहतरीन ज़ादेराह तक़्वा का ज़ादेराह है। और ऐ अक़्ल वालो! मुझसे डरो। (196-197)

इसमें कोई गुनाह नहीं कि तुम अपने रब का फ़ज़्ल भी तलाश करो। फिर जब तुम लोग अरफ़ात से वापस हो तो अल्लाह को याद करो मशअरे-हराम के नज़दीक। और उसे याद करो जिस तरह अल्लाह ने बताया है। इससे पहले यक़ीनन तुम राह भटके हुए लोगों में थे। फिर तवाफ़ को चलो जहां से सब लोग चलें और अल्लाह से माफ़ी मांगो। यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। फिर जब तुम अपने हज के आमाल पूरे कर लो तो अल्लाह को याद करो जिस तरह तुम पहले अपने पूर्वजों को याद करते थे, बल्कि इससे भी ज़्यादा। पस कोई आदमी कहता है : ऐ हमारे रब हमें इसी दुनिया में दे दे और आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। और कोई आदमी है जो कहता है कि हमारे रब हमें दुनिया में भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई दे और हमें आग के अज़ाब से बचा। इन्हीं लोगों के लिए हिस्सा है उनके किए का और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। और अल्लाह को याद करो मुक़र्रर दिनों में। फिर जो शख़्स जल्दी करके दो दिन में मक्का वापस आ जाए उस पर कोई गुनाह नहीं और जो शख़्स ठहर जाए उस पर भी कोई गुनाह नहीं। यह उसके लिए है जो अल्लाह से डरे। और तुम अल्लाह से डरते रहो और ख़ूब जान लो कि तुम उसी के पास इकट्ठा किए जाओगे। (198-203)

और लोगों में से कोई है कि उसकी बात दुनिया की ज़िंदगी में तुम्हें

ख़ुश लगती है और वह अपने दिल की बात पर अल्लाह को गवाह बनाता है। हालाँकि वह सख़्त झगड़ालू है। और जब वह पीठ फेरता है तो वह इस कोशिश में रहता है कि ज़मीन में फ़साद फैलाए और खेतियों और जानवरों को हलाक करे। हालाँकि अल्लाह फ़साद को पसंद नहीं करता। और जब उससे कहा जाता है कि अल्लाह से डर तो वक़ार (प्रतिष्ठा) उसे गुनाह पर जमा देता है। पस ऐसे शख़्स के लिए जहन्नम काफ़ी है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। और लोगों में कोई है कि अल्लाह की ख़ुशी की तलाश में अपनी जान को बेच देता है और अल्लाह अपने बंदों पर निहायत महरबान है। (204-207)

ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे-पूरे दाख़िल हो जाओ और शैतान के क़दमों पर मत चलो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। अगर तुम फिसल जाओ बाद इसके कि तुम्हारे पास वाज़ेह दलीलें आ चुकी हैं तो जान लो कि अल्लाह ज़बरदस्त है और हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। क्या लोग इस इंतज़ार में हैं कि अल्लाह बादल के सायबानों में आए और फ़रिश्ते भी आ जाएं और मामले का फ़ैसला कर दिया जाए और सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ़ फेरे जाते हैं। बनी इस्राईल से पूछो, हमने उन्हें कितनी खुली-खुली निशानियां दीं। और जो शख़्स अल्लाह की नेमत को बदल डाले जबकि वह उसके पास आ चुकी हो तो अल्लाह यक़ीनन सख़्त सज़ा देने वाला है। ख़ुशनुमा कर दी गई है दुनिया की ज़िंदगी उन लोगों की नज़र में जो मुंकिर हैं और वे ईमान वालों पर हंसते हैं, हालाँकि जो परहेज़गार हैं वे क़ियामत के दिन उनके मुक़ाबले में ऊंचे होंगे। और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है। (208-212)

लोग एक उम्मत थे। उन्होंने इख़्तेलाफ़ (मतभेद) किया तो अल्लाह ने पैग़म्बरों को भेजा ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले। और उनके साथ उतारी किताब हक़ के साथ ताकि वह फ़ैसला कर दे उन बातों का जिनमें लोग इख़्तेलाफ़ कर रहे हैं। और ये इख़्तेलाफ़ उन्हीं लोगों ने किए जिन्हें हक़ दिया गया था, बाद इसके कि उनके पास खुली-खुली हिदायतें आ चुकी थीं, आपस की ज़िद की वजह से। पस अल्लाह ने अपनी तौफ़ीक़ से हक़ के मामले में ईमान वालों को राह दिखाई जिसमें वे झगड़ रहे थे और अल्लाह

जिसे चाहता है सीधी राह दिखा देता है। क्या तुमने यह समझ रखा है कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे हालाँकि अभी तुम पर वे हालात गुज़रे ही नहीं जो तुम्हारे अगलों पर गुज़रे थे। उन्हें सख़्ती और तकलीफ़ पहुंची और वे हिला मारे गए। यहां तक कि रसूल और उनके साथ ईमान लाने वाले पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी। याद रखो, अल्लाह की मदद क़रीब है। (213-214)

लोग तुमसे पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें। कह दो कि जो माल तुम ख़र्च करो तो उसमें हक़ है तुम्हारे मां-बाप का और रिश्तेदारों का और यतीमों का और मोहताजों का और मुसाफ़िरों का। और जो भलाई तुम करोगे वह अल्लाह को मालूम है। तुम पर लड़ाई का हुक्म हुआ है और वह तुम्हें भार महसूस होती है। हो सकता है कि तुम एक चीज़ को नागवार समझो और वह तुम्हारे लिए भली हो। और हो सकता है कि तुम एक चीज़ को पसंद करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। और अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते। (215-216)

लोग तुमसे हुरमत (प्रतिष्ठा) वाले महीने की बाबत पूछते हैं कि इसमें लड़ना कैसा है। कह दो कि इसमें लड़ना बहुत बुरा है। मगर अल्लाह के रास्ते से रोकना और इसका इंकार करना और मस्जिदे-हराम से रोकना और उसके लोगों को इससे निकालना, अल्लाह के नज़दीक इससे भी ज़्यादा बुरा है। और फ़ितना क़त्ल से भी ज़्यादा बड़ी बुराई है। और ये लोग तुमसे निरंतर लड़ते रहेंगे यहां तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें अगर क़ाबू पाएं। और तुममें से जो कोई अपने दीन से फिरेगा और कुफ़्र की हालत में मर जाए तो ऐसे लोगों के अमल ज़ाया (विनष्ट) हो गए दुनिया में और आख़िरत में। और वे आग में पड़ने वाले हैं, वे इसमें हमेशा रहेंगे। वे लोग जो ईमान लाए और जिन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया, वे अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार हैं। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (217-218)

लोग तुमसे शराब और जुए के बारे में पूछते हैं। कह दो कि इन दोनों चीज़ों में बड़ा गुनाह है और लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं। और इनका गुनाह बहुत ज़्यादा है इनके फ़ायदे से। और वे तुमसे पूछते हैं कि क्या ख़र्च

करें। कह दो कि जो हाजत (ज़रूरत) से ज़्यादा हो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम को बयान करता है ताकि तुम ध्यान करो दुनिया और आख़िरत के मामलों में। और वे तुमसे यतीमों के बारे में पूछते हैं। कह दो कि जिसमें उनकी बहबूद (बेहतरी) हो वह बेहतर है। और अगर तुम उन्हें अपने साथ शामिल कर लो तो वे तुम्हारे भाई हैं। और अल्लाह को मालूम है कि कौन ख़राबी पैदा करने वाला है और कौन दुरुस्तगी पैदा करने वाला। और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें मुश्किल में डाल देता। अल्लाह ज़बरदस्त है तदबीर वाला है। (219-220)

और मुशरिक औरतों से निकाह न करो जब तक वे ईमान न लाएं और मोमिन कनीज़ (दासी) बेहतर है एक मुशरिक औरत से, अगरचे वह तुम्हें अच्छी मालूम हो। और अपनी औरतों को मुशरिक मर्दों के निकाह में न दो जब तक वे ईमान न लाएं, मोमिन ग़ुलाम बेहतर है एक आज़ाद मुशरिक से, अगरचे वह तुम्हें अच्छा मालूम हो। ये लोग आग की तरफ़ बुलाते हैं और अल्लाह जन्नत की तरफ़ और अपनी बख़्शिश की तरफ़ बुलाता है। वह अपने अहकाम लोगों के लिए खोलकर बयान करता है ताकि वे नसीहत पकड़ें। और वे तुमसे हैज़ (मासिक धर्म) का हुक्म पूछते हैं। कह दो कि वह एक गंदगी है, इसमें औरतों से अलग रहो। और जब तक वे पाक न हो जाएं उनके क़रीब न जाओ। फिर जब वे अच्छी तरह पाक हो जाएं तो उस तरीक़े से उनके पास जाओ जिसका अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है। अल्लाह दोस्त रखता है तौबा करने वालों को और वह दोस्त रखता है पाक रहने वालों को। तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेतियां हैं। पस अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिए आगे भेजो और अल्लाह से डरो और जान लो कि तुम्हें ज़रूर उससे मिलना है। और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दे दो।(221-223)

और अल्लाह को अपनी क़समों का निशाना न बनाओ कि तुम भलाई न करो और परहेज़गारी न करो और लोगों के दर्मियान सुलह न करो। अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। अल्लाह तुम्हारी बेइरादा क़समों पर तुमको नहीं पकड़ता, मगर वह उस काम पर पकड़ता है जो तुम्हारे दिल करते हैं। और

अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मुल (धैर्य) वाला है। जो लोग अपनी बीवियों से न मिलने की क़सम खा लें उनके लिए चार महीने तक की मोहलत है। फिर अगर वे रुजूअ कर लें तो अल्लाह माफ़ करने वाला, महरबान है। और अगर वे तलाक़ का फ़ैसला करें तो यक़ीनन अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। और तलाक़ दी हुई औरतें अपने आपको तीन हैज़ तक रोके रखें। और अगर वे अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हैं तो उनके लिए जाइज़ नहीं कि वे उस चीज़ को छुपाएं जो अल्लाह ने पैदा किया है उनके पेट में। और इस दौरान में उनके शौहर उन्हें फिर लौटा लेने का हक़ रखते हैं अगर वे सुलह करना चाहें। और इन औरतों के लिए दस्तूर के मुताबिक़ उसी तरह हुक़ूक़ हैं जिस तरह दस्तूर के मुताबिक़ उन पर ज़िम्मेदारियां हैं। और मर्दों का उनके मुक़ाबले में कुछ दर्जा बढ़ा हुआ है। और अल्लाह ज़बरदस्त है, तदबीर वाला है। (224-228)

तलाक़ दो बार है। फिर या तो क़ायदे के मुताबिक़ रख लेना है या ख़ुशउस्लूबी के साथ रुख़्सत कर देना। और तुम्हारे लिए यह बात जाइज़ नहीं कि तुमने जो कुछ इन औरतों को दिया है उसमें से कुछ ले लो मगर यह कि दोनों को डर हो कि वे अल्लाह की हदों पर क़ायम न रह सकेंगे। फिर अगर तुम्हें यह डर हो कि दोनों अल्लाह की हदों पर क़ायम न रह सकेंगे तो दोनों पर गुनाह नहीं उस माल में जिसे औरत फ़िदये में दे। ये अल्लाह की हदें हैं तो इनसे बाहर न निकलो। और जो शख़्स अल्लाह की हदों से निकल जाए तो वही लोग ज़ालिम हैं। फिर अगर वह उसे तलाक़ दे दे तो इसके बाद वह औरत उसके लिए हलाल नहीं जब तक कि वह किसी दूसरे मर्द से निकाह न करे। फिर अगर वह मर्द उसे तलाक़ दे दे तब गुनाह नहीं उन दोनों पर कि फिर मिल जाएं बशर्ते कि उन्हें अल्लाह की हदों पर क़ायम रहने की उम्मीद हो। ये ख़ुदावंदी हदें (सीमाएं) हैं जिन्हें वह बयान कर रहा है उन लोगों के लिए जो दानिशमंद हैं। और जब तुम औरतों को तलाक़ दे दो और वे अपनी इद्दत तक पहुंच जाएं तो उन्हें या तो क़ायदे के मुताबिक़ रख लो या क़ायदे के मुताबिक़ रुख़्सत कर दो। और तकलीफ़ पहुंचाने की ग़र्ज़ से न रोको ताकि

उन पर ज़्यादती करो। और जो ऐसा करेगा उसने अपना ही बुरा किया। और अल्लाह की आयतों को खेल न बनाओ। और याद करो अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को और उस किताब व हिक्मत (तत्वदर्शिता) को जो उसने तुम्हारी नसीहत के लिए उतारी है। और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (229-231)

और जब तुम अपनी औरतों को तलाक़ दे दो और वे अपनी इद्दत पूरी कर लें तो उन्हें न रोको कि वे अपने शौहरों से निकाह कर लें। जबकि वे दस्तूर (सामान्य नियम) के अनुसार आपस में राज़ी हो जाएं। यह नसीहत की जाती है उस शख़्स को जो तुममें से अल्लाह और आख़िरत के दिन पर यक़ीन रखता हो। यह तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़ा और सुथरा तरीक़ा है। और अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते। और मांएं अपने बच्चों को पूरे दो साल तक दूध पिलाएं उन लोगों के लिए जो पूरी मुद्दत तक दूध पिलाना चाहते हों। और जिसका बच्चा है उसके ज़िम्मे है इन मांओं का खाना और कपड़ा दस्तूर के मुताबिक़। किसी को हुक्म नहीं दिया जाता मगर उसकी बर्दाश्त के मुवाफ़िक़। न किसी मां को उसके बच्चे के सबब से तकलीफ़ दी जाए। और न किसी बाप को उसके बच्चे के सबब से। और यही ज़िम्मेदारी वारिस पर भी है। फिर अगर दोनों आपसी रज़ामंदी और मशवरे से दूध छुड़ाना चाहें तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं। और अगर तुम चाहो कि अपने बच्चे को किसी और से दूध पिलवाओ तब भी तुम पर कोई गुनाह नहीं। बशर्ते कि तुम क़ायदे के मुताबिक़ वह अदा कर दो जो तुमने उन्हें देना ठहराया था। और अल्लाह से डरो और जान लो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। (232-233)

और तुममें से जो लोग मर जाएं और बीवियां छोड़ जाएं वे बीवियां अपने आपको चार महीने दस दिन तक इंतज़ार में रखें। फिर जब वे अपनी मुद्दत को पहुंचें तो जो कुछ वे अपने बारे में क़ायदे के मुवाफ़िक़ करें उसका तुम पर कोई गुनाह नहीं। और अल्लाह तुम्हारे कामों से पूरी तरह बाख़बर है। और तुम्हारे लिए इस बात में कोई गुनाह नहीं कि इन औरतों को पैग़ाम

देने में कोई बात इशारे में कहो या अपने दिल में छुपाए रखो। अल्लाह को मालूम है कि तुम ज़रूर इनका ध्यान करोगे। मगर छुपकर इनसे वादा न करो, तुम इनसे सिर्फ़ दस्तूर के मुताबिक़ कोई बात कह सकते हो। और निकाह का इरादा उस वक़्त तक न करो जब तक निर्धारित मुद्दत पूरी न हो जाए। और जान लो कि अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है। पस उससे डरो और जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मुल (संयम) वाला है। अगर तुम औरतों को ऐसी हालत में तलाक़ दो कि न इन्हें तुमने हाथ लगाया है और इनके लिए कुछ महर मुक़र्रर किया है तो इनके महर का तुम पर कुछ मुवाख़िज़ा (देय) नहीं। अलबत्ता उन्हें दस्तूर के मुताबिक़ कुछ सामान दे दो, वुस्अत वाले पर अपनी हैसियत के मुताबिक़ है और तंगी वाले पर अपनी हैसियत के मुताबिक़, यह नेकी करने वालों पर लाज़िम है। और अगर तुम उन्हें तलाक़ दो इससे पहले कि उन्हें हाथ लगाओ और तुम उनके लिए कुछ महर भी मुक़र्रर कर चुके थे तो जितना महर तुमने मुक़र्रर किया हो उसका आधा अदा करो। यह और बात है यह कि वे माफ़ कर दें या वह मर्द माफ़ कर दे जिसके हाथ में निकाह की गिरह है। और तुम्हारा माफ़ कर देना ज़्यादा क़रीब है तक़वा से। और आपस में एहसान करने से ग़फ़लत मत करो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। (234-237)

पाबंदी करो नमाज़ों की और पाबंदी करो बीच की नमाज़ की। और खड़े हो अल्लाह के सामने आजिज़ बने हुए। अगर तुम्हें अंदेशा हो तो पैदल या सवारी पर पढ़ लो। फिर जब अमन की हालत आ जाए तो अल्लाह को उस तरीक़े से याद करो जो उसने तुम्हें सिखाया है, जिसे तुम नहीं जानते थे। और तुममें से जो लोग वफ़ात पा जाएं और बीवियां छोड़ रहे हों वे अपनी बीवियों के बारे में वसीयत कर दें कि एक साल तक उन्हें घर में रखकर ख़र्च दिया जाए। फिर अगर वे ख़ुद से घर छोड़ दें तो जो कुछ वे अपने मामले में दस्तूर के मुताबिक़ करें उसका तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं। अल्लाह ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है। और तलाक़ दी हुई औरतों को भी दस्तूर के मुताबिक़ ख़र्च देना है, यह लाज़िम है परहेज़गारों के लिए। इस तरह अल्लाह तुम्हारे

लिए अपने अहकाम खोलकर बयान करता है ताकि तुम समझो। (238-242)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने घरों से भाग खड़े हुए मौत के डर से, और वे हज़ारों की तादाद में थे। तो अल्लाह ने उनसे कहा कि मर जाओ। फिर अल्लाह ने इन्हें ज़िंदा किया। बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है। मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। और अल्लाह की राह में लड़ो और जान लो कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़े-हसन दे कि अल्लाह इसे बढ़ाकर उसके लिए कई गुना कर दे। और अल्लाह ही तंगी भी पैदा करता है और कुशादगी भी। और तुम सब उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे। (243-245)

क्या तुमने बनी इस्राईल के सरदारों को नहीं देखा मूसा के बाद, जबकि उन्होंने अपने नबी से कहा कि हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दीजिए ताकि हम अल्लाह की राह में लड़ें। नबी ने जवाब दिया : ऐसा न हो कि तुम्हें लड़ाई का हुक्म दिया जाए तब तुम न लड़ो। उन्होंने कहा यह कैसे हो सकता है कि हम न लड़ें अल्लाह की राह में। हालाँकि हमें अपने घरों से निकाला गया है और अपने बच्चों से जुदा किया गया है। फिर जब उन्हें लड़ाई का हुक्म हुआ तो थोड़े लोगों के सिवा सब फिर गए। और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। और उनके नबी ने उनसे कहा : अल्लाह ने तालूत को तुम्हारे लिए बादशाह मुक़र्रर किया है। उन्होंने कहा कि उसे हमारे ऊपर बादशाही कैसे मिल सकती है। हालाँकि उसके मुक़ाबले में हम बादशाही के ज़्यादा हक़दार हैं। और उसे ज़्यादा दौलत भी हासिल नहीं। नबी ने कहा अल्लाह ने तुम्हारे मुक़ाबले में उसे चुना है और इल्म और जिस्म में उसे ज़्यादती दी है। और अल्लाह अपनी सल्तनत जिसे चाहता है देता है। अल्लाह बड़ी वुस्अत (व्यापकता) वाला, जानने वाला है। और उनके नबी ने उनसे कहा कि तालूत के बादशाह होने की निशानी यह है कि तुम्हारे पास वह संदूक़ आ जाएगा जिसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे लिए तस्कीन है। और मूसा के समुदाय और हारून के समुदाय छोड़ी हुई यादगारें हैं। इस

संदूक़ को फ़रिश्ते ले आएंगे इसमें तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है, अगर तुम यक़ीन रखने वाले हो। (246-248)

फिर जब तालूत फ़ौजों को लेकर चला तो उसने कहा : अल्लाह तुम्हें एक नदी के ज़रिए आज़माने वाला है। पस जिसने उसका पानी पिया वह मेरा साथी नहीं और जिसने उसे न चखा वह मेरा साथी है। मगर यह कि कोई अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले। तो उन्होंने इसमें से ख़ूब पिया सिवाए थोड़े आदमियों के। फिर जब तालूत और जो उसके साथ ईमान पर क़ायम रहे थे दरिया पार कर चुके तो वे लोग बोले कि आज हमें जालूत और उसकी फ़ौजों से लड़ने की ताक़त नहीं। जो लोग यह जानते थे कि वे अल्लाह से मिलने वाले हैं उन्होंने कहा कि कितनी ही छोटी जमाअतें अल्लाह के हुक्म से बड़ी जमाअतों पर ग़ालिब आई हैं। और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। और जब जालूत और उसकी फ़ौजों से उनका सामना हुआ तो उन्होंने कहा : कि ऐ हमारे रब! हमारे ऊपर सब्र डाल दे और हमारे क़दमों को जमा दे और इन मुंकिरों के मुक़ाबले में हमारी मदद कर। फिर उन्होंने अल्लाह के हुक्म से उन्हें शिकस्त दी। और दाऊद ने जालूत को क़त्ल कर दिया। और अल्लाह ने दाऊद को बादशाहत और दानाई (सूझबूझ) अता की और जिन चीज़ों का चाहा इल्म बख़्शा। और अगर अल्लाह कुछ लोगों को कुछ लोगों के ज़रिए हटाता न रहे तो ज़मीन फ़साद से भर जाए। मगर अल्लाह दुनिया वालों पर बड़ा फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है। (249-251)

ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम्हें सुनाते हैं ठीक-ठीक। और बेशक तू पैग़म्बरों में से है इन पैग़म्बरों में से कुछ को हमने कुछ पर फ़ज़ीलत दी। इनमें से कुछ से अल्लाह ने कलाम किया। और कुछ के दर्जे बुलंद किए। और हमने ईसा बिन मरयम को खुली निशानियां दीं और हमने उसकी मदद की रूहुल क़ुद्स से। अल्लाह अगर चाहता तो इनके बाद वाले साफ़ हुक्म आ जाने के बाद न लड़ते मगर उन्होंने मतभेद किया। फिर इनमें से कोई ईमान लाया और किसी ने इंकार किया। और अगर अल्लाह चाहता तो वे न लड़ते। मगर अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (252-253)

ऐ ईमान वालो! ख़र्च करो उन चीज़ों से जो हमने तुम्हें दिया है उस दिन के आने से पहले जिसमें न ख़रीद-फ़रोख़्त है और न दोस्ती है और न सिफ़ारिश। और जो इंकार करने वाले हैं वही हैं ज़ुल्म करने वाले। अल्लाह, इसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वह ज़िंदा है, सबको थामने वाला। उसे न ऊंघ आती है और न नींद। उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। कौन है जो उसके पास उसकी इजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश करे। वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और वे उसके इल्म में से किसी चीज़ का इहाता (ग्रहण) नहीं कर सकते, मगर जो वह चाहे। उसकी हुकूमत आसमानों और ज़मीन में छाई हुई है। वह थकता नहीं इनके थामने से। और वही है बुलंद मर्तबा, बड़ा। दीन के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं। हिदायत गुमराही से अलग हो चुकी है। पस जो शख़्स शैतान का इंकार करे और अल्लाह पर ईमान लाए उसने मज़बूत हल्क़ा पकड़ लिया जो टूटने वाला नहीं। और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। अल्लाह काम बनाने वाला है ईमान वालों का, वह उन्हें अंधेरों से निकालकर उजाले की तरफ़ लाता है, और जिन लोगों ने इंकार किया उनके दोस्त शैतान हैं, वे उन्हें उजाले से निकालकर अंधेरों की तरफ़ ले जाते हैं। ये आग में जाने वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (254-257)

क्या तुमने उसे नहीं देखा जिसने इब्राहीम से उसके रब के बारे में हुज्जत की। क्योंकि अल्लाह ने उसे सल्तनत दी थी। जब इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब वह है जो जिलाता और मारता है। वह बोला कि मैं भी जिलाता हूं और मारता हूं। इब्राहीम ने कहा कि अल्लाह सूरज को पूर्व से निकालता है तुम उसे पश्चिम से निकाल दो। तब वह मुंकिर हैरान रह गया। और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता। (258)

या जैसे वह शख़्स जिसका गुज़र एक बस्ती पर से हुआ। और वह अपनी छतों पर गिरी हुई थी। उसने कहा : हलाक हो जाने के बाद अल्लाह इस बस्ती को दुबारा कैसे ज़िंदा करेगा। फिर अल्लाह ने उस पर सौ वर्षों तक के लिए मौत तारी कर दी। फिर उसे उठाया। अल्लाह ने पूछा तुम कितनी देर

इस हालत में रहे। उसने कहा एक दिन या एक दिन से कुछ कम। अल्लाह ने कहा नहीं बल्कि तुम सौ वर्ष रहे हो। अब तुम अपने खाने-पीने की चीज़ों को देखो कि वे सड़ी नहीं हैं और अपने गधे को देखो। और ताकि हम तुम्हें लोगों के लिए एक निशानी बना दें। और हड्डियों की तरफ़ देखो, किस तरह हम उनका ढांचा खड़ा करते हैं। फिर उन पर गोश्त चढ़ाते हैं। पस जब उस पर वाज़ेह हो गया तो कहा मैं जानता हूं कि बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। और जब इब्राहीम ने कहा कि ऐ मेरे रब, मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को किस तरह ज़िंदा करेगा। अल्लाह ने कहा, क्या तुमने यक़ीन नहीं किया। इब्राहीम ने कहा क्यों नहीं, मगर इसलिए कि मेरे दिल को तस्कीन हो जाए। फ़रमाया तुम चार परिंदे लो और उन्हें अपने से हिला लो। फिर उनमें से हर एक को अलग-अलग पहाड़ी पर रख दो, फिर उन्हें बुलाओ। वे तुम्हारे पास दौड़ते हुए चले आएंगे। और जान लो कि अल्लाह ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है। (259-260)

जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक दाना हो जिससे सात बालें पैदा हों, हर बाली में सौ दानें हों। और अल्लाह बढ़ाता है जिसके लिए चाहता है। और अल्लाह वुस्अत (व्यापकता) वाला, जानने वाला है। जो लोग अपने माल को अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं फिर ख़र्च करने के बाद न एहसान रखते हैं और न तकलीफ़ पहुंचाते हैं उनके लिए उनके रब के पास उनका अज्र (प्रतिफल) है। और उनके लिए न कोई डर है और न वे ग़मगीन होंगे। मुनासिब बात कह देना और दरगुज़र (क्षमा) करना उस सदक़े से बेहतर है जिसके पीछे सताना हो। और अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है, तहम्मुल (संयम) वाला है। ऐ ईमान वालो! एहसान रखकर और सताकर अपने सदक़े को ज़ाया न करो, जिस तरह वह शख़्स जो अपना माल दिखावे के लिए ख़र्च करता है और वह अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखता। पस उसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक चट्टान हो जिस पर कुछ मिट्टी हो, फिर उस पर ज़ोर की बारिश हो जो उसे बिल्कुल साफ़ कर दे। ऐसे लोगों को अपनी कमाई कुछ भी हाथ नहीं

लगेगी। और अल्लाह इंकार करने वालों को राह नहीं दिखाता। (261-264)

और उन लोगों की मिसाल जो अपने माल को अल्लाह की रिज़ा चाहने के लिए और अपने नफ़्स में पुख़्तगी के लिए ख़र्च करते हैं एक बाग़ की तरह है जो बुलंदी पर हो। उस पर ज़ोर की बारिश पड़ी तो वह दोगुना फल लाया। और अगर ज़ोर की बारिश न पड़े तो हल्की फुवार भी काफ़ी है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। क्या तुममें से कोई यह पसंद करता है कि उसके पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, उसके नीचे नहरें बह रही हों। उसमें उसके लिए हर क़िस्म के फल हों। और वह बूढ़ा हो जाए और उसके बच्चे अभी कमज़ोर हों। तब उस बाग़ पर एक बगूला आए जिसमें आग हो। फिर वह बाग़ जल जाए। अल्लाह इस तरह तुम्हारे लिए खोलकर निशानियां बयान करता है ताकि तुम ग़ौर करो। (265-266)

ऐ ईमान वालो! ख़र्च करो उम्दा चीज़ को अपनी कमाई में से और उसमें से जो हमने तुम्हारे लिए ज़मीन में से पैदा किया है। और घटिया चीज़ का इरादा न करो कि उसमें से ख़र्च करो। हालाँकि तुम कभी इसे लेने वाले नहीं, यह और बात है कि चश्मपोशी कर जाओ। और जान लो कि अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है, ख़ूबियों वाला है। शैतान तुम्हें मोहताजी से डराता है और बुरी बात पर उभारता है और अल्लाह वादा देता है अपनी बख़्शिश का और फ़ज़्ल का और अल्लाह वुस्अत (व्यापकता) वाला है, जानने वाला है। वह जिसे चाहता है हिक्मत दे देता है और जिसे हिक्मत मिली उसे बड़ी दौलत मिल गई। और नसीहत वही हासिल करते हैं जो अक़्ल वाले हैं। (267-269)

और तुम जो ख़र्च करते हो या जो नज़्र (मन्नत) मानते हो उसे अल्लाह जानता है। और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। अगर तुम अपने सदक़ात ज़ाहिर करके दो तब भी अच्छा है और अगर तुम उन्हें छुपाकर मोहताजों को दो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है। और अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को दूर कर देगा और अल्लाह तुम्हारे कामों से वाक़िफ़ है। उन्हें हिदायत पर लाना तुम्हारा ज़िम्मा नहीं। बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है। और जो माल तुम ख़र्च करोगे अपने ही लिए करोगे। और तुम न ख़र्च करो मगर

अल्लाह की रिज़ा चाहने के लिए। और तुम जो माल ख़र्च करोगे वह तुम्हें पूरा कर दिया जाएगा और तुम्हारे लिए इसमें कमी नहीं की जाएगी। ये उन हाजतमंदों के लिए हैं जो अल्लाह की राह में घिर गए हों, ज़मीन में दौड़ धूप नहीं कर सकते। नावाक़िफ़ आदमी उन्हें ग़नी ख़्याल करता है उनके न मांगने की वजह से। तुम उन्हें उनकी सूरत में पहचान सकते हो। वे लोगों से लिपटकर नहीं मांगते। और जो माल तुम ख़र्च करोगे वह अल्लाह को मालूम है। जो लोग अपने मालों को रात और दिन, छुपे और खुले ख़र्च करते हैं, उनके लिए उनके रब के पास अज्र है। और उनके लिए न ख़ौफ़ है और न वे ग़मगीन होंगे। (270-274)

जो लोग सूद खाते हैं वे क़ियामत में न उठेंगे मगर उस शख़्स की तरह जिसे शैतान ने छूकर ख़बती बना दिया हो। यह इसलिए कि उन्होंने कहा कि तिजारत करना भी वैसा ही है जैसा सूद लेना। हालाँकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल ठहराया है और सूद को हराम किया है। फिर जिस शख़्स के पास उसके रब की तरफ़ से नसीहत पहुंची और वह इससे रुक गया तो जो कुछ वह ले चुका वह उसके लिए है। और उसका मामला अल्लाह के हवाले है। और जो शख़्स फिर वही करे तो वही लोग दोज़ख़ी हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। अल्लाह सूद को घटाता है और सदक़ात को बढ़ाता है। और अल्लाह पसंद नहीं करता नाशुक्रों को, गुनाहगारों को। बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए और नमाज़ की पाबंदी की और ज़कात अदा की, उनके लिए उनका अज्र है उनके रब के पास। उनके लिए न कोई अंदेशा है और न वे ग़मगीन होंगे। (275-277)

ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और जो सूद बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो, अगर तुम मोमिन हो। अगर तुम ऐसा नहीं करते तो अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से लड़ाई के लिए ख़बरदार हो जाओ। और अगर तुम तौबा कर लो तो अस्ल रक़म के तुम हक़दार हो, न तुम किसी पर ज़ुल्म करो और न तुम पर ज़ुल्म किया जाए। और अगर एक शख़्स तंगी वाला है तो उसकी फ़राख़ी तक मोहलत दो। और अगर माफ़ कर दो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा

बेहतर है, अगर तुम समझो। और उस दिन से डरो जिस दिन तुम अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाओगे। फिर हर शख़्स को उसका किया हुआ पूरा-पूरा मिल जाएगा। और उन पर ज़ुल्म न होगा। (278-281)

ऐ ईमान वालो, जब तुम किसी निर्धारित मुद्दत के लिए उधार का लेने-देन करो तो उसे लिख लिया करो। और इसे लिखे तुम्हारे दर्मियान कोई लिखने वाला इंसाफ़ के साथ। और लिखने वाला लिखने से इंकार न करे, जैसा अल्लाह ने उसे सिखाया उसी तरह उसे चाहिए कि लिख दे। और वह शख़्स लिखवाए जिस पर अदायगी का हक़ आता है। और वह डरे अल्लाह से जो उसका रब है और इसमें कोई कमी न करे। और अगर वह शख़्स जिस पर अदायगी का हक़ आता है बेसमझ हो, या कमज़ोर हो या ख़ुद लिखवाने की क़ुदरत न रखता हो तो चाहिए कि उसका वली (संरक्षक) इंसाफ़ के साथ लिखवा दे। और अपने मर्दों में से दो आदमियों को गवाह कर लो। और अगर दो मर्द न हों तो फिर एक मर्द और दो औरतें, उन लोगों में से जिन्हें तुम पसंद करते हो। ताकि अगर एक औरत भूल जाए तो दूसरी औरत उसे याद दिला दे। और गवाह इंकार न करें जब वे बुलाए जाएं। और मामला छोटा हो या बड़ा, मीआद (अवधि) के निर्धारण के साथ इसे लिखने में काहिली न करो। यह लिख लेना अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इंसाफ़ का तरीक़ा है और गवाही को ज़्यादा दुरुस्त रखने वाला है और ज़्यादा संभावना है कि तुम शुबह में न पड़ो। लेकिन अगर कोई सौदा नक़द हो जिसका तुम आपस में लेन-देन किया करते हो तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि तुम उसे न लिखो। मगर जब यह सौदा करो तो गवाह बना लिया करो। और किसी लिखने वाले को या गवाह को तकलीफ़ न पहुंचाई जाए। और अगर ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिए गुनाह की बात होगी। और अल्लाह से डरो अल्लाह तुम्हें सिखाता है और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। और अगर तुम सफ़र में हो और कोई लिखने वाला न पाओ तो रहन (गिरवी) रखने की चीज़ें क़ब्ज़े में दे दी जाएं। और अगर एक-दूसरे का एतबार करता हो तो चाहिए कि जिस पर एतबार किया गया वह एतबार को पूरा करे। और अल्लाह से डरे जो उसका रब है।

और गवाही को न छुपाओ और जो शख़्स छुपाएगा उसका दिल गुनाहगार होगा। और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे जानने वाला है। (282-283)

अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है। तुम अपने दिल की बातों को ज़ाहिर करो या छुपाओ, अल्लाह तुमसे इसका हिसाब लेगा। फिर जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा सज़ा देगा। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। रसूल ईमान लाया है उस पर जो उसके रब की तरफ़ से उस पर उतरा है। और मुसलमान भी उस पर ईमान लाए हैं। सब ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर। हम उसके रसूलों में से किसी के दर्मियान फ़र्क़ नहीं करते। और वे कहते हैं कि हमने सुना और माना। हम तेरी बख़्शिश चाहते हैं ऐ हमारे रब। और तेरी ही तरफ़ लौटना है। अल्लाह किसी पर ज़िम्मेदारी नहीं डालता मगर उसकी ताक़त के मुताबिक़। उसे मिलेगा वही जो उसने कमाया और उस पर पड़ेगा वही जो उसने किया। ऐ हमारे रब! हमें न पकड़ अगर हम भूलें या हम ग़लती कर जाएं। ऐ हमारे रब! हम पर बोझ न डाल जैसा तूने डाला था हमसे अगलों पर। ऐ हमारे रब! हमसे वह न उठवा जिसकी ताक़त हममें नहीं। और दरगुज़र कर हमसे। और हमें बख़्श दे और हम पर रहम कर। तू हमारा कारसाज़ है। पस इंकार करने वालों के मुक़ाबले में हमारी मदद कर। (284-286)

सूरह-3. आले-इमरान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़० लाम० मीम०। अल्लाह उसके सिवा कोई माबूद नहीं, ज़िंदा और सबका थामने वाला। उसने तुम पर किताब उतारी हक़ के साथ, सच्चा करने वाली उस चीज़ को जो उसके आगे है और उसने तौरात और इंजील उतारी इससे पहले लोगों की हिदायत के लिए और अल्लाह ने फ़ुरक़ान उतारा। बेशक जिन लोगों ने अल्लाह की निशानियों का इंकार किया उनके लिए सख़्त अज़ाब है और अल्लाह ज़बरदस्त है, बदला लेने वाला है। बेशक अल्लाह से

कोई चीज़ छुपी हुई नहीं न ज़मीन में और न आसमान में। वही तुम्हारी सूरत बनाता है मां के पेट में जिस तरह चाहता है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं वह ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है। (1-6)

वही है जिसने तुम्हारे ऊपर किताब उतारी। इसमें कुछ आयतें मोहकम (सुदृढ़, सुस्पष्ट) हैं, वे किताब की अस्ल हैं। और दूसरी आयतें मुताशाबह (संदेहास्पद, अस्पष्ट) हैं। पस जिनके दिलों में टेढ़ है वे मुताशाबह आयतों के पीछे पड़ जाते हैं फ़ितने की तलाश में और इनके अर्थों की तलाश में। हालाँकि इनका अर्थ अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। और जो लोग पुख़्ता इल्म वाले हैं वे कहते हैं कि हम उन पर ईमान लाए। सब हमारे रब की तरफ़ से है। और नसीहत वही लोग क़ुबूल करते हैं जो अक़्ल वाले हैं। ऐ हमारे रब, हमारे दिलों को न फेर जबकि तू हमें हिदायत दे चुका। और हमें अपने पास से रहमत दे। बेशक तू ही सब कुछ देने वाला है। ऐ हमारे रब, तू जमा करने वाला है लोगों को एक दिन जिसमें कोई शुबह नहीं। बेशक अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (7-9)

बेशक जिन लोगों ने इंकार किया, उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह के मुक़ाबले में उनके कुछ काम न आएंगे और यही लोग आग के ईंधन बनेंगे। इनका अंजाम वैसा ही होगा जैसा फ़िरऔन वालों का और इनसे पहले वालों का हुआ। उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया। इस पर अल्लाह ने उनके गुनाहों के सबब उन्हें पकड़ लिया। और अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है। इंकार करने वालों से कह दो कि अब तुम मग़लूब किए जाओगे और जहन्नम की तरफ़ जमा करके ले जाए जाओगे और जहन्नम बहुत बुरा ठिकाना है। बेशक तुम्हारे लिए निशानी है उन दो गिरोहों में जिनमें (बद्र में) मुठभेड़ हुई। एक गिरोह अल्लाह की राह में लड़ रहा था और दूसरा मुंकिर था। ये मुंकिर खुली आंखों से उन्हें दोगुना देखते थे। और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी मदद का ज़ोर दे देता है। इसमें आंख वालों के लिए बड़ा सबक़ है। (10-13)

लोगों के लिए ख़ुशनुमा कर दी गई है मुहब्बत ख़्वाहिशों की— औरतें, बेटे, सोने-चांदी के ढेर, निशान लगे हुए घोड़े, मवेशी और खेती। ये दुनियावी

ज़िंदगी के सामान हैं। और अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है। कहो, क्या मैं तुम्हें बताऊं इससे बेहतर चीज़। उन लोगों के लिए जो डरते हैं, उनके रब के पास बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। वे इनमें हमेशा रहेंगे। और सुथरी बीवियां होंगी और अल्लाह की रिज़ामंदी होगी। और अल्लाह की निगाह में हैं उसके बंदे, जो कहते हैं ऐ हमारे रब, हम ईमान ले आए। पस तू हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा। वे सब्र करने वाले हैं और सच्चे हैं, फ़रमांबरदार हैं और ख़र्च करने वाले हैं और पिछली रात को मग़्फ़िरत (क्षमा) मांगने वाले हैं। (14-17)

अल्लाह की गवाही है और फ़रिश्तों की और अहले-इल्म की कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह क़ायम रखने वाला है इंसाफ़ का। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है। दीन अल्लाह के नज़दीक सिर्फ़ इस्लाम है। और अहले-किताब ने इसमें जो इख़्तेलाफ़ (मतभेद) किया वह आपस की ज़िद की वजह से किया, बाद इसके कि उन्हें सही इल्म पहुंच चुका था। और जो अल्लाह की आयतों का इंकार करे तो अल्लाह यक़ीनन जल्द हिसाब लेने वाला है। फिर अगर वे तुमसे इस बारे में झगड़ें तो उनसे कह दो कि मैं अपना रुख़ अल्लाह की तरफ़ कर चुका। और जो मेरे पैरोकार हैं वे भी। और अहले-किताब से और अनपढ़ों से पूछो, क्या तुम भी इसी तरह इस्लाम लाते हो। अगर वे इस्लाम लाएं तो उन्होंने राह पा ली। और अगर वे फिर जाएं तो तुम्हारे ऊपर सिर्फ़ पहुंचा देना है। और अल्लाह की निगाह में हैं उसके बंदे। जो लोग अल्लाह की निशानियों का इंकार करते हैं और पैग़म्बरों को नाहक़ क़त्ल करते हैं और उन लोगों को मार डालते हैं जो लोगों में से इंसाफ़ की दावत लेकर उठते हैं, इन्हें एक दर्दनाक सज़ा की ख़ुशख़बरी दे दो। यही वे लोग हैं जिनके आमाल दुनिया और आख़िरत में ज़ाया (विनष्ट) हो गए और उनका मददगार कोई नहीं। (18-22)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें अल्लाह की किताब का एक हिस्सा दिया गया था। उन्हें अल्लाह की किताब की तरफ़ बुलाया जा रहा है कि वह उनके दर्मियान फ़ैसला करे। फिर उनका एक गिरोह मुंह फेर लेता

है बेरुख़ी करते हुए। यह इस सबब से कि वे लोग कहते हैं कि हमें हरगिज़ आग न छुएगी सिवाए गिने हुए कुछ दिनों के। और उनकी बनाई हुई बातों ने उन्हें उनके दीन के बारे में धोखे में डाल दिया है। फिर उस वक़्त क्या होगा जब हम उन्हें जमा करेंगे एक दिन जिसके आने में कोई शक नहीं। और हर शख़्स को जो कुछ उसने किया है, इसका पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। तुम कहो, ऐ अल्लाह, सल्तनत के मालिक तू जिसे चाहे सल्तनत दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले। और तू जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील करे। तेरे हाथ में है सब ख़ूबी। बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है। तू रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है। और तू बेजान से जानदार को निकालता है और तू जानदार से बेजान को निकालता है। और तू जिसे चाहता है बेहिसाब रिज़्क़ देता है। (23-27)

मुसलमानों को चाहिए कि मुसलमानों को छोड़कर हक़ का इंकार करने वालों को दोस्त न बनाएं। और जो शख़्स ऐसा करेगा तो अल्लाह से उसका कोई तअल्लुक़ नहीं। मगर ऐसी हालत में कि तुम उनसे बचाव करना चाहो। और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी ज़ात से। और अल्लाह ही की तरफ़ लौटना है। कह दो कि जो कुछ तुम्हारे सीनों में है उसे छुपाओ या ज़ाहिर करो, अल्लाह उसे जानता है। और वह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। जिस दिन हर शख़्स अपनी की हुई नेकी को अपने सामने मौजूद पाएगा, और जो बुराई की होगी उसे भी। उस दिन हर आदमी यह चाहेगा कि काश अभी यह दिन उससे बहुत दूर होता। और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी ज़ात से। और अल्लाह अपने बंदों पर बहुत महरबान है। कहो, अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुमसे मुहब्बत करेगा। और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा। अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, बड़ा महरबान है। कहो, अल्लाह की इताअत करो और रसूल की। फिर अगर वे मुंह मोड़ें तो अल्लाह हक़ का इंकार करने वालों को दोस्त नहीं रखता। (28-32)

बेशक अल्लाह ने आदम को और नूह को और आले-इब्राहीम को और आले-इमरान को सारे आलम के ऊपर मुंतख़ब किया है। ये एक-दूसरे की औलाद हैं। और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। जब इमरान की बीवी ने कहा ऐ मेरे रब! मैंने नज़्र (अर्पित) किया तेरे लिए जो मेरे पेट में है वह आज़ाद रखा जाएगा। पस तू मुझसे क़ुबूल कर बेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। फिर जब उसने बच्चा जन्मा तो उसने कहा ऐ मेरे रब! मैंने तो लड़की को जन्मा है और अल्लाह ख़ूब जानता है कि उसने क्या जन्मा है और लड़का नहीं होता लड़की की मानिंद। और मैंने उसका नाम मरयम रखा है और मैं उसे और उसकी औलाद को शैतान मरदूद से तेरी पनाह में देती हूं। पस उसके रब ने उसे अच्छी तरह क़ुबूल किया और उसे उम्दा तरीक़े से परवान चढ़ाया और ज़करिया को उसका सरपरस्त बनाया। जब कभी ज़करिया उनके पास हुजरे में आता तो वहां रिज़्क़ पाता। उसने पूछा ऐ मरयम! ये चीज़ तुम्हें कहां से मिलती है। मरयम ने कहा यह अल्लाह के पास से है बेशक अल्लाह जिसको चाहता है बेहिसाब रिज़्क़ दे देता है। उस वक़्त ज़करिया ने अपने रब को पुकारा। उसने कहा ऐ मेरे रब! मुझे अपने पास से पाकीज़ा औलाद अता कर बेशक तू दुआ का सुनने वाला है। फिर फ़रिश्तों ने उसे आवाज़ दी जबकि वह हुजरे में खड़ा हुआ नमाज़ पढ़ रहा था कि अल्लाह तुझे याहया की ख़ुशख़बरी देता है जो अल्लाह के कलिमे की तस्दीक़ करने वाला होगा और सरदार होगा और अपने नफ़्स को रोकने वाला होगा और नबी होगा नेकों में से। ज़करिया ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे लड़का किस तरह होगा हालाँकि मैं बूढ़ा हो चुका और मेरी औरत बांझ है। फ़रमाया उसी तरह अल्लाह कर देता है जो वह चाहता है। ज़करिया ने कहा कि ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी मुक़र्रर कर दे। कहा तुम्हारे लिए निशानी यह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से बात न कर सकोगे मगर इशारे से और अपने रब को कसरत से याद करते रहो और शाम व सुबह उसकी तस्बीह करो। और जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम! अल्लाह ने तुम्हें मुंतख़ब किया और तुम्हें पाक किया और तुम्हें दुनिया भर की औरतों के मुक़ाबले में मुंतख़ब किया है (चुना

है)। ऐ मरयम! अपने रब की फ़रमांबरदारी करो और सज्दा करो और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करो। यह ग़ैब की ख़बरे हैं जो हम तुम्हें 'वही' (अवतरित) कर रहे हैं और तुम उनके पास मौजूद न थे जब वे अपने क़ुरअे डाल रहे थे कि कौन मरयम की सरपरस्ती करे और न तुम उस वक़्त उनके पास मौजूद थे जब वे आपस में झगड़ रहे थे। (33-44)

जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम, अल्लाह तुम्हें ख़ुशख़बरी देता है अपनी तरफ़ से एक कलिमे की। उसका नाम मसीह ईसा बिन मरयम होगा। वह दुनिया और आख़िरत में मर्तबे वाला होगा और अल्लाह के मुक़र्रब बंदों में होगा। वह लोगों से बातें करेगा जब मां की गोद में होगा और जब पूरी उम्र का होगा। और वह सालेहीन (सज्जनों) में से होगा। मरयम ने कहा ऐ मेरे रब, मेरे किस तरह लड़का होगा जबकि किसी मर्द ने मुझे हाथ नहीं लगाया। फ़रमाया उसी तरह अल्लाह पैदा करता है जो चाहता है। जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो उसे कहता है कि हो जा और वह हो जाता है। और अल्लाह उसे किताब और हिक्मत और तौरात और इंजील सिखाएगा और वह रसूल होगा बनी इस्राईल की तरफ़ कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की निशानी लेकर आया हूं। मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिंदे की आकृति बनाता हूं, फिर उसमें फूंक मारता हूं तो वह अल्लाह के हुक्म से वाक़ई परिंदा बन जाती है। और मैं अल्लाह के हुक्म से जन्मजात अंधे और कोढ़ी को अच्छा करता हूं। और मैं अल्लाह के हुक्म से मुर्दे को जिंदा करता हूं। और मैं तुम्हें बताता हूं कि तुम क्या खाते हो और अपने घरों में क्या ज़ख़ीरा करते हो। बेशक इसमें तुम्हारे लिए निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो। और मैं तस्दीक़ करने वाला हूं तौरात की जो मुझसे पहले की है और मैं इसलिए आया हूं कि कुछ उन चीज़ों को तुम्हारे लिए हलाल ठहराऊं जो तुम पर हराम कर दी गई हैं। और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूं। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। बेशक अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा भी। पस उसकी इबादत करो, यही सीधी राह है। (45-51)

फिर जब ईसा ने उनका इंकार देखा तो कहा कि कौन मेरा मददगार बनता

है अल्लाह की राह में। हवारियों ने कहा कि हम हैं अल्लाह के मददगार। हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर और आप गवाह रहिए कि हम फ़रमांबरदार हैं। ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए उस पर जो तूने उतारा, और हमने रसूल की पैरवी की। पस तू लिख ले हमें गवाही देने वालों में। और उन्होंने ख़ुफ़िया तदबीर की और अल्लाह ने भी ख़ुफ़िया तदबीर की। और अल्लाह सबसे बेहतर तदबीर करने वाला है। जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा! मैं तुम्हें वापस लेने वाला हूं और तुम्हें अपनी तरफ़ उठा लेने वाला हूं और जिन लोगों ने इंकार किया है उनसे तुम्हें पाक करने वाला हूं। और जो तुम्हारे पैरोकार हैं उन्हें क़ियामत तक उन लोगों पर ग़ालिब करने वाला हूं जिन्होंने तुम्हारा इंकार किया है। फिर मेरी तरफ़ होगी सबकी वापसी। पस मैं तुम्हारे दर्मियान उन चीज़ों के बारे में फ़ैसला करूंगा जिनमें तुम झगड़ते थे। फिर जो लोग मुंकिर हुए उन्हें सख़्त अज़ाब दूंगा दुनिया में और आख़िरत में और उनका कोई मददगार न होगा। और जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उन्हें अल्लाह उनका पूरा अज्र देगा और अल्लाह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। यह हम तुम्हें सुनाते हैं अपनी आयतें और हिक्मत भरी बातें। (52-58)

बेशक ईसा की मिसाल अल्लाह के नज़दीक आदम की-सी है। अल्लाह ने उसे मिट्टी से बनाया। फिर उसको कहा कि हो जा तो वह हो गया। हक़ बात है तेरे रब की तरफ़ से। पस तुम न हो शक करने वालों में। फिर जो तुमसे इस बारे में हुज्जत करे बाद इसके कि तुम्हारे पास इल्म आ चुका है तो उनसे कहो कि आओ, हम बुलाएं अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को, अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को। और हम और तुम ख़ुद भी जमा हों। फिर हम मिलकर दुआ करें कि जो झूठा हो उस पर अल्लाह की लानत हो। बेशक यह सच्चा बयान है। और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह ही ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है। फिर अगर वे क़ुबूल न करें तो अल्लाह फसाद करने वालों को जानता है। (59-63)

कहो ऐ अहले-किताब, आओ एक ऐसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान मुसल्लम (साझी) है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत

न करें और अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराएं। और हममें से कोई किसी दूसरे को अल्लाह के सिवा रब न बनाए। फिर अगर वे इससे मुंह मोड़ें तो कह दो कि तुम गवाह रहो, हम फ़रमांबरदार हैं। ऐ अहले-किताब, तुम इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो। हालाँकि तौरात और इंजील तो उसके बाद उतरी हैं। क्या तुम इसे नहीं समझते। तुम वे लोग हो कि तुम उस बात के बारे में झगड़े जिसका तुम्हें कुछ इल्म था। अब तुम ऐसी बात में क्यों झगड़ते हो जिसका तुम्हें कोई इल्म नहीं। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते। इब्राहीम न यहूदी था और न नसरानी। बल्कि सिर्फ़ अल्लाह का ही रहे वाला मुस्लिम था और वह शिर्क करने वालों में से न था। लोगों में ज़्यादा मुनासिबत इब्राहीम से उन्हें है जिन्होंने उसकी पैरवी की और यह पैग़म्बर और जो उस पर ईमान लाए। और अल्लाह ईमान वालों का साथी है। अहले-किताब में से एक गिरोह चाहता है कि किसी तरह तुम्हें गुमराह कर दे। हालाँकि वे नहीं गुमराह करते मगर ख़ुद अपने आपको। मगर वे इसका एहसास नहीं करते। ऐ अहले-किताब, अल्लाह की निशानियों का क्यों इंकार करते हो हालाँकि तुम गवाह हो। ऐ अहले-किताब, तुम क्यों सही में ग़लत को मिलाते हो और हक़ को छुपाते हो, हालाँकि तुम जानते हो। (64-71)

और अहले-किताब के एक गिरोह ने कहा कि मुसलमानों पर जो चीज़ उतारी गई है उस पर सुबह को ईमान लाओ और शाम को उसका इंकार कर दो, शायद कि मुसलमान भी इससे फिर जाएं। और यक़ीन न करो मगर सिर्फ़ उसका जो चले तुम्हारे दीन पर। कहो हिदायत वही है जो अल्लाह हिदायत करे। और यह उसी की देन है कि किसी को वही कुछ दे दिया जाए जो तुम्हें दिया गया था। या वे तुमसे तुम्हारे रब के यहां हुज्जत करें। कहो बड़ाई अल्लाह के हाथ में है। वह जिसे चाहता है देता है और अल्लाह बड़ा वुस्अत वाला है, इल्म वाला है। वह जिसे चाहता है अपनी रहमत के लिए ख़ास कर लेता है। और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है। और अहले-किताब में कोई ऐसा भी है कि अगर तुम उसके पास अमानत का ढेर रखो तो वह उसे तुम्हें अदा कर दे। और इनमें कोई ऐसा है कि अगर तुम उसके पास एक दीनार अमानत

रख दो तो वह तुम्हें अदा न करे इल्ला यह कि तुम उसके सिर पर खड़े हो जाओ, यह इस सबब से कि वे कहते हैं कि ग़ैर-अहले-किताब के बारे में हम पर कोई इल्ज़ाम नहीं। और वे अल्लाह के ऊपर झूठ लगाते हैं हालाँकि वे जानते हैं। बल्कि जो शख़्स अपने अहद को पूरा करे और अल्लाह से डरे तो बेशक अल्लाह ऐसे मुत्तक़ियों को दोस्त रखता है। (72-76)

जो लोग अल्लाह के अहद और अपनी क़समों को थोड़ी क़ीमत पर बेचते हैं उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं। अल्लाह न उनसे बात करेगा न उनकी तरफ़ देखेगा क़ियामत के दिन, और न उन्हें पाक करेगा। और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। और इनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपनी ज़बानों को किताब में मोड़ते हैं ताकि तुम उसे किताब में से समझो हालाँकि वह किताब में से नहीं। और वे कहते हैं कि यह अल्लाह की जानिब से है हालाँकि वह अल्लाह की जानिब से नहीं। और वे जानकर अल्लाह पर झूठ बोलते हैं। किसी इंसान का यह काम नहीं कि अल्लाह उसे किताब और हिक्मत और नुबुव्वत दे और वह लोगों से यह कहे कि तुम अल्लाह को छोड़कर मेरे बंदे बन जाओ। बल्कि वह तो कहेगा कि तुम अल्लाह वाले बनो, इस वास्ते कि तुम दूसरों को किताब की तालीम देते हो और ख़ुद भी उसे पढ़ते हो। और न वह तुम्हें यह हुक्म देगा कि तुम फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को रब बनाओ। क्या वह तुम्हें कुफ़्र का हुक्म देगा, बाद इसके कि तुम इस्लाम ला चुके हो। (77-80)

और जब अल्लाह ने पैग़म्बरों का अहद लिया कि जो कुछ मैंने तुम्हें किताब और हिक्मत दी, फिर तुम्हारे पास पैग़म्बर आए जो सच्चा साबित करे उन पेशेनगोइयों (भविष्यवाणियों) को जो तुम्हारे पास हैं तो तुम उस पर ईमान लाओगे और उसकी मदद करोगे। अल्लाह ने कहा क्या तुमने इक़रार किया और उस पर मेरा अहद क़ुबूल किया। उन्होंने कहा हम इक़रार करते हैं। फ़रमाया अब गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूं। पस जो शख़्स फिर जाए तो ऐसे ही लोग नाफ़रमान हैं। क्या ये लोग अल्लाह के दीन के सिवा कोई और दीन चाहते हैं। हालाँकि उसी के हुक्म में है जो कोई आसमान और ज़मीन में है, ख़ुशी से या नाख़ुशी से और सब उसी की तरफ़ लौटाए

जाएंगे। कहो हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस पर जो हमारे ऊपर उतारा गया है और जो उतारा गया इब्राहीम पर, इस्माईल पर, इस्हाक़ पर और याक़ूब पर और याक़ूब की औलाद पर। और जो दिया गया मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को उनके रब की तरफ़ से। हम इनके दर्मियान फ़र्क़ नहीं करते। और हम उसी के फ़रमांबरदार हैं। और जो शख़्स इस्लाम के सिवा किसी दूसरे दीन को चाहेगा तो वह उससे हरगिज़ क़ुबूल नहीं किया जाएगा और वह आख़िरत में नामुरादों में से होगा। अल्लाह क्योंकर ऐसे लोगों को हिदायत देगा जो ईमान लोने के बाद मुंकिर हो गए। हालाँकि वे गवाही दे चुके कि यह रसूल बरहक़ है और उनके पास रोशन निशानियां आ चुकी हैं। और अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता। ऐसे लोगों की सज़ा यह है कि उन पर अल्लाह की, उसके फ़रिश्तों की और सारे इंसानों की लानत होगी। वे इसमें हमेशा रहेंगे, न उनका अज़ाब हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। अलबत्ता जो लोग इसके बाद तौबा कर लें और अपनी इस्लाह कर लें तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। बेशक जो लोग ईमान लाने के बाद मुंकिर हो गए फिर कुफ्र में बढ़ते रहे, उनकी तौबा हरगिज़ क़ुबूल न की जाएगी और यही लोग गुमराह हैं। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और इंकार की हालत में मर गए, अगर वे ज़मीन भर सोना भी फ़िदये में दें तो क़ुबूल नहीं किया जाएगा। उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है और उनका कोई मददगार न होगा। (81-91)

तुम हरगिज़ नेकी के मर्तबे को नहीं पहुंच सकते जब तक तुम उन चीज़ों में से ख़र्च न करो जिन्हें तुम महबूब रखते हो। और जो चीज़ भी तुम ख़र्च करोगे उससे अल्लाह बाख़बर है। सब खाने की चीज़ें बनी इस्राईल के लिए हलाल थीं सिवाए उसके जो इस्राईल ने अपने ऊपर हराम कर लिया था इससे पहले कि तौरात उतरे। कहो कि तौरात लाओ और उसे पढ़ो, अगर तुम सच्चे हो। इसके बाद भी जो लोग अल्लाह पर झूठ बांधें वही ज़ालिम हैं। कहो अल्लाह ने सच कहा। अब इब्राहीम के दीन की पैरवी करो जो हनीफ़ था और वह शिर्क करने वाला न था। बेशक पहला घर जो लोगों के लिए

बनाया गया वह वही है जो मक्का में है, बरकत वाला और सारे जहान के लिए हिदायत का मर्कज़। इसमें खुली हुई निशानियां हैं, मक़ामे-इब्राहीम है, जो इसमें दाख़िल हो जाए वह मामून (सुरक्षित) है। और लोगों पर अल्लाह का यह हक़ है कि जो इस घर तक पहुंचने की ताक़त रखता हो वह इसका हज करे और जो कोई मुंकिर हुआ तो अल्लाह तमाम दुनिया वालों से बेनियाज़ है। कहो ऐ अहले-किताब! तुम क्यों अल्लाह की निशानियों का इंकार करते हो। हालाँकि अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। कहो ऐ अहले-किताब! तुम ईमान लाने वालों को अल्लाह की राह से क्यों रोकते हो। तुम उसमें ऐब ढूंढ़ते हो। हालाँकि तुम गवाह बनाए गए हो। और अल्लाह तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं। (92-99)

ऐ ईमान वालो! अगर तुम अहले-किताब में से एक गिरोह की बात मान लोगे तो वे तुम्हें ईमान के बाद फिर मुंकिर बना देंगे। और तुम किस तरह इंकार करोगे हालाँकि तुम्हें अल्लाह की आयतें सुनाई जा रही हैं और तुम्हारे दर्मियान उसका रसूल मौजूद है। और जो शख़्स अल्लाह को मज़बूती से पकड़ेगा तो वह पहुंच गया सीधी राह पर। ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरना चाहिए। और तुम्हें मौत न आए मगर इस हाल में कि तुम मुस्लिम हो। और सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मज़बूत पकड़ लो और फूट न डालो। और अल्लाह का यह इनाम अपने ऊपर याद रखो कि तुम एक-दूसरे के दुश्मन थे। फिर उसने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त डाल दी। पस तुम उसके फ़ज़्ल से भाई-भाई बन गए। और तुम आग के गड्ढे के किनारे खड़े थे तो अल्लाह ने तुम्हें उससे बचा लिया। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी निशानियां बयान करता है ताकि तुम राह पाओ। (100-103)

और ज़रूर है कि तुममें एक गिरोह हो जो नेकी की तरफ़ बुलाए, भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके और ऐसे ही लोग कामयाब होंगे। और उन लोगों की तरह न हो जाना जो फ़िरक़ों में बंट गए और आपस में इख़्तेलाफ़ (मतभेद) कर लिया बाद इसके कि उनके पास वाज़ेह हुक्म आ चुके थे। और उनके लिए बड़ा अज़ाब है। जिस दिन कुछ चेहरे रोशन होंगे और कुछ चेहरे

काले होंगे, तो जिनके चेहरे काले होंगे उनसे कहा जाएगा क्या तुम अपने ईमान के बाद मुंकिर हो गए, तो अब चखो अज़ाब अपने कुफ्र के सबब से। और जिनके चेहरे रोशन होंगे वे अल्लाह की रहमत में होंगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे। ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम्हें हक़ के साथ सुना रहे हैं और अल्लाह जहान वालों पर ज़ुल्म नहीं चाहता। और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह के लिए है और सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (104-109)

अब तुम बेहतरीन गिरोह हो जिसे लोगों के लिए निकाला गया है। तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर अहले-किताब भी ईमान लाते तो उनके लिए बेहतर होता। इनमें से कुछ ईमान वाले हैं और इनमें अक्सर नाफ़रमान हैं। वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते मगर कुछ सताना। और अगर वे तुमसे मुक़ाबला करेंगे तो तुम्हें पीठ दिखाएंगे। फिर उन्हें मदद भी न पहुंचेगी और उन पर मुसल्लत कर दी गई ज़िल्लत चाहे वे कहीं भी पाए जाएं, सिवा इसके कि अल्लाह की तरफ़ से कोई अहद (वचन) हो या लोगों की तरफ़ से कोई अहद हो और वे अल्लाह के ग़ज़ब के मुस्तहिक़ हो गए और उन पर मुसल्लत कर दी गई पस्ती, यह इसलिए कि वे अल्लाह की निशानियों का इंकार करते रहे और उन्होंने पैग़म्बरों को नाहक़ क़त्ल किया। यह इस सबब से हुआ कि उन्होंने नाफ़रमानी की और वे हद से निकल जाते थे। (110-112)

सब अहले-किताब एक जैसे नहीं। इनमें एक गिरोह अहद पर क़ायम है। वे रातों को अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और वे सज्दा करते हैं। वे अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, और भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं और नेक कामों में दौड़ते हैं। ये सालेह (नेक) लोग हैं जो नेकी भी वे करेंगे उसकी नाक़द्री न की जाएगी और अल्लाह परहेज़गारों को ख़ूब जानता है। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया तो अल्लाह के मुक़ाबले में उनके माल और औलाद उनके कुछ काम न आएंगे। और वे लोग दोज़ख़ वाले हैं वे इसमें हमेशा रहेंगे। वे इस दुनिया की ज़िंदगी में जो कुछ ख़र्च करते

हैं उसकी मिसाल उस हवा की सी है जिसमें पाला हो और वह उन लोगों की खेती पर चले जिन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया है फिर वह उसको बर्बाद कर दे। अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वे .ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं। (113-117)

ऐ ईमान वालो, अपने ग़ैर को अपना राज़दार न बनाओ, वे तुम्हें नुक़सान पहुंचाने में कोई कमी नहीं करते। उन्हें .ख़ुशी होती है तुम जितनी तकलीफ़ पाओ। उनकी अदावत उनकी ज़बान से निकल पड़ती है जो उनके दिलों में है वह इससे भी सख़्त है, हमने तुम्हारे लिए निशानियां खोलकर ज़ाहिर कर दीं हैं अगर तुम अक़्ल रखते हो। तुम उनसे मुहब्बत रखते हो मगर वे तुमसे मुहब्बत नहीं रखते। हालाँकि तुम सब आसमानी किताबों को मानते हो। और वे जब तुमसे मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए और जब आपस में मिलते हैं तो तुम पर ग़ुस्से से उंगलियां काटते हैं। कहो कि तुम अपने ग़ुस्से में मर जाओ। बेशक अल्लाह दिलों की बात को जानता है। अगर तुम्हें कोई अच्छी हालत पेश आती है तो उन्हें रंज होता है और अगर तुम पर कोई मुसीबत आती है तो वे इससे .ख़ुश होते हैं। अगर तुम सब्र करो और अल्लाह से डरो तो उनकी कोई तदबीर तुम्हें कोई नुक़सान न पहुंचा सकेगी। जो कुछ वे कर रहे हैं सब अल्लाह के बस में है। (118-120)

जब तुम सुबह को अपने घर से निकले और मुसलमानों को जंग के मक़ामात पर तैनात किया और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। जब तुममें से दो जमाअतों ने इरादा किया कि हिम्मत हार दें और अल्लाह इन दोनों जमाअतों पर मददगार था। और मुसलमानों को चाहिए कि अल्लाह पर ही भरोसा करें। और अल्लाह तुम्हारी मदद कर चुका है बद्र में जबकि तुम कमज़ोर थे। पस अल्लाह से डरो ताकि तुम शुक्रगुज़ार रहो। जब तुम मुसलमानों से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तीन हज़ार फ़रिश्ते उतारकर तुम्हारी मदद करे। अगर तुम सब्र करो और अल्लाह से डरो और दुश्मन तुम्हारे ऊपर अचानक आ पहुंचे तो तुम्हारा रब पांच हज़ार निशान किए हुए फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा। और यह अल्लाह

ने इसलिए किया ताकि तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी हो और तुम्हारे दिल इससे मुतमइन हो जाएं और मदद सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से है जो ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है, ताकि अल्लाह मुंकिरों के एक हिस्से को काट दे या उन्हें ज़लील कर दे कि वे नाकाम लौट जाएं। तुम्हें इस मामले में कोई दख़ल नहीं। अल्लाह इनकी तौबा क़ुबूल करे या उन्हें अज़ाब दे, क्योंकि वे ज़ालिम हैं। और अल्लाह ही के इख़्तियार में है जो कुछ आसमान में है और जो कुछ ज़मीन में है। वह जिसे चाहे बख़्श दे और जिसे चाहे अज़ाब दे और अल्लाह ग़फ़ूर व रहीम है। (121-129)

ऐ ईमान वालो, सूद कई-कई हिस्सा बढ़ाकर न खाओ और अल्लाह से डरो ताकि तुम कामयाब हो। और डरो उस आग से जो मुंकिरों के लिए तैयार की गई है। और अल्लाह और रसूल की इताअत करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। और दौड़ो अपने रब की बख़्शिश की तरफ़ और उस जन्नत की तरफ़ जिसकी वुस्अत (व्यापकता) आसमान और ज़मीन जैसी है। वह तैयार की गई है अल्लाह से डरने वालों के लिए। जो लोग कि ख़र्च करते हैं फ़राग़त और तंगी में। वे ग़ुस्से को पी जाने वाले हैं और लोगों से दरगुज़र करने वाले हैं। और अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है। और ऐसे लोग कि जब वे कोई खुली बुराई कर बैठें या अपनी जान पर कोई ज़ुल्म कर डालें तो वे अल्लाह को याद करके अपने गुनाहों की माफ़ी मांगें। अल्लाह के सिवा कौन है जो गुनाहों को माफ़ करे और वे जानते बूझते अपने किए पर इसरार नहीं करते। ये लोग हैं कि इनका बदला उनके रब की तरफ़ से मग़्फ़िरत (क्षमा, मुक्ति) है और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। इनमें वे हमेशा रहेंगे। कैसा अच्छा बदला है काम करने वालों का। तुमसे पहले बहुत-सी मिसालें गुज़र चुकी हैं तो ज़मीन में चल-फिरकर देखो कि क्या अंजाम हुआ झुठलाने वालों का। यह बयान है लोगों के लिए और हिदायत व नसीहत है डरने वालों के लिए। (130-138)

और हिम्मत न हारो और ग़म न करो, तुम ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम मोमिन हो। अगर तुम्हें कोई ज़ख़्म पहुंचे तो दुश्मन को भी वैसा ही ज़ख़्म

पहुंचा है। और हम इन दिनों को लोगों के दर्मियान बदलते रहते हैं। ताकि अल्लाह ईमान वालों को जान ले और तुममें से कुछ लोगों को गवाह बनाए और अल्लाह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। और ताकि अल्लाह ईमान वालों को छांट ले और इंकार करने वालों को मिटा दे। क्या तुम ख़्याल करते हो कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे, हालाँकि अभी अल्लाह ने तुममें से उन लोगों को जाना नहीं जिन्होंने जिहाद किया और न उन्हें जो साबित क़दम रहने वाले हैं। और तुम मौत की तमन्ना कर रहे थे इससे मिलने से पहले, सो अब तुमने इसे खुली आंखों से देख लिया। (139-143)

मुहम्मद बस एक रसूल हैं। इनसे पहले भी रसूल गुज़र चुके हैं। फिर क्या अगर वह मर जाएं या क़त्ल कर दिए जाएं तो तुम उल्टे पैर फिर जाओगे। और जो शख़्स फिर जाए वह अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ेगा और अल्लाह शुक्रगुज़ारों को बदला देगा। और कोई जान मर नहीं सकती बग़ैर अल्लाह के हुक्म के। अल्लाह का लिखा हुआ वादा है। और जो शख़्स दुनिया का फ़ायदा चाहता है उसे हम दुनिया में से दे देते हैं और जो आख़िरत का फ़ायदा चाहता है उसे हम आख़िरत में से दे देते हैं। और शुक्र करने वालों को हम उनका बदला ज़रूर अता करेंगे। और कितने नबी हैं जिनके साथ होकर बहुत से अल्लाह वालों ने जंग की। अल्लाह की राह में जो मुसीबतें उन पर पड़ीं उनसे न वे पस्तहिम्मत हुए न उन्होंने कमज़ोरी दिखाई। और न वे दबे। और अल्लाह सब्र करने वालों को दोस्त रखता है। उनकी ज़बान से इसके सिवा कुछ और न निकला कि ऐ हमारे रब! हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमारे काम में हमसे जो ज़्यादती हुई उसे माफ़ फ़रमा और हमें साबित क़दम रख और मुंकिर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा। पस अल्लाह ने उन्हें दुनिया का बदला भी दिया और आख़िरत का अच्छा बदला भी। और अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है। (144-148)

ऐ ईमान वालो! अगर तुम मुंकिरों की बात मानोगे तो वे तुम्हें उल्टे पैरों फेर देंगे फिर तुम नाकाम होकर रह जाओगे। बल्कि अल्लाह तुम्हारा मददगार है और वह सबसे बेहतर मदद करने वाला है। हम मुंकिरों के दिलों में तुम्हारा

रौब डाल देंगे क्योंकि उन्होंने ऐसी चीज़ को अल्लाह का शरीक ठहराया जिसके हक़ में अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी। उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरी जगह है ज़ालिमों के लिए। और अल्लाह ने तुमसे अपने वादे को सच्चा कर दिखाया जबकि तुम उन्हें अल्लाह के हुक्म से क़त्ल कर रहे थे। यहां तक कि जब तुम ख़ुद कमज़ोर पड़ गए और तुमने काम में झगड़ा किया और तुम कहने पर न चले जबकि अल्लाह ने तुम्हें वह चीज़ दिखा दी थी जो कि तुम चाहते थे। तुममें से कुछ दुनिया चाहते थे और तुममें से कुछ आख़िरत चाहते थे। फिर अल्लाह ने तुम्हारा रुख़ उनसे फेर दिया ताकि तुम्हारी आज़माइश करे और अल्लाह ने तुम्हें माफ़ कर दिया और अल्लाह ईमान वालों के हक़ में बड़ा फ़ज़्ल वाला है। जब तुम चढ़े जा रहे थे और मुड़कर भी किसी को न देखते थे और रसूल तुम्हें तुम्हारे पीछे से पुकार रहा था। फिर अल्लाह ने तुम्हें ग़म-पर-ग़म दिया ताकि तुम रंजीदा न हो उस चीज़ पर जो तुम्हारे हाथ से चूक गई और न उस मुसीबत पर जो तुम पर पड़े। और अल्लाह ख़बरदार है जो कुछ तुम करते हो। (149-153)

फिर अल्लाह ने तुम्हारे ऊपर ग़म के बाद इत्मीनान उतारा यानी ऊंघ कि इसका तुममें से एक जमाअत पर ग़लबा हो रहा था और एक जमाअत वह थी कि उसे अपनी जानों कि फ़िक्र पड़ी हुई थी। वे अल्लाह के बारे में हक़ीक़त के ख़िलाफ़ ख़्यालात, जाहिलियत के ख़्यालात क़ायम कर रहे थे। वे कहते थे कि क्या हमारा भी कुछ इख़्तियार है। कहो सारा मामला अल्लाह के इख़्तियार में है। वे अपने दिलों में ऐसी बात छुपाए हुए हैं जो तुम पर ज़ाहिर नहीं करते। वे कहते हैं कि अगर इस मामले में कुछ हमारा भी दख़ल होता तो हम यहां न मारे जाते। कहो अगर तुम अपने घरों में होते तब भी जिनका क़त्ल होना लिख गया था वे अपनी क़त्लगाहों की तरफ़ निकल पड़ते। यह इसलिए हुआ कि अल्लाह को आज़माना था जो कुछ तुम्हारे सीनों में है और निखारना था जो कुछ तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह जानता है सीनों वाली बात को। तुममें से जो लोग फिर गए थे उस दिन कि दोनों गिरोहों में मुठभेड़ हुई इन्हें शैतान ने इनके कुछ आमाल के सबब से फिसला दिया था। अल्लाह

ने इन्हें माफ़ कर दिया। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (154-155)

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने इंकार किया। वे अपने भाइयों के बारे में कहते हैं, जबकि वे सफ़र या जिहाद में निकलते हैं और उन्हें मौत आ जाती है, कि अगर वे हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते। ताकि अल्लाह इसे उनके दिलों में हसरत का सबब बना दे। और अल्लाह ही जिलाता है और मारता है, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की मग़्फ़िरत और रहमत उससे बेहतर है जिसे वे जमा कर रहे हैं। और तुम मर गए या मारे गए बहरहाल तुम अल्लाह ही के पास जमा किए जाओगे। यह अल्लाह की बड़ी रहमत है कि तुम उनके लिए नर्म हो। अगर तुम तुंदख़ू (कठोर) और सख़्त दिल होते तो ये लोग तुम्हारे पास से भाग जाते। पस इन्हें माफ़ कर दो और इनके लिए मग़्फ़िरत मांगो और मामलात में इनसे मश्विरा लो। फिर जब फ़ैसला कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो। बेशक अल्लाह उनसे मुहब्बत करता है जो उस पर भरोसा रखते हैं। अगर अल्लाह तुम्हारा साथ दे तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता और अगर वह तुम्हारा साथ छोड़ दे तो उसके बाद कौन है जो तुम्हारी मदद करे। और अल्लाह ही के ऊपर भरोसा करना चाहिए ईमान वालों को। (156-160)

और नबी का यह काम नहीं कि वह कुछ छुपाए रखे और जो कोई छुपाएगा वह अपनी छुपाई हुई चीज़ को क़ियामत के दिन हाज़िर करेगा। फिर हर जान को उसके किए हुए का पूरा बदला मिलेगा और उन पर कुछ ज़ुल्म न होगा। क्या वह शख़्स जो अल्लाह की मर्ज़ी का ताबेअ (अधीन) है वह उस शख़्स की तरह हो जाएगा जो अल्लाह का ग़ज़ब लेकर लौटा और उसका ठिकाना जहन्नम है और वह कैसा बुरा ठिकाना है। अल्लाह के यहां उनके दर्जे अलग-अलग होंगे। और अल्लाह देख रहा है जो वे करते हैं। अल्लाह ने ईमान वालों पर एहसान किया कि उनमें उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन्हें अल्लाह की आयतें सुनाता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब

व हिक्मत (तत्वदर्शिता) की तालीम देता है। बेशक ये इससे पहले खुली हुई गुमराही में थे। (161-164)

और जब तुम्हें ऐसी मुसीबत पहुंची जिसकी दोगुनी मुसीबत तुम पहुंचा चुके थे तो तुमने कहा कि यह कहां से आ गई। कहो यह तुम्हारे अपने पास से है। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। और दोनों जमाअतों के मुठभेड़ के दिन तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वह अल्लाह के हुक्म से पहुंची और इस वास्ते कि अल्लाह मोमिनों को जान ले और उन्हें भी जान ले जो मुनाफ़िक़ (पाखंड़ी) थे जिनसे कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में लड़ो या दुश्मन को हटाओ। उन्होंने कहा अगर हम जानते कि जंग होना है तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ चलते। ये लोग उस दिन ईमान से ज़्यादा कुफ्र के क़रीब थे। वे अपने मुंह से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है और अल्लाह उस चीज़ को ख़ूब जानता है जिसे वे छुपाते हैं। ये लोग जो ख़ुद बैठे रहे, अपने भाइयों के बारे में कहते हैं कि अगर वे हमारी बात मानते तो वे मारे न जाते। कहो तुम अपने ऊपर से मौत को हटा दो अगर तुम सच्चे हो। (165-168)

और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए उन्हें मुर्दा न समझो। बल्कि वे ज़िंदा हैं अपने रब के पास, उन्हें रोज़ी मिल रही है। वे ख़ुश हैं उस पर जो अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल में से उन्हें दिया है और ख़ुशख़बरी ले रहे हैं कि जो लोग उनके पीछे हैं और अभी वहां नहीं पहुंचे हैं उनके लिए भी न कोई ख़ौफ़ है और न वे ग़मगीन होंगे। वे ख़ुश हो रहे हैं अल्लाह के इनाम और फ़ज़्ल पर और इस पर कि अल्लाह ईमान वालों का अज्र ज़ाया नहीं करता। जिन लोगों ने अल्लाह और रसूल के हुक्म को माना बाद इसके कि उन्हें ज़ख़्म लग चुका था, इनमें से जो नेक और मुत्तक़ी हैं उनके लिए बड़ा अज्र है जिनसे लोगों ने कहा कि दुश्मन ने तुम्हारे ख़िलाफ़ बड़ी ताक़त जमा कर ली है उससे डरो। लेकिन इस चीज़ ने उनके ईमान में और इज़ाफ़ा कर दिया और वे बोले कि अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है और वह बेहतरीन कारसाज़ है। पस वे अल्लाह की नेमत और उसके फ़ज़्ल के साथ वापस आए। इन लोगों को कोई बुराई पेश न आयी। और वे अल्लाह की रिज़ामंदी पर चले और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल

वाला है। यह शैतान है जो तुम्हें अपने दोस्तों के ज़रिए डराता है। तुम उनसे न डरो बल्कि मुझसे डरो अगर तुम मोमिन हो। (169-175)

और वे लोग तुम्हारे लिए ग़म का सबब न बनें जो इंकार में सबक़त (तत्परता, जल्दी) कर रहे हैं। वे अल्लाह को हरगिज़ कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकेंगे। अल्लाह चाहता है कि उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा न रखे। उनके लिए बड़ा अज़ाब है। जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ़्र को ख़रीदा है वे अल्लाह का कुछ बिगाड़ नहीं सकते और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। और जो लोग कुफ़्र कर रहे हैं यह ख़्याल न करें कि हम जो उन्हें मोहलत दे रहे हैं यह उनके हक़ में बेहतर है। हम तो बस इसलिए मोहलत दे रहे हैं कि वे जुर्म में और बढ़ जाएं और उनके लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। अल्लाह वह नहीं कि मुसलमानों को उस हालत पर छोड़ दे जिस तरह कि तुम अब हो जब तक कि वह नापाक को पाक से जुदा न कर ले। और अल्लाह यूं नहीं कि तुम्हें ग़ैब से ख़बरदार कर दे। बल्कि अल्लाह छांट लेता है अपने रसूलों में जिसे चाहता है। पस तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूलों पर। और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़गारी अपनाओ तो तुम्हारे लिए बड़ा अज्र है। (176-179)

और जो लोग बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं उस चीज़ में जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल में से दिया है वे हरगिज़ यह न समझें कि यह उनके हक़ में अच्छा है। बल्कि यह उनके हक़ में बहुत बुरा है जिस चीज़ में वे बुख़्ल कर रहे हैं उसका क़ियामत के दिन उन्हें तौक़ पहनाया जाएगा। और अल्लाह ही वारिस है ज़मीन और आसमान का और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। अल्लाह ने उन लोगों का क़ौल सुना जिन्होंने कहा कि अल्लाह मोहताज है और हम ग़नी हैं। हम लिख लेंगे उनके इस क़ौल को और उनके पैग़म्बरों को नाहक़ मार डालने को भी। और हम कहेंगे कि अब आग का अज़ाब चखो। यह तुम्हारे अपने हाथों की कमाई है और अल्लाह अपने बंदों के साथ नाइंसाफ़ी करने वाला नहीं। जो लोग कहते हैं कि अल्लाह ने हमें हुक्म दिया है कि हम किसी रसूल को तस्लीम न करें जब तक कि वह हमारे

सामने ऐसी क़ुर्बानी पेश न करे जिसे आग खाले, उनसे कहो कि मुझसे पहले तुम्हारे पास रसूल आए खुली निशानियां लेकर और वह चीज़ लेकर जिसे तुम कह रहे हो फिर तुमने क्यों उन्हें मार डाला, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर ये तुम्हें झुठलाते हैं तो तुमसे पहले भी बहुत से रसूल झुठलाए जा चुके हैं जो खुली निशानियां और सहीफ़े और रोशन किताब लेकर आए थे। हर शख़्स को मौत का मज़ा चखना है और तुम्हें पूरा अज्र तो बस क़ियामत के दिन मिलेगा। पस जो शख़्स आग से बच जाए और जन्नत में दाख़िल किया जाए वही कामयाब रहा और दुनिया की ज़िंदगी तो बस धोखे का सौदा है। (180-185)

यक़ीनन तुम अपने जान व माल में आज़माए जाओगे। और तुम बहुत सी तकलीफ़देह बातें सुनोगे उनसे जिन्हें तुमसे पहले किताब मिली और उनसे भी जिन्होंने शिर्क किया। और अगर तुम सब्र करो और तक़्वा इख़्तियार करो तो यह बड़े हौसले का काम है। और जब अल्लाह ने अहले किताब से अहद लिया कि तुम ख़ुदा की किताब को पूरी तरह लोगों के लिए ज़ाहिर करोगे और उसे नहीं छुपाओगे। मगर उन्होंने इसे पीठ पीछे डाल दिया और इसे थोड़ी क़ीमत पर बेच डाला। कैसी बुरी चीज़ है जिसे वे ख़रीद रहे हैं। जो लोग अपनी इन करतूतों पर ख़ुश हैं और चाहते हैं कि जो काम उन्होंने नहीं किए उस पर उनकी तारीफ़ हो, उन्हें अज़ाब से बरी न समझो। उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। और अल्लाह ही के लिए है ज़मीन और आसमान की बादशाही, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (186-189)

आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और रात-दिन के बारी-बारी आने में अक़्ल वालों के लिए बहुत निशानियां हैं। जो खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर अल्लाह को याद करते हैं और आसमानों और ज़मीन की पैदाइश पर ग़ौर करते रहते हैं। वे कह उठते हैं ऐ हमारे रब! तूने यह सब बेमक़सद नहीं बनाया है। तू पाक है, पस हमें आग के अज़ाब से बचा। ऐ हमारे रब! तूने जिसे आग में डाला उसे तूने वाक़ई रुसवा कर दिया। और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। ऐ हमारे रब! हमने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की तरफ़ पुकार रहा था कि अपने रब पर ईमान लाओ। पस हम ईमान लाए।

ऐ हमारे रब! हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमारी बुराइयों को हमसे दूर कर दे और हमारा ख़ात्मा नेक लोगों के साथ कर। ऐ हमारे रब तूने जो वादे अपने रसूलों के ज़रिए हमसे किए हैं उन्हें हमारे साथ पूरा कर और क़ियामत के दिन हमें रुसवाई में न डाल। बेशक तू अपने वादे के ख़िलाफ़ करने वाला नहीं है। (190-194)

उनके रब ने उनकी दुआ क़ुबूल फ़रमाई कि मैं तुममें से किसी का अमल ज़ाया करने वाला नहीं, चाहे वह मर्द हो या औरत, तुम सब एक-दूसरे से हो। पस जिन लोगों ने हिजरत की और जो अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और वे लड़े और मारे गए उनकी ख़ताएं ज़रूर उनसे दूर कर दूंगा और उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूंगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। यह उनका बदला है अल्लाह के यहां और बेहतरीन बदला अल्लाह ही के पास है। और मुल्क के अंदर मुंकिरों की सरगर्मियां तुम्हें धोखे में न डालें यह थोड़ा-सा फ़ायदा है। फिर उनका ठिकाना जहन्नम है और वह कैसा बुरा ठिकाना है। अलबत्ता जो लोग अपने रब से डरते हैं उनके लिए बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे उसमें हमेशा रहेंगे। यह अल्लाह की तरफ़ से उनकी मेज़बानी होगी और जो कुछ अल्लाह के पास है नेक लोगों के लिए है वही सबसे बेहतर है। और बेशक अहले किताब में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस किताब को भी मानते हैं जो तुम्हारी तरफ़ भेजी गई है और उस किताब को भी मानते हैं जो इससे पहले ख़ुद उनकी तरफ़ भेजी गई थी, वे अल्लाह के आगे झुके हुए हैं और अल्लाह की आयतों को थोड़ी क़ीमत पर बेच नहीं देते। उनका अज्र उनके रब के पास है और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। ऐ ईमान वालो, सब्र करो और मुक़ाबले में मज़बूत रहो और लगे रहो और अल्लाह से डरो, उम्मीद है कि तुम कामयाब होगे। (195-200)

सूरह-4. अन-निसा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ लोगो! अपने रब से डरो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और इन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें फैला दीं। और अल्लाह से डरो जिसके वास्ते से तुम एक-दूसरे से सवाल करते हो और ख़बरदार रहो संबंधियों से। बेशक अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है। और यतीमों का माल उनके हवाले करो। और बुरे माल को अच्छे माल से न बदलो और उनके माल अपने माल के साथ मिलाकर न खाओ। यह बहुत बड़ा गुनाह है। और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम यतीमों के मामले में इंसाफ़ न कर सकोगे तो औरतों में से जो तुम्हें पसंद हों उनसे दो-दो, तीन-तीन, चार-चार तक निकाह कर लो। और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम अद्ल (न्याय) न कर सकोगे तो एक ही निकाह करो या जो कनीज़ (दासी) तुम्हारे अधीन हो। इसमें उम्मीद है कि तुम इंसाफ़ से न हटोगे। और औरतों को उनके महर ख़ुशदिली के साथ अदा करो। फिर अगर वे इसमें से कुछ तुम्हारे लिए छोड़ दें अपनी ख़ुशी से तो तुम उसे हंसी-ख़ुशी से खाओ। (1-4)

और नादानों को अपना वह माल न दो जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए क़ियाम का ज़रिया बनाया है और इस माल में से उन्हें खिलाओ और पहनाओ और उनसे भलाई की बात कहो। और यतीमों को जांचते रहो, यहां तक कि जब वे निकाह की उम्र को पहुंच जाएं तो अगर उनमें होशियारी देखो तो उनका माल उनके हवाले कर दो। और उनका माल अनुचित तरीक़े से और इस ख़्याल से कि वे बड़े हो जाएंगे न खा जाओ। और जिसे हाजत न हो वह यतीम के माल से परहेज़ करे और जो शख़्स मोहताज हो वह दस्तूर के मुवाफ़िक़ खाए। फिर जब तुम उनका माल उनके हवाले करो तो उन पर गवाह ठहरा लो और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफ़ी है। मां-बाप और रिश्तेदारों के तरके (छोड़ी हुई सम्पत्ति) में से मर्दों का भी हिस्सा है। और मां-बाप और रिश्तेदारों के तरके में से औरतों का भी हिस्सा है, थोड़ा हो

या ज़्यादा हो, एक मुक़र्रर किया हुआ हिस्सा। और अगर तक़्सीम के वक़्त रिश्तेदार और यतीम और मोहताज मौजूद हों तो इसमें से उन्हें भी कुछ दो और उनसे हमदर्दी की बात कहो। और ऐसे लोगों को डरना चाहिए कि अगर वे अपने पीछे कमज़ोर बच्चे छोड़ जाते तो उन्हें उनकी बहुत फ़िक्र रहती। पस उन्हें चाहिए कि अल्लाह से डरें और बात पक्की कहें। जो लोग यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं वे लोग अपने पेटों में आग भर रहे हैं और वे जल्द ही भड़कती हुई आग में डाले जाएंगे। (5-10)

अल्लाह तुम्हें तुम्हारी औलाद के बारे में हुक्म देता है कि मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है। अगर औरतें दो से ज़्यादा हैं तो उनके लिए दो-तिहाई है उस माल से जो मूरिस (विरासत छोड़ने वाला) छोड़ गया है और अगर वह अकेली है तो उसके लिए आधा है। और मय्यत के मां-बाप को दोनों में से हर एक के लिए छठा हिस्सा है उस माल का जो वह छोड़ गया है बशर्ते कि मूरिस के औलाद हो। और अगर मूरिस की औलाद न हो और उसके मां-बाप उसके वारिस हों तो उसकी मां का तिहाई है और अगर उसके भाई-बहन हों तो उसकी मां के लिए छठा हिस्सा है। ये हिस्से वसीयत निकालने के बाद या क़र्ज़ की अदायगी के बाद हैं जो वह कर जाता है। तुम्हारे बाप हों या तुम्हारे बेटे हों, तुम नहीं जानते कि उनमें तुम्हारे लिए सबसे ज़्यादा नफ़ा देने वाला कौन है। यह अल्लाह का ठहराया हुआ फ़रीज़ा है। बेशक अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है। और तुम्हारे लिए उस माल का आधा हिस्सा है जो तुम्हारी बीवियां छोड़ें, बशर्ते कि उनके औलाद न हो। और अगर उनके औलाद हो तो तुम्हारे लिए बीवियों के तरके का चौथाई है वसीयत निकालने के बाद जिसकी वे वसीयत कर जाएं या कर्ज़ की अदायगी के बाद। और उन बीवियों के लिए चौथाई है तुम्हारे तरके का अगर तुम्हारे औलाद नहीं है, और अगर तुम्हारे औलाद है तो उनके लिए आठवां हिस्सा है तुम्हारे तरके का वसीयत निकालने के बाद जिसकी तुम वसीयत कर जाओ या कर्ज़ की अदायगी के बाद। और अगर कोई मूरिस मर्द या औरत ऐसा हो जिसके न औलाद हो और न मां-बाप ज़िंदा हों, और उसके एक भाई या एक बहन हो तो दोनों

में से हर एक के लिए छठा हिस्सा है। और अगर वे इससे ज़्यादा हों तो वे एक-तिहाई में शरीक होंगे वसीयत निकालने के बाद जिसकी वसीयत की गयी हो या क़र्ज़ की अदायगी के बाद, बग़ैर किसी को नुक़सान पहुंचाए। यह हुक्म अल्लाह की तरफ़ से है और अल्लाह अलीम व हलीम है। ये अल्लाह की ठहराई हुई हदें हैं। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा अल्लाह उसे ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे और यही बड़ी कामयाबी है। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा और उसके मुक़र्रर किए हुए ज़ाब्तों (नियमों) से बाहर निकल जाएगा उसे वह आग में दाख़िल करेगा जिसमें वह हमेशा रहेगा और उसके लिए ज़िल्लत वाला अज़ाब है। (11-14)

और तुम्हारी औरतों में से जो कोई बदकारी करे तो उन पर अपनों में से चार मर्द गवाह करो। फिर अगर वे गवाही दे दें तो इन औरतों को घरों के अंदर बंद रखो, यहां तक कि उन्हें मौत उठा ले या अल्लाह उनके लिए कोई राह निकाल दे। और तुममें से दो मर्द जो वही बदकारी करें तो उन्हें अज़ियत (यातना) पहुंचाओ। फिर अगर वे दोनों तौबा करें और अपनी इस्लाह कर लें तो उनका ख़्याल छोड़ दो। बेशक अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला महरबान है। तौबा जिसे क़ुबूल करना अल्लाह के ज़िम्मे है वह उन लोगों की है जो बुरी हरकत नादानी से कर बैठते हैं, फिर जल्द ही तौबा कर लेते हैं। वही हैं जिनकी तौबा अल्लाह क़ुबूल करता है और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और ऐसे लोगों की तौबा नहीं है जो बराबर गुनाह करते रहें, यहां तक कि जब मौत उनमें से किसी के सामने आ जाए तब वह कहे कि अब मैं तौबा करता हूं, और न उन लोगों की तौबा है जो इस हाल में मरते हैं कि वे मुंकिर हैं, उनके लिए तो हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। (15-18)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे लिए जाइज़ नहीं कि तुम औरतों को ज़बरदस्ती अपनी मीरास में ले लो और न उन्हें इस ग़रज़ से रोके रखो कि तुमने जो कुछ उन्हें दिया है उसका कुछ हिस्सा उनसे ले लो मगर इस सूरत में कि वे खुली हुई बेहयाई करें। और उनके साथ अच्छी तरह गुज़र-बसर करो। अगर

वे तुम्हें नापसंद हों तो हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें पसंद न हो मगर अल्लाह ने इसमें तुम्हारे लिए बहुत बड़ी भलाई रख दी हो। और अगर तुम एक बीवी की जगह दूसरी बीवी बदलना चाहो और तुम उसे बहुत-सा माल दे चुके हो तो तुम उसमें से कुछ वापस न लो। क्या तुम इसे बोहतान (आक्षेप) लगाकर और सरीह ज़ुल्म करके वापस लोगे। और तुम किस तरह उसे लोगे जबकि एक-दूसरे से ख़लवत कर चुका है और वे तुमसे पुख़्ता अहद ले चुकी हैं। और उन औरतों से निकाह मत करो जिनसे तुम्हारे बाप निकाह कर चुके हैं, मगर जो पहले हो चुका। बेशक यह बेहयाई है और नफ़रत की बात है और बहुत बुरा तरीक़ा है। (19-22)

तुम्हारे ऊपर हराम की गईं तुम्हारी मां, तुम्हारी बेटियां, तुम्हारी बहनें, तुम्हारी फूफियां, तुम्हारी ख़ालाएं, तुम्हारी भतीजियां और भांजियां और तुम्हारी वे माएं जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया, तुम्हारी दूध शरीक बहनें, तुम्हारी औरतों की मां और उनकी बेटियां जो तुम्हारी परवरिश में हैं जो तुम्हारी उन बीवियों से हों जिनसे तुमने सोहबत की है, लेकिन अगर अभी तुमने उनसे सोहबत न की हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं। और तुम्हारे सुलबी (तुमसे पैदा) बेटों की बीवियां और यह कि तुम इकट्ठा करो दो बहनों को मगर जो पहले हो चुका। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और वे औरतें भी हराम हैं जो किसी दूसरे के निकाह में हों मगर यह कि वे जंग में तुम्हारे हाथ आएं। यह अल्लाह का हुक्म है तुम्हारे ऊपर। इनके अलावा जो औरतें हैं वे सब तुम्हारे लिए हलाल हैं बशर्ते कि तुम अपने माल के ज़रिए से उनके तालिब बनो, उनसे निकाह करके न कि बदकारी के तौर पर। फिर उन औरतों में से जिन्हें तुम काम में लाए उन्हें उनको तयशुदा महर दे दो। और महर के ठहराने के बाद जो तुमने आपस में राज़ीनामा किया हो तो इसमें कोई गुनाह नहीं। बेशक अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। और तुममें से जो शख़्स सामर्थ्य न रखता हो कि आज़ाद मुसलमान औरतों से निकाह कर सके तो उसे चाहिए कि वह तुम्हारी उन कनीज़ों (दासियों) में से किसी के साथ निकाह कर ले जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों और मोमिना हों। अल्लाह तुम्हारे ईमान को

ख़ूब जानता है, तुम आपस में एक हो। पस उनके मालिकों की इजाज़त से उनसे निकाह कर लो और मारूफ़ तरीक़े से उनके महर अदा कर दो, इस तरह कि उनसे निकाह किया जाए न कि आज़ाद शहवतरानी करें और चोरी-छुपे आशनाइयां करें। फिर जब वे निकाह के बंधन में आ जाएं और इसके बाद वे बदकारी करें तो आज़ाद औरतों के लिए जो सज़ा है उसकी आधी सज़ा इन पर है। यह उसके लिए है जो तुममें से बदकारी का अंदेशा रखता हो। और अगर तुम ज़ब्त (संयम) से काम लो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (23-25)

अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे वास्ते बयान करे और तुम्हें उन लोगों के तरीक़ों की हिदायत दे जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं और तुम पर तवज्जोह करे, अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे ऊपर तवज्जोह करे और जो लोग अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी कर रहे हैं वे चाहते हैं कि तुम राहेरास्त से बहुत दूर निकल जाओ। अल्लाह चाहता है कि तुमसे बोझ को हल्का करे और इंसान कमज़ोर बनाया गया है। (26-28)

ऐ ईमान वालो, आपस में एक-दूसरे का माल नाहक़ तौर पर न खाओ। मगर यह कि तिजारत हो आपस की ख़ुशी से। और ख़ून न करो आपस में। बेशक अल्लाह तुम्हारे ऊपर बड़ा महरबान है। और जो शख़्स सरकशी और ज़ुल्म से ऐसा करेगा उसे हम ज़रूर आग में डालेंगे और यह अल्लाह के लिए आसान है। अगर तुम उन बड़े गुनाहों से बचते रहे जिनसे तुम्हें मना किया गया है तो हम तुम्हारी छोटी बुराइयों को माफ़ कर देंगे और तुम्हें इज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे। और तुम ऐसी चीज़ की तमन्ना न करो जिसमें अल्लाह ने तुममें से एक को दूसरे पर बड़ाई दी है। मर्दों के लिए हिस्सा है अपनी कमाई का और औरतों के लिए हिस्सा है अपनी कमाई का। और अल्लाह से उसका फ़ज़्ल मांगो। बेशक अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखता है। और हमने वालिदेन और रिश्तेदारों के छोड़े हुए में से हर एक के लिए वारिस ठहरा दिए हैं और जिनसे तुमने अहद बांध रखा हो तो उन्हें उनका हिस्सा दे दो, बेशक अल्लाह के रूबरू है हर चीज़। (29-33)

मर्द औरतों के ऊपर क़व्वाम (प्रमुख) हैं। इस कारण कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर बड़ाई दी है और इस कारण कि मर्द ने अपने माल ख़र्च किए। पस जो नेक औरतें हैं वे फ़रमांबरदारी करने वाली, पीठ पीछे निगहबानी करती हैं अल्लाह की हिफ़ाज़त से। और जिन औरतों से तुम्हें सरकशी का अंदेशा हो उन्हें समझाओ और उन्हें उनके बिस्तरों में तनहा छोड़ दो और उन्हें सज़ा दो। पस अगर वे तुम्हारी इताअत करें तो उनके ख़िलाफ़ इल्ज़ाम की राह न तलाश करो। बेशक अल्लाह सबसे ऊपर है, बहुत बड़ा है। और अगर तुम्हें मियां-बीवी के दर्मियान तअल्लुक़ात बिगड़ने का अंदेशा हो तो एक मुंसिफ़ मर्द के रिश्तेदारों में से खड़ा करो और एक मुंसिफ़ औरत के रिश्तेदारों में से खड़ा करो। अगर दोनों इस्लाह चाहेंगे तो अल्लाह उनके दर्मियान मुवाफ़िक़त कर देगा। बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला ख़बरदार है। (34-35)

और अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज़ को उसका शरीक न बनाओ। और अच्छा सुलूक करो मां-बाप के साथ और रिश्तेदारों के साथ और यतीमों और मिस्कीनों और रिश्तेदार पड़ौसी और अजनबी पड़ोसी और पास बैठने वाले और मुसाफ़िर के साथ और ममलूक (अधीन) के साथ। बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता इतराने वाले बड़ाई करने वाले को जोकि कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी सिखाते हैं और जो कुछ उन्हें अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से दे रखा है उसे छुपाते हैं। और हमने मुंकिरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। और जो लोग अपना माल लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं और अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और जिसका साथी शैतान बन जाए तो वह बहुत बुरा साथी है। उनका क्या नुक़सान था अगर वे अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाते और अल्लाह ने जो कुछ उन्हें दे रखा है उसमें से ख़र्च करते। और अल्लाह उनसे अच्छी तरह बाख़बर है। बेशक अल्लाह ज़रा भी किसी की हक़तलफ़ी नहीं करेगा। अगर नेकी हो तो वह उसे दोगुना बढ़ा देता है और अपने पास से बहुत बड़ा सवाब देता है। (36-40)

फिर उस वक़्त क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत में से एक गवाह

लाएंगे और तुम्हें उन लोगों के ऊपर गवाह बनाकर खड़ा करेंगे। वे लोग जिन्होंने इंकार किया और पैग़म्बर की नाफ़रमानी की उस दिन तमन्ना करेंगे कि काश ज़मीन उन पर बराबर कर दी जाए, और वे अल्लाह से कोई बात न छुपा सकेंगे। ऐ ईमान वालो, नज़दीक न जाओ नमाज़ के जिस वक़्त कि तुम नशे में हो यहां तक कि समझने लगो जो तुम कहते हो, और न उस वक़्त कि ग़ुस्ल की हाजत हो मगर राह चलते हुए, यहां तक कि ग़ुस्ल कर लो। और अगर तुम मरीज़ हो या सफ़र में हो या तुममें से कोई शौच से आए या तुम औरतों के पास गए हो फिर तुम्हें पानी न मिले तो तुम पाक मिट्‌टी से तयम्मुम कर लो और अपने चेहरे और हाथों का मसह कर लो, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है। (41-43)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब से हिस्सा मिला था। वे गुमराही को मोल ले रहे हैं और चाहते हैं कि तुम भी राह से भटक जाओ। अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है। और अल्लाह काफ़ी है हिमायत के लिए और अल्लाह काफ़ी है मदद के लिए। यहूद में से एक गिरोह बात को उसके ठिकाने से हटा देता है और कहता है कि हमने सुना और न माना। और कहते हैं कि सुनो और तुम्हें सुनवाया न जाए। वे अपनी ज़बान को मोड़ कर कहते हैं राइना, दीन में ऐब लगाने के लिए। और अगर वे कहते कि हमने सुना और माना, और सुनो और हम पर नज़र करो तो यह उनके हक़ में ज़्यादा बेहतर और दुरुस्त होता। मगर अल्लाह ने उनके इंकार के सबब से उन पर लानत कर दी है। पस वे ईमान न लाएंगे मगर बहुत कम। (44-46)

ऐ वे लोगो! जिन्हें किताब दी गई उस पर ईमान लाओ जो हमने उतारा है, तस्दीक़ करने वाली उस किताब की जो तुम्हारे पास है, इससे पहले कि हम चेहरों को मिटा दें और फिर उन्हें उलट दें पीठ की तरफ़ या उन पर लानत करें जैसे हमने लानत की सब्त वालों पर। और अल्लाह का हुक्म पूरा होकर रहता है। बेशक अल्लाह इसे नहीं बख़्शेगा कि उसके साथ शिर्क किया जाए। लेकिन इसके अलावा जो कुछ है उसे जिसके लिए चाहेगा बख़्श देगा। और जिसने अल्लाह का शरीक ठहराया उसने बड़ा तूफ़ान बांधा। क्या तुमने देखा

उन्हें जो अपने आपको पाकीज़ा कहते हैं। बल्कि अल्लाह ही पाक करता है जिसे चाहता है, और उन पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा। देखो, ये अल्लाह पर कैसा झूठ बांध रहे हैं और सरीह गुनाह होने के लिए यही काफ़ी है। (47-50)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब से हिस्सा मिला था, वे जिब्त (झूठी चीज़ों) और ताग़ूत को मानते हैं और मुंकिरों के बारे में कहते हैं कि वे ईमान वालों से ज़्यादा सही रास्ते पर हैं। यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की है और जिस पर अल्लाह लानत करे तुम उसका कोई मददगार न पाओगे। क्या ख़ुदा के इक़्तेदार (संप्रभुत्व) में कुछ इनका भी दख़ल है। फिर तो ये लोगों को एक तिल बराबर भी न दें। क्या ये लोगों पर हसद कर रहे हैं इस सबब कि अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया है। पस हमने आले इब्राहीम को किताब और हिक्मत दी है और हमने उन्हें एक बड़ी सल्तनत भी दे दी। उनमें से किसी ने इसे माना और कोई इससे रुका रहा और ऐसों के लिए जहन्नम की भड़कती हुई आग काफ़ी है। बेशक जिन लोगों ने हमारी निशानियों का इंकार किया उन्हें हम सख़्त आग में डालेंगे। जब उनके जिस्म की खाल जल जाएगी तो हम उनकी खाल को बदल कर दूसरी कर देंगे ताकि वे अज़ाब चखते रहें। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है हिक्मत वाला है। और जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उन्हें हम बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उसमें वे हमेशा रहेंगे, वहां उनके लिए सुथरी बीवियां होंगी और उन्हें हम घनी छांव में रखेंगे। (51-57)

अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें उनके हक़दारों को पहुंचा दो। और जब लोगों के दर्मियान फ़ैसला करो तो इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करो। अल्लाह अच्छी नसीहत करता है तुम्हें, बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। ऐ ईमान वालो, अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो और अपने में अहले-इख़्तियार की इताअत करो। फिर अगर तुम्हारे दर्मियान किसी चीज़ में इख़्तेलाफ़ (मतभेद) हो जाए तो उसे अल्लाह और रसूल की तरफ़ लौटाओ, अगर तुम अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो। यह बात अच्छी है और इसका अंजाम बेहतर है। क्या

तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वे ईमान लाए हैं उस पर जो उतारा गया है तुम्हारी तरफ़ और जो उतारा गया है तुमसे पहले, वे चाहते हैं कि विवाद ले जाएं शैतान की तरफ़, हालाँकि उन्हें हुक्म हो चुका है कि उसे न मानें और शैतान चाहता है कि उन्हें बहकाकर बहुत दूर डाल दे। और जब उनसे कहा जाता है कि आओ अल्लाह की उतारी हुई किताब की तरफ़ और रसूल की तरफ़ तो तुम देखोगे कि मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) तुमसे कतरा जाते हैं। फिर उस वक़्त क्या होगा जब उनके अपने हाथों की लाई हुई मुसीबत उन पर पहुंचेगी, उस वक़्त ये तुम्हारे पास क़समें खाते हुए आएंगे कि ख़ुदा की क़सम हमें तो सिर्फ़ भलाई और मिलाप से ग़रज़ थी। उनके दिलों में जो कुछ है अल्लाह उससे ख़ूब वाक़िफ़ है। पस तुम उनसे एराज़ (उपेक्षा) करो और उन्हें नसीहत करो और उनसे ऐसी बात कहो जो उनके दिलों में उतर जाए। (58-63)

और हमने जो रसूल भेजा इसीलिए भेजा कि अल्लाह के हुक्म से उसकी इताअत (आज्ञापालन) की जाए। और अगर वे जबकि उन्होंने अपना बुरा किया था, तुम्हारे पास आते और अल्लाह से माफ़ी चाहते और रसूल भी उनके लिए माफ़ी चाहता तो यक़ीनन वे अल्लाह को बख़्शने वाला, रहम करने वाला पाते। पस तेरे रब की क़सम! वे कभी ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक वे अपने आपसी झगड़े में तुम्हें फ़ैसला करने वाला न मान लें। फिर जो फ़ैसला तुम करो उस पर अपने दिलों में कोई तंगी न पाएं और उसे ख़ुशी से क़ुबूल कर लें। और अगर हम उन्हें हुक्म देते कि अपने आपको हलाक करो या अपने घरों से निकलो तो उनमें से थोड़े ही इस पर अमल करते। और अगर ये लोग वह करते जिसकी उन्हें नसीहत की जाती है तो उनके लिए यह बात बेहतर और ईमान पर साबित रखने वाली होती। और उस वक़्त हम उन्हें अपने पास से बड़ा अज्र देते और उन्हें सीधा रास्ता दिखाते। और जो अल्लाह और रसूल की इताअत करेगा वह उन लोगों के साथ होगा जिन पर अल्लाह ने इनाम किया यानी पैग़म्बर और सिद्दीक़ और शहीद और सालेह। कैसी

अच्छी है उनकी रिफ़ाक़त। यह फ़ज़्ल है अल्लाह की तरफ़ से और अल्लाह का इल्म काफ़ी है। (64-70)

ऐ ईमान वालो! अपनी एहतियात कर लो फिर निकलो जुदा-जुदा या इकट्ठे होकर। और तुममें कोई ऐसा भी है जो देर लगा देता है। फिर अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे तो वह कहता है कि अल्लाह ने मुझ पर इनाम किया कि मैं उनके साथ न था। और अगर तुम्हें अल्लाह का कोई फ़ज़्ल हासिल हो तो कहता है, गोया तुम्हारे और उसके दर्मियान कोई मुहब्बत का रिश्ता ही नहीं—कि काश मैं भी उनके साथ होता तो बड़ी कामयाबी हासिल करता। पस चाहिए कि लड़ें अल्लाह की राह में वे लोग जो आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िंदगी को बेच देते हैं। और जो शख़्स अल्लाह की राह में लड़े, फिर मारा जाए या ग़ालिब हो तो हम उसे बड़ा अज्र देंगे। और तुम्हें क्या हुआ कि तुम नहीं लड़ते अल्लाह की राह में और उन कमज़ोर मर्दों और औरतों और बच्चों के लिए जो कहते हैं कि ख़ुदाया हमें इस बस्ती से निकाल जिसके बाशिंदे ज़ालिम हैं और हमारे लिए अपने पास से कोई हिमायती पैदा कर दे और हमारे लिए अपने पास से कोई मददगार खड़ा कर दे। जो लोग ईमान वाले हैं वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं और जो मुंकिर हैं वे शैतान की राह में लड़ते हैं। पस तुम शैतान के साथियों से लड़ो। बेशक शैतान की चाल बहुत कमज़ोर है। (71-76)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनसे कहा गया था कि अपने हाथ रोके रखो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो। फिर जब उन्हें लड़ाई का हुक्म दिया गया तो उनमें से एक गिरोह इंसानों से ऐसा डरने लगा जैसे अल्लाह से डरना चाहिए या इससे भी ज़्यादा। वे कहते हैं ऐ हमारे रब, तूने हम पर लड़ाई क्यों फ़र्ज़ कर दी। क्यों न छोड़े रखा हमें थोड़ी मुद्दत तक। कह दो कि दुनिया का फ़ायदा थोड़ा है और आख़िरत बेहतर है उसके लिए जो परहेज़गारी करे, और तुम्हारे साथ ज़रा भी ज़ुल्म न होगा। और तुम जहां भी होगे मौत तुम्हें पा लेगी अगरचे तुम मज़बूत क़िलों में हो। अगर उन्हें कोई भलाई पहुंचती है तो कहते हैं कि यह ख़ुदा की तरफ़ से है और अगर उन्हें

कोई बुराई पहुंचती है तो कहते हैं कि यह तुम्हारे सबब से है। कह दो कि सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है। इन लोगों का क्या हाल है कि लगता है कि कोई बात ही नहीं समझते। तुम्हें जो भलाई भी पहुंचती है ख़ुदा की तरफ़ से पहुंचती है और तुम्हें जो बुराई पहुंचती है वह तुम्हारे अपने ही सबब से है। और हमने तुम्हें इंसानों की तरफ़ पैग़म्बर बनाकर भेजा है और अल्लाह की गवाही काफ़ी है। (77-79)

जिसने रसूल की इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की और जो उल्टा फिरा तो हमने उन पर तुम्हें निगरां बनाकर नहीं भेजा है ओर ये लोग कहते हैं कि हमें क़ुबूल है। फिर जब तुम्हारे पास से निकलते हैं तो उनमें से एक गिरोह उसके ख़िलाफ़ मश्विरा करता है जो वह कह चुका था। और अल्लाह उनकी सरगोशियों (कुकृत्यों) को लिख रहा है। पस तुम उनसे एराज़ (उपेक्षा) करो और अल्लाह पर भरोसा रखो, और अल्लाह भरोसे के लिए काफ़ी है। क्या ये लोग क़ुरआन पर ग़ौर नहीं करते, अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ से होता तो वे इसके अंदर बड़ा इख़्तेलाफ़ (मतभेद) पाते। और जब उन्हें कोई बात अम्न या ख़ौफ़ की पहुंचती है तो वह उसे फैला देते हैं। और अगर वे उसे रसूल तक या अपने ज़िम्मेदार लोगों तक पहुंचाते तो उनमें से जो लोग तहक़ीक़ करने वाले हैं वे उसकी हक़ीक़त जान लेते। और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो थोड़े लोगों के सिवा तुम सब शैतान के पीछे लग जाते। (80-83)

पस लड़ो अल्लाह की राह में। तुम पर अपनी जान के सिवा किसी की ज़िम्मेदारी नहीं और मुसलमानों को उभारो। उम्मीद है कि अल्लाह मुंकिरों का ज़ोर तोड़ दे और अल्लाह बड़ा ज़ोर वाला और बहुत सख़्त सज़ा देने वाला है। जो शख़्स किसी अच्छी बात के हक़ में कहेगा उसके लिए उसमें से हिस्सा है और जो इसके विरोध में कहेगा उसके लिए उसमें से हिस्सा है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। और जब कोई तुम्हें दुआ दे तो तुम भी दुआ दो उससे बेहतर या उलटकर वही कह दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है। अल्लाह ही माबूद है, उसके सिवा कोई

माबूद (पूज्य) नहीं। वह तुम सब को क़ियामत के दिन जमा करेगा जिसके आने में कोई शुबह नहीं। और अल्लाह की बात से बढ़कर सच्ची बात और किसकी हो सकती है। (84-87)

फिर तुम्हें क्या हुआ है कि तुम मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) के मामले में दो गिरोह हो रहे हो। हालाँकि अल्लाह ने उनके आमाल के सबब से उन्हें उल्टा फेर दिया है। क्या तुम चाहते हो कि उन्हें राह पर लाओ जिन्हें अल्लाह ने गुमराह कर दिया है। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तुम हरगिज़ उसके लिए कोई राह नहीं पा सकते। वे चाहते हैं कि जिस तरह उन्होंने इंकार किया है तुम भी इंकार करो ताकि तुम सब बराबर हो जाओ। पस तुम उनमें से किसी को दोस्त न बनाओ जब तक वे अल्लाह की राह में हिजरत न करें। फिर अगर वे इसे क़ुबूल न करें तो उन्हें पकड़ो और जहां कहीं उन्हें पाओ उनको क़त्ल करो और उनमें से किसी को साथी और मददगार न बनाओ। मगर वे लोग जिनका तअल्लुक़ किसी ऐसी क़ौम से हो जिनके साथ तुम्हारा समझौता है। या वे लोग जो तुम्हारे पास इस हाल में आएं कि उनके सीने तंग हो रहे हैं तुम्हारी लड़ाई से और अपनी क़ौम की लड़ाई से। और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर ज़ोर दे देता तो वे ज़रूर तुमसे लड़ते। पस अगर वे तुम्हें छोड़े रहें और तुमसे जंग न करें और तुम्हारे साथ सुलह का रवैया रखें तो अल्लाह तुम्हें भी उनके ख़िलाफ़ किसी इक़दाम की इजाज़त नहीं देता। दूसरे कुछ ऐसे लोगों को भी तुम पाओगे जो चाहते हैं कि तुमसे भी अम्न में रहें और अपनी क़ौम से भी अम्न में रहें। जब कभी वे फ़ितने का मौक़ा पाएं वे उसमें कूद पड़ते हैं। ऐसे लोग अगर तुमसे यकसू न रहें और तुम्हारे साथ सुलह का रवैया न रखें और अपने हाथ न रोकें तो तुम उन्हें पकड़ो और उन्हें क़त्ल करो जहां कहीं पाओ। ये लोग हैं जिनके ख़िलाफ़ हमने तुम्हें खुली हुज्जत दी है। (88-91)

और मुसलमान का काम नहीं कि वह मुसलमान को क़त्ल करे मगर यह कि ग़लती से ऐसा हो जाए। और जो शख़्स किसी मुसलमान को ग़लती से क़त्ल कर दे तो वह एक मुसलमान ग़ुलाम को आज़ाद करे और मक़्तूल

(मृतक) के वारिसों को ख़ूंबहा (क़त्ल का आर्थिक हर्जाना) दे, मगर यह कि वे माफ़ कर दें। फिर मक़्तूल अगर ऐसी क़ौम में से था जो तुम्हारी दुश्मन है और वह ख़ुद मुसलमान था तो वह एक मुसलमान ग़ुलाम को आज़ाद करे। और अगर वह ऐसी क़ौम से था कि तुम्हारे और उसके दर्मियान समझौता है तो वह उसके वारिसों को ख़ूंबहा (क़त्ल का आर्थिक हर्जाना) दे और एक मुसलमान को आज़ाद करे। फिर जिसे मयस्सर न हो तो वह लगातार दो महीने के रोज़े रखे। यह तौबा है अल्लाह की तरफ़ से। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और जो शख़्स किसी मुसलमान को जानबूझकर क़त्ल करे तो इसकी सज़ा जहन्नम है जिसमें वह हमेशा रहेगा और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब और उसकी लानत है और अल्लाह ने उसके लिए बड़ा अज़ाब तैयार कर रखा है। (92-93)

ऐ ईमान वालो! जब तुम सफ़र करो अल्लाह की राह में तो ख़ूब तहक़ीक़ कर लिया करो और जो शख़्स तुम्हें सलाम करे उसे यह न कहो कि तू मुसलमान नहीं। तुम दुनियावी ज़िंदगी का सामान चाहते हो तो अल्लाह के पास ग़नीमत का बहुत सामान है। तुम भी पहले ऐसे ही थे। फिर अल्लाह ने तुम पर फ़ज़्ल किया तो तहक़ीक़ कर लिया करो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़बरदार है। बराबर नहीं हो सकते बैठे रहने वाले मुसलमान जिनको कोई उज़्र (विवशता) नहीं और वे मुसलमान जो अल्लाह की राह में लड़ने वाले हैं अपने माल और अपनी जान से। माल व जान से जिहाद करने वालों का दर्जा अल्लाह ने बैठे रहने वालों की निस्बत बड़ा रखा है और हर एक से अल्लाह ने भलाई का वादा किया है। और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को बैठे रहने वालों पर अज्रे अज़ीम में बरतरी दी है। उनके लिए अल्लाह की तरफ़ से बड़े दर्जे हैं और मग़्फ़िरत (क्षमा) और रहमत है। और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (94-96)

जो लोग अपना बुरा कर रहे हैं जब उनकी जान फ़रिश्ते निकालेंगे तो वे उनसे पूछेंगे कि तुम किस हाल में थे। वे कहेंगे कि हम ज़मीन में बेबस थे। फ़रिश्ते कहेंगे क्या ख़ुदा की ज़मीन कुशादा न थी कि तुम वतन छोड़कर

वहां चले जाते। ये वे लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। मगर वे बेबस मर्द और औरतें और बच्चे जो कोई तदबीर नहीं कर सकते और न कोई राह पा रहे हैं, ये लोग उम्मीद है कि अल्लाह उन्हें माफ़ कर देगा और अल्लाह माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है। और जो कोई अल्लाह की राह में वतन छोड़ेगा वह ज़मीन में बड़े ठिकाने और बड़ी वुस्अत पाएगा और जो शख़्स अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ हिजरत करके निकले, फिर उसे मौत आ जाए तो उसका अज्र अल्लाह के यहां मुक़र्रर हो चुका और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (97-100)

और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम नमाज़ में कमी करो, अगर तुम्हें डर हो कि मुंकिर तुम्हें सताएंगे। बेशक मुंकिर लोग तुम्हारे खुले हुए दुश्मन हैं। और जब तुम मुसलमानों के दर्मियान हो और उनके लिए नमाज़ क़ायम करो तो चाहिए कि उनकी एक जमाअत तुम्हारे साथ खड़ी हो और वह अपने हथियार लिए हुए हो। पस जब वे सज्दा कर चुकें तो वे तुम्हारे पास से हट जाएं और दूसरी जमाअत आए जिसने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी है और वे तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ें। और वे भी अपने बचाव का सामान और अपने हथियार लिए रहें। मुंकिर लोग चाहते हैं कि तुम अपने हथियारों और सामान से किसी तरह ग़ाफ़िल हो जाओ तो वे तुम पर एकबारगी टूट पड़ें। और तुम्हारे ऊपर कोई गुनाह नहीं अगर तुम्हें बारिश के सबब से तकलीफ़ हो या तुम बीमार हो तो अपने हथियार उतार दो और अपने बचाव का सामान लिए रहो। बेशक अल्लाह ने मुंकिरों के लिए रुसवा करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। पस जब तुम नमाज़ अदा कर लो तो अल्लाह को याद करो खड़े और बैठे और लेटे। फिर जब इत्मीनान हो जाए तो नमाज़ की इक़ामत करो। बेशक नमाज़ अहले ईमान पर मुक़र्रर वक़्तों के साथ फ़र्ज़ है। और क़ौम का पीछा करने से हिम्मत न हारो। अगर तुम दुख उठाते हो तो वे भी तुम्हारी तरह दुख उठाते हैं और तुम अल्लाह से वह उम्मीद रखते हो जो उम्मीद वे नहीं रखते। और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (101-104)

बेशक हमने यह किताब तुम्हारी तरफ़ हक़ के साथ उतारी है ताकि तुम लोगों के दर्मियान उसके मुताबिक़ फ़ैसला करो जो अल्लाह ने तुम्हें दिखाया है। और बददयानत लोगों की तरफ़ से झगड़ने वाले न बनो। और अल्लाह से बख़्शिश मांगो। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और तुम उन लोगों की तरफ़ से न झगड़ो जो अपने आप से ख़ियानत कर रहे हैं। अल्लाह ऐसे शख़्स को पसंद नहीं करता जो ख़ियानत वाला और गुनाहगार हो। वे आदमियों से शर्माते हैं और अल्लाह से नहीं शर्माते। हालाँकि वह उनके साथ होता है जबकि वे सरगोशियां (गुप्त वार्ता) करते हैं उस बात की जिससे अल्लाह राज़ी नहीं। और जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसका इहाता (आच्छादन) किए हुए है। (105-108)

तुम लोगों ने दुनिया की ज़िंदगी में तो उनकी तरफ़ से झगड़ा कर लिया। मगर क़ियामत के दिन कौन उनके बदले अल्लाह से झगड़ा करेगा या कौन होगा उनका काम बनाने वाला। और जो शख़्स बुराई करे या अपने आप पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह से बख़्शिश मांगे तो वह अल्लाह को बख़्शने वाला रहम करने वाला पाएगा। और जो शख़्स कोई गुनाह करता है तो वह अपने ही हक़ में करता है और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वज्ञान) वाला है। और जो शख़्स कोई ग़लती या गुनाह करे फिर उसकी तोहमत किसी बेगुनाह पर लगा दे तो उसने एक बड़ा बोहतान और खुला हुआ गुनाह अपने सर ले लिया। और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो उनमें से एक गिरोह ने तो यह ठान ही लिया था कि तुम्हें बहकाकर रहेगा। हालाँकि वे अपने आपको बहका रहे हैं। वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। और अल्लाह ने तुम पर किताब और हिक्मत (तत्वज्ञान) उतारी है और तुम्हें वह चीज़ सिखाई है जिसे तुम नहीं जानते थे और अल्लाह का फ़ज़्ल है तुम पर बहुत बड़ा। (109-113)

उनकी अक्सर सरगोशियों (कानाफूसियों) में कोई भलाई नहीं। भलाई वाली सरगोशी सिर्फ़ उसकी है जो सदक़ा करने को कहे या किसी नेक काम के लिए या लोगों में सुलह कराने के लिए कहे। जो शख़्स अल्लाह की ख़ुशी

के लिए ऐसा करे तो हम उसे बड़ा अज्र अता करेंगे। मगर जो शख़्स रसूल की मुख़ालिफ़त करेगा और मोमिनों के रास्ते के सिवा किसी और रास्ते पर चलेगा, हालाँकि उस पर राह वाज़ेह हो चुकी, तो उसे हम उसी तरफ़ चलाएंगे जिधर वह ख़ुद फिर गया और उसे जहन्नम में दाख़िल करेंगे और वह बुरा ठिकाना है। (114-115)

बेशक अल्लाह इसे नहीं बख़्शेगा कि उसका शरीक ठहराया जाए और इसके सिवा गुनाहों को बख़्श देगा जिसके लिए चाहेगा। और जिसने अल्लाह का शरीक ठहराया वह बहककर बहुत दूर जा पड़ा। वे अल्लाह को छोड़कर पुकारते हैं देवियों को और वे पुकारते हैं सरकश शैतान को। उस पर अल्लाह ने लानत की है। और शैतान ने कहा था कि मैं तेरे बंदों से एक मुक़र्रर हिस्सा लेकर रहूंगा। मैं उन्हें बहकाऊंगा और उन्हें उम्मीदें दिलाऊंगा और उन्हें समझाऊंगा तो वे चौपायों के कान काटेंगे और उन्हें समझाऊंगा तो वे अल्लाह की बनावट को बदलेंगे और जो शख़्स अल्लाह के सिवा शैतान को अपना दोस्त बनाए तो वह खुले हुए नुक़सान में पड़ गया। वह उन्हें वादा देता है और उन्हें उम्मीदें दिलाता है और शैतान के तमाम वादे फ़रेब के सिवा और कुछ नहीं। ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है और वे उससे बचने की कोई राह न पाएंगे। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उन्हें हम ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी और वे हमेशा उसमें रहेंगे। अल्लाह का वादा सच्चा है और अल्लाह से बढ़कर कौन अपनी बात में सच्चा होगा। (116-122)

न तुम्हारी आरज़ुओं (कामनाओं) पर है और न अहले-किताब की आरज़ुओं पर। जो कोई भी बुरा करेगा उसका बदला पाएगा। और वह न पाएगा अल्लाह के सिवा अपना कोई हिमायती और न मददगार। और जो शख़्स कोई नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत बशर्ते कि वह मोमिन हो, तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे। और उन पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा। और उससे बेहतर किस का दीन है जो अपना चेहरा अल्लाह की तरफ़ झुका दे और वह नेकी करने वाला हो। और वह चले इब्राहीम के दीन पर जो एक तरफ़ का

था और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना दोस्त बना लिया था। और अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह हर चीज़ का इहाता (आच्छादन) किए हुए है। (123-126)

और लोग तुमसे औरतों के बारे में हुक्म पूछते हैं। कह दो अल्लाह तुम्हें उनके बारे में हुक्म देता है और वे आयतें भी जो तुम्हें किताब में उन यतीम औरतों के बारे में पढ़कर सुनाई जाती हैं जिन्हें तुम वह नहीं देते जो उनके लिए लिखा गया है और चाहते हो कि उन्हें निकाह में ले आओ। और जो आयतें कमज़ोर बच्चों के बारे में हैं और यतीमों के साथ इंसाफ़ करो और जो भलाई तुम करोगे वह अल्लाह को ख़ूब मालूम है। और अगर किसी औरत को अपने शौहर की तरफ़ से बदसुलूकी या बेरुख़ी का अंदेशा हो तो इसमें कोई हर्ज नहीं कि दोनों आपस में कोई सुलह कर लें और सुलह बेहतर है। और हिर्स (लोभ) इंसान की तबीअत में बसी हुई है। और अगर तुम अच्छा सुलूक करो और ख़ुदातरसी (ईश परायणता) से काम लो तो जो कुछ तुम करोगे अल्लाह उससे बाख़बर है। और तुम हरगिज़ औरतों को बराबर नहीं रख सकते अगरचे तुम ऐसा करना चाहो। पस बिल्कुल एक ही तरफ़ न झुक पड़ो कि दूसरी को लटकी हुई की तरह छोड़ दो। और अगर तुम इस्लाह (सुधार) कर लो और डरो तो अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। और अगर दोनों जुदा हो जाएं तो अल्लाह हर एक को अपनी वुस्अत (सामर्थ्य) से बेएहतियाज (निराश्रित) कर देगा और अल्लाह बड़ी वुस्अत वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (127-130)

और अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। और हमने हुक्म दिया है उन लोगों को जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई और तुम्हें भी कि अल्लाह से डरो। और अगर तुमने न माना तो अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है सब ख़ूबियों वाला है। और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और भरोसे के लिए अल्लाह काफ़ी है। अगर वह चाहे तो तुम सबको ले जाए ऐ लोगो, और दूसरों को ले आए।

और अल्लाह इस पर क़ादिर है। जो शख़्स दुनिया का सवाब चाहता हो तो अल्लाह के पास दुनिया का सवाब भी है और आख़िरत का सवाब भी। और अल्लाह सुनने वाला और देखने वाला है। (131-134)

ऐ ईमान वालो, इंसाफ़ पर ख़ूब क़ायम रहने वाले और अल्लाह के लिए गवाही देने वाले बनो, चाहे वह तुम्हारे या तुम्हारे मां-बाप या अज़ीजों के ख़िलाफ़ हो। अगर कोई मालदार है या मोहताज तो अल्लाह तुमसे ज़्यादा दोनों का ख़ैरख़्वाह है। पस तुम ख़्वाहिश की पैरवी न करो कि हक़ से हट जाओ। और अगर तुम कजी (हेर-फेर) करोगे या पहलूतही (अवहेलना) करोगे तो जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (135)

ऐ ईमान वालो, ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी और उस किताब पर जो उसने पहले नाज़िल की। और जो शख़्स इंकार करे अल्लाह का और उसके फ़रिश्तों का और उसकी किताबों का और उसके रसूलों का और आख़िरत के दिन का तो वह बहककर दूर जा पड़ा। बेशक जो लोग ईमान लाए फिर इंकार किया, फिर ईमान लाए फिर इंकार किया, फिर इंकार में बढ़ते गए तो अल्लाह उन्हें हरगिज़ नहीं बख़्शेगा और न उन्हें राह दिखाएगा। मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) को ख़ुशख़बरी दे दो कि उनके लिए एक दर्दनाक अज़ाब है। वे लोग जो मोमिनों को छोड़कर मुंकिरों को दोस्त बनाते हैं, क्या वे उनके पास इज़्ज़त की तलाश कर रहे हैं, तो इज़्ज़त सारी अल्लाह के लिए है। (136-139)

और अल्लाह किताब में तुम पर यह हुक्म उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की निशानियों का इंकार किया जा रहा है और उनका मज़ाक़ किया जा रहा है तो तुम उनके साथ न बैठो यहां तक कि वे दूसरी बात में मशग़ूल हो जाएं वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो गए। अल्लाह मुनाफ़िक़ों को और मुंकिरों को जहन्नम में एक जगह इकट्ठा करने वाला है। वे मुनाफ़िक़ तुम्हारे लिए इंतज़ार में रहते हैं। अगर तुम्हें अल्लाह की तरफ़ से कोई फ़तह हासिल होती है तो कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे। और अगर मुंकिरों को कोई हिस्सा मिल जाए तो उनसे कहेंगे कि क्या हम तुम्हारे ख़िलाफ़ लड़ने

पर क़ादिर (समर्थ) न थे और फिर भी हमने तुम्हें मुसलमानों से बचाया। तो अल्लाह ही तुम लोगों के दर्मियान क़ियामत के दिन फ़ैसला करेगा और अल्लाह हरगिज़ मुंकिरों को मोमिनों पर कोई राह नहीं देगा। (140-141)

मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) अल्लाह के साथ धोखेबाज़ी कर रहे हैं। हालाँकि अल्लाह ही ने उन्हें धोखे में डाल रखा है। और जब वे नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो काहिली के साथ खड़े होते हैं महज़ लोगों को दिखाने के लिए। और वे अल्लाह को कम ही याद करते हैं। वे दोनों के बीच लटक रहे हैं, न इधर हैं और न उधर। और जिसे अल्लाह भटका दे तुम उसके लिए कोई राह नहीं पा सकते। ऐ ईमान वालो, मोमिनों को छोड़कर मुंकिरों को अपना दोस्त न बनाओ। क्या तुम चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह की खुली हुज्जत क़ायम कर लो। बेशक मुनाफ़िक़ीन दोज़ख़ के सबसे नीचे के तबक़े में होंगे और तुम उनका कोई मददगार न पाओगे। अलबत्ता जो लोग तौबा करें और अपनी इस्लाह कर लें और अल्लाह को मज़बूती से पकड़ लें और अपने दीन को अल्लाह के लिए ख़ालिस कर लें तो ये लोग ईमान वालों के साथ होंगे और अल्लाह ईमान वालों को बड़ा सवाब देगा। अल्लाह तुम्हें अज़ाब देकर क्या करेगा अगर तुम शुक्रगुज़ारी करो और ईमान लाओ। अल्लाह बड़ा क़द्र करने वाला है सब कुछ जानने वाला है। (142-147)

अल्लाह बदगोई (कुवाती) को पसंद नहीं करता मगर यह कि किसी पर ज़ुल्म हुआ हो और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। अगर तुम भलाई को ज़ाहिर करो या उसे छुपाओ या किसी बुराई से दरगुज़र करो तो अल्लाह माफ़ करने वाला क़ुदरत रखने वाला है। जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इंकार कर रहे हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के दर्मियान तफ़रीक़ (विभेद) करें और कहते हैं कि हम किसी को मानेंगे और किसी को न मानेंगे। और वे चाहते हैं कि इसके बीच में एक राह निकालें। ऐसे लोग पक्के मुंकिर हैं और हमने मुंकिरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से

किसी को जुदा न किया उन्हें अल्लाह उनका अज्र देगा और अल्लाह ग़फ़ूर (क्षमाशील) व रहीम (दयावान) है। (148-152)

अहले-किताब तुमसे यह मुतालबा (मांग) करते हैं कि तुम उन पर आसमान से एक किताब उतार लाओ। पस मूसा से वे इससे भी बड़ी चीज़ का मुतालबा कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि हमें अल्लाह को बिल्कुल सामने दिखा दो। पस उनकी इस ज़्यादती के सबब उन पर बिजली आ पड़ी। फिर खुली निशानी आ चुकने के बाद उन्होंने बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया। फिर हमने उससे दरगुज़र किया। और मूसा को हमने खुली हुज्जत अता की। और हमने उनके ऊपर तूर पहाड़ को उठाया उनसे अहद (वचन) लेने के वास्ते। और हमने उनसे कहा कि दरवाज़े में दाख़िल हो सर झुकाए हुए और उनसे कहा कि सब्त (सनीचर) के मामले में ज़्यादती न करना। और हमने उनसे मज़बूत अहद लिया। (153-154)

उन्हें जो सज़ा मिली वह इस पर कि उन्होंने अपने अहद (वचन) को तोड़ा और इस पर कि उन्होंने अल्लाह की निशानियों का इंकार किया और इस पर कि उन्होंने पैग़म्बरों को नाहक़ क़त्ल किया और इस कहने पर कि हमारे दिल तो बंद हैं– बल्कि अल्लाह ने उनके इंकार के सबब से उनके दिलों पर मुहर कर दी है तो वे कम ही ईमान लाते हैं। और उनके इंकार पर और मरयम पर बड़ा तूफ़ान बांधने पर और उनके इस कहने पर कि हमने मसीह बिन मरयम, अल्लाह के रसूल को क़त्ल कर दिया– हालाँकि उन्होंने न उसे क़त्ल किया और न सूली दी बल्कि मामला उनके लिए संदिग्ध कर दिया गया। और जो लोग इसमें मतभेद कर रहे हैं वे इसके बारे में शक में पड़े हुए हैं। उन्हें इसका कोई इल्म नहीं, वह सिर्फ़ अटकल पर चल रहे हैं। और बेशक उन्होंने उसे क़त्ल नहीं किया। बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी तरफ़ उठा लिया और अल्लाह ज़बरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (155-158)

और अहले-किताब में से कोई ऐसा नहीं जो उसकी मौत से पहले उस पर ईमान न ले आए और क़ियामत के दिन वह उन पर गवाह होगा। पस

यहूद के ज़ुल्म की वजह से हमने वे पाक चीज़ें उन पर हराम कर दीं जो उनके लिए हलाल थीं। और इस वजह से कि वे अल्लाह की राह से बहुत रोकते थे। और इस वजह से कि वे सूद लेते थे हालाँकि इससे उन्हें मना किया गया था और इस वजह से कि वे लोगों का माल बातिल तरीक़े से खाते थे। और हमने उनमें से मुंकिरों के लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। मगर उनमें जो लोग इल्म में पुख़्ता और ईमान वाले हैं वे ईमान लाए हैं उस पर जो तुम्हारे ऊपर उतारी गई और जो तुमसे पहले उतारी गई और वे नमाज़ के पाबंद हैं और ज़कात अदा करने वाले हैं और अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखने वाले हैं। ऐसे लोगों को हम ज़रूर बड़ा अज्र (प्रतिफल) देंगे। (159-162)

हमने तुम्हारी तरफ़ 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी है जिस तरह हमने नूह और उसके बाद के नबियों की तरफ़ 'वही' भेजी थी। और हमने इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और औलादे-याक़ूब और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलेमान की तरफ़ 'वही' भेजी थी। और हमने दाऊद को ज़बूर दी। और हमने ऐसे रसूल भेजे जिनका हाल हम तुम्हें पहले सुना चुके हैं और ऐसे रसूल भी जिनका हाल हमने तुम्हें नहीं सुनाया। और मूसा से अल्लाह ने कलाम किया। अल्लाह ने रसूलों को ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले बनाकर भेजा ताकि रसूलों के बाद लोगों के पास अल्लाह के मुक़ाबले में कोई हुज्जत बाक़ी न रहे और अल्लाह ज़बरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (163-165)

मगर अल्लाह गवाह है उस पर जो उसने तुम्हारे ऊपर उतारा है कि उसने इसे अपने इल्म के साथ उतारा है और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं और अल्लाह गवाही के लिए काफ़ी है। जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका वे बहककर बहुत दूर निकल गए। जिन लोगों ने इंकार किया और ज़ुल्म किया उन्हें अल्लाह हरगिज़ नहीं बख़्शेगा न ही उन्हें जहन्नुम के सिवा कोई रास्ता दिखाएगा जिसमें वे हमेशा रहेंगे। और अल्लाह के लिए यह आसान है। ऐ लोगो, तुम्हारे पास रसूल आ चुका तुम्हारे रब की ठीक

बात लेकर। पस मान लो ताकि तुम्हारा भला हो। और अगर न मानोगे तो अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में है। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (166-170)

ऐ अहले-किताब! अपने दीन में ग़ुलू (अति) न करो और अल्लाह के बारे में कोई बात हक़ के सिवा न कहो। मसीह ईसा इब्ने-मरयम तो बस अल्लाह के एक रसूल और उसका एक कलिमा हैं जिसे उसने मरयम की तरफ़ भेजा और उसकी जानिब से एक रूह हैं। पस अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और यह न कहो कि ख़ुदा तीन हैं। बाज़ आ जाओ, यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है। माबूद तो बस एक अल्लाह ही है। वह पाक है कि उसके औलाद हो। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह ही का कारसाज़ होना काफ़ी है। मसीह को हरगिज़ अल्लाह का बंदा बनने से संकोच न होगा और न मुक़र्रब (प्रतिष्ठित) फ़रिश्तों को होगा। और जो अल्लाह की बंदगी से संकोच करेगा और घमंड करेगा तो अल्लाह ज़रूर सबको अपने पास जमा करेगा। फिर जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक काम किए तो उन्हें वह पूरा-पूरा अज्र देगा और अपने फ़ज़्ल से उन्हें और भी देगा। और जिन लोगों ने संकोच और घमंड किया होगा उन्हें दर्दनाक अज़ाब देगा और वे अल्लाह के मुक़ाबले में न किसी को अपना दोस्त पाएंगे और न मददगार। (171-174)

ऐ लोगो, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक दलील आ चुकी है और हमने तुम्हारे ऊपर एक वाज़ेह (सुस्पष्ट) रोशनी उतार दी। पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उसे उन्होंने मज़बूत पकड़ लिया उन्हें ज़रूर अल्लाह अपनी रहमत और फ़ज़्ल में दाख़िल करेगा और उन्हें अपनी तरफ़ सीधा रास्ता दिखाएगा। लोग तुमसे हुक्म पूछते हैं। कह दो अल्लाह तुम्हें कलाला (जिसका कोई वारिस न हो न ही मां-बाप) के बारे में हुक्म बताता है। अगर कोई शख़्स मर जाए और उसके कोई औलाद न हो और उसके एक बहन हो तो उसके लिए उसके तरके का आधा है। और वह मर्द उस बहन का वारिस होगा अगर उस बहन के कोई औलाद न हो। और अगर

दो बहनें हों तो उनके लिए उसके तरके का दो-तिहाई होगा। और अगर कई भाई-बहन, मर्द-औरतें हों तो एक मर्द के लिए दो औरतों के बराबर हिस्सा है। अल्लाह तुम्हारे लिए बयान करता है ताकि तुम गुमराह न हो और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (175-177)

सूरह-5. अल-माइदह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ ईमान वालो, अहद व पैमाने को पूरा करो। तुम्हारे लिए मवेशी की क़िस्म के सब जानवर हलाल किए गए सिवा उनके जिनका ज़िक्र आगे किया जा रहा है। मगर एहराम की हालत में शिकार को हलाल न जानो। अल्लाह हुक्म देता है जो चाहता है। ऐ ईमान वालो, बेहुरमती न करो अल्लाह की निशानियों की और न हुरमत वाले महीनों की और न हरम में क़ुर्बानी वाले जानवरों की और न पट्टे बंधे हुए नियाज़ के जानवरों की और न हुरमत वाले घर की तरफ़ आने वालों की जो अपने रब का फ़ज़्ल और उसकी ख़ुशी ढूंढ़ने निकले हैं। और जब तुम एहराम की हालत से बाहर आ जाओ तो शिकार करो। और किसी क़ौम की दुश्मनी कि उसने तुम्हें मस्जिदे-हराम से रोका है तुम्हें इस पर न उभारे कि तुम ज़्यादती करने लगो। तुम नेकी और तक़्वा में एक-दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़्यादती में एक-दूसरे की मदद न करो। अल्लाह से डरो। बेशक अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। (1-2)

तुम पर हराम किया गया मुर्दार और ख़ून और सुअर का गोश्त और वह जानवर जो ख़ुदा के सिवा किसी और नाम पर ज़बह किया गया हो और वह जो मर गया हो गला घोंटने से या चोट से या ऊंचाई से गिरकर या सींग मारने से और वह जिसे दरिंदे ने खाया हो मगर जिसे तुमने ज़बह कर लिया और वह जो किसी थान पर ज़बह किया गया हो और यह कि तक़्सीम करो जुए के तीरों से। यह गुनाह का काम है। आज मुंकिर तुम्हारे दीन की तरफ़ से मायूस हो गए। पस तुम उनसे न डरो, सिर्फ़ मुझसे डरो। आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को पूरा कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी

और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन की हैसियत से पसंद कर लिया। पस जो भूख से मजबूर हो जाए लेकिन गुनाह पर मायल न हो तो अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (3)

वे पूछते हैं कि उनके लिए क्या चीज़ हलाल की गई है। कहो कि तुम्हारे लिए सुथरी चीज़ें हलाल हैं। और शिकारी जानवरों में से जिन्हें तुमने सधाया है, तुम उन्हें सिखाते हो उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया। पस तुम उनके शिकार में से खाओ जो वे तुम्हारे लिए पकड़ रखें। और उन पर अल्लाह का नाम लो और अल्लाह से डरो, अल्लाह बेशक जल्द हिसाब लेने वाला है। आज तुम्हारे लिए सब सुथरी चीज़ें हलाल कर दी गईं। और अहले-किताब का खाना तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है। और हलाल हैं तुम्हारे लिए पाक दामन औरतें मुसलमान औरतों में से और पाक दामन औरतें उनमें से जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई जब तुम उन्हें उनके महर दे दो इस तरह कि तुम निकाह में लाने वाले हो, न एलानिया बदकारी करो और न ख़ुफ़िया आशनाई करो। और जो शख़्स ईमान के साथ कुफ़्र करेगा तो उसका अमल ज़ाया हो जाएगा और वह आख़िरत में नुक़सान उठाने वालों में से होगा। (4-5)

ऐ ईमान वालो, जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने चेहरों और अपने हाथों को कोहनियों तक धोओ और अपने सरों का मसह करो और अपने पैरों को टख़नों तक धोओ और अगर तुम हालते-जनाबत में हो तो ग़ुस्ल कर लो। और अगर तुम मरीज़ हो या सफ़र में हो या तुममें से कोई इस्तंजा से आए या तुमने औरत से सोहबत की हो फिर तुम्हें पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो और अपने चेहरों और हाथों पर इससे मसह कर लो। अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कोई तंगी डाले। बल्कि वह चाहता है कि तुम्हें पाक करे और तुम पर अपनी नेमत तमाम करे ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो। (6)

और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो और उसके उस अहद को याद करो जो उसने तुमसे लिया है। जब तुमने कहा कि हमने सुना और

हमने माना। और अल्लाह से डरो। बेशक अल्लाह दिलों की बात तक जानता है। ऐ ईमान वालो, अल्लाह के लिए क़ायम रहने वाले और इंसाफ़ के साथ गवाही देने वाले बनो। और किसी गिरोह की दुश्मनी तुम्हें इस पर न उभारे कि तुम इंसाफ़ न करो, इंसाफ़ करो। यही तक़वा से ज़्यादा क़रीब है और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह को ख़बर है जो तुम करते हो। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनसे अल्लाह का वादा है कि उनके लिए बख़्शिश है और बड़ा अज्र है। और जिन्होंने इंकार किया और हमारी निशानियों को झुठलाया ऐसे लोग दोज़ख़ वाले हैं। ऐ ईमान वालो, अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो जब एक क़ौम ने इरादा किया कि तुम पर दस्तदराज़ी करे तो अल्लाह ने तुमसे उनके हाथ को रोक दिया। और अल्लाह से डरो और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। (7-11)

और अल्लाह ने बनी इस्राईल से अहद (वचन) लिया और हमने उनमें बारह सरदार मुक़र्रर किए। और अल्लाह ने कहा कि मैं तुम्हारे साथ हूं। अगर तुम नमाज़ क़ायम करोगे और ज़कात अदा करोगे और मेरे पैग़म्बरों पर ईमान लाओगे और उनकी मदद करोगे और अल्लाह को क़र्ज़े-हसन दोगे तो मैं तुमसे तुम्हारे गुनाह ज़रूर दूर करूंगा और तुम्हें ज़रूर ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूंगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। पस तुममें से जो शख़्स इसके बाद इंकार करेगा तो वह सीधे रास्ते से भटक गया। पस उनकी अहदशिकनी की बिना पर हमने उन पर लानत कर दी और हमने उनके दिलों को सख़्त कर दिया। वे कलाम को उसकी जगह से बदल देते हैं। और जो कुछ उन्हें नसीहत की गई थी उसका बड़ा हिस्सा वे भुला बैठे। और तुम बराबर उनकी किसी न किसी ख़ियानत से आगाह होते रहते हो सिवाए थोड़े लोगों के। उन्हें माफ़ करो और उनसे दरगुज़र करो, अल्लाह नेकी करने वालों को पसंद करता है। (12-13)

और जो लोग कहते हैं कि हम नसरानी (ईसाई) हैं, उनसे हमने अहद लिया था। पस जो कुछ उन्हें नसीहत की गई थी उसका बड़ा हिस्सा वे भुला बैठे। फिर हमने क़ियामत तक के लिए उनके दर्मियान दुश्मनी और बुग़्ज़

डाल दिया। और आख़िर अल्लाह उन्हें आगाह कर देगा उससे जो कुछ वे कर रहे थे। (14)

ऐ अहले-किताब, तुम्हारे पास हमारा रसूल आया है। वह किताबे-इलाही की बहुत सी उन बातों को तुम्हारे सामने खोल रहा है जिन्हें तुम छुपाते थे। और वह दरगुज़र करता है बहुत सी चीज़ों से। बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक रोशनी और एक ज़ाहिर करने वाली किताब आ चुकी है। इसके ज़रिए से अल्लाह उन लोगों को सलामती की राहें दिखाता है जो उसकी रिज़ा के तालिब हैं और अपनी तौफ़ीक़ से उन्हें अंधेरों से निकालकर रोशनी में ला रहा है और सीधी राह की तरफ़ उनकी रहनुमाई करता है। बेशक उन लोगों ने कुफ्र किया जिन्होंने कहा कि ख़ुदा ही तो मसीह इब्ने-मरयम है। कहो फिर कौन इख़्तियार रखता है अल्लाह के आगे अगर वह चाहे कि हलाक कर दे मसीह इब्ने-मरयम को और उसकी मां को और जितने लोग ज़मीन में हैं सबको। और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ इनके दर्मियान है। वह पैदा करता है जो कुछ चाहता है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (15-17)

और यहूद व नसारा कहते हैं कि हम ख़ुदा के बेटे और उसके महबूब हैं। तुम कहो कि फिर वह तुम्हारे गुनाहों पर तुम्हें सज़ा क्यों देता है। नहीं बल्कि तुम भी उसकी पैदा की हुई मख़्लूक़ में से एक आदमी हो। वह जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा अज़ाब देगा। और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ इनके दर्मियान है और उसी की तरफ़ लौटकर जाना है। ऐ अहले-किताब, तुम्हारे पास हमारा रसूल आया है, वह तुम्हें साफ़-साफ़ बता रहा है रसूलों के एक वक़्फ़ा के बाद। ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला नहीं आया। पस अब तुम्हारे पास .ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला आ गया है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (18-19)

और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम, अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो कि उसने तुम्हारे अंदर नबी पैदा किए।

और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें वह दिया जो दुनिया में किसी को नहीं दिया था। ऐ मेरी क़ौम, इस पाक ज़मीन में दाख़िल हो जाओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है। और अपनी पीठ की तरफ़ न लौटो वरना नुक़सान में पड़ जाओगे। उन्होंने कहा कि वहां एक ज़बरदस्त क़ौम है। हम हरगिज़ वहां न जाएंगे जब तक वे वहां से निकल न जाएं। अगर वे वहां से निकल जाएं तो हम दाख़िल होंगे। दो आदमी जो अल्लाह से डरने वालों में से थे और उन दोनों पर अल्लाह ने इनाम किया था, उन्होंने कहा कि तुम उन पर हमला करके शहर के फाटक में दाख़िल हो जाओ। जब तुम उसमें दाख़िल हो जाओगे तो तुम ही ग़ालिब होगे और अल्लाह पर भरोसा करो अगर तुम मोमिन हो। उन्होंने कहा कि ऐ मूसा! हम कभी वहां दाख़िल न होंगे जब तक वे लोग वहां हैं। पस तुम और तुम्हारा ख़ुदावंद दोनों जाकर लड़ो, हम यहां बैठे हैं। (20-24)

मूसा ने कहा कि ऐ मेरे रब, अपने और अपने भाई के सिवा किसी पर मेरा इख़्तियार नहीं। पस तू हमारे और इस नाफ़रमान क़ौम के दर्मियान जुदाई कर दे। अल्लाह ने कहा : वह मुल्क उन पर चालीस साल के लिए हराम कर दिया गया। ये लोग ज़मीन में भटकते फिरेंगे। पस तुम इस नाफ़रमान क़ौम पर अफ़सोस न करो। (25-26)

और उन्हें आदम के दो बेटों का क़िस्सा हक़ के साथ सुनाओ। जबकि उन दोनों ने क़ुर्बानी पेश की तो उनमें से एक की क़ुर्बानी क़ुबूल हुई और दूसरे की क़ुर्बानी क़ुबूल न हुई। उसने कहा मैं तुझे मार डालूंगा। उसने जवाब दिया कि अल्लाह तो सिर्फ़ मुत्तक़ियों से क़ुबूल करता है। अगर तुम मुझे क़त्ल करने के लिए हाथ उठाओगे तो मैं तुम्हें क़त्ल करने के लिए तुम पर हाथ नहीं उठाऊंगा। मैं डरता हूं अल्लाह से जो सारे जहान का रब है। मैं चाहता हूं कि मेरा और अपना गुनाह तू ही ले ले फिर तू आग वालों में शामिल हो जाए। और यही सज़ा है ज़ुल्म करने वालों की। (27-29)

फिर उसके नफ़्स ने उसे अपने भाई के क़त्ल पर राज़ी कर लिया और उसने उसे क़त्ल कर डाला। फिर वह नुक़सान उठाने वालों में शामिल हो

गया। फिर ख़ुदा ने एक कौवे को भेजा जो ज़मीन में कुरेदता था ताकि वह उसे दिखाए कि वह अपने भाई की लाश को किस तरह छुपाए। उसने कहा कि अफ़सोस मेरी हालत पर कि मैं इस कौवे जैसा भी न हो सका कि अपने भाई की लाश को छुपा देता। पस वह बहुत शर्मिन्दा हुआ। (30-31)

इसी सबब से हमने बनी इस्राईल पर यह लिख दिया कि जो शख़्स किसी को क़त्ल करे, बग़ैर इससे कि उसने किसी को क़त्ल किया हो या ज़मीन में फ़साद बरपा किया हो तो गोया उसने सारे आदमियों को क़त्ल कर डाला और जिसने एक शख़्स को बचाया तो गोया उसने सारे आदमियों को बचा लिया। और हमारे पैग़म्बर उनके पास खुले अहकाम लेकर आए। इसके बावजूद उनमें से बहुत से लोग ज़मीन में ज़्यादतियां करते हैं। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और ज़मीन में फ़साद करने के लिए दौड़ते हैं उनकी सज़ा यही है कि उन्हें क़त्ल किया जाए या वे सूली पर चढ़ाए जाएं या उनके हाथ और पैर विपरीत दिशा से काटे जाएं या उन्हें मुल्क से बाहर निकाल दिया जाए। यह उनकी रुस्वाई दुनिया में है और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अज़ाब है। मगर जो लोग तौबा कर लें तुम्हारे क़ाबू पाने से पहले तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (32-34)

ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और उसका क़ुर्ब (समीपता) तलाश करो और उसकी राह में जद्दोजहद करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया है अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है और इतना ही और हो ताकि वे उसे फ़िदये (अर्थदण्ड) में देकर क़ियामत के दिन के अज़ाब से छूट जाएं तब भी वह उनसे क़ुबूल न की जाएगी और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। वे चाहेंगे कि आग से निकल जाएं मगर वे उससे निकल न सकेंगे और उनके लिए एक मुस्तक़िल अज़ाब है। और चोर मर्द और चोर औरत दोनों के हाथ काट दो। यह उनकी कमाई का बदला है और अल्लाह की तरफ़ से इबरतनाक सज़ा। और अल्लाह ग़ालिब और हकीम (तत्वदर्शी) है। फिर जिसने अपने ज़ुल्म के बाद तौबा की और इस्लाह कर ली तो अल्लाह बेशक उस पर तवज्जोह करेगा। और अल्लाह बख़्शने वाला

महरबान है। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ज़मीन और आसमानों की सल्तनत का मालिक है। वह जिसे चाहे सज़ा दे और जिसे चाहे माफ़ कर दे। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (35-40)

ऐ पैग़म्बर, तुम्हें वे लोग रंज में न डालें जो कुफ़्र की राह में बड़ी तेज़ी दिखा रहे हैं। चाहे वे उनमें से हों जो अपने मुंह से कहते हैं कि हम ईमान लाए हालाँकि उनके दिल ईमान नहीं लाए या उनमें से हों जो यहूदी हैं, झूठ के बड़े सुनने वाले, सुनने वाले दूसरे लोगों की ख़ातिर जो तुम्हारे पास नहीं आए। वे कलाम को उसके मक़ाम से हटा देते हैं। वे लोगों से कहते हैं कि अगर तुम्हें यह हुक्म मिले तो क़ुबूल कर लेना और अगर यह हुक्म न मिले तो उससे बचकर रहना। और जिसे अल्लाह फ़ितने में डालना चाहे तो तुम अल्लाह के मुक़ाबिल उसके मामले में कुछ नहीं कर सकते। यही वे लोग हैं कि अल्लाह ने न चाहा कि उनके दिलों को पाक करे। उनके लिए दुनिया में रुस्वाई है और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अज़ाब है। (41)

वे झूठ के बड़े सुनने वाले हैं, हराम के बड़े खाने वाले हैं। अगर वे तुम्हारे पास आएं तो चाहे उनके दर्मियान फ़ैसला करो या उन्हें टाल दो। अगर तुम उन्हें टाल दोगे तो वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। और अगर तुम फ़ैसला करो तो उनके दर्मियान इंसाफ़ के मुताबिक़ फ़ैसला करो। अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को पसंद करता है। और वे कैसे तुम्हें हकम (मध्यस्थ) बनाते हैं हालाँकि उनके पास तौरात है जिसमें अल्लाह का हुक्म मौजूद है। और फिर वे उससे मुंह मोड़ रहे हैं। और ये लोग हरगिज़ ईमान वाले नहीं हैं। (42-43)

बेशक हमने तौरात उतारी है जिसमें हिदायत और रोशनी है। उसी के मुताबिक़ ख़ुदा के फ़रमांबरदार अंबिया यहूदी लोगों का फ़ैसला करते थे और उनके दुर्वेश और उलमा (विद्वान) भी। इसलिए कि वे .ख़ुदा की किताब पर निगहबान ठहराए गए थे। और वे उसके गवाह थे। पस तुम इंसानों से न डरो मुझसे डरो और मेरी आयतों को तुच्छ मूल्यों के ऐवज़ न बेचो। और जो कोई उसके मुवाफ़िक़ हुक्म न करे जो अल्लाह ने उतारा है तो वही लोग मुंकिर हैं। और हमने उस किताब में उन पर लिख दिया कि जान के बदले जान और

आंख के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और ज़ख़्मों का बदला उनके बराबर। फिर जिसने उसे माफ़ कर दिया तो वह उसके लिए कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) है। और जो शख़्स उसके मुवाफ़िक़ फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा तो वही लोग ज़ालिम हैं। और हमने उनके पीछे ईसा इब्ने-मरयम को भेजा तस्दीक़ (पुष्टि) करते हुए अपने से पहले की किताब तौरात की और हमने उसे इंजील दी जिसमें हिदायत और नूर है और वह तस्दीक़ करने वाली थी अपने से अगली किताब तौरात की और हिदायत और नसीहत डरने वालों के लिए। और चाहिए कि इंजील वाले उसके मुवाफ़िक़ फ़ैसला करें जो अल्लाह ने उसमें उतारा है। और जो कोई उसके मुवाफ़िक़ फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा तो वही लोग नाफ़रमान हैं। (44-47)

और हमने तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी हक़ के साथ, तस्दीक़ (पुष्टि) करने वाली पिछली किताब की और उसके मज़ामीन पर निगहबान। पस तुम उनके दर्मियान फ़ैसला करो उसके मुताबिक़ जो अल्लाह ने उतारा। और जो हक़ तुम्हारे पास आया है उसे छोड़कर उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करो। हमने तुममें से हर एक लिए एक शरीअत और एक तरीक़ा ठहराया। और अगर .खुदा चाहता तो तुम्हें एक ही उम्मत बना देता। मगर अल्लाह ने चाहा कि वह अपने दिए हुए हुक्मों में तुम्हारी आज़माइश करे। पस तुम भलाइयों की तरफ़ दौड़ो। आख़िरकार तुम सबको ख़ुदा की तरफ़ पलटकर जाना है। फिर वह तुम्हें आगाह कर देगा उस चीज़ से जिसमें तुम इख़्तिलाफ़ (मत-भिन्नता) कर रहे थे। (48)

और उनके दर्मियान उसके मुताबिक़ फ़ैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है और उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करो और उन लोगों से बचो कि कहीं वह तुम्हें फिसला दें तुम्हारे ऊपर अल्लाह के उतारे हुए किसी हुक्म से। पस अगर वे फिर जाएं तो जान लो कि अल्लाह उन्हें उनके कुछ गुनाहों की सज़ा देना चाहता है। और यक़ीनन लोगों में से ज़्यादा आदमी नाफ़रमान हैं। क्या ये लोग जाहिलियत का फ़ैसला चाहते हैं। और अल्लाह से बढ़कर किसका

फ़ैसला हो सकता है उन लोगों के लिए जो यक़ीन करना चाहें। (49-50)

ऐ ईमान वालो, यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ। वे एक-दूसरे के दोस्त हैं। और तुममें से जो शख़्स उन्हें अपना दोस्त बनाएगा तो वह उन्हीं में से होगा। अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। तुम देखते हो कि जिनके दिलों में रोग है वे उन्हीं की तरफ़ दौड़ रहे हैं। वे कहते हैं कि हमें यह अंदेशा है कि हम किसी मुसीबत में न फंस जाएं। तो मुमकिन है कि अल्लाह फ़तह दे दे या अपनी तरफ़ से कोई ख़ास बात ज़ाहिर करे तो ये लोग उस चीज़ पर जिसे ये अपने दिलों में छुपाए हुए हैं नादिम होंगे। और उस वक़्त अहले-ईमान कहेंगे क्या ये वही लोग हैं जो ज़ोर-शोर से अल्लाह की क़समें खाकर यक़ीन दिलाते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं। उनके सारे आमाल ज़ाया (नष्ट) हो गए और वे घाटे में रहे। (51-53)

ऐ ईमान वालो, तुममें से जो शख़्स अपने दीन से फिर जाए तो अल्लाह जल्द ऐसे लोगों को उठाएगा जो अल्लाह को महबूब होंगे और अल्लाह उन्हें महबूब होगा। वे मुसलमानों के लिए नर्म और मुंकिरों के ऊपर सख़्त होंगे। वे अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरेंगे। यह अल्लाह का फ़ज़्ल है। वह जिसे चाहता है अता करता है। और अल्लाह वुस्अत वाला और इल्म वाला है। तुम्हारे दोस्त तो बस अल्लाह और उसका रसूल और वे ईमान वाले हैं जो नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं और वे अल्लाह के आगे झुकने वाले हैं। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वालों को दोस्त बनाए तो बेशक अल्लाह की जमाअत ही ग़ालिब रहने वाली है। (54-56)

ऐ ईमान वालो, उन लोगों को अपना दोस्त न बनाओ जिन्होंने तुम्हारे दीन को मज़ाक़ और खेल बना लिया है, उन लोगों में से जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई और न मुंकिरों को। और अल्लाह से डरते रहो अगर तुम ईमान वाले हो। और जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो तो वे लोग उसे मज़ाक़ और खेल बना लेते हैं। इसकी वजह यह है कि वे अक़्ल नहीं रखते। कहो कि ऐ अहले-किताब, तुम हमसे सिर्फ़ इसलिए ज़िद रखते हो कि हम ईमान

लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ़ उतारा गया और उस पर जो हमसे पहले उतरा। और तुममें से अक्सर लोग नाफ़रमान हैं। कहो क्या मैं तुम्हें बताऊं वह जो अल्लाह के यहां अंजाम के एतबार से इससे भी ज़्यादा बुरा है। वह जिस पर .ख़ुदा ने लानत की और जिस पर उसका ग़ज़ब हुआ। और जिनमें से बन्दर और सुअर बना दिए और उन्होंने शैतान की परस्तिश की। ऐसे लोग मक़ाम के एतबार से बदतर और राहेरास्त से बहुत दूर हैं। (57-60)

और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हालाँकि वे मुंकिर आए थे और मुंकिर ही चले गए। और अल्लाह ख़ूब जानता है उस चीज़ को जिसे वे छुपा रहे हैं। और तुम उनमें से अक्सर को देखोगे कि वे गुनाह और ज़ुल्म और हराम खाने पर दौड़ते हैं। कैसे बुरे काम हैं जो वे कर रहे हैं। उनके मशाइख़ (संत) और उलमा (विद्वान) उन्हें क्यों नहीं रोकते गुनाह की बात कहने से और हराम खाने से। कैसे बुरे काम हैं जो वे कर रहे हैं। (61-63)

और यहूद कहते हैं कि .ख़ुदा के हाथ बंधे हुए हैं। उन्हीं के हाथ बंध जाएं और लानत हो उन्हें इस कहने पर। बल्कि .ख़ुदा के दोनों हाथ खुले हुए हैं। वह जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है। और तुम्हारे ऊपर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से जो कुछ उतरा है वह उनमें से अक्सर लोगों की सरकशी और इंकार को बढ़ा रहा है। और हमने उनके दर्मियान दुश्मनी और कीना क़ियामत तक के लिए डाल दिया है। जब कभी वे लड़ाई की आग भड़काते हैं तो अल्लाह उसे बुझा देता है। और वे ज़मीन में फ़साद फैलाने में सरगर्म हैं। हालाँकि अल्लाह फ़साद बरपा करने वालों को पसंद नहीं करता। (64)

और अगर अहले-किताब ईमान लाते और अल्लाह से डरते तो हम ज़रूर उनकी बुराइयां उनसे दूर कर देते और उन्हें नेमत के बाग़ों में दाख़िल करते। और अगर वे तौरात और इंजील की पाबंदी करते और उसकी जो उन पर उनके रब की तरफ़ से उतारा गया है तो वे खाते अपने ऊपर से और अपने क़दमों की नीचे से। कुछ लोग उनमें सीधी राह पर हैं। लेकिन ज़्यादा उनमें ऐसे हैं जो बहुत बुरा कर रहे हैं। (65-66)

ऐ पैग़म्बर, जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ़ से उतरा है उसे पहुंचा दो। और अगर तुमने ऐसा न किया तो तुमने अल्लाह के पैग़ाम को नहीं पहुंचाया। और अल्लाह तुम्हें लोगों से बचाएगा। अल्लाह यक़ीनन मुंकिर लोगों को राह नहीं देता। (67)

कह दो, ऐ अहले-किताब! तुम किसी चीज़ पर नहीं जब तक तुम क़ायम न करो तौरात और इंजील को और उसे जो तुम्हारे ऊपर उतरा है तुम्हारे रब की तरफ़ से। और जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ़ से उतारा गया है वह यक़ीनन उनमें से अक्सर की सरकशी और इंकार को बढ़ाएगा। पस तुम इंकार करने वालों के ऊपर अफ़सोस न करो। बेशक जो लोग ईमान लाए और जो लोग यहूदी हुए और साबी और नसरानी, जो शख़्स भी ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत (परलोक) के दिन पर और नेक अमल करे तो उनके लिए न कोई अंदेशा है और न वे ग़मगीन होंगे। (68-69)

हमने बनी इस्राईल से अहद (वचन) लिया और उनकी तरफ़ बहुत से रसूल भेजे। जब कोई रसूल उनके पास ऐसी बात लेकर आया जिसे उनका जी न चाहता था तो कुछ को उन्होंने झुठलाया और कुछ को क़त्ल कर दिया। और ख़्याल किया कि कुछ ख़राबी न होगी। पस वे अंधे और बहरे बन गए। फिर अल्लाह ने उन पर तवज्जोह की। फिर उनमें से बहुत से अंधे और बहरे बन गए। और अल्लाह देखता है जो कुछ वे कर रहे हैं। (70-71)

यक़ीनन उन लोगों ने कुफ़्र किया जिन्होंने कहा कि ख़ुदा ही तो मसीह इब्ने-मरयम है। हालाँकि मसीह ने कहा था कि ऐ बनी इस्राईल! अल्लाह की इबादत करो जो मेरा रब है और तुम्हारा रब भी। जो शख़्स अल्लाह का शरीक ठहराएगा तो अल्लाह ने हराम की उस पर जन्नत और उसका ठिकाना आग है। और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। यक़ीनन उन लोगों ने कुफ़्र किया जिन्होंने कहा कि ख़ुदा तीन में का तीसरा है। हालाँकि कोई माबूद (पूज्य) नहीं सिवाए एक माबूद के। और अगर वे बाज़ न आए उससे जो वे कहते हैं तो उनमें से कुफ़्र पर क़ायम रहने वालों को एक दर्दनाक अज़ाब पकड़

लेगा। ये लोग अल्लाह के आगे तौबा क्यों नहीं करते और उससे माफ़ी क्यों नहीं चाहते। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। मसीह इब्ने-मरयम तो सिर्फ़ एक रसूल हैं। उनसे पहले भी बहुत रसूल गुज़र चुके हैं। और उनकी मां एक रास्तबाज़ (नेक) ख़ातून थीं। दोनों खाना खाते थे। देखो हम किस तरह उनके सामने दलीलें बयान कर रहे हैं। फिर देखो वे किधर उल्टे चले जा रहे हैं। कहो क्या तुम अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज़ की इबादत करते हो जो न तुम्हारे नुक़सान का इख़्तियार रखती है और न नफ़ा का। और सुनने वाला और जानने वाला सिर्फ़ अल्लाह ही है। (72-76)

कहो, ऐ अहले-किताब! अपने दीन में नाहक़ ग़ुलू (अति) न करो और उन लोगों के ख़्यालात की पैरवी न करो जो इससे पहले गुमराह हुए और जिन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह किया। और वे सीधी राह से भटक गए। (77)

बनी इस्राईल में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन पर लानत की गई दाऊद और ईसा इब्ने-मरयम की ज़बान से। इसलिए कि उन्होंने नाफ़रमानी की और वे हद से आगे बढ़ जाते थे। वे एक-दूसरे को मना नहीं करते थे बुराई से जो वे करते थे। निहायत बुरा काम था जो वे कर रहे थे। तुम उनमें बहुत आदमी देखोगे कि कुफ़्र करने वालों से दोस्ती रखते हैं। कैसी बुरी चीज़ है जो उन्होंने अपने लिए आगे भेजी है कि ख़ुदा का ग़ज़ब हुआ उन पर और वे हमेशा अज़ाब में पड़े रहेंगे। अगर वे ईमान रखने वाले होते अल्लाह पर और नबी पर और उस पर जो उसकी तरफ़ उतरा तो वे मुंकिरों को दोस्त न बनाते। मगर उनमें अक्सर नाफ़रमान हैं। (78-81)

ईमान वालों के साथ दुश्मनी में तुम सबसे बढ़कर यहूद और मुश्रिकीन को पाओगे। और ईमान वालों के साथ दोस्ती में तुम सबसे ज़्यादा उन लोगों को पाओगे जो अपने को नसारा कहते हैं। यह इसलिए कि उनमें आलिम और राहिब हैं। और इसलिए कि वे तकब्बुर (घमंड) नहीं करते। और जब वे उस कलाम को सुनते हैं जो रसूल पर उतारा गया है तो तुम देखोगे कि उनकी आंखों से आंसू जारी हैं इस सबब से कि उन्होंनें हक़ को पहचान लिया। वे

पुकार उठते हैं कि ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए। पस तू हमें गवाही देने वालों में लिख ले। और हम क्यों न ईमान लाएं अल्लाह पर और उस हक़ पर जो हमें पहुंचा है जबकि हम यह आरज़ू रखते हैं कि हमारा रब हमें सालेह (नेक) लोगों में शामिल करे। पस अल्लाह उन्हें इस क़ौल के बदले में ऐसे बाग़ देगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे उनमें हमेशा रहेंगे। और यही बदला है नेक अमल करने वालों का। और जिन्होंने इंकार किया और हमारी निशानियों को झुठलाया तो वही लोग दोज़ख़ वाले हैं। (82-86)

ऐ ईमान वालो, उन सुथरी चीज़ों को हराम न ठहराओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं और हद से न बढ़ो। अल्लाह हद से बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता, और अल्लाह ने तुम्हें जो हलाल चीज़ें दी हैं उनमें से खाओ। और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाए हो। अल्लाह तुमसे तुम्हारी बेमअना क़समों पर गिरफ़्त नहीं करता। मगर जिन क़समों को तुमने मज़बूत बांधा उन पर वह ज़रूर तुम्हारी गिरफ़्त करेगा। ऐसी क़सम का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) है दस मिस्कीनों को औसत दर्जे का खाना खिलाना जो तुम अपने घरवालों को खिलाते हो या कपड़ा पहना देना या एक गर्दन आज़ाद करना। और जिसे मयस्सर न हो वह तीन दिन के रोज़े रखे। यह कफ़्फ़ारा है तुम्हारी क़समों का जबकि तुम क़सम खा बैठो। और अपनी क़समों की हिफ़ाज़त करो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम बयान करता है ताकि तुम शुक्र अदा करो। (87-89)

ऐ ईमान वालो, शराब और जुआ और देव-स्थान और पांसे सब गंदे काम हैं शैतान के। पस तुम इनसे बचो ताकि तुम फ़लाह (कल्याण) पाओ। शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुए के ज़रिए तुम्हारे दर्मियान दुश्मनी और बुग़्ज़ (द्वेष) डाल दे और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोक दे। तो क्या तुम इनसे बाज़ आओगे। और इताअत करो अल्लाह की और इताअत करो रसूल की और बचो। अगर तुम ऐराज़ (उपेक्षा) करोगे तो जान लो कि हमारे रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ खोलकर पहुंचा देना है। जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उन पर उस चीज़ में कोई गुनाह नहीं जो वे खा चुके।

जबकि वे डरे और ईमान लाए और नेक काम किया। फिर डरे और ईमान लाए फिर डरे और नेक काम किया। और अल्लाह नेक काम करने वालों के साथ मुहब्बत रखता है। (90-93)

ऐ ईमान वालो, अल्लाह तुम्हें उस शिकार के ज़रिए से आज़माइश में डालेगा जो बिल्कुल तुम्हारे हाथों और तुम्हारे नेज़ों की ज़द में होगा ताकि अल्लाह जाने की कौन शख़्स उससे बिना देखे डरता है। फिर जिसने इसके बाद ज़्यादती की तो उसके लिए दर्दनाक अज़ाब है। ऐ ईमान वालो, शिकार को न मारो जबकि तुम हालते-एहराम में हो। और तुममें से जो शख़्स उसे जानबूझकर मारे तो इसका बदला उसी तरह का जानवर है जैसा कि उसने मारा है जिसका फ़ैसला तुममें से दो आदिल आदमी करेंगे और यह नज़राना काबा पहुंचाया जाए। या इसके कफ़्फ़ारे (प्रायश्चित) में कुछ मोहताजों को खाना खिलाना होगा। या इसके बराबर रोज़े रखने होंगे, ताकि वह अपने किए की सज़ा चखे। अल्लाह ने माफ़ किया जो कुछ हो चुका। और जो शख़्स फिरेगा तो अल्लाह उससे बदला लेगा। और अल्लाह ज़बरदस्त है बदला लेने वाला है। (94-95)

तुम्हारे लिए दरिया का शिकार और उसका खाना जाइज़ किया गया, तुम्हारे फ़ायदे के लिए और क़ाफ़िलों के लिए। और जब तक तुम एहराम में हो ख़ुश्की का शिकार तुम्हारे ऊपर हराम किया गया। और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम हाज़िर किए जाओगे। अल्लाह ने काबा, हुरमत वाले घर, को लोगों के लिए क़याम का ज़रिया बनाया। और हुरमत वाले महीनों को और क़ुर्बानी के जानवरों को और गले में पट्टा पड़े हुए जानवरों को भी, यह इसलिए कि तुम जानो कि अल्लाह को मालूम है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। और अल्लाह हर चीज़ से वाक़िफ़ है। जान लो कि अल्लाह का अज़ाब सख़्त है और बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। रसूल पर सिर्फ़ पहुंचा देने की ज़िम्मेदारी है। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपाते हो। कहो कि नापाक और पाक

बराबर नहीं हो सकते, अगरचे नापाक की अधिकता तुम्हें भली लगे। पस अल्लाह से डरो ऐ अक़्ल वालो, ताकि तुम फ़लाह पाओ। (96-100)

ऐ ईमान वालो, ऐसी बातों के मुतअल्लिक़ सवाल न करो कि अगर वे तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएं तो तुम्हें गिरां गुज़रें। और अगर तुम उनके मुतअल्लिक़ सवाल करोगे ऐसे वक़्त में जबकि क़ुरआन उतर रहा है तो वे तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएंगी। अल्लाह ने उनसे दरगुज़र किया। और अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मुल (उदारता) वाला है। ऐसी ही बातें तुमसे पहले एक जमाअत ने पूछीं। फिर वे उनके मुंकिर होकर रह गए। अल्लाह ने बहीरा और साएबा और वसीला और हाम (बुतों के नाम पर छोड़े हुए जानवर) मुक़र्रर नहीं किए। मगर जिन लोगों ने कुफ़्र किया वे अल्लाह पर झूठ बांधते हैं और उनमें से अक्सर अक़्ल से काम नहीं लेते। और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ उतारा है उसकी तरफ़ आओ और रसूल की तरफ़ आओ तो वे कहते हैं कि हमारे लिए वही काफ़ी है जिस पर हमने अपने बड़ों को पाया है। क्या अगरचे उनके बड़े न कुछ जानते हों और न हिदायत पर हों। ऐ ईमान वालो, तुम अपनी फ़िक्र रखो। कोई गुमराह हो तो इससे तुम्हारा कुछ नुक़सान नहीं अगर तुम हिदायत पर हो। तुम सबको अल्लाह के पास लौटकर जाना है फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे। (101-105)

ऐ ईमान वालो, तुम्हारे दर्मियान गवाही वसीयत के वक़्त, जबकि तुममें से किसी की मौत का वक़्त आ जाए, इस तरह है कि दो मोतबर (विश्वसनीय) आदमी तुममें से गवाह हों। या अगर तुम सफ़र की हालत में हो और वहां मौत की मुसीबत पेश आ जाए तो तुम्हारे ग़ैरों में से दो गवाह ले लिए जाएं। फिर अगर तुम्हें शुबह हो जाए तो दोनों गवाहों को नमाज़ के बाद रोक लो और वे दोनों ख़ुदा की क़सम खाकर कहें कि हम किसी क़ीमत के ऐवज़ इसे न बेचेंगे चाहे कोई संबंधी ही क्यों न हो। और न हम अल्लाह की गवाही को छुपाएंगे। अगर हम ऐसा करें तो बेशक हम गुनाहगार होंगे। फिर अगर पता चले कि उन दोनों ने कोई हक़तल्फ़ी की है तो उनकी जगह दो और शख़्स उन लोगों में से खड़े हों जिनका हक़ पिछले दो गवाहों ने मारना चाहा था। वे

ख़ुदा की क़सम खाएं कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से ज़्यादा बरहक़ है और हमने कोई ज़्यादती नहीं की है। अगर हम ऐसा करें तो हम ज़ालिमों में से होंगे। यह क़रीबतरीन तरीक़ा है कि लोग गवाही ठीक दें। या इससे डरें कि हमारी क़सम उनकी क़सम के बाद उल्टी पड़ेगी। और अल्लाह से डरो और सुनो। अल्लाह नाफ़रमानों को सीधी राह नहीं चलाता। (106-108)

जिस दिन अल्लाह पैग़म्बरों को जमा करेगा फिर पूछेगा तुम्हें क्या जवाब मिला था। वह कहेंगे हमें कुछ इल्म नहीं, छुपी हुई बातों को जानने वाला तू ही है। जब अल्लाह कहेगा ऐ ईसा इब्ने-मरयम, मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुम पर और तुम्हारी मां पर किया जबकि मैंने रूहे पाक से तुम्हारी मदद की। तुम लोगों से कलाम करते थे गोद में भी और बड़ी उम्र में भी। और जब मैंने तुम्हें किताब और हिक्मत और तौरात और इंजील की तालीम दी। और जब तुम मिट्टी से परिंदे जैसी सूरत मेरे हुक्म से बनाते थे फिर उसमें फूंक मारते थे तो वह मेरे हुक्म से परिंदा बन जाती थी। और तुम अंधे और कोढ़ी को मेरे हुक्म से अच्छा कर देते थे। और जब तुम मुर्दों को मेरे हुक्म से निकाल खड़ा करते थे। और जब मैंने बनी इस्राईल को तुमसे रोका जबकि तुम उनके पास खुली निशानियां लेकर आए तो उनके मुंकिरों ने कहा यह तो बस एक खुला हुआ जादू है। (109-110)

और जब मैंने हवारियों (साथियों) के दिल में डाल दिया कि मुझ पर ईमान लाओ और मेरे रसूल पर ईमान लाओ तो उन्होंने कहा कि हम ईमान लाए और तू गवाह रह कि हम फ़रमांबरदार हैं। जब हवारियों ने कहा कि ऐ ईसा इब्ने-मरयम, क्या तुम्हारा रब यह कर सकता है कि हम पर आसमान से एक ख़्वान (भोजन भरा थाल) उतारे। ईसा ने कहा अल्लाह से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि हम उसमें से खाएं और हमारे दिल मुतमइन (संतुष्ट) हों और हम यह जान लें कि तूने हमसे सच कहा और हम उस पर गवाही देने वाले बन जाएं। ईसा इब्ने-मरयम ने दुआ कि ऐ अल्लाह, हमारे रब, तू आसमान से हम पर एक ख़्वान उतार जो हमारे लिए एक ईद बन जाए, हमारे अगलों के लिए और हमारे पिछलों के

लिए और तेरी तरफ़ से एक निशानी हो। और हमें अता कर, तू ही बेहतरीन अता करने वाला है। अल्लाह ने कहा मैं यह ख़्वान ज़रूर तुम पर उतारूंगा। फिर इसके बाद तुममें से जो शख़्स मुंकिर होगा उसे मैं ऐसी सज़ा दूंगा जो दुनिया में किसी को न दी होगी। (111-115)

और जब अल्लाह पूछेगा कि ऐ ईसा इब्ने-मरयम क्या तुमने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी मां को ख़ुदा के सिवा माबूद (पूज्य) बना लो। वह जवाब देंगे कि तू पाक है, मेरा यह काम न था कि मैं वह बात कहूं जिसका मुझे कोई हक़ नहीं। अगर मैंने यह कहा होगा तो तुझे ज़रूर मालूम होगा। तू जानता है जो मेरे जी में है और मैं नहीं जानता जो तेरे जी में है। बेशक तू ही है छुपी बातों का जानने वाला। मैंने उनसे वही बात कही जिसका तूने मुझे हुक्म दिया था। यह कि अल्लाह की इबादत करो जो मेरा रब है और तुम्हारा भी। और मैं उन पर गवाह था जब तक मैं उनमें रहा। फिर जब तूने मुझे उठा लिया तो उन पर तू ही निगरां था और तू हर चीज़ पर गवाह है। अगर तू उन्हें सज़ा दे तो वे तेरे बंदे हैं और अगर तू उन्हें माफ़ कर दे तो तू ही ज़बरदस्त है हिक्मत वाला है। अल्लाह कहेगा कि आज वह दिन है कि सच्चों को उनका सच काम आएगा। उनके लिए बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। उनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए। यही है बड़ी कामयाबी। आसमानों और ज़मीन में और जो कुछ उनमें है सबकी बादशाही अल्लाह ही के लिए है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (116-120)

सूरह-6. अल-अनआम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और तारीकियों और रोशनी को बनाया। फिर भी मुंकिर लोग दूसरों को अपने रब का हमसर ठहराते हैं। वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया। फिर एक मुद्दत मुक़र्रर की और मुक़र्ररह मुद्दत उसी के इल्म में है। फिर भी तुम शक

करते हो। और वही अल्लाह आसमानों में है और वही ज़मीन में। वह तुम्हारे छुपे और खुले को जानता है और वह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (1-3)

और उनके रब की निशानियों में से जो निशानी भी उनके पास आती है वे उससे एराज़ (उपेक्षा) करते हैं। चुनांचे जो हक़ उनके पास आया है उसे भी उन्होंने झुठला दिया। पस अनक़रीब उनके पास उस चीज़ की ख़बरें आएंगी जिसका वह मज़ाक़ उड़ाते थे। क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी क़ौमों को हलाक कर दिया। उन्हें हमने ज़मीन में जमा दिया था जितना तुम्हें नहीं जमाया। और हमने उन पर आसमान से ख़ूब बारिश बरसाई और हमने नहरें जारी कीं जो उनके नीचे बहती थीं फिर हमने उन्हें उनके गुनाहों के सबब हलाक कर डाला। और उनके बाद हमने दूसरी क़ौमों को उठाया। (4-6)

और अगर हम तुम पर ऐसी किताब उतारते जो कागज़ में लिखी हुई होती और वे उसे अपने हाथों से छू भी लेते तब भी इंकार करने वाले यह कहते कि यह तो एक खुला हुआ जादू है। और वे कहते हैं कि इस पर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया। और अगर हम कोई फ़रिश्ता उतारते तो मामले का फ़ैसला हो जाता फिर उन्हें कोई मोहलत न मिलती। और अगर हम किसी फ़रिश्ते को रसूल बनाकर भेजते तो उसे भी आदमी बनाते और उन्हें उसी शुबह में डाल देते जिसमें वे अब पड़े हुए हैं। और तुमसे पहले भी रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया तो उनमें से जिन लोगों ने मज़ाक़ उड़ाया उन्हें उस चीज़ ने आ घेरा जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे। कहो, ज़मीन में चलो फिरो और देखो कि झुठलाने वालों का अंजाम क्या हुआ। (7-11)

पूछो कि किसका है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। कहो सब कुछ अल्लाह का है। उसने अपने ऊपर रहमत लिख ली है। वह ज़रूर तुम्हें जमा करेगा क़ियामत के दिन, इसमें कोई शक नहीं। जिन लोगों ने अपने आपको घाटे में डाला वही हैं जो इस पर ईमान नहीं लाते। और अल्लाह ही का है जो कुछ ठहरता है रात में और जो कुछ दिन में। और वह सब कुछ सुनने वाला जानने वाला है। कहो, क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को

मददगार बनाऊं जो बनाने वाला है आसमानों और ज़मीन का। और वह सबको खिलाता है और उसे कोई नहीं खिलाता। कहो मुझे हुक्म मिला है कि मैं सबसे पहले इस्लाम लाने वाला बनूं और तुम हरगिज़ मुश्रिकों में से न बनो। कहो अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूं तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूं। जिस शख़्स से वह उस रोज़ हटा लिया गया उस पर अल्लाह ने बड़ा रहम फ़रमाया और यही खुली कामयाबी है। (12-16)

और अगर अल्लाह तुझे कोई दुख पहुंचाए तो उसके सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं। और अगर अल्लाह तुझे कोई भलाई पहुंचाए तो वह हर चीज़ पर क़ादिर है। और उसी का ज़ोर है अपने बंदों पर। और वह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला सबकी ख़बर रखने वाला है, तुम पूछो कि सबसे बड़ा गवाह कौन है। कहो अल्लाह, वह मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाह है और मुझ पर यह क़ुरआन उतरा है ताकि मैं तुम्हें इससे ख़बरदार कर दूं और उसे जिसे यह पहुंचे। क्या तुम इसकी गवाही देते हो कि ख़ुदा के साथ कुछ और माबूद भी हैं। कहो, मैं इसकी गवाही नहीं देता। कहो, वह तो बस एक ही माबूद है और मैं बरी हूं तुम्हारे शिर्क से। (17-19)

जिन लोगों को हमने किताब दी है वह उसे पहचानते हैं जैसा अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन लोगों ने अपने को घाटे में डाला वे उसे नहीं मानते। और उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर बोहतान बांधे या अल्लाह की निशानियों को झुठलाए। यक़ीनन ज़ालिमों को फ़लाह (कल्याण) नहीं मिलती। और जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे फिर हम कहेंगे उन शरीक ठहराने वालों से कि तुम्हारे वे शरीक कहां हैं जिनका तुम्हें दावा था। फिर उनके पास कोई फ़रेब न रहेगा मगर ये कि वे कहेंगे कि अल्लाह अपने रब की क़सम, हम शिर्क करने वाले न थे। देखो यह किस तरह अपने आप पर झूठ बोले और खोई गईं उनसे वे बातें जो वे बनाया करते थे। (20-24)

और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं और हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वे उसे न समझें। और उनके कानों मे बोझ है। अगर वे तमाम निशानियां देख लें तब भी उन पर ईमान न लाएंगे।

यहां तक कि जब वे तुम्हारे पास तुमसे झगड़ने आते हैं तो वे मुंकिर कहते हैं कि यह तो बस पहले लोगों की कहानियां हैं। वे लोगों को रोकते हैं और ख़ुद भी उससे अलग रहते हैं। वे ख़ुद अपने को हलाक कर रहे हैं मगर वे नहीं समझते। और अगर तुम उन्हें उस वक़्त देखो जब वे आग पर खड़े किए जाएंगे और कहेंगे कि काश! हम फिर भेज दिए जाएं तो हम अपने रब की निशानियों को न झुठलाएं और हम ईमान वालों में से हो जाएं। अब उन पर वह चीज़ खुल गई जिसे वे इससे पहले छुपाते थे। और अगर वे वापस भेज दिए जाएं तो वे फिर वही करेंगे जिससे वे रोके गए थे। और बेशक वे झूठे हैं। (25-28)

और कहते हैं कि ज़िंदगी तो बस यही हमारी दुनिया की ज़िंदगी है। और हम फिर उठाए जाने वाले नहीं। और अगर तुम उस वक़्त देखते जबकि वे अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे। वह उनसे पूछेगा : क्या यह हक़ीक़त नहीं है, वे जवाब देंगे हां, हमारे रब की क़सम, यह हक़ीक़त है। ख़ुदा फ़रमाएगा। अच्छा तो अज़ाब चखो उस इंकार के बदले जो तुम करते थे। यक़ीनन वे लोग घाटे में रहे जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया। यहां तक कि जब वह घड़ी उन पर अचानक आएगी तो वे कहेंगे हाय अफ़सोस, इस बाब में हमने कैसी कोताही की और वे अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे। देखो, कैसा बुरा बोझ है जिसे वे उठाएंगे और दुनिया की ज़िंदगी तो बस खेल-तमाशा है और आख़िरत का घर बेहतर है उन लोगों के लिए जो तक़्वा (ईश-भय) रखते हैं, क्या तुम नहीं समझते। (29-32)

हमें मालूम है कि वे जो कुछ कहते हैं उससे तुम्हें रंज होता है। ये लोग तुम्हें नहीं झुठलाते बल्कि यह ज़ालिम दरअस्ल अल्लाह की निशानियों का इंकार कर रहे हैं। और तुमसे पहले भी रसूलों को झुठलाया गया तो उन्होंने झुठलाए जाने और तकलीफ़ पहुंचाने पर सब्र किया यहां तक कि उन्हें हमारी मदद पहुंच गई। और अल्लाह की बातों को कोई बदलने वाला नहीं। और पैग़म्बरों की कुछ ख़बरें तुम्हें पहुंच ही चुकी हैं। और अगर उनकी बेरुख़ी तुम पर गिरां गुज़र रही है तो अगर तुममें कुछ ज़ोर है तो ज़मीन में कोई सुरंग

ढूंढ़ो या आसमान में सीढ़ी लगाओ और उनके लिए कोई निशानी ले आओ। और अगर अल्लाह चाहता तो उन सबको हिदायत पर जमा कर देता। पस तुम नादानों में से न बनो। क़ुबूल तो वही लोग करते हैं जो सुनते हैं और मुर्दों को अल्लाह उठाएगा फिर वे उसकी तरफ़ लौटाए जाएंगे। (33-36)

और वे कहते हैं कि रसूल पर कोई निशानी उसके रब की तरफ़ से क्यों नहीं उतरी। कहो अल्लाह बेशक क़ादिर है कि कोई निशानी उतारे मगर अक्सर लोग नहीं जानते। और जो भी जानवर ज़मीन पर चलता है और जो भी परिंदा अपने दोनों बाज़ुओं से उड़ता है वे सब तुम्हारी ही तरह के समूह हैं। हमने लिखने में कोई चीज़ नहीं छोड़ी है। फिर सब अपने रब के पास इकट्ठा किए जाएंगे। और जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया वे बहरे और गूंगे हैं, तारीकियों में पड़े हुए हैं। अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है सीधी राह पर लगा देता है। (37-39)

कहो, यह बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब आए या क़ियामत आ जाए तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे। बताओ अगर तुम सच्चे हो, बल्कि तुम उसी को पुकारोगे। फिर वह दूर कर देता है उस मुसीबत को जिसके लिए तुम उसे पुकारते हो। अगर वह चाहता है। और तुम भूल जाते हो उन्हें जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो। (40-41)

और तुमसे पहले बहुत सी क़ौमों की तरफ़ हमने रसूल भेजे। फिर हमने उन्हें पकड़ा सख़्ती में और तकलीफ़ में ताकि वे गिड़गिड़ाएं। पस जब हमारी तरफ़ से उन पर सख़्ती आई तो क्यों न वे गिड़गिड़ाए। बल्कि उनके दिल सख़्त हो गए। और शैतान उनके अमल को उनकी नज़र में ख़ुशनुमा करके दिखाता रहा। फिर जब उन्होंने उस नसीहत को भुला दिया जो उन्हें की गई थी तो हमने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए। यहां तक की जब वे उस चीज़ पर ख़ुश हो गए जो उन्हें दी गई थी तो हमने अचानक उन्हें पकड़ लिया। उस वक़्त वे नाउम्मीद होकर रह गए। पस उन लोगों की जड़ काट दी गई जिन्होंने ज़ुल्म किया था और सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है, तमाम जहानों का रब। (42-45)

कहो, यह बताओ कि अल्लाह अगर छीन ले तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें और तुम्हारे दिलों पर मुहर कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद (पूज्य) है जो उसे वापस लाए। देखो हम क्योंकर तरह-तरह से निशानियां बयान करते हैं फिर भी वे एराज़ (उपेक्षा) करते हैं। कहो, यह बताओ अगर अल्लाह का अज़ाब तुम्हारे ऊपर अचानक या एलानिया आ जाए तो ज़ालिमों के सिवा और कौन हलाक होगा। और रसूलों को हम सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाले या डराने वाले की हैसियत से भेजते हैं। फिर जो ईमान लाया और अपनी इस्लाह की तो उनके लिए न कोई अंदेशा है और न वे ग़मगीन होंगे। और जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया तो उन्हें अज़ाब पकड़ लेगा इसलिए कि वे नाफ़रमानी करते थे। कहो, मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब को जानता हूं और न मैं तुमसे कहता हूं कि मैं फ़रिश्ता हूं। मैं तो बस उस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) की पैरवी करता हूं जो मेरे पास आती है। कहो, क्या अंधा और आंखों वाला दोनों बराबर हो सकते हैं। क्या तुम ग़ौर नहीं करते। (46-50)

और तुम इस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के ज़रिए से डराओ उन लोगों को जो अंदेशा रखते हैं इस बात का कि वे अपने रब के पास जमा किए जाएंगे इस हाल में कि अल्लाह के सिवा न उनका कोई हिमायती होगा और न सिफ़ारिश करने वाला, शायद कि वे अल्लाह से डरें। और तुम उन लोगों को अपने से दूर न करो जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं उसकी ख़ुशनूदी चाहते हुए। उनके हिसाब में से किसी चीज़ का बोझ तुम पर नहीं और तुम्हारे हिसाब में से किसी चीज़ का बोझ उन पर नहीं कि तुम उन्हें अपने से दूर करके बेइंसाफ़ों में से हो जाओ। और इस तरह हमने उनमें से एक को दूसरे से आज़माया है ताकि वे कहें कि क्या यही वे लोग हैं जिन पर हमारे दर्मियान अल्लाह का फ़ज़्ल हुआ है। क्या अल्लाह शुक्रगुज़ारों से ख़ूब वाक़िफ़ नहीं। (51-53)

और जब तुम्हारे पास वे लोग आएं जो हमारी आयतों पर ईमान लाए हैं तो उनसे कहो कि तुम पर सलामती हो। तुम्हारे रब ने अपने ऊपर रहमत

लिख ली है। बेशक तुममें से जो कोई नादानी से बुराई कर बैठे फिर इसके बाद वह तौबा करे और इस्लाह (सुधार) कर ले तो वह बख़्शने वाला महरबान है। और इस तरह हम अपनी निशानियां खोलकर बयान करते हैं, और ताकि मुजरिमीन का तरीक़ा ज़ाहिर हो जाए। (54-55)

कहो, मुझे इससे रोका गया है कि मैं उनकी इबादत करूं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। कहो मैं तुम्हारी ख़्वाहिशों की पैरवी नहीं कर सकता। अगर मैं ऐसा करूं तो मैं बेराह हो जाऊंगा और मैं राह पाने वालों में से न रहूंगा। कहो मैं अपने रब की तरफ़ से एक रोशन दलील पर हूं और तुमने उसे झुठला दिया है। वह चीज़ मेरे पास नहीं है जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो। फ़ैसले का इख़्तियार सिर्फ़ अल्लाह को है। वही हक़ को बयान करता है और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। कहो, अगर वह चीज़ मेरे पास होती जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो तो मेरे और तुम्हारे दर्मियान मामले का फ़ैसला हो चुका होता, और अल्लाह ख़ूब जानता है ज़ालिमों को। और उसी के पास ग़ैब (अप्रकट) की कुंजियां हैं, उसके सिवा उसे कोई नहीं जानता। अल्लाह जानता है जो कुछ ख़ुश्की और समुद्र में है। और दरख़्त से गिरने वाला कोई पत्ता नहीं जिसका उसे इल्म न हो और ज़मीन की तारीकियों में कोई दाना नहीं गिरता और न कोई तर और ख़ुश्क चीज़ मगर सब एक खुली किताब में दर्ज है। (56-59)

और वही है जो रात में तुम्हें वफ़ात देता है और दिन को जो कुछ तुम करते हो उसे जानता है। फिर तुम्हें उठा देता है उसमें ताकि मुक़र्रर मुद्दत पूरी हो जाए। फिर उसी की तरफ़ तुम्हारी वापसी है। फिर वह तुम्हें बाख़बर कर देगा उससे जो तुम करते रहे हो। और वह ग़ालिब (वर्चस्ववान) है अपने बंदों के ऊपर और वह तुम्हारे ऊपर निगरां (निरीक्षक) भेजता है। यहां तक कि जब तुममें से किसी की मौत का वक़्त आ जाता है तो हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं और वे कोताही नहीं करते। फिर सब अल्लाह, अपने मालिके हक़ीक़ी की तरफ़ वापस लाए जाएंगे। सुन लो, हुक्म उसी का है और वह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। (60-62)

कहो, कौन तुम्हें नजात देता है ख़ुश्की और समुद्र की तारीकियों से, तुम उसे पुकारते हो आजिज़ी से और चुपके-चुपके कि अगर ख़ुदा ने हमें नजात दे दी इस मुसीबत से तो हम उसके शुक्रगुज़ार बंदों में से बन जाएंगे। कहो, ख़ुदा ही तुम्हें नजात देता है उससे और हर तकलीफ़ से, फिर भी तुम शिर्क (साझीदार ठहराना) करने लगते हो। कहो, ख़ुदा क़ादिर है इस पर कि तुम पर कोई अज़ाब भेज दे तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से या तुम्हें गिरोह-गिरोह करके एक को दूसरे की ताक़त का मज़ा चखा दे। देखो, हम किस तरह दलाइल (तर्क) मुख़्तलिफ़ पहलुओं से बयान करते हैं ताकि वे समझें। और तुम्हारी क़ौम ने उसे झुठला दिया है हालाँकि वह हक़ है। कहो, मैं तुम्हारे ऊपर दारोग़ा नहीं हूं। हर ख़बर के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है और तुम जल्द ही जान लोगे। (63-67)

और जब तुम उन लोगों को देखो जो हमारी आयतों में ऐब निकालते हैं तो उनसे अलग हो जाओ यहां तक कि वे किसी और बात में लग जाएं। और अगर कभी शैतान तुम्हें भुला दे तो याद आने के बाद ऐसे बेइंसाफ़ लोगों के पास न बैठो। और जो लोग अल्लाह से डरते हैं उन पर उनके हिसाब में से किसी चीज़ की ज़िम्मेदारी नहीं। अलबत्ता याद दिलाना है शायद कि वे भी डरें। उन लोगों को छोड़ो जिन्होंने अपने दीन को खेल-तमाशा बना रखा है और जिन्हें दुनिया की ज़िंदगी ने धोखे में डाल रखा है। और क़ुरआन के ज़रिए नसीहत करते रहो ताकि कोई शख़्स अपने किए में गिरफ़्तार न हो जाए, इस हाल में कि अल्लाह से बचाने वाला कोई मददगार और सिफ़ारिशी उसके लिए न हो। अगर वह दुनिया भर का मुआवज़ा दे तब भी क़ुबूल न किया जाए। यही लोग हैं जो अपने किए में गिरफ़्तार हो गए। उनके लिए खौलता पानी पीने के लिए होगा और दर्दनाक सज़ा होगी इसलिए कि वे कुफ़्र करते थे। (68-70)

कहो, क्या हम अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारें जो न हमें नफ़ा दे सकते और न हमें नुक़सान पहुंचा सकते। और क्या हम उल्टे पांव फिर जाएं, बाद इसके कि अल्लाह हमें सीधा रास्ता दिखा चुका है, उस शख़्स की मानिंद जिसे

शैतानों ने बयाबान में भटका दिया हो और वह हैरान फिर रहा हो, उसके साथी उसे सीधे रास्ते की तरफ़ बुला रहे हों कि हमारे पास आ जाओ। कहो कि रहनुमाई तो सिर्फ़ अल्लाह की रहनुमाई है और हमें हुक्म मिला है कि हम अपने आपको संसार के रब के हवाले कर दें। और यह कि नमाज़ क़ायम करो और अल्लाह से डरो वही है जिसकी तरफ़ तुम समेटे जाओगे। और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया है और जिस दिन वह कहेगा कि हो जा तो वह हो जाएगा। उसकी बात हक़ है और उसी की हुकूमत होगी उस रोज़ जब सूर फूंका जाएगा। वह ग़ायब और ज़ाहिर का आलिम और हकीम (तत्वदर्शी) व ख़बीर (सर्वज्ञाता) है। (71-74)

और जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहा कि क्या तुम बुतों को ख़ुदा मानते हो। मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली हुई गुमराही में देखता हूं। और इसी तरह हमने इब्राहीम को दिखा दी आसमानों और ज़मीन की हुकूमत, और ताकि उसे यक़ीन आ जाए। फिर जब रात ने उस पर अंधेरा कर लिया उसने एक तारे को देखा। कहा यह मेरा रब है। फिर जब वह डूब गया तो उसने कहा मैं डूब जाने वालों को दोस्त नहीं रखता। फिर जब उसने चांद को चमकते हुए देखा तो कहा यह मेरा रब है। फिर जब वह डूब गया तो उसने कहा अगर मेरा रब मुझे हिदायत न करे तो मैं गुमराह लोगों में से हो जाऊं। फिर जब सूरज को चमकते हुए देखा तो कहा कि यह मेरा रब है, यह सबसे बड़ा है। फिर जब वह डूब गया तो उसने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ लोगो, मैं उस शिर्क (साझीदार ठहराना) से बरी हूं जो तुम करते हो। मैंने अपना रुख़ यकसू होकर उसकी तरफ़ कर लिया जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा कर लिया है और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूं। (75-80)

और उसकी क़ौम उससे झगड़ने लगी। उसने कहा क्या तुम अल्लाह के मामले में मुझसे झगड़ते हो हालाँकि उसने मुझे राह दिखा दी है। और मैं उनसे नहीं डरता जिन्हें तुम अल्लाह का शरीक ठहराते हो मगर यह कि कोई बात मेरा रब ही चाहे। मेरे रब का इल्म हर चीज़ पर छाया हुआ है, क्या तुम नहीं सोचते। और मैं क्योंकर डरूं तुम्हारे शरीकों से जबकि तुम अल्लाह

के साथ उन चीज़ों को ख़ुदाई में शरीक ठहराते हुए नहीं डरते जिनके लिए उसने तुम पर कोई सनद नहीं उतारी। अब दोनों फ़रीक़ों (पक्षों) में से अम्न का ज़्यादा मुस्तहिक़ कौन है, अगर तुम जानते हो। जो लोग ईमान लाए और नहीं मिलाया उन्होंने अपने ईमान में कोई नुक़सान, उन्हीं के लिए अम्न है और वही सीधी राह पर हैं। यह है हमारी दलील जो हमने इब्राहीम को उसकी क़ौम के मुक़ाबले में दी। हम जिसके दर्जे चाहते हैं बुलन्द कर देते हैं। बेशक तुम्हारा रब हकीम (तत्वदर्शी) व अलीम (ज्ञानवान) है। (81-84)

और हमने इब्राहीम को इस्हाक़ और याक़ूब अता किए, हर एक को हमने हिदायत दी और नूह को भी हमने हिदायत दी इससे पहले। और उसकी नस्ल में से दाऊद और सुलेमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून को भी। और हम नेकों को इसी तरह बदला देते हैं। और ज़करिया और याहया और ईसा और इलियास को भी, इनमें से हर एक सालेह (नेक) था। और इस्माईल और अलयसअ और यूनुस और लूत को भी और इनमें से हर एक को हमने दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) अता की। और उनके बाप-दादों और उनकी औलाद और उनके भाइयों में से भी, और उन्हें हमने चुन लिया और हमने सीधे रास्ते की तरफ़ उनकी रहनुमाई की। यह अल्लाह की हिदायत है, वह इससे सरफ़राज़ करता है अपने बंदों में से जिसे चाहता है। और अगर वे शिर्क करते तो ज़ाया हो जाता जो कुछ उन्होंने किया था। ये लोग हैं जिन्हें हमने किताब और हिक्मत और नुबुव्वत अता की। पस अगर ये मक्का वाले इसका इंकार कर दें तो हमने इसके लिए ऐसे लोग मुक़र्रर कर दिए हैं जो इसके मुंकिर नहीं हैं। यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत बख़्शी, पस तुम भी उनके तरीक़े पर चलो। कह दो, मैं इस पर तुमसे कोई मुआवज़ा नहीं मांगता। यह तो बस एक नसीहत है दुनिया वालों के लिए। (85-91)

और उन्होंने अल्लाह का बहुत ग़लत अंदाज़ा लगाया जब उन्होंने कहा कि अल्लाह ने किसी इंसान पर कोई चीज़ नहीं उतारी। कहो कि वह किताब किसने उतारी थी जिसे लेकर मूसा आए थे, वह रोशनी थी और रहनुमाई थी लोगों के वास्ते, जिसे तुमने वरक़-वरक़ कर रखा है। कुछ को ज़ाहिर करते हो

और बहुत कुछ छुपा जाते हो। और तुम्हें वे बातें सिखाईं जिन्हें न जानते थे तुम और न तुम्हारे बाप-दादा। कहो कि अल्लाह ने उतारी। फिर उन्हें छोड़ दो कि अपनी कजबहसियों (कुसंवाद) में खेलते रहें। और यह एक किताब है जो हमने उतारी है, बरकत वाली है, तस्दीक़ करने वाली उनकी जो इससे पहले हैं। और ताकि तू डराए मक्का वालों को और उसके आसपास वालों को। और जो आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं वही उस पर ईमान लाएंगे। और वे अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (92-93)

और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ तोहमत बांधे या कहे कि मुझ पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आई है हालाँकि उस पर कोई 'वही' नाज़िल नहीं की गई हो। और कहे कि जैसा कलाम ख़ुदा ने उतारा है मैं भी उतारूंगा। और काश-तुम उस वक़्त देखो जबकि ये ज़ालिम मौत की सख़्तियों में होंगे और फ़रिश्ते हाथ बढ़ा रहे होंगे कि लाओ अपनी जानें निकालो। आज तुम्हें ज़िल्लत का अज़ाब दिया जाएगा इस सबब से कि तुम अल्लाह पर झूठी बातें कहते थे। और तुम अल्लाह की निशानियों से तकब्बुर (घमंड) करते थे। और तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ गए जैसा कि हमने तुम्हें पहली मर्तबा पैदा किया था। और जो कुछ असबाब हमने तुम्हें दिया था सब तुम पीछे छोड़ आए। और हम तुम्हारे साथ उन सिफ़ारिश वालों को भी नहीं देखते जिनके मुतअल्लिक़ तुम समझते थे कि तुम्हारा काम बनाने में उनका भी हिस्सा है। तुम्हारा रिश्ता टूट गया और तुमसे जाते रहे वे दावे जो तुम करते थे। (94-95)

बेशक अल्लाह दाने और गुठली को फाड़ने वाला है। वह जानदार को बेजान से निकालता है और वही बेजान को जानदार से निकालने वाला है। वही तुम्हारा अल्लाह है, फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो। वही बरामद करने वाला है सुबह का और उसने रात को सुकून का वक़्त बनाया और सूरज और चांद को हिसाब से रखा है। यह ठहराया हुआ है बड़े ग़लबे (वर्चस्व) वाले का, बड़े इल्म वाले का। और वही है जिसने तुम्हारे लिए सितारे बनाए ताकि तुम उनके ज़रिए से ख़ुश्की और तरी के अंधेरों में राह पाओ।

बेशक हमने दलाइल (तर्क) खोलकर बयान कर दिए हैं उन लोगों के लिए जो जानना चाहें। (96-98)

और वही है जिसने तुम्हें पैदा किया एक जान से, फिर हर एक के लिए एक ठिकाना है और हर एक के लिए उसके सौंपे जाने की जगह। हमने दलाइल खोलकर बयान कर दिए हैं उन लोगों के लिए जो समझें। और वही है जिसने आसमान से पानी बरसाया, फिर हमने उससे निकाली उगने वाली हर चीज़। फिर हमने उससे सरसब्ज़ शाख़ निकाली जिससे हम तह-ब-तह दाने पैदा कर देते हैं। और खजूर के गाभे में से फल के गुच्छे झुके हुए और बाग़ अंगूर के और ज़ैतून के और अनार के, आपस में मिलते-जुलते और जुदा-जुदा भी। हर एक के फल को देखो जब वह फलता है। और उसके पकने को देखो जब वह पकता है। बेशक इनके अंदर निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान की तलब रखते हैं। (99-100)

और उन्होंने जिन्नात को अल्लाह का शरीक क़रार दिया। हालाँकि उसी ने उन्हें पैदा किया है। और बिना जाने-बूझे उसके लिए बेटियां और बेटे तराशीं। पाक और बरतर है वह उन बातों से जो ये बयान करते हैं। वह आसमानों और ज़मीन का मूजिद (उत्पत्तिकर्ता) है। उसका कोई बेटा कैसे हो सकता है जबकि उसकी कोई बीवी नहीं। और उसने हर चीज़ को पैदा किया है और वह हर चीज़ से बाख़बर है। यह है अल्लाह तुम्हारा रब। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वही हर चीज़ का ख़ालिक़ है, पस तुम उसी की इबादत करो। और वह हर चीज़ का कारसाज़ है। उसे निगाहें नहीं पातीं। मगर वह निगाहों को पा लेता है। वह बड़ा बारीकबीं और बड़ा बाख़बर है। अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से बसीरत की रोशनियां आ चुकी हैं। पस जो बीनाई से काम लेगा वह अपने ही लिए, और जो अंधा बनेगा वह ख़ुद नुक़सान उठाएगा। और मैं तुम्हारे ऊपर कोई निगरां नहीं हूं। (101-105)

और इस तरह हम अपनी दलीलें मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से बयान करते हैं और ताकि वे कहें कि तुमने पढ़ दिया और ताकि हम अच्छी तरह खोल दें उन लोगों के लिए जो जानना चाहें। तुम बस उस चीज़ की पैरवी करो जो

तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं और मुश्रिकों से ऐराज़ (उपेक्षा) करो। और अगर अल्लाह चाहता तो ये लोग शिर्क न करते। और हमने तुम्हें उनके ऊपर निगरां (संरक्षक) नहीं बनाया है और न तुम उन पर मुख़्तार (साधिकार) हो। और अल्लाह के सिवा जिन्हें ये लोग पुकारते हैं उन्हें गाली न दो वरना ये लोग हद से गुज़रकर जहालत की बुनियाद पर अल्लाह को गालियां देने लगेंगे। इसी तरह हमने हर गिरोह की नज़र में उसके अमल को ख़ुशनुमा बना दिया है। फिर उन सबको अपने रब की तरफ़ पलटना है। उस वक़्त अल्लाह उन्हें बता देगा जो वे करते थे। (106-109)

और ये लोग अल्लाह की क़सम बड़े ज़ोर से खाकर कहते हैं कि अगर उनके पास कोई निशानी आ जाए तो वे ज़रूर उस पर ईमान ले आएं। कह दो कि निशानियां तो अल्लाह के पास हैं। और तुम्हें क्या ख़बर कि अगर निशानियां आ जाएं तब भी ये ईमान नहीं लाएंगे। और हम उनके दिलों और उनकी निगाहों को फेर देंगे जैसा कि ये लोग उसके ऊपर पहली बार ईमान नहीं लाए। और हम उन्हें उनकी सरकशी में भटकता हुआ छोड़ देंगे। और अगर हम उन पर फ़रिश्ते उतार देते और मुर्दे उनसे बातें करते और हम सारी चीज़ें उनके सामने इकट्ठा कर देते तब भी ये लोग ईमान लाने वाले न थे इल्ला यह कि अल्लाह चाहे मगर उनमें से अक्सर लोग नादानी की बातें करते हैं। (110-112)

और इसी तरह हमने शरीर (दुष्ट) आदमियों और शरीर जिन्नों को हर नबी का दुश्मन बना दिया। वे एक-दूसरे को पुरफ़रेब बातें सिखाते हैं धोखा देने के लिए। और अगर तेरा रब चाहता तो वे ऐसा न कर सकते। पस तुम उन्हें छोड़ दो कि वे झूठ बांधते रहें। और ऐसा इसलिए है कि उसकी तरफ़ उन लोगों के दिल मायल हों जो आख़िरत (परलोक) पर यक़ीन नहीं रखते। और ताकि वे उसे पसंद करें और ताकि जो कमाई उन्हें करनी है वह कर लें। (113-114)

क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को मुंसिफ़ बनाऊं। हालाँकि उसने

तुम्हारी तरफ़ वाज़ेह किताब उतारी है। और जिन लोगों को हमने पहले किताब दी थी वे जानते हैं कि यह तेरे रब की तरफ़ से उतारी गई है हक़ के साथ। पस तुम न हो शक करने वालों में। और तुम्हारे रब की बात पूरी सच्ची है और इंसाफ़ की, कोई बदलने वाला नहीं उसकी बात को और वह सुनने वाला, जानने वाला है। और अगर तुम लोगों की अक्सरियत के कहने पर चलो जो ज़मीन में हैं तो वे तुम्हें ख़ुदा के रास्ते से भटका देंगे। वे महज़ गुमान की पैरवी करते हैं और क़यास आराइयां (अटकल बातें) करते हैं। बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है उन्हें जो उसके रास्ते से भटके हुए हैं और ख़ूब जानता है उन्हें जो राह पाए हुए हैं। (115-118)

पस खाओ उस जानवर में से जिस पर अल्लाह का नाम लिया जाए, अगर तुम उसकी आयतों पर ईमान रखते हो। और क्या वजह है कि तुम उस जानवर में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया है, हालाँकि ख़ुदा ने तफ़्सील से बयान कर दी हैं वे चीज़ें जिन्हें उसने तुम पर हराम किया है। सिवा इसके कि उसके लिए तुम मजबूर हो जाओ। और यक़ीनन बहुत से लोग अपनी ख़्वाहिशात की बिना पर गुमराह करते हैं बग़ैर किसी इल्म के। बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है हद से निकल जाने वालों को। और तुम गुनाह के ज़ाहिर को भी छोड़ दो और उसके बातिन को भी। जो लोग गुनाह कमा रहे हैं उन्हें जल्द बदला मिल जाएगा उसका जो वे कर रहे थे। और तुम उस जानवर में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो। यक़ीनन यह बेहुक्मी है और शयातीन इल्क़ा (संप्रेषित) कर रहे हैं अपने साथियों को ताकि वे तुमसे झगड़ें। और अगर तुम उनका कहा मानोगे तो तुम भी मुश्रिक (बहुदेववादी) हो जाओगे। (119-122)

क्या वह शख़्स जो मुर्दा था फिर हमने उसे ज़िंदगी दी और हमने उसे एक रोशनी दी कि उसके साथ वह लोगों में चलता है वह उस शख़्स की तरह हो सकता है जो तारीकियों में पड़ा है, इससे निकलने वाला नहीं। इस तरह मुंकिरों की नज़र में उनके आमाल ख़ुशनुमा बना दिए गए हैं। और इस तरह हर बस्ती में हमने गुनाहगारों के सरदार रख दिए हैं कि वे वहां हीले

(चालें) करें। हालाँकि वे जो हीला करते हैं अपने ही ख़िलाफ़ करते हैं मगर वे उसे नहीं समझते। और जब उनके पास कोई निशान आता है तो वे कहते हैं कि हम हरगिज़ न मानेंगे जब तक हमें भी वही न दिया जाए जो ख़ुदा के पैग़म्बरों को दिया गया। अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वे अपनी पैग़म्बरी किसे बख़्शे। जो लोग मुजरिम हैं ज़रूर उन्हें अल्लाह के यहां ज़िल्लत नसीब होगी और सख़्त अज़ाब भी, इस वजह से कि वे मक्र (चालबाज़ी) करते थे। (123-125)

अल्लाह जिसे चाहता है कि हिदायत दे तो उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिसे चाहता है कि गुमराह करे तो उसके सीने को बिल्कुल तंग कर देता है जैसे उसे आसमान में चढ़ना पड़ रहा हो। इस तरह अल्लाह गन्दगी डाल देता है उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते। और यही तुम्हारे रब का सीधा रास्ता है। हमने वाज़ेह कर दी हैं निशानियाँ ग़ौर करने वालों के लिए। उन्हीं के लिए सलामती का घर है उनके रब के पास। और वह उनका मददगार है उस अमल के सबब से जो वे करते रहे। (126-128)

और जिस दिन अल्लाह उन सबको जमा करेगा, ऐ जिन्नों के गिरोह! तुमने बहुत से ले लिए इंसानों में से। और इंसानों में से उनके साथी कहेंगे ऐ हमारे रब, हमने एक-दूसरे को इस्तेमाल किया और हम पहुंच गए अपने उस वादे को जो तूने हमारे लिए मुक़र्रर किया था। ख़ुदा कहेगा अब तुम्हारा ठिकाना आग है, हमेशा उसमें रहोगे मगर जो अल्लाह चाहे। बेशक तुम्हारा रब हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला इल्म वाला है। और इसी तरह हम साथ मिला देंगे गुनाहगारों को एक-दूसरे से, उन आमाल के सबब जो वे करते थे। ऐ जिन्नों और इंसानों के गिरोह! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से पैग़म्बर नहीं आए जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाते और तुम्हें इस दिन के पेश आने से डराते थे। वे कहेंगे हम ख़ुद अपने ख़िलाफ़ गवाह हैं। और उन्हें दुनिया की ज़िंदगी ने धोखे में रखा। और वे अपने ख़िलाफ़ ख़ुद गवाही देंगे कि बेशक हम मुंकिर थे। यह इस वजह से कि तुम्हारा रब बस्तियों को उनके ज़ुल्म पर इस हाल में हलाक करने वाला नहीं कि वहां के लोग बेख़बर हों। (129-132)

और हर शख़्स का दर्जा है उसके अमल के लिहाज़ से और तुम्हारा रब लोगों के आमाल से बेख़बर नहीं। और तुम्हारा रब बेनियाज़ (निस्पृह), रहमत वाला है। अगर वह चाहे तो तुम सबको उठा ले और तुम्हारे बाद जिसे चाहे तुम्हारी जगह ले आए, जिस तरह उसने तुम्हें पैदा किया दूसरों की नस्ल से। जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जा रहा है वह आकर रहेगी और तुम .ख़ुदा को आजिज़ नहीं कर सकते। कहो, ऐ लोगो! तुम अमल करते रहो अपनी जगह पर, मैं भी अमल कर रहा हूं। तुम जल्द ही जान लोगे कि अंजामकार किसके हक़ में बेहतर होता है। यक़ीनन ज़ालिम कभी फ़लाह (कल्याण) नहीं पा सकते। (133-136)

और .ख़ुदा ने जो खेती और चौपाए पैदा किए उसमें से उन्होंने .ख़ुदा का कुछ हिस्सा मुक़र्रर किया है। पस वे कहते हैं कि यह हिस्सा अल्लाह का है, उनके गुमान के मुताबिक़, और यह हिस्सा हमारे शरीकों का है। फिर जो हिस्सा उनके शरीकों का होता है वह तो अल्लाह को नहीं पहुंचता और जो हिस्सा अल्लाह के लिए है वह उनके शरीकों को पहुंच जाता है। कैसा बुरा फ़ैसला है जो ये लोग करते हैं। और इस तरह बहुत से मुश्रिकों (बहुदेववादियों) की नज़र में उनके शरीकों ने अपनी औलाद के क़त्ल को .ख़ुशनुमा बना दिया है ताकि उन्हें बर्बाद करें और उन पर उनके दीन को मुशतबह (संदिग्ध) बना दें। और अगर अल्लाह चाहता तो वे ऐसा न करते। पस उन्हें छोड़ दो कि अपनी इफ़्तिरा (झूठ गढ़ने) में लगे रहें। (137-138)

और कहते हैं कि यह जानवर और यह खेती मना है, इन्हें कोई नहीं खा सकता सिवा उसके जिसे हम चाहें, अपने गुमान के मुताबिक़। और फ़लां चौपाए हैं कि उनकी पीठ हराम कर दी गई है और कुछ चौपाए हैं जिन पर वे अल्लाह का नाम नहीं लेते। यह सब उन्होंने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है। अल्लाह जल्द उन्हें इस झूठ गढ़ने का बदला देगा। और कहते हैं कि जो फ़लां क़िस्म के जानवरों के पेट में है वह हमारे मर्दों के लिए ख़ास है और वह हमारी औरतों के लिए हराम है। अगर वह मुर्दा हो तो उसमें सब शरीक हैं। अल्लाह जल्द उन्हें इस कहने की सज़ा देगा। बेशक अल्लाह हिक्मत

(तत्वदर्शिता) वाला इल्म वाला है। वे लोग घाटे में पड़ गए जिन्होंने अपनी औलाद को क़त्ल किया नादानी से बग़ैर किसी इल्म के। और उन्होंने उस रिज़्क़ को हराम कर लिया जो अल्लाह ने उन्हें दिया था, अल्लाह पर बोहतान बांधते हुए। वे गुमराह हो गए और हिदायत पाने वाले न बने। (139-141)

और वह अल्लाह ही है जिसने बाग़ पैदा किए, कुछ टट्टियों पर चढ़ाए जाते हैं और कुछ नहीं चढ़ाए जाते। और खजूर के दरख़्त और खेती कि उसके खाने की चीज़ें मुख़्तलिफ़ होती हैं और ज़ैतून और अनार आपस में मिलते-जुलते भी और एक-दूसरे से मुख़्तलिफ़ भी। खाओ उनकी पैदावार जबकि वे फलें और अल्लाह का हक़ अदा करो उसके काटने के दिन। और इसराफ़ (हद से आगे बढ़ना) न करो, बेशक अल्लाह इसराफ़ करने वालों को पसंद नहीं करता। और उसने मवेशियों में बोझ उठाने वाले पैदा किए और ज़मीन से लगे हुए भी। खाओ उन चीज़ों में से जो अल्लाह ने तुम्हें दी हैं। और शैतान की पैरवी न करो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। (142-143)

अल्लाह ने आठ जोड़े पैदा किए। दो भेड़ की क़िस्म से और दो बकरी की क़िस्म से। पूछो कि दोनों नर अल्लाह ने हराम किए हैं या दोनों मादा। या वे बच्चे जो भेड़ों और बकरियों के पेट में हों। मुझे दलील के साथ बताओ अगर तुम सच्चे हो। और इसी तरह दो ऊंट की क़िस्म से हैं और दो गाय की क़िस्म से। पूछो कि दोनों नर अल्लाह ने हराम किए हैं या दोनों मादा। या वे बच्चे जो ऊंटनी और गाय के पेट में हों। क्या तुम उस वक़्त हाज़िर थे जब अल्लाह ने तुम्हें इसका हुक्म दिया था। फिर उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ बोहतान बांधे ताकि वह लोगों को बहका दे बग़ैर इल्म के। बेशक अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता। कहो, मुझ पर जो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आई है उसमें तो मैं कोई चीज़ नहीं पाता जो हराम हो किसी खाने वाले पर सिवा इसके कि वह मुर्दार हो या बहाया हुआ ख़ून हो या सुअर का गोश्त हो कि वह नापाक है। या नाजाइज़ ज़बीहा जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो। लेकिन जो शख़्स

भूख से बेइख़्तियार हो जाए, न नाफ़रमानी करे और न ज़्यादती करे, तो तेरा रब बख़्शने वाला महरबान है। (144-146)

और यहूद पर हमने सारे नाख़ून वाले जानवर हराम किए थे और गाय और बकरी की चरबी हराम की सिवा उसके जो उनकी पीठ या अंतड़ियों से लगी हो या किसी हड्डी से मिली हुई हो। यह सज़ा दी थी हमने उन्हें उनकी सरकशी पर और यक़ीनन हम सच्चे हैं। पस अगर वे तुम्हें झुठलाएं तो कह दो कि तुम्हारा रब बड़ी वसीअ (व्यापक) रहमत वाला है। और उसका अज़ाब मुजरिम लोगों से टल नहीं सकता। (147-148)

जिन्होंने शिर्क किया वे कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो हम शिर्क न करते और न हमारे बाप-दादा करते और न हम किसी चीज़ को हराम कर लेते। इसी तरह झुठलाया उन लोगों ने भी जो इनसे पहले हुए हैं। यहां तक कि उन्होंने हमारा अज़ाब चखा। कहो क्या तुम्हारे पास कोई इल्म है जिसे तुम हमारे सामने पेश करो। तुम तो सिर्फ़ गुमान की पैरवी कर रहे हो और महज़ अटकल से काम लेते हो। कहो कि पूरी हुज्जत तो अल्लाह की है। और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको हिदायत दे देता। कहो कि अपने गवाहों को लाओ जो इस पर गवाही दें कि अल्लाह ने इन चीज़ों को हराम ठहराया है। अगर वे झूठी गवाही दे भी दें तो तुम उनके साथ गवाही न देना, और तुम उन लोगों की ख़्वाहिशों की पैरवी न करो जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और जो आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते और दूसरों को अपने रब का हमसर (समकक्ष) ठहराते हैं। (149-151)

कहो, आओ मैं सुनाऊं वे चीज़ें जो तुम्हारे रब ने तुम पर हराम की हैं। यह कि तुम उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो और मां-बाप के साथ नेक सुलूक करो और अपनी औलाद को मुफ़्लिसी के डर से क़त्ल न करो। हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी। और बेहयाई के काम के पास न जाओ चाहे वह ज़ाहिर हो या पोशीदा। और जिस जान को अल्लाह ने हराम ठहराया उसे न मारो मगर हक़ पर। ये बातें हैं जिनकी ख़ुदा ने तुम्हें हिदायत फ़रमाई है ताकि तुम अक़्ल से काम लो। (152)

और यतीम के माल के पास न जाओ मगर ऐसे तरीक़े से जो बेहतर हो यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुंच जाए। और नाप-तौल में पूरा इंसाफ़ करो। हम किसी के ज़िम्मे वही चीज़ लाज़िम करते हैं जिसकी उसे ताक़त हो। और जब बोलो तो इंसाफ़ की बात बोलो चाहे मामला अपने रिश्तेदार ही का हो। और अल्लाह के अहद (वचन) को पूरा करो। ये चीज़ें हैं जिनका अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है ताकि तुम नसीहत पकड़ो। और अल्लाह ने हुक्म दिया कि यही मेरी सीधी शाहराह है। पस इसी पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वे तुम्हें अल्लाह के रास्ते से जुदा कर देंगी। यह अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है ताकि तुम बचते रहो। (153-154)

फिर हमने मूसा को किताब दी नेक काम करने वालों पर अपनी नेमतें पूरी करने के लिए और हर बात की तफ़्सील और हिदायत और रहमत ताकि वे अपने रब के मिलने का यक़ीन करें। और इसी तरह हमने यह किताब उतारी है, एक बरकत वाली किताब। पस इस पर चलो और अल्लाह से डरो ताकि तुम पर रहमत की जाए। इसलिए कि तुम यह न कहने लगो कि किताब तो हमसे पहले के दो गिरोहों को दी गई थी और हम उन्हें पढ़ने पढ़ाने से बेख़बर थे। या कहो कि अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम उनसे बेहतर राह पर चलने वाले होते। पस आ चुकी तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक रोशन दलील और हिदायत और रहमत। तो उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की निशानियों को झुठलाए और उनसे मुंह मोड़े। जो लोग हमारी निशानियों से ऐराज़ (उपेक्षा) करते हैं हम उन्हें उनके ऐराज़ की पादाश में बहुत बुरा अज़ाब देंगे। ये लोग क्या इसके मुंतज़िर हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आएं या तुम्हारा रब आए या तुम्हारे रब की निशानियों में से कोई निशानी ज़ाहिर हो। जिस दिन तुम्हारे रब की निशानियों में से कोई निशानी आ पहुंचेगी तो किसी शख़्स को उसका ईमान नफ़ा न देगा जो पहले ईमान न ला चुका हो या अपने ईमान में कुछ नेकी न की हो। कहो तुम राह देखो, हम भी राह देख रहे हैं। (155-159)

जिन्होंने अपने दीन में राहें निकालीं और गिरोह-गिरोह बन गए तुम्हें

उनसे कुछ सरोकार नहीं। उनका मामला अल्लाह के हवाले है। फिर वही उन्हें बता देगा जो वे करते थे। जो शख़्स नेकी लेकर आएगा तो उसके लिए उसका दस गुना है। और जो शख़्स बुराई लेकर आएगा तो उसे बस उसके बराबर बदला मिलेगा और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। (160-161)

कहो मेरे रब ने मुझे सीधा रास्ता बता दिया है। सही दीने-इब्राहीम की मिल्लत की तरफ़ जो यकसू थे और मुश्रिकीन में से न थे। कहो मेरी नमाज़ और मेरी क़ुर्बानी, मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का। कोई उसका शरीक नहीं। और मुझे इसी का हुक्म मिला है और मैं सबसे पहले फ़रमांबरदार हूं। कहो, क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब तलाश करूं जबकि वही हर चीज़ का रब है और जो शख़्स भी कोई कमाई करता है वह उसी पर रहता है। और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा। फिर तुम्हारे रब ही की तरफ़ तुम्हारा लौटना है। पस वह तुम्हें बता देगा वह चीज़ जिसमें तुम इख़्तेलाफ़ (मतभेद) करते थे। और वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में एक-दूसरे का जानशीन बनाया और तुममें से एक का रुत्बा दूसरे पर बुलन्द किया। ताकि वह आज़माए तुम्हें अपने दिए हुए में। तुम्हारा रब जल्द सज़ा देने वाला है और बेशक वह बख़्शने वाला महरबान है। (162-166)

सूरह-7. अल-आराफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़० लाम० मीम० साद०। यह किताब है जो तुम्हारी तरफ़ उतारी गई है। पस तुम्हारा दिल इस वजह से तंग न हो ताकि तुम इसके ज़रिए से लोगों को डराओ, और वह ईमान वालों के लिए याददिहानी है। जो उतरा है तुम्हारी जानिब तुम्हारे रब की तरफ़ से उसकी पैरवी करो और उसके सिवा दूसरे सरपरस्तों की पैरवी न करो। तुम बहुत कम नसीहत मानते हो। और कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया। उन पर हमारा अज़ाब रात को आ पहुंचा या दोपहर को जबकि वे आराम कर रहे थे। फिर जब

हमारा अज़ाब उन पर आया तो वे इसके सिवा कुछ न कह सके कि वाक़ई हम ज़ालिम थे। पस हमें ज़रूर पूछना है उन लोगों से जिनके पास रसूल भेजे गए और हमें ज़रूरी पूछना है रसूलों से। फिर हम उनके सामने सब बयान कर देंगे इल्म के साथ और हम कहीं ग़ायब न थे। उस दिन वज़नदार सिर्फ़ हक़ होगा। पस जिनकी तोलें भारी होंगी वही लोग कामयाब ठहरेंगे और जिनकी तौलें हल्की होंगी वही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला, क्योंकि वे हमारी निशानियों के साथ नाइंसाफ़ी करते थे। (1-9)

और हमने तुम्हें ज़मीन में जगह दी और हमने तुम्हारे लिए उसमें ज़िंदगी का सामान फ़राहम किया, मगर तुम बहुत कम शुक्र करते हो। और हमने तुम्हें पैदा किया, फिर हमने तुम्हारी सूरत बनाई। फिर फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो। पस उन्होंने सज्दा किया। मगर इब्लीस (शैतान) सज्दा करने वालों में शामिल नहीं हुआ। ख़ुदा ने कहा कि तुझे किस चीज़ ने सज्दा करने से रोका जबकि मैंने तुझे हुक्म दिया था। इब्लीस ने कहा कि मैं इससे बेहतर हूं। तूने मुझे आग से बनाया है और आदम को मिट्टी से। ख़ुदा ने कहा कि तू उतर यहां से। तुझे यह हक़ नहीं कि तू इसमें घमंड करे। पस निकल जा, यक़ीनन तू ज़लील है। इब्लीस ने कहा कि उस दिन तक के लिए तू मुझे मोहलत दे जबकि सब लोग उठाए जाएंगे। ख़ुदा ने कहा कि तुझे मोहलत दी गई। इब्लीस ने कहा कि चूंकि तूने मुझे गुमराह किया है, मैं भी लोगों के लिए तेरी सीधी राह पर बैठूंगा। फिर उन पर आऊंगा उनके आगे से और उनके पीछे से और उनके दाएं से और उनके बाएं से, और तू उनमें से अक्सर को शुक्रगुज़ार न पाएगा। ख़ुदा ने कहा कि निकल यहां से ज़लील और ठुकराया हुआ। जो कोई उनमें से तेरी राह पर चलेगा तो मैं तुम सबसे जहन्नम को भर दूंगा। (10-18)

और ऐ आदम, तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो और खाओ जहां से चाहो। मगर उस दरख़्त के पास न जाना वरना तुम नुक़सान उठाने वालों में से हो जाओगे। फिर शैतान ने दोनों को बहकाया ताकि वह खोल दे उनकी वह शर्म की जगहें जो उनसे छुपाई गई थीं। उसने उनसे कहा कि तुम्हारे रब

ने तुम्हें इस दरख़्त से सिर्फ़ इसलिए रोका है कि कहीं तुम दोनों फ़रिश्ते न बन जाओ या तुम्हें हमेशा की ज़िंदगी हासिल हो जाए। और उसने क़सम खाकर कहा कि मैं तुम दोनों का ख़ैरख़्वाह (हितैषी) हूं। (19-21)

पस मायल कर लिया उन्हें फ़रेब से। फिर जब दोनों ने दरख़्त का फल चखा तो उनकी शर्मगाहें उन पर खुल गईं। और वे अपने को बाग़ के पत्तों से ढांकने लगे और उनके रब ने उन्हें पुकारा कि क्या मैंने तुम्हें उस दरख़्त से मना नहीं किया था और यह नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। उन्होंने कहा, ऐ हमारे रब! हमने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और अगर तू हमें माफ़ न करे और हम पर रहम न करे तो हम घाटा उठाने वालों में से हो जाएंगे। ख़ुदा ने कहा, उतरो, तुम एक-दूसरे के दुश्मन होगे, और तुम्हारे लिए ज़मीन में एक ख़ास मुद्दत तक ठहरना और नफ़ा उठाना है। ख़ुदा ने कहा, उसी में तुम जियोगे और उसी में तुम मरोगे और उसी से तुम निकाले जाओगे। (22-25)

ऐ बनी आदम, हमने तुम पर लिबास उतारा जो तुम्हारे बदन के क़ाबिले-शर्म हिस्सों को ढांके और ज़ीनत (साज-सज्जा) भी। और तक़वा (ईश-परायणता) का लिबास इससे भी बेहतर है। यह अल्लाह की निशानियों में से है ताकि लोग ग़ौर करें। ऐ आदमी की औलाद, शैतान तुम्हें बहका न दे जिस तरह उसने तुम्हारे मां-बाप को जन्नत से निकलवा दिया, उसने उनके लिबास उतरवाए ताकि उन्हें उनके सामने बेपर्दा कर दे। वह और उसके साथी तुम्हें ऐसी जगह से देखते हैं जहां से तुम उन्हें नहीं देखते। हमने शैतानों को उन लोगों का दोस्त बना दिया है जो ईमान नहीं लाते। (26-27)

और जब वे कोई फ़ोहश (खुली बुराई) करते हैं तो कहते हैं कि हमने अपने बाप-दादा को इसी तरह करते हुए पाया है और ख़ुदा ने हमें इसी का हुक्म दिया है। कहो, अल्लाह कभी बुरे काम का हुक्म नहीं देता। क्या तुम अल्लाह के ज़िम्मे वह बात लगाते हो जिसका तुम्हें कोई इल्म नहीं। कहो कि मेरे रब ने क़िस्त (न्याय) का हुक्म दिया है और यह कि हर नमाज़ के वक़्त अपना रुख़ सीधा रखो। और उसी को पुकारो उसी के लिए दीन को ख़ालिस

करते हुए। जिस तरह उसने तुम्हें पहले पैदा किया उसी तरह तुम दूसरी बार भी पैदा होगे। एक गिरोह को उसने राह दिखा दी और एक गिरोह है कि उस पर गुमराही साबित हो चुकी। उन्होंने अल्लाह को छोड़कर शैतानों को अपना रफ़ीक़ बनाया और गुमान यह रखते हैं कि वे हिदायत पर हैं। (28-30)

ऐ औलादे-आदम, हर नमाज़ के वक़्त अपना लिबास पहनो और खाओ पियो। और हद से तजावुज़ (सीमा उल्लंघन) न करो। बेशक अल्लाह हद से तजावुज़ करने वालों को पसंद नहीं करता। कहो अल्लाह की ज़ीनत (साज-सज्जा) को किसने हराम किया जो उसने अपने बंदों के लिए निकाला था और खाने की पाक चीज़ों को। कहो वे दुनिया की ज़िंदगी में भी ईमान वालों के लिए हैं और आख़िरत (परलोक) में तो वे ख़ास उन्हीं के लिए होंगी। इसी तरह हम अपनी आयतें खोलकर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो जानना चाहें। कहो मेरे रब ने तो बस फ़ोहश (अश्लील) बातों को हराम ठहराया है वे खुली हों या छुपी। और गुनाह को और नाहक़ की ज़्यादती को और इस बात को कि तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक करो जिसकी उसने कोई दलील नहीं उतारी और यह कि तुम अल्लाह के ज़िम्मे ऐसी बात लगाओ जिसका तुम इल्म नहीं रखते। (31-33)

और हर क़ौम के लिए एक मुक़र्ररह मुद्दत है। फिर जब उनकी मुद्दत आ जाएगी तो वे न एक साअत (क्षण) पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे। ऐ बनी आदम, अगर तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आएं जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाएं तो जो शख़्स डरा और जिसने इस्लाह कर ली उनके लिए न कोई ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे। और जो लोग मेरी आयतों को झुठलाएं और उनसे तकब्बुर करें वही लोग दोज़ख़ वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। फिर उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर बोहतान बांधे या उसकी निशानियों को झुठलाए उनके नसीब का जो हिस्सा लिखा हुआ है वह उन्हें मिलकर रहेगा। यहां तक कि जब हमारे भेजे हुए उनकी जान लेने के लिए उनके पास पहुंचेंगे तो उनसे पूछेंगे कि अल्लाह के सिवा जिन्हें तुम

पुकारते थे कहां हैं। वे कहेंगे कि वे सब हमसे खोए गए। और वे अपने ऊपर इक़रार करेंगे कि बेशक वे इंकार करने वाले थे। (34-37)

ख़ुदा कहेगा, दाख़िल हो जाओ आग में जिन्नों और इंसानों के उन गिरोहों के साथ जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं। जब भी कोई गिरोह जहन्नम में दाख़िल होगा वह अपने साथी गिरोह पर लानत करेगा। यहां तक कि जब वे उसमें जमा हो जाएंगे तो उनके पिछले अपने अगले वालों के बारे में कहेंगे, ऐ हमारे रब, यही लोग हैं जिन्होंने हमें गुमराह किया पस तू उन्हें आग का दोहरा अज़ाब दे। ख़ुदा कहेगा कि सबके लिए दोहरा है मगर तुम नहीं जानते। और उनके अगले अपने पिछलों से कहेंगे, तुम्हें हम पर कोई फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) हासिल नहीं। पस अपनी कमाई के नतीजे में अज़ाब का मज़ा चखो। (38-39)

बेशक जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनसे तकब्बुर (घमंड) किया उनके लिए आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जाएंगे और वे जन्नत में दाख़िल न होंगे जब तक कि ऊंट सूई के नाके में न घुस जाए। और हम मुजरिमों को ऐसी ही सज़ा देते हैं। उनके लिए दोज़ख़ का बिछौना होगा और उनके ऊपर उसी का ओढ़ना होगा। और हम ज़ालिमों को इसी तरह सज़ा देते हैं। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए— हम किसी शख़्स पर उसकी ताक़त के मुवाफ़िक़ ही बोझ डालते हैं— यही लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। और उनके सीने की हर ख़लिश (दुराव) को हम निकाल देंगे। उनके नीचे नहरें बह रही होंगी और वे कहेंगे कि सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने हमें यहां तक पहुंचाया और हम राह पाने वाले न थे अगर अल्लाह हमें हिदायत न करता। हमारे रब के रसूल सच्ची बात लेकर आए थे। और आवाज़ आएगी कि यह जन्नत है जिसके तुम वारिस ठहराए गए हो अपने आमाल के बदले। (40-43)

और जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को पुकारेंगे कि हमसे हमारे रब ने जो वादा किया था हमने उसे सच्चा पाया, क्या तुमने भी अपने रब के वादे को

सच्चा पाया। वे कहेंगे हां। फिर एक पुकारने वाला दोनों के दर्मियान पुकारेगा कि अल्लाह की लानत हो ज़ालिमों पर। जो अल्लाह की राह से रोकते थे और उसमें कजी (टेढ़) ढूंढ़ते थे और वे आख़िरत (परलोक) के मुंकिर थे। (44-45)

और दोनों के दर्मियान एक आड़ होगी। और आराफ़ (जन्नत और जहन्नम के बीच की जगह) के ऊपर कुछ लोग होंगे जो हर एक को उनकी अलामत से पहचानेंगे और वे जन्नत वालों को पुकारकर कहेंगे कि तुम पर सलामती हो, वे अभी जन्नत में दाख़िल नहीं हुए होंगे मगर वे उम्मीदवार होंगे। और जब दोज़ख़ वालों की तरफ़ उनकी निगाह फेरी जाएगी तो वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमें शामिल न करना इन ज़ालिम लोगों के साथ। और आराफ़ वाले उन लोगों को पुकारेंगे जिन्हें वे उनकी अलामत से पहचानते होंगे। वे कहेंगे कि तुम्हारे काम न आई तुम्हारी जमाअत और तुम्हारा अपने को बड़ा समझना। क्या यही वे लोग हैं जिनके बारे में तुम क़सम खाकर कहते थे कि उन्हें कभी अल्लाह की रहमत न पहुंचेगी। जन्नत में दाख़िल हो जाओ, अब न तुम पर कोई डर है और न तुम ग़मगीन होगे। (46-49)

और दोज़ख़ के लोग जन्नत वालों को पुकारेंगे कि कुछ पानी हम पर डाल दो या उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें खाने को दे रखा है। वे कहेंगे कि अल्लाह ने इन दोनों चीज़ों को मुंकिरों के लिए हराम कर दिया है। वे जिन्होंने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया था और जिन्हें दुनिया की ज़िंदगी ने धोखे में डाल रखा था। पस आज हम उन्हें भुला देंगे जिस तरह उन्होंने अपने इस दिन की मुलाक़ात को भुला दिया था और जैसा कि वे हमारी निशानियों का इंकार करते रहे। (50-51)

और हम उन लोगों के पास एक ऐसी किताब ले आए हैं जिसे हमने इल्म की बुनियाद पर मुफ़स्सल (विस्तृत) किया है, हिदायत और रहमत बनाकर उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं। क्या अब वे इसी के मुंतज़िर हैं कि उसका मज़मून ज़ाहिर हो जाए। जिस दिन उसका मज़मून ज़ाहिर हो जाएगा तो वे लोग जो उसे पहले भूले हुए थे बोल उठेंगे कि बेशक हमारे रब के पैग़म्बर हक़ लेकर आए थे। पस अब क्या कोई हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं कि

हमारी सिफ़ारिश करें या हमें दुबारा वापस ही भेज दिया जाए ताकि हम उससे मुख़्तलिफ़ अमल करें जो हम पहले कर रहे थे। उन्होंने अपने आपको घाटे में डाला और उनसे गुम हो गया वह जो वे गढ़ते थे। (52-53)

बेशक तुम्हारा रब वही अल्लाह है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया। फिर वह अर्श पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ। वह उढ़ाता है रात को दिन पर, दिन उसके पीछे लगा आता है दौड़ता हुआ। और उसने पैदा किए सूरज और चांद और सितारे, सब ताबेदार हैं उसके हुक्म के। याद रखो, उसी का काम है पैदा करना और हुक्म करना। बड़ी बरकत वाला है अल्लाह जो रब है सारे जहान का। अपने रब को पुकारो गिड़गिड़ाते हुए और चुपके-चुपके। यक़ीनन वह हद से गुज़रने वालों को पसंद नहीं करता। और ज़मीन में फ़साद न करो उसकी इस्लाह के बाद। और उसी को पुकारो ख़ौफ़ के साथ और तमअ (आशा) के साथ। यक़ीनन अल्लाह की रहमत नेक काम करने वालों से क़रीब है। (54-56)

और वह अल्लाह ही है जो हवाओं को अपनी रहमत के आगे ख़ुशख़बरी बनाकर भेजता है। फिर जब वे बोझल बादलों को उठा लेती हैं तो हम उसे किसी ख़ुश्क सरज़मीन की तरफ़ हांक देते हैं। फिर हम उसके ज़रिए पानी उतारते हैं। फिर हम उसके ज़रिए से हर क़िस्म के फल निकालते हैं। इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे, ताकि तुम ग़ौर करो। और जो ज़मीन अच्छी है उसकी पैदावार निकलती है उसके रब के हुक्म से और जो ज़मीन ख़राब है उसकी पैदावार कम ही होती है। इसी तरह हम अपनी निशानियां मुख़्तलिफ़ पहलुओं से दिखाते हैं उनके लिए जो शुक्र करने वाले हैं। (57-58)

हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा। नूह ने कहा ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। मैं तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूं। उसकी क़ौम के बड़ों ने कहा कि हमें तो यह नज़र आता है कि तुम एक खुली हुई गुमराही में मुब्तिला हो। नूह ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, मुझमें कोई गुमराही नहीं है। बल्कि मैं भेजा हुआ हूं सारे आलम के परवरदिगार का। तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचा रहा हूं

और तुम्हारी ख़ैरख़्वाही कर रहा हूं। और मैं अल्लाह की तरफ़ से वह बात जानता हूं जो तुम नहीं जानते। क्या तुम्हें इस पर तअज्जुब हुआ कि तुम्हारे रब की नसीहत तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक शख़्स के ज़रिए आई ताकि वह तुम्हें डराए और ताकि तुम बचो और ताकि तुम पर रहम किया जाए। पस उन्होंने उसे झुठला दिया। फिर हमने नूह को बचा लिया और उन लोगों को भी जो उसके साथ कश्ती में थे और हमने उन लोगों को डुबो दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया था। बेशक वे लोग अंधे थे। (59-64)

और आद की तरफ़ हमने उनके भाई हूद को भेजा। उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। सो क्या तुम डरते नहीं। उसकी क़ौम के बड़े जो इंकार कर रहे थे बोले, हम तो तुम्हें बेअक़्ली में मुब्तिला देखते हैं और हमें गुमान है कि तुम झूठे हो। हूद ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, मुझे कुछ बेअक़्ली नहीं। बल्कि मैं .ख़ुदावंदेआलम का रसूल हूं। तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचा रहा हूं और तुम्हारा ख़ैरख़्वाह और अमीन हूं। क्या तुम्हें इस पर तअज्जुब है कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक शख़्स के ज़रिए तुम्हारे रब की नसीहत आई ताकि वह तुम्हें डराए। और याद करो जबकि उसने क़ौमे-नूह के बाद तुम्हें उसका जानशीन बनाया और डील-डौल में तुमको फैलाव भी ज़्यादा दिया। पस अल्लाह की नेमतों को याद करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (65-69)

हूद की क़ौम ने कहा, क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हम तनहा अल्लाह की इबादत करें और उन्हें छोड़ दें जिनकी इबादत हमारे बाप-दादा करते आए हैं। पस तुम जिस अज़ाब की धमकी हमें देते हो उसे ले आओ अगर तुम सच्चे हो। हूद ने कहा तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से नापाकी और ग़ुस्सा वाक़ेअ हो चुका है। क्या तुम मुझसे उन नामों पर झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं। जिनकी ख़ुदा ने कोई सनद नहीं उतारी। पस इंतज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करने वालों में हूं। फिर हमने बचा लिया उसे और जो उसके साथ थे अपनी रहमत से

और उन लोगों की जड़ काट दी जो हमारी निशानियों को झुठलाते थे और मानते न थे। (70-72)

और समूद की तरफ़ हमने उनके भाई सालेह को भेजा। उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक खुला हुआ निशान आ गया है। यह अल्लाह की ऊंटनी तुम्हारे लिए एक निशानी की तौर पर है। पस इसे छोड़ दो कि वह खाए अल्लाह की ज़मीन में। और इसे कोई तकलीफ़ न पहुंचाना वरना तुम्हें एक दर्दनाक अज़ाब पकड़ लेगा। और याद करो जबकि ख़ुदा ने आद के बाद तुम्हें उनका जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया और तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया, तुम उसके मैदानों में महल बनाते हो और पहाड़ों को तराशकर घर बनाते हो। पस अल्लाह की नेमतों को याद करो और ज़मीन में फ़साद करते न फिरो। (73-74)

उनकी क़ौम के बड़े जिन्होंने घमंड किया, उन मोमिनीन से बोले जो कमज़ोर समझे जाते थे, क्या तुम्हें यक़ीन है कि सालेह अपने रब के भेजे हुए हैं। उन्होंने जवाब दिया कि हम तो जो वे लेकर आए हैं उस पर ईमान रखते हैं। वे मुतकब्बिर (घमंडी) लोग कहने लगे कि हम तो उस चीज़ के मुंकिर हैं जिस पर तुम ईमान लाए हो। फिर उन्होंने ऊंटनी को काट डाला और अपने रब के हुक्म से फिर गए। और उन्होंने कहा, ऐ सालेह! अगर तुम पैग़म्बर हो तो वह अज़ाब हम पर ले आओ जिससे तुम हमें डराते थे। फिर उन्हें ज़लज़ले ने आ पकड़ा और वे अपने घर में औंधे मुंह पड़े रह गए। और सालेह यह कहता हुआ उनकी बस्तियों से निकल गया कि ऐ मेरी क़ौम, मैंने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुंचा दिया और मैंने तुम्हारी ख़ैरख़्वाही की मगर तुम ख़ैरख़्वाहों को पसंद नहीं करते। (75-79)

और हमने लूत को भेजा। जब उसने अपनी क़ौम से कहा। क्या तुम खुली बेहयाई का काम करते हो जो तुमसे पहले दुनिया में किसी ने नहीं किया। तुम औरतों को छोड़कर मर्दों से अपनी ख़्वाहिश पूरी करते हो। बल्कि तुम हद से गुज़र जाने वाले लोग हो। मगर उसकी क़ौम का जवाब इसके

सिवा कुछ न था कि इन्हें अपनी बस्ती से निकाल दो। ये लोग बड़े पाकबाज़ बनते हैं। फिर हमने बचा लिया लूत को और उसके घरवालों को, उसकी बीवी के सिवा जो पीछे रह जाने वालों में से बनी। और हमने उन पर बारिश बरसाई पत्थरों की, फिर देखो कि कैसा अंजाम हुआ मुजरिमों का। (80-84)

और मदयन की तरफ़ हमने उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद (पूज्य) नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से दलील पहुंच चुकी है। पस नाप और तौल पूरी करो। और मत घटाकर दो लोगों को उनकी चीज़ें। और फ़साद न डालो ज़मीन में उसकी इस्लाह के बाद। यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है अगर तुम मोमिन हो। और रास्तों पर मत बैठो कि डराओ और अल्लाह की राह से उन लोगों को रोको जो उस पर ईमान ला चुके हैं और उस राह में कजी (टेढ़) तलाश करो। और याद करो जबकि तुम बहुत थोड़े थे फिर तुम्हें बढ़ा दिया। और देखो फ़साद करने वालों का अंजाम क्या हुआ। और अगर तुममें से एक गिरोह उस पर ईमान लाया है जो देकर मैं भेजा गया हूं और एक गिरोह ईमान नहीं लाया है तो इंतज़ार करो यहां तक कि अल्लाह हमारे दर्मियान फ़ैसला कर दे और वह बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (85-87)

क़ौम के बड़े जो मुतकब्बिर (घमंडी) थे उन्होंने कहा कि ऐ शुऐब! हम तुम्हें और उन लोगों को जो तुम्हारे साथ ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से निकाल देंगे या तुम हमारी मिल्लत में फिर आ जाओ। शुऐब ने कहा, क्या हम बेज़ार हों तब भी। हम अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले होंगे अगर हम तुम्हारी मिल्लत में लौट आएं बाद इसके कि अल्लाह ने हमें उससे नजात दी। और हमसे यह मुमकिन नहीं कि हम उस मिल्लत में लौट आएं मगर यह कि ख़ुदा हमारा रब ही ऐसा चाहे। हमारा रब हर चीज़ को अपने इल्म से घेरे हुए है। हमने अपने रब पर भरोसा किया। ऐ हमारे रब, हमारे और हमारी क़ौम के दर्मियान हक़ के साथ फ़ैसला कर दे, तू बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। और उन बड़ों ने जिन्होंने उसकी क़ौम में से इंकार किया था कहा कि अगर तुम शुऐब की पैरवी करोगे तो तुम बर्बाद हो जाओगे। फिर उन्हें ज़लज़ले ने पकड़ लिया।

पस वे अपने घर में औंधे मुंह पड़े रह गए, जिन्होंने शुऐब को झुठलाया था गोया वे कभी उस बस्ती में बसे ही न थे, जिन्होंने शुऐब को झुठलाया वही घाटे में रहे। उस वक़्त शुऐब उनसे मुंह मोड़कर चला और कहा, ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचा चुका और तुम्हारी ख़ैरख़्वाही कर चुका। अब मैं क्या अफ़सोस करूं मुंकिरों पर। (88-93)

और हमने जिस बस्ती में भी कोई नबी भेजा, उसके बाशिन्दों को हमने सख़्ती और तकलीफ़ में मुब्तिला किया ताकि वे गिड़गिड़ाएं। फिर हमने दुख को सुख से बदल दिया यहां तक कि उन्हें ख़ूब तरक़्क़ी हुई और वे कहने लगे कि तकलीफ़ और ख़ुशी तो हमारे बाप-दादाओं को भी पहुंचती रही है। फिर हमने उन्हें अचानक पकड़ लिया और वे इसका गुमान भी न रखते थे। और अगर बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते तो हम उन पर आसमान और ज़मीन की नेमतें खोल देते। मगर उन्होंने झुठलाया तो हमने उन्हें पकड़ लिया उनके आमाल के बदले। फिर क्या बस्ती वाले इससे बेख़ौफ़ हो गए हैं कि उन पर हमारा अज़ाब रात के वक़्त आ पड़े जबकि वे सोते हों। या क्या बस्ती वाले इससे बेख़ौफ़ हो गए हैं कि हमारा अज़ाब आ पहुंचे उन पर दिन चढ़े जब वे खेलते हों। क्या ये लोग अल्लाह की तदबीरों से बेख़ौफ़ हो गए हैं। पस अल्लाह की तदबीरों (युक्तियों) से वही लोग बेख़ौफ़ होते हैं जो तबाह होने वाले हों। (94-99)

क्या सबक़ नहीं मिला उन्हें जो ज़मीन के वारिस हुए हैं उसके अगले बाशिन्दों के बाद कि अगर हम चाहें तो उन्हें पकड़ लें उनके गुनाहों पर। और हमने उनके दिलों पर मुहर कर दी है पस वे नहीं समझते। ये वे बस्तियां हैं जिनके कुछ हालात हम तुम्हें सुना रहे हैं। उनके पास हमारे रसूल निशानियां लेकर आए तो हरगिज़ न हुआ कि वे ईमान लाएं उस बात पर जिसे वे पहले झुठला चुके थे। इस तरह अल्लाह मुंकिरों के दिलों पर मुहर कर देता है। और हमने उनके अक्सर लोगों में अहद (वचन) का निबाह न पाया और हमने उनमें से अक्सर को नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) पाया। (100-102)

फिर उनके बाद हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा फ़िरऔन और उसकी क़ौम के सरदारों के पास। मगर उन्होंने हमारी निशानियों के साथ ज़ुल्म किया। पस देखो कि मुफ़्सिदों (फ़साद करने वालों) का क्या अंजाम हुआ। और मूसा ने कहा ऐ फ़िरऔन, मैं परवरदिगारे आलम की तरफ़ से भेजा हुआ आया हूं। सज़ावार हूं कि अल्लाह के नाम पर कोई बात हक़ के सिवा न कहूं। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से खुली हुई निशानी लेकर आया हूं। पस तू मेरे साथ बनी इस्राईल को जाने दे। फ़िरऔन ने कहा, अगर तुम कोई निशानी लेकर आए हो तो उसे पेश करो अगर तुम सच्चे हो। तब मूसा ने अपना असा (डंडा) डाल दिया तो यकायक वह एक साफ़ अज़दहा बन गया। और उसने अपना हाथ निकाला तो अचानक वह देखने वालों के सामने चमक रहा था। फ़िरऔन की क़ौम के सरदारों ने कहा यह शख़्स बड़ा माहिर जादूगर है। चाहता है कि तुम्हें तुम्हारी ज़मीन से निकाल दे। अब तुम्हारी क्या सलाह है। उन्होंने कहा, मूसा को और उसके भाई को मोहलत दो और शहरों में हरकारे भेजो कि वे तुम्हारे पास सारे माहिर जादूगर ले आएं। (103-112)

और जादूगर फ़िरऔन के पास आए। उन्होंने कहा, हमें इनाम तो ज़रूर मिलेगा अगर हम ग़ालिब (विजित) रहे। फ़िरऔन ने कहा, हां और यक़ीनन तुम हमारे मुक़र्रबीन (निकटवर्तियों) में दाख़िल होगे। जादूगरों ने कहा, या तो तुम डालो या हम डालने वाले बनते हैं। मूसा ने कहा, तुम ही डालो। फिर जब उन्होंने डाला तो लोगों की आंखों पर जादू कर दिया और उन पर दहशत तारी कर दी और बहुत बड़ा करतब दिखाया, और हमने मूसा को हुक्म भेजा कि अपना असा (डंडा) डाल दो। तो अचानक वह निगलने लगा उसे जो उन्होंने गढ़ा था। पस हक़ ज़ाहिर हो गया और जो कुछ उन्होंने बनाया था बातिल होकर रह गया। पस वे लोग वहीं हार गए और ज़लील होकर रहे। और जादूगर सज्दे में गिर पड़े। उन्होंने कहा, हम ईमान लाए रब्बुलआलमीन (सृष्टि-प्रभु) पर जो रब (प्रभु) है मूसा और हारून का। (113-122)

फ़िरऔन ने कहा, तुम लोग मूसा पर ईमान ले आए इससे पहले कि मैं

तुम्हें इजाज़त दूं। यक़ीनन यह एक साज़िश है जो तुम लोगों ने शहर में इस ग़रज़ से की है कि तुम उसके बाशिन्दों को यहां से निकाल दो, तो तुम बहुत जल्द जान लोगे। मैं तुम्हारे हाथ और पांओं मुख़ालिफ़ सम्तों से काटूंगा फिर तुम सबको सूली पर चढ़ा दूंगा। उन्होंने कहा, हमें अपने रब ही की तरफ़ लौटना है। तू हमें सिर्फ़ इस बात की सज़ा देना चाहता है कि हमारे रब की निशानियां जब हमारे सामने आ गईं तो हम उन पर ईमान ले आए। ऐ रब, हम पर सब्र उंडेल दे और हमें वफ़ात दे इस्लाम पर। (123-126)

फ़िरऔन की क़ौम के सरदारों ने कहा, क्या तू मूसा और उसकी क़ौम को छोड़ देगा कि वे मुल्क में फ़साद फैलाएं और तुझे और तेरे माबूदों (पूज्यों) को छोड़ें। फ़िरऔन ने कहा हम उनके बेटों को क़त्ल करेंगे और उनकी औरतों को ज़िंदा रखेंगे। और हम उन पर पूरी तरह क़ादिर हैं। मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह से मदद चाहो और सब्र करो। ज़मीन अल्लाह की है, वह अपने बंदों में से जिसे चाहता है उसका वारिस बना देता है। और आख़िरी कामयाबी अल्लाह से डरने वालों ही के लिए है। मूसा की क़ौम ने कहा, हम तुम्हारे आने से पहले भी सताए गए और तुम्हारे आने के बाद भी। मूसा ने कहा क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और बजाए उनके तुम्हें इस सरज़मीन का मालिक बना दे, फिर देखे कि तुम कैसा अमल करते हो। (127-129)

और हमने फ़िरऔन वालों को क़हत (अकाल) और पैदावार की कमी में मुब्तिला किया ताकि उन्हें नसीहत हो। लेकिन जब उन पर ख़ुशहाली आती तो कहते कि यह हमारे लिए है और अगर उन पर कोई आफ़त आती तो उसे मूसा और उसके साथियों की नहूसत बताते। सुनो, उनकी बदबख़्ती तो अल्लाह के पास है मगर उनमें से अक्सर नहीं जानते। और उन्होंने मूसा से कहा, हमें मस्हूर (जादूग्रस्त) करने के लिए तुम चाहे कोई भी निशानी लाओ हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं। (130-132)

फिर हमने उनके ऊपर तूफ़ान भेजा और टिड्डी और जुएं और मेंढक और ख़ून। ये सब निशानियां अलग-अलग दिखाईं। फिर भी उन्होंने तकब्बुर

(घमंड) किया और वे मुजरिम लोग थे। और जब उन पर कोई अज़ाब पड़ता तो कहते ऐ मूसा, अपने रब से हमारे लिए दुआ करो जिसका उसने तुमसे वादा कर रखा है। अगर तुम हम पर से इस अज़ाब को हटा दो तो हम ज़रूर तुम पर ईमान लाएंगे और तुम्हारे साथ बनी इस्राईल को जाने देंगे। फिर जब हम उनसे दूर कर देते आफ़त को कुछ मुद्दत के लिए जहां बहरहाल उन्हें पहुंचना था तो उसी वक़्त वे अहद (वचन) को तोड़ देते। (133-135)

फिर हमने उन्हें सज़ा दी और उन्हें समुद्र में ग़र्क़ कर दिया क्योंकि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनसे बेपरवाह हो गए। और जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे उन्हें हमने उस सरज़मीन के पूर्व व पश्चिम का वारिस बना दिया जिसमें हमने बरकत रखी थी। और बनी इस्राईल पर तेरे रब का नेक वादा पूरा हो गया इस सबब से कि उन्होंने सब्र किया और हमने फ़िरऔन और उसकी क़ौम का वह सब कुछ बर्बाद कर दिया जो वे बनाते थे और जो वे चढ़ाते थे। (136-137)

और हमने बनी इस्राईल को समुद्र के पार उतार दिया। फिर उनका गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुआ जो पूजने में लग रहे थे अपने बुतों के। उन्होंने कहा ऐ मूसा, हमारी इबादत के लिए भी एक बुत बना दे जैसे इनके बुत हैं। मूसा ने कहा, तुम बड़े जाहिल लोग हो। ये लोग जिस काम में लगे हुए हैं वह बर्बाद होने वाला है और ये जो कुछ कर रहे हैं वह बातिल है। उसने कहा, क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और माबूद तुम्हारे लिए तलाश करूं हालाँकि उसने तुम्हें तमाम अहले-आलम पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी है। और जब हमने फ़िरऔन वालों से तुम्हें नजात दी जो तुम्हें सख़्त अज़ाब में डाले हुए थे। तुम्हारे बेटों को क़त्ल करते और तुम्हारी औरतों को ज़िंदा रहने देते और इसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारी बड़ी आज़माइश थी। (138-141)

और हमने मूसा से तीस रातों का वादा किया और उसे पूरा किया दस मज़ीद रातों से तो उसके रब की मुद्दत चालीस रातों में पूरी हुई। और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, मेरे पीछे तुम मेरी क़ौम में मेरी जानशीनी (प्रतिनिधित्व) करना, इस्लाह (सुधार) करते रहना, और बिगाड़ पैदा करने

वालों के तरीक़े पर न चलना। और जब मूसा हमारे वक़्त पर आ गया और उसके रब ने उससे कलाम किया तो उसने कहा, मुझे अपने को दिखा दे कि मैं तुझे देखूं। फ़रमाया, तुम मुझे हरगिज़ नहीं देख सकते। अलबत्ता पहाड़ की तरफ़ देखो, अगर वह अपनी जगह क़ायम रह जाए तो तुम भी मुझे देख सकोगे। फिर जब उसके रब ने पहाड़ पर अपनी तजल्ली (आलोक) डाली तो उसे रेज़ा-रेज़ा कर दिया। और मूसा बेहोश होकर गिर पड़ा। फिर जब होश आया तो बोला, तू पाक है, मैंने तेरी तरफ़ रुजूअ किया और मैं सबसे पहले ईमान लाने वाला हूं। (142-143)

अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ मूसा मैंने तुम्हें लोगों पर अपनी पैग़म्बरी और अपने कलाम के ज़रिए से सरफ़राज़ किया। पस अब लो जो कुछ मैंने तुम्हें अता किया है। और शुक्रगुज़ारों में से बनो। और हमने उसके लिए तख़्तियों पर हर क़िस्म की नसीहत और हर चीज़ की तफ़्सील लिख दी। पस इसे मज़बूती से पकड़ो और अपनी क़ौम को हुक्म दो कि इनके बेहतर मफ़हूम (भावार्थ) की पैरवी करें। अनक़रीब मैं तुम्हें नाफ़रमानों का घर दिखाऊंगा। (144-145)

मैं अपनी निशानियों से उन लोगों को फेर दूंगा जो ज़मीन में नाहक़ घमंड करते हैं। और अगर वे हर क़िस्म की निशानियां देख लें तब भी उन पर ईमान न लाएं। और अगर वे हिदायत का रास्ता देखें तो उसे न अपनाएंगे और अगर गुमराही का रास्ता देखें तो उसे अपना लेंगे। यह इस सबब से है कि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनकी तरफ़ से अपने को ग़ाफ़िल रखा। और जिन्होंने हमारी निशानियों को और आख़िरत की मुलाक़ात को झुठलाया उनके आमाल अकारत हो गए और वे बदले में वही पाएंगे जो वे करते थे। (146-147)

और मूसा की क़ौम ने उसके पीछे अपने ज़ेवरों से एक बछड़ा बनाया, एक धड़ जिससे बैल की सी आवाज़ निकलती थी। क्या उन्होंने नहीं देखा कि वह न उनसे बोलता है और न कोई राह दिखाता है। उसे उन्होंने माबूद (पूज्य) बना लिया और वे बड़े ज़ालिम थे। और जब वे पछताए और उन्होंने महसूस किया कि वे गुमराही में पड़ गए थे तो उन्होंने कहा, अगर हमारे

रब ने हम पर रहम न किया और हमें न बख़्शा तो यक़ीनन हम बर्बाद हो जाएंगे। और जब मूसा रंज और ग़ुस्से में भरा हुआ अपनी क़ौम की तरफ़ लौटा तो उसने कहा, तुमने मेरे बाद मेरी बहुत बुरी जानशीनी (प्रतिनिधित्व) की। क्या तुमने अपने रब के हुक्म से पहले ही जल्दी कर ली। और उसने तख़्तियां डाल दीं और अपने भाई का सिर पकड़कर उसे अपनी तरफ़ खींचने लगे। हारून ने कहा, ऐ मेरी मां के बेटे, लोगों ने मुझे दबा लिया और क़रीब था कि मुझे मार डालें। पस तू दुश्मनों को मेरे ऊपर हंसने का मौक़ा न दे और मुझे ज़ालिमों के साथ शामिल न कर। मूसा ने कहा, ऐ मेरे रब! माफ़ कर दे मुझे और मेरे भाई को और हमें अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमा और तू सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है। (148-151)

बेशक जिन लोगों ने बछड़े को माबूद (पूज्य) बनाया उन्हें उनके रब का ग़ज़ब पहुंचेगा और ज़िल्लत दुनिया की ज़िंदगी में। और हम ऐसा ही बदला देते हैं झूठ बांधने वालों को। और जिन लोगों ने बुरे काम किए फिर इसके बाद तौबा की। और ईमान लाए तो बेशक इसके बाद तेरा रब बख़्शने वाला महरबान है। (152-153)

और जब मूसा का ग़ुस्सा थमा तो उसने तख़्तियां उठाईं और जो उनमें लिखा हुआ था उसमें हिदायत और रहमत थी उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं। और मूसा ने अपनी क़ौम में से सत्तर आदमी चुने हमारे मुक़र्रर किए हुए वक़्त के लिए। फिर जब उन्हें ज़लज़ले ने पकड़ा तो मूसा ने कहा ऐ रब, अगर तू चाहता तो तू पहले ही इन्हें हलाक कर देता और मुझे भी। क्या तू हमें ऐसे काम पर हलाक करेगा जो हमारे अंदर के बेवक़ूफ़ों ने किया। ये सब तेरी आज़माइश है तू इससे जिसे चाहे गुमराह कर दे और जिसे चाहे हिदायत दे। तू ही हमारा थामने वाला है। पस हमें बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा, तू सबसे बेहतर बख़्शने वाला है। और तू हमारे लिए इस दुनिया में भी भलाई लिख दे और आख़िरत में भी। हमने तेरी तरफ़ रुजूअ किया। अल्लाह ने कहा, मैं अपना अज़ाब उसी पर डालता हूं जिसे चाहता हूं और मेरी रहमत शामिल है हर चीज़ को। पस मैं उसे लिख दूंगा उनके लिए

जो डर रखते हैं और ज़कात अदा करते हैं और हमारी निशानियों पर ईमान लाते हैं। (154-156)

जो लोग पैरवी करेंगे उस रसूल की जो नबी उम्मी (अनपढ़) है, जिसे वे अपने यहां तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं। वह उन्हें नेकी का हुक्म देता है और उन्हें बुराई से रोकता है और उनके लिए पाकीज़ा चीज़ें जाइज़ ठहराता है और नापाक चीज़ें हराम करता है और उन पर से वह बोझ और क़ैदें उतारता है जो उन पर थीं। पस जो लोग उस पर ईमान लाए और जिन्होंने उसकी इज़्ज़त की और उसकी मदद की और उस नूर की पैरवी की जो उसके साथ उतारा गया है तो वही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। (157)

कहो ऐ लोगो, बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूं तुम सबकी तरफ़ जिसकी हुकूमत है आसमानों और ज़मीन में। वही जिलाता है और वही मारता है। पस ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके उम्मी रसूल व नबी पर जो ईमान रखता है अल्लाह और उसके कलिमात (वाणी) पर और उसकी पैरवी करो ताकि तुम हिदायत पाओ। और मूसा की क़ौम में एक गिरोह ऐसा भी है जो हक़ के मुताबिक़ रहनुमाई करता है और उसी के मुताबिक़ इंसाफ़ करता है। (158-159)

और हमने उन्हें बारह घरानों में तक़्सीम करके उन्हें अलग-अलग गिरोह बना दिया। और जब मूसा की क़ौम ने पानी मांगा तो हमने मूसा को हुक्म भेजा कि फ़लां चट्टान पर अपनी लाठी मारो तो उससे बारह चशमे (जलस्रोत) फूट निकले। हर गिरोह ने अपना पानी पीने का मक़ाम मालूम कर लिया। और हमने उन पर बदलियों का साया किया और उन पर मन्न व सलवा उतारा। खाओ पाकीज़ा चीज़ों में से जो हमने तुम्हें दी हैं। और उन्होंने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा बल्कि ख़ुद अपना ही नुक़सान करते रहे। और जब उनसे कहा गया कि उस बस्ती में जाकर बस जाओ। उसमें जहां से चाहो खाओ और कहो हमें बख़्श दे और दरवाज़े में झुके हुए दाख़िल हो, हम तुम्हारी ख़ताएं माफ़ कर देंगे। हम नेकी करने वालों को और ज़्यादा देते हैं। फिर उनमें से ज़ालिमों

ने बदल डाला दूसरा लफ़्ज़ उसके सिवा जो उनसे कहा गया था। फिर हमने उन पर आसमान से अज़ाब भेजा इसलिए कि वे ज़ुल्म करते थे। (160-162)

और उनसे उस बस्ती का हाल पूछो जो दरिया के किनारे थी। जब वे सब्त (सनीचर) के बारे में तजावुज़ (उल्लंघन) करते थे। जब उनके सब्त के दिन उनकी मछलियां पानी के ऊपर आतीं और जिस दिन सब्त न होता तो न आतीं। उनकी आज़माइश हमने इस तरह की, इसलिए कि वे नाफ़रमानी कर रहे थे। और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है या उन्हें सख़्त अज़ाब देने वाला है। उन्होंने कहा, तुम्हारे रब के सामने इल्ज़ाम उतारने के लिए और इसलिए कि शायद वे डरें। (163-164)

फिर जब उन्होंने भुला दी वह चीज़ जो उन्हें याद दिलाई गई थी तो हमने उन लोगों को बचा लिया जो बुराई से रोकते थे और उन लोगों को जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया एक सख़्त अज़ाब में पकड़ लिया। इसलिए कि वे नाफ़रमानी (अवज्ञा) करते थे। फिर जब वे बढ़ने लगे उस काम में जिससे वे रोके गए थे तो हमने उनसे कहा कि ज़लील बंदर बन जाओ। (165-166)

और जब तुम्हारे रब ने ऐलान कर दिया कि वह यहूद पर क़ियामत के दिन तक ज़रूर ऐसे लोग भेजता रहेगा जो उन्हें निहायत बुरा अज़ाब दें। बेशक तेरा रब जल्द सज़ा देने वाला है और बेशक वह बख़्शने वाला महरबान है। और हमने उन्हें गिरोह-गिरोह करके ज़मीन में बिखेर दिया। उनमें कुछ नेक हैं और उनमें कुछ इससे मुख़्तलिफ़ (भिन्न)। और हमने उनकी आज़माइश की अच्छे हालात से और बुरे हालात से ताकि वे बाज़ आएं। (167-168)

फिर उनके पीछे नाख़ल्फ़ (अयोग्य) लोग आए जो किताब के वारिस बने, वे इसी दुनिया की मताअ (सुख-सामग्री) लेते हैं और कहते हैं कि हम यक़ीनन बख़्श दिए जाएंगे। और अगर ऐसी ही मताअ उनके सामने फिर आए तो उसे ले लेंगे। क्या उनसे किताब में इसका अहद (वचन) नहीं लिया गया है कि अल्लाह के नाम पर हक़ के सिवा कोई और बात न कहें। और

उन्होंने पढ़ा है जो कुछ उसमें लिखा है। और आख़िरत का घर बेहतर है डरने वालों के लिए, क्या तुम समझते नहीं। और जो लोग ख़ुदा की किताब को मज़बूती से पकड़ते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं, बेशक हम मुस्लिहीन (सुधारकों) का अज्र ज़ाया नहीं करेंगे। और जब हमने पहाड़ को उनके ऊपर उठाया गोया कि वह सायबान है। और उन्होंने गुमान किया कि वह उन पर आ पड़ेगा। पकड़ो उस चीज़ को जो हमने तुम्हें दी है मज़बूती से, और याद रखो जो उसमें है ताकि तुम बचो। (169-171)

और जब तेरे रब ने बनी आदम की पीठों से उनकी औलाद को निकाला और उन्हें गवाह ठहराया ख़ुद उनके ऊपर। क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं। उन्होंने कहा हां, हम इक़रार करते हैं। यह इसलिए हुआ कि कहीं तुम क़ियामत के दिन कहने लगो हमें तो इसकी ख़बर न थी। या कहो कि हमारे बाप-दादा ने पहले से शिर्क (ख़ुदा का साझीदार ठहराना) किया था और हम उनके बाद उनकी नस्ल में हुए। तो क्या तू हमें हलाक करेगा उस काम पर जो ग़लतकार लोगों ने किया। और इस तरह हम अपनी निशानियां खोलकर बयान करते हैं ताकि वे पलट आएं। (172-174)

और उन्हें उस शख़्स का हाल सुनाओ जिसे हमने अपनी आयतें दी थीं तो वह उनसे निकल भागा। पस शैतान उसके पीछे लग गया और वह गुमराहों में से हो गया। और अगर हम चाहते तो उसे उन आयतों के ज़रिए से बुलन्दी अता करते मगर वह तो ज़मीन का हो रहा और अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी करने लगा। पस उसकी मिसाल कुत्ते की सी है कि अगर तू उस पर बोझ लादे तब भी हांफे और अगर छोड़ दे तब भी हांफे। यह मिसाल उन लोगों की है जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया। पस तुम यह अहवाल उन्हें सुनाओ ताकि वे सोचें। कैसी बुरी मिसाल है उन लोगों की जो हमारी निशानियों को झुठलाते हैं और वे अपना ही नुक़सान करते रहे। अल्लाह जिसे राह दिखाए वही राह पाने वाला होता है और जिसे वह बेराह कर दे तो वही घाटा उठाने वाले हैं। (175-178)

और हमने जिन्नात और इंसानों में से बहुतों को दोज़ख़ के लिए पैदा

किया है। उनके दिल हैं जिनसे वे समझते नहीं, उनकी आंखें हैं जिनसे वे देखते नहीं, उनके कान हैं जिनसे वे सुनते नहीं। वे ऐसे हैं जैसे चौपाए बल्कि उनसे भी ज़्यादा बेराह। यही लोग हैं ग़ाफ़िल। और अल्लाह के लिए हैं सब अच्छे नाम। पस इन्हीं से उसे पुकारो और उन लोगों को छोड़ दो, जो उसके नामों में कजरवी (कुटिलता) करते हैं। वे बदला पाकर रहेंगे अपने कामों का। और हमने जिन्हें पैदा किया है उनमें से एक गिरोह ऐसा है जो हक़ के मुताबिक़ फ़ैसला करता है। और जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुठलाया हम उन्हें आहिस्ता-आहिस्ता पकड़ेंगे ऐसी जगह से जहां से उन्हें ख़बर भी न होगी। और मैं उन्हें ढील देता हूं, बेशक मेरा दांव बड़ा मज़बूत है। (179-183)

क्या उन लोगों ने ग़ौर नहीं किया कि उनके साथी को कोई जुनून नहीं है। वह तो एक साफ़ डराने वाला है। क्या उन्होंने आसमानों और ज़मीन के निज़ाम पर नज़र नहीं की और जो कुछ अल्लाह ने पैदा किया है हर चीज़ से और इस बात पर की शायद उनकी मुद्दत क़रीब आ गई हो। पस इसके बाद वे किस बात पर ईमान लाएंगे। जिसे अल्लाह बेराह कर दे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं। और वह उन्हें सरकशी ही में भटकता हुआ छोड़ देता है। वह तुमसे क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि उसका वह कब वाक़े होगा। कहो इसका इल्म तो मेरे रब ही के पास है। वही उसके वक़्त पर उसे ज़ाहिर करेगा। वह भारी हो रही है आसमानों में और ज़मीन में। वह जब तुम पर आएगी तो अचानक आ जाएगी। वह तुमसे पूछते हैं गोया कि तुम उसकी तहक़ीक़ कर चुके हो। कहो इसका इल्म तो बस अल्लाह ही के पास है। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। कहो मैं मालिक नहीं अपनी जान के भले का और न बुरे का मगर जो अल्लाह चाहे। और अगर मैं ग़ैब को जानता तो मैं बहुत से फ़ायदे अपने लिए हासिल कर लेता और मुझे कोई नुक़सान न पहुंचता। मैं तो महज़ एक डराने वाला और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूं उन लोगों के लिए जो मेरी बात मानें। (184-188)

वही है जिसने तुम्हें पैदा किया एक जान से और उसी ने बनाया उसका जोड़ा ताकि उसके पास सुकून हासिल करे। फिर जब मर्द ने औरत को ढांक

लिया तो उसे एक हल्का सा हमल रह गया। फिर वह उसे लिए फिरती रही। फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों ने मिलकर अल्लाह अपने रब से दुआ की, अगर तूने हमें तंदुरुस्त औलाद दी तो हम तेरे शुक्रगुज़ार रहेंगे। मगर जब अल्लाह ने उन्हें तंदरुस्त औलाद दे दी तो वे उसकी बख़्शी हुई चीज़ में दूसरों को उसका शरीक ठहराने लगे। अल्लाह बरतर है उन मुश्रिकाना बातों से जो ये लोग करते हैं। क्या वे शरीक बनाते हैं ऐसों को जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते बल्कि वे ख़ुद मख़्लूक़ (सृजित) हैं। और वे न उनकी किसी क़िस्म की मदद कर सकते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं। और अगर तुम उन्हें रहनुमाई के लिए पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार पर न चलेंगे। बराबर है चाहे तुम उन्हें पुकारो या तुम ख़ामोश रहो। जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वे तुम्हारे ही जैसे बंदे हैं। पस तुम उन्हें पुकारो, वे तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो। (189-194)

क्या उनके पाँव हैं कि उनसे चलें। क्या उनके हाथ हैं कि उनसे पकड़ें। क्या उनकी आंखें हैं कि उनसे देखें। क्या उनके कान हैं कि उनसे सुनें। कहो, तुम अपने शरीकों को बुलाओ। फिर तुम लोग मेरे ख़िलाफ़ तदबीरें करो और मुझे मोहलत न दो। यक़ीनन मेरा कारसाज़ (कार्य-साधक) अल्लाह है जिसने किताब उतारी है और वह कारसाज़ी करता है नेक बंदों की। और जिन्हें तुम पुकारते हो उसके सिवा वे न तुम्हारी मदद कर सकते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं। और अगर तुम उन्हें रास्ते की तरफ़ पुकारो तो वे तुम्हारी बात न सुनेंगे और तुम्हें नज़र आता है कि वे तुम्हारी तरफ़ देख रहे हैं मगर वे कुछ नहीं देखते। (195-198)

दरगुज़र (क्षमा) करो, नेकी का हुक्म दो और जाहिलों से न उलझो। और अगर तुम्हें कोई वसवसा शैतान की तरफ़ से आए तो अल्लाह की पनाह चाहो। बेशक वह सुनने वाला और जानने वाला है। जो लोग डर रखते हैं जब कभी शैतान के असर से कोई बुरा ख़्याल उन्हें छू जाता है तो वे फ़ौरन चौंक पड़ते हैं और फिर उसी वक़्त उन्हें सूझ आ जाती है। और जो शैतान के भाई हैं वे उन्हें गुमराही में खींचे चले जाते हैं फिर वे कमी नहीं करते। (199-202)

और जब तुम उनके सामने कोई निशानी (चमत्कार) नहीं लाए तो कहते हैं कि क्यों न तुम छांट लाए कुछ अपनी तरफ़ से। कहो, मैं तो उसी की पैरवी करता हूं जो मेरे रब की तरफ़ से मुझ पर 'वही' (प्रकाशना) की जाती है। ये सूझ की बातें हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से और हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे तवज्जोह से सुनो और ख़ामोश रहो, ताकि तुम पर रहमत की जाए। और अपने रब को सुबह व शाम याद करो अपने दिल में, आजिज़ी और ख़ौफ़ के साथ और पस्त आवाज़ से, और ग़ाफ़िलों में से न बनों। जो (फ़रिश्ते) तेरे रब के पास हैं वे उसकी इबादत से तकब्बुर (घमंड) नहीं करते। और वे उसकी पाक ज़ात को याद करते हैं और उसी को सज्दा करते हैं। (203-206)

सूरह-8. अल-अनफ़ाल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

वे तुमसे अनफ़ाल (ग़नीमत का माल) के बारे में पूछते हैं। कहो कि अनफ़ाल अल्लाह और उसके रसूल के हैं। पस तुम लोग अल्लाह से डरो और अपने आपस के तअल्लुक़ात की इस्लाह (सुधार) करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो, अगर तुम ईमान रखते हो। ईमान वाले तो वे हैं कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उनके दिल दहल जाएं और जब अल्लाह की आयतें उनके सामने पढ़ी जाएं तो वे उनका ईमान बढ़ा देती हैं और वे अपने रब पर भरोसा रखते हैं। वे नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। यही लोग हक़ीक़ी मोमिन हैं। उनके लिए उनके रब के पास दर्जे और मग़्फ़िरत (क्षमा) हैं और उनके लिए इज़्ज़त की रोज़ी है। (1-4)

जैसा कि तुम्हारे रब ने तुम्हें हक़ के साथ तुम्हारे घर से निकाला। और मुसलमानों में से एक गिरोह को यह नागवार था। वे इस हक़ के मामले में तुमसे झगड़ रहे थे बावजूद यह कि वह ज़ाहिर हो चुका था, गोया कि वे मौत की तरफ़ हांके जा रहे हैं आंखों देखते। और जब ख़ुदा तुमसे वादा कर रहा

था कि दो जमाअतों में से एक तुम्हें मिल जाएगी। और तुम चाहते थे कि जिसमें कांटा न लगे वह तुम्हें मिले। और अल्लाह चाहता था कि वह हक़ का हक़ होना साबित कर दे अपने कलिमात से और मुंकिरों की जड़ काट दे ताकि हक़ (सत्य) हक़ होकर रहे और बातिल (असत्य) बातिल होकर रह जाए चाहे मुजरिमों को वह कितना ही नागवार हो। (5-8)

जब तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे तो उसने तुम्हारी फ़रियाद सुनी कि मैं तुम्हारी मदद के लिए एक हज़ार फ़रिश्ते लगातार भेज रहा हूं। और यह अल्लाह ने सिर्फ़ इसलिए किया कि तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी हो और ताकि तुम्हारे दिल उससे मुतमइन हो जाएं। और मदद तो अल्लाह ही के पास से आती है। यक़ीनन अल्लाह ज़बरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। जब अल्लाह ने तुम पर ऊंघ डाल दी अपनी तरफ़ से तुम्हारी तस्कीन के लिए और आसमान से तुम्हारे ऊपर पानी उतारा कि उसके ज़रिए से तुम्हें पाक करे और तुमसे शैतान की नजासत (गंदगी) को दूर कर दे और तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे और उससे क़दमों को जमा दे। जब तेरे रब ने फ़रिश्तों को हुक्म भेजा कि मैं तुम्हारे साथ हूं, तुम ईमान वालों को जमाए रखो। मैं मुंकिरों के दिल में रौब डाल दूंगा। पस तुम उनकी गर्दन के ऊपर मारो और उनके पोर-पोर पर ज़र्ब (चोट) लगाओ। यह इस सबब से कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त की। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करता है तो अल्लाह सज़ा देने में सख़्त है। यह तो अब चखो और जान लो कि मुंकिरों के लिए आग का अज़ाब है। (9-14)

ऐ ईमान वालो, जब तुम्हारा मुक़ाबला मुंकिरीन से जंग के मैदान में हो तो उनसे पीठ मत फेरो। और जिसने ऐसे मौक़े पर पीठ फेरी, सिवा इसके कि जंगी चाल के तौर पर हो या दूसरी फ़ौज से जा मिलने के लिए, तो वह अल्लाह के ग़ज़ब (प्रकोप) में आ जाएगा और उसका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है। (15-16)

पस उन्हें तुमने क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने क़त्ल किया। और जब तुमने उन पर ख़ाक फेंकी तो तुमने नहीं फेंकी बल्कि अल्लाह ने फेंकी

ताकि अल्लाह अपनी तरफ़ से ईमान वालों पर ख़ूब एहसान करे। बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। यह तो हो चुका। और बेशक अल्लाह मुंकिरीन की तमाम तदबीरें (युक्तियां) बेकार करके रहेगा। अगर तुम फ़ैसला चाहते थे तो फ़ैसला तुम्हारे सामने आ गया। और अगर तुम बाज़ आ जाओ तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है। और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम भी फिर वही करेंगे और तुम्हारा जत्था तुम्हारे कुछ काम न आएगा चाहे वह कितना ही ज़्यादा हो। और बेशक अल्लाह ईमान वालों के साथ है। (17-19)

ऐ ईमान वालो, अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो और उससे रूगर्दानी (अवहेलना) न करो हालाँकि तुम सुन रहे हो। और उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने कहा कि हमने सुना हालाँकि वे नहीं सुनते। यक़ीनन अल्लाह के नज़दीक बदतरीन जानवर वे बहरे-गूंगे लोग हैं जो अक़्ल से काम नहीं लेते। और अगर उनमें किसी भलाई का इल्म अल्लाह को होता तो वह ज़रूर उन्हें सुनने की तौफ़ीक़ देता और अगर अब वह उन्हें सुनवा दे तो वे ज़रूर रूगर्दानी करेंगे बेरुख़ी करते हुए। (20-23)

ऐ ईमान वालो, अल्लाह और रसूल की पुकार पर लब्बैक (स्वीकारोक्ति) कहो जबकि रसूल तुम्हें उस चीज़ की तरफ़ बुला रहा है जो तुम्हें ज़िंदगी देने वाली है। और जान लो कि अल्लाह आदमी और उसके दिल के दर्मियान हायल (बाधित) हो जाता है। और यह कि उसी की तरफ़ तुम्हारा इकट्ठा होना है। और डरो उस फ़ितने से जो ख़ास उन्हीं लोगों पर वाक़ेअ न होगा जो तुममें से ज़ुल्म के करने वाले हुए हैं। और जान लो कि अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है। (24-25)

और याद करो जबकि तुम थोड़े थे और ज़मीन में कमज़ोर समझे जाते थे। डरते थे कि लोग अचानक तुम्हें उचक न लें। फिर अल्लाह ने तुम्हें रहने की जगह दी और अपनी नुसरत (मदद) से तुम्हारी ताईद की और तुम्हें पाकीज़ा रोज़ी दी ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो। ऐ ईमान वालो, ख़ियानत (विश्वास-भंग) न करो अल्लाह और रसूल की और ख़ियानत न करो अपनी अमानतों में

हालाँकि तुम जानते हो। और जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद एक आज़माइश हैं। और यह कि अल्लाह ही के पास है बड़ा अज्र। (26-28)

ऐ ईमान वालो, अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो वह तुम्हारे लिए फ़ुरक़ान बहम पहुंचाएगा और तुमसे तुम्हारे गुनाहों को दूर कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है, और जब मुंकिर तुम्हारे बारे में तदबीरें सोच रहे थे कि तुम्हें क़ैद कर दें या क़त्ल कर डालें या जलावतन (निर्वासित) कर दें। वे अपनी तदबीरें कर रहे थे और अल्लाह अपनी तदबीरें कर रहा था और अल्लाह बेहतरीन तदबीर वाला है। (29-30)

और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं हमने सुन लिया। अगर हम चाहें तो हम भी ऐसा ही कलाम पेश कर दें। यह तो बस अगलों की कहानियां हैं। और जब उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह! अगर यही हक़ है तेरे पास से तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या और कोई दर्दनाक अज़ाब हम पर ले आ। और अल्लाह ऐसा करने वाला नहीं कि उन्हें अज़ाब दे इस हाल में कि तुम उनमें मौजूद हो और अल्लाह उन पर अज़ाब लाने वाला नहीं जबकि वे इस्तग़फ़ार (क्षमा-याचना) कर रहे हों। और अल्लाह उन्हें क्यों न अज़ाब देगा हालाँकि वे मस्जिदे-हराम से रोकते हैं जबकि वे उसके मुतवल्ली (संरक्षक) नहीं। उसके मुतवल्ली तो सिर्फ़ अल्लाह से डरने वाले हो सकते हैं। मगर उनमें से अक्सर इसे नहीं जानते। और बैतुलल्लाह के पास उनकी नमाज़ सीटी बजाने और ताली पीटने के सिवा और कुछ नहीं। पस अब चखो अज़ाब अपने कुफ़्र का। (31-35)

जिन लोगों ने इंकार किया वे अपने माल को इसलिए ख़र्च करते हैं कि लोगों को अल्लाह की राह से रोकें। वे उसे ख़र्च करते रहेंगे फिर यह उनके लिए हसरत बनेगा फिर वे मग़लूब (परास्त) किए जाएंगे। और जिन्होंने इंकार किया उन्हें जहन्नम की तरफ़ इकट्ठा किया जाएगा। ताकि अल्लाह नापाक को अलग कर दे पाक से और नापाक को एक पर एक रखे फिर इस ढेर को जहन्नम में डाल दे, यही लोग हैं ख़सारे (घाटे) में पड़ने वाले। (36-37)

इंकार करने वालों से कहो कि अगर वे बाज़ आ जाएं तो जो कुछ हो

चुका है वह उन्हें माफ़ कर दिया जाएगा। और अगर वे फिर वही करेंगे तो हमारा मामला अगलों के साथ गुज़र चुका है। और उनसे लड़ो यहाँ तक कि फ़ितना बाक़ी न रहे और दीन सब अल्लाह के लिए हो जाए। फिर अगर वे बाज़ आ जाएं तो अल्लाह देखने वाला है उनके अमल का। और अगर उन्होंने ऐराज़ (उपेक्षा) किया तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा मौला है और क्या ही अच्छा मौला है और क्या ही अच्छा मददगार। (38-40)

और जान लो कि जो कुछ ग़नीमत का माल (जंग में हासिल माल) तुम्हें हासिल हो उसका पांचवां हिस्सा अल्लाह और रसूल के लिए और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिए है, अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो हमने अपने बंदे (मुहम्मद) पर उतारी फ़ैसले के दिन, जिस दिन कि दोनों जमाअतों में मुठभेड़ हुई और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (41)

और जबकि तुम वादी के क़रीबी किनारे पर थे और वे दूर के किनारे पर। और क़ाफ़िला तुमसे नीचे की तरफ़ था। और अगर तुम और वे वक़्त मुक़र्रर करते तो ज़रूर इस तक़र्रुर के बारे में तुममें इख़्तेलाफ़ (मतभेद) हो जाता। लेकिन जो हुआ वह इसलिए हुआ ताकि अल्लाह उस चीज़ का फ़ैसला कर दे जिसे होकर रहना था, ताकि जिसे हलाक होना है वह रोशन दलील के साथ हलाक हो और जिसे ज़िंदगी हासिल करना है वह रोशन दलील के साथ ज़िंदा रहे। यक़ीनन अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। जब अल्लाह तुम्हारे ख़्वाब में उन्हें थोड़ा दिखाता रहा। अगर वह उन्हें ज़्यादा दिखा देता तो तुम लोग हिम्मत हार जाते और आपस में झगड़ने लगते इस मामले में। लेकिन अल्लाह ने तुम्हें बचा लिया। यक़ीनन वह दिलों तक का हाल जानता है। और जब अल्लाह ने उन लोगों को तुम्हारी नज़र में कम करके दिखाया और तुम्हें उनकी नज़र में कम करके दिखाया ताकि अल्लाह उस चीज़ का फ़ैसला कर दे जिसका होना तय था। और सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं। (42-44)

ऐ ईमान वालो! जब किसी गिरोह से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो तुम साबित क़दम रहो और अल्लाह को बहुत याद करो ताकि तुम कामयाब हो। और इताअत (आज्ञापालन) करो अल्लाह की और उसके रसूल की और आपस में झगड़ा न करो वरना तुम्हारे अंदर कमज़ोरी आ जाएगी और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और सब्र करो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है, और उन लोगों की तरह न बनो जो अपने घरों से अकड़ते हुए और लोगों को दिखाते हुए निकले और जो अल्लाह की राह से रोकते हैं। हालाँकि वे जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह उसका इहाता (आच्छादन) किए हुए है। (45-47)

और जब शैतान ने उन्हें उनके आमाल ख़ुशनुमा बनाकर दिखाए और कहा कि लोगों में से आज कोई तुम पर ग़ालिब आने वाला नहीं और मैं तुम्हारे साथ हूं। मगर जब दोनों गिरोह आमने-सामने हुए तो वह उल्टे पांव भागा और कहा कि मैं तुमसे बरी हूं, मैं वह कुछ देख रहा हूं जो तुम लोग नहीं देखते। मैं अल्लाह से डरता हूं और अल्लाह सख़्त सज़ा देना वाला है। जब मुनाफ़िक़ (पाखंडी) और जिनके दिलों में रोग है कहते थे कि इन लोगों को इनके दीन ने धोखे में डाल दिया है और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त और हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (48-49)

और अगर तुम देखते जबकि फ़रिश्ते इन मुंकिरीन की जान क़ब्ज़ करते हैं, मारते हुए उनके चेहरों और उनकी पीठों पर, और यह कहते हुए कि अब जलने का अज़ाब चखो। यह बदला है उसका जो तुमने अपने हाथों आगे भेजा था और अल्लाह हरगिज़ बंदों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं। फ़िरऔन वालों की तरह और जो उनसे पहले थे कि उन्होंने अल्लाह की निशानियों का इंकार किया पस अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उन्हें पकड़ लिया। बेशक अल्लाह क़ुव्वत (शक्ति) वाला है, सख़्त सज़ा देने वाला है। यह इस वजह से हुआ कि अल्लाह उस इनाम को जो वह किसी क़ौम पर करता है उस वक़्त तक नहीं बदलता जब तक वे उसे न बदल दें जो उनके नफ़्सों (अंतःकरणों) में है। और बेशक अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। फ़िरऔन वालों की तरह और जो उनसे पहले थे कि उन्होंने अपने रब की निशानियों को झुठलाया फिर हमने

उनके गुनाहों के सबब से उन्हें हलाक कर दिया और हमने फ़िरऔन वालों को ग़र्क़ कर दिया और ये सब लोग ज़ालिम थे। (50-54)

बेशक सब जानदारों में बदतरीन अल्लाह के नज़दीक वे लोग हैं जिन्होंने इंकार किया और वे ईमान नहीं लाते। जिनसे तुमने अहद (वचन) लिया, फिर वे अपना अहद हर बार तोड़ देते हैं और वे डरते नहीं। पस अगर तुम उन्हें लड़ाई में पाओ तो उन्हें ऐसी सज़ा दो कि जो उनके पीछे हैं वे भी देखकर भाग जाएं, ताकि उन्हें इबरत (सीख) हो। और अगर तुम्हें किसी क़ौम से बदअहदी (वचन भंग) का डर हो तो उनका अहद उनकी तरफ़ फेंक दो, ऐसी तरह कि तुम और वे बराबर हो जाएं। बेशक अल्लाह बदअहदों को पसंद नहीं करता। (55-58)

और इंकार करने वाले यह न समझें कि वे निकल भागेंगे, वे हरगिज़ अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते। और उनके लिए जिस क़द्र तुमसे हो सके तैयार रखो क़ुव्वत और पले हुए घोड़े कि इससे तुम्हारी हैबत रहे अल्लाह के दुश्मनों पर और तुम्हारे दुश्मनों पर और इनके अलावा दूसरों पर भी जिन्हें तुम नहीं जानते। अल्लाह उन्हें जानता है। और जो कुछ तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे वह तुम्हें पूरा कर दिया जाएगा और तुम्हारे साथ कोई कमी न की जाएगी। और अगर वे सुलह (संधि) की तरफ़ झुकें तो तुम भी इसके लिए झुक जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो। बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। और अगर वे तुम्हें धोखा देना चाहेंगे तो अल्लाह तुम्हारे लिए काफ़ी है। वही है जिसने अपनी नुसरत (मदद) और मोमिनों के ज़रिए तुम्हें क़ुव्वत दी। और उनके दिलों में इत्तिफ़ाक़ (जुड़ाव) पैदा कर दिया। अगर तुम ज़मीन में जो कुछ है सब ख़र्च कर डालते तब भी उनके दिलों में इत्तिफ़ाक़ पैदा न कर सकते। लेकिन अल्लाह ने उनमें इत्तिफ़ाक़ पैदा कर दिया, बेशक वह ज़ोरआवर है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (59-63)

ऐ नबी! तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है और वे मोमिनीन जिन्होंने तुम्हारा साथ दिया है। ऐ नबी! मोमिनीन को लड़ाई पर उभारो। अगर तुममें बीस आदमी साबित क़दम (दृढ़) होंगे तो दो सौ पर ग़ालिब आएंगे और अगर

तुममें सौ होंगे तो हज़ार मुंकिरों पर ग़ालिब आएंगे, इस वास्ते कि वे लोग समझ नहीं रखते। अब अल्लाह ने तुम पर से बोझ हल्का कर दिया और उसने जान लिया कि तुममें कुछ कमज़ोरी है। पस अगर तुममें सौ साबित क़दम होंगे तो दो सौ पर ग़ालिब आएंगे और अगर हज़ार होंगे तो अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार पर ग़ालिब आएंगे, और अल्लाह साबित क़दम रहने वालों के साथ है। (64-66)

किसी नबी के लिए लायक़ नहीं कि उसके पास क़ैदी हों जब तक वह ज़मीन में अच्छी तरह ख़ूंरेज़ी न कर ले। तुम दुनिया के असबाब चाहते हो और अल्लाह आख़िरत को चाहता है। और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और अगर अल्लाह का एक लिखा हुआ पहले से मौजूद न होता तो जो तरीक़ा तुमने इख़्तियार किया उसके सबब तुम्हें सख़्त अज़ाब पहुंच जाता। पस जो माल तुमने लिया है उसे खाओ, तुम्हारे लिए हलाल और पाक है और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (67-69)

ऐ नबी! तुम्हारे हाथ में जो क़ैदी हैं उनसे कह दो कि अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में कोई भलाई पाएगा तो जो कुछ तुमसे लिया गया है उससे बेहतर वह तुम्हें देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और अगर ये तुमसे बदअहदी (वचन-भंग) करेंगे तो इससे पहले इन्होंने ख़ुदा से बदअहदी की तो ख़ुदा ने तुम्हें उन पर क़ाबू दे दिया और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (70-71)

जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में अपने जान व माल से जिहाद किया। और वे लोग जिन्होंने पनाह दी और मदद की, वे लोग एक-दूसरे के रफ़ीक़ हैं और जो लोग ईमान लाए मगर उन्होंने हिजरत नहीं की तो उनसे तुम्हारा रिफ़ाक़त का कोई तअल्लुक़ नहीं जब तक कि वे हिजरत करके न आ जाएं। और वे तुमसे दीन के मामले में मदद मांगे तो तुम पर उनकी मदद करना वाजिब (ज़रूरी) है, इल्ला यह कि मदद किसी ऐसी क़ौम के ख़िलाफ़ हो जिसके साथ तुम्हारा मुआहिदा

(संधि) है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। और जो लोग मुंकिर हैं वे एक-दूसरे के रफ़ीक़ (सहयोगी) हैं। अगर तुम ऐसा न करोगे तो ज़मीन में फ़ितना फैलेगा और बड़ा फ़साद होगा। (72-73)

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत (स्थान-परिवर्तन) की और अल्लाह की राह में जिहाद किया और जिन लोगों ने पनाह दी और मदद की, यही लोग सच्चे मोमिन हैं। इनके लिए बख़्शिश है और बेहतरीन रिज़्क़ है। और जो लोग बाद में ईमान लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया वे भी तुममें से हैं। और ख़ून के रिश्तेदार एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं अल्लाह की किताब में। बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (74-75)

सूरह-9. अत-तौबा

बरा-त (विरक्ति) का एलान है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से उन मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) को जिनसे तुमने मुआहिदे (संधि) किए थे। पस तुम लोग मुल्क में चार महीने चल-फिर लो और जान लो कि तुम अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते और यह कि अल्लाह मुंकिरों को रुसवा करने वाला है। ऐलान है अल्लाह और रसूल की तरफ़ से बड़े हज के दिन लोगों के लिए कि अल्लाह और उसका रसूल मुश्रिकों से बरीउज़्ज़िम्मा (ज़िम्मेदारी-मुक्त) हैं। अब अगर तुम लोग तौबा करो तो तुम्हारे हक़ में बेहतर है। और अगर तुम मुंह फेरोगे तो जान लो कि तुम अल्लाह को आजिज़ करने वाले नहीं हो। और इंकार करने वालों को सख़्त अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो। मगर जिन मुश्रिकों से तुमने मुआहिदा किया था फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की मदद की तो उनका मुआहिदा (संधि) उनकी मुद्दत तक पूरा करो। बेशक अल्लाह परहेज़गारों को पसंद करता है। (1-4)

फिर जब हुरमत (गरिमा) वाले महीने गुज़र जाएं तो मुश्रिकीन को क़त्ल करो जहां पाओ और उन्हें पकड़ो और उन्हें घेरो और बैठो हर जगह उनकी घात में। फिर अगर वे तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात

अदा करें तो उन्हें छोड़ दो। अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और अगर मुश्रिकीन में से कोई शख़्स तुमसे पनाह मांगे तो उसे पनाह दे दो ताकि वह अल्लाह का कलाम सुने फिर उसे उसके अमान (सुरक्षा) की जगह पहुंचा दो। यह इसलिए कि वे लोग इल्म नहीं रखते। (5-6)

इन मुश्रिकों के लिए अल्लाह और उसके रसूल के ज़िम्मे कोई अहद (वचन) कैसे रह सकता है, मगर जिन लोगों से तुमने अहद किया था मस्जिदे हराम के पास, पस जब तक वे तुमसे सीधे रहें तुम भी उनसे सीधे रहो, बेशक अल्लाह परहेज़गारों को पसंद करता है। कैसे अहद रहेगा जबकि यह हाल है कि अगर वे तुम्हारे ऊपर क़ाबू पाएं तो तुम्हारे बारे में न क़राबत (निकट के संबंधों) का लिहाज़ करें और न अहद का। वे तुम्हें अपने मुंह की बात से राज़ी करना चाहते हैं मगर उनके दिल इंकार करते हैं। और उनमें अक्सर बदअहद हैं। उन्होंने अल्लाह की आयतों को थोड़ी क़ीमत पर बेच दिया, फिर उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका। बहुत बुरा है जो वे कर रहे हैं। किसी मोमिन के मामले में वे न क़राबत का लिहाज़ करते हैं और न अहद का, यही लोग हैं ज़्यादती करने वाले। पस अगर वे तौबा करें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें तो वे तुम्हारे दीनी भाई हैं। और हम खोलकर बयान करते हैं आयतों को जानने वालों के लिए। (7-11)

और अगर अहद (वचन) के बाद ये अपनी क़समों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में ऐब लगाएं तो कुफ़्र के इन सरदारों से लड़ो। बेशक उनकी क़समें कुछ नहीं, ताकि वे बाज़ आएं। क्या तुम न लड़ोगे ऐसे लोगों से जिन्होंने अपने अहद तोड़ दिए और रसूल को निकालने की जसारत (दुस्साहस) की और वही हैं जिन्होंने तुमसे जंग में पहल की। क्या तुम उनसे डरोगे। अल्लाह ज़्यादा मुस्तहिक़ है कि तुम उससे डरो अगर तुम मोमिन हो। उनसे लड़ो। अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें सज़ा देगा और उन्हें रुसवा करेगा और तुम्हें उन पर ग़लबा देगा और मुसलमान लोगों के सीने को ठंडा करेगा और उनके दिल की जलन को दूर कर देगा और अल्लाह तौबा नसीब करेगा जिसे चाहेगा और अल्लाह जानने वाला है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (12-15)

क्या तुम्हारा यह गुमान है कि तुम छोड़ दिए जाओगे हालाँकि अभी अल्लाह ने तुममें से उन लोगों को जाना ही नहीं जिन्होंने जिहाद किया और जिन्होंने अल्लाह और रसूल और मोमिनीन के सिवा किसी को दोस्त नहीं बनाया और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (16)

मुश्रिकों का काम नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें हालाँकि वे ख़ुद अपने ऊपर कुफ़्र के गवाह हैं। उन लोगों के आमाल अकारत गए और वे हमेशा आग में रहने वाले हैं। अल्लाह की मस्जिदों को तो वह आबाद करता है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए और नमाज़ क़ायम करे और ज़कात अदा करे और अल्लाह के सिवा किसी से न डरे। ऐसे लोग उम्मीद है कि हिदायत पाने वालों में से बनें। क्या तुमने हाजियों के पानी पिलाने और मस्जिदे-हराम के बसाने को बराबर कर दिया उस शख़्स के जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान लाया और अल्लाह की राह में जिहाद किया, अल्लाह के नज़दीक ये दोनों बराबर नहीं हो सकते। और अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के रास्ते में अपने जान व माल से जिहाद किया, उनका दर्जा अल्लाह के यहां बड़ा है और यही लोग कामयाब हैं। उनका रब उन्हें ख़ुशख़बरी देता है अपनी रहमत और ख़ुशनूदी (प्रसन्नता) की और ऐसे बाग़ों की जिनमें उनके लिए दाइमी (हमेशा रहने वाली) नेमत होगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। बेशक अल्लाह ही के पास बड़ा अज्र (प्रतिफल) है। (17-22)

ऐ ईमान वालो! अपने बापों और अपने भाइयों को दोस्त न बनाओ अगर वे ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को अज़ीज़ रखें। और तुममें से जो उन्हें अपना दोस्त बनाएंगे तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं। कहो कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे लड़के और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियां और तुम्हारा ख़ानदान और वे माल जो तुमने कमाए हैं और वह तिजारत जिसके बंद होने से तुम डरते हो और वे घर जिन्हें तुम पसंद करते हो, ये सब तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में जिहाद करने से ज़्यादा महबूब हैं तो इंतज़ार

करो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म भेज दे और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को रास्ता नहीं देता। (23-24)

बेशक अल्लाह ने बहुत से मौक़ों पर तुम्हारी मदद की है और हुनैन के दिन भी जब तुम्हारी कसरत ने तुम्हें नाज़ में मुब्तिला कर दिया था। फिर वह तुम्हारे कुछ काम न आई। और ज़मीन अपनी वुस्अत के बावजूद तुम पर तंग हो गई, फिर तुम पीठ फेरकर भागे। इसके बाद अल्लाह ने अपने रसूल और मोमिनीन पर अपनी सकीनत (शांति) उतारी और ऐसे लश्कर उतारे जिन्हें तुमने नहीं देखा और अल्लाह ने मुंकिरों को सज़ा दी और यही मुंकिरों का बदला है। फिर इसके बाद अल्लाह जिसे चाहे तौबा नसीब कर दे और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। ऐ ईमान वालो, मुश्रिकीन बिल्कुल नापाक हैं। पस वे इस साल के बाद मस्जिदे हराम के पास न आएं और अगर तुम्हें मुफ़्लिसी का अंदेशा हो तो अल्लाह अगर चाहेगा तो अपने फ़ज़्ल से तुम्हें धनी कर देगा। अल्लाह अलीम (ज्ञानवान) व हकीम (तत्वदर्शी) है। (25-28)

उन अहले-किताब से लड़ो जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न आख़िरत के दिन पर और न अल्लाह और उसके रसूल के हराम ठहराए हुए को हराम ठहराते और न दीने-हक़ को अपना दीन बनाते यहां तक कि वे अपने हाथ से जिज़्या (जान-माल की हिफाज़त के बदले कर) दें और छोटे बनकर रहें। और यहूद ने कहा कि उज़ैर अल्लाह के बेटे हैं और नसारा (ईसाइयों) ने कहा कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं। ये उनके अपने मुंह की बातें हैं। वे उन लोगों की बात की नक़ल कर रहे हैं जिन्होंने इनसे पहले कुफ़्र किया। अल्लाह इन्हें हलाक करे, वे किधर बहके जा रहे हैं। उन्होंने अल्लाह के सिवा अपने उलमा (विद्वानों) और मशाइख़ (धर्मगुरुओं) को रब बना डाला और मसीह इब्ने-मरयम को भी। हालाँकि उन्हें सिर्फ़ यह हुक्म था कि वे एक माबूद (पूज्य) की इबादत करें। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह पाक है इससे जो वे शरीक करते हैं। (29-31)

वे चाहते हैं कि अल्लाह की रोशनी को अपने मुंह से बुझा दें और

अल्लाह अपनी रोशनी को पूरा किए बग़ैर मानने वाला नहीं, चाहे मुंकिरों को यह कितना ही नागवार हो। उसी ने अपने रसूल को भेजा है हिदायत और दीने-हक़ के साथ ताकि उसे सारे दीन पर ग़ालिब कर दे चाहे यह मुश्रिकों को कितना ही नागवार हो। (32-33)

ऐ ईमान वालो, अहले-किताब के अक्सर उलमा (विद्वान) व मशाइख़ (धर्मगुरु) लोगों के माल बातिल (अवैध) तरीक़ों से खाते हैं और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और जो लोग सोना और चांदी जमा करके रखते हैं और उन्हें अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें एक दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो। उस दिन इस माल पर दोज़ख़ की आग दहकाई जाएगी। फिर उससे उनकी पेशानियां और उनके पहलू और उनकी पीठें दाग़ी जाएंगी। यही है वह जिसे तुमने अपने वास्ते जमा किया था। पस अब चखो जो तुम जमा करते रहे। (34-35)

महीनों की गिनती अल्लाह के नज़दीक बारह महीने हैं अल्लाह की किताब में जिस दिन से उसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, इनमें से चार हुरमत (गरिमा) वाले हैं। यही है सीधा दीन। पस उनमें तुम अपने ऊपर ज़ुल्म न करो। और मुश्रिकों से सब मिलकर लड़ो जिस तरह वे सब मिलकर तुमसे लड़ते हैं और जान लो कि अल्लाह मुत्तक़ियों (ईश परायण लोगों) के साथ है। महीनों का हटा देना कुफ़्र में एक इज़ाफ़ा है। इससे कुफ़्र करने वाले गुमराही में पड़ते हैं। वे किसी साल हराम महीने को हलाल कर लेते हैं और किसी साल उसे हराम कर देते हैं ताकि ख़ुदा के हराम किए हुए की गिनती पूरी करके उसके हराम किए हुए को हलाल कर लें। उनके बुरे आमाल उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिए गए हैं। और अल्लाह इंकार करने वालों को रास्ता नहीं दिखाता। (36-37)

ऐ ईमान वालो, तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि अल्लाह की राह में निकलो तो तुम ज़मीन से लगे जाते हो। क्या तुम आख़िरत (परलोक) के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िंदगी पर राज़ी हो गए। आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िंदगी का सामान तो बहुत थोड़ा है। अगर तुम न

निकलोगे तो ख़ुदा तुम्हें दर्दनाक सज़ा देगा और तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम ले आएगा और तुम ख़ुदा का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे। और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है। अगर तुम रसूल की मदद न करोगे तो अल्लाह ख़ुद उसकी मदद कर चुका है जबकि मुंकिरों उसे निकाल दिया था, वह सिर्फ़ दो में का दूसरा था। जब वे दोनों ग़ार में थे। जब वह अपने साथी से कह रहा था कि ग़म न करो, अल्लाह हमारे साथ है। पस अल्लाह ने उस पर अपनी सकीनत (शांति) नाज़िल फ़रमाई और उसकी मदद ऐसे लश्करों से की जो तुम्हें नज़र न आते थे और अल्लाह ने मुंकिरों की बात नीची कर दी और अल्लाह ही की बात तो ऊंची है और अल्लाह ज़बरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (38-40)

हल्के और बोझल और अपने माल और अपनी जान से अल्लाह की राह में जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। अगर नफ़ा क़रीब होता और सफ़र हल्का होता तो वे ज़रूर तुम्हारे पीछे हो लेते मगर यह मंज़िल उन पर कठिन हो गई। अब वे क़समें खाएंगे कि अगर हमसे हो सकता तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ चलते। वे अपने आपको हलाकत में डाल रहे हैं। और अल्लाह जानता है कि ये लोग यक़ीनन झूठे हैं। (41-42)

अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, तुमने क्यों उन्हें इजाज़त दे दी। यहां तक कि तुम पर खुल जाता कि कौन लोग सच्चे हैं और झूठों को भी तुम जान लेते। जो लोग अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं वे कभी तुमसे यह दरख़्वास्त न करेंगे कि वे अपने माल और अपनी जान से जिहाद न करें और अल्लाह डरने वालों को ख़ूब जानता है। तुमसे इजाज़त तो वही लोग मांगते हैं जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल शक में पड़े हुए हैं। पस वे अपने शक में भटक रहे हैं। और अगर वे निकलना चाहते तो ज़रूर वे इसका कुछ सामान कर लेते। मगर अल्लाह ने उनका उठना पसंद न किया इसलिए उन्हें जमा रहने दिया और कह दिया गया कि बैठने वालों के साथ बैठे रहो। (43-46)

अगर ये लोग तुम्हारे साथ निकलते तो वे तुम्हारे लिए ख़राबी ही बढ़ाने का सबब बनते और वे तुम्हारे दर्मियान फ़ितनापरदाज़ी (उपद्रव) के लिए

दौड़-धूप करते और तुममें उनकी सुनने वाले हैं और अल्लाह ज़ालिमों से ख़ूब वाक़िफ़ है। ये पहले भी फ़ितने (उपद्रव) की कोशिश कर चुके हैं और वे तुम्हारे लिए कामों का उलटफेर करते रहे हैं। यहां तक कि हक़ आ गया और अल्लाह का हुक्म ज़ाहिर हो गया और वे नाख़ुश ही रहे। (47-48)

और उनमें वे भी हैं जो कहते हैं कि मुझे रुख़सती दे दीजिए और मुझे फ़ितने में न डालिए। सुन लो, वे तो फ़ितने में पड़ चुके। और बेशक जहन्नम मुंकिरों को घेरे हुए है। अगर तुम्हें कोई अच्छाई पेश आती है तो उन्हें दुख होता है और अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचती है तो कहते हैं हमने पहले ही अपना बचाव कर लिया था और वे ख़ुश होकर लौटते हैं। कहो, हमें सिर्फ़ वही चीज़ पहुंचेगी जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दी है। वह हमारा कारसाज़ (कार्यसाधक) है और अहले-ईमान को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। कहो तुम हमारे लिए सिर्फ़ दो भलाइयों में से एक भलाई के मुंतज़िर हो। मगर हम तुम्हारे हक़ में इसके मुंतज़िर हैं कि अल्लाह तुम पर अज़ाब भेजे अपनी तरफ़ से या हमारे हाथों से। पस तुम इंतज़ार करो हम भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करने वालों में हैं। (49-52)

कहो तुम ख़ुशी से ख़र्च करो या नाख़ुशी से, तुमसे हरगिज़ न क़ुबूल किया जाएगा। बेशक तुम नाफ़रमान लोग हो। और वे अपने ख़र्च की क़ुबूलियत से सिर्फ़ इसलिए महरूम हुए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इंकार किया और ये लोग नमाज़ के लिए आते हैं तो गरानी (बेदिली) के साथ आते हैं और ख़र्च करते हैं तो नागवारी के साथ। तुम उनके माल और औलाद को कुछ वक़अत (महत्व) न दो। अल्लाह तो यह चाहता है कि उनके ज़रिए से उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में अज़ाब दे और उनकी जानें इस हालत में निकलें कि वे मुंकिर हों। वे ख़ुदा की क़सम खाकर कहते हैं कि वे तुममें से हैं हालाँकि वे तुममें से नहीं। बल्कि वे ऐसे लोग हैं जो तुमसे डरते हैं। अगर वे कोई पनाह की जगह पाएं या कोई खोह या घुस बैठने की जगह तो वे भागकर उसमें जा छुपें। (53-57)

और उनमें ऐसे भी हैं जो तुम पर सदक़ात के बारे में ऐब लगाते हैं।

अगर उसमें से उन्हें दे दिया जाए तो राज़ी रहते हैं और अगर न दिया जाए तो नाराज़ हो जाते हैं। क्या अच्छा होता कि अल्लाह और रसूल ने जो कुछ उन्हें दिया था उस पर वे राज़ी रहते और कहते कि अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है। अल्लाह अपने फ़ज़्ल से हमें और भी देगा और उसका रसूल भी, हमें तो अल्लाह ही चाहिए। सदक़ात (ज़कात) तो दरअस्ल फ़क़ीरों और मिस्कीनों के लिए हैं और उन कारकुनों के लिए जो सदक़ात के काम पर मुक़र्रर हैं। और उनके लिए जिनकी तालीफ़े क़ल्ब (दिल भराई) मत्लूब है। और गर्दनों के छुड़ाने में और जो तावान भरें और अल्लाह के रास्ते में और मुसाफ़िर की इम्दाद में। यह एक फ़रीज़ा है अल्लाह की तरफ़ से और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (58-60)

और उनमें वे लोग भी हैं जो नबी को दुख देते हैं और कहते हैं कि यह शख़्स तो कान है। कहो कि वह तुम्हारी भलाई के लिए कान है। वह अल्लाह पर ईमान रखता है और अहले-ईमान पर एतमाद करता है और वह रहमत है उनके लिए जो तुममें अहले-ईमान हैं। और जो लोग अल्लाह के रसूल को दुख देते हैं उनके लिए दर्दनाक सज़ा है। वे तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाते हैं ताकि तुम्हें राज़ी करें। हालाँकि अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा हक़दार हैं कि वे उसे राज़ी करें अगर वे मोमिन हैं। क्या उन्हें मालूम नहीं कि जो अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त (विरोध) करे उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वह हमेशा रहेगा। यह बहुत बड़ी रुस्वाई है। (61-63)

मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) डरते हैं कि कहीं मुसलमानों पर ऐसी सूरह नाज़िल न हो जाए जो उन्हें उनके दिलों के भेदों से आगाह कर दे। कहो कि तुम मज़ाक़ उड़ा लो, अल्लाह यक़ीनन उसे ज़ाहिर कर देगा जिससे तुम डरते हो। और अगर तुम उनसे पूछो तो वे कहेंगे कि हम तो हंसी और दिल्लगी कर रहे थे। कहो, क्या तुम अल्लाह से और उसकी आयतों से और उसके रसूल से हंसी-दिल्लगी कर रहे थे। बहाने मत बनाओ, तुमने ईमान लाने के बाद कुफ़्र किया है। अगर हम तुममें से एक गिरोह को माफ़ कर दें तो दूसरे गिरोह को तो ज़रूर सज़ा देंगे क्योंकि वे मुजरिम हैं। (64-66)

मुनाफ़िक़ (पाखंडी) मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें सब एक ही तरह के हैं। वे बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से मना करते हैं। और अपने हाथों को बंद रखते हैं। उन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने भी उन्हें भुला दिया। बेशक मुनाफ़िक़ीन बहुत नाफ़रमान हैं। मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुंकिरों से अल्लाह ने जहन्नम की आग का वादा कर रखा है जिसमें वे हमेशा रहेंगे। यही उनके लिए बस है। उन पर अल्लाह की लानत है और उनके लिए क़ायम रहने वाला अज़ाब है। जिस तरह तुमसे अगले लोग, वे तुमसे ज़ोर में ज़्यादा थे और माल व औलाद की कसरत में तुमसे बढ़े हुए थे तो उन्होंने अपने हिस्से से फ़ायदा उठाया और तुमने भी अपने हिस्से से फ़ायदा उठाया, जैसा कि तुम्हारे अगलों ने अपने हिस्से से फ़ायदा उठाया था। और तुमने भी वही बहसें कीं जैसी बहसें उन्होंने की थीं। यही वे लोग हैं जिनके आमाल दुनिया व आख़िरत में ज़ाया हो गए और यही लोग घाटे में पड़ने वाले हैं। क्या उन्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जो इनसे पहले गुज़रे। क़ौमे-नूह और आद और समूद और क़ौमे-इब्राहीम और असहाबे मदयन और उल्टी हुई बस्तियों की। उनके पास उनके रसूल दलीलों के साथ आए। तो ऐसा न था कि अल्लाह उन पर ज़ुल्म करता मगर वे ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते रहे। (67-70)

और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक-दूसरे के मददगार हैं। वे भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करते हैं। यही लोग हैं जिन पर अल्लाह रहम करेगा। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से अल्लाह का वादा है बाग़ों का कि उनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। और वादा है, सुथरे मकानों का हमेशगी के बाग़ों में, और अल्लाह की रिज़ामंदी जो सबसे बढ़कर है। यही बड़ी कामयाबी है। (71-72)

ऐ नबी! मुंकिरों (सत्य का इंकार करने वालों) और मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) से जिहाद करो और उन पर कड़े बन जाओ। और उनका ठिकाना जहन्नम है

और वह बहुत बुरा ठिकाना है। वे ख़ुदा की क़सम खाते हैं कि उन्होंने नहीं कहा। हालाँकि उन्होंने कुफ़्र की बात कही और वे इस्लाम के बाद मुंकिर हो गए और उन्होंने वह चाहा जो उन्हें हासिल न हो सका। और यह सिर्फ़ इसका बदला था कि उन्हें अल्लाह और रसूल ने अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया। अगर वे तौबा करें तो उनके हक़ में बेहतर है और अगर वे ऐराज़ (उपेक्षा) करें तो ख़ुदा उन्हें दर्दनाक अज़ाब देगा दुनिया में भी और आख़िरत में भी। और ज़मीन में उनका न कोई हिमायती होगा और न मददगार। (73-74)

और उनमें वे भी हैं जिन्होंने अल्लाह से अहद किया कि अगर उसने हमें अपने फ़ज़्ल से अता किया तो हम ज़रूर सदक़ा करेंगे और हम सालेह (नेक) बनकर रहेंगे। फिर जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अता किया तो वे बुख़्ल करने लगे और बेपरवाह होकर मुंह फेर लिया। पस अल्लाह ने उनके दिलों में निफ़ाक़ (पाखंड) बिठा दिया उस दिन तक के लिए जबकि वे उससे मिलेंगे इस सबब से कि उन्होंने अल्लाह के किए हुए वादे की ख़िलाफ़वर्ज़ी की और इस सबब से कि वे झूठ बोलते रहे। क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह उनके राज़ और उनकी सरगोशी (गुप्त वार्ता) को जानता है और अल्लाह तमाम छुपी हुई बातों को जानने वाला है। वे लोग जो तअन (कटाक्ष) करते हैं उन मुसलमानों पर जो दिल खोलकर सदक़ात देते हैं और जो सिर्फ़ अपनी मेहनत मज़दूरी में से देते हैं उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं। अल्लाह इन मज़ाक़ उड़ाने वालों का मज़ाक़ उड़ाता है और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। तुम उनके लिए माफ़ी की दरख़्वास्त करो या न करो, अगर तुम सत्तर मर्तबा उन्हें माफ़ करने की दरख़्वास्त करोगे तो अल्लाह उन्हें माफ़ करने वाला नहीं। यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और रसूल का इंकार किया और अल्लाह नाफ़रमानों को राह नहीं दिखाता। (75-80)

पीछे रह जाने वाले अल्लाह के रसूल से पीछे बैठे रहने पर बहुत ख़ुश हुए और उन्हें गिरां (भारी) गुज़रा कि वे अपने माल और जान से अल्लाह की राह में जिहाद करें। और उन्होंने कहा कि गर्मी में न निकलो। कह दो कि दोज़ख़ की आग इससे ज़्यादा गर्म है, काश! उन्हें समझ होती। पस वे हंसें

कम और रोएं ज़्यादा, इसके बदले में जो वे करते थे। पस अगर अल्लाह तुम्हें उनमें से किसी गिरोह की तरफ़ वापस लाए और वे तुमसे जिहाद के लिए निकलने की इजाज़त मांगें तो कह देना कि तुम मेरे साथ कभी नहीं चलोगे और न मेरे साथ होकर किसी दुश्मन से लड़ोगे। तुमने पहली बार भी बैठे रहने को पसंद किया था पस पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो। और उनमें से जो कोई मर जाए उस पर तुम कभी नमाज़ न पढ़ो और न उसकी क़ब्र पर खड़े हो। बेशक उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इंकार किया और वे इस हाल में मरे कि वे नाफ़रमान थे। (81-84)

और उनके माल और उनकी औलाद तुम्हें तअज्जुब में न डालें। अल्लाह तो बस यह चाहता है कि इनके ज़रिए से उन्हें दुनिया में अज़ाब दे और उनकी जानें इस हाल में निकलें कि वे मुंकिर हों। और जब कोई सूरह उतरती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के साथ जिहाद करो तो उनके मक़दूर वाले (सामर्थ्यवान) तुमसे रुख़्सती मांगने लगते हैं और कहते हैं कि हमें छोड़ दीजिए कि हम यहां ठहरने वालों के साथ रह जाएं। उन्होंने इसको पसंद किया कि पीछे रहने वाली औरतों के साथ रह जाएं। और उनके दिलों पर मुहर कर दी गई पस वे कुछ नहीं समझते। लेकिन रसूल और जो लोग उसके साथ ईमान लाए हैं उन्होंने अपने माल और जान से जिहाद किया और उन्हीं के लिए हैं ख़ूबियां और वही फ़लाह (कल्याण) पाने वाले हैं। उनके लिए अल्लाह ने ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं। उनमें वे हमेशा रहेंगे। यही बड़ी कामयाबी है। (85-89)

देहाती अरबों में से भी बहाना करने वाले आए कि उन्हें इजाज़त मिल जाए और जो अल्लाह और उसके रसूल से झूठ बोले वह बैठा रहे। उनमें से जिन्होंने इंकार किया उन्हें एक दर्दनाक अज़ाब पकड़ेगा। कोई गुनाह कमज़ोरों पर नहीं है और न बीमारों पर और न उन पर जो ख़र्च करने को कुछ नहीं पाते जबकि वे अल्लाह और उसके रसूल के साथ ख़ैरख़्वाही करें। नेककारों पर कोई इल्ज़ाम नहीं और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और न उन लोगों पर कोई इल्ज़ाम है कि जब तुम्हारे पास आए कि तुम उन्हें सवारी दो।

तुमने कहा कि मेरे पास कोई चीज़ नहीं कि तुम्हें उस पर सवार कर दूं तो वे इस हाल में वापस हुए कि उनकी आंखों से आंसू जारी थे इस ग़म में कि उन्हें कुछ मयस्सर नहीं जो वे ख़र्च करें। इल्ज़ाम तो बस उन लोगों पर है जो तुमसे इजाज़त मांगते हैं हालाँकि वे मालदार हैं। वे इस पर राज़ी हो गए कि पीछे रहने वाली औरतों के साथ रह जाएं और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर कर दी, पस वे नहीं जानते। (90-93)

तुम जब उनकी तरफ़ पलटोगे तो वे तुम्हारे सामने उज़्र (विवशताएं) पेश करेंगे। कह दो कि बहाने न बनाओ। हम हरगिज़ तुम्हारी बात न मानेंगे। बेशक अल्लाह ने हमें तुम्हारे हालात बता दिए हैं। अब अल्लाह और रसूल तुम्हारे अमल को देखेंगे। फिर तुम उसकी तरफ़ लौटाए जाओगे जो खुले और छुपे का जानने वाला है, वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे। ये लोग तुम्हारी वापसी पर तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाएंगे ताकि तुम उनसे दरगुज़र करो। पस तुम उनसे दरगुज़र करो बेशक वे नापाक हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है बदले में उसके जो वे करते रहे। वे तुम्हारे सामने क़समें खाएंगे कि तुम उनसे राज़ी हो जाओ। अगर तुम उनसे राज़ी भी हो जाओ तो अल्लाह नाफ़रमान लोगों से राज़ी होने वाला नहीं। (94-96)

देहात वाले कुफ़्र व निफ़ाक़ में ज़्यादा सख़्त हैं और इसी लायक़ हैं कि अल्लाह ने अपने रसूल पर जो कुछ उतारा है उसके हुदूद से बेख़बर रहें। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला हिक्मत वाला है। और देहातियों में ऐसे भी हैं जो ख़ुदा की राह में ख़र्च को एक तावान (जुर्माना) समझते हैं और तुम्हारे लिए ज़माने की गर्दिशों के मुंतज़िर हैं। बुरी गर्दिश ख़ुद उन्हीं पर है और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। और देहातियों में वे भी हैं जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ ख़र्च करते हैं उसे अल्लाह के यहां क़ुर्ब (समीपता) का और रसूल के लिए दुआएं लेने का ज़रिया बनाते हैं। हां बेशक वह उनके लिए क़ुर्ब का ज़रिया है। अल्लाह उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा। यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (97-99)

और मुहाजिरीन व अंसार में जो लोग साबिक़ और मुक़द्दम हैं और

जिन्होंने ख़ूबी के साथ उनकी पैरवी की, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे उससे राज़ी हुए। और अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। वे उनमें हमेशा रहेंगे। यही है बड़ी कामयाबी। और तुम्हारे गिर्द व पेश जो देहाती हैं उनमें मुनाफ़िक़ (पाखंडी) हैं और मदीना वालों में भी मुनाफ़िक़ हैं। वे निफ़ाक़ (पाखंड) पर जम गए हैं। तुम उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं। हम उन्हें दोहरा अज़ाब देंगे। फिर वे एक अज़ाबे अज़ीम (महा-यातना) की तरफ़ भेजे जाएंगे। (100-101)

कुछ और लोग हैं जिन्होंने अपने क़ुसूरों का एतराफ़ कर लिया है। उन्होंने मिले-जुले अमल किए थे, कुछ भले और कुछ बुरे। उम्मीद है कि अल्लाह उन पर तवज्जोह करे। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। तुम उनके मालों में से सदक़ा लो, इससे तुम उन्हें पाक करोगे और उनका तज़्किया (पवित्रीकरण) करोगे। और तुम उनके लिए दुआ करो। बेशक तुम्हारी दुआ उनके लिए तस्कीन (शांति) का ज़रिया होगी। अल्लाह सब कुछ सुनने वाला जानने वाला है। क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह ही अपने बंदों की तौबा क़ुबूल करता है। और वही सदक़ों को क़ुबूल करता है। और अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला महरबान है। कहो कि अमल करो, अल्लाह और उसका रसूल और अहले-ईमान तुम्हारे अमल को देखेंगे और तुम जल्द उसके पास लौटाए जाओगे जो तमाम खुले और छुपे को जानता है। वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे। कुछ दूसरे लोग हैं जिनका मामला अभी ख़ुदा का हुक्म आने तक ठहरा हुआ है, या वह उन्हें सज़ा देगा या उनकी तौबा क़ुबूल करेगा, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (102-106)

और उनमें ऐसे भी हैं जिन्होंने एक मस्जिद बनाई नुक़सान पहुंचाने के लिए और कुफ़्र के लिए और अहले-ईमान में फूट डालने के लिए और इसलिए ताकि कमीनगाह (शरण-स्थल) फ़राहम करें उस शख़्स के लिए जो पहले से अल्लाह और उसके रसूल से लड़ रहा है। और ये लोग क़समें खाएंगे कि हमने तो सिर्फ़ भलाई चाही थी और अल्लाह गवाह है कि वे झूठे हैं। तुम उस इमारत में कभी खड़े न होना। अलबत्ता जिस मस्जिद की बुनियाद अव्वल

दिन से तक़वे (ईश-परायणता) पर पड़ी है वह इस लायक़ है कि तुम उसमें खड़े हो। उसमें ऐसे लोग हैं जो पाक रहने को पसंद करते हैं और अल्लाह पाक रहने वालों को पसंद करता है। क्या वह शख़्स बेहतर है जिसने अपनी इमारत की बुनियाद ख़ुदा से डर पर और ख़ुदा की .ख़ुशनूदी पर रखी या वह शख़्स बेहतर है जिसने अपनी इमारत की बुनियाद एक खाई के किनारे पर रखी जो गिरने को है। फिर वह इमारत उसे लेकर जहन्नम की आग में गिर पड़ी। और अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। और यह इमारत जो उन्होंने बनाई हमेशा उनके दिलों में शक की बुनियाद बनी रहेगी सिवाए इसके कि उनके दिल ही टुकड़े हो जाएं। और अल्लाह अलीम (ज्ञानवान) व हकीम (तत्वदर्शी) है। (107-110)

बिलाशुबह अल्लाह ने मोमिनों से उनके जान और उनके माल को ख़रीद लिया है जन्नत के बदले। वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं। फिर मारते हैं और मारे जाते हैं। यह अल्लाह के ज़िम्मे एक सच्चा वादा है, तौरात में और इंजील में और क़ुरआन में। और अल्लाह से बढ़कर अपने वादे को पूरा करने वाला कौन है। पस तुम ख़ुशियां करो उस मामले पर जो तुमने अल्लाह से किया है। और यही है सबसे बड़ी कामयाबी। वे तौबा करने वाले हैं। इबादत करने वाले हैं। हम्द (ईश-प्रशंसा) करने वाले हैं। ख़ुदा की राह में फिरने वाले हैं। रुकूअ करने वाले हैं। सज्दा करने वाले हैं। भलाई का हुक्म देने वाले है। बुराई से रोकने वाले हैं। अल्लाह की हदों का ख़्याल रखने वाले हैं। और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे दो। (111-112)

नबी को और उन लोगों को जो ईमान लाए हैं रवा नहीं कि मुश्रिकों के लिए मग़्फ़िरत (क्षमा) की दुआ करें, चाहे वे उनके रिश्तेदार ही हों जबकि उन पर खुल चुका कि ये जहन्नम में जाने वाले लोग हैं। और इब्राहीम का अपने बाप के लिए मग़्फ़िरत की दुआ मांगना सिर्फ़ इस वादे के सबब से था जो उसने उससे कर लिया था। फिर जब उस पर खुल गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उससे बेतअल्लुक़ हो गया। बेशक इब्राहीम बड़ा नर्मदिल और बुर्दबार (उदार) था। और अल्लाह किसी क़ौम को, उसे हिदायत देने के

बाद गुमराह नहीं करता जब तक उन्हें साफ़-साफ़ वे चीज़ें बता न दे जिनसे उन्हें बचना है, बेशक अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखता है। अल्लाह ही की सल्तनत है आसमानों में और ज़मीन में, वह जिलाता है और वही मारता है। और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई दोस्त है और न मददगार। (113-116)

अल्लाह ने नबी पर और मुहाजिरीन व अन्सार पर तवज्जोह फ़रमाई जिन्होंने तंगी के वक़्त मे नबी का साथ दिया, बाद इसके कि उनमें से कुछ लोगों के दिल कजी की तरफ़ मायल हो चुके थे। फिर अल्लाह ने उन पर तवज्जोह फ़रमाई। बेशक अल्लाह उन पर महरबान है रहम करने वाला है। और उन तीनों पर भी उसने तवज्जोह फ़रमाई जिनका मामला उठा रखा गया था। यहां तक कि जब ज़मीन अपनी वुस्अत के बावजूद उन पर तंग हो गई और वे ख़ुद अपनी जानों से तंग आ गए और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से बचने के लिए ख़ुद अल्लाह के सिवा कोई जाएपनाह (शरण-स्थल) नहीं। फिर अल्लाह उनकी तरफ़ पलटा ताकि वे उसकी तरफ़ पलट आएं। बेशक अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला रहम करने वाला है। (117-118)

ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ रहो। मदीना वालों और अतराफ़ (आसपास) के देहातियों के लिए ज़ेबा न था कि वे अल्लाह के रसूल को छोड़कर पीछे बैठे रहें और न यह कि अपनी जान को उसकी जान से अज़ीज़ रखें। यह इसलिए कि जो प्यास और थकान और भूख भी उन्हें ख़ुदा की राह में लाहिक़ होती है और जो क़दम भी वे मुंकिरों को रंज पहुंचाने वाला उठाते हैं और जो चीज़ भी वे दुश्मन से छीनते हैं इनके बदले में उनके लिए एक नेकी लिख दी जाती है। अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र (प्रतिफल) ज़ाया नहीं करता। और जो छोटा या बड़ा ख़र्च उन्होंने किया और जो मैदान उन्होंने तै किए वे सब उनके लिए लिखा गया ताकि अल्लाह उनके अमल का अच्छे से अच्छा बदला दे। (119-121)

और यह मुमकिन न था कि अहले-ईमान सबके सब निकल खड़े हों। तो ऐसा क्यों न हुआ कि उनके हर गिरोह में से एक हिस्सा निकल कर आता

ताकि वह दीन में समझ पैदा करता और वापस जाकर अपनी क़ौम के लोगों को आगाह (दीक्षित) करता ताकि वे भी परहेज़ करने वाले बनते। (122)

ऐ ईमान वालो, उन मुंकिरों से जंग करो जो तुम्हारे आसपास हैं और चाहिए कि वे तुम्हारे अंदर सख़्ती पाएं और जान लो कि अल्लाह डरने वालों के साथ है। और जब कोई सूरह उतरती है तो उनमें से कुछ कहते हैं कि इसने तुममें से किस का ईमान ज़्यादा कर दिया। पस जो ईमान वाले हैं उनका इसने ईमान ज़्यादा कर दिया और वे ख़ुश हो रहे हैं। और जिन लोगों के दिलों में रोग है तो उसने बढ़ा दी उनकी गंदगी पर गंदगी। और वे मरने तक मुंकिर ही रहे। क्या ये लोग देखते नहीं कि वे हर साल एक बार या दो बार आज़माइश में डाले जाते हैं, फिर भी न तौबा करते हैं और न सबक़ हासिल करते हैं। और जब कोई सूरह उतारी जाती है तो ये लोग एक-दूसरे को देखते हैं कि कोई देखता तो नहीं, फिर चल देते हैं। अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया इस वजह से कि ये समझ से काम लेने वाले लोग नहीं हैं। (123-127)

तुम्हारे पास एक रसूल आया है जो ख़ुद तुममें से है। तुम्हारा नुक़सान में पड़ना उस पर शाक़ (असह्य) है। वह तुम्हारी भलाई का हरीस (लालसा रखने वाला) है। ईमान वालों पर निहायत शफ़ीक़ (करुणामय) और महरबान है। फिर भी अगर वे मुंह फेरें तो कह दो कि अल्लाह मेरे लिए काफ़ी है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसी पर मैंने भरोसा किया। और वही मालिक है अर्शे-अज़ीम का। (128-129)

सूरह-10. यूनुस

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़० लाम० रा०। ये पुरहिक्मत (तत्वदर्शितामय) किताब की आयतें हैं। क्यों लोगों को इस पर हैरत है कि हमने उन्हीं में से एक शख़्स पर 'वही' (प्रकाशना) की कि लोगों को डराओ और जो ईमान लाएं उन्हें ख़ुशख़बरी सुना दो कि उनके लिए उनके रब के पास सच्चा मर्तबा है। मुंकिरों ने कहा कि यह शख़्स तो खुला जादूगर है। (1-2)

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों (चरणों) में पैदा किया, फिर वह अर्श पर क़ायम हुआ। वही मामलात का इंतज़ाम करता है। उसकी इजाज़त के बग़ैर कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं। यही अल्लाह तुम्हारा रब है पस तुम उसी की इबादत करो, क्या तुम सोचते नहीं। उसी की तरफ़ तुम सबको लौटकर जाना है, यह अल्लाह का पक्का वादा है। बेशक वह पैदाइश की इब्तिदा करता है, फिर वह दुबारा पैदा करेगा ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उन्हें इंसाफ़ के साथ बदला दे। और जिन्होंने इंकार किया उनके इंकार के बदले उनके लिए खौलता पानी और दर्दनाक अज़ाब है। (3-4)

अल्लाह ही है जिसने सूरज को चमकता बनाया और चांद को रोशनी दी और उसकी मंज़िलें मुक़र्रर कर दीं ताकि तुम वर्षों का शुमार और हिसाब मालूम करो। अल्लाह ने ये सब कुछ बेमक़सद नहीं बनाया है। वह निशानियां खोलकर बयान करता है उनके लिए जो समझ रखते हैं। यक़ीनन रात और दिन के उलटफेर में और अल्लाह ने जो कुछ आसमानों और ज़मीन में पैदा किया है उनमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो डरते हैं। (5-6)

बेशक जो लोग हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते और दुनिया की ज़िंदगी पर राज़ी और मुतमइन हैं और जो हमारी निशानियों से बेपरवाह हैं, उनका ठिकाना जहन्नम होगा इस सबब से कि जो वे करते थे। बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, अल्लाह उनके ईमान की बदौलत उन्हें पहुंचा देगा। उनके नीचे नहरें बहती होंगी नेमत के बाग़ों में। उसमें उनका क़ौल होगा कि ऐ अल्लाह! तू पाक है। और मुलाक़ात उनकी सलाम होगी। और उनकी आख़िरी बात यह होगी कि सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का। (7-10)

अगर अल्लाह लोगों के लिए अज़ाब उसी तरह जल्दी पहुंचा दे जिस तरह वह उनके साथ रहमत में जल्दी करता है तो उनकी मुद्दत ख़त्म कर दी गई होती। लेकिन हम उन लोगों को जो हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते उनकी सरकशी में भटकने के लिए छोड़ देते हैं। और इंसान को जब कोई

तकलीफ़ पहुंचती है तो वह खड़े और बैठे और लेटे हमें पुकारता है। फिर जब हम उससे उसकी तकलीफ़ को दूर कर देते हैं तो वह ऐसा हो जाता है गोया उसने कभी अपने किसी बुरे वक़्त पर हमें पुकारा ही न था। इस तरह हद से गुज़र जाने वालों के लिए उनके आमाल ख़ुशनुमा बना दिए गए हैं। (11-12)

और हमने तुमसे पहले क़ौमों को हलाक किया जबकि उन्होंने ज़ुल्म किया। और उनके पैग़म्बर उनके पास खुली दलीलों के साथ आए और वे ईमान लाने वाले न बने। हम ऐसा ही बदला देते हैं मुजरिम लोगों को। फिर हमने उनके बाद तुम्हें मुल्क में जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया ताकि हम देखें कि तुम कैसा अमल करते हो। (13-14)

और जब उन्हें हमारी खुली हुई आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो जिन लोगों को हमारे पास आने का खटका नहीं है वे कहते हैं कि इसके सिवा कोई और क़ुरआन लाओ या इसको बदल दो। कहो कि मेरा यह काम नहीं कि मैं अपने जी से इसको बदल दूं। मैं तो सिर्फ़ उस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) की पैरवी करता हूं जो मेरे पास आती है। अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूं तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूं। कहो कि अगर अल्लाह चाहता तो मैं इसको तुम्हें न सुनाता और न अल्लाह इससे तुम्हें बाख़बर करता। मैं इससे पहले तुम्हारे दर्मियान एक उम्र बसर कर चुका हूं, फिर क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते, उससे बढ़कर ज़ालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बोहतान बांधे या उसकी निशानियों को झुठलाए। यक़ीनन मुजरिमों को फ़लाह हासिल नहीं होती। (15-17)

और वे अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो उन्हें न नुक़सान पहुंचा सकें और न नफ़ा पहुंचा सकें। और वे कहते हैं कि ये अल्लाह के यहां हमारे सिफ़ारिशी हैं। कहो, क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ की ख़बर देते हो जो उसे आसमानों और ज़मीन में मालूम नहीं। वह पाक और बरतर है उससे जिसे वे शरीक करते हैं। और लोग एक ही उम्मत थे। फिर उन्होंने इख़्तेलाफ़ किया। और अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से एक बात पहले से न

ठहर चुकी होती तो उनके दर्मियान उस अम्र (मामले) का फ़ैसला कर दिया जाता जिसमें वे इख़्तेलाफ़ कर रहे हैं। (18-19)

और वे कहते हैं कि नबी पर उसके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई, कहो कि ग़ैब की ख़बर तो अल्लाह ही को है। तुम लोग इंतज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करने वालों में से हूं। और जब कोई तकलीफ़ पड़ने के बाद हम लोगों को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं तो वे फ़ौरन हमारी निशानियों के मामले में हीले बनाने लगते हैं। कहो कि ख़ुदा अपने हीलों में उनसे भी ज़्यादा तेज़ है। यक़ीनन हमारे फ़रिश्ते तुम्हारी हीलाबाज़ियों को लिख रहे हैं। (20-21)

वह अल्लाह ही है जो तुम्हें ख़ुश्की और तरी में चलाता है। चुनांचे जब तुम कश्ती में होते हो और कश्तियां लोगों को लेकर मुवाफ़िक़ हवा से चल रही होती हैं और लोग उससे ख़ुश होते हैं कि यकायक तुंद हवा आती है और उन पर हर जानिब से मौजें उठने लगती हैं और वे गुमान कर लेते हैं कि हम घिर गए। उस वक़्त वे अपने दीन को अल्लाह ही के लिए ख़ालिस करके उसे पुकारने लगते हैं कि अगर तूने हमें इससे नजात दे दी तो यक़ीनन हम शुक्रगुज़ार बंदे बनेंगे। फिर जब वह उन्हें नजात दे देता है तो फ़ौरन ही ज़मीन में नाहक़ की सरकशी करने लगते हैं। ऐ लोगो! तुम्हारी सरकशी तुम्हारे अपने ही ख़िलाफ़ है, दुनिया की ज़िंदगी का नफ़ा उठा लो, फिर तुम्हें हमारी तरफ़ लौटकर आना है, फिर हम बता देंगे जो कुछ तुम कर रहे थे। (22-23)

दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल ऐसी है जैसे पानी कि हमने उसे आसमान से बरसाया तो ज़मीन का सब्ज़ा ख़ूब निकला जिसे आदमी खाते हैं और जिसे जानवर खाते हैं। यहां तक कि जब ज़मीन पूरी रौनक़ पर आ गई और संवर उठी और ज़मीन वालों ने गुमान कर लिया कि अब यह हमारे क़ाबू में है तो अचानक उस पर हमारा हुक्म रात को या दिन को आ गया, फिर हमने उसे काटकर ढेर कर दिया गोया कल यहां कुछ था ही नहीं। इस तरह हम निशानियां खोलकर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (24)

और अल्लाह सलामती (शांति) के घर की तरफ़ बुलाता है और वह जिसे

चाहता है सीधा रास्ता दिखा देता है। जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए भलाई है और उससे अधिक भी। और उनके चेहरों पर न स्याही छाएगी और न ज़िल्लत। यही जन्नत वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। और जिन्होंने बुराइयां कमाईं तो बुराई का बदला उसके बराबर है। और उन पर रुस्वाई छाई हुई होगी। कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला न होगा। गोया कि उनके चेहरे अंधेरी रात के टुकड़ों से ढांक दिए गए हैं। यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (25-27)

और जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे, फिर हम शिर्क करने वालों से कहेंगे कि ठहरो तुम भी और तुम्हारे बनाए हुए शरीक भी। फिर हम उनके दर्मियान तफ़रीक़ (विभेद) कर देंगे और उनके शरीक कहेंगे कि तुम हमारी इबादत तो नहीं करते थे। अल्लाह हमारे दर्मियान गवाही के लिए काफ़ी है। हम तुम्हारी इबादत से बिल्कुल बेख़बर थे। उस वक़्त हर शख़्स अपने उस अमल से दो-चार होगा जो उसने किया था और लोग अल्लाह अपने मालिके हक़ीक़ी की तरफ़ लौटाए जाएंगे और जो झूठ उन्होंने गढ़े थे वे सब उनसे जाते रहेंगे। (28-30)

कहो कि कौन तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है। या कौन है जो कान पर और आंखों पर इख़्तियार रखता है। और कौन बेजान में से जानदार को और जानदार में से बेजान को निकालता है। और कौन मामलात का इंतज़ाम कर रहा है। वे कहेंगे कि अल्लाह। कहो कि फिर क्या तुम डरते नहीं। पस वही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार (पालनहार) हक़ीक़ी है। तौफ़ीक़ के बाद भटकने के सिवा और क्या है, तुम किधर फिरे जाते हो, इसी तरह तेरे रब की बात सरकशी करने वालों के हक़ में पूरी हो चुकी है कि वे ईमान न लाएंगे। (31-33)

कहो, क्या तुम्हारे ठहराए हुए शरीकों में कोई है जो पहली बार पैदा करता हो फिर वह दुबारा भी पैदा करे। कहो, अल्लाह ही पहली बार भी पैदा करता है फिर वही दुबारा भी पैदा करेगा। फिर तुम कहां भटके जाते हो। कहो, क्या तुम्हारे शरीकों में कोई है जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता हो,

कह दो कि अल्लाह ही हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता है। फिर जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता है वह पैरवी किए जाने का मुस्तहिक़ है या वह जिसे ख़ुद ही रास्ता न मिलता हो बल्कि उसे रास्ता बताया जाए। तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा फ़ैसला करते हो। उनमें से अक्सर सिर्फ़ गुमान की पैरवी कर रहे हैं। और गुमान हक़ बात में कुछ भी काम नहीं देता। अल्लाह को ख़ूब मालूम है जो कुछ वे करते हैं। (34-36)

और यह क़ुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवा कोई इसको बना ले। बल्कि यह तस्दीक़ (पुष्टि) है उन पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) की जो इसके पहले से मौजूद हैं। और किताब की तफ़्सील है, इसमें कोई शक नहीं कि वह ख़ुदावंदे आलम की तरफ़ से है। क्या लोग कहते हैं कि इस शख़्स ने इसको गढ़ लिया है। कहो कि तुम इसकी मानिंद कोई सूरह ले आओ। और अल्लाह के सिवा तुम जिसे बुला सको बुला लो, अगर तुम सच्चे हो। बल्कि ये लोग उस चीज़ को झुठला रहे हैं जो उनके इल्म के इहाते में नहीं आई। और जिसकी हक़ीक़त अभी उन पर नहीं खुली। इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया जो इनसे पहले गुज़रे हैं, पस देखो कि ज़ालिमों का अंजाम क्या हुआ। (37-39)

और उनमें से वे भी हैं जो क़ुरआन पर ईमान ले आएंगे और वे भी हैं जो उस पर ईमान नहीं लाएंगे। और तेरा रब मुफ़्सिदों (उपद्रवियों) को ख़ूब जानता है। और अगर वे तुम्हें झुठलाते हैं तो कह दो कि मेरा अमल मेरे लिए है और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए। तुम उससे बरी हो जो मैं करता हूं और मैं उससे बरी हूं जो तुम कर रहे हो। और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे जबकि वे समझ से काम न ले रहे हों। और उनमें से कुछ ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ़ देखते हैं तो क्या तुम अंधों को रास्ता दिखाओगे अगरचे वे देख न रहे हों। अल्लाह लोगों पर कुछ भी ज़ुल्म नहीं करता मगर लोग ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं। (40-44)

और जिस दिन अल्लाह उन्हें जमा करेगा, गोया कि वे बस दिन की एक

घड़ी दुनिया में थे। वे एक-दूसरे को पहचानेंगे। बेशक सख़्त घाटे में रहे वे लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और वे राहेरास्त (सन्मार्ग) पर न आए। हम तुम्हें उसका कोई हिस्सा दिखा दें जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं या तुम्हें वफ़ात (मौत) दे दें, बहरहाल उन्हें हमारी ही तरफ़ लौटना है, फिर अल्लाह गवाह है उस पर जो कुछ वे कर रहे हैं। और हर उम्मत के लिए एक रसूल है। फिर जब उनका रसूल आ जाता है तो उनके दर्मियान इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाता है और उन पर कोई ज़ुल्म नहीं होता। (45-47)

और वे कहते हैं कि यह वादा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो मैं अपने वास्ते भी बुरे और भले का मालिक नहीं, मगर जो अल्लाह चाहे। हर उम्मत के लिए एक वक़्त है। जब उनका वक़्त आ जाता है तो फिर न वे एक घड़ी पीछे होते और न आगे। कहो कि बताओ, अगर अल्लाह का अज़ाब तुम पर रात को आ पड़े या दिन को आ जाए तो मुजरिम लोग इससे पहले क्या कर लेंगे। फिर क्या जब अज़ाब वाक़ेअ (घटित) हो चुकेगा तब उस पर यक़ीन करोगे। अब क़ायल हुए और तुम इसी का तक़ाज़ा करते थे, फिर ज़ालिमों से कहा जाएगा कि अब हमेशा का अज़ाब चखो। यह उसी का बदला मिल रहा है जो कुछ तुम कमाते थे। (48-52)

और वे तुमसे पूछते हैं कि क्या यह बात सच है। कहो कि हां मेरे रब की क़सम यह सच है और तुम उसे थका न सकोगे। और अगर हर ज़ालिम के पास वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है तो वह उसे फ़िदये (आर्थिक दंड) में दे देना चाहेगा और जब वे अज़ाब को देखेंगे तो अपने दिल में पछताएंगे। और उनके दर्मियान इंसाफ़ से फ़ैसला कर दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म न होगा। याद रखो जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब अल्लाह का है, याद रखो अल्लाह का वादा सच्चा है मगर अक्सर लोग नहीं जानते। वही ज़िंदा करता है और वही मारता है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (53-56)

ऐ लोगो, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से नसीहत आ गई और उसके लिए शिफ़ा (निदान) जो सीनों में होती है और अहले-ईमान के लिए हिदायत और रहमत। कहो कि यह अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत से

है। अब चाहिए कि लोग ख़ुश हों, यह उससे बेहतर है जिसे वे जमा कर रहे हैं। कहो, यह बताओ कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो रिज़्क़ उतारा था, फिर तुमने उसमें से कुछ को हराम ठहराया और कुछ को हलाल। कहो, क्या अल्लाह ने तुम्हें इसका हुक्म दिया है या तुम अल्लाह पर झूठ लगा रहे हो। और क़ियामत के दिन के बारे में उन लोगों का क्या ख़्याल है जो अल्लाह पर झूठ लगा रहे हैं। बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है, मगर अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (57-60)

और तुम जिस हाल में भी हो और क़ुरआन में से जो हिस्सा भी सुना रहे हो और तुम लोग जो काम भी करते हो, हम तुम्हारे ऊपर गवाह रहते हैं जिस वक़्त तुम उसमें मशग़ूल होते हो। और तेरे रब से ज़र्रा बराबर भी कोई चीज़ छुपी नहीं, न ज़मीन में और न आसमान में और न इससे छोटी न बड़ी, मगर वह एक वाज़ेह किताब में है। सुन लो, अल्लाह के दोस्तों के लिए न कोई ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे। ये वे लोग हैं जो ईमान लाए और डरते रहे, उनके लिए ख़ुशख़बरी है दुनिया की ज़िंदगी में भी और आख़िरत में, अल्लाह की बातों में कोई तब्दीली नहीं, यही बड़ी कामयाबी है। और तुम्हें उनकी बात ग़म में न डाले। ज़ोर सब अल्लाह ही के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है। (61-65)

सुनो, जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं सब अल्लाह ही के हैं। और जो लोग अल्लाह के सिवा शरीकों को पुकारते हैं वे किस चीज़ की पैरवी कर रहे हैं, वे सिर्फ़ गुमान की पैरवी कर रहे हैं और वे महज़ अटकल दौड़ा रहे हैं। वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम सुकून हासिल करो। और दिन को रोशन बनाया। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (66-67)

कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है। वह पाक है, बेनियाज़ (निस्पृह) है। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। तुम्हारे पास इसकी कोई दलील नहीं। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात गढ़ते हो

जिसका तुम इल्म नहीं रखते। कहो, जो लोग अल्लाह पर झूठ बांधते हैं वे फ़लाह नहीं पाएंगे। उनके लिए बस दुनिया में थोड़ा फ़ायदा उठा लेना है। फिर हमारी ही तरफ़ उनका लौटना है। फिर उनको हम इस इंकार के बदले सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएंगे। (68-70)

और उनको नूह का हाल सुनाओ। जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम, अगर मेरा खड़ा होना और अल्लाह की आयतों से नसीहत करना तुम पर गिरां (भार) हो गया है तो मैंने अल्लाह पर भरोसा किया। तुम अपना मुत्तफ़िक़ा फ़ैसला कर लो और अपने शरीकों को भी साथ ले लो, तुम्हें अपने फ़ैसले में कोई शुबह बाक़ी न रहे। फिर तुम लोग मेरे साथ जो कुछ करना चाहते हो कर गुज़रो और मुझको मोहलत न दो। अगर तुम ऐराज़ (उपेक्षा) करोगे तो मैंने तुमसे कोई मज़दूरी नहीं मांगी है। मेरी मज़दूरी तो अल्लाह के ज़िम्मे है। और मुझको हुक्म दिया गया है कि मैं फ़रमांबरदारों में से हूं। फिर उन्होंने उसे झुठला दिया तो हमने नूह को और जो लोग उसके साथ कश्ती में थे नजात दी और उन्हें जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया। और उन लोगों को ग़र्क़ कर दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया था। देखो कि क्या अंजाम हुआ उनका जिन्हें डराया गया था। (71-73)

फिर हमने नूह के बाद कितने रसूल भेजे। वे उनके पास खुली-खुली दलीलें लेकर आए, मगर वे उस पर ईमान लाने वाले न बने जिसे पहले झुठला चुके थे। इसी तरह हम हद से निकल जाने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं। (74)

फिर हमने उनके बाद मूसा और हारून को फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास अपनी निशानियां देकर भेजा, मगर उन्होंने घमंड किया और वे मुजरिम लोग थे। फिर जब उनके पास हमारी तरफ़ से सच्ची बात पहुंची तो उन्होंने कहा, यह तो खुला हुआ जादू है। मूसा ने कहा कि क्या तुम हक़ को जादू कहते हो जबकि वह तुम्हारे पास आ चुका है। क्या यह जादू है, हालाँकि जादू वाले कभी फ़लाह नहीं पाते। उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमें उस रास्ते से फेर दो जिस पर हमने अपने बाप-दादा को

पाया है, और इस मुल्क में तुम दोनों की बड़ाई क़ायम हो जाए, और हम कभी तुम दोनों की बात मानने वाले नहीं हैं। (75-78)

और फ़िरऔन ने कहा कि तमाम माहिर जादूगरों को मेरे पास ले आओ। जब जादूगर आए तो मूसा ने उनसे कहा कि जो कुछ तुम्हें डालना है डालो। फिर जब जादूगरों ने डाला तो मूसा ने कहा कि जो कुछ तुम लाए हो वह जादू है। बेशक अल्लाह इसको बातिल (विनष्ट) कर देगा, अल्लाह यक़ीनन मुफ़्सिदों (उपद्रवियों) के काम को सुधरने नहीं देता। और अल्लाह अपने हुक्म से हक़ को हक़ कर दिखाता है चाहे मुजरिमों को वह कितना ही नागवार हो। (79-82)

फिर मूसा को उसकी क़ौम में से चन्द नौजवानों के सिवा किसी ने न माना, फ़िरऔन के डर से और ख़ुद अपनी क़ौम के बड़े लोगों के डर से कि कहीं वे उन्हें किसी फ़ितने में न डाल दे, बेशक फ़िरऔन ज़मीन में ग़लबा (संप्रभुत्व) रखता था और वह उन लोगों में से था जो हद से गुज़र जाते हैं। और मूसा ने कहा ऐ मेरी क़ौम, अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो, अगर तुम वाक़ई फ़रमांबरदार हो। उन्होंने कहा, हमने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब, हमें ज़ालिम लोगों के लिए फ़ितना न बना। और अपनी रहमत से हमें मुंकिर लोगों से नजात दे। (83-86)

और हमने मूसा और उसके भाई की तरफ़ 'वही' (प्रकाशना) की कि अपनी क़ौम के लिए मिस्र में कुछ घर मुक़र्रर कर लो और अपने इन घरों को क़िबला बनाओ और नमाज़ क़ायम करो। और अहले-ईमान को ख़ुशख़बरी दे दो। (87)

और मूसा ने कहा, ऐ हमारे रब, तूने फ़िरऔन को और उसके सरदारों को दुनिया की ज़िंदगी में रौनक़ और माल दिया है। ऐ हमारे रब, इसलिए कि वे तेरी राह से लोगों को भटकाएं। ऐ हमारे रब, उनके माल को ग़ारत कर दे और उनके दिलों को सख़्त कर दे कि वे ईमान न लाएं यहां तक कि दर्दनाक अज़ाब को देख लें। फ़रमाया, तुम दोनों की दुआ क़ुबूल की गई।

अब तुम दोनों जमे रहो और उन लोगों की राह की पैरवी न करो जो इल्म नहीं रखते। (88-89)

और हमने बनी इस्राईल को समुद्र पार करा दिया तो फ़िरऔन और उसके लश्कर ने उनका पीछा किया। सरकशी और ज़्यादती की ग़रज़ से। यहां तक कि जब फ़िरऔन डूबने लगा तो उसने कहा कि मैं ईमान लाया कि कोई माबूद (पूज्य) नहीं मगर वह जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए। और मैं उसके फ़रमांबरदारों में हूं। क्या अब, और इससे पहले तू नाफ़रमानी करता रहा और तू फ़साद बरपा करने वालों में से था। पस आज हम तेरे बदन को बचाएंगे ताकि तू अपने बाद वालों के लिए निशानी बने और बेशक बहुत से लोग हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल रहते हैं। (90-92)

और हमने बनी इस्राईल को अच्छा ठिकाना दिया और उन्हें सुथरी चीज़ें खाने के लिए दीं। फिर उन्होंने इख़्तेलाफ़ (मतभेद) नहीं किया मगर उस वक़्त जबकि इल्म उनके पास आ चुका था। यक़ीनन तेरा रब क़ियामत के दिन उनके दर्मियान उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे इख़्तेलाफ़ करते रहे। (93)

पस अगर तुम्हें उस चीज़ के बारे में शक है जो हमने तुम्हारी तरफ़ उतारी है तो उन लोगों से पूछ लो जो तुमसे पहले से किताब पढ़ रहे हैं। बेशक यह तुम पर हक़ आया है तुम्हारे रब की तरफ़ से, पस तुम शक करने वालों में से न बनो। और तुम उन लोगों में शामिल न हो जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया है, वरना तुम नुक़सान उठाने वालों में से होगे। (94-95)

बेशक जिन लोगों पर तेरे रब की बात पूरी हो चुकी है वे ईमान नहीं लाएंगे, चाहे उनके पास सारी निशानियां आ जाएं जब तक कि वे दर्दनाक अज़ाब को सामने आता न देख लें। पस क्यों न हुआ कि कोई बस्ती ईमान लाती कि उसका ईमान उसे नफ़ा देता, यूनुस की क़ौम के सिवा। जब वे ईमान लाए तो हमने उनसे दुनिया की ज़िंदगी में रुस्वाई का अज़ाब टाल दिया और उन्हें एक मुद्दत तक बहरामंद (सुखी-सम्पन्न) होने का मौक़ा दिया। (96-98)

और अगर तेरा रब चाहता तो ज़मीन पर जितने लोग हैं सबके सब

ईमान ले आते। फिर क्या तुम लोगों को मजबूर करोगे कि वे मोमिन हो जाएं। और किसी शख़्स के लिए मुमकिन नहीं कि वह अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर ईमान ला सके। और अल्लाह उन लोगों पर गंदगी डाल देता है जो अक़्ल से काम नहीं लेते। (99-100)

कहो कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है उसे देखो और निशानियां और डरावे उन लोगों को फ़ायदा नहीं पहुंचाते जो ईमान नहीं लाते। वे तो बस उस तरह के दिन का इंतज़ार कर रहे हैं जिस तरह के दिन उनसे पहले गुज़रे हुए लोगों को पेश आए। कहो, इंतज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करने वालों में हूं फिर हम बचा लेते हैं अपने रसूलों को और उन्हें जो ईमान लाए। इसी तरह हमारा ज़िम्मा है कि हम ईमान वालों को बचा लेंगे। (101-103)

कहो, ऐ लोगो! अगर तुम मेरे दीन के मुताल्लिक़ शक में हो तो मैं उनकी इबादत नहीं करता जिनकी इबादत तुम करते हो अल्लाह के सिवा। बल्कि मैं उस अल्लाह की इबादत करता हूं जो तुम्हें वफ़ात (मौत) देता है और मुझको हुक्म मिला है कि मैं ईमान वालों में से बनूं। और यह कि अपना रुख़ यकसू (एकाग्र) होकर दीन की तरफ़ करूं। और मुश्रिकों में से न बनूं। और अल्लाह के अलावा उन्हें न पुकारो जो तुम्हें न नफ़ा पहुंचा सकते हैं और न नुक़सान। फिर अगर तुम ऐसा करोगे तो यक़ीनन तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे। और अगर अल्लाह तुम्हें किसी तकलीफ़ में पकड़ ले तो उसके सिवा कोई नहीं जो उसे दूर कर सके। और अगर वह तुम्हें कोई भलाई पहुंचाना चाहे तो उसके फ़ज़्ल को कोई रोकने वाला नहीं। वह अपना फ़ज़्ल अपने बंदों में से जिसे चाहता है देता है और वह बख़्शने वाला महरबान है। (104-107)

कहो, ऐ लोगो! तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे पास हक़ आ गया है। जो हिदायत क़ुबूल करेगा वह अपने ही लिए करेगा और जो भटकेगा तो उसका वबाल उसी पर आएगा, और मैं तुम्हारे ऊपर ज़िम्मेदार नहीं हूं। और तुम उसकी पैरवी करो जो तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जाती है और सब्र करो यहां तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। (108-109)

सूरह-11. हूद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़० लाम० रा०। यह किताब है जिसकी आयतें पहले मोहकम (दृढ़) की गईं फिर एक दाना (तत्वदर्शी) और ख़बीर (सर्वज्ञ) हस्ती की तरफ़ से उनकी तफ़्सील की गई कि तुम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत न करो। मैं तुम्हें उसकी तरफ़ से डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं। और यह कि तुम अपने रब से माफ़ी चाहो और उसकी तरफ़ पलट आओ, वह तुम्हें एक मुद्दत तक बरतवाएगा अच्छा बरतवाना, और हर ज़्यादा के मुस्तहिक़ को अपनी तरफ़ से ज़्यादा अता करेगा। और अगर तुम फिर जाओ तो मैं तुम्हारे हक़ में एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूं। तुम सबको अल्लाह की तरफ़ पलटना है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (1-4)

देखो, ये लोग अपने सीनों को लपेटते हैं ताकि उससे छुप जाएं। ख़बरदार, जब वे कपड़ों से अपने आपको ढांपते हैं, अल्लाह जानता है जो कुछ वे छुपाते हैं और जो वे ज़ाहिर करते हैं। वह दिलों की बात तक जानने वाला है। और ज़मीन पर कोई चलने वाला ऐसा नहीं जिसकी रोज़ी अल्लाह की ज़िम्मे न हो। और वह जानता है जहां कोई ठहरता है और जहां वह सौंपा जाता है। सब कुछ एक खुली किताब में मौजूद है। (5-6)

और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया। और उसका अर्श (सिंहासन) पानी पर था, ताकि तुम्हें आज़माए कि कौन तुम में अच्छा काम करता है। और अगर तुम कहो कि मरने के बाद तुम लोग उठाए जाओगे तो मुंकिरीन कहते हैं यह तो खुला हुआ जादू है। और अगर हम कुछ मुद्दत तक उनकी सज़ा को रोक दें तो कहते हैं कि क्या चीज़ उसे रोके हुए है। आगाह, जिस दिन वह उन पर आ पड़ेगा तो वह उनसे फेरा न जा सकेगा और उन्हें घेर लेगी वह चीज़ जिसका वे मज़ाक़ उड़ा रहे थे। (7-8)

और अगर हम इंसान को अपनी किसी रहमत से नवाज़ते हैं फिर उससे उसे महरूम कर देते हैं तो वह मायूस और नाशुक्र बन जाता है। और अगर

किसी तकलीफ़ के बाद जो उसे पहुंची थी, उसे हम नेमत से नवाज़ते हैं तो वह कहता है कि सारी मुसीबतें मुझसे दूर हो गईं, वह इतराने वाला और अकड़ने वाला बन जाता है। मगर जो लोग सब्र करने वाले और नेक अमल करने वाले हैं उनके लिए बख़्शिश (क्षमा) है और बड़ा अज्र (प्रतिफल)। (9-11)

कहीं ऐसा न हो कि तुम उस चीज़ का कुछ हिस्सा छोड़ दो जो तुम्हारी तरफ़ 'वही' (प्रकाशना) की गई है। और तुम इस बात पर दिलतंग हो कि वे कहते हैं कि उस पर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं उतारा गया या उसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया। तुम तो सिर्फ़ डराने वाले हो और अल्लाह हर चीज़ का ज़िम्मेदार है। क्या वे कहते हैं कि पैग़म्बर ने इस किताब को गढ़ लिया है। कहो, तुम भी ऐसी ही दस सूरतें बनाकर ले आओ और अल्लाह के सिवा जिसे बुला सको बुला लो, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर वे तुम्हारा कहा पूरा न कर सकें तो जान लो कि यह अल्लाह के इल्म से उतरा है और यह कि उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, फिर क्या तुम हुक्म मानते हो। (12-14)

जो लोग दुनिया की ज़िंदगी और उसकी ज़ीनत (वैभव) चाहते हैं, हम उनके आमाल का बदला दुनिया ही में दे देते हैं। और इसमें उनके साथ कोई कमी नहीं की जाती। यही लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में आग के सिवा कुछ नहीं है। उन्होंने दुनिया में जो कुछ बनाया था वह बर्बाद हुआ और ख़राब गया जो उन्होंने कमाया था। (15-16)

भला एक शख़्स जो अपने रब की तरफ़ से एक दलील पर है, इसके बाद अल्लाह की तरफ़ से उसके लिए एक गवाह भी आ गया, और इससे पहले मूसा की किताब रहनुमा और रहमत की हैसियत से मौजूद थी, ऐसे ही लोग उस पर ईमान लाते हैं और जमाअतों में से जो कोई इसका इंकार करे तो उसके वादे की जगह आग है। पस तुम इसके बारे में किसी शक में न पड़ो। यह हक़ है तुम्हारे रब की तरफ़ से मगर अक्सर लोग नहीं मानते। (17)

और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े। ऐसे लोग अपने रब के सामने पेश होंगे और गवाही देने वाले कहेंगे कि ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ गढ़ा था। सुनो, अल्लाह की लानत है ज़ालिमों के

ऊपर। उन लोगों के ऊपर जो अल्लाह के रास्ते से लोगों को रोकते हैं और उसमें कजी (टेढ़) ढूंढ़ते हैं। यही लोग आख़िरत के मुंकिर हैं। वे लोग ज़मीन में अल्लाह को बेबस करने वाले नहीं और न अल्लाह के सिवा उनका कोई मददगार है, उन पर दोहरा अज़ाब होगा। वे न सुन सकते थे और न देखते थे। ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला। और वह सब कुछ उनसे खोया गया जो उन्होंने गढ़ रखा था। इसमें शक नहीं कि यही लोग आख़िरत (परलोक) में सबसे ज़्यादा घाटे में रहेंगे। (18-22)

जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए और अपने रब के सामने आजिज़ी (समर्पण) की वही लोग जन्नत वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। इन दोनों फ़रीक़ों (पक्षों) की मिसाल ऐसी है जैसे एक अंधा और बहरा हो और दूसरा देखने और सुनने वाला। क्या ये दोनों यकसां (समान) हो जाएंगे। क्या तुम ग़ौर नहीं करते। (23-24)

और हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा कि मैं तुम्हें खुला हुआ डराने वाला हूं। यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। मैं तुम पर एक दर्दनाक अज़ाब के दिन का अंदेशा रखता हूं। उसकी क़ौम के सरदारों ने कहा, जिन्होंने इंकार किया था कि हम तो तुम्हें बस अपने जैसा एक आदमी देखते हैं। और हम नहीं देखते कि कोई तुम्हारे ताबेअ हुआ हो सिवाए उनके जो हममें पस्त लोग हैं, बेसमझे बूझे। और हम नहीं देखते कि तुम्हें हमारे ऊपर कुछ बड़ाई हासिल हो, बल्कि हम तो तुम्हें झूठा ख़्याल करते हैं। (25-27)

नूह ने कहा ऐ मेरी क़ौम, बताओ अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक रोशन दलील पर हूं और उसने मुझ पर अपने पास से रहमत भेजी है, मगर वह तुम्हें नज़र न आई तो क्या हम उसे तुम पर चिपका सकते हैं जबकि तुम उससे बेज़ार (खिन्न) हो। और ऐ मेरी क़ौम, मैं उस पर तुमसे कुछ माल नहीं मांगता। मेरा अज्र (प्रतिफल) तो बस अल्लाह के ज़िम्मे है और मैं हरगिज़ उन्हें अपने से दूर करने वाला नहीं जो ईमान लाए हैं। उन लोगों को अपने रब से मिलना है। मगर मैं देखता हूं तुम लोग जहालत में मुब्तिला हो। और

ऐ मेरी क़ौम, अगर मैं उन लोगों को धुत्कार दूं तो ख़ुदा के मुक़ाबले में कौन मेरी मदद करेगा। क्या तुम ग़ौर नहीं करते। और मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं। और न मैं ग़ैब की ख़बर रखता हूं। और न यह कहता हूं कि मैं फ़रिश्ता हूं। और मैं यह भी नहीं कह सकता कि जो लोग तुम्हारी निगाहों में हक़ीर (तुच्छ) हैं उन्हें अल्लाह कोई भलाई नहीं देगा। अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ उनके दिलों में है। अगर मैं ऐसा कहूं तो मैं ही ज़ालिम हूंगा। (28-31)

उन्होंने कहा कि ऐ नूह तुमने हमसे झगड़ा किया और बहुत झगड़ा कर लिया। और वह चीज़ ले आओ जिसका तुम हमसे वादा करते रहे हो, अगर तुम सच्चे हो। नूह ने कहा उसे तो तुम्हारे ऊपर अल्लाह ही लाएगा अगर वह चाहेगा और तुम उसके क़ाबू से बाहर न जा सकोगे। और मेरी नसीहत तुम्हें फ़ायदा नहीं देगी अगर मैं तुम्हें नसीहत करना चाहूं जबकि अल्लाह यह चाहता हो कि वह तुम्हें गुमराह करे। वही तुम्हारा रब है और उसी की तरफ़ तुम्हें लौटकर जाना है। (32-34)

क्या वे कहते हैं कि पैग़म्बर ने उसे गढ़ लिया है। कहो कि अगर मैंने इसको गढ़ा है तो मेरा जुर्म मेरे ऊपर है और जो जुर्म तुम कर रहे हो उससे मैं बरी हूं। (35)

और नूह की तरफ़ 'वही' (प्रकाशना) की गई कि अब तुम्हारी क़ौम में से कोई ईमान नहीं लाएगा सिवा उसके जो ईमान ला चुका। पस तुम उन कामों पर ग़मगीन न हो जो वे कर रहे हैं। और हमारे रूबरू और हमारे हुक्म से तुम कश्ती बनाओ और ज़ालिमों के हक़ में मुझसे बात न करो, बेशक ये लोग ग़र्क़ होंगे। और नूह कश्ती बनाने लगा। और जब उसकी क़ौम का कोई सरदार उस पर गुज़रता तो वह उसकी हंसी उड़ाता, उन्होंने कहा अगर तुम हम पर हंसते हो तो हम भी तुम पर हंस रहे हैं। तुम जल्द जान लोगे कि वे कौन हैं जिन पर वह अज़ाब आता है जो उसे रुसवा कर दे और उस पर वह अज़ाब उतरता है जो दाइमी है। (36-39)

यहां तक कि जब हमारा हुक्म आ पहुंचा और तूफ़ान उबल पड़ा हमने नूह से कहा कि हर क़िस्म के जानवरों का एक-एक जोड़ा कश्ती में रख लो और अपने घरवालों को भी, सिवा उन लोगों के जिनकी बाबत पहले कहा जा चुका है और सब ईमान वालों को भी। और थोड़े ही लोग थे जो नूह के साथ ईमान लाए थे। और नूह ने कहा कि कश्ती में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम से इसका चलना है और इसका ठहरना भी। बेशक मेरा रब बख़्शने वाला महरबान है। और कश्ती पहाड़ जैसी मौजों के दर्मियान उन्हें लेकर चलने लगी। और नूह ने अपने बेटे को पुकारा जो उससे अलग था। ऐ मेरे बेटे, हमारे साथ सवार हो जा और मुंकिरों के साथ मत रह। उसने कहा मैं किसी पहाड़ की पनाह ले लूंगा जो मुझे पानी से बचा लेगा। नूह ने कहा कि आज कोई अल्लाह के हुक्म से बचाने वाला नहीं मगर वह जिस पर अल्लाह रहम करे। और दोनों के दर्मियान मौज हायल (बाधित) हो गई और वह डूबने वालों में शामिल हो गया। और कहा गया कि ऐ ज़मीन, अपना पानी निगल ले और ऐ आसमान थम जा। और पानी सुखा दिया गया। और मामले का फ़ैसला हो गया और कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहर गई और कह दिया गया कि दूर हो ज़ालिमों की क़ौम। (40-44)

और नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा कि ऐ मेरे रब, मेरा बेटा मेरे घरवालों में है, और बेशक तेरा वादा सच्चा है। और तू सबसे बड़ा हाकिम है। ख़ुदा ने कहा ऐ नूह, वह तेरे घरवालों में नहीं। उसके काम ख़राब हैं। पस मुझसे उस चीज़ के बारे में सवाल न करो जिसका तुम्हें इल्म नहीं। मैं तुम्हें नसीहत करता हूं कि तुम जाहिलों में से न बनो। नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, मैं तेरी पनाह चाहता हूं कि तुझसे वह चीज़ मांगूं जिसका मुझे इल्म नहीं। और अगर तू मुझे माफ़ न करे और मुझ पर रहम न फ़रमाए तो मैं बर्बाद हो जाऊंगा। (45-47)

कहा गया कि ऐ नूह, उतरो, हमारी तरफ़ से सलामती के साथ और बरकतों के साथ, तुम पर और उन गिरोहों पर जो तुम्हारे साथ हैं। और (उनसे ज़ुहूर में आने वाले) गिरोह कि हम उन्हें फ़ायदा देंगे, फिर उन्हें हमारी

तरफ़ से एक दर्दनाक अज़ाब पकड़ लेगा। ये ग़ैब की ख़बरें हैं जिनको हम तुम्हारी तरफ़ 'वही' (प्रकाशना) कर रहे हैं। इससे पहले न तुम उन्हें जानते थे और न तुम्हारी क़ौम। पस सब्र करो बेशक आख़िरी अंजाम डरने वालों के लिए है। (48-49)

और आद की तरफ़ हमने उनके भाई हूद को भेजा। उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तुमने महज़ झूठ गढ़ रखे हैं। ऐ मेरी क़ौम, मैं इस पर तुमसे कोई अज्र (प्रतिफल) नहीं मांगता। मेरा अज्र तो उस पर है जिसने मुझे पैदा किया है। क्या तुम नहीं समझते। और ऐ मेरी क़ौम, अपने रब से माफ़ी चाहो, फिर उसकी तरफ़ पलटो। वह तुम्हारे ऊपर ख़ूब बारिशें बरसाएगा। और तुम्हारी क़ुव्वत पर मज़ीद क़ुव्वत का इज़ाफ़ा करेगा। और तुम मुजरिम होकर रूगर्दानी (अवहेलना) न करो। (50-52)

उन्होंने कहा कि ऐ हूद, तुम हमारे पास कोई खुली निशानी लेकर नहीं आए हो, और हम तुम्हारे कहने से अपने माबूदों (पूज्यों) को छोड़ने वाले नहीं हैं। और हम हरगिज़ तुम्हें मानने वाले नहीं हैं। हम तो यही कहेंगे कि तुम्हारे ऊपर हमारे माबूदों में से किसी की मार पड़ गई है। हूद ने कहा, मैं अल्लाह को गवाह ठहराता हूं और तुम भी गवाह रहो कि मैं बरी हूं उनसे जिनको तुम शरीक करते हो उसके सिवा। पस तुम सब मिलकर मेरे ख़िलाफ़ तदबीर (युक्ति) करो, फिर मुझे मोहलत न दो। मैंने अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा रब है और तुम्हारा रब भी। कोई जानदार ऐसा नहीं जिसकी चोटी उसके हाथ में न हो। बेशक मेरा रब सीधी राह पर है। (53-56)

अगर तुम ऐराज़ (उपेक्षा) करते हो तो मैंने तुम्हें वह पैग़ाम पहुंचा दिया जिसे देकर मुझे तुम्हारी तरफ़ भेजा गया था। और मेरा रब तुम्हारी जगह तुम्हारे सिवा किसी और गिरोह को जानशीन (ख़लीफ़ा, उत्तराधिकारी) बनाएगा। तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे। बेशक मेरा रब हर चीज़ पर निगहबान है। और जब हमारा हुक्म आ पहुंचा, हमने अपनी रहमत से बचा दिया हूद को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे। और हमने उन्हें एक सख़्त

अज़ाब से बचा दिया। और ये आद थे कि उन्होंने अपने रब की निशानियों का इंकार किया। और उसके रसूलों को न माना और हर सरकश और मुख़ालिफ़ की बात की इत्तिबाअ (अनुसरण) की। और उनके पीछे लानत लगा दी गई इस दुनिया में और क़ियामत के दिन। सुन लो, आद ने अपने रब का इंकार किया। सुन लो, दूरी है आद के लिए जो हूद की क़ौम थी। (57-60)

और समूद की तरफ़ हमने उनके भाई सालेह को भेजा। उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। उसी ने तुम्हें ज़मीन से बनाया, और उसमें तुम्हें आबाद किया। पस माफ़ी चाहो, फिर उसकी तरफ़ रुजूअ करो। बेशक मेरा रब क़रीब है, क़ुबूल करने वाला है। उन्होंने कहा कि ऐ सालेह! इससे पहले हमें तुमसे उम्मीद थी। क्या तुम हमें उनकी इबादत से रोकते हो जिनकी इबादत हमारे बाप-दादा करते थे। और जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो उसके बारे में हमें सख़्त शुबह है और हम बड़े ख़लजान (दुविधा) में हैं। उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, बताओ अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक वाज़ेह (सुस्पष्ट) दलील पर हूं और उसने मुझे अपने पास से रहमत दी है तो मुझे ख़ुदा से कौन बचाएगा अगर मैं उसकी नाफ़रमानी करूं। पस तुम कुछ नहीं बढ़ाओगे मेरा सिवाए नुक़सान के। (61-63)

और ऐ मेरी क़ौम, यह अल्लाह की ऊंटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है। पस इसे छोड़ दो कि वह अल्लाह की ज़मीन में खाए। और इसे कोई तकलीफ़ न पहुंचाओ वरना बहुत जल्द तुम्हें अज़ाब पकड़ लेगा। फिर उन्होंने उसके पांव काट डाले। तब सालेह ने कहा कि तीन दिन और अपने घरों में फ़ायदा उठा लो। यह एक वादा है जो झूठा न होगा। फिर जब हमारा हुक्म आ गया तो हमने अपनी रहमत से सालेह को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे बचा लिया और उस दिन की रुस्वाई से (महफ़ूज़ रखा)। बेशक तेरा रब ही क़वी (शक्तिमान) और ज़बरदस्त है। और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था उन्हें एक हौलनाक आवाज़ ने पकड़ लिया फिर सुबह को वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए। जैसे कि वे कभी उनमें बसे ही नहीं। सुनो,

समूद ने अपने रब से कुफ़्र किया। सुनो, फिटकार है समूद के लिए। (64-68)

और इब्राहीम के पास हमारे फ़रिश्ते ख़ुशख़बरी लेकर आए। कहा तुम पर सलामती हो। इब्राहीम ने कहा तुम पर भी सलामती हो। फिर देर न गुज़री कि इब्राहीम एक भुना हुआ बछड़ा ले आया। फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ़ नहीं बढ़ रहे हैं तो वह खटक गया और दिल में उनसे डरा। उन्होंने कहा कि डरो नहीं, हम लूत की क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं। और इब्राहीम की बीवी खड़ी थी, वह हंस पड़ी। पस हमने उसे इस्हाक़ की ख़ुशख़बरी दी और इस्हाक़ के आगे याक़ूब की। उसने कहा, ऐ ख़राबी, क्या मैं बच्चा जनूंगी, हालाँकि मैं बुढ़िया हूं और यह मेरा ख़ाविंद भी बूढ़ा है। यह तो एक अजीब बात है। फ़रिश्तों ने कहा, क्या तुम अल्लाह के हुक्म पर तअज्जुब करती हो। इब्राहीम के घर वालो, तुम पर अल्लाह की रहमतें और बरकतें हैं। बेशक अल्लाह निहायत क़ाबिले तारीफ़ और बड़ी शान वाला है। (69-73)

फिर जब इब्राहीम का ख़ौफ़ दूर हुआ और उसे ख़ुशख़बरी मिली तो वह हमसे क़ौमे-लूत के बारे में झगड़ने लगा। बेशक इब्राहीम बड़ा हलीम (उदार) और नर्म दिल था और रुजूअ करने वाला था। ऐ इब्राहीम! उसे छोड़ो। तुम्हारे रब का हुक्म आ चुका है और उन पर एक ऐसा अज़ाब आने वाला है जो लौटाया नहीं जाता। (74-76)

और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास पहुंचे तो वह घबराया और उनके आने से दिल तंग हुआ। उसने कहा आज का दिन बड़ा सख़्त है। और उसकी क़ौम के लोग दौड़ते हुए उसके पास आए। और वे पहले से बुरे काम कर रहे थे। लूत ने कहा ऐ मेरी क़ौम, ये मेरी बेटियां हैं, वे तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़ा हैं। पस तुम अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों के सामने रुसवा न करो। क्या तुममें कोई भला आदमी नहीं है। उन्होंने कहा, तुम जानते हो कि हमें तुम्हारी बेटियों से कुछ ग़रज़ नहीं, और तुम जानते हो कि हम क्या चाहते हैं। (77-79)

लूत ने कहा, काश! मेरे पास तुमसे मुक़ाबले की क़ुव्वत होती या मैं जा

बैठता किसी मुस्तहकम (सुदृढ़) पनाह में। फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ लूत, हम तेरे रब के भेजे हुए हैं। वे हरगिज़ तुम तक न पहुंच सकेंगे। पस तुम अपने लोगों को लेकर कुछ रात रहे निकल जाओ। और तुममें से कोई मुड़कर न देखे। मगर तुम्हारी औरत कि उस पर वही कुछ गुज़रने वाला है जो उन लोगों पर गुज़रेगा। उनके लिए सुबह का वक़्त मुक़र्रर है, क्या सुबह क़रीब नहीं। फिर जब हमारा हुक्म आया तो हमने उस बस्ती को उलट-पुलट कर दिया और उस पर पत्थर बरसाए कंकर के, तह-ब-तह, तुम्हारे रब के पास से निशान लगाए हुए। और वह बस्ती उन ज़ालिमों से कुछ दूर नहीं। (80-83)

और मदयन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। और नाप और तोल में कमी न करो। मैं तुम्हें अच्छे हाल में देख रहा हूं, और मैं तुम पर एक घेर लेने वाले दिन के अज़ाब से डरता हूं। और ऐ मेरी क़ौम, नाप और तोल को पूरा करो इंसाफ़ के साथ। और लोगों को उनकी चीज़ें घटाकर न दो। और ज़मीन पर फ़साद न मचाओ। जो अल्लाह का दिया बचा रहे वह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम मोमिन हो। और मैं तुम्हारे ऊपर निगहबान (रखवाला) नहीं हूं। (84-86)

उन्होंने कहा कि ऐ शुऐब, क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें यह सिखाती है कि हम उन चीज़ों को छोड़ दें जिनकी इबादत हमारे बाप-दादा करते थे। या अपने माल में अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ तसर्रुफ़ (उपभोग) करना छोड़ दें। बस तुम ही तो एक दानिशमंद (प्रबुद्ध) और नेक चलन आदमी हो। (87)

शुऐब ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, बताओ, अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक वाज़ेह दलील पर हूं और उसने अपनी जानिब से मुझे अच्छा रिज़्क़ भी दिया। और मैं नहीं चाहता कि मैं ख़ुद वही काम करूं जिससे मैं तुम्हें रोक रहा हूं। मैं तो सिर्फ़ इस्लाह (सुधार) चाहता हूं, जहां तक हो सके। और मुझे तौफ़ीक़ तो अल्लाह ही से मिलेगी। उसी पर मैंने भरोसा किया है। और उसी की तरफ़ मैं रुजूअ करता हूं। और ऐ मेरी क़ौम, ऐसा न हो कि मेरा विरोध करके तुम पर वह आफ़त पड़े जो क़ौमे-नूह या क़ौमे-हूद या क़ौमे-सालेह पर

आई थी, और लूत की क़ौम तो तुमसे दूर भी नहीं। और अपने रब से माफ़ी मांगो फिर उसकी तरफ़ पलट आओ। बेशक मेरा रब महरबान और मुहब्बत वाला है। (88-90)

उन्होंने कहा कि ऐ शुऐब, जो तुम कहते हो उसका बहुत सा हिस्सा हमारी समझ में नहीं आता। और हम तो देखते हैं कि तू हममें कमज़ोर है। और अगर तेरी बिरादरी न होती तो हम तुम्हें संगसार (पत्थरों से मार डालना) कर देते। और तुम हम पर कुछ भारी नहीं। शुऐब ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, क्या मेरी बिरादरी तुम पर अल्लाह से ज़्यादा भारी है। और अल्लाह को तुमने पसेपुश्त (पीछे) डाल दिया। बेशक मेरे रब के क़ाबू में है जो कुछ तुम करते हो। और ऐ मेरी क़ौम, तुम अपने तरीक़े पर काम किए जाओ और मैं अपने तरीक़े पर करता रहूंगा। जल्द ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किसके ऊपर रुसवा करने वाला अज़ाब आता है और कौन झूठा है। और इंतज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करने वालों में हूं। (91-93)

और जब हमारा हुक्म आया हमने शुऐब को और जो उसके साथ ईमान लाए थे अपनी रहमत से बचा लिया। और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था उन्हें कड़क ने पकड़ लिया। पस वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए। गोया कि कभी उनमें बसे ही न थे। सुनो, फिटकार है मदयन को जैसे फिटकार हुई थी समूद को। (94-95)

और हमने मूसा को अपनी निशानियों और वाज़ेह सनद (स्पष्ट प्रमाण) के साथ भेजा, फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़। फिर वे फ़िरऔन के हुक्म पर चले हालाँकि फ़िरऔन का हुक्म रास्ती (भलाई) पर न था। क़ियामत के दिन वह अपनी क़ौम के आगे होगा और उन्हें आग पर पहुंचाएगा। और कैसा बुरा घाट है जिस पर वे पहुंचेंगे। और इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी गई और क़ियामत के दिन भी। कैसा बुरा इनाम है जो उन्हें मिला। (96-99)

ये बस्तियों के कुछ हालात हैं जो हम तुम्हें सुना रहे हैं। इनमें से कुछ

अब तक क़ायम हैं और कुछ मिट गईं। और हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया। बल्कि उन्होंने ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया। फिर जब तेरे रब का हुक्म आ गया तो उनके माबूद (पूज्य) उनके कुछ काम न आए जिनको वे अल्लाह के सिवा पुकारते थे। और उन्होंने उनके हक़ में बर्बादी के सिवा और कुछ नहीं बढ़ाया। (100-101)

और तेरे रब की पकड़ ऐसी ही है जबकि वह बस्तियों को उनके ज़ुल्म पर पकड़ता है। बेशक उसकी पकड़ बड़ी दर्दनाक और सख़्त है। इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो आख़िरत के अज़ाब से डरें। वह एक ऐसा दिन है जिसमें सब लोग जमा होंगे। और वह हाज़िरी का दिन होगा। और हम उसे एक मुद्दत के लिए टाल रहे हैं जो मुक़र्रर है। जब वह दिन आएगा तो कोई जान उसकी इजाज़त के बग़ैर कलाम न कर सकेगी। पस उनमें कुछ बदबख़्त (अभागे) होंगे। और कुछ नेकबख़्त (भाग्यशाली)। (102-105)

पस जो लोग बदबख़्त हैं वे आग में होंगे। उन्हें वहां चीख़ना है और दहाड़ना। वे उसमें रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन क़ायम हैं, मगर जो तेरा रब चाहे। बेशक तेरा रब कर डालता है जो चाहता है। और जो लोग नेकबख़्त हैं तो वे जन्नत में होंगे, वे उसमें रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन क़ायम हैं, मगर जो तेरा रब चाहे बख़्शिश है बेइंतिहा। पस तू उन चीज़ों से शक में न रह जिनकी ये लोग इबादत कर रहे हैं। ये तो बस उसी तरह इबादत कर रहे हैं जिस तरह उनसे पहले उनके बाप-दादा इबादत कर रहे थे। और हम उनका हिस्सा उन्हें पूरा-पूरा देंगे बग़ैर किसी कमी के। (106-109)

और हमने मूसा को किताब दी। फिर उसमें फूट पड़ गई। और अगर तेरे रब की तरफ़ से पहले ही एक बात न आ चुकी होती तो उनके दर्मियान फ़ैसला कर दिया जाता। और उन्हें इसमें शुबह है कि वह मुतमइन (संतुष्ट) नहीं होने देता और यक़ीनन तेरा रब हर एक को उसके आमाल का पूरा बदला देगा। वह बाख़बर है उससे जो वे कर रहे हैं। (110-111)

पस तुम जमे रहो जैसा कि तुम्हें हुक्म हुआ है और वे भी जिन्होंने तुम्हारे

साथ तौबा की है और हद से न बढ़ो। बेशक वह देख रहा है जो तुम करते हो। और उनकी तरफ़ न झुको जिन्होंने ज़ुल्म किया, वरना तुम्हें आग पकड़ लेगी और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई मददगार नहीं, फिर तुम कहीं मदद न पाओगे और नमाज़ क़ायम करो दिन के दोनों हिस्सों में और रात के कुछ हिस्से में। बेशक नेकियां दूर करती हैं बुराइयों को। यह याददिहानी (अनुस्मरण) है याददिहानी हासिल करने वालों के लिए और सब्र करो अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र ज़ाया (नष्ट) नहीं करता। (112-115)

पस क्यों न ऐसा हुआ कि तुमसे पहले की क़ौमों में ऐसे अहले-ख़ैर होते जो लोगों को ज़मीन में फ़साद करने से रोकते। ऐसे थोड़े लोग निकले जिनको हमने उनमें से बचा लिया। और ज़ालिम लोग तो उसी ऐश में पड़े रहे जो उन्हें मिला था और वे मुजरिम थे। और तेरा रब ऐसा नहीं कि वह बस्तियों को नाहक़ तबाह कर दे हालाँकि उसके बाशिंदे इस्लाह (सुधार) करने वाले हों। (116-117)

और अगर तेरा रब चाहता तो लोगों को एक ही उम्मत बना देता मगर वे हमेशा इख़्तेलाफ़ (मत-भिन्नता) में रहेंगे सिवा उनके जिन पर तेरा रब रहम फ़रमाए। और उसने इसीलिए उन्हें पैदा किया है। और तेरे रब की बात पूरी हुई कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों से इकट्ठे भर दूंगा। (118-119)

और हम रसूलों के अहवाल से सब चीज़ तुम्हें सुना रहे हैं। जिससे तुम्हारे दिल को मज़बूत करें और इसमें तुम्हारे पास हक़ आया है और मोमिनों के लिए नसीहत और याददिहानी (अनुस्मरण)। और जो लोग ईमान नहीं लाए उनसे कहो कि तुम अपने तरीक़े पर करते रहो और हम अपने तरीक़े पर कर रहे हैं। और इंतज़ार करो हम भी मुंतज़िर हैं। और आसमानों और ज़मीन की छुपी बात अल्लाह के पास है और वही तमाम मामलों का मरजअ (उन्मुख-केन्द्र) है। पस तुम उसकी इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो और तुम्हारा रब उससे बेख़बर नहीं जो तुम कर रहे हो। (120-123)

सूरह-12. यूसुफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़० लाम० रा०। ये वाज़ेह (स्पष्ट) किताब की आयतें हैं। हमने इसे अरबी क़ुरआन बनाकर उतारा है ताकि तुम समझो। हम तुम्हें बेहतरीन सरगुज़श्त (क़िस्से) सुनाते हैं इस क़ुरआन की बदौलत जो हमने तुम्हारी तरफ़ 'वही' (प्रकाशना) किया। इससे पहले बेशक तू बेख़बरों में था। (1-3)

जब यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा कि अब्बाजान! मैंने ख़्वाब में ग्यारह सितारे और सूरज और चांद देखे हैं। मैंने उन्हें देखा कि वे मुझे सज्दा कर रहे हैं। उसके बाप ने कहा कि ऐ मेरे बेटे, तुम अपना यह ख़्वाब अपने भाइयों को न सुनाना कि वे तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई साज़िश करने लगें। बेशक शैतान आदमी का खुला हुआ दुश्मन है। और इसी तरह तेरा रब तुझे मुंतख़ब करेगा और तुम्हें बातों की हक़ीक़त तक पहुंचना सिखाएगा और तुम पर और आले याक़ूब पर अपनी नेमत पूरी करेगा जिस तरह वह इससे पहले तुम्हारे अज्दाद (पूर्वजों) इब्राहीम और इस्हाक़ पर अपनी नेमत पूरी कर चुका है। यक़ीनन तेरा रब अलीम (ज्ञानवान) और हकीम (तत्वदर्शी) है। (4-6)

हक़ीक़त यह है कि यूसुफ़ और उसके भाइयों में पूछने वालों के लिए बड़ी निशानियां हैं। जब उसके भाइयों ने आपस में कहा कि यूसुफ़ और उसका भाई हमारे बाप को हमसे ज़्यादा महबूब हैं। हालाँकि हम एक पूरा जत्था हैं। यक़ीनन हमारा बाप एक खुली हुई ग़लती में मुब्तिला है। यूसुफ़ को क़त्ल कर दो या उसे किसी जगह फेंक दो ताकि तुम्हारे बाप की तवज्जोह सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ हो जाए। और इसके बाद तुम बिल्कुल ठीक हो जाना। उनमें से एक कहने वाले ने कहा कि यूसुफ़ को क़त्ल न करो। अगर तुम कुछ करने ही वाले हो तो उसे किसी अंधे कुएं में डाल दो। कोई राह चलता क़ाफ़िला उसे निकाल ले जाएगा। (7-10)

उन्होंने अपने बाप से कहा, ऐ हमारे बाप, क्या बात है कि आप यूसुफ़ के मामले में हम पर भरोसा नहीं करते। हालाँकि हम तो उसके ख़ैरख़्वाह हैं।

कल उसे हमारे साथ भेज दीजिए, खाए और खेले, और हम उसके निगहबान हैं। बाप ने कहा मैं इससे ग़मगीन होता हूं कि तुम उसे ले जाओ और मुझे अंदेशा है कि उसे कोई भेड़िया खा जाए जबकि तुम उससे ग़ाफ़िल हो। उन्होंने कहा कि अगर उसे भेड़िया खा गया जबकि हम एक पूरी जमाअत हैं, तो हम बड़े ख़सारे (घाटे) वाले साबित होंगे। (11-14)

फिर जब वे उसे ले गए और यह तय कर लिया कि उसे एक अंधे कुएं में डाल दें और हमने यूसुफ़ को 'वही' (प्रकाशना) की कि तू उन्हें उनका यह काम जताएगा और वे तुझे न जानेंगे और वे शाम को अपने बाप के पास रोते हुए आए। उन्होंने कहा कि ऐ हमारे बाप! हम दौड़ का मुक़ाबला करने लगे और यूसुफ़ को हमने अपने सामान के पास छोड़ दिया। फिर उसे भेड़िया खा गया। और आप हमारी बात का यक़ीन न करेंगे चाहे हम सच्चे हों। और वे यूसुफ़ की क़मीज़ पर झूठा ख़ून लगाकर ले आए। बाप ने कहा नहीं, बल्कि तुम्हारे नफ़्स ने तुम्हारे लिए एक बात बना दी है। अब सब्र ही बेहतर है। और जो बात तुम ज़ाहिर कर रहे हो उस पर अल्लाह ही से मदद मांगता हूं। (15-18)

और एक क़ाफ़िला आया तो उन्होंने अपना पानी भरने वाला भेजा। उसने अपना डोल लटकाया। उसने कहा, ख़ुशख़बरी हो यह तो एक लड़का है। और उसे तिजारत का माल समझकर महफ़ूज़ कर लिया। और अल्लाह ख़ूब जानता था जो वे कर रहे थे। और उन्होंने उसे थोड़ी सी क़ीमत चन्द दिरहम के ऐवज़ बेच दिया। और वे उससे बेरग़बत (उदासीन) थे। (19-20)

और अहले-मिस्र में से जिस शख़्स ने उसे ख़रीदा उसने अपनी बीवी से कहा कि इसे अच्छी तरह रखो। उम्मीद है कि वह हमारे लिए मुफ़ीद हो या हम उसे बेटा बना लें। और इस तरह हमने यूसुफ़ को उस मुल्क में जगह दी। और ताकि हम उसे बातों की तावील (निहितार्थ) सिखाएं। और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब (अधिकार प्राप्त) रहता है। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और जब वह अपनी पुख़्तगी को पहुंचा हमने उसे हुक्म और इल्म अता किया। और नेकी करने वालों को हम ऐसा ही बदला देते हैं। (21-22)

और यूसुफ़ जिस औरत के घर में था वह उसे फुसलाने लगी और एक रोज़ दरवाज़े बंद कर दिए और बोली कि आ जा। यूसुफ़ ने कहा ख़ुदा की पनाह। वह मेरा आक़ा है, उसने मुझे अच्छी तरह रखा है। बेशक ज़ालिम लोग कभी फ़लाह नहीं पाते। और औरत ने उसका इरादा कर लिया और वह भी उसका इरादा करता अगर वह अपने रब की बुरहान (स्पष्ट-प्रमाण) न देख लेता। ऐसा हुआ ताकि हम उससे बुराई और बेहयाई को दूर कर दें। बेशक वह हमारे चुने हुए बंदों में से था। (23-24)

और दोनों दरवाज़े की तरफ़ भागे। और औरत ने यूसुफ़ का कुर्ता पीछे से फाड़ दिया। और दोनों ने उसके शौहर को दरवाज़े पर पाया। औरत बोली जो तेरी घरवाली के साथ बुराई का इरादा करे उसकी सज़ा इसके सिवा क्या है कि उसे क़ैद किया जाए या उसे सख़्त अज़ाब दिया जाए। यूसुफ़ ने कहा कि इसी ने मुझे फुसलाने की कोशिश की। और औरत के कुनबे वालों में से एक शख़्स ने गवाही दी कि अगर उसका कुर्ता आगे से फटा हुआ हो तो औरत सच्ची है और वह झूठा है। और अगर उसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ हो तो औरत झूठी है और वह सच्चा है। फिर जब अज़ीज़ ने देखा कि उसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ है तो उसने कहा कि बेशक यह तुम औरतों की चाल है। और तुम्हारी चालें बहुत बड़ी होती हैं। यूसुफ़, इससे दरगुज़र करो। और ऐ औरत! तू अपनी ग़लती की माफ़ी मांग। बेशक तू ही ख़ताकार थी। (25-29)

और शहर की औरतें कहने लगीं कि अज़ीज़ की बीवी अपने नौजवान ग़ुलाम के पीछे पड़ी हुई है। वह उसकी मुहब्बत में फ़रेफ़्ता है। हम देखते हैं कि वह खुली हुई ग़लती पर है। फिर जब उसने उनका फ़रेब सुना तो उसने उन्हें बुला भेजा। और उनके लिए एक मज्लिस तैयार की और उनमें से हर एक को एक-एक छुरी दी और यूसुफ़ से कहा कि तुम उनके सामने आओ। फिर जब औरतों ने उसे देखा तो वे दंग रह गईं। और उन्होंने अपने हाथ काट डाले। और उन्होंने कहा पाक है अल्लाह, यह आदमी नहीं है, यह तो कोई बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है। उसने कहा यह वही है जिसके बारे में तुम मुझे मलामत कर रही थीं और मैंने इसे रिझाने की कोशिश की थी मगर वह बच

गया। और अगर उसने वह नहीं किया जो मैं उससे कह रही हूं तो वह क़ैद में पड़ेगा और ज़रूर बेइज़्ज़त होगा। यूसुफ़ ने कहा, ऐ मेरे रब, क़ैदख़ाना मुझे उस चीज़ से ज़्यादा पसंद है जिसकी तरफ़ ये मुझे बुला रही हैं। और अगर तूने उनके फ़रेब को मुझसे दफ़ा न किया तो मैं उनकी तरफ़ मायल हो जाऊंगा और जाहिलों में से हो जाऊंगा। पस उसके रब ने उसकी दुआ क़ुबूल कर ली और उनके फ़रेब को उससे दफ़ा कर दिया। बेशक वह सुनने वाला और जानने वाला है। (30-34)

फिर निशानियां देख लेने के बाद उन लोगों की समझ में आया कि एक मुद्दत के लिए इसको क़ैद कर दें। और क़ैदख़ाने में उसके साथ दो और जवान दाख़िल हुए। उनमें से एक ने (एक रोज़) कहा कि मैं ख़्वाब में देखता हूं कि मैं शराब निचोड़ रहा हूं और दूसरे ने कहा कि मैं ख़्वाब में देखता हूं कि अपने सर पर रोटी उठाए हुए हूं जिसमें से चिड़ियां खा रही हैं। हमें इसकी ताबीर (अर्थ) बताओ। हम देखते हैं कि तुम नेक लोगों में से हो। (35-36)

यूसुफ़ ने कहा, जो खाना तुम्हें मिलता है उसके आने से पहले मैं तुम्हें इन ख़्वाबों की ताबीर बता दूंगा। यह उस इल्म में से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है। मैंने उन लोगों के मज़हब को छोड़ा जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और वे लोग आख़िरत (परलोक) के मुंकिर हैं और मैंने अपने बुज़ुर्गों इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब के मज़हब की पैरवी की। हमें यह हक़ नहीं कि हम किसी चीज़ को अल्लाह का शरीक ठहराएं। यह अल्लाह का फ़ज़्ल है हमारे ऊपर और सब लोगों के ऊपर मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। ऐ मेरे जेल के साथियो, क्या जुदा-जुदा कई माबूद (पूज्य) बेहतर हैं या अल्लाह अकेला ज़बरदस्त। तुम उसके सिवा नहीं पूजते हो मगर कुछ नामों को जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं। अल्लाह ने इसकी कोई सनद नहीं उतारी। इक़्तेदार (संप्रभुत्व) सिर्फ़ अल्लाह के लिए है। उसने हुक्म दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो। यही सीधा दीन है। मगर बहुत लोग नहीं जानते। (37-40)

ऐ मेरे क़ैदख़ाने के साथियो! तुममें से एक अपने आक़ा को शराब पिलाएगा। और जो दूसरा है उसे सूली दी जाएगी। फिर परिंदे उसके सर में से खाएंगे। उस अम्र (मामला) का फ़ैसला हो गया जिस अम्र के बारे में तुम पूछ रहे थे। और यूसुफ़ ने उस शख़्स से कहा जिसके बारे में उसने गुमान किया था कि बच जाएगा कि अपने आक़ा के पास मेरा ज़िक्र करना। फिर शैतान ने उसे अपने आक़ा से ज़िक्र करना भुला दिया। पस वह क़ैदख़ाने में कई साल पड़ा रहा। (41-42)

और बादशाह ने कहा कि मैं ख़्वाब में देखता हूं कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालियां हैं और दूसरी सात सूखी, ऐ दरबार वालो! मेरे ख़्वाब की ताबीर मुझे बताओ, अगर तुम ख़्वाब की ताबीर देते हो। वे बोले ये ख़्याली ख़्वाब हैं। और हमें ऐसे ख़्वाबों की ताबीर मालूम नहीं। उन दो क़ैदियों में से जो शख़्स बच गया था और उसे एक मुद्दत के बाद याद आया, उसने कहा कि मैं तुम लोगों को इसकी ताबीर बताऊंगा, पस मुझे (यूसुफ़ के पास) जाने दो। (43-45)

यूसुफ़ ऐ सच्चे, मुझे इस ख़्वाब का मतलब बता कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात बालें हरी हैं और सात सूखी। ताकि मैं उन लोगों के पास जाऊं ताकि वे जान लें। यूसुफ़ ने कहा कि तुम सात साल तक बराबर खेती करोगे। पस जो फ़स्ल तुम काटो उसे उसकी बालियों में छोड़ दो मगर थोड़ा सा जो तुम खाओ। फिर इसके बाद सात सख़्त साल आएंगे। उस ज़माने में वह ग़ल्ला खा लिया जाएगा जो तुम उस वक़्त के लिए जमा करोगे, सिवाय थोड़े के जो तुम महफ़ूज़ कर लोगे। फिर इसके बाद एक साल आएगा जिसमें लोगों पर मेह बरसेगा। और वे उसमें रस निचोड़ेंगे। (46-49)

और बादशाह ने कहा कि उसे मेरे पास लाओ। फिर जब क़ासिद (संदेशवाहक) उसके पास आया तो उसने कहा कि तुम अपने आक़ा के पास वापस जाओ और उससे पूछो कि उन औरतों का क्या मामला है जिन्होंने अपने

हाथ काट लिए थे। मेरा रब तो उनके फ़रेब से ख़ूब वाक़िफ़ है। बादशाह ने पूछा, तुम्हारा क्या माजरा है जब तुमने यूसुफ़ को फुसलाने की कोशिश की थी। उन्होंने कहा कि पाक है अल्लाह, हमने उसमें कुछ बुराई नहीं पाई। अज़ीज़ की बीवी ने कहा अब हक़ खुल गया। मैंने ही इसे फुसलाने की कोशिश की थी और बिलाशुबह वह सच्चा है। (50-51)

यह इसलिए कि (अज़ीज़े-मिस्र) यह जान ले कि मैंने दरपर्दा उसकी ख़ियानत नहीं की। और बेशक अल्लाह ख़ियानत (विश्वासघात) करने वालों की चाल चलने नहीं देता। और मैं अपने नफ़्स को बरी नहीं करता। नफ़्स (मन) तो बदी ही सिखाता है मगर यह कि मेरा रब रहम फ़रमाए। बेशक मेरा रब बख़्शने वाला महरबान है। (52-53)

और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास लाओ। मैं उसे ख़ास अपने लिए रखूंगा। फिर जब यूसुफ़ ने उससे बात की तो बादशाह ने कहा, आज से तुम हमारे यहां मुअज़्ज़ज़ और मोअतमद (विश्वसनीय) हुए। यूसुफ़ ने कहा मुझे मुल्क के ख़ज़ानों पर मुक़र्रर कर दो। मैं निगहबान हूं और जानने वाला हूं। और इस तरह हमने यूसुफ़ को मुल्क में बाइख़्तियार बना दिया। वह उसमें जहां चाहे जगह बनाए। हम जिस पर चाहें अपनी इनायत मुतवज्जह कर दें। और हम नेकी करने वालों का अज्र ज़ाया (नष्ट) नहीं करते। और आख़िरत का अज्र (प्रतिफल) कहीं ज़्यादा बढ़कर है ईमान और तक़वा (ईश-भय) वालों के लिए। (54-57)

और यूसुफ़ के भाई मिस्र आए फिर उसके पास पहुंचे, पस यूसुफ़ ने उन्हें पहचान लिया। और उन्होंने यूसुफ़ को नहीं पहचाना। और जब उसने उनका सामान तैयार कर दिया तो कहा कि अपने सौतेले भाई को भी मेरे पास ले आना। तुम देखते नहीं हो कि मैं ग़ल्ला भी पूरा नापकर देता हूं और बेहतरीन मेज़बानी करने वाला भी हूं। और अगर तुम उसे मेरे पास न लाए तो न मेरे पास तुम्हारे लिए ग़ल्ला है और न तुम मेरे पास आना। उन्होंने कहा कि हम उसके बारे में उसके बाप को राज़ी करने की कोशिश करेंगे और हमें यह काम करना है। (58-61)

और उसने अपने कारिंदों से कहा कि इनका माल इनके असबाब में रख दो ताकि जब वे अपने घर पहुंचें तो उसे पहचान लें, शायद वे फिर आएं। फिर जब वे अपने बाप के पास लौटे तो कहा कि ऐ बाप, हमसे ग़ल्ला रोक दिया गया, पस हमारे भाई (बिन यामीन) को हमारे साथ जाने दे कि हम ग़ल्ला लाएं और हम उसके निगहबान हैं। याक़ूब ने कहा, क्या मैं इसके बारे में तुम्हारा वैसा ही एतबार करूं जैसा इससे पहले इसके भाई के बारे में तुम्हारा एतबार कर चुका हूं। पस अल्लाह बेहतर निगहबान है और वह सब महरबानों से ज़्यादा महरबान है। (62-64)

और जब उन्होंने अपना सामान खोला तो देखा कि उनकी पूंजी भी उन्हें लौटा दी गई है। उन्होंने कहा, ऐ हमारे बाप! और हमें क्या चाहिए। यह हमारी पूंजी भी हमें लौटा दी गई है। अब हम जाएंगे और अपने अहल व अयाल (परिवारजनों) के लिए रसद लाएंगे। और अपने भाई की हिफ़ाज़त करेंगे। और एक ऊंट का बोझ ग़ल्ला और ज़्यादा लाएंगे। यह ग़ल्ला तो थोड़ा है। याक़ूब ने कहा, मैं उसे तुम्हारे साथ हरगिज़ न भेजूंगा जब तक तुम मुझसे ख़ुदा के नाम पर यह अहद न करो कि तुम इसे ज़रूर मेरे पास ले आओगे, इल्ला यह कि तुम सब घिर जाओ। फिर जब उन्होंने उसे अपना पक्का क़ौल (वादा) दे दिया, उसने कहा कि जो हम कह रहे हैं उस पर अल्लाह निगहबान है। (65-66)

और याक़ूब ने कहा कि ऐ मेरे बेटो, तुम सब एक ही दरवाज़े से दाख़िल न होना बल्कि अलग-अलग दरवाज़ों से दाख़िल होना। और मैं तुम्हें अल्लाह की किसी बात से नहीं बचा सकता। हुक्म तो बस अल्लाह का है। मैं उसी पर भरोसा रखता हूं और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए। और जब वे दाख़िल हुए जहां से उनके बाप ने उन्हें हिदायत की थी, वह उन्हें नहीं बचा सकता था अल्लाह की किसी बात से। वह बस याक़ूब के दिल में एक ख़्याल था जो उसने पूरा किया। बेशक वह हमारी दी हुई तालीम से इल्म वाला था मगर अक्सर लोग नहीं जानते। (67-68)

और जब वे यूसुफ़ के पास पहुंचे तो उसने अपने भाई को अपने पास

रखा। कहा कि मैं तुम्हारा भाई (यूसुफ़) हूं। पस ग़मगीन न हो उससे जो वे कर रहे हैं। फिर जब उनका सामान तैयार करा दिया तो पीने का प्याला अपने भाई के असबाब में रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा कि ऐ क़ाफ़िले वालो, तुम लोग चोर हो। उन्होंने उनकी तरफ़ मुतवज्जह होकर कहा, तुम्हारी क्या चीज़ खोई गई है। उन्होंने कहा, हम शाही पैमाना नहीं पा रहे हैं। और जो उसे लाएगा उसके लिए एक ऊंट के बोझ भर ग़ल्ला है और मैं इसका ज़िम्मेदार हूं। उन्होंने कहा, ख़ुदा की क़सम! तुम्हें मालूम है कि हम लोग इस मुल्क में फ़साद करने के लिए नहीं आए और न हम कभी चोर थे। उन्होंने कहा अगर तुम झूठे निकले तो उस चोरी करने वाले की सज़ा क्या है। उन्होंने कहा, इसकी सज़ा यह है कि जिस शख़्स के असबाब में मिले पस वही शख़्स अपनी सज़ा है। हम लोग ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। फिर उसने उसके (छोटे) भाई से पहले उनके थैलों की तलाशी लेना शुरू किया। फिर उसके भाई के थैले से उसे बरामद कर लिया। इस तरह हमने यूसुफ़ के लिए तदबीर की। वह बादशाह के क़ानून की रू से अपने भाई को नहीं ले सकता था मगर यह कि अल्लाह चाहे। हम जिसके दर्जे चाहते हैं बुलन्द कर देते हैं। और हर इल्म वाले के उपर एक इल्म वाला है। (69-76)

उन्होंने कहा कि अगर यह चोरी करे तो इससे पहले इसका एक भाई भी चोरी कर चुका है। पस यूसुफ़ ने इस बात को अपने दिल में रखा। और इसे उन पर ज़ाहिर नहीं किया। उसने अपने जी में कहा, तुम ख़ुद ही बुरे लोग हो, और जो कुछ तुम बयान कर रहे हो अल्लाह उसे ख़ूब जानता है। उन्होंने कहा कि ऐ अज़ीज़, इसका एक बहुत बूढ़ा बाप है सो तू इसकी जगह हममें से किसी को रख ले। हम तुझे बहुत नेक देखते हैं। उसने कहा, अल्लाह की पनाह कि हम उसके सिवा किसी को पकड़ें जिसके पास हमने अपनी चीज़ पाई है। इस सूरत में हम ज़रूर ज़ालिम ठहरेंगे। (77-79)

जब वे उससे नाउम्मीद हो गए तो अलग होकर बाहम मश्विरा करने लगे। उनके बड़े ने कहा क्या तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारे बाप ने अल्लाह के नाम पर पक्का इक़रार लिया और इससे पहले यूसुफ़ के मामले में जो

ज़्यादती तुम कर चुके हो वह भी तुम्हें मालूम है। पस मैं इस सरज़मीन से हरगिज़ नहीं टलूंगा जब तक मेरा बाप मुझे इजाज़त न दे या अल्लाह मेरे लिए कोई फ़ैसला फ़रमा दे। और वह सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है। तुम लोग अपने बाप के पास जाओ और कहो कि ऐ हमारे बाप, तेरे बेटे ने चोरी की और हम वही बात कह रहे हैं जो हमें मालूम हुई और हम ग़ैब (अप्रकट) के निगहबान नहीं और तू उस बस्ती के लोगों से पूछ ले जहां हम थे और उस क़ाफ़िले से पूछ ले जिसके साथ हम आए हैं। और हम बिल्कुल सच्चे हैं। (80-82)

बाप ने कहा, बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली है, पस मैं सब्र करूंगा। उम्मीद है कि अल्लाह उन सबको मेरे पास लाएगा। वह जानने वाला, हकीम (तत्वदर्शी) है। और उसने रुख़ फेर लिया और कहा, हाय यूसुफ़, और ग़म से उसकी आंखें सफ़ेद पड़ गईं। वह घुटा-घुटा रहने लगा। उन्होंने कहा, ख़ुदा की क़सम! तू यूसुफ़ ही की याद में रहेगा। यहां तक कि घुल जाए या हलाक हो जाए। उसने कहा, मैं अपनी परेशानी और अपने ग़म का शिकवा सिर्फ़ अल्लाह से करता हूं और मैं अल्लाह की तरफ़ से वे बातें जानता हूं जो तुम नहीं जानते। ऐ मेरे बेटो, जाओ यूसुफ़ और उसके भाई की तलाश करो और अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो। अल्लाह की रहमत से सिर्फ़ मुंकिर ही नाउम्मीद होते हैं। (83-87)

फिर जब वे यूसुफ़ के पास पहुंचे, उन्होंने कहा, ऐ अज़ीज़, हमें और हमारे घरवालों को बड़ी तकलीफ़ पहुंच रही है और हम थोड़ी पूंजी लेकर आए हैं, तू हमें पूरा ग़ल्ला दे और हमें सदक़ा भी दे। बेशक अल्लाह सदक़ा करने वालों को उसका बदला देता है। उसने कहा, क्या तुम्हें ख़बर है कि तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया जबकि तुम्हें समझ न थी। उन्होंने कहा, क्या सचमुच तुम ही यूसुफ़ हो। उसने कहा हां मैं यूसुफ़ हूं और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर फ़ज़्ल फ़रमाया। जो शख़्स डरता है और सब्र करता है तो अल्लाह नेक काम करने वालों का अज्र (प्रतिफल) ज़ाया (नष्ट) नहीं करता। (88-90)

भाइयों ने कहा, ख़ुदा की क़सम, अल्लाह ने तुम्हें हमारे ऊपर फ़ज़ीलत दी, और बेशक हम ग़लती पर थे। यूसुफ़ ने कहा, आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं, अल्लाह तुम्हें माफ़ करे और वह सब महरबानों से ज़्यादा महरबान है। तुम मेरा यह कुर्ता ले जाओ और इसे मेरे बाप के चेहरे पर डाल दो, उसकी बीनाई (दृष्टि) पलट आएगी और तुम अपने घरवालों के साथ मेरे पास आ जाओ। (91-93)

और जब क़ाफ़िला (मिस्र से) चला तो उसके बाप ने (कनआन में) कहा कि अगर तुम मुझे बुढ़ापे में बहकी बातें करने वाला न समझो तो मैं यूसुफ़ की ख़ुशबू पा रहा हूं। लोगों ने कहा, ख़ुदा की क़सम, तुम तो अभी तक अपने पुराने ग़लत ख़्याल में मुब्तिला हो। पस जब ख़ुशख़बरी देने वाला आया, उसने कुर्ता याक़ूब के चहरे पर डाल दिया, पस उसकी बीनाई (दृष्टि) लौट आई। उसने कहा, क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं अल्लाह की जानिब से वे बातें जानता हूं जो तुम नहीं जानते। बिरादराने-यूसुफ़ ने कहा, ऐ हमारे बाप, हमारे गुनाहों की माफ़ी की दुआ कीजिए। बेशक हम ख़तावार थे। याक़ूब ने कहा, मैं अपने रब से तुम्हारे लिए मग़्फ़िरत (क्षमा) की दुआ करूंगा। बेशक वह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (94-98)

पस जब वे सब यूसुफ़ के पास पहुंचे तो उसने अपने वालिदैन को अपने पास बिठाया। और कहा कि मिस्र में इंशाअल्लाह अम्न-चैन से रहो और उसने अपने वालिदैन को तख़्त पर बिठाया और सब उसके लिए सज्दे में झुक गए। और यूसुफ़ ने कहा ऐ बाप, यह है मेरे ख़्वाब की ताबीर जो मैंने पहले देखा था। मेरे रब ने उसे सच्चा कर दिया और उसने मेरे साथ एहसान किया कि उसने मुझे क़ैद से निकाला और तुम सबको देहात से यहां लाया बाद इसके कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के दर्मियान फ़साद डाल दिया था। बेशक मेरा रब जो कुछ चाहता है उसकी उम्दा तदबीर कर लेता है, वह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (99-100)

ऐ मेरे रब, तूने मुझे हुकूमत में से हिस्सा दिया और मुझे बातों की ताबीर करना सिखाया। ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, तू मेरा कारसाज़

(कार्य-साधक) है, दुनिया में भी और आख़िरत में भी। मुझे फ़रमांबरदारी की हालत में वफ़ात दे और मुझे नेक बंदों में शामिल फ़रमा। (101)

यह ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम तुम पर 'वही' (प्रकाशना) कर रहे हैं और तुम उस वक़्त उनके पास मौजूद न थे जब यूसुफ़ के भाइयों ने अपनी राय पुख़्ता की और वे तदबीरें कर रहे थे और तुम चाहे कितना ही चाहो, अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं। और तुम इस पर उनसे काई मुआवज़ा (बदला) नहीं मांगते। यह तो सिर्फ़ एक नसीहत है तमाम जहान वालों के लिए। (102-104)

और आसमानों और ज़मीन में कितनी ही निशानियां हैं जिन पर उनका गुज़र होता रहता है और वे उन पर ध्यान नहीं करते। और अक्सर लोग जो ख़ुदा को मानते हैं वे उसके साथ दूसरों को शरीक भी ठहराते हैं। क्या ये लोग इस बात से मुतमइन हैं कि उन पर अज़ाबे-इलाही की कोई आफ़त आ पड़े या अचानक उन पर क़ियामत आ जाए और वे इससे बेख़बर हों। कहो यह मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूं समझ-बूझ कर, मैं भी और वे लोग भी जिन्होंने मेरी पैरवी की है। और अल्लाह पाक है और मैं मुश्रिकों (बहुदेववादियों) में से नहीं हूं। (105-108)

और हमने तुमसे पहले मुख़्तलिफ़ बस्ती वालों में से जितने रसूल भेजे सब आदमी ही थे। हम उनकी तरफ़ 'वही' (प्रकाशना) करते थे। क्या ये लोग ज़मीन पर चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जो उनसे पहले थे और आख़िरत (परलोक) का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो डरते हैं, क्या तुम समझते नहीं। यहां तक कि जब पैग़म्बर मायूस हो गए और वे ख़्याल करने लगे कि उनसे झूठ कहा गया था तो उन्हें हमारी मदद आ पहुंची। पस नजात (मुक्ति) मिली जिसे हमने चाहा और मुजरिम लोगों से हमारा अज़ाब टाला नहीं जा सकता। (109-110)

उनके क़िस्सों में समझदार लोगों के लिए बड़ी इबरत (सीख) है। यह कोई गढ़ी हुई बात नहीं, बल्कि तस्दीक़ (पुष्टि) है उस चीज़ की जो इससे

पहले मौजूद है। और तफ़्सील है हर चीज़ की। और हिदायत और रहमत है ईमान वालों के लिए। (111)

सूरह-13. अर-रअद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़० लाम० मीम० रा०। ये किताबे-इलाही की आयतें हैं। और जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ़ से उतरा है वह हक़ (सत्य) है। मगर अक्सर लोग नहीं मानते। अल्लाह ही है जिसने आसमान को बुलन्द किया बग़ैर ऐसे सुतून (स्तंभ) के जो तुम्हें नज़र आएं। फिर वह अपने तख़्त पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ और उसने सूरज और चांद को एक क़ानून का पाबंद बनाया, हर एक एक मुक़र्रर वक़्त पर चलता है। अल्लाह ही हर काम का इंतज़ाम करता है। वह निशानियों को खोल-खोलकर बयान करता है ताकि तुम अपने रब से मिलने का यक़ीन करो। (1-2)

और वही है जिसने ज़मीन को फैलाया। और उसमें पहाड़ और नदियां रख दीं और हर क़िस्म के फलों के जोड़े इसमें पैदा किए। वह रात को दिन पर उढ़ा देता है। बेशक इन चीज़ों में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करें। (3)

और ज़मीन में पास-पास मुख़्तलिफ़ क़ितअे (भू-भाग) हैं और अंगूरों के बाग़ हैं और खेती है और खजूरें हैं, उनमें से कुछ इकहरे हैं और कुछ दोहरे। सब एक ही पानी से सैराब होते हैं। और हम एक को दूसरे पर पैदावार में फ़ौक़ियत (श्रेष्ठता) देते हैं बेशक इनमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करें। (4)

और अगर तुम तअज्जुब (आश्चर्य) करो तो तअज्जुब के क़ाबिल उनका यह क़ौल है कि— जब वे मिट्टी हो जाएंगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा किए जाएंगे। यह वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब का इंकार किया और यह वे लोग हैं जिनकी गर्दनों में तौक़ पड़े हुए हैं। वे आग वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (5)

वे भलाई से पहले बुराई के लिए जल्दी कर रहे हैं। हालाँकि उनसे पहले मिसालें गुज़र चुकी हैं और तुम्हारा रब लोगों के ज़ुल्म के बावजूद उन्हें माफ़ करने वाला है। और बेशक तुम्हारा रब सख़्त सज़ा देने वाला है। (6)

और जिन लोगों ने इंकार किया वे कहते हैं कि इस शख़्स पर उसके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी। तुम तो सिर्फ़ ख़बरदार कर देने वाले हो। और हर क़ौम के लिए एक राह बताने वाला है। (7)

अल्लाह जानता है हर मादा के हमल (गर्भ) को। और जो कुछ रहमों में घटता या बढ़ता है उसे भी। और हर चीज़ का उसके यहां एक अंदाज़ा है। वह पोशीदा और ज़ाहिर को जानने वाला है, सबसे बड़ा है, सबसे बरतर। तुममें से कोई शख़्स चुपके से बात कहे और जो पुकारकर कहे और जो रात में छुपा हुआ हो। और दिन में चल रहा हो, ख़ुदा के लिए सब यकसां (समान) हैं। (8-10)

हर शख़्स के आगे और पीछे उसके निगरां (रक्षक) हैं जो अल्लाह के हुक्म से उसकी देखभाल कर रहे हैं। बेशक अल्लाह किसी क़ौम की हालत को नहीं बदलता जब तक कि वे उसे न बदल डालें जो उनके जी में है। और जब अल्लाह किसी क़ौम पर कोई आफ़त लाना चाहता है तो फिर उसके हटने की कोई सूरत नहीं और अल्लाह के सिवा उसके मुक़ाबले में कोई उनका मददगार नहीं। (11)

वही है जो तुम्हें बिजली दिखाता है जिससे डर भी पैदा होता है और उम्मीद भी। और वही है जो पानी से लदे हुए बादल उठाता है। और बिजली की गरज उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी पाकी बयान करती है और फ़रिश्ते भी उसके ख़ौफ़ से। और वह बिजलियां भेजता है, फिर जिस पर चाहे उन्हें गिरा देता है और वे लोग ख़ुदा के बाब (विषय) में झगड़ते हैं, हालाँकि वह ज़बरदस्त है क़ुव्वत वाला है। (12-13)

सच्चा पुकारना सिर्फ़ ख़ुदा के लिए है। और उसके सिवा जिनको लोग पुकारते हैं वे उनकी इससे ज़्यादा दादरसी (सहायता) नहीं कर सकते जितना

पानी उस शख़्स की करता है जो अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ फैलाए हुए हो ताकि वह उसके मुंह तक पहुंच जाए और वह उसके मुंह तक पहुंचने वाला नहीं। और मुंकिरीन की पुकार सब बेफ़ायदा है। (14)

और आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं सब ख़ुदा ही को सज्दा करते हैं। ख़ुशी से या मजबूरी से और उनके साये भी सुबह व शाम। कहो, आसमानों और ज़मीन का रब कौन है। कह दो कि अल्लाह। कहो, क्या फिर भी तुमने उसके सिवा ऐसे मददगार बना रखे हैं जो ख़ुद अपनी ज़ात के नफ़ा और नुक़सान का भी इख़्तियार नहीं रखते। कहो, क्या अंधा और आंखों वाला दोनों बराबर हो सकते हैं। या क्या अंधेरा और उजाला दोनों बराबर हो जाएंगे। क्या उन्होंने ख़ुदा के ऐसे शरीक ठहराए हैं जिन्होंने भी पैदा किया है जैसा कि अल्लाह ने पैदा किया, फिर पैदाइश उनकी नज़र में मुशतबह (संदिग्ध) हो गई। कहो, अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वही है अकेला, ज़बरदस्त। (15-16)

अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर नाले अपनी-अपनी मिक़्दार के मुवाफ़िक़ बह निकले। फिर सैलाब ने उभरते झाग को उठा लिया और इसी तरह का झाग उन चीज़ों में भी उभर आता है जिन्हें लोग ज़ेवर या असबाब बनाने के लिए आग में पिघलाते हैं। इस तरह अल्लाह हक़ (सत्य) और बातिल (असत्य) की मिसाल बयान करता है। पस झाग तो सूखकर जाता रहता है और जो चीज़ इंसानों को नफ़ा पहुंचाने वाली है वह ज़मीन में ठहर जाती है। अल्लाह इसी तरह मिसालें बयान करता है। (17)

जिन लोगों ने अपने रब की पुकार को लब्बैक कहा उनके लिए भलाई है और जिन लोगों ने उसकी पुकार को न माना, अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है, और उसके बराबर और भी तो वह सब अपनी रिहाई के लिए दे डालें। उन लोगों का हिसाब सख़्त होगा और उनका ठिकाना जहन्नम होगा। और वह कैसा बुरा ठिकाना है। (18)

जो शख़्स यह जानता है कि जो कुछ तुम्हारे रब की तरफ़ से उतारा

गया है वह हक़ (सत्य) है, क्या वह उसके मानिंद हो सकता है जो अंधा है। नसीहत तो अक़्ल वाले लोग ही क़ुबूल करते हैं। (19)

वे लोग जो अल्लाह के अहद (वचन) को पूरा करते हैं और उसके अहद को नहीं तोड़ते। और जो उसे जोड़ते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और वे अपने रब से डरते हैं और वे बुरे हिसाब का अंदेशा रखते हैं और जिन्होंने अपने रब की रिज़ा के लिए सब्र किया। और नमाज़ क़ायम की। और हमारे दिए में से पोशीदा और एलानिया ख़र्च किया। और जो बुराई को भलाई से मिटाते हैं। आख़िरत का घर इन्हीं लोगों के लिए है। अबदी (चिरस्थाई) बाग़ जिनमें वे दाख़िल होंगे। और वे भी जो उसके अहल बनें, उनके आबा व अज्दाद (पूर्वज) और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से। और फ़रिश्ते हर दरवाज़े से उनके पास आएंगे, कहेंगे तुम लोगों पर सलामती हो उस सब्र के बदले जो तुमने किया। पस क्या ही ख़ूब है यह आख़िरत का घर। (20-24)

और जो लोग अल्लाह के अहद को मज़बूत करने के बाद तोड़ते हैं और उसे काटते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और ज़मीन में फ़साद करते हैं, ऐसे लोगों पर लानत है और उनके लिए बुरा घर है। अल्लाह जिसे चाहता है रोज़ी ज़्यादा देता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। और वे दुनिया की ज़िंदगी पर .खुश हैं। और दुनिया की ज़िंदगी आख़िरत के मुक़ाबले में एक मताए क़लील (अल्प सुख-सामग्री) के सिवा और कुछ नहीं। (25-26)

और जिन्होंने इंकार किया वे कहते हैं कि इस शख़्स पर उसके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई। कहो कि अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह करता है और वह रास्ता उसे दिखाता है जो उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो। वे लोग जो ईमान लाए और जिनके दिल अल्लाह की याद से मुतमइन होते हैं। सुनो, अल्लाह की याद ही से दिलों को इत्मीनान हासिल होता है। जो ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे काम किए उनके लिए .खुशख़बरी है और अच्छा ठिकाना है। (27-29)

इसी तरह हमने तुम्हें भेजा है, एक उम्मत में जिससे पहले बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं, ताकि तुम लोगों को वह पैग़ाम सुना दो जो हमने तुम्हारी तरफ़ भेजा है। और वे महरबान ख़ुदा का इंकार कर रहे हैं। कहो कि वही मेरा रब है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की तरफ़ लौटना है। (30)

और अगर ऐसा क़ुरआन उतरता जिससे पहाड़ चलने लगते, या उससे ज़मीन टुकड़े हो जाती या उससे मुर्दे बोलने लगते— बल्कि सारा इख़्तियार अल्लाह ही के लिए है। क्या ईमान लाने वालों को इससे इत्मीनान नहीं कि अगर अल्लाह चाहता तो सारे लोगों को हिदायत दे देता। और इंकार करने वालों पर कोई न कोई आफ़त आती रहती है, उनके आमाल के सबब से, या उनकी बस्ती के क़रीब कहीं नाज़िल होती रहेगी, यहां तक कि अल्लाह का वादा आ जाए। यक़ीनन अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। और तुमसे पहले भी रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया तो मैंने इंकार करने वालों को ढील दी, फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया। तो देखो कैसी थी मेरी सज़ा। (31-32)

फिर क्या जो हर शख़्स से उसके अमल का हिसाब करने वाला है, और लोगों ने अल्लाह के शरीक बना लिए हैं। कहो कि उनका नाम लो। क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ की ख़बर दे रहे हो जिसे वह ज़मीन में नहीं जानता। या तुम ऊपर ही ऊपर बातें कर रहे हो बल्कि इंकार करने वालों को उनका फ़रेब ख़ुशनुमा बना दिया गया है। और वे रास्ते से रोक दिए गए हैं। और अल्लाह जिसे गुमराह करे उसे कोई राह बताने वाला नहीं। उनके लिए दुनिया की ज़िंदगी में भी अज़ाब है और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत सख़्त है। कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला नहीं। (33-34)

और जन्नत की मिसाल जिसका मुत्तक़ियों (डर रखने वालों) से वादा किया गया है यह है कि उसके नीचे नहरें बहती होंगी। उसका फल और साया हमेशा रहेगा। यह अंजाम उन लोगों का है जो ख़ुदा से डरें और मुंकिरों का अंजाम आग है। (35)

और जिन लोगों को हमने किताब दी थी वे उस चीज़ पर ख़ुश हैं जो तुम

पर उतारी गई है। और उन गिरोहों में ऐसे भी हैं जो उसके कुछ हिस्से का इंकार करते हैं। कहो कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूं और किसी को उसका शरीक न ठहराऊं। मैं उसी की तरफ़ बुलाता हूं और उसी की तरफ़ मेरा लौटना है और इसी तरह हमने उसे एक हुक्म की हैसियत से अरबी में उतारा है। और अगर तुम उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी करो बाद इसके कि तुम्हारे पास इल्म आ चुका है तो ख़ुदा के मुक़ाबले में तुम्हारा न कोई मददगार होगा और न कोई बचाने वाला। (36-37)

और हमने तुमसे पहले कितने रसूल भेजे और हमने उन्हें बीवियां और औलाद अता किया और किसी रसूल के लिए यह मुमकिन नहीं कि वह अल्लाह की आज्ञा के बग़ैर कोई निशानी ले आए। हर एक वादा लिखा हुआ है। अल्लाह जिसे चाहे मिटाता है और जिसे चाहे बाक़ी रखता है। और उसी के पास है अस्ल किताब। (38-39)

और जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं उसका कुछ हिस्सा हम तुम्हें दिखा दें या हम तुम्हें वफ़ात दे दें, पस तुम्हारे ऊपर सिर्फ़ पहुंचा देना है और हमारे ऊपर है हिसाब लेना। क्या वे देखते नहीं कि हम ज़मीन की तरफ़ उसे उसके अतराफ़ (चतुर्दिक) से कम करते चले आ रहे हैं। और अल्लाह फ़ैसला करता है, कोई उसके फ़ैसले को हटाने वाला नहीं और वह जल्द हिसाब लेने वाला है। जो उनसे पहले थे उन्होंने भी तदबीरें कीं मगर तमाम तदबीरें अल्लाह के इख़्तियार में हैं। वह जानता है कि हर एक क्या कर रहा है और मुंकिरीन जल्द जान लेंगे कि आख़िरत का घर किस के लिए है। (40-42)

और मुंकिरीन कहते हैं कि तुम ख़ुदा के भेजे हुए नहीं हो, कहो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान अल्लाह की गवाही काफ़ी है। और उसकी गवाही जिसके पास किताब का इल्म है। (43)

सूरह-14. इब्राहीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़० लाम० रा०। यह किताब है जिसे हमने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया है ताकि तुम लोगों को अंधेरों से निकाल कर उजाले की तरफ़ लाओ, उनके रब के हुक्म से ख़ुदाए अज़ीज़ (प्रभुत्वशाली) व हमीद (प्रशंसित) के रास्ते की तरफ़, उस अल्लाह की तरफ़ कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब उसी का है और मुंकिरों के लिए एक सख़्त अजाब शदीद की तबाही है जो कि आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िंदगी को पसंद करते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उसमें कजी (टेढ़) निकालना चाहते हैं। ये लोग रास्ते से भटक कर दूर जा पड़े हैं। (1-3)

और हमने जो पैग़म्बर भी भेजा उसकी क़ौम की ज़बान में भेजा ताकि वह उनसे बयान कर दे फिर अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है। वह ज़बरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (4)

और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि अपनी क़ौम को अंधेरों से निकाल कर उजाले में लाओ और उन्हें अल्लाह के दिनों की याद दिलाओ। बेशक उनके अंदर बड़ी निशानियां हैं हर उस शख़्स के लिए जो सब्र और शुक्र करने वाला हो। (5)

और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अपने ऊपर अल्लाह के उस इनाम को याद करो जबकि उसने तुम्हें फ़िरऔन की क़ौम से छुड़ाया जो तुम्हें सख़्त तकलीफ़ें पहुंचाते थे और वे तुम्हारे लड़कों को मार डालते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िंदा रखते थे और इसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ा इम्तेहान था। और जब तुम्हारे रब ने तुम्हें आगाह कर दिया कि अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें ज़्यादा दूंगा। और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो मेरा अज़ाब बड़ा सख़्त है। और मूसा ने कहा कि अगर तुम इंकार करो और ज़मीन के सारे लोग भी मुंकिर हो जाएं तो अल्लाह बेपरवा है, ख़ूबियों वाला है। (6-8)

क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जो तुमसे पहले गुज़र चुके

हैं— क़ौमे नूह और आद और समूद और जो लोग इनके बाद हुए हैं, जिन्हें ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जानता। उनके पैग़म्बर उनके पास दलाइल (स्पष्ट प्रमाण) लेकर आए तो उन्होंने अपने हाथ उनके मुंह में दे दिए और कहा कि जो तुम्हें देकर भेजा गया है, हम उसे नहीं मानते और जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो हम उसके बारे में सख़्त उलझन वाले शक में पड़े हुए हैं। (9)

उनके पैग़म्बरों ने कहा, क्या ख़ुदा के बारे में शक है जो आसमानों और ज़मीन को वजूद में लाने वाला है। वह तुम्हें बुला रहा है कि तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे और तुम्हें एक मुक़र्रर मुद्दत तक मोहलत दे। उन्होंने कहा कि तुम इसके सिवा कुछ नहीं कि हमारे जैसे एक आदमी हो। तुम चाहते हो कि हमें उन चीज़ों की इबादत से रोक दो जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते थे। तुम हमारे सामने कोई खुली सनद ले आओ। (10)

उनके रसूलों ने उनसे कहा, हम इसके सिवा कुछ नहीं कि तुम्हारे ही जैसे इंसान हैं मगर अल्लाह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है अपना इनाम फ़रमाता है और यह हमारे इख़्तियार में नहीं कि हम तुम्हें कोई मोजिज़ा (चमत्कार) दिखाएं बग़ैर ख़ुदा के हुक्म के। और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। और हम क्यों न अल्लाह पर भरोसा करें जबकि उसने हमें हमारे रास्ते बताए। और जो तकलीफ़ तुम हमें दोगे हम उस पर सब्र करेंगे। और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। (11-12)

और इंकार करने वालों ने अपने पैग़म्बरों से कहा कि या तो हम तुम्हें अपनी ज़मीन से निकाल देंगे या तुम्हें तुम्हारी मिल्लत में वापस आना होगा। तो पैग़म्बरो के रब ने उन पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी कि हम इन ज़ालिमों को हलाक कर देंगे। और उनके बाद तुम्हें ज़मीन पर बसाएंगे। यह उस शख़्स के लिए है जो मेरे सामने खड़ा होने से डरे और जो मेरी वईद (चेतावनी) से डरे। (13-14)

और उन्होंने फ़ैसला चाहा और हर सरकश, ज़िद्दी नामुराद हुआ। उसके आगे दोज़ख़ है और उसे पीप का पानी पीने को मिलेगा वह उसे घूंट-घूंट पिएगा और उसे हलक़ से मुश्किल से उतार सकेगा। मौत हर तरफ़ से उस

पर छाई हुई होगी। मगर वह किसी तरह नहीं मरेगा और उसके आगे सख़्त अज़ाब होगा। (15-17)

जिन लोगों ने अपने रब का इंकार किया उनके आमाल उस राख की तरह हैं जिसे एक तूफ़ानी दिन की आंधी ने उड़ा दिया हो। वे अपने किए में से कुछ भी न पा सकेंगे। यही दूर की गुमराही है। क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को बिल्कुल ठीक-ठीक पैदा किया है। अगर वह चाहे तो तुम लोगों को ले जाए और एक नई मख़्लूक़ ले आए। और यह ख़ुदा पर कुछ दुश्वार भी नहीं। (18-20)

और ख़ुदा के सामने सब पेश होंगे। फिर कमज़ोर लोग उन लोगों से कहेंगे जो बड़ाई वाले थे, हम तुम्हारे ताबेअ (अधीन) थे तो क्या तुम अल्लाह के अज़ाब से कुछ हमें बचाओगे। वे कहेंगे कि अगर अल्लाह हमें कोई राह दिखाता तो हम तुम्हें भी ज़रूर वह राह दिखा देते। अब हमारे लिए यकसां (समान) है कि हम बेक़रार हों या सब्र करें, हमारे बचने की कोई सूरत नहीं। (21)

और जब मामले का फ़ैसला हो जाएगा तो शैतान कहेगा कि अल्लाह ने तुमसे सच्चा वादा किया था और मैंने तुमसे वादा किया तो मैंने उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी की। और मेरा तुम्हारे ऊपर कोई ज़ोर न था। मगर यह कि मैंने तुम्हें बुलाया तो तुमने मेरी बात को मान लिया पस तुम मुझे इल्ज़ाम न दो, और तुम अपने आपको इल्ज़ाम दो। न मैं तुम्हारा मददगार हो सकता हूं और न तुम मेरे मददगार हो सकते हो। मैं ख़ुद इससे बेज़ार हूं कि तुम इससे पहले मुझे शरीक ठहराते थे। बेशक ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (22)

और जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए वे ऐसे बाग़ों में दाख़िल किए जाएंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वे अपने रब के हुक्म से हमेशा रहेंगे। उसमें उनकी मुलाक़ात एक दूसरे पर सलामती होगी। (23)

क्या तुमने नहीं देखा, किस तरह मिसाल बयान फ़रमाई अल्लाह ने कलिमा-ए-तय्यिबा (शुभ बात) की। वह एक पाकीज़ा दरख़्त की मानिंद है जिसकी जड़ ज़मीन में जमी हुई है। और जिसकी शाख़ें आसमान तक पहुंची

हुई हैं। वह हर वक़्त पर अपना फल देता है अपने रब के हुक्म से और अल्लाह लोगों के लिए मिसाल बयान करता है ताकि वे नसीहत हासिल करें। और कलिमा-ए-ख़बीसा (अशुभ बात) की मिसाल एक ख़राब दरख़्त की है जो ज़मीन के ऊपर ही से उखाड़ लिया जाए। उसे कोई सबात (दृढ़ता) न हो। (24-26)

अल्लाह ईमान वालों को एक पक्की बात से दुनिया और आख़िरत (परलोक) में मज़बूत करता है। और अल्लाह ज़ालिमों को भटका देता है। और अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (27)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत के बदले कुफ़्र किया और जिन्होंने अपनी क़ौम को हलाकत के घर में पहुंचा दिया, वे उसमें दाख़िल होंगे और वह कैसा बुरा ठिकाना है। और उन्होंने अल्लाह के मुक़ाबिल ठहराए ताकि वे लोगों को अल्लाह के रास्ते से भटका दें। कहो कि चन्द दिन फ़ायदा उठा लो, आख़िरकार तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है। (28-30)

मेरे जो बंदे ईमान लाए हैं उनसे कह दो कि वे नमाज़ क़ायम करें और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खुले और छुपे ख़र्च करें इससे पहले कि वह दिन आए जिसमें न ख़रीद व फ़रोख़्त होगी और न दोस्ती काम आएगी। (31)

अल्लाह वह है जिसने आसमान और ज़मीन बनाए और आसमान से पानी उतारा। फिर उससे मुख़्तलिफ़ फल निकाले तुम्हारी रोज़ी के लिए और कश्ती को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र (अधीनस्थ) कर दिया कि समुद्र में उसके हुक्म से चले और उसने दरियाओं को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया। और उसने सूरज और चांद को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया कि बराबर चले जा रहे हैं और उसने रात और दिन को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया। और उसने तुम्हें हर चीज़ में से दिया जो तुमने मांगा। अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनो तो तुम गिन नहीं सकते। बेशक इंसान बहुत बेइंसाफ़ और बड़ा नाशुक्रा है। (32-34)

और जब इब्राहीम ने कहा, ऐ मेरे रब, इस शहर को अम्न वाला बना।

और मुझे और मेरी औलाद को इससे दूर रख कि हम बुतों की इबादत करें। ऐ मेरे रब इन बुतों ने बहुत लोगों को गुमराह कर दिया। पस जिसने मेरी पैरवी की वह मेरा है। और जिसने मेरा कहा न माना तो तू बख़्शने वाला महरबान है। (35-36)

ऐ हमारे रब, मैंने अपनी औलाद को एक बेखेती की वादी में तेरे मोहतरम घर के पास बसाया है। ऐ हमारे रब ताकि वे नमाज़ क़ायम करें। पस तू लोगों के दिल उनकी तरफ़ मायल कर दे और उन्हें फलों की रोज़ी अता फ़रमा। ताकि वे शुक्र करें। (37)

ऐ हमारे रब, तू जानता है जो कुछ हम छुपाते हैं और जो कुछ हम ज़ाहिर करते हैं। और अल्लाह से कोई चीज़ छुपी नहीं, न ज़मीन में और न आसमान में। शुक्र है उस ख़ुदा का जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इस्हाक़ दिए। बेशक मेरा रब दुआ का सुनने वाला है। ऐ मेरे रब, मुझे नमाज़ क़ायम करने वाला बना। और मेरी औलाद में भी। ऐ मेरे रब मेरी दुआ क़ुबूल कर। ऐ हमारे रब, मुझे माफ़ फ़रमा और मेरे वालिदेन को और मोमिनीन को, उस रोज़ जबकि हिसाब क़ायम होगा। (38-41)

और हरगिज़ मत ख़्याल करो कि अल्लाह इससे बेख़बर है जो ज़ालिम लोग कर रहे हैं। वह उन्हें उस दिन के लिए ढील दे रहा है जिस दिन आंखें पथरा जाएंगी। वे सिर उठाए हुए भाग रहे होंगे। उनकी नज़र उनकी तरफ़ हटकर न आएगी और उनके दिल बदहवास होंगे। (42-43)

और लोगों को उस दिन से डरा दो जिस दिन उन पर अज़ाब आ जाएगा। उस वक़्त ज़ालिम लोग कहेंगे कि ऐ हमारे रब, हमें थोड़ी मोहलत और दे दे, हम तेरी दावत (आह्वान) क़ुबूल कर लेंगे और रसूलों की पैरवी करेंगे। क्या तुमने इससे पहले क़समें नहीं खाई थीं कि तुम पर कुछ ज़वाल (पतन) आना नहीं है। और तुम उन लोगों की बस्तियों में आबाद थे जिन्होंने अपने जानों पर ज़ुल्म किया। और तुम पर खुल चुका था कि हमने उनके साथ क्या किया। और हमने तुमसे मिसालें बयान कीं। और उन्होंने अपनी सारी तदबीरें

(युक्तियां) कीं और उनकी तदबीरें अल्लाह के सामने थीं। अगरचे उनकी तदबीरें ऐसी थीं कि उनसे पहाड़ भी टल जाएं। (44-46)

पस तुम अल्लाह को अपने पैग़म्बरों से वादाख़िलाफ़ी करने वाला न समझो। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है, बदला लेने वाला है। जिस दिन यह ज़मीन दूसरी ज़मीन में से बदल जाएगी और आसमान भी। और सब एक ज़बरदस्त अल्लाह के सामने पेश होंगे। और तुम उस दिन मुजरिमों को ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ देखोगे। उनके लिबास तारकोल के होंगे। और उनके चेहरों पर आग छाई हुई होगी ताकि अल्लाह हर शख़्स को उसके किए का बदला दे। बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। यह लोगों के लिए एक एलान है और ताकि इसके ज़रिए से वे डरा दिए जाएं। और ताकि वे जान लें कि वही एक माबूद (पूज्य) है और ताकि दानिशमंद (प्रबुद्ध) लोग नसीहत हासिल करें। (47-52)

सूरह-15. अल-हिज्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़० लाम० रा०। ये आयतें हैं किताब की और एक वाज़ेह (सुस्पष्ट) क़ुरआन की। वह वक़्त आएगा जब इंकार करने वाले लोग तमन्ना करेंगे कि काश वे मानने वाले बने होते। उन्हें छोड़ो कि वे खाएं और फ़ायदा उठाएं और ख़्याली उम्मीद उन्हें भुलावे में डाले रखे, पस आइंदा वे जान लेंगे। और हमने इससे पहले जिस बस्ती को भी हलाक किया है उसका एक मुक़र्रर वक़्त लिखा हुआ था। कोई क़ौम न अपने मुक़र्रर वक़्त से आगे बढ़ती और न पीछे हटती। (1-5)

और ये लोग कहते हैं कि ऐ वह शख़्स जिस पर नसीहत उतरी है तू बेशक दीवाना है। अगर तू सच्चा है तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आता। हम फ़रिश्तों को सिर्फ़ फ़ैसले के लिए उतारते हैं और उस वक़्त लोगों को मोहलत नहीं दी जाती। (6-8)

यह याददिहानी (किताब) हम ही ने उतारी है और हम ही इसके मुहाफ़िज़ (संरक्षक) हैं। (9)

और हम तुमसे पहले गुज़री हुई क़ौमों में रसूल भेज चुके हैं। और जो रसूल भी उनके पास आया वे उसका मज़ाक़ उड़ाते रहे। इसी तरह हम यह (मज़ाक़) मुजरिमीन के दिलों में डाल देते हैं। वे इस पर ईमान नहीं लाएंगे। और यह दस्तूर अगलों से होता आया है। और अगर हम उन पर आसमान का कोई दरवाज़ा खोल देते जिस पर वे चढ़ने लगते तब भी वे कह देते कि हमारी आंखों को धोखा हो रहा है, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है। (10-15)

और हमने आसमान में बुर्ज बनाए और देखने वालों के लिए उसे रौनक़ दी। और उसे हर शैतान मर्दूद से महफ़ूज़ किया। अगर कोई चोरी छुपे सुनने के लिए कान लगाता है तो एक रोशन शोला उसका पीछा करता है। (16-18)

और हमने ज़मीन को फैलाया और उस पर हमने पहाड़ रख दिए और उसमें हर चीज़ एक अंदाज़े से उगाई। और हमने तुम्हारे लिए उसमें मईशत (जीविका) के असबाब बनाए और वे चीज़ें जिन्हें तुम रोज़ी नहीं देते। (19-20)

और कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके ख़ज़ाने हमारे पास न हों और हम उसे एक मुअय्यन (निर्धारित) अंदाज़े के साथ ही उतारते हैं। और हम ही हवाओं को बारआवर (वर्षा लाने वाली) बनाकर चलाते हैं। फिर हम आसमान से पानी बरसाते हैं फिर उस पानी से तुम्हें सैराब करते हैं। और तुम्हारे वश में न था कि तुम उसका ज़ख़ीरा जमा करके रखते। (21-22)

और बेशक हम ही ज़िंदा करते हैं और हम ही मारते हैं। और हम ही बाक़ी रह जाएंगे और हम तुम्हारे अगलों को भी जानते हैं और तुम्हारे पिछलों को भी जानते हैं। और बेशक तुम्हारा रब उन सबको इकट्ठा करेगा। वह इल्म वाला है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (23-25)

और हमने इंसान को सने हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से पैदा किया और इससे पहले जिन्नों को हमने आग की लपट से पैदा किया। (26-27)

और जब तेरे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं सने हुए गारे की सूखी

मिट्टी से एक बशर (इंसान) पैदा करने वाला हूं। जब मैं उसे पूरा बना लूं और उसमें अपनी रूह में से फूंक दूं तो तुम उसके लिए सज्दे में गिर पड़ना। पस तमाम फ़रिश्तों ने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान), कि उसने सज्दा करने वालों का साथ देने से इंकार कर दिया। ख़ुदा ने कहा ऐ इब्लीस, तुझे क्या हुआ कि तू सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ। इब्लीस ने कहा कि मैं ऐसा नहीं कि बशर को सज्दा करूं जिसे तूने सने हुए गारे की सूखी मिट्टी से पैदा किया है। (28-33)

.ख़ुदा ने कहा तू यहां से निकल जा क्योंकि तू मरदूद (धुत्कारा हुआ) है, और बेशक तुझ पर रोज़े जज़ा (बदले के दिन) तक लानत है। इब्लीस ने कहा, ऐ मेरे रब, तू मुझे उस दिन तक के लिए मोहलत दे जिस दिन लोग उठाए जाएंगे। ख़ुदा ने कहा, तुझे मोहलत है उस मुक़र्रर वक़्त के दिन तक। (34-38)

इब्लीस ने कहा, ऐ मेरे रब, जैसे तूने मुझे गुमराह किया है इसी तरह मैं ज़मीन में उनके लिए मुज़य्यन (दिलकशी) करूंगा और सबको गुमराह कर दूंगा। सिवा उनके जो तेरे चुने हुए बंदे हैं। (39-40)

अल्लाह ने फ़रमाया, यह एक सीधा रास्ता है जो मुझ तक पहुंचता है। बेशक जो मेरे बंदे हैं उन पर तेरा ज़ोर नहीं चलेगा। सिवा उनके जो गुमराहों में से तेरी पैरवी करें। और उन सबके लिए जहन्नम का वादा है। उसके सात दरवाज़े हैं। हर दरवाज़े के लिए उन लोगों के अलग-अलग हिस्से हैं। (41-44)

बेशक डरने वाले बाग़ों और चशमों (स्रोतों) में होंगे। दाख़िल हो जाओ इनमें सलामती और अम्न के साथ। और उनके सीनों की कुदूरतें (मन-मुटाव) हम निकाल देंगे, सब भाई-भाई की तरह रहेंगे तख़्तों पर आमने सामने। वहां उन्हें कोई तकलीफ़ नहीं पहुंचेगी और न वे वहां से निकाले जाएंगे। मेरे बंदों को ख़बर दे दो कि मैं बख़्शने वाला रहमत वाला हूं और मेरी सज़ा दर्दनाक सज़ा है। (45-50)

और उन्हें इब्राहीम के महमानों से आगाह करो। जब वे उसके पास आए फिर उन्होंने सलाम किया। इब्राहीम ने कहा कि हम तुम लोगों से डरते हैं।

उन्होंने कहा कि अंदेशा न करो हम तुम्हें एक लड़के की बशारत (शुभ सूचना) देते हैं जो बड़ा आलिम होगा। इब्राहीम ने कहा क्या तुम इस बुढ़ापे में मुझे औलाद की बशारत देते हो। पस तुम किस चीज़ की बशारत मुझे दे रहे हो। उन्होंने कहा कि हम तुम्हें हक़ के साथ बशारत देते हैं। पस तू नाउम्मीद होने वालों में से न हो। इब्राहीम ने कहा कि अपने रब की रहमत से गुमराहों के सिवा और कौन नाउम्मीद हो सकता है। (51-56)

कहा ऐ भेजे हुए फ़रिश्तो अब तुम्हारी मुहिम क्या है। उन्होंने कहा कि हम एक मुजरिम क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं। मगर लूत के घर वाले कि हम उन सबको बचा लेंगे सिवाए उसकी बीवी के कि हमने ठहरा लिया है कि वह ज़रूर मुजरिम लोगों में रह जाएगी। (57-60)

फिर जब भेजे हुए फ़रिश्ते लूत के ख़ानदान के पास आए। उन्होंने कहा कि तुम लोग अजनबी मालूम होते हो। उन्होंने कहा कि नहीं बल्कि हम तुम्हारे पास वह चीज़ लेकर आए हैं जिसमें ये लोग शक करते हैं। और हम तुम्हारे पास हक़ के साथ आए हैं, और हम बिल्कुल सच्चे हैं। पस तुम कुछ रात रहे अपने घरवालों के साथ निकल जाओ। और तुम उनके पीछे चलो और तुम में से कोई पीछे मुड़कर न देखे और वहां चले जाओ जहां तुम्हें जाने का हुक्म है। और हमने लूत के पास यह हुक्म भेजा कि सुबह होते ही उन लोगों की जड़ कट जाएगी। (61-66)

और शहर के लोग ख़ुश होकर आए। उसने कहा ये लोग मेरे महमान हैं, तुम लोग मुझे रुसवा न करो। और तुम अल्लाह से डरो और मुझे ज़लील न करो। उन्होंने कहा, क्या हमने तुम्हें दुनिया भर के लोगों से मना नहीं कर दिया। उसने कहा ये मेरी बेटियां हैं अगर तुम्हें करना है। (67-71)

तेरी जान की क़सम, वे अपनी सरमस्ती में मदहोश थे। पस दिन निकलते ही उन्हें चिंघाड़ ने पकड़ लिया। फिर हमने उस बस्ती को तलपट कर दिया और उन लोगों पर कंकर के पत्थर की बारिश कर दी। बेशक इसमें निशानियां हैं ध्यान करने वालों के लिए। और यह बस्ती एक सीधी राह पर वाक़ेअ (स्थित) है। बेशक इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए। (72-77)

और ऐका वाले यक़ीनन ज़ालिम थे। पस हमने उनसे इंतिक़ाम लिया। और ये दोनों बस्तियां खुले रास्ते पर वाक़ेअ (स्थित) हैं। और हिज्र वालों ने भी रसूलों को झुठलाया। और हमने उन्हें अपनी निशानियां दीं। मगर वे उससे मुंह फेरते रहे और वे पहाड़ों को तराशकर उनमें घर बनाते थे कि अम्न में रहें। पस उन्हें सुबह के वक़्त सख़्त आवाज़ ने पकड़ लिया। पस उनका किया हुआ उनके कुछ काम न आया। (78-84)

और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है हिक्मत (तत्वदर्शिता) के बग़ैर नहीं बनाया और बिलाशुबह क़ियामत आने वाली है। पस तुम ख़ूबी के साथ दरगुज़र (क्षमा) करो। बेशक तुम्हारा रब सबका ख़ालिक़ (स्रष्टा) है, जानने वाला है। (85-86)

और हमने तुम्हें सात मसानी और क़ुरआने अज़ीम अता किया है। तुम इस दुनिया की मताअ (सुख-सामग्री) की तरफ़ आंख उठाकर न देखो जो हमने उनमें से मुख़्तलिफ़ लोगों को दी हैं और उन पर ग़म न करो और ईमान वालों पर अपने शफ़क़त (स्नेह) के बाज़ू झुका दो और कहो कि मैं एक खुला हुआ डराने वाला हूं। इसी तरह हमने तक़्सीम करने वालों पर भी उतारा था जिन्होंने अपने क़ुरआन के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। पस तेरे रब की क़सम, हम उन सबसे ज़रूर पूछेंगे, जो कुछ वे करते थे। (87-93)

पस जिस चीज़ का तुम्हें हुक्म मिला है उसे खोलकर सुना दो और मुश्रिकों से एराज़ (उपेक्षा) करो। हम तुम्हारी तरफ़ से उन मज़ाक़ उड़ाने वालों के लिए काफ़ी हैं जो अल्लाह के साथ दूसरे माबूद को शरीक करते हैं। पस अनक़रीब वे जान लेंगे। और हम जानते हैं कि जो कुछ वे कहते हैं उससे तुम्हारा दिल तंग होता है। पस तुम अपने रब की हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी तस्बीह करो। और सज्दा करने वालों में से बनो और अपने रब की इबादत करो। यहां तक कि तुम्हारे पास यक़ीनी बात आ जाए। (94-99)

सूरह-16. अन-नहल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

आ गया अल्लाह का फ़ैसला, पस उसकी जल्दी न करो। वह पाक है और बरतर है उससे जिसे वे शरीक ठहराते हैं। वह फ़रिश्तों को अपने हुक्म की रूह के साथ उतारता है अपने बंदों में से जिस पर चाहता है कि लोगों को ख़बरदार कर दो कि मेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। पस तुम मुझसे डरो। उसने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया है। वह बरतर है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं। (1-3)

उसने इंसान को एक बूंद से बनाया। फिर वह यकायक खुल्लम खुल्ला झगड़ने लगा और उसने चौपायों को बनाया उनमें तुम्हारे लिए पोशाक भी है और ख़ुराक भी और दूसरे फ़ायदे भी, और उनमें से खाते भी हो। और उनमें तुम्हारे लिए रौनक़ है, जबकि शाम के वक़्त उन्हें लाते हो और जब सुबह के वक़्त छोड़ते हो और वे तुम्हारे बोझ ऐसे मक़ामात तक पहुंचाते हैं जहां तुम सख़्त महनत के बग़ैर नहीं पहुंच सकते थे। बेशक तुम्हारा रब बड़ा शफ़ीक़ (करुणामय) महरबान है। और उसने घोड़े और ख़च्चर और गधे पैदा किए ताकि तुम उन पर सवार हो और ज़ीनत (साज-सज्जा) के लिए भी और वह ऐसी चीज़ें पैदा करता है जो तुम नहीं जानते। (4-8)

और अल्लाह तक पहुंचती है सीधी राह। और कुछ रास्ते टेढ़े भी हैं और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको हिदायत दे देता। (9)

वही है जिसने आसमान से पानी उतारा, तुम उसमें से पीते हो और उसी से दरख़्त होते हैं जिनमें तुम चराते हो। वह उसी से तुम्हारे लिए खेती और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और हर क़िस्म के फल उगाता है। बेशक इसके अंदर निशानी है उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (10-11)

और उसने तुम्हारे काम में लगा दिया रात को और दिन को और सूरज को और चांद को और सितारे भी उसके हुक्म से मुसख़्ख़र (अधीनस्थ) हैं। बेशक इसमें निशानियां हैं अक़्लमंद लोगों के लिए। और ज़मीन में जो चीज़ें

मुख़्तलिफ़ क़िस्म की तुम्हारे लिए फैलाईं, बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो सबक़ हासिल करें। (12-13)

और वही है जिसने समुद्र को तुम्हारे काम में लगा दिया ताकि तुम उसमें से ताज़ा गोश्त खाओ और उससे ज़ेवर निकालो जिसे तुम पहनते हो और तुम कश्तियों को देखते हो कि उसमें चीरती हुई चलती हैं और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल (अनुग्रह) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (14)

और उसने ज़मीन में पहाड़ रख दिए ताकि वह तुम्हें लेकर डगमगाने न लगे और उसने नहरें और रास्ते बनाए ताकि तुम राह पाओ। और बहुत सी दूसरी अलामतें (चिह्न) भी हैं, और लोग तारों से भी रास्ता मालूम करते हैं। (15-16)

फिर क्या जो पैदा करता है वह बराबर है उसके जो कुछ पैदा नहीं कर सकता, क्या तुम सोचते नहीं। अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनो तो तुम उन्हें गिन न सकोगे, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो। (17-19)

और जिन्हें लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते और वे ख़ुद पैदा किए हुए हैं। वे मुर्दा हैं जिनमें जान नहीं और वे नहीं जानते कि वे कब उठाए जाएंगे। तुम्हारा माबूद एक ही माबूद (पूज्य) है मगर जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल मुंकिर हैं और वे तकब्बुर (घमंड) करते हैं अल्लाह यक़ीनन जानता है जो कुछ वे छुपाते हैं और जो कुछ वे ज़ाहिर करते हैं। बेशक वह तकब्बुर करने वालों को पसंद नहीं करता। (20-23)

और जब उनसे कहा जाए कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ उतारी है तो कहते हैं कि अगले लोगों की कहानियां हैं, ताकि वे क़ियामत के दिन अपने बोझ भी पूरे उठाएं और उन लोगों के बोझ में से भी जिन्हें वे बग़ैर किसी इल्म के गुमराह कर रहे हैं। याद रखो बहुत बुरा है वह बोझ जिसे वे उठा रहे हैं। (24-25)

उनसे पहले वालों ने भी तदबीरें कीं। फिर अल्लाह उनकी इमारत पर बुनियादों से आ गया। पस छत ऊपर से उनके ऊपर गिर पड़ी और उन पर अज़ाब वहां से आ गया जहां से उन्हें गुमान भी न था। फिर क़ियामत के दिन अल्लाह उन्हें रुसवा करेगा और कहेगा कि वे मेरे शरीक कहां हैं जिनके लिए तुम झगड़ा किया करते थे। जिन्हें इल्म दिया गया था वे कहेंगे कि आज रुस्वाई और अज़ाब मुंकिरों पर है। (26-27)

जिन लोगों को फ़रिश्ते इस हाल में वफ़ात (मौत) देंगे कि वे अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे होंगे तो उस वक़्त वे सिपर डाल देंगे कि हम तो कोई बुरा काम न करते थे, हां बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते थे। अब जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ। उसमें हमेशा हमेशा रहो। पस कैसा बुरा ठिकाना है तकब्बुर (घमंड) करने वालों का। (28-29)

और जो तक़वा (ईश-परायणता) वाले हैं उनसे कहा गया कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ उतारी है तो उन्होंने कहा कि नेक बात। जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए इस दुनिया में भी भलाई है और आख़िरत का घर बेहतर है और क्या ख़ूब घर है तक़वा वालों का। हमेशा रहने के बाग़ हैं जिनमें वे दाख़िल होंगे, उनके नीचे से नहरें जारी होंगी। उनके लिए वहां सब कुछ होगा जो वे चाहें, अल्लाह परहेज़गारों को ऐसा ही बदला देगा। जिनकी रूह फ़रिश्ते इस हालत में क़ब्ज़ करते हैं कि वे पाक हैं। फ़रिश्ते कहते हैं तुम पर सलामती हो, जन्नत में दाख़िल हो जाओ अपने आमाल के बदले में। (30-32)

क्या ये लोग इसके मुंतज़िर हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आएं या तुम्हारे रब का हुक्म आ जाए। ऐसा ही इनसे पहले वालों ने किया। और अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वे ख़ुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे थे। फिर उन्हें उनके बुरे काम की सज़ाएं मिलीं। और जिस चीज़ का वे मज़ाक़ उड़ाते थे उसने उन्हें घेर लिया। (33-34)

और जिन लोगों ने शिर्क किया वे कहते हैं, अगर अल्लाह चाहता तो हम उसके सिवा किसी चीज़ की इबादत न करते, न हम और न हमारे बाप

दादा, और न हम उसके बग़ैर किसी चीज़ को हराम ठहराते। ऐसा ही इनसे पहले वालों ने किया था, पस रसूलों के ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़-साफ़ पहुंचा देना है। (35)

और हमने हर उम्मत में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत करो और ताग़ूत (बढ़े हुए उपद्रवी) से बचो, पस उनमें से कुछ को अल्लाह ने हिदायत दी और किसी पर गुमराही साबित हुई। पस ज़मीन में चल फिरकर देखो कि झुठलाने वालों का अंजाम क्या हुआ। अगर तुम उसकी हिदायत के हरीस (लालसा रखने वाले) हो तो अल्लाह उसे हिदायत नहीं देता जिसे वह गुमराह कर देता है और उनका कोई मददगार नहीं। (36-37)

और ये लोग अल्लाह की क़समें खाते हैं, सख़्त क़समें कि जो शख़्स मर जाएगा अल्लाह उसे नहीं उठाएगा। हां, यह उसके ऊपर एक पक्का वादा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। ताकि उनके सामने उस चीज़ को खोल दे जिसमें वे इख़्तेलाफ़ (मतभेद) कर रहे हैं और इंकार करने वाले लोग जान लें कि वे झूठे थे। जब हम किसी चीज़ का इरादा करते हैं तो इतना ही हमारा कहना होता है कि हम उसे कहते हैं हो जा तो वह हो जाती है। (38-40)

और जिन लोगों ने अल्लाह के लिए अपना वतन छोड़ा, बाद इसके कि उन पर ज़ुल्म किया गया, हम उन्हें दुनिया में ज़रूर अच्छा ठिकाना देंगे और आख़िरत का सवाब तो बहुत बड़ा है, काश वे जानते। वे ऐसे हैं जो सब्र करते हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (41-42)

और हमने तुमसे पहले भी आदमियों ही को रसूल बनाकर भेजा, जिनकी तरफ़ हम 'वही' (प्रकाशना) करते थे, पस अहले इल्म से पूछ लो अगर तुम नहीं जानते। हमने भेजा था उन्हें दलाइल (स्पष्ट प्रमाणों) और किताबों के साथ। और हमने तुम पर भी याददिहानी (अनुस्मृति) उतारी ताकि तुम लोगों पर उस चीज़ को वाज़ेह कर दो जो उनकी तरफ़ उतारी गई है और ताकि वे ग़ौर करें। (43-44)

क्या वे लोग जो बुरी तदबीरें कर रहे हैं वे इस बात से बेफ़िक्र हैं कि

अल्लाह उन्हें ज़मीन में धंसा दे या उन पर अज़ाब वहां से आ जाए जहां से उन्हें गुमान भी न हो या उन्हें चलते फिरते पकड़ ले तो वे लोग ख़ुदा को आजिज़ नहीं कर सकते या उन्हें अंदेशे की हालत में पकड़ ले। पस तुम्हारा रब शफ़ीक़ (करुणामय) और महरबान है। (45-47)

क्या नहीं देखते कि अल्लाह ने जो चीज़ भी पैदा की है उसके साये दाईं तरफ़ और बाईं तरफ़ झुक जाते हैं, अल्लाह को सज्दा करते हुए, और वे सब आजिज़ (नम्र) हैं। और अल्लाह ही को सज्दा करती हैं जितनी चीज़ें चलने वाली आसमानों और ज़मीन में हैं। और फ़रिश्ते भी और वे तकब्बुर (घमंड) नहीं करते। वे अपने ऊपर अपने रब से डरते हैं और वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म मिलता है। (48-50)

और अल्लाह ने फ़रमाया कि दो माबूद (पूज्य) मत बनाओ। वह एक ही माबूद है तो मुझ ही से डरो और उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। और उसी की इताअत (आज्ञापालन) है हमेशा। तो क्या तुम अल्लाह के सिवा औरों से डरते हो। (51-52)

और तुम्हारे पास जो नेमत भी है वह अल्लाह ही की तरफ़ से है। फिर जब तुम्हें तकलीफ़ पहुंचती है तो उससे फ़रयाद करते हो। फिर जब वह तुमसे तकलीफ़ दूर कर देता है तो तुम में से एक गिरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है ताकि मुंकिर हो जाएं उस चीज़ से जो हमने उन्हें दी है। पस चन्द रोज़ फ़ायदे उठा लो। जल्द ही तुम जान लोगे। और ये लोग हमारी दी हुई चीज़ों में से उनका हिस्सा लगाते हैं जिनके मुतअल्लिक़ उन्हें कुछ इल्म नहीं। ख़ुदा की क़सम, जो झूठ तुम गढ़ रहे हो उसकी तुमसे ज़रूर बाज़पुर्स (पूछगछ) होगी। (53-56)

और वे अल्लाह के लिए बेटियां ठहराते हैं, वह इससे पाक है, और अपने लिए वह जो दिल चाहता है। और जब उनमें से किसी को बेटी की ख़ुशख़बरी दी जाए तो उसका चेहरा स्याह पड़ जाता है और वह जी में घुटता रहता है। जिस चीज़ की उसे ख़ुशख़बरी दी गई है उसके आर (लाज) से लोगों से छुपा फिरता है। उसे ज़िल्लत के साथ रख छोड़े या उसे मिट्टी में गाड़ दे।

क्या ही बुरा फ़ैसला है जो वे करते हैं। बुरी मिसाल है उन लोगों के लिए जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते। और अल्लाह के लिए आला मिसालें हैं। वह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) और हकीम (तत्वदर्शी) है। (57-60)

और अगर अल्लाह लोगों को उनके ज़ुल्म पर पकड़ता तो ज़मीन पर किसी जानदार को न छोड़ता। लेकिन वह एक मुक़र्रर वक़्त तक लोगों को मोहलत देता है। फिर जब उनका मुक़र्रर वक़्त आ जाएगा तो वे न एक घड़ी पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे। (61)

और वे अल्लाह के लिए वह चीज़ ठहराते हैं जिसे अपने लिए नापसंद करते हैं और उनकी ज़बानें झूठ बयान करती हैं कि उनके लिए भलाई है। निश्चय ही उनके लिए दोज़ख़ है और वे ज़रूर उसमें पहुंचा दिए जाएंगे। (62)

ख़ुदा की क़सम हमने तुमसे पहले मुख़्तलिफ़ क़ौमों की तरफ़ रसूल भेजे। फिर शैतान ने उनके काम उन्हें अच्छे करके दिखाए। पस वही आज उनका साथी है और उनके लिए एक दर्दनाक अज़ाब है। और हमने तुम पर किताब सिर्फ़ इसलिए उतारी है कि तुम उन्हें वह चीज़ खोल कर सुना दो जिसमें वे इख़्तेलाफ़ (मत-भिन्नता) कर रहे हैं और वह हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं। (63-64)

और अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर उससे ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िंदा कर दिया। बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (65)

और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में सबक़ है। हम उनके पेटों के अंदर के गोबर और ख़ून के दर्मियान से तुम्हें ख़ालिस दूध पिलाते है, ख़ुशगवार पीने वालों के लिए और खजूर और अंगूर के फलों से भी। तुम उनसे नशे की चीज़ें भी बनाते हो और खाने की अच्छी चीज़ें भी। बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं। (66-67)

और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी पर 'वही' (प्रकाशना) किया कि पहाड़ों और दरख़्तों और जहां टट्टियां बांधते हैं उनमें घर बना। फिर हर

क़िस्म के फलों का रस चूस और अपने रब की हमवार की हुई राहों पर चल। उसके पेट से पीने की चीज़ निकलती है, इसके रंग मुख़्तलिफ़ हैं, इसमें लोगों के लिए शिफ़ा (आरोग्य) है। बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (68-69)

और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, फिर वही तुम्हें वफ़ात (मौत) देता है। और तुम में से कुछ वे हैं जो नाकारा उम्र तक पहुंचाए जाते हैं कि जानने के बाद वे कुछ न जानें। बेशक अल्लाह इल्म वाला है, क़ुदरत वाला है। (70)

और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर रोज़ी में बड़ाई दी है। पस जिन्हें बड़ाई दी गई है वे अपनी रोज़ी अपने ग़ुलामों को नहीं दे देते कि वे इसमें बराबर हो जाएं। फिर क्या वे अल्लाह की नेमत का इंकार करते हैं। (71)

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम ही में से बीवियां बनाईं और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे लिए बेटे और पोते पैदा किए और तुम्हें सुथरी चीज़ें खाने के लिए दीं। फिर क्या ये बातिल (असत्य) पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेमत का इंकार करते हैं। और वे अल्लाह के सिवा उन चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उनके लिए आसमान से किसी रोज़ी पर इख़्तियार रखती हैं और न ज़मीन से, और न वे क़ुदरत रखती हैं। पस तुम अल्लाह के लिए मिसालें न बयान करो। बेशक अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (72-74)

और अल्लाह मिसाल बयान करता है एक ग़ुलाम ममलूक की जो किसी चीज़ पर इख़्तियार नहीं रखता, और एक शख़्स है जिसे हमने अपने पास से अच्छा रिज़्क़ दिया है, वह उसमें से पोशीदा और एलानिया ख़र्च करता है। क्या ये यकसां (समान) होंगे। सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है, लेकिन उनमें अक्सर लोग नहीं जानते। (75)

और अल्लाह एक और मिसाल बयान करता है कि दो शख़्स हैं जिनमें से एक गूंगा है, कोई काम नहीं कर सकता और वह अपने मालिक पर एक बोझ है। वह उसे जहां भेजता है वह कोई काम दुरुस्त करके नहीं लाता। क्या वह और ऐसा शख़्स बराबर हो सकते हैं जो इंसाफ़ की तालीम देता है और वह एक सीधी राह पर है। (76)

और आसमानों और ज़मीन की पोशीदा (छुपी) बातें अल्लाह ही के लिए हैं और क़ियामत का मामला बस ऐसा होगा जैसे आंख झपकना बल्कि इससे भी जल्द। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (77)

और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी मांओं के पेट से निकाला, तुम किसी चीज़ को न जानते थे। और उसने तुम्हारे लिए कान और आंख और दिल बनाए ताकि तुम शुक्र करो। (78)

क्या लोगों ने परिंदों को नहीं देखा कि आसमान की फ़ज़ा में मुसख़्ख़र (अधीनस्थ) हो रहे हैं। उन्हें सिर्फ़ अल्लाह थामे हुए है। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं। और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों को सुकून का मक़ाम बनाया और तुम्हारे लिए जानवरों की खाल के घर बनाए जिन्हें तुम अपने कूच के दिन और क़याम के दिन हल्का पाते हो। और उनकी ऊन और उनके रूऐं और उनके बालों से घर का सामान और फ़ायदे की चीज़ें एक मुद्दत तक के लिए बनाईं। (79-80)

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीज़ों की साये बनाए और तुम्हारे लिए पहाड़ों में छुपने की जगह बनाई और तुम्हारे लिए ऐसे लिबास बनाए जो तुम्हें गर्मी से बचाते हैं और ऐसे लिबास बनाए जो लड़ाई में तुम्हें बचाते हैं। इसी तरह अल्लाह तुम पर अपनी नेमतें पूरी करता है ताकि तुम फ़रमांबरदार बनो। (81)

पस अगर वे एराज़ (उपेक्षा) करें तो तुम्हारे ऊपर सिर्फ़ साफ़-साफ़ पहुंचा देने की ज़िम्मेदारी है। वे लोग ख़ुदा की नेमत को पहचानते हैं फिर वे उसके मुंकिर हो जाते हैं और उनमें अक्सर नाशुक्र हैं। (82-83)

और जिस दिन हम हर उम्मत में एक गवाह उठाएंगे। फिर इंकार करने वालों को हिदायत न दी जाएगी। और न उनसे तौबा ली जाएगी। और जब ज़ालिम लोग अज़ाब को देखेंगे तो वह अज़ाब न उनसे हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (84-85)

और जब मुश्रिक (बहुदेववादी) लोग अपने शरीकों को देखेंगे तो कहेंगे

कि ऐ हमारे रब, यही हमारे वे शुर्का (ईश्वरत्व के साझीदार) हैं जिन्हें हम तुझे छोड़कर पुकारते थे। तब वे बात उनके ऊपर डाल देंगे कि तुम झूठे हो। और उस दिन वे अल्लाह के आगे झुक जाएंगे और उनकी इफ़्तिरा परदाज़ियां (गढ़े हुए झूठ) उनसे गुम हो जाएंगी। जिन्होंने इंकार किया और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोका, हम उनके अज़ाब पर अज़ाब का इज़ाफ़ा करेंगे उस फ़साद की वजह से जो वे करते थे। (86-88)

और जिस दिन हम हर उम्मत में एक गवाह उन्हीं में से उन पर उठाएंगे और तुम्हें उन लोगों पर गवाह बना कर लाएंगे और हमने तुम पर किताब उतारी है हर चीज़ को खोल देने के लिए। वह हिदायत और रहमत और बशारत (शुभ सूचना) है फ़रमांबरदारों के लिए। (89)

बेशक अल्लाह हुक्म देता है अद्ल (न्याय) का और एहसान (परोपकार) का और क़राबतदारों (नातेदारों) को देने का। और अल्लाह रोकता है बेहयाई के कामों और बुराई से और सरकशी से। अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम याददिहानी (अनुस्मरण) हासिल करो। (90)

और तुम अल्लाह के अहद (वचन) को पूरा करो जबकि तुम आपस में अहद कर लो। और क़समों को पक्का करने के बाद न तोड़ो। और तुम अल्लाह को ज़ामिन भी बना चुके हो। बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। और तुम उस औरत की मानिंद न बनो जिसने अपना महनत से काता हुआ सूत टुकड़े-टुकड़े करके तोड़ दिया। तुम अपनी क़समों को आपस में फ़साद डालने का ज़रिया बनाते हो महज़ इस वजह से कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ जाए। अल्लाह इसके ज़रिए से तुम्हारी आज़माइश करता है और वह क़ियामत के दिन उस चीज़ को अच्छी तरह तुम पर ज़ाहिर कर देगा जिसमें तुम इख़्तेलाफ़ (मत-भिन्नता) कर रहे हो। (91-92)

और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही उम्मत बना देता लेकिन वह बेराह कर देता है जिसे चाहता है और हिदायत दे देता है जिसे चाहता है और ज़रूर तुमसे तुम्हारे आमाल की पूछ होगी। (93)

और तुम अपनी क़समों को आपस में फ़रेब का ज़रिया न बनाओ कि कोई क़दम जमने के बाद फिसल जाए और तुम इस बात की सज़ा चखो कि तुमने अल्लाह की राह से रोका और तुम्हारे लिए एक बड़ा अज़ाब है। और अल्लाह के अहद (वचन) को थोड़े फ़ायदे के लिए न बेचो। जो कुछ अल्लाह के पास है वह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। (94-95)

जो कुछ तुम्हारे पास है वह ख़त्म हो जाएगा और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बाक़ी रहने वाला है। और जो लोग सब्र करेंगे हम उनके अच्छे कामों का अज्र (प्रतिफल) उन्हें ज़रूर देंगे। जो शख़्स कोई नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, बशर्ते कि वह मोमिन हो तो हम उसे ज़िंदगी देंगे, एक अच्छी ज़िंदगी। और जो कुछ वे करते रहे उसका हम उन्हें बेहतरीन बदला देंगे। (96-97)

पस जब तुम क़ुरआन को पढ़ो तो शैतान मर्दूद से अल्लाह की पनाह मांगो। उसका ज़ोर उन लोगों पर नहीं चलता जो ईमान वाले हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। उसका ज़ोर सिर्फ़ उन लोगों पर चलता है जो उससे तअल्लुक़ रखते हैं, और जो अल्लाह के साथ शिर्क करते हैं। (98-100)

और जब हम एक आयत की जगह दूसरी आयत बदलते हैं, और अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ वह उतारता है, तो वे कहते हैं कि तुम गढ़ लाए हो। बल्कि उनमें अक्सर लोग इल्म नहीं रखते। कहो कि इसे रूहुल क़ुद्स (पवित्र आत्मा) ने तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ उतारा है ताकि वह ईमान वालों को साबित क़दम रखे और वह हिदायत और ख़ुशख़बरी हो फ़रमांबरदारों के लिए। (101-102)

और हमें मालूम है कि ये लोग कहते हैं कि इसे तो एक आदमी सिखाता है। जिस शख़्स की तरफ़ वे मंसूब करते हैं। उसकी ज़बान अजमी (ग़ैर अरबी) है और यह क़ुरआन साफ़ अरबी ज़बान है। बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, अल्लाह उन्हें कभी राह नहीं दिखाएगा और उनके लिए दर्दनाक सज़ा है। झूठ तो वे लोग गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते और यही लोग झूठे हैं। (103-105)

जो शख़्स ईमान लाने के बाद अल्लाह से मुंकिर होगा, सिवा उसके जिस पर ज़बरदस्ती की गई हो बशर्ते कि उसका दिल ईमान पर जमा हुआ हो, लेकिन जो शख़्स दिल खोलकर मुंकिर हो जाए तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और उन्हें बड़ी सज़ा होगी। यह इस वास्ते कि उन्होंने आख़िरत (परलोक) के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िंदगी को पसंद किया और अल्लाह मुंकिरों को रास्ता नहीं दिखाता। ये वे लोग हैं कि अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर और उनकी आंखों पर मुहर कर दी। और ये लोग बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं। लाज़िमी बात है कि आख़िरत में ये लोग घाटे में रहेंगे। (106-109)

फिर तेरा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने आज़माइश में डाले जाने के बाद हिजरत (स्थान-परिवर्तन) की, फिर जिहाद किया और क़ायम रहे तो इन बातों के बाद बेशक तेरा रब बख़्शने वाला, महरबान है। जिस दिन हर शख़्स अपनी ही तरफ़दारी में बोलता हुआ आएगा। और हर शख़्स को उसके किए का पूरा बदला मिलेगा और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (110-111)

और अल्लाह एक बस्ती वालों की मिसाल बयान करता है कि वे अम्न और इत्मीनान में थे। उन्हें उनका रिज़्क़ फ़राग़त के साथ हर तरफ़ से पहुंच रहा था। फिर उन्होंने ख़ुदा की नेमतों की नाशुक्री की तो अल्लाह ने उन्हें उनके आमाल के सबब से भूख और ख़ौफ़ का मज़ा चखाया। और उनके पास एक रसूल उन्हीं में से आया तो उसे उन्होंने झूठा बताया फिर उन्हें अज़ाब ने पकड़ लिया और वे ज़ालिम थे। (112-113)

सो जो चीज़ें अल्लाह ने तुम्हें हलाल और पाक दी हैं उनमें से खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो। अगर तुम उसकी इबादत करते हो। उसने तो तुम पर सिर्फ़ मुर्दार को हराम किया है और ख़ून को और सुअर के गोश्त को और जिस पर ग़ैर-अल्लाह का नाम लिया गया हो। फिर जो शख़्स मजबूर हो जाए बशर्ते कि वह न तालिब हो और न हद से बढ़ने वाला, तो अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (114-115)

और अपनी ज़बानों के गढ़े हुए झूठ की बिना पर यह न कहो कि यह

हलाल है, और यह हराम है कि तुम अल्लाह पर झूठी तोहमत लगाओ। जो लोग अल्लाह पर झूठी तोहमत लगाएंगे वे फ़लाह (कल्याण, सफलता) नहीं पाएंगे। वे थोड़ा सा फ़ायदा उठा लें, और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। (116-117)

और यहूदियों पर हमने वे चीज़ें हराम कर दी थीं जो हम इससे पहले तुम्हें बता चुके हैं कि हमने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वे ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते रहे। (118)

फिर तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने जहालत से बुराई कर ली, इसके बाद तौबा की और अपनी इस्लाह की तो तुम्हारा रब इसके बाद बख़्शने वाला महरबान है। (119)

बेशक इब्राहीम एक अलग उम्मत था, अल्लाह का फ़रमांबरदार, और उसकी तरफ़ यकसू (एकाग्रचित्त), और वह शिर्क (ख़ुदा के साझीदार बनाना) करने वालों में से न था। वह उसकी नेमतों का शुक्र करने वाला था। ख़ुदा ने उसे चुन लिया। और सीधे रास्ते की तरफ़ उसकी रहनुमाई की। और हमने उसे दुनिया में भी भलाई दी और आख़िरत में भी। वह अच्छे लोगों में से होगा। फिर हमने तुम्हारी तरफ़ 'वही' (प्रकाशना) की कि इब्राहीम के तरीक़े की पैरवी करो जो यकसू था और वह शिर्क करने वालों में से न था। (120-123)

सब्त उन्हीं लोगों पर आयद किया गया था जिन्होंने उसमें इख़्तेलाफ़ (मतभेद) किया था। और बेशक तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उनके दर्मियान फ़ैसला कर देगा जिस बात में वे इख़्तेलाफ़ कर रहे थे। (124)

अपने रब के रास्ते की तरफ़ हिक्मत (तत्वदर्शिता) और अच्छी नसीहत के साथ बुलाओ और उनसे अच्छे तरीक़े से बहस करो। बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कि कौन उसकी राह में भटका हुआ है और वह उन्हें भी ख़ूब जानता है जो राह पर चलने वाले हैं। (125)

और अगर तुम बदला लो तो उतना ही बदला लो जितना तुम्हारे साथ किया गया है और अगर तुम सब्र करो तो वह सब्र करने वालों के लिए बहुत बेहतर है और सब्र करो और तुम्हारा सब्र ख़ुदा ही की तौफ़ीक़ से है और

तुम उन पर ग़म न करो और जो कुछ तदबीरें वे कर रहे हैं उससे तंग दिल न हो। बेशक अल्लाह उन लोगों के साथ है जो परहेज़गार (ईश-परायणता) हैं और जो नेकी करने वाले हैं। (126-128)

सूरह-17. बनी इस्राईल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

पाक है वह जो ले गया एक रात अपने बंदे को मस्जिदे हराम से दूर की उस मस्जिद तक जिसके माहौल को हमने बाबरकत बनाया है ताकि हम उसे अपनी कुछ निशानियां दिखाएं। बेशक वह सुनने वाला, देखने वाला है। (1)

और हमने मूसा को किताब दी और उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया कि मेरे सिवा किसी को अपना कारसाज़ (कार्य-साधक) न बनाओ। तुम उन लोगों की औलाद हो जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया था, बेशक वह एक शुक्रगुज़ार बंदा था। (2-3)

और हमने बनी इस्राईल को किताब में बता दिया था कि तुम दो मर्तबा ज़मीन (शाम) में ख़राबी करोगे और बड़ी सरकशी दिखाओगे। फिर जब उनमें से पहला वादा आया तो हमने तुम पर अपने बंदे भेजे, निहायत ज़ोर वाले। वे घरों में घुस पड़े और वादा पूरा होकर रहा। फिर हमने तुम्हारी बारी उन पर लौटा दी और माल और औलाद से तुम्हारी मदद की और तुम्हें ज़्यादा बड़ी जमाअत बना दिया। (4-6)

अगर तुम अच्छा काम करोगे तो तुम अपने लिए अच्छा करोगे और अगर तुम बुरा काम करोगे तब भी अपने लिए बुरा करोगे। फिर जब दूसरे वादे का वक़्त आया तो हमने और बंदे भेजे कि वे तुम्हारे चेहरे को बिगाड़ दें और मस्जिद (बैतुल मक़्दिस) में घुस जाएं जिस तरह उसमें पहली बार घुसे थे और जिस चीज़ पर उनका ज़ोर चले उसे बर्बाद कर दें। बईद (असंभव) नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारे ऊपर रहम करे। और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम भी वही करेंगे और हमने जहन्नम को मुंकिरीन के लिए क़ैदख़ाना बना दिया है। (7-8)

बिला शुबह यह क़ुरआन वह राह दिखाता है जो बिल्कुल सीधी है और वह बशारत (शुभ सूचना) देता है ईमान वालों को जो अच्छे अमल करते हैं कि उनके लिए बड़ा अज्र (प्रतिफल) है। और यह कि जो लोग आख़िरत (परलोक) को नहीं मानते उनके लिए हमने एक दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। (9-10)

और इंसान बुराई मांगता है जिस तरह उसे भलाई मांगना चाहिए और इंसान बड़ा जल्दबाज़ है। और हमने रात और दिन को दो निशानियां बनाया। फिर हमने रात की निशानी को मिटा दिया और दिन की निशानी को हमने रोशन कर दिया ताकि तुम अपने रब का फ़ज़्ल (अनुग्रह) तलाश करो और ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम करो। और हमने हर चीज़ को ख़ूब खोलकर बयान किया है। (11-12)

और हमने हर इंसान की क़िस्मत उसके गले के साथ बांध दी है। और हम क़ियामत के दिन उसके लिए एक किताब निकालेंगे जिसे वह खुला हुआ पाएगा— पढ़ अपनी किताब। आज अपना हिसाब लेने के लिए तू ख़ुद ही काफ़ी है। जो शख़्स हिदायत की राह चलता है तो वह अपने ही लिए चलता है। और जो शख़्स बेराही करता है वह भी अपने ही नुक़सान के लिए बेराह होता है। और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा। और हम कभी सज़ा नहीं देते जब तक हम किसी रसूल को न भेजें। (13-15)

और जब हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं तो उसके ख़ुशऐश (सुखभोगी) लोगों को हुक्म देते हैं, फिर वे उसमें नाफ़रमानी करते हैं। तब उन पर बात साबित हो जाती है। फिर हम उस बस्ती को तबाह व बर्बाद कर देते हैं। और नूह के बाद हमने कितनी ही क़ौमें हलाक कर दीं। और तेरा रब काफ़ी है अपने बंदों के गुनाहों को जानने के लिए और उन्हें देखने के लिए। (16-17)

जो शख़्स आजिला (जल्द हासिल होने वाली दुनिया) को चाहता हो, उसे हम उसमें से दे देते हैं, जितना भी हम जिसे देना चाहें। फिर हमने उसके लिए जहन्नम ठहरा दी है, वह उसमें दाख़िल होगा बदहाल और रांदह (ठुकराया

हुआ) होकर। और जिसने आख़िरत को चाहा और उसके लिए दौड़ की जो कि उसकी दौड़ है और वह मोमिन हो तो ऐसे लोगों की कोशिश मक़बूल होगी। (18-19)

हम हर एक को तेरे रब की बख़्शिश में से पहुंचाते हैं, इन्हें भी और उन्हें भी। और तेरे रब की बख़्शिश किसी के ऊपर बंद नहीं। देखो हमने उनके एक को दूसरे पर किस तरह फ़ौक़ियत (अग्रसरता) दी है। और यक़ीनन आख़िरत और भी ज़्यादा बड़ी है दर्जे के एतबार से और फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) के एतबार से। (20-21)

तू अल्लाह के साथ किसी और को माबूद (पूज्य) न बना वरना तू मज़्मूम (निंदित) और बेकस होकर रह जाएगा। और तेरे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि तुम उसके सिवा किसी और की इबादत न करो और मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक करो। अगर वे तेरे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं, उनमें से एक या दोनों, तो उन्हें उफ़ न कहो और न उन्हें झिड़को, और उनसे एहतराम के साथ बात करो। और उनके सामने नर्मी से इज्ज़ (सदाशयता) के बाज़ू झुका दो। और कहो कि ऐ रब इन दोनों पर रहम फ़रमा जैसा कि इन्होंने मुझे बचपन में पाला। तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कि तुम्हारे दिलों में क्या है। अगर तुम नेक रहोगे तो वह तौबा करने वालों को माफ़ कर देने वाला है। (22-25)

और रिश्तेदार को उसका हक़ दो और मिस्कीन को और मुसाफ़िर को। और फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो। बेशक फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाले शैतान के भाई हैं, और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है। और अगर तुम्हें अपने रब के फ़ज़्ल (अनुग्रह) के इंतज़ार में जिसकी तुम्हें उम्मीद है, उनसे एराज़ करना (बचना) पड़े तो तुम उनसे नर्मी की बात कहो। (26-28)

और न तो अपना हाथ गर्दन से बांध लो और न उसे बिल्कुल खुला छोड़ दो कि तुम मलामतज़दा (निंदित) और आजिज़ (असहाय) बनकर रह जाओ। बेशक तेरा रब जिसे चाहता है ज़्यादा रिज़्क़ देता है। और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। बेशक वह अपने बंदों को जानने वाला, देखने वाला है। (29-30)

और अपनी औलाद को मुफ़्लिसी के अंदेशे से क़त्ल न करो, हम उन्हें भी रिज़्क़ देते हैं और तुम्हें भी। बेशक उन्हें क़त्ल करना बड़ा गुनाह है। और ज़िना (व्यभिचार) के क़रीब न जाओ, वह बेहयाई है और बुरा रास्ता है। (31-32)

और जिस जान को ख़ुदा ने मोहतरम ठहराया है उसे क़त्ल मत करो मगर हक़ पर। और जो शख़्स नाहक़ क़त्ल किया जाए तो हमने उसके वारिस को इख़्तियार दिया है। पस वह क़त्ल में हद से न गुज़रे, उसकी मदद की जाएगी। (33)

और तुम यतीम (अनाथ) के माल के पास न जाओ मगर जिस तरह कि बेहतर हो। यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुंच जाए। और अहद (वचन) को पूरा करो। बेशक अहद की पूछ होगी। और जब नाप कर दो तो पूरा नापो और ठीक तराज़ू से तौल कर दो। यह बेहतर तरीक़ा है और इसका अंजाम भी अच्छा है। (34-35)

और ऐसी चीज़ के पीछे न लगो जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं। बेशक कान और आंख और दिल सबकी आदमी से पूछ होगी। और ज़मीन में अकड़ कर न चलो। तुम ज़मीन को फाड़ नहीं सकते और न तुम पहाड़ों की लम्बाई को पहुंच सकते हो। ये सारे बुरे काम तेरे रब के नज़दीक नापसंदीदा हैं। (36-38)

ये वे बातें हैं जो तुम्हारे रब ने हिक्मत (तत्वदर्शिता) में से तुम्हारी तरफ़ 'वही' (प्रकाशना) की हैं। और अल्लाह के साथ कोई और माबूद न बनाना, वरना तुम जहन्नम में डाल दिए जाओगे, मलामतज़दा (निंदित) और रांदह (ठुकराया हुआ) होकर। (39)

क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें बेटे चुनकर दिए और अपने लिए फ़रिश्तों में से बेटियां बना लीं। बेशक तुम बड़ी सख़्त बात कहते हो। और हमने इस क़ुरआन में तरह-तरह से बयान किया है ताकि वे याददिहानी (अनुस्मरण) हासिल करें। लेकिन उनकी बेज़ारी बढ़ती ही जाती है। कहो कि अगर अल्लाह के साथ और भी माबूद (पूज्य) होते जैसा कि ये लोग कहते हैं तो वे अर्श वाले की तरफ़ ज़रूर रास्ता निकालते। अल्लाह पाक और बरतर है उससे जो

ये लोग कहते हैं। सातों आसमान और ज़मीन और जो उनमें हैं सब उसकी पाकी बयान करते हैं। और कोई चीज़ ऐसी नहीं जो तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बयान न करती हो। मगर तुम उनकी तस्बीह को नहीं समझते। बिला शुबह वह हिल्म (उदारता) वाला, बख़्शने वाला है। (40-44)

और जब तुम क़ुरआन पढ़ते हो तो हम तुम्हारे और उन लोगों के दर्मियान एक छुपा हुआ पर्दा हायल कर देते हैं जो आख़िरत को नहीं मानते। और हम उनके दिलों पर पर्दा रख देते हैं कि वे उसे न समझें और उनके कानों में गिरानी (बोझ) पैदा कर देते हैं और जब तुम क़ुरआन में तंहा अपने रब का ज़िक्र करते हो तो वे नफ़रत के साथ पीठ फेर लेते हैं। (45-46)

और हम जानते हैं कि जब वे तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं तो वे किस लिए सुनते हैं और जबकि वे आपस में सरगोशियां करते हैं। ये ज़ालिम कहते हैं कि तुम लोग तो बस एक सहरज़दा (जादूग्रस्त) आदमी के पीछे चल रहे हो देखो तुम्हारे ऊपर वह कैसी-कैसी मिसालें चसपां कर रहे हैं। ये लोग खोए गए, वे रास्ता नहीं पा सकते। (47-48)

और वे कहते हैं कि क्या जब हम हड्डी और रेज़ा हो जाएंगे तो क्या हम नए सिरे से उठाए जाएंगे। कहो कि तुम पत्थर या लोहा हो जाओ या और कोई चीज़ जो तुम्हारे ख़्याल में इनसे भी ज़्यादा मुश्किल हो। फिर वे कहेंगे कि वह कौन है जो हमें दुबारा ज़िंदा करेगा। तुम कहो कि वही जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया है। फिर वे तुम्हारे आगे अपना सर हिलाएंगे और कहेंगे कि यह कब होगा, कहो कि अजब नहीं कि उसका वक़्त क़रीब आ पहुंचा हो, जिस दिन ख़ुदा तुम्हें पुकारेगा तो तुम उसकी हम्द (प्रशंसा) करते हुए उसकी पुकार पर चले आओगे और तुम यह ख़्याल करोगे कि तुम बहुत थोड़ी मुद्दत रहे। (49-52)

और मेरे बंदों से कहो कि वही बात कहें जो बेहतर हो। शैतान उनके दर्मियान फ़साद डालता है। बेशक शैतान इंसान का खुला हुआ दुश्मन है। (53)

तुम्हारा रब तुम्हें ख़ूब जानता है, अगर वह चाहे तो तुम पर रहम करे या

अगर वह चाहे तो तुम्हें अज़ाब दे। और हमने तुम्हें उनका ज़िम्मेदार बनाकर नहीं भेजा। और तुम्हारा रब ख़ूब जानता है उन्हें जो आसमानों और ज़मीन में हैं और हमने कुछ नबियों को कुछ पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी है और हमने दाऊद को ज़बूर दी। (54-55)

कहो कि उन्हें पुकारो जिन्हें तुमने ख़ुदा के सिवा माबूद (पूज्य) समझ रखा है। वे न तुमसे किसी मुसीबत को दूर करने का इख़्तियार रखते हैं और न उसे बदल सकते हैं। जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे ख़ुद अपने रब का क़ुर्ब (सामीप्य) ढूंढते हैं कि उनमें से कौन सबसे ज़्यादा क़रीब हो जाए। और वे अपने रब की रहमत के उम्मीदवार हैं। और वे उसके अज़ाब से डरते हैं। वाक़ई तुम्हारे रब का अज़ाब डरने ही की चीज़ है। (56-57)

और कोई बस्ती ऐसी नहीं जिसे हम क़ियामत से पहले हलाक न करें या सख़्त अज़ाब न दें। यह बात किताब में लिखी हुई है। (58)

और हमें निशानियां भेजने से नहीं रोका मगर उस चीज़ ने कि अगलों ने उन्हें झुठला दिया। और हमने समूद को ऊंटनी दी उन्हें समझाने के लिए। फिर उन्होंने उस पर ज़ुल्म किया। और निशानियां हम सिर्फ़ डराने के लिए भेजते हैं। (59)

और जब हमने तुमसे कहा कि तुम्हारे रब ने लोगों को घेरे में ले लिया है। और वह रूया (अलौकिक दृश्य) जो हमने तुम्हें दिखाया वह सिर्फ़ लोगों की जांच के लिए था, और उस दरख़्त को भी जिसकी क़ुरआन में मज़म्मत (निंदा) की गई है। और हम उन्हें डराते हैं, लेकिन उनकी बढ़ी हुई सरकशी बढ़ती ही जा रही है। (60)

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान) ने नहीं किया। उसने कहा क्या मैं ऐसे शख़्स को सज्दा करूं जिसे तूने मिट्टी से बनाया है। उसने कहा, ज़रा देख, यह शख़्स जिसे तूने मुझ पर इज़्ज़त दी है अगर तू मुझे क़ियामत के दिन तक मोहलत दे तो मैं थोड़े लोगों के सिवा इसकी तमाम औलाद को खा जाऊंगा। (61-62)

ख़ुदा ने कहा कि जा उनमें से जो भी तेरा साथी बना तो जहन्नम तुम सबका पूरा-पूरा बदला है। और उनमें से जिस पर तेरा बस चले, तू अपनी आवाज़ से उनका क़दम उखाड़ दे और उन पर अपने सवार और प्यादे (पैदल सेना) चढ़ा ला और उनके माल और औलाद में उनका साझी बन जा और उनसे वादा कर। और शैतान का वादा एक धोखे के सिवा और कुछ नहीं। बेशक जो मेरे बंदे हैं उन पर तेरा ज़ोर नहीं चलेगा और तेरा रब कारसाज़ी (कार्य-सिद्धि) के लिए काफ़ी है। (63-65)

तुम्हारा रब वह है जो तुम्हारे लिए समुद्र में कश्ती चलाता है ताकि तुम उसका फ़ज़्ल (अनुग्रह) तलाश करो। बेशक वह तुम्हारे ऊपर महरबान है। और जब समुद्र में तुम पर कोई आफ़त आती है तो तुम उन माबूदों (पूज्यों) को भूल जाते हो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे। फिर जब वह तुम्हें ख़ुश्की की तरफ़ बचा लाता है तो तुम दुबारा फिर जाते हो, और इंसान बड़ा ही नाशुक्रा है। (66-67)

क्या तुम इससे बेडर हो गए कि ख़ुदा तुम्हें ख़ुश्की की तरफ़ लाकर ज़मीन में धंसा दे या तुम पर पत्थर बरसाने वाली आंधी भेज दे, फिर तुम किसी को अपना कारसाज़ न पाओ। या तुम इससे बेडर हो गए कि वह तुम्हें दुबारा समुद्र में ले जाए फिर तुम पर हवा का सख़्त तूफ़ान भेज दे और तुम्हें तुम्हारे इंकार के सबब से ग़र्क़ कर दे। फिर तुम इस पर कोई हमारा पीछा करने वाला न पाओ। (68-69)

और हमने आदम की औलाद को इज़्ज़त दी और हमने उन्हें ख़ुश्की और तरी में सवार किया और उन्हें पाकीज़ा (पवित्र) चीज़ों का रिज़्क़ दिया और हमने उन्हें अपनी बहुत सी मख़्लूक़ात पर फ़ौक़ियत (श्रेष्ठता) दी। (70)

जिस दिन हम हर गिरोह को उसके रहनुमा के साथ बुलाएंगे। पस जिसका आमालनामा (कर्म-पत्र) उसके दाएं हाथ में दिया जाएगा वे लोग अपना आमालनामा पढ़ेंगे और उनके साथ ज़रा भी नाइंसाफ़ी न की जाएगी। और जो शख़्स इस दुनिया में अंधा रहा वह आख़िरत में भी अंधा रहेगा और बहुत दूर पड़ा होगा रास्ते से। (71-72)

और क़रीब था कि ये लोग फ़ितने में डाल कर तुम्हें उससे हटा दें जो हमने तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की है ताकि तुम उसके सिवा हमारी तरफ़ ग़लत बात मंसूब करो और तब वे तुम्हें अपना दोस्त बना लेते। और अगर हमने तुम्हें जमाए न रखा होता तो क़रीब था कि तुम उनकी तरफ़ कुछ झुक पड़ो। फिर हम तुम्हें ज़िंदगी और मौत दोनों का दोहरा (अज़ाब) चखाते। इसके बाद तुम हमारे मुक़ाबले में अपना कोई मददगार न पाते। (73-75)

और ये लोग इस सरज़मीन से तुम्हारे क़दम उखाड़ने लगे थे ताकि तुम्हें इससे निकाल दें। और अगर ऐसा होता तो तुम्हारे बाद ये भी बहुत कम ठहरने पाते। जैसा कि उन रसूलों के बारे में हमारा तरीक़ा रहा है जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा था और तुम हमारे तरीक़े में तब्दीली न पाओगे। (76-77)

नमाज़ क़ायम करो सूरज ढलने के बाद से रात के अंधेरे तक। और ख़ास कर फ़ज्र की क़िरात। बेशक फ़ज्र की क़िरात मशहूद (उपस्थित) होती है। (78)

और रात को तहज्जुद पढ़ो, यह नफ़्ल है तुम्हारे लिए। उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हें मक़ामे महमूद (प्रशंसित-स्थल) पर खड़ा करे। (79)

और कहो कि ऐ मेरे रब मुझे दाख़िल कर सच्चा दाख़िल करना और मुझे निकाल सच्चा निकालना। और मुझे अपने पास से मददगार क़ुव्वत (शक्ति) अता कर और कह कि हक़ (सत्य) आया और बातिल (असत्य) मिट गया। बेशक बातिल मिटने ही वाला था। (80-81)

और हम क़ुरआन में से उतारते हैं जिसमें शिफ़ा (निदान) और रहमत है ईमान वालों के लिए, और ज़ालिमों के लिए इससे नुक़सान के सिवा और कुछ नहीं बढ़ता। (82)

और आदमी पर जब हम इनाम करते हैं तो वह एराज़ (उपेक्षा) करता है और पीठ मोड़ लेता है। और जब उसे तकलीफ़ पहुंचती है तो वह नाउम्मीद हो जाता है। कहो कि हर एक अपने तरीक़े पर अमल कर रहा है। अब तुम्हारा रब ही बेहतर जानता है कि कौन ज़्यादा ठीक रास्ते पर है। (83-84)

और वे तुमसे रूह (आत्मा) के बारे में पूछते हैं। कहो कि रूह मेरे रब के हुक्म से है। और तुम्हें बहुत थोड़ा इल्म दिया गया है। (85)

और अगर हम चाहें तो वह सब कुछ तुमसे छीन लें जो हमने 'वही' (प्रकाशना) के ज़रिए तुम्हें दिया है, फिर तुम इसके लिए हमारे मुक़ाबले में कोई हिमायती न पाओ, मगर यह सिर्फ़ तुम्हारे रब की रहमत है, बेशक तुम्हारे ऊपर उसका बड़ा फ़ज़्ल है। कहो कि अगर तमाम इंसान और जिन्नात जमा हो जाएं कि ऐसा क़ुरआन बना लाएं तब भी वे इसके जैसा न ला सकेंगे। अगरचे वे एक दूसरे के मददगार बन जाएं। (86-88)

और हमने लोगों के लिए इस क़ुरआन में हर क़िस्म का मज़्मून तरह-तरह से बयान किया है, फिर भी अक्सर लोग इंकार ही पर जमे रहे और वे कहते हैं कि हम हरगिज़ तुम पर ईमान न लाएंगे जब तक तुम हमारे लिए ज़मीन से कोई चशमा (स्रोत) जारी न कर दो या तुम्हारे पास खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो जाए, फिर तुम उस बाग़ के बीच में बहुत सी नहरें जारी कर दो। या जैसा कि तुम कहते हो, हमारे ऊपर आसमान से टुकड़े गिरा दो या अल्लाह और फ़रिश्तों को लाकर हमारे सामने खड़ा कर दो या तुम्हारे पास सोने का कोई घर हो जाए या तुम आसमान पर चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ने को भी न मानेंगे जब तक तुम वहां से हम पर कोई किताब न उतार दो जिसे हम पढ़ें। कहो कि मेरा रब पाक है, मैं तो सिर्फ़ एक बशर (इंसान) हूं, अल्लाह का रसूल। (89-93)

और जब उनके पास हिदायत आ गई तो उन्हें ईमान लाने से इसके सिवा और कोई चीज़ रुकावट नहीं बनी कि उन्होंने कहा कि क्या अल्लाह ने बशर (इंसान) को रसूल बनाकर भेजा है। कहो कि अगर ज़मीन में फ़रिश्ते होते कि उसमें चलते फिरते तो अलबत्ता हम उन पर आसमान से फ़रिश्ते को रसूल बनाकर भेजते। कहो कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाही के लिए काफ़ी है। बेशक वह अपने बंदों को जानने वाला, देखने वाला है। (94-96)

अल्लाह जिसे राह दिखाए वही राह पाने वाला है। और जिसे वह बेराह कर दे तो तुम उनके लिए अल्लाह के सिवा किसी को मददगार न पाओगे। और हम क़ियामत के दिन उन्हें उनके मुंह के बल अंधे और गूंगे और बहरे इकट्ठा करेंगे उनका ठिकाना जहन्नम है। जब-जब उसकी आग धीमी होगी

हम उसे मज़ीद भड़का देंगे। यह है उनका बदला इस सबब से कि उन्होंने हमारी निशानियों का इंकार किया। और कहा कि जब हम हड्डी और रेज़ा हो जाएंगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा करके उठाए जाएंगे। (97-98)

क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया वह इस पर क़ादिर है कि उनके मानिंद दुबारा पैदा कर दे और उसने उनके लिए एक मुद्दत मुक़र्रर कर रखी है, इसमें कोई शक नहीं। इस पर भी ज़ालिम लोग बेइंकार किए न रहे। (99)

कहो कि अगर तुम लोग मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों के मालिक होते तो इस सूरत में तुम ख़र्च हो जाने के अंदेशे से ज़रूर हाथ रोक लेते और इंसान बड़ा ही तंग दिल है। (100)

और हमने मूसा को नौ निशानियां खुली हुई दीं। तो बनी इस्राईल से पूछ लो जबकि वह उनके पास आया तो फ़िरऔन ने उससे कहा कि ऐ मूसा, मेरे ख़्याल में तो ज़रूर तुम पर किसी ने जादू कर दिया है। मूसा ने कहा कि तू ख़ूब जानता है कि उन्हें आसमानों और ज़मीन के रब ही ने उतारा है, आंखें खोल देखने के लिए और मेरा ख़्याल है कि ऐ फ़िरऔन, तू ज़रूर शामतज़दा (प्रकोपित) आदमी है। फिर फ़िरऔन ने चाहा कि उन्हें इस सरज़मीन से उखाड़ दे। पस हमने उसे और जो उसके साथ थे सबको ग़र्क़ कर दिया। और हमने बनी इस्राईल से कहा कि तुम ज़मीन में रहो। फिर जब आख़िरत का वादा आ जाएगा तो हम तुम सबको इकट्ठा करके लाएंगे। (101-104)

और हमने क़ुरआन को हक़ के साथ उतारा है और वह हक़ ही के साथ उतरा है। और हमने तुम्हें सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है और हमने क़ुरआन को थोड़ा-थोड़ा करके उतारा ताकि तुम उसे लोगों के सामने ठहर-ठहर कर पढ़ो। और उसे हमने बतदरीज (क्रमवार) उतारा है। (105-106)

कहो कि तुम इस पर ईमान लाओ या ईमान न लाओ, वे लोग जिन्हें इससे पहले इल्म दिया गया था जब वह उनके सामने पढ़ा जाता है तो वे

ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं। और वे कहते हैं कि हमारा रब पाक है। बेशक हमारे रब का वादा ज़रूर पूरा होता है। और वे ठोड़ियों के बल रोते हुए गिरते हैं और क़ुरआन उनका ख़ुशूअ (विनय) बढ़ा देता है। (107-109)

कहो कि चाहे अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान (कृपाशील) कहकर पुकारो, उसके लिए सब अच्छे नाम हैं। और तुम अपनी नमाज़ न बहुत पुकार कर पढ़ो और न बिल्कुल चुपके-चुपके पढ़ो। और दोनों के दर्मियान का तरीक़ा इख़्तियार करो। और कहो कि तमाम ख़ूबियां उस अल्लाह के लिए हैं जो न औलाद रखता है और न बादशाही में कोई उसका शरीक है। और न कमज़ोरी की वजह से उसका कोई मददगार है। और तुम उसकी ख़ूब बड़ाई बयान करो। (110-111)

सूरह-18. अल कहफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने अपने बंदे पर किताब उतारी। और उसमें कोई कजी (टेढ़) नहीं रखी। बिल्कुल ठीक, ताकि वह अल्लाह की तरफ़ से एक सख़्त अज़ाब से आगाह कर दे। और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दे दे जो नेक आमाल करते हैं कि उनके लिए अच्छा बदला है। वे उसमें हमेशा रहेंगे। और उन लोगों को डरा दे जो कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है। उन्हें इस बात का कोई इल्म नहीं और न उनके बाप दादा को। यह बड़ी भारी बात है जो उनके मुंह से निकल रही है, वे सिर्फ़ झूठ कहते हैं। (1-5)

शायद तुम उनके पीछे ग़म से अपने को हलाक कर डालोगे, अगर वे इस बात पर ईमान न लाएं। जो कुछ ज़मीन पर है उसे हमने ज़मीन की रौनक़ बनाया है ताकि हम लोगों को जांचें कि उनमें कौन अच्छा अमल करने वाला है और हम ज़मीन की तमाम चीज़ों को एक साफ़ मैदान बना देंगे। (6-8)

क्या तुम ख़्याल करते हो कि कहफ़ और रक़ीम वाले हमारी निशानियों में से बहुत अजीब निशानी थे। जब उन नौजवानों ने ग़ार मे पनाह ली, फिर उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब हमें अपने पास से रहमत दे और हमारे मामले

को दुरुस्त कर दे। पस हमने ग़ार में उनके कानों पर सालहा साल (दीर्घ काल) के लिए (नींद का पर्दा) डाल दिया। फिर हमने उन्हें उठाया ताकि हम मालूम करें कि दोनों गिरोहों में से कौन ठहरने की मुद्दत का ज़्यादा ठीक शुमार करता है। (9-12)

हम तुम्हें उनका अस्ल क़िस्सा सुनाते हैं। वे कुछ नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाए और हमने उनकी हिदायत में मज़ीद तरक़्क़ी दी और हमने उनके दिलों को मज़बूत कर दिया जबकि वे उठे और कहा कि हमारा रब वही है जो आसमानों और ज़मीन का रब है। हम उसके सिवा किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को न पुकारेंगे। अगर हम ऐसा करेंगे तो हम बहुत बेजा बात करेंगे। ये हमारी क़ौम के लोगों ने उसके सिवा दूसरे माबूद बना रखे हैं। ये उनके हक़ में वाज़ेह दलील क्यों नहीं लाते। फिर उस शख़्स से बड़ा ज़ालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे। (13-15)

और जब तुम उन लोगों से अलग हो गए हो और उनके माबूदों से जिनकी वे ख़ुदा के सिवा इबादत करते हैं तो अब चलकर ग़ार में पनाह लो, तुम्हारा रब तुम्हारे ऊपर अपनी रहमत फैलाएगा। और तुम्हारे काम के लिए सरोसामान मुहय्या करेगा। (16)

और तुम सूरज को देखते कि जब वह तुलूअ (उदय) होता है तो उनके ग़ार से दाईं जानिब को बचा रहता है और जब डूबता है तो उनसे बाईं जानिब को कतरा जाता है और वे ग़ार के अंदर एक वसीअ (विस्तृत) जगह में हैं। यह अल्लाह की निशानियों में से है जिसे अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत पाने वाला है और जिसे अल्लाह बेराह कर दे तो तुम उसके लिए कोई मददगार राह बताने वाला न पाओगे। (17)

और तुम उन्हें देखकर यह समझे कि वे जाग रहे हैं, हालाँकि वे सो रहे थे। हम उन्हें दाएं और बाएं करवट बदलवाते रहते थे। और उनका कुत्ता ग़ार के दहाने पर दोनों हाथ फैलाए बैठा था। अगर तुम उन्हें झांक कर देखते तो उनसे पीठ फेर कर भाग खड़े होते और तुम्हारे अंदर उनकी दहशत बैठ जाती। (18)

और इसी तरह हमने उन्हें जगाया ताकि वे आपस में पूछ गछ करें। उनमें से एक कहने वाले ने कहा, तुम कितनी देर यहां ठहरे। उन्होंने कहा कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम ठहरे होंगे। वे बोले कि अल्लाह ही बेहतर जानता है कि तुम कितनी देर यहां रहे। पस अपने में से किसी को यह चांदी का सिक्का देकर शहर भेजो, पस वह देखे कि पाकीज़ा खाना कहां मिलता है, और तुम्हारे लिए इसमें से कुछ खाना लाए। और वह नर्मी से जाए और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे। अगर वे तुम्हारी ख़बर पा जाएंगे तो तुम्हें पत्थरों से मार डालेंगे या तुम्हें अपने दीन में लौटा लेंगे और फिर तुम कभी फ़लाह न पाओगे। (19-20)

और इस तरह हमने उन पर लोगों को मुतलअ (सूचित) कर दिया ताकि लोग जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है और यह कि क़ियामत में कोई शक नहीं। जब लोग आपस में उनके मामले में झगड़ रहे थे। फिर कहने लगे कि उनके ग़ार पर एक इमारत बना दो। उनका रब उन्हें ख़ूब जानता है। जो लोग उनके मामले में ग़ालिब आए उन्होंने कहा कि हम उनके ग़ार पर एक इबादतगाह बनाएंगे। (21)

कुछ लोग कहेंगे कि वे तीन थे, और चौथा उनका कुत्ता था। और कुछ लोग कहेंगे कि वे पांच थे और छठा उनका कुत्ता था, ये लोग बेतहक़ीक़ बात कह रहे हैं, और कुछ लोग कहेंगे कि वे सात थे और आठवां उनका कुत्ता था। कहो कि मेरा रब बेहतर जानता है कि वे कितने थे। थोड़े ही लोग उन्हें जानते हैं। पस तुम सरसरी बात से ज़्यादा उनके मामले में बहस न करो और न उनके बारे में उनमें से किसी से पूछो। (22)

और तुम किसी काम के बारे में यूं न कहो कि मैं इसे कल कर दूंगा, मगर यह कि अल्लाह चाहे। और जब तुम भूल जाओ तो अपने रब को याद करो। और कहो कि उम्मीद है कि मेरा रब मुझे भलाई की इससे ज़्यादा क़रीब राह दिखा दे। (23-24)

और वे लोग अपने ग़ार में तीन सौ साल रहे (कुछ लोग मुद्दत की

शुमार में) 9 साल और बढ़ गए हैं, कहो कि अल्लाह उनके रहने की मुद्दत को ज़्यादा जानता है। आसमानों और ज़मीन का ग़ैब उसके इल्म में है, क्या ख़ूब है वह देखने वाला और सुनने वाला। ख़ुदा के सिवा उनका कोई मददगार नहीं और न अल्लाह किसी को अपने इख़्तियार में शरीक करता है। (25-26)

और तुम्हारे रब की जो किताब तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है उसे सुनाओ, ख़ुदा की बातों को कोई बदलने वाला नहीं। और उसके सिवा तुम कोई पनाह नहीं पा सकते। और अपने आपको उन लोगों के साथ जमाए रखो जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं, वे उसकी रिज़ा (प्रसन्नता) के तालिब हैं। और तुम्हारी आंखे हयाते दुनिया की रौनक़ की ख़ातिर उनसे हटने न पाएं। और तुम ऐसे शख़्स का कहना न मानो जिसके क़ल्ब (हृदय) को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया। और वह अपनी ख़्वाहिश पर चलता है। और उसका मामला हद से गुज़र गया है। (27-28)

और कहो कि यह हक़ (सत्य) है तुम्हारे रब की तरफ़ से, पस जो शख़्स चाहे इसे माने और जो शख़्स चाहे न माने। हमने ज़ालिमों के लिए ऐसी आग तैयार कर रखी है जिसकी क़नातें उन्हें अपने घेरे में ले लेंगी। और अगर वे पानी के लिए फ़रयाद करेंगे तो उनकी फ़रयादरसी ऐसे पानी से की जाएगी जो तेल की तलछट की तरह होगा। वह चेहरों को भून डालेगा। क्या बुरा पानी होगा और कैसा बुरा ठिकाना। (29)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो हम ऐसे लोगों का अज्र (प्रतिफल) ज़ाया नहीं करेंगे जो अच्छी तरह काम करें। उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वहां उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे। और वे बारीक और दबीज़ (गाढ़े) रेशम के सब्ज़ कपड़े पहनेंगे, तख़्तों पर टेक लगाए हुए। कैसा अच्छा बदला है और कैसी अच्छी जगह। (30-31)

तुम उनके सामने एक मिसाल पेश करो। दो शख़्स थे। उनमें से एक को हमने अंगूरों के दो बाग़ दिए। और उनके गिर्द खजूर के दरख़्तों का

इहाता बनाया और दोनों के दर्मियान खेती रख दी। दोनों बाग़ अपना पूरा फल लाए, उनमें कुछ कमी नहीं की। और दोनों बाग़ों के बीच हमने नहर जारी कर दी और उसे ख़ूब फल मिला तो उसने अपने साथी से बात करते हुए कहा कि मैं तुझसे माल में ज़्यादा हूं और तादाद में भी ज़्यादा ताक़तवर हूं। वह अपने बाग़ में दाख़िल हुआ और वह अपने आप पर ज़ुल्म कर रहा था। उसने कहा कि मैं नहीं समझता कि यह कभी बर्बाद हो जाएगा। और मैं नहीं समझता कि क़ियामत कभी आएगी। और अगर मैं अपने रब की तरफ़ लौटा दिया गया तो ज़रूर इससे ज़्यादा अच्छी जगह मुझे मिलेगी। (32-36)

उसके साथी ने बात करते हुए कहा—क्या तुम उस ज़ात से इंकार कर रहे हो जिसने तुम्हें मिट्टी से बनाया, फिर पानी की एक बूंद से। फिर तुम्हें पूरा आदमी बना दिया। लेकिन मेरा रब तो वही अल्लाह है और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता। और जब तुम अपने बाग़ में दाख़िल हुए तो तुमने क्यों न कहा कि जो अल्लाह चाहता है वही होता है, अल्लाह के बग़ैर किसी में कोई क़ुव्वत (शक्ति) नहीं। अगर तुम देखते हो कि मैं माल और औलाद में तुमसे कम हूं तो उम्मीद है कि मेरा रब मुझे तुम्हारे बाग़ से बेहतर बाग़ दे दे। और तुम्हारे बाग़ पर आसमान से कोई आफ़त भेज दे जिससे वह बाग़ साफ़ मैदान होकर रह जाए या उसका पानी .ख़ुश्क हो जाए, फिर तुम उसे किसी तरह न पा सको। (37-41)

और उसके फल पर आफ़त आई तो जो कुछ उसने उस पर ख़र्च किया था उस पर वह हाथ मलता रह गया। और वह बाग़ अपनी टट्टियों पर गिरा हुआ पड़ा था। और वह कहने लगा कि ऐ काश मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न ठहराता। और उसके पास कोई जत्था न था जो ख़ुदा के सिवा उसकी मदद करता और न वह ख़ुद बदला लेने वाला बन सका। यहां सारा इख़्तियार सिर्फ़ .ख़ुदाए बरहक़ का है। वह बेहतरीन अज्र (प्रतिफल) और बेहतरीन अंजाम वाला है। (42-44)

और उन्हें दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल सुनाओ। जैसे कि पानी जिसे

हमने आसमान से उतारा। फिर उससे ज़मीन की नबातात (पौध) ख़ूब घनी हो गईं। फिर वे रेज़ा-रेज़ा हो गईं जिसे हवाएं उड़ाती फिरती हैं। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। माल और औलाद दुनियावी ज़िंदगी की रौनक़ हैं। और बाक़ी रहने वाली नेकियां तुम्हारे रब के नज़दीक सवाब के एतबार से बेहतर हैं। (45-46)

और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे। और तुम देखोगे ज़मीन को बिल्कुल खुली हुई। और हम उन सबको जमा करेंगे। फिर हम उनमें से किसी को न छोड़ेंगे। और सब लोग तेरे रब के सामने सफ़ बांधकर पेश किए जाएंगे। तुम हमारे पास आ गए जिस तरह हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, बल्कि तुमने यह गुमान किया कि हम तुम्हारे लिए कोई वादे का वक़्त मुक़र्रर नहीं करेंगे। (47-48)

और रजिस्टर रखा जाएगा तो तुम मुजरिमों को देखोगे कि उसमें जो कुछ है वे उससे डरते होंगे और कहेंगे कि हाय ख़राबी। कैसी है यह किताब कि इसने न कोई छोटी बात दर्ज करने से छोड़ी है और न कोई बड़ी बात। और जो कुछ उन्होंने किया है वह सब सामने पाएंगे। और तेरा रब किसी के ऊपर ज़ुल्म न करेगा। (49)

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान) ने न किया, वह जिन्नों में से था। पस उसने अपने रब के हुक्म की नाफ़रमानी की। अब क्या तुम उसे और उसकी औलाद को मेरे सिवा अपना दोस्त बनाते हो हालाँकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं। यह ज़ालिमों के लिए बहुत बुरा बदल है। (50)

मैंने उन्हें न आसमानों और ज़मीन पैदा करने के वक़्त बुलाया। और न ख़ुद उनके पैदा करने के वक़्त बुलाया। और मैं ऐसा नहीं कि गुमराह करने वालों को अपना मददगार बनाऊं। (51)

और जिस दिन ख़ुदा कहेगा कि जिन्हें तुम मेरा शरीक समझते थे उन्हें पुकारो। पस वे उन्हें पुकारेंगे मगर वे उन्हें कोई जवाब न देंगे। और हम

उनके दर्मियान (अदावत की) आड़ कर देंगे। और मुजरिम लोग आग को देखेंगे और समझ लेंगे कि वे उसमें गिरने वाले हैं और वे उससे बचने की कोई राह न पाएंगे। (52-53)

और हमने इस क़ुरआन में लोगों की हिदायत के लिए हर क़िस्म की मिसाल बयान की है और इंसान सबसे ज़्यादा झगड़ालू है। और लोगों को बाद इसके कि उन्हें हिदायत पहुंच चुकी, ईमान लाने से और अपने रब से बख़्शिश मांगने से नहीं रोका मगर उस चीज़ ने कि अगलों का मामला उनके लिए भी ज़ाहिर हो जाए, या अज़ाब उनके सामने आ खड़ा हो। (54-55)

और रसूलों को हम सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजते हैं, और मुंकिर लोग नाहक़ की बातें लेकर झूठा झगड़ा करते हैं ताकि इसके ज़रिए से हक़ को नीचा कर दें और उन्होंने मेरी निशानियों को और जो डर सुनाए गए उन्हें मज़ाक़ बना दिया। उससे बड़ा ज़ालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के ज़रिए याददिहानी की जाए तो वह उससे मुंह फेर ले और अपने हाथों के अमल को भूल जाए। हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वे उसे न समझें और उनके कानों में डाट है। और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो वे कभी राह पर आने वाले नहीं हैं। (56-57)

और तुम्हारा रब बख़्शने वाला, रहमत वाला है। अगर वह उनके किए पर उन्हें पकड़े तो फ़ौरन उन पर अज़ाब भेज दे, मगर उनके लिए एक मुक़र्रर वक़्त है और वे उसके मुक़ाबले में कोई पनाह की जगह न पाएंगे। और ये बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया जबकि वे ज़ालिम हो गए। और हमने उनकी हलाकत का एक वक़्त मुक़र्रर किया था। (58-59)

और जब मूसा ने अपने शागिर्द से कहा कि मैं चलता रहूंगा यहां तक कि या तो दो दरियाओं के मिलने की जगह पर पहुंच जाऊं या इसी तरह वर्षों तक चलता रहूं। पस जब वे दरियाओं के मिलने की जगह पहुंचे तो वे अपनी मछली को भूल गए। और मछली ने दरिया में अपनी राह ली। फिर

जब वे आगे बढ़े तो मूसा ने अपने शागिर्द से कहा कि हमारा खाना लाओ, हमारे इस सफ़र से हमें बड़ी थकान हो गई। (60-62)

शागिर्द ने कहा, क्या आपने देखा, जब हम उस पत्थर के पास ठहरे थे तो मैं मछली को भूल गया। और मुझे शैतान ने भुला दिया कि मैं उसका ज़िक्र करता। और मछली अजीब तरीक़े से निकल कर दरिया में चली गई। मूसा ने कहा, उसी मौक़े की तो हमें तलाश थी। पस दोनों अपने क़दमों के निशान देखते हुए वापस लौटे। तो उन्होंने वहां हमारे बंदों में से एक बंदे को पाया जिसे हमने अपने पास से रहमत दी थी और जिसे अपने पास से एक इल्म सिखाया था। (63-65)

मूसा ने उससे कहा, क्या मैं आपके साथ रह सकता हूं ताकि आप मुझे उस इल्म में से सिखा दें जो आपको सिखाया गया है। उसने कहा कि तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर सकते और तुम उस चीज़ पर कैसे सब्र कर सकते हो जो तुम्हारी वाक़फ़ियत (जानकारी) के दायरे से बाहर है। मूसा ने कहा, इंशाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे और मैं किसी बात में आपकी नाफ़रमानी नहीं करूंगा। उसने कहा कि अगर तुम मेरे साथ चलते हो तो मुझसे कोई बात न पूछना जब तक कि मैं ख़ुद तुमसे उसका ज़िक्र न करूं। (66-70)

फिर दोनों चले। यहां तक कि जब वे कश्ती में सवार हुए तो उस शख़्स ने कश्ती में छेद कर दिया। मूसा ने कहा, क्या आपने इस कश्ती में इसलिए छेद किया है कि कश्ती वालों को ग़र्क़ कर दें। यह तो आपने बड़ी सख़्त चीज़ कर डाली। उसने कहा, मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे। मूसा ने कहा, मेरी भूल पर मुझे न पकड़िए और मेरे मामले में सख़्ती से काम न लीजिए। फिर वे दोनों चले यहां तक कि वे एक लड़के से मिले तो उस शख़्स ने उसे मार डाला। मूसा ने कहा, क्या आपने एक मासूम जान को मार डाला हालाँकि उसने किसी का ख़ून नहीं किया था। यह तो आपने एक नामाक़ूल बात की है। (71-74)

उस शख़्स ने कहा कि क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ

सब्र न कर सकोगे। मूसा ने कहा कि इसके बाद अगर मैं आपसे किसी चीज़ के मुतअल्लिक़ पूछूं तो आप मुझे साथ न रखें। आप मेरी तरफ़ से उज्र की हद को पहुंच गए। फिर दोनों चले। यहां तक कि जब वे एक बस्ती वालों के पास पहुंचे तो वहां वालों से खाने को मांगा। उन्होंने उनकी मेज़बानी से इंकार कर दिया। फिर उन्हें वहां एक दीवार मिली जो गिरा चाहती थी तो उसने उसे सीधा कर दिया। मूसा ने कहा अगर आप चाहते तो इस पर कुछ उजरत (मेहनताना) ले लेते। उसने कहा कि अब यह मेरे और तुम्हारे दर्मियान जुदाई है। मैं तुम्हें उन चीज़ों की हक़ीक़त बताऊंगा जिन पर तुम सब्र न कर सके। (75-78)

कश्ती का मामला यह है कि वह चन्द मिस्कीनों की थी जो दरिया में मेहनत करते थे। तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूं, और उनके आगे एक बादशाह था जो हर कश्ती को ज़बरदस्ती छीन कर ले लेता था। (79)

और लड़के का मामला यह है कि उसके मां-बाप ईमानदार थे। हमें अंदेशा हुआ कि वह बड़ा होकर अपनी सरकशी और नाफ़रमानी से उन्हें तंग करेगा। पस हमने चाहा कि उनका रब उन्हें उसकी जगह ऐसी औलाद दे जो पाकीज़गी में उससे बेहतर हो और शफ़क़त करने वाली हो। (80-81)

और दीवार का मामला यह है कि वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी। और उस दीवार के नीचे उनका एक ख़ज़ाना दफ़्न था और उनका बाप एक नेक आदमी था पस तुम्हारे रब ने चाहा कि वे दोनों अपनी जवानी की उम्र को पहुंचें और अपना ख़ज़ाना निकालें। यह तुम्हारे रब की रहमत से हुआ। और मैंने उसे अपनी राय से नहीं किया। यह है हक़ीक़त उन बातों की जिन पर तुम सब्र न कर सके। (82)

और वे तुमसे ज़ुलक़रनैन का हाल पूछते हैं। कहो कि मैं उसका कुछ हाल तुम्हारे सामने बयान करूंगा। हमने उसे ज़मीन में इक़्तेदार (शासन) दिया था। और हमने उसे हर चीज़ का सामान दिया था। (83-84)

फिर ज़ुलक़रनैन एक राह के पीछे चला। यहां तक कि वह सूरज के ग़ुरूब

होने के मक़ाम तक पहुंच गया। उसने सूरज को देखा कि वह एक काले पानी में डूब रहा है और वहां उसे एक क़ौम मिली। हमने कहा कि ऐ ज़ुलक़रनैन तुम चाहो तो उन्हें सज़ा दो और चाहो तो उनके साथ अच्छा सुलूक करो। उसने कहा कि जो उनमें से ज़ुल्म करेगा हम उसे सज़ा देंगे। फिर वह अपने रब के पास पहुंचाया जाएगा, फिर वह उसे सख़्त सज़ा देगा। और जो शख़्स ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा उसके लिए अच्छी जज़ा है और हम भी उसके साथ आसान मामला करेंगे। (85-88)

फिर वह एक राह पर चला। यहां तक कि जब वह सूरज निकलने की जगह पहुंचा तो उसने सूरज को एक ऐसी क़ौम पर उगते हुए पाया जिनके लिए हमने सूरज के ऊपर कोई आड़ नहीं रखी थी। यह इसी तरह है। और हम ज़ुलक़रनैन के अहवाल (हालात) से बाख़बर हैं। (89-91)

फिर वह एक राह पर चला। यहां तक कि जब वह दो पहाड़ों के दर्मियान पहुंचा तो उनके पास उसने एक क़ौम को पाया जो कोई बात समझ नहीं पाती थी। उन्होंने कहा कि ऐ ज़ुलक़रनैन, याजूज और माजूज हमारे मुल्क में फ़साद फैलाते हैं तो क्या हम तुम्हें कोई महसूल (शुल्क) इसके लिए मुक़र्रर कर दें कि तुम हमारे और उनके दर्मियान कोई रोक बना दो। (92-94)

ज़ुलक़रनैन ने जवाब दिया कि जो कुछ मेरे रब ने मुझे दिया है वह बहुत है। तुम महनत से मेरी मदद करो। मैं तुम्हारे और उनके दर्मियान एक दीवार बना दूंगा। तुम लोहे के तख़्ते लाकर मुझे दो। यहां तक कि जब उसने दोनों के दर्मियानी ख़ला (रिक्त स्थल) को भर दिया तो लोगों से कहा कि आग दहकाओ यहां तक कि जब उसे आग कर दिया तो कहा कि लाओ अब मैं उस पर पिघला हुआ तांबा डाल दूं। पस याजूज व माजूज न उस पर चढ़ सकते थे और न उसमें सुराख़ कर सकते थे। ज़ुलक़रनैन ने कहा कि यह मेरे रब की रहमत है। फिर जब मेरे रब का वादा आएगा तो वह उसे ढाकर बराबर कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा है। (95-98)

और उस दिन हम लोगों को छोड़ देंगे। वे मौजों की तरह एक दूसरे

में घुसेंगे। और सूर फूंका जाएगा पस हम सबको एक साथ जमा करेंगे और उस दिन हम जहन्नम को मुंकिरों के सामने लाएंगे, जिनकी आंखों पर हमारी याददिहानी से पर्दा पड़ा रहा और वे कुछ सुनने के लिए तैयार न थे। (99-101)

क्या इंकार करने वाले यह समझते हैं कि वे मेरे सिवा मेरे बंदों को अपना कारसाज़ बनाएं। हमने मुंकिरों की महमानी के लिए जहन्नम तैयार कर रखी है। (102)

कहो क्या मैं तुम्हें बता दूं कि अपने आमाल के एतबार से सबसे ज़्यादा घाटे में कौन लोग हैं। वे लोग जिनकी कोशिश दुनिया की ज़िंदगी में अकारत हो गई और वे समझते रहे कि वे बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। यही लोग हैं जिन्होंने अपने रब की निशानियों का और उससे मिलने का इंकार किया। पस उनका किया हुआ बर्बाद हो गया। फिर क़ियामत के दिन हम उन्हें कोई वज़न न देंगे। यह जहन्नम उनका बदला है इसलिए कि उन्होंने इंकार किया और मेरी निशानियों और मेरे रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया। (103-106)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनके लिए फ़िरदौस के बाग़ों की महमानी है। उसमें वे हमेशा रहेंगे। वहां से कभी निकलना न चाहेंगे। (107-108)

कहो कि अगर समुद्र मेरे रब की निशानियों को लिखने के लिए रोशनाई हो जाए तो समुद्र ख़त्म हो जाएगा इससे पहले कि मेरे रब की बातें ख़त्म हों, अगरचे हम उसके साथ उसी के मानिंद और समुद्र मिला दें। (109)

कहो कि मैं तुम्हारी ही तरह एक आदमी हूं। मुझ पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आती है कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) सिर्फ़ एक ही माबूद है। पस जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिए कि नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न ठहराए। (110)

सूरह-19. मरयम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

काफ़० हा० या० अइन० साद०। यह उस रहमत का ज़िक्र है जो तेरे रब ने अपने बंदे ज़करिया पर की। जब उसने अपने रब को छुपी आवाज़ से पुकारा। (1-3)

ज़करिया ने कहा, ऐ मेरे रब, मेरी हड्डियां कमज़ोर हो गई हैं। और सर में बालों की सफ़ेदी फैल गई है और ऐ मेरे रब, तुझसे मांग कर मैं कभी महरूम नहीं रहा। और मैं अपने बाद रिश्तेदारों की तरफ़ से अंदेशा रखता हूं। और मेरी बीवी बांझ है, पस मुझे अपने पास से एक वारिस दे जो मेरी जगह ले और याक़ूब की आल (संतति) की भी। और ऐ मेरे रब उसे अपना पसंदीदा बना। (4-6)

ऐ ज़करिया, हम तुम्हें एक लड़के की बशारत (शुभ सूचना) देते हैं जिसका नाम यहया होगा। हमने इससे पहले इस नाम का कोई आदमी नहीं बनाया। उसने कहा, ऐ मेरे रब, मेरे यहां लड़का कैसे होगा जबकि मेरी बीवी बांझ है। और मैं बुढ़ापे के इंतिहाई दर्जे को पहुंच चुका हूं। (7-8)

जवाब मिला कि ऐसा ही होगा। तेरा रब फ़रमाता है कि यह मेरे लिए आसान है। मैंने इससे पहले तुम्हें पैदा किया, हालाँकि तुम कुछ भी न थे। ज़करिया ने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरे लिए कोई निशानी मुक़र्रर कर दे। फ़रमाया कि तुम्हारे लिए निशानी यह है कि तुम तीन शब व रोज़ लोगों से बात न कर सकोगे हालाँकि तुम तंदुरुस्त होगे। फिर ज़करिया इबादत की मेहराब से निकल कर लोगों के पास आया और उनसे इशारे से कहा कि तुम सुबह व शाम ख़ुदा की पाकी बयान करो। (9-11)

ऐ यहया किताब को मज़बूती से पकड़ो। और हमने उसे बचपन ही में दीन की समझ अता की। और अपनी तरफ़ से उसे नर्मदिली और पाकीज़गी (पवित्रता) अता की। और वह परहेज़गार और अपने वालिदैन का ख़िदमतगुज़ार था। और वह सरकश और नाफ़रमान न था। और उस पर सलामती है जिस

दिन वह पैदा हुआ और जिस दिन वह मरेगा और जिस दिन वह ज़िंदा करके उठाया जाएगा। (12-15)

और किताब में मरयम का ज़िक्र करो जबकि वह अपने लोगों से अलग होकर शरक़ी (पूर्वी) मकान में चली गई। फिर उसने अपने आपको उनसे पर्दे में कर लिया। फिर हमने उसके पास अपना फ़रिश्ता भेजा जो उसके सामने एक पूरा आदमी बनकर ज़ाहिर हुआ। मरयम ने कहा, मैं तुझसे ख़ुदाए रहमान की पनाह मांगती हूं अगर तू ख़ुदा से डरने वाला है। उसने कहा, मैं तुम्हारे रब का भेजा हुआ हूं ताकि तुम्हें एक पाकीज़ा लड़का दूं। मरयम ने कहा, मेरे यहां कैसे लड़का होगा, जबकि मुझे किसी आदमी ने नहीं छुवा और न मैं बदकार (बदचलन) हूं। फ़रिश्ते ने कहा कि ऐसा ही होगा। तेरा रब फ़रमाता है कि यह मेरे लिए आसान है। और ताकि हम उसे लोगों के लिए निशानी बना दें और अपनी जानिब से एक रहमत। और यह एक तैशुदा बात है। (16-21)

पस मरयम ने उसका हमल (गर्भ) उठा लिया और वह उसे लेकर एक दूर की जगह चली गई। फिर दर्देज़ह (प्रसव-पीड़ा) उसे खजूर के दरख़्त की तरफ़ ले गया। उसने कहा, काश मैं इससे पहले मर जाती और भूली बिसरी चीज़ हो जाती। (22-23)

फिर मरयम को उसने उसके नीचे से आवाज़ दी कि ग़मगीन न हो। तेरे रब ने तेरे नीचे एक चशमा (स्रोत) जारी कर दिया है और तुम खजूर के तने को अपनी तरफ़ हिलाओ। उससे तुम्हारे ऊपर पकी खजूरें गिरेंगी। पस खाओ और पियो और आंखे ठंडी करो। फिर अगर तुम कोई आदमी देखो तो उससे कह दो कि मैंने रहमान का रोज़ा मान रखा है तो आज मैं किसी इंसान से नहीं बोलूंगी। (24-26)

फिर वह उसे गोद में लिए हुए अपनी क़ौम के पास आई। लोगों ने कहा, ऐ मरयम, तुमने बड़ा तूफ़ान कर डाला। ऐ हारून की बहिन, न तुम्हारा बाप कोई बुरा आदमी था और न तुम्हारी मां बदकार (बदचलन) थी। (27-28)

फिर मरयम ने उसकी तरफ़ इशारा किया। लोगों ने कहा, हम इससे

किस तरह बात करें जो कि गोद में बच्चा है। बच्चा बोला, मैं अल्लाह का बंदा हूं। उसने मुझे किताब दी और मुझे नबी बनाया। और मैं जहां कहीं भी हूं उसने मुझे बरकत वाला बनाया है। और उसने मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद की है जब तक मैं ज़िंदा रहूं। और मुझे मेरी मां का ख़िदमतगुज़ार बनाया है। और मुझे सरकश, बदबख़्त नहीं बनाया है। और मुझ पर सलामती है जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मैं मरूंगा और जिस दिन मैं ज़िंदा करके उठाया जाऊंगा। (29-33)

यह है ईसा इब्ने मरयम, सच्ची बात जिसमें लोग झगड़ रहे हैं। अल्लाह ऐसा नहीं कि वह कोई औलाद बनाए। वह पाक है। जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो कहता है कि हो जा तो वह हो जाता है। (34-35)

और बेशक अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा रब भी, पस तुम उसी की इबादत करो। यही सीधा रास्ता है। फिर उनके फ़िरक़ों (समुदायों) ने आपस में मतभेद किया। पस इंकार करने वालों के लिए एक बड़े दिन के आने से ख़राबी है। जिस दिन ये लोग हमारे पास आएंगे। वे ख़ूब सुनते और ख़ूब देखते होंगे, मगर आज ये ज़ालिम खुली हुई गुमराही में हैं। (36-38)

और इन लोगों को उस हसरत (पश्चाताप) के दिन से डरा दो जब मामले का फ़ैसला कर दिया जाएगा, और वे ग़फ़लत में हैं। और वे ईमान नहीं ला रहे हैं। बेशक हम ही ज़मीन और ज़मीन के रहने वालों के वारिस होंगे। और लोग हमारी ही तरफ़ लौटाए जाएंगे। (39-40)

और किताब में इब्राहीम का ज़िक्र करो। बेशक वह सच्चा था और नबी था। जब उसने अपने बाप से कहा कि ऐ मेरे बाप, ऐसी चीज़ की इबादत क्यों करते हो जो न सुने और न देखे, और न तुम्हारे कुछ काम आ सके। ऐ मेरे बाप मेरे पास ऐसा इल्म आया है जो तुम्हारे पास नहीं है तो तुम मेरे कहने पर चलो। मैं तुम्हें सीधा रास्ता दिखाऊंगा। ऐ मेरे बाप शैतान की इबादत न करो, बेशक शैतान ख़ुदाए रहमान की नाफ़रमानी करने वाला है। ऐ मेरे बाप, मुझे डर है कि तुम्हें ख़ुदाए रहमान का कोई अज़ाब पकड़ ले और तुम शैतान के साथी बनकर रह जाओ। (41-45)

बाप ने कहा कि ऐ इब्राहीम, क्या तुम मेरे माबूदों (पूज्यों) से फिर गए हो। अगर तुम बाज़ न आए तो मैं तुम्हें संगसार (पत्थरों से मार डालना) कर दूंगा। और तुम मुझसे हमेशा के लिए दूर हो जाओ इब्राहीम ने कहा, तुम पर सलामती हो। मैं अपने रब से तुम्हारे लिए बख़्शिश की दुआ करूंगा, बेशक वह मुझ पर महरबान है। और मैं तुम लोगों को छोड़ता हूं और उन्हें भी जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। और मैं अपने रब ही को पुकारूंगा। उम्मीद है कि मैं अपने रब को पुकार कर महरूम (वंचित) नहीं रहूंगा। (46-48)

पस जब वह लोगों से जुदा हो गया। और उनसे जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पूजते थे तो हमने उसे इस्हाक़ और याक़ूब अता किए और हमने उनमें से हर एक को नबी बनाया। और उन्हें अपनी रहमत का हिस्सा दिया और हमने उनका नाम नेक और बुलन्द किया। (49-50)

और किताब में मूसा का ज़िक्र करो। बेशक वह चुना हुआ था और रसूल नबी था। और हमने उसे कोहे तूर के दाहिनी जानिब से पुकारा और उसे हमने राज़ की बातें करने के लिए क़रीब किया। और अपनी रहमत से हमने उसके भाई हारून को नबी बनाकर उसे दिया। (51-53)

और किताब में इस्माईल का ज़िक्र करो। वह वादे का सच्चा था और रसूल नबी था। वह अपने लोगों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता था। और अपने रब के नज़दीक पसंदीदा था। और किताब में इदरीस का ज़िक्र करो। बेशक वह सच्चा था और नबी था। और हमने उसे बुलन्द रुतबे तक पहुंचाया। (54-57)

ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने पैग़म्बरों में से अपना फ़ज़्ल फ़रमाया। आदम की औलाद में से और उन लोगों में से जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया था। और इब्राहीम और इस्राईल की नस्ल से और उन लोगों में से जिन्हें हमने हिदायत बख़्शी और उन्हें मक़बूल बनाया। जब उन्हें ख़ुदाए रहमान की आयतें सुनाई जातीं तो वे सज्दा करते हुए और रोते हुए गिर पड़ते। (58)

फिर उनके बाद ऐसे नाख़लफ़ जानशीन (बुरे उत्तराधिकारी) हुए जिन्होंने नमाज़ को खो दिया और ख़्वाहिशों के पीछे पड़ गए, पस अनक़रीब वे अपनी

ख़राबी को देखेंगे, अलबत्ता जिसने तौबा की और ईमान ले आया और नेक काम किया तो यही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उनकी ज़रा भी हक़तलफ़ी नहीं की जाएगी। (59-60)

उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनका रहमान ने अपने बंदों से ग़ायबाना वादा कर रखा है। और यह वादा पूरा होकर रहना है। उसमें वे लोग कोई फ़ुज़ूल बात नहीं सुनेंगे सिवाए सलाम के। और उसमें उनका रिज़्क़ सुबह व शाम मिलेगा, यह वह जन्नत है जिसका वारिस हम अपने बंदों में से उन्हें बनाएंगे जो ख़ुदा से डरने वाले हों। (61-63)

और हम नहीं उतरते मगर तुम्हारे रब के हुक्म से। उसी का है जो हमारे आगे है और जो हमारे पीछे है और जो इसके बीच में है। और तुम्हारा रब भूलने वाला नहीं। वह रब है आसमानों का और ज़मीन का और जो इनके बीच में है, पस तुम उसी की इबादत करो और उसकी इबादत पर क़ायम रहो। क्या तुम उसका कोई हमसिफ़्त (उसके गुणों जैसा) जानते हो। (64-65)

और इंसान कहता है क्या जब मैं मर जाऊंगा तो फिर ज़िंदा करके निकाला जाऊंगा। क्या इंसान को याद नहीं आता कि हमने उसे इससे पहले पैदा किया और वह कुछ भी न था। पस तेरे रब की क़सम, हम उन्हें जमा करेंगे और शैतानों को भी, फिर उन्हें जहन्नम के गिर्द इस तरह हाज़िर करेंगे कि वे घुटनों के बल गिरे होंगे। (66-68)

फिर हम हर गिरोह में से उन लोगों को जुदा करेंगे जो रहमान के मुक़ाबले में सबसे ज़्यादा सरकश बने हुए थे। फिर हम ऐसे लोगों को ख़ूब जानते हैं जो जहन्नम में दाख़िल होने के ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं और तुम में से कोई नहीं जिसका उस पर से गुज़र न हो, यह तेरे रब के ऊपर लाज़िम है जो पूरा होकर रहेगा। फिर हम उन लोगों को बचा लेंगे जो डरते थे और ज़ालिमों को उसमें गिरा हुआ छोड़ देंगे। (69-72)

और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो इंकार करने वाले ईमान लाने वालों से कहते हैं कि दोनों गिरोहों में से कौन बेहतर हालत में है और किस की मज्लिस ज़्यादा अच्छी है। और उनसे पहले हमने कितनी

ही क़ौमें हलाक कर दीं जो उनसे ज़्यादा असबाब (संसाधन) वाली और उनसे ज़्यादा शान वाली थीं। (73-74)

कहो कि जो शख़्स गुमराही में होता है तो रहमान उसे ढील दिया करता है यहां तक कि जब वे देख लेंगे उस चीज़ को जिसका उनसे वादा किया जा रहा है, अज़ाब या क़ियामत, तो उन्हें मालूम हो जाएगा कि किस का हाल बुरा है और किस का जत्था कमज़ोर। (75)

और अल्लाह हिदायत पकड़ने वालों की हिदायत में इज़ाफ़ा करता है और बाक़ी रहने वाली नेकियां तुम्हारे रब के नज़दीक अज्र (प्रतिफल) के एतबार से बेहतर हैं और अंजाम के एतबार से भी बेहतर। (76)

क्या तुमने उसे देखा जिसने हमारी आयतों का इंकार किया और कहा कि मुझे माल और औलाद मिलकर रहेंगे। क्या उसने ग़ैब में झांक कर देखा है या उसने अल्लाह से कोई अहद (वचन) ले लिया है, हरगिज़ नहीं, जो कुछ वह कहता है उसे हम लिख लेंगे और उसकी सज़ा में इज़ाफ़ा करेंगे। और जिन चीज़ों का वह दावेदार है उसके वारिस हम बनेंगे और वह हमारे पास अकेला आएगा। (77-80)

और उन्होंने अल्लाह के सिवा माबूद (पूज्य) बनाए हैं ताकि वे उनके लिए मदद बनें। हरगिज़ नहीं, वे उनकी इबादत का इंकार करेंगे और उनके मुख़ालिफ़ बन जाएंगे। (81-82)

क्या तुमने नहीं देखा कि हमने मुंकिरों पर शैतानों को छोड़ दिया है, वे उन्हें ख़ूब उभार रहे हैं। पस तुम उनके लिए जल्दी न करो। हम उनकी गिनती पूरी कर रहे हैं। जिस दिन हम डरने वालों को रहमान की तरफ़ महमान बनाकर जमा करेंगे। और मुजरिमों को जहन्नम की तरफ़ प्यासा हांकेंगे। किसी को शफ़ाअत का इख़्तियार न होगा मगर उसे जिसने रहमान के पास से इजाज़त ली हो। (83-87)

और ये लोग कहते हैं कि रहमान ने किसी को बेटा बनाया है। यह तुमने बड़ी संगीन बात कही है। क़रीब है कि इससे आसमान फट पड़ें और

ज़मीन टुकड़े हो जाए और पहाड़ टूट कर गिर पड़ें, इस पर कि लोग रहमान की तरफ़ औलाद की निस्बत करते हैं। हालाँकि रहमान की यह शान नहीं कि वह औलाद इख़्तियार करे। (88-92)

आसमानों और ज़मीन में कोई नहीं जो रहमान का बंदा होकर न आए। उसके पास उनका शुमार है और उसने उन्हें अच्छी तरह गिन रखा है और उनमें से हर एक क़ियामत के दिन उसके सामने अकेला आएगा। अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए उनके लिए ख़ुदा मुहब्बत पैदा कर देगा। (93-96)

पस हमने इस क़ुरआन को तुम्हारी ज़बान में इसलिए आसान कर दिया है कि तुम मुत्तक़ियों (ईश परायण लोगों) को ख़ुशख़बरी सुना दो। और हठधर्म लोगों को डरा दो। और इनसे पहले हम कितनी ही क़ौमों को हलाक कर चुके हैं। क्या तुम उनमें से किसी को देखते हो या उनकी कोई आहट सुनते हो। (97-98)

सूरह-20. ता० हा०

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ता० हा०। हमने क़ुरआन तुम पर इसलिए नहीं उतारा कि तुम मुसीबत में पड़ जाओ। बल्कि ऐसे शख़्स की नसीहत के लिए जो डरता हो। यह उसकी तरफ़ से उतारा गया है जिसने ज़मीन को और ऊंचे आसमानों को पैदा किया है। वह रहमत वाला है, अर्श पर क़ायम है। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और जो इन दोनों के दर्मियान है और जो कुछ ज़मीन के नीचे है। (1-6)

और तुम चाहे अपनी बात पुकार कर कहो, वह चुपके से कही हुई बात को जानता है। और इससे ज़्यादा छुपी बात को भी। वह अल्लाह है। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। तमाम अच्छे नाम उसी के हैं। (7-8)

और क्या तुम्हें मूसा की बात पहुंची है। जबकि उसने एक आग देखी

तो अपने घरवालों से कहा कि ठहरो, मैंने एक आग देखी है, शायद मैं उसमें से तुम्हारे लिए एक अंगारा लाऊं या उस आग पर मुझे रास्ते का पता मिल जाए। (9-10)

फिर जब वह उसके पास पहुंचा तो आवाज़ दी गई कि ऐ मूसा। मैं ही तुम्हारा रब हूं, पस तुम अपने जूते उतार दो क्योंकि तुम तुवा की मुक़द्दस (पवित्र) वादी में हो। और मैंने तुम्हें चुन लिया है। पस जो 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है उसे सुनो। मैं ही अल्लाह हूं। मेरे सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। पस तुम मेरी ही इबादत करो और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम करो। बेशक क़ियामत आने वाली है। मैं उसे छुपाए रखना चाहता हूं। ताकि हर शख़्स को उसके किए का बदला मिले। पस इससे तुम्हें वह शख़्स ग़ाफ़िल न कर दे जो इस पर ईमान नहीं रखता और अपनी ख़्वाहिशों पर चलता है कि तुम हलाक हो जाओ। (11-16)

और यह तुम्हारे हाथ में क्या है ऐ मूसा, उसने कहा, यह मेरी लाठी है। मैं इस पर टेक लगाता हूं और इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूं। इसमें मेरे लिए दूसरे काम भी हैं। फ़रमाया कि ऐ मूसा इसे ज़मीन पर डाल दो। उसने उसे डाल दिया तो यकायक वह एक दौड़ता हुआ सांप बन गया। फ़रमाया कि इसे पकड़ लो और मत डरो, हम फिर इसे इसकी पहली हालत पर लौटा देंगे। (17-21)

और तुम अपना हाथ अपनी बग़ल से मिला लो, वह चमकता हुआ निकलेगा बग़ैर किसी ऐब के। यह दूसरी निशानी है। ताकि हम अपनी बड़ी निशानियों में से कुछ निशानियां तुम्हें दिखाएं। तुम फ़िरऔन के पास जाओ। वह हद से निकल गया है। (22-24)

मूसा ने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरे सीने को मेरे लिए खोल दे। और मेरे काम को मेरे लिए आसान कर दे। और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे। ताकि लोग मेरी बात समझें। और मेरे ख़ानदान से मेरे लिए एक मुआविन (सहायक) मुक़र्रर कर दे, हारून को जो मेरा भाई है। उसके ज़रिए से मेरी कमर को मज़बूत कर दे। और उसे मेरे काम में शरीक कर दे ताकि हम दोनों

कसरत (अधिकता) से तेरी पाकी बयान करें और कसरत से तेरा चर्चा करें। बेशक तू हमें देख रहा है। फ़रमाया कि दे दिया गया तुम्हें ऐ मूसा तुम्हारा सवाल। (25-36)

और हमने तुम्हारे ऊपर एक बार और एहसान किया है जबकि हमने तुम्हारी मां की तरफ़ 'वही' (प्रकाशना) की जो 'वही' की जा रही है, कि उसे संदूक़ में रखो, फिर उसे दरिया में डाल दो, फिर दरिया उसे किनारे पर डाल दे। उसे एक शख़्स उठा लेगा जो मेरा भी दुश्मन है और उसका भी दुश्मन है। और मैंने अपनी तरफ़ से तुम पर एक मुहब्बत डाल दी। और ताकि तुम मेरी निगरानी में परवरिश पाओ। जबकि तुम्हारी बहिन चलती हुई आई, फिर वह कहने लगी, क्या मैं तुम लोगों को उसका पता दूं जो इस बच्चे की परवरिश अच्छी तरह करे। पस हमने तुम्हें तुम्हारी मां की तरफ़ लौटा दिया ताकि उसकी आंख ठंडी हो और उसे ग़म न रहे। और तुमने एक शख़्स को क़त्ल कर दिया। फिर हमने तुम्हें इस ग़म से नजात दी। और हमने तुम्हें ख़ूब जांचा। फिर तुम कई साल मदयन वालों में रहे। फिर तुम एक अंदाज़े पर आ गए ऐ मूसा। (37-40)

और मैंने तुम्हें अपने लिए मुंतख़ब किया। जाओ तुम और तुम्हारा भाई मेरी निशानियों के साथ। और तुम दोनों मेरी याद में सुस्ती न करना। तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ कि वह सरकश हो गया है। पस उससे नर्मी के साथ बात करना, शायद वह नसीहत क़ुबूल करे या डर जाए। (41-44)

दोनों ने कहा कि ऐ हमारे रब, हमें अंदेशा है कि वह हम पर ज़्यादती करे या सरकशी करने लगे। फ़रमाया कि तुम अंदेशा न करो। मैं तुम दोनों के साथ हूं, सुन रहा हूं और देख रहा हूं। पस तुम उसके पास जाओ और कहो कि हम दोनों तेरे रब के भेजे हुए हैं, पस तू बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे। और उन्हें न सता। हम तेरे रब के पास से एक निशानी भी लाए हैं। और सलामती उस शख़्स के लिए है जो हिदायत की पैरवी करे। हम पर यह 'वही' (प्रकाशना) की गई है कि उस शख़्स पर अज़ाब होगा जो झुठलाए और एराज़ (उपेक्षा) करे। (45-48)

फ़िरऔन ने कहा, फिर तुम दोनों का रब कौन है, ऐ मूसा। मूसा ने कहा, हमारा रब वह है जिसने हर चीज़ को उसकी सूरत अता की, फिर रहनुमाई फ़रमाई। फ़िरऔन ने कहा, फिर अगली क़ौमों का क्या हाल है। मूसा ने कहा। इसका इल्म मेरे रब के पास एक दफ़्तर में है। मेरा रब न ग़लती करता है और न भूलता है। (49-52)

वही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन का फ़र्श बनाया। और उसमें तुम्हारे लिए राहें निकालीं और आसमान से पानी उतारा। फिर हमने उसके ज़रिए से मुख़्तलिफ़ क़िस्म की नबातात (पौधें) पैदा कीं। खाओ और अपने मवेशियों को चराओ। इसके अंदर अक़्ल वालों के लिए निशानियां हैं। उसी से हमने तुम्हें पैदा किया है और उसी में हम तुम्हें लौटाएंगे और उसी से हम तुम्हें दुबारा निकालेंगे। (53-55)

और हमने फ़िरऔन को अपनी सब निशानियां दिखाईं तो उसने झुठलाया और इंकार किया। उसने कहा कि ऐ मूसा, क्या तुम इसलिए हमारे पास आए हो कि अपने जादू से हमें हमारे मुल्क से निकाल दो। तो हम तुम्हारे मुक़ाबले में ऐसा ही जादू लाएंगे। पस तुम हमारे और अपने दर्मियान एक वादा मुक़र्रर कर लो, न हम उसके ख़िलाफ़ करें और न तुम। यह मुक़ाबला एक हमवार (खुले) मैदान में हो। (56-58)

मूसा ने कहा, तुम्हारे लिए वादे का दिन मेले वाला दिन है और यह कि लोग दिन चढ़े तक जमा किए जाएं। फ़िरऔन वहां से हटा, फिर अपने सारे दाव जमा किए, इसके बाद वह मुक़ाबले पर आया। मूसा ने कहा कि तुम्हारा बुरा हो अल्लाह पर झूठ न बांधो कि वह तुम्हें किसी आफ़त से ग़ारत कर दे। और जिसने ख़ुदा पर झूठ बांधा वह नाकाम हुआ। (59-61)

फिर उन्होंने अपने मामले में इख़्तेलाफ़ (मतभेद) किया। और उन्होंने चुपके-चुपके बाहम मश्विरा किया। उन्होंने कहा ये दोनों यक़ीनन जादूगर हैं, वे चाहते हैं कि अपने जादू के ज़ोर से तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दें और तुम्हारे उम्दा तरीक़े का ख़ात्मा कर दें। पस तुम अपनी तदबीरें इकट्ठा करो। फिर मुत्तहिद होकर आओ और वही जीत गया जो आज ग़ालिब रहा। (62-64)

उन्होंने कहा कि ऐ मूसा या तो तुम डालो या हम पहले डालने वाले बनें। मूसा ने कहा कि तुम ही पहले डालो तो यकायक उनकी रस्सियां और उनकी लाठियां उनके जादू के ज़ोर से उसे इस तरह दिखाई दीं गोया कि वे दौड़ रही हैं। पस मूसा अपने दिल में कुछ डर गया। हमने कहा कि तुम डरो नहीं तुम ही ग़ालिब रहोगे। और जो तुम्हारे दाहिने हाथ में है उसे डाल दो, वह उन्हें निगल जाएगा जो उन्होंने बनाया है। यह जो कुछ उन्होंने बनाया है यह जादूगर का फ़रेब है। और जादूगर कभी कामयाब नहीं होता, चाहे वह कैसे आए। पस जादूगर सज्दे में गिर पड़े। उन्होंने कहा कि हम हारून और मूसा के रब पर ईमान लाए। (65-70)

फ़िरऔन ने कहा कि तुमने उसे मान लिया इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त देता। वही तुम्हारा बड़ा है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। तो अब मैं तुम्हारे हाथ और पांव मुख़ालिफ़ सम्तों से कटवाऊंगा। और मैं तुम्हें खजूर के तनों पर सूली दूंगा। और तुम जान लोगे कि हम में से किस का अज़ाब ज़्यादा सख़्त है और ज़्यादा देर तक रहने वाला है। (71)

जादूगरों ने कहा कि हम तुझे हरगिज़ उन दलाइल (स्पष्ट प्रमाणों) पर तरजीह नहीं देंगे जो हमारे पास आए हैं। और उस ज़ात पर जिसने हमें पैदा किया है, पस तुझे जो कुछ करना है उसे कर डाल। तुम इसी दुनिया की ज़िंदगी का कर सकते हो। हम अपने रब पर ईमान लाए ताकि वह हमारे गुनाहों को बख़्श दे और उस जादू को भी जिस पर तुमने हमें मजबूर किया। और अल्लाह बेहतर है और बाक़ी रहने वाला है। (72-73)

बेशक जो शख़्स मुजरिम बनकर अपने रब के सामने हाज़िर होगा तो उसके लिए जहन्नम है, उसमें वह न मरेगा और न जिएगा। और जो शख़्स अपने रब के पास मोमिन होकर आएगा जिसने नेक अमल किए हों, तो ऐसे लोगों के लिए बड़े ऊंचे दर्जे हैं। उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। वे उनमें हमेशा रहेंगे। और यह बदला है उस शख़्स का जो पाकीज़गी इख़्तियार करे। (74-76)

और हमने मूसा को 'वही' (प्रकाशना) की कि रात के वक़्त मेरे बंदों को लेकर निकलो। फिर उनके लिए समुद्र में सूखा रास्ता बना लो, तुम न तआक़ुब (पीछा करने) से डरो और न किसी और चीज़ से डरो। फिर फ़िरऔन ने अपने लश्करों के साथ उनका पीछा किया फिर उन्हें समुद्र के पानी ने ढांप लिया। जैसा कि ढांप लिया और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह किया और उसे सही राह न दिखाई। (77-79)

ऐ बनी इस्राईल हमने तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दी और तुमसे तूर के दाईं जानिब वादा ठहराया। और हमने तुम्हारे ऊपर मन्न और सलवा उतारा। खाओ हमारी दी हुई पाक रोज़ी और उसमें सरकशी न करो कि तुम्हारे ऊपर मेरा ग़ज़ब नाज़िल हो। और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा वह तबाह हुआ। अलबत्ता जो तौबा करे और ईमान लाए और नेक अमल करे और सीधी राह पर रहे तो उसके लिए मैं बहुत ज़्यादा बख़्शने वाला हूं। (80-82)

और ऐ मूसा, अपनी क़ौम को छोड़कर जल्द आने पर तुम्हें किस चीज़ ने उभारा। मूसा ने कहा, वे लोग भी मेरे पीछे ही हैं। और मैं ऐ मेरे रब, तेरी तरफ़ जल्द आ गया ताकि तू राज़ी हो। फ़रमाया तो हमने तुम्हारी क़ौम को तुम्हारे बाद एक फ़ितने में डाल दिया। और सामिरी ने उसे गुमराह कर दिया। (83-85)

फिर मूसा अपनी क़ौम की तरफ़ ग़ुस्से और रंज में भरे हुए लौटे। उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम क्या तुमसे तुम्हारे रब ने एक अच्छा वादा नहीं किया था। क्या तुम पर ज़्यादा ज़माना गुज़र गया। या तुमने चाहा कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब का ग़ज़ब (प्रकोप) नाज़िल हो, इसलिए तुमने मुझसे वादाख़िलाफ़ी की। (86)

उन्होंने कहा कि हमने अपने इख़्तियार से आपके साथ वादाख़िलाफ़ी नहीं की। बल्कि क़ौम के ज़ेवरात का बोझ हमसे उठवाया गया था तो हमने उसे फेंक दिया। फिर इस तरह सामरी ने ढाल लिया। पस उसने उनके लिए एक बछड़ा बरामद कर दिया। एक मूर्ति जिससे बैल की सी आवाज़ निकलती थी। फिर उसने कहा कि यह तुम्हारा माबूद (पूज्य) है और मूसा का माबूद

भी, मूसा इसे भूल गए। क्या वे देखते न थे कि न वह किसी बात का जवाब देता है और न कोई नफ़ा या नुक़सान पहुंचा सकता है। (87-89)

और हारून ने उनसे पहले ही कहा था कि ऐ मेरी क़ौम, तुम इस बछड़े के ज़रिए से बहक गए हो और तुम्हारा रब तो रहमान है। पस मेरी पैरवी करो और मेरी बात मानो। उन्होंने कहा कि हम तो इसी की परस्तिश (पूजा) में लगे रहेंगे जब तक कि मूसा हमारे पास लौट न आए। (90-91)

मूसा ने कहा कि ऐ हारून, जब तूने देखा कि वे बहक गए हैं तो तुम्हें किस चीज़ ने रोका कि तुम मेरी पैरवी करो। क्या तुमने मेरे कहने के ख़िलाफ़ किया। हारून ने कहा कि ऐ मेरी मां के बेटे, तुम मेरी दाढ़ी न पकड़ो और न मेरा सर। मुझे यह डर था कि तुम कहोगे कि तुमने बनी इस्राईल के दर्मियान फूट डाल दी और मेरी बात का लिहाज़ न किया। (92-94)

मूसा ने कहा कि ऐ सामरी, तुम्हारा क्या मामला है। उसने कहा कि मुझे वह चीज़ नज़र आई जो दूसरों को नज़र नहीं आई तो मैंने रसूल के नक़्शेक़दम (पद चिन्हों) से एक मुट्ठी उठाई और वह इसमें डाल दी। मेरे नफ़्स (अंतःकरण) ने मुझे ऐसा ही समझाया। मूसा ने कहा कि दूर हो। अब तेरे लिए ज़िंदगी भर यह है कि तू कहे कि मुझे न छूना। और तेरे लिए एक और वादा है जो तुझसे टलने वाला नहीं। और तू अपने इस माबूद (पूज्य) को देख जिस पर तू बराबर मोअतकिफ़ (एकाग्र) रहता था, हम उसे जलाएंगे फिर उसे दरिया में बिखेर कर बहा देंगे। तुम्हारा माबूद तो सिर्फ़ अल्लाह है उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसका इल्म हर चीज़ पर हावी है। (95-98)

इसी तरह हम तुम्हें उनके अहवाल (वृत्तांत) सुनाते हैं जो पहले गुज़र चुके। और हमने तुम्हें अपने पास से एक नसीहतनामा दिया है। जो इससे एराज़ (उपेक्षा) करेगा वह क़ियामत के दिन एक भारी बोझ उठाएगा। वे उसमें हमेशा रहेंगे और यह बोझ क़ियामत के दिन उनके लिए बहुत बुरा होगा। जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी और मुजरिमों को उस दिन हम इस हाल में जमा करेंगे कि ख़ौफ़ से उनकी आंखें नीली होंगी। आपस में चुपके-चुपके कहते होंगे कि तुम सिर्फ़ दस दिन रहे होगे। हम ख़ूब जानते हैं जो कुछ वे

कहेंगे। जबकि उनका सबसे ज़्यादा वाक़िफ़कार कहेगा कि तुम सिर्फ़ एक दिन ठहरे। (99-104)

और लोग तुमसे पहाड़ों की बाबत पूछते हैं। कहो कि मेरा रब उन्हें उड़ाकर बिखेर देगा। फिर ज़मीन को साफ़ मैदान बनाकर छोड़ देगा। तुम इसमें न कोई कजी (टेढ़) देखोगे और न कोई ऊंचान। उस दिन सब पुकारने वाले के पीछे चल पड़ेंगे। ज़रा भी कोई कजी न होगी। तमाम आवाज़ें रहमान के आगे दब जाएंगी। तुम एक सरसराहट के सिवा कुछ न सुनोगे। (105-108)

उस दिन सिफ़ारिश नफ़ा न देगी मगर ऐसा शख़्स जिसे रहमान ने इजाज़त दी हो और उसके लिए बोलना पसंद किया हो। वह सबके अगले और पिछले अहवाल को जानता है। और उनका इल्म उसका इहाता नहीं कर सकता। और तमाम चेहरे उस हय्य व क़य्यूम (जीवंत एवं शाश्वत) के सामने झुके होंगे। और ऐसा शख़्स नाकाम रहेगा जो ज़ुल्म लेकर आया होगा। और जिसने नेक काम किए होंगे और वह ईमान भी रखता होगा तो उसे न किसी ज़्यादती का अंदेशा होगा और न किसी कमी का। (109-112)

और इसी तरह हमने अरबी का क़ुरआन उतारा है और इस में हमने तरह-तरह से वईद (चेतावनी) बयान की है ताकि लोग डरें या वह उनके दिल में कुछ सोच डाल दे। पस बरतर है अल्लाह, बादशाह हक़ीक़ी। और तुम क़ुरआन के लेने में जल्दी न करो जब तक उसकी 'वही' (प्रकाशना) तक्मील को न पहुंच जाए। और कहो कि ऐ मेरे रब मेरा इल्म ज़्यादा कर दे। (113-114)

और हमने आदम को इससे पहले हुक्म दिया था तो वह भूल गया और हमने उस में अज़्म (दृढ़-संकल्प) न पाया। और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान) कि उसने इंकार किया। फिर हमने कहा कि ऐ आदम, यह बिलाशुबह तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है तो कहीं वह तुम दोनों को जन्नत से निकलवा न दे फिर तुम महरूम होकर रह जाओ। (115-117)

यहां तुम्हारे लिए यह है कि तुम न भूखे रहोगे और न तुम नंगे होगे।

और तुम यहां न प्यासे होगे, और न तुम्हें धूप लगेगी। फिर शैतान ने उन्हें बहकाया। उसने कहा कि क्या मैं तुम्हें हमेशगी (अमरता) का दरख़्त बताऊं। और ऐसी बादशाही जिसमें कभी कमज़ोरी न आए। पस उन दोनों ने उस दरख़्त का फल खा लिया तो उन दोनों से सत्र एक दूसरे के सामने खुल गए। और दोनों अपने आपको जन्नत के पत्तों से ढांकने लगे। और आदम ने अपने रब के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी की तो भटक गए। फिर उसके रब ने उसे नवाज़ा। पस उसकी तौबा क़ुबूल की और उसे हिदायत दी। (118-122)

ख़ुदा ने कहा कि तुम दोनों यहां से उतरो। तुम एक दूसरे के दुश्मन हो गए। फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से हिदायत आए तो जो शख़्स मेरी हिदायत की पैरवी करेगा वह न गुमराह होगा और न महरूम रहेगा। और जो शख़्स मेरी नसीहत से एराज़ (उपेक्षा) करेगा तो उसके लिए तंगी का जीना होगा। और क़ियामत के दिन हम उसे अंधा उठाएंगे। वह कहेगा कि ऐ मेरे रब, तूने मुझे अंधा क्यों उठाया मैं तो आंखों वाला था। इर्शाद होगा कि इसी तरह तुम्हारे पास हमारी निशानियां आईं तो तुमने उनका कुछ ख़्याल न किया तो इसी तरह आज तुम्हारा कुछ ख़्याल न किया जाएगा। और इसी तरह हम बदला देंगे उसे जो हद से गुज़र जाए और अपने रब की निशानियों पर ईमान न लाए। और आख़िरत (परलोक) का अज़ाब बड़ा सख़्त है और बहुत बाक़ी रहने वाला। (123-127)

क्या लोगों को इस बात से समझ न आई कि उनसे पहले हमने कितने गिरोह हलाक कर दिए। ये उनकी बस्तियों में चलते हैं बेशक इसमें अहले अक़्ल के लिए बड़ी निशानियां हैं। और अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से एक बात पहले तय न हो चुकी होती। और मोहलत की एक मुद्दत मुक़र्रर न होती तो ज़रूर उनका फ़ैसला चुका दिया जाता। पस जो ये कहते हैं उस पर सब्र करो। और अपने रब की हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी तस्बीह (अर्चना) करो, सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले, और रात के औक़ात में भी तस्बीह करो। और दिन के किनारों पर भी। ताकि तुम राज़ी हो जाओ। (128-130)

और हरगिज़ उन चीज़ों की तरफ़ आंख उठाकर भी न देखो जिन्हें हमने उनके कुछ गिरोहों को उनकी आज़माइश के लिए उन्हें दे रखा है। और तुम्हारे रब का रिज़्क़ ज़्यादा बेहतर है और बाक़ी रहने वाला है। और अपने लोगों को नमाज़ का हुक्म दो और उसके पाबंद रहो। हम तुमसे कोई रिज़्क़ नहीं मांगते। रिज़्क़ तो तुम्हें हम देंगे और बेहतर अंजाम तो तक़वा (ईश-परायणता) ही के लिए है। (131-132)

और लोग कहते हैं कि यह अपने रब के पास से हमारे लिए कोई निशानी क्यों नहीं लाते। क्या उन्हें अगली किताबों की दलील नहीं पहुंची। और अगर हम उन्हें इससे पहले किसी अज़ाब से हलाक कर देते तो वे कहते कि ऐ हमारे रब तूने हमारे पास रसूल क्यों न भेजा कि हम ज़लील और रुसवा होने से पहले तेरी निशानियों की पैरवी करते। कहो कि हर एक मुन्तज़िर है तो तुम भी इंतज़ार करो। आइंदा तुम जान लोगे कि कौन सीधी राह वाला है और कौन मंज़िल तक पहुंचा। (133-135)

सूरह-21. अल-अंबिया

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

लोगों के लिए उनका हिसाब नज़दीक आ पहुंचा। और वे ग़फ़लत में पड़े हुए एराज़ (उपेक्षा) कर रहे हैं। उनके रब की तरफ़ से जो भी नई नसीहत उनके पास आती है वे उसे हंसी करते हुए सुनते हैं। उनके दिल ग़फ़लत में पड़े हुए हैं। और ज़ालिमों ने आपस में यह सरगोशी (कानाफूसी) की कि यह शख़्स तो तुम्हारे ही जैसा एक आदमी है। फिर तुम क्यों आंखों देखे इसके जादू में फंसते हो। रसूल ने कहा कि मेरा रब हर बात को जानता है, चाहे वह आसमान में हो या ज़मीन में। और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (1-4)

बल्कि वे कहते हैं, ये परागंदा ख़्वाब (दुस्वप्न) हैं। बल्कि इसे उन्होंने गढ़ लिया है। बल्कि वह एक शायर हैं। उन्हें चाहिए कि हमारे पास उस तरह की कोई निशानी लाएं जिस तरह की निशानियों के साथ पिछले रसूल भेजे गए

थे। इनसे पहले किसी बस्ती के लोग भी जिन्हें हमने हलाक किया, ईमान नहीं लाए तो क्या ये लोग ईमान लाएंगे। (5-6)

और तुमसे पहले भी जिसे हमने रसूल बनाकर भेजा, आदमियों ही में से भेजा। हम उनकी तरफ़ 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजते थे। पस तुम अहले किताब से पूछ लो, अगर तुम नहीं जानते। और हमने उन रसूलों को ऐसे जिस्म नहीं दिए कि वे खाना न खाते हों। और वे हमेशा रहने वाले न थे। फिर हमने उनसे वादा पूरा किया। पस उन्हें और जिस-जिस को हमने चाहा बचा लिया। और हमने हद से गुज़रने वालों को हलाक कर दिया। (7-9)

हमने तुम्हारी तरफ़ एक किताब उतारी है जिसमें तुम्हारी याददिहानी है, फिर क्या तुम समझते नहीं। और कितनी ही ज़ालिम बस्तियां हैं जिन्हें हमने पीस डाला। और उनके बाद दूसरी क़ौम को उठाया। पस जब उन्होंने हमारा अज़ाब आते देखा तो वे उससे भागने लगे। भागो मत। और अपने सामाने ऐश की तरफ़ और अपने मकानों की तरफ़ वापस चलो, ताकि तुमसे पूछा जाए। उन्होंने कहा, हाय हमारी कमबख़्ती, बेशक हम लोग ज़ालिम थे। पस वे यही पुकारते रहे। यहां तक कि हमने उन्हें ऐसा कर दिया जैसे खेती कट गई हो और आग बुझ गई हो। (10-15)

और हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है खेल के तौर पर नहीं बनाया। अगर हम कोई खेल बनाना चाहते तो उसे हम अपने पास से बना लेते, अगर हमें यह करना होता। बल्कि हम हक़ (सत्य) को बातिल (असत्य) पर मारेंगे तो वह उसका सर तोड़ देगा तो वह यकायक जाता रहेगा और तुम्हारे लिए उन बातों से बड़ी ख़राबी है जो तुम बयान करते हो। (16-18)

और उसी के हैं जो आसमानों और ज़मीन में हैं। और जो (फ़रिश्ते) उसके पास हैं वे उसकी इबादत से सरताबी (विमुखता) नहीं करते और न काहिली (सुस्ती) करते हैं। वे रात दिन उसे याद करते हैं, कभी नहीं थकते। (19-20)

क्या उन्होंने ज़मीन में से माबूद (पूज्य) ठहराए हैं जो किसी को ज़िंदा करते

हों। अगर इन दोनों में अल्लाह के सिवा माबूद होते तो दोनों दरहम-बरहम हो जाते। पस अल्लाह, अर्श का मालिक, उन बातों से पाक है जो ये लोग बयान करते हैं। वह जो कुछ करता है उस पर वह पूछा न जाएगा और उनसे पूछ होगी। (21-23)

क्या उन्होंने .ख़ुदा के सिवा और माबूद (पूज्य) बनाए हैं। उनसे कहो कि तुम अपनी दलील लाओ। यही बात उन लोगों की है जो मेरे साथ हैं और यही बात उन लोगों की है जो मुझसे पहले हुए। बल्कि उनमें से अक्सर हक़ को नहीं जानते। पस वे एराज़ (उपेक्षा) कर रहे हैं। और हमने तुमसे पहले कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा जिसकी तरफ़ हमने यह 'वही' (प्रकाशना) न की हो कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस तुम मेरी इबादत करो। (24-25)

और वे कहते हैं कि रहमान ने औलाद बनाई है, वह इससे पाक है, बल्कि (फ़रिश्ते) तो मुअज़्ज़ज़ (सम्मानीय) बंदे हैं। वे उससे आगे बढ़कर बात नहीं करते। और वे उसी के हुक्म के मुताबिक़ अमल करते हैं। अल्लाह उनके अगले और पिछले अहवाल को जानता है। और वे सिफ़ारिश नहीं कर सकते मगर उसके लिए जिसे अल्लाह पसंद करे। और वे उसकी हैबत से डरते रहते हैं। और उनमें से जो शख़्स कहेगा कि उसके सिवा मैं माबूद (पूज्य) हूं तो हम उसे जहन्नम की सज़ा देंगे। हम ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा देते हैं। (26-29)

क्या इंकार करने वालों ने नहीं देखा कि आसमान और ज़मीन दोनों बंद थे फिर हमने उन्हें खोल दिया। और हमने पानी से हर जानदार चीज़ को बनाया। क्या फिर भी वे ईमान नहीं लाते। (30)

और हमने ज़मीन में पहाड़ बनाए कि वह उन्हें लेकर झुक न जाए और उसमें हमने कुशादा रास्ते बनाए ताकि लोग राह पाएं। और हमने आसमान को एक महफ़ूज़ (सुरक्षित) छत बनाया। और वे उसकी निशानियों से एराज़ (उपेक्षा) किए हुए हैं। और वही है जिसने रात और दिन और सूरज और चांद बनाए। सब एक-एक मदार (कक्ष) में तैर रहे हैं। (31-33)

और हमने तुमसे पहले भी किसी इंसान को हमेशा की ज़िंदगी नहीं दी तो

क्या अगर तुम्हें मौत आ जाए तो वे हमेशा रहने वाले हैं। हर जान को मौत का मज़ा चखना है। और हम तुम्हें बुरी हालत और अच्छी हालत से आज़माते हैं परखने के लिए। और तुम सब हमारी तरफ़ लौटाए जाओगे। (34-35)

और मुंकिर लोग जब तुम्हें देखते हैं तो वे सब तुम्हें मज़ाक़ बना लेते हैं। क्या यही है जो तुम्हारे माबूदों (पूज्यों) का ज़िक्र किया करता है। और ख़ुद ये लोग रहमान के ज़िक्र का इंकार करते हैं। (36)

इंसान उजलत (जल्दबाज़ी) के ख़मीर से पैदा हुआ है। मैं तुम्हें अनक़रीब अपनी निशानियां दिखाऊंगा, पस तुम मुझसे जल्दी न करो और लोग कहते हैं कि यह वादा कब आएगा अगर तुम सच्चे हो। काश इन मुंकिरों को उस वक़्त की ख़बर होती जबकि वे आग को न अपने सामने से रोक सकेंगे और न अपने पीछे से। और न उन्हें मदद पहुंचेगी। बल्कि वह अचानक उन पर आ जाएगी, पस उन्हें बदहवास कर देगी। फिर वे न उसे दफ़ा कर सकेंगे और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। और तुमसे पहले भी रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया। फिर जिन लोगों ने उनमें से मज़ाक़ उड़ाया था उन्हें उस चीज़ ने घेर लिया जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे। (37-41)

कहो कि कौन है जो रात और दिन में रहमान से तुम्हारी हिफ़ाज़त करता है। बल्कि वे लोग अपने रब की याददिहानी से एराज़ (उपेक्षा) कर रहे हैं। क्या उनके लिए हमारे सिवा कुछ माबूद (पूज्य) हैं जो उन्हें बचा लेते हैं। वे ख़ुद अपनी हिफ़ाज़त की क़ुदरत नहीं रखते। और न हमारे मुक़ाबले में कोई उनका साथ दे सकता है। (42-43)

बल्कि हमने उन्हें और उनके बाप-दादा को दुनिया का सामान दिया। यहां तक कि इसी हाल में उन पर लम्बी मुद्दत गुज़र गई। क्या वे नहीं देखते कि हम ज़मीन को उसके अतराफ़ (चतुर्दिक) से घटाते चले जा रहे हैं। फिर क्या यही लोग ग़ालिब (वर्चस्वशील) रहने वाले हैं। (44)

कहो कि मैं बस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के ज़रिए से तुम्हें डराता हूं। और बहरे पुकार को नहीं सुनते जबकि उन्हें डराया जाए और अगर तेरे रब के

अज़ाब का झौंका उन्हें लग जाए तो वे कहने लगेंगे कि हाय हमारी बदबख़्ती, बेशक हम ज़ालिम थे। (45-46)

और हम क़ियामत के दिन इंसाफ़ की तराज़ू रखेंगे। पस किसी जान पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा। और अगर राई के दाने के बराबर भी किसी का अमल होगा तो हम उसे हाज़िर कर देंगे। और हम हिसाब लेने के लिए काफ़ी हैं। (47)

और हमने मूसा और हारून को फ़ुरक़ान (सत्य-असत्य की कसौटी) और रोशनी और नसीहत अता की ख़ुदातरसों (ईश परायण लोगों) के लिए, जो बिना देखे अपने रब से डरते हैं और वे क़ियामत का ख़ौफ़ रखने वाले हैं। और यह एक बाबरकत याददिहानी है जो हमने उतारी है, तो क्या तुम इसके मुंकिर हो। (48-50)

और हमने इससे पहले इब्राहीम को इसकी हिदायत अता की। और हम उसे ख़ूब जानते थे। जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा कि ये क्या मूर्तियां हैं जिन पर तुम जमे बैठे हो। उन्होंने कहा कि हमने अपने बाप दादा को इनकी इबादत करते हुए पाया है। इब्राहीम ने कहा कि बेशक तुम और तुम्हारे बाप दादा एक खुली गुमराही में मुब्तिला रहे। (51-54)

उन्होंने कहा, क्या तुम हमारे पास सच्ची बात लाए हो या तुम मज़ाक़ कर रहे हो। इब्राहीम ने कहा बल्कि तुम्हारा रब वह है जो आसमानों और ज़मीन का रब है। जिसने उन्हें पैदा किया। और मैं इस बात की गवाही देने वाला हूं और ख़ुदा की क़सम मैं तुम्हारे बुतों के साथ एक तदबीर (युक्ति) करूंगा। जबकि तुम पीठ फेरकर चले जाओगे। पस उसने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया सिवा उनके एक बड़े के ताकि वे उसकी तरफ़ रुजूअ करें। (55-58)

उन्होंने कहा कि किसने हमारे बुतों के साथ ऐसा किया है बेशक वह बड़ा ज़ालिम है। लोगों ने कहा कि हमने एक जवान को इनका तज़्किरा करते हुए सुना था जिसे इब्राहीम कहा जाता है। उन्होंने कहा कि उसे सब आदमियों के सामने हाज़िर करो। ताकि वे देखें। उन्होंने कहा कि ऐ इब्राहीम, क्या हमारे माबूदों (पूज्यों) के साथ तुमने ऐसा किया है। इब्राहीम ने कहा, बल्कि उनके

इस बड़े ने ऐसा किया है तो उनसे पूछ लो अगर ये बोलते हों। (59-63)

फिर उन्होंने अपने जी में सोचा फिर कहने लगे कि हक़ीक़त में तुम ही नाहक़ पर हो। फिर अपने सरों को झुका लिया। ऐ इब्राहीम, तुम जानते हो कि ये बोलते नहीं। इब्राहीम ने कहा, क्या तुम ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हो जो तुम्हें न कोई फ़ायदा पहुंचा सकें और न कोई नुक़सान। अफ़सोस है तुम पर भी और उन चीज़ों पर भी जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो। क्या तुम समझते नहीं। (64-67)

उन्होंने कहा कि इसे आग में जला दो और अपने माबूदों (पूज्यों) की मदद करो, अगर तुम्हें कुछ करना है। हमने कहा कि ऐ आग तू इब्राहीम के लिए ठंडक और सलामती बन जा। और उन्होंने उसके साथ बुराई करना चाहा तो हमने उन्हीं लोगों को नाकाम बना दिया। (68-70)

और हमने उसे और लूत को उस ज़मीन की तरफ़ नजात दे दी जिसमें हमने दुनिया वालों के लिए बरकतें रखी हैं। और हमने उसे इस्हाक़ दिया और मज़ीद बरआं (तदधिक) याक़ूब। और हमने उन सबको नेक बनाया। और हमने उन्हें इमाम (नायक) बनाया जो हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे। और हमने उन्हें नेक अमली और नमाज़ की इक़ामत और ज़कात की अदायगी का हुक्म भेजा और वे हमारी इबादत करने वाले थे। (71-73)

और लूत को हमने हिक्मत (तत्वदर्शिता) और इल्म अता किया। और उसे उस बस्ती से नजात दी जो गंदे काम करती थी। बिलाशुबह वे बहुत बुरे, फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) लोग थे। और हमने उसे अपनी रहमत में दाख़िल किया बेशक वह नेकों में से था। (74-75)

और नूह को जबकि इससे पहले उसने पुकारा तो हमने उसकी दुआ क़ुबूल की। पस हमने उसे और उसके लोगों को बहुत बड़े ग़म से नजात दी। और उन लोगों के मुक़ाबले में उसकी मदद की जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया। बेशक वे बहुत बुरे लोग थे। पस हमने उन सबको ग़र्क़ कर दिया। (76-77)

और दाऊद और सुलैमान को जब वे दोनों खेत के बारे में फ़ैसला कर रहे थे, जबकि उसमें कुछ लोगों की बकरियां रात के वक़्त जा पड़ीं। और हम उनके इस फ़ैसले को देख रहे थे। पस हमने सुलैमान को उसकी समझ दे दी। और हमने दोनों को हिक्मत (त्त्वदर्शिता) और इल्म अता किया था। और हमने दाऊद के साथ ताबेअ कर दिया था पहाड़ों को कि वे उसके साथ तस्बीह करते थे और परिंदों को भी। और हम ही करने वाले थे। और हमने उसे तुम्हारे लिए एक जंगी लिबास की संअत (शिल्पकला) सिखाई। ताकि वह तुम्हें लड़ाई में महफ़ूज़ रखे। तो क्या तुम शुक्र करने वाले हो। (78-80)

और हमने सुलैमान के लिए तेज़ हवा को मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर दिया जो उसके हुक्म से उस सरज़मीन की तरफ़ चलती थी जिसमें हमने बरकतें रखी हैं। और हम हर चीज़ को जानने वाले हैं। और शयातीन में से भी हमने उसके ताबेअ (अधीन) कर दिया था जो उसके लिए ग़ौता लगाते थे। और इसके सिवा दूसरे काम करते थे और हम उन्हें संभालने वाले थे। (81-82)

और अय्यूब को जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि मुझे बीमारी लग गई है और तू सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है। तो हमने उसकी दुआ क़ुबूल की और उसे जो तकलीफ़ थी उसे दूर कर दिया। और हमने उसे उसका कुंबा (परिवार) अता किया और इसी के साथ उसके बराबर और भी, अपनी तरफ़ से रहमत और नसीहत, इबादत करने वालों के लिए। (83-84)

और इस्माईल और इदरीस और ज़ुलकिफ़्ल को, ये सब सब्र करने वालों में से थे। और हमने उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल किया। बेशक वे नेक अमल करने वालों में से थे। (85-86)

और मछली वाले (यूनुस) को, जबकि वह अपनी क़ौम से बरहम (क्रुद्ध) होकर चला गया। फिर उसने यह समझा कि हम उसे न पकड़ेंगे फिर उसने अंधेरे में पुकारा कि तेरे सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, तू पाक है। बेशक मैं क़ुसूरवार हूं। तो हमने उसकी दुआ क़ुबूल की और उसे ग़म से नजात दी। और इसी तरह हम ईमान वालों को नजात (मुक्ति) देते हैं। (87-88)

और ज़करिया को, जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि ऐ मेरे रब, तू मुझे अकेला न छोड़। और तू बेहतरीन वारिस है। तो हमने उसकी दुआ क़ुबूल की और उसे यहया अता किया। और उसकी बीवी को उसके लिए दुरुस्त कर दिया। ये लोग नेक कामों में दौड़ते थे और हमें उम्मीद और ख़ौफ़ के साथ पुकारते थे। और हमारे आगे झुके हुए थे। (89-90)

और वह ख़ातून जिसने अपनी नामूस (स्तीत्व) को बचाया तो हमने उसके अंदर अपनी रूह फूंक दी और उसे और उसके बेटे को दुनिया वालों के लिए एक निशानी बना दिया। (91)

और यह तुम्हारी उम्मत एक ही उम्मत है और मैं ही तुम्हारा रब हूं तो तुम मेरी इबादत करो। और उन्होंने अपना दीन अपने अंदर टुकड़े-टुकड़े कर डाला। सब हमारे पास आने वाले हैं। पस जो शख़्स नेक अमल करेगा और वह ईमान वाला होगा तो उसकी महनत की नाक़द्री न होगी, और हम उसे लिख लेते हैं। (92-94)

और जिस बस्ती वालों के लिए हमने हलाकत मुक़द्दर कर दी है उनके लिए हराम है कि वे रुजूअ करें। यहां तक कि जब याजूज और माजूज खोल दिए जाएंगे और वे हर बुलन्दी से निकल पड़ेंगे। और सच्चा वादा नज़दीक आ लगेगा तो उन लोगों की निगाहें फटी रह जाएंगी जिन्होंने इंकार किया था। हाय हमारी कमबख़्ती, हम इससे ग़फ़लत में पड़े रहे। बल्कि हम ज़ालिम थे। (95-97)

बेशक तुम और जिन्हें तुम ख़ुदा के सिवा पूजते थे सब जहन्नम का ईंधन हैं। वहीं तुम्हें जाना है। अगर ये वाक़ई माबूद (पूज्य) होते तो उसमें न पड़ते। और सब उसमें हमेशा रहेंगे। उसमें उनके लिए चिल्लाना है और वे उसमें कुछ न सुनेंगे। बेशक जिनके लिए हमारी तरफ़ से भलाई का पहले फ़ैसला हो चुका है वे उससे दूर रखे जाएंगे। वे उसकी आहट भी न सुनेंगे। और वे अपनी पसंदीदा चीज़ों में हमेशा रहेंगे। उन्हें बड़ी घबराहट ग़म में न डालेगी। और फ़रिश्ते उनका इस्तक़बाल करेंगे। यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुमसे वादा किया गया था। (98-103)

जिस दिन हम आसमान को लपेट देंगे जिस तरह तूमार (पुस्तिका) में औराक़ (पन्ने) लपेट दिए जाते हैं। जिस तरह पहले हमने तख़्लीक़ की इब्तिदा की थी उसी तरह हम फिर उसका इआदा (पुनरावृत्ति) करेंगे। यह हमारे ज़िम्मे वादा है और हम उसे करके रहेंगे। और ज़बूर में हम नसीहत के बाद लिख चुके हैं कि ज़मीन के वारिस हमारे नेक बंदे होंगे। इसमें एक बड़ी ख़बर है इबादतगुज़ार लोगों के लिए। (104-106)

और हमने तुम्हें तो बस दुनिया वालों के लिए रहमत बनाकर भेजा है। कहो कि मेरे पास जो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आती है वह यह है कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) सिर्फ़ एक माबूद है, तो क्या तुम इताअतगुज़ार (आज्ञाकारी) बनते हो। पस अगर वे एराज़ (उपेक्षा) करें तो कह दो कि मैं तुम्हें साफ़ तौर पर इत्तिला कर चुका हूं। और मैं नहीं जानता कि वह चीज़ जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है, क़रीब है या दूर। बेशक वह खुली बात को भी जानता है और उस बात को भी जिसे तुम छुपाते हो। और मुझे नहीं मालूम शायद वह तुम्हारे लिए इम्तेहान हो और फ़ायदा उठा लेने की एक मोहलत हो। पैग़म्बर ने कहा कि ऐ मेरे रब, हक़ के साथ फ़ैसला कर दे। और हमारा रब रहमान (कृपाशील) है, उसी से हम उन बातों पर मदद मांगते हैं जो तुम बयान करते हो। (107-112)

सूरह-22. अल-ह़ज

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ लोगो, अपने रब से डरो। बेशक क़ियामत का भूकम्प बड़ी भारी चीज़ है। जिस दिन तुम उसे देखोगे, हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी। और हर हमल (गर्भ) वाली अपना हमल डाल देगी। और लोग तुम्हें मदहोश नज़र आएंगे हालाँकि वे मदहोश न होंगे। बल्कि अल्लाह का अज़ाब बड़ा ही सख़्त है। और लोगों में कोई ऐसा भी है जो इल्म के बग़ैर अल्लाह के विषय में झगड़ता है। और हर सरकश शैतान की पैरवी करने लगता है। उसके बारे में यह लिख दिया गया है कि जो शख़्स उसे दोस्त बनाएगा

वह उसे बेराह कर देगा और उसे अज़ाबे जहन्नम का रास्ता दिखाएगा। (1-4)

ऐ लोगो, अगर तुम दुबारा जी उठने के मुताल्लिक़ शक में हो तो हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया है, फिर नुत्फ़ा (वीर्य) से, फिर ख़ून के लौथड़े से, फिर गोश्त की बोटी से, शक्ल वाली और बग़ैर शक्ल वाली भी, ताकि हम तुम पर वाज़ेह करें। और हम रहमों (गर्भों) में ठहरा देते हैं जो चाहते हैं एक मुअय्यन (निश्चित) मुद्दत तक। फिर हम तुम्हें बच्चा बनाकर बाहर लाते हैं। फिर ताकि तुम अपनी पूरी जवानी तक पहुंच जाओ। और तुम में से कोई शख़्स पहले ही मर जाता है और कोई शख़्स बदतरीन उम्र तक पहुंचा दिया जाता है ताकि वह जान लेने के बाद फिर कुछ न जाने। और तुम ज़मीन को देखते हो कि .ख़ुश्क पड़ी है फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह ताज़ा हो गई और उभर आई और वह तरह-तरह की .ख़ुशनुमा चीज़ें उगाती है। यह इसलिए कि अल्लाह ही हक़ है और वह बेजानों में जान डालता है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। और यह कि क़ियामत आने वाली है, इसमें कोई शक नहीं और अल्लाह ज़रूर उन लोगों को उठाएगा जो क़ब्रों में हैं। (5-7)

और लोगों में कोई शख़्स है जो अल्लाह की बात में झगड़ता है, इल्म और हिदायत और रोशन किताब के बग़ैर तकब्बुर (घमंड) करते हुए ताकि वह अल्लाह की राह से बेराह कर दे। उसके लिए दुनिया में रुसवाई है और क़ियामत के दिन हम उसे जलती आग का अज़ाब चखाएंगे। यह तुम्हारे हाथ के किए हुए कामों का बदला है और अल्लाह अपने बंदों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं। (8-10)

और लोगों में कोई है जो किनारे पर रहकर अल्लाह की इबादत करता है। पस अगर उसे कोई फ़ायदा पहुंचा तो वह उस इबादत पर क़ायम हो गया। और अगर कोई आज़माइश पेश आई तो उल्टा फिर गया। उसने दुनिया भी खो दी और आख़िरत भी। यही खुला हुआ ख़सारा (घाटा) है। (11)

वह .ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ को पुकारता है जो न उसे नुक़सान पहुंचा सकती और न उसे नफ़ा पहुंचा सकती। यह इंतिहा दर्जे की गुमराही है। वह

ऐसी चीज़ को पुकारता है जिसका नुक़सान उसके नफ़ा से क़रीबतर है। कैसा बुरा कारसाज़ है और कैसा बुरा रफ़ीक़ (साथी)। बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक अमल किए ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (12-14)

जो शख़्स यह गुमान रखता हो कि ख़ुदा दुनिया और आख़िरत में उसकी मदद नहीं करेगा तो उसे चाहिए कि एक रस्सी आसमान तक ताने। फिर उसे काट डाले और देखे कि क्या उसकी तदबीर उसके ग़ुस्से को दूर करने वाली बनती है। और इस तरह हमने क़ुरआन को खुली खुली दलीलों के साथ उतारा है। और बेशक अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत दे देता है। (15-16)

इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने यहूदियत इख़्तियार की, और साबी और नसारा और मजूस और जिन्होंने शिर्क (ख़ुदा का साझीदार बनाना) किया। अल्लाह उन सबके दर्मियान क़ियामत के रोज़ फ़ैसला फ़रमाएगा। बेशक अल्लाह हर चीज़ से वाक़िफ़ है। (17)

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ही के आगे सज्दा करते हैं जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और सूरज और चांद और सितारे और पहाड़ और दरख़्त और चौपाए और बहुत से इंसान। और बहुत से ऐसे हैं जिन पर अज़ाब साबित हो चुका है और जिसे ख़ुदा ज़लील कर दे तो उसे कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं। बेशक अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (18)

ये दो फ़रीक़ (पक्ष) हैं जिन्होंने अपने रब के बारे में झगड़ा किया। पस जिन्होंने इंकार किया उनके लिए आग के कपड़े काटे जाएंगे। उनके सरों के ऊपर से खौलता हुआ पानी डाला जाएगा। इससे उनके पेट की चीज़ें तक गल जाएंगी और खालें भी और उनके लिए वहां लोहे के हथौड़े होंगे। जब भी वे घबराकर उससे बाहर निकलना चाहेंगे तो फिर उसमें धकेल दिए जाएंगे और चखते रहो जलने का अज़ाब। (19-22)

बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, अल्लाह उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। उन्हें वहां सोने के कंगन

और मोती पहनाए जाएंगे और वहां उनकी पोशाक रेशम होगी। और उन्हें पाकीज़ा क़ौल (कथन) की हिदायत बख़्शी गई थी। और उन्हें ख़ुदाए हमीद (प्रशंसित) का रास्ता दिखाया गया था। (23-24)

बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और वे लोगों को अल्लाह की राह से और मस्जिदे हराम से रोकते हैं जिसे हमने लोगों के लिए बनाया है जिसमें मक़ामी (स्थानीय) बाशिंदे और बाहर से आने वाले बराबर हैं। और जो इस मस्जिद में रास्ती (शालीनता) से हटकर ज़ुल्म का तरीक़ा इख़्तियार करेगा उसे हम दर्दनाक अज़ाब का मज़ा चखाएंगे। (25)

और जब हमने इब्राहीम को बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) की जगह बता दी, कि मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न करना और मेरे घर को पाक रखना तवाफ़ (परिक्रमा) करने वालों के लिए और क़ियाम करने वालों के लिए और रुकूअ और सज्दा करने वालों के लिए। (26)

और लोगों में हज का एलान कर दो, वे तुम्हारे पास आएंगे। पैरों पर चलकर और दुबले ऊंटों पर सवार होकर जो कि दूर दराज़ रास्तों से आएंगे ताकि वे अपने फ़ायदे की जगह पर पहुंचें और चन्द मालूम दिनों में उन चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें बख़्शे हैं। पस उसमें से खाओ और मुसीबतज़दा मोहताज को खिलाओ। तो चाहिए कि वे अपना मेल कुचैल ख़त्म कर दें। और अपनी नज़्रें (मन्नतें) पूरी करें। और इस क़दीम (प्राचीन) घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करें। (27-29)

यह बात हो चुकी और जो शख़्स अल्लाह की हुरमतों (मर्यादाओं) की ताज़ीम करेगा तो वह उसके हक़ में उसके रब के नज़दीक बेहतर है और तुम्हारे लिए चौपाए हलाल कर दिए गए हैं, सिवा उनके जो तुम्हें पढ़कर सुनाए जा चुके हैं। तो तुम बुतों की गंदगी से बचो और झूठी बात से बचो। (30)

अल्लाह की तरफ़ यकसू (एकाग्र) रहो, उसके साथ शरीक न ठहराओ। और जो शख़्स अल्लाह के साथ शिर्क करता है तो गोया वह आसमान से

गिर पड़ा। फिर चिड़ियां उसे उचक लें या हवा उसे किसी दूर दराज़ मक़ाम पर ले जाकर डाल दे। (31)

यह बात हो चुकी। और जो शख़्स अल्लाह के शआइर (प्रतीकों) का पूरा लिहाज़ रखेगा तो यह दिल के तक़्वे (ईश-परायणता) की बात है। तुम्हें उनसे एक मुक़र्रर वक़्त तक फ़ायदा उठाना है। फिर उन्हें क़ुर्बानी के लिए क़दीम (प्राचीन) घर की तरफ़ ले जाना है। (32-33)

और हमने हर उम्मत के लिए क़ुर्बानी करना मुक़र्रर किया ताकि वे उन चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें अता किए हैं। पस तुम्हारा इलाह (पूज्य-प्रभु) एक ही इलाह है तो तुम उसी के होकर रहो और आजिज़ी (नम्रता) करने वालों को बशारत (शुभ सूचना) दे दो। जिनका हाल यह है कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल कांप उठते हैं। और जो उन पर पड़े उसे सहने वाले और नमाज़ की पाबंदी करने वाले और जो कुछ हमने उन्हें दिया है वे उसमें से ख़र्च करते हैं। (34-35)

और क़ुर्बानी के ऊंटों को हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की यादगार बनाया है। उनमें तुम्हारे लिए भलाई है। पस उन्हें खड़ा करके उन पर अल्लाह का नाम लो। फिर जब वे करवट के बल गिर पड़ें तो उनमें से खाओ और बेसवाल मोहताज और साइल (मांगने वाले) को खिलाओ। इस तरह हमने इन जानवरों को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर दिया ताकि तुम शुक्र अदा करो। और अल्लाह को न उनका गोश्त पहुंचता है और न उनका ख़ून बल्कि अल्लाह को सिर्फ़ तुम्हारा तक़्वा (ईश-परायणता) पहुंचता है इस तरह अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया है। ताकि तुम अल्लाह की बख़्शी हुई हिदायत पर उसकी बड़ाई बयान करो और नेकी करने वालों को ख़ुशख़बरी दे दो। (36-37)

बेशक अल्लाह उन लोगों की मुदाफ़िअत (प्रतिरक्षा) करता है जो ईमान लाए। बेशक अल्लाह बदअहदों (वचन तोड़ने वालों) और नाशुक्रों को पसंद नहीं करता। इजाज़त दे दी गई उन लोगों को जिनसे लड़ाई की जा रही है इस

वजह से कि उन पर ज़ुल्म किया गया है। और बेशक अल्लाह उनकी मदद पर क़ादिर है। वे लोग जो अपने घरों से बेवजह निकाले गए। सिर्फ़ इसलिए कि वे कहते हैं कि हमारा रब (प्रभु) अल्लाह है। और अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे लिए ज़रिए हटाता न रहे तो ख़ानक़ाहें (आश्रम) और गिरजा और इबादतख़ाने और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का नाम कसरत (अधिकता) से लिया जाता है ढा दिए जाते। और अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा जो अल्लाह की मदद करे। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है, ज़ोर वाला है। (38-40)

ये वे लोग हैं जिन्हें अगर हम ज़मीन पर ग़लबा दें तो वे नमाज़ का एहतिमाम करेंगे और ज़कात अदा करेंगे और मअरूफ़ (भलाई) का हुक्म देंगे और मुंकर (बुराई) से रोकेंगे और सब कामों का अंजाम ख़ुदा ही के इख़्तियार में है। (41)

और अगर वे तुम्हें झुठलाएं तो उनसे पहले क़ौमे नूह और आद और समूद झुठला चुके हैं और क़ौमे इब्राहीम और क़ौमे लूत और मदयन के लोग भी। और मूसा को झुठलाया गया। फिर मैंने मुंकिरों को ढील दी। फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया। पस कैसा हुआ मेरा अज़ाब। (42-44)

पस कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया और वे ज़ालिम थीं। पस अब वे अपनी छतों पर उल्टी पड़ी हैं और कितने ही बेकार कुवें और कितने पुख़्ता महल जो वीरान पड़े हुए हैं। क्या ये लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि उनके दिल ऐसे हो जाते कि वे उनसे समझते या उनके कान ऐसे हो जाते कि वे उनसे सुनते। क्योंकि आंखें अंधी नहीं होतीं बल्कि वे दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में हैं। (45-46)

और ये लोग तुमसे अज़ाब के लिए जल्दी किए हुए हैं। और अल्लाह हरगिज़ अपने वादे के ख़िलाफ़ करने वाला नहीं है। और तेरे रब के यहां का एक दिन तुम्हारे शुमार के एतबार से एक हज़ार साल के बराबर होता है। और कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें मैंने ढील दी और वे ज़ालिम थीं। फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया और मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है। (47-48)

कहो कि ऐ लोगो मैं तुम्हारे लिए एक खुला हुआ डराने वाला हूं। पस जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए उनके लिए मग़्फ़िरत (क्षमा) है और इज़्ज़त की रोज़ी। और जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए दौड़े वही दोज़ख़ वाले हैं। (49-51)

और हमने तुमसे पहले जो भी रसूल और नबी भेजा तो जब उसने कुछ पढ़ा तो शैतान ने उसके पढ़ने में मिला दिया। फिर अल्लाह शैतान के डाले हुए को मिटा देता है। फिर अल्लाह अपनी आयतों को पुख़्ता कर देता है। और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। ताकि जो कुछ शैतान ने मिलाया है उससे वह उन लोगों को जांचे जिनके दिलों में रोग है और जिनके दिल सख़्त हैं। और ज़ालिम लोग मुख़ालिफ़त में बहुत दूर निकल गए हैं और ताकि वे लोग जिन्हें इल्म मिला है जान लें कि यह सच है तेरे रब की तरफ़ से है। फिर वे उस पर यक़ीन लाएं। और उनके दिल उसके आगे झुक जाएं। और अल्लाह ईमान लाने वालों को ज़रूर सीधा रास्ता दिखाता है। (52-54)

और इंकार करने वाले लोग हमेशा उसकी तरफ़ से शक में पड़े रहेंगे। यहां तक कि अचानक उन पर क़ियामत आ जाए। या एक मनहूस दिन का अज़ाब आ जाए। उस दिन सारा इख़्तियार सिर्फ़ अल्लाह को होगा। वह उनके दर्मियान फ़ैसला फ़रमाएगा। पस जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए वे नेमत के बाग़ों में होंगे और जिन्होंने इंकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया तो उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। (55-57)

और जिन लोगों ने अल्लाह की राह में अपना वतन छोड़ा, फिर वे क़त्ल कर दिए गए या वे मर गए, अल्लाह ज़रूर उन्हें अच्छा रिज़्क़ देगा। और बेशक अल्लाह ही सबसे बेहतर रिज़्क़ देने वाला है। वह उन्हें ऐसी जगह पहुंचाएगा जिससे वे राज़ी होंगे। और बेशक अल्लाह जानने वाला, हिल्म (उदारता) वाला है। (58-59)

यह हो चुका, और जो शख़्स बदला ले वैसा ही जैसा उसके साथ किया गया था, और फिर उस पर ज़्यादती की जाए तो अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा। बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, दरगुज़र करने वाला है। (60)

यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है। और अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। यह इसलिए कि अल्लाह ही हक़ (सत्य) है और वे सब बातिल (असत्य) हैं जिन्हें अल्लाह को छोड़कर लोग पुकारते हैं। और बेशक अल्लाह ही सबसे ऊपर है, सबसे बड़ा है। (61-62)

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया। फिर ज़मीन सरसब्ज़ हो गई। बेशक अल्लाह बारीकबीं (सूक्ष्मदर्शी) है, ख़बर रखने वाला है। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। बेशक अल्लाह ही है जो बेनियाज़ (निस्पृह) है, तारीफ़ों वाला है। (63-64)

क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह ने ज़मीन की चीज़ों को तुम्हारे काम में लगा रखा है और कश्ती को भी, वह उसके हुक्म से समुद्र में चलती है। और वह आसमान को ज़मीन पर गिरने से थामे हुए है, मगर यह कि उसके हुक्म से। बेशक अल्लाह लोगों पर नर्मी करने वाला, महरबान है। और वही है जिसने तुम्हें ज़िंदगी दी, फिर वह तुम्हें मौत देता है। फिर वह तुम्हें ज़िंदा करेगा। बेशक इंसान बड़ा ही नाशुक्र है। (65-66)

और हमने हर उम्मत के लिए एक तरीक़ा मुक़र्रर किया कि वे उसकी पैरवी करते थे। पस वे इस मामले में तुमसे झगड़ा न करें। और तुम अपने रब की तरफ़ बुलाओ। यक़ीनन तुम सीधे रास्ते पर हो। अगर वे तुमसे झगड़ा करें तो कहो कि अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो। अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे दर्मियान उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिसमें तुम इख़्तेलाफ़ (मतभेद) कर रहे हो। क्या तुम नहीं जानते कि आसमान व ज़मीन की हर चीज़ अल्लाह के इल्म में है। सब कुछ एक किताब में है। बेशक यह अल्लाह के लिए आसान है। (67-70)

और वे अल्लाह के सिवा उनकी इबादत करते हैं जिनके हक़ में अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी और न उनके बारे में उन्हें कोई इल्म है। और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। और जब उन्हें हमारी वाज़ेह (सुस्पष्ट) आयतें

पढ़कर सुनाई जाती हैं तो तुम मुंकिरों के चेहरे पर बुरे आसार देखते हो। गोया कि वे उन लोगों पर हमला कर देंगे जो उन्हें हमारी आयतें पढ़कर सुना रहे हैं। कहो कि क्या मैं तुम्हें बताऊं कि इससे बदतर चीज़ क्या है। वह आग है। उसका अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है जिन्होंने इंकार किया और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (71-72)

ऐ लोगो, एक मिसाल बयान की जाती है तो इसे ग़ौर से सुनो। तुम लोग ख़ुदा के सिवा जिस चीज़ को पुकारते हो वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते। अगरचे सबके सब उसके लिए जमा हो जाएं। और अगर मक्खी उनसे कुछ छीन ले तो वे उसे उससे छुड़ा नहीं सकते। मदद चाहने वाले भी कमज़ोर और जिनसे मदद चाही गई वे भी कमज़ोर। उन्होंने अल्लाह की क़द्र न पहचानी जैसा कि उसके पहचानने का हक़ है। बेशक अल्लाह ताक़तवर है, ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है। (73-74)

अल्लाह फ़रिश्तों में से अपना पैग़ाम पहुंचाने वाला चुनता है। और इंसानों में से भी। बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं सारे मामलात। (75-76)

ऐ ईमान वालो, रुकूअ और सज्दा करो। और अपने रब की इबादत करो और भलाई के काम करो ताकि तुम कामयाब हो। और अल्लाह की राह में कोशिश करो जैसा कि कोशिश करने का हक़ है। उसी ने तुम्हें चुना है। और उसने दीन के मामले में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी। तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन। उसी ने तुम्हारा नाम मुस्लिम (आज्ञाकारी) रखा, इससे पहले और इस क़ुरआन में भी ताकि रसूल तुम पर गवाह हो और तुम लोगों पर गवाह बनो। पस नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो। और अल्लाह को मज़बूत पकड़ो, वही तुम्हारा मालिक है। पस कैसा अच्छा मालिक है और कैसा अच्छा मददगार। (77-78)

सूरह-23. अल-मोमिनून

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

यक़ीनन फ़लाह पाई ईमान वालों ने जो अपनी नमाज़ में झुकने वाले हैं और जो लग़्व (घटिया, निरर्थक) बातों से बचते हैं। और जो ज़कात अदा करने वाले हैं और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं, सिवा अपनी बीवियों के और उन औरतों के जो उनके अधीन दासियां हों कि उन पर वे क़ाबिले मलामत नहीं। अलबत्ता जो इसके अलावा चाहें तो वही ज़्यादती करने वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपने अहद (वचन) का ख़्याल रखने वाले हैं। और जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं। यही लोग वारिस होने वाले हैं जो फ़िरदौस की विरासत पाएंगे। वे उसमें हमेशा रहेंगे। (1-11)

और हमने इंसान को मिट्टी के ख़ुलासा (सत) से पैदा किया। फिर हमने पानी की एक बूंद की शक्ल में उसे एक महफ़ूज़ ठिकाने में रखा। फिर हमने पानी की बूंद को एक जनीन (भ्रूण) की शक्ल दी। फिर जनीन को गोश्त का एक लोथड़ा बनाया। पस लोथड़े के अंदर हड्डियां पैदा कीं। फिर हमने हड्डियों पर गोश्त चढ़ा दिया। फिर हमने उसे एक नई सूरत में बना खड़ा किया। पस बड़ा ही बाबरकत है अल्लाह, बेहतरीन पैदा करने वाला। फिर इसके बाद तुम्हें ज़रूर मरना है। फिर तुम क़ियामत के दिन उठाए जाओगे। (12-16)

और हमने तुम्हारे ऊपर सात रास्ते बनाए। और हम मख़्लूक़ (सृष्टि) से बेख़बर नहीं हुए। और हमने आसमान से पानी बरसाया एक अंदाज़े के साथ। फिर हमने उसे ज़मीन में ठहरा दिया। और हम उसे वापस लेने पर क़ादिर हैं। फिर हमने उससे तुम्हारे लिए खजूर और अंगूर के बाग़ पैदा किए। तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फल हैं। और तुम उनमें से खाते हो। और हमने वह दरख़्त पैदा किया जो तूरे सीना से निकलता है, वह तेल लिए हुए उगता है। और खाने वालों के लिए सालन भी। और तुम्हारे लिए मवेशियों में सबक़ है। हम तुम्हें उनके पेट की चीज़ से पिलाते हैं। और तुम्हारे लिए उनमें बहुत

फ़ायदे हैं। और तुम उन्हें खाते हो। और तुम उन पर और कश्तियों पर सवारी करते हो। (17-22)

और हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, तुम अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। क्या तुम डरते नहीं। तो उसकी क़ौम के सरदार जिन्होंने इंकार किया था उन्होंने कहा कि यह तो बस तुम्हारे जैसा एक आदमी है। वह चाहता है कि तुम्हारे ऊपर बरतरी हासिल करे। और अगर अल्लाह चाहता तो वह फ़रिश्ते भेजता। हमने यह बात अपने पिछले बड़ों में नहीं सुनी। यह तो बस एक शख़्स है जिसे जुनून हो गया है। पस एक वक़्त तक इसका इंतज़ार करो। (23-25)

नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब तू मेरी मदद फ़रमा कि इन्होंने मुझे झुठला दिया। तो हमने उसे 'वही' (प्रकाशना) की कि तुम कश्ती तैयार करो हमारी निगरानी में और हमारी हिदायत के मुताबिक़। तो जब हमारा हुक्म आ जाए और ज़मीन से पानी उबल पड़े तो हर क़िस्म के जानवरों में से एक-एक जोड़ा लेकर उसमें सवार हो जाओ। और अपने घरवालों को भी, सिवा उनके जिनके बारे में पहले फ़ैसला हो चुका है। और जिन्होंने ज़ुल्म किया है उनके मामले में मुझसे बात न करना। बेशक उन्हें डूबना है। (26-27)

फिर जब तुम और तुम्हारे साथी कश्ती में बैठ जाएं तो कहो कि शुक्र है अल्लाह का जिसने हमें ज़ालिम लोगों से नजात दी और कहो कि ऐ मेरे रब तू मुझे उतार बरकत का उतारना और तू बेहतर उतारने वाला है। बेशक इसमें निशानियां हैं और बेशक हम बंदों को आज़माते हैं। (28-30)

फिर हमने उनके बाद दूसरा गिरोह पैदा किया। फिर उनमें एक रसूल उन्हीं में से भेजा, कि तुम अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। क्या तुम डरते नहीं। और उसकी क़ौम के सरदारों ने जिन्होंने इंकार किया। और आख़िरत की मुलाक़ात को झुठलाया, और उन्हें हमने दुनिया की ज़िंदगी में आसूदगी (सम्पन्नता) दी थी, कहा यह तो तुम्हारे ही जैसा एक आदमी है। वही खाता है जो तुम खाते हो, और वही पीता है

जो तुम पीते हो। और अगर तुमने अपने ही जैसे एक आदमी की बात मानी तो तुम बड़े घाटे में रहोगे। (31-34)

क्या यह शख़्स तुमसे कहता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियां हो जाओगे तो फिर तुम निकाले जाओगे। बहुत ही बईद और बहुत ही बईद (असंभव) है जो बात उनसे कही जा रही है। ज़िंदगी तो यही हमारी दुनिया की ज़िंदगी है। यहीं हम मरते हैं और जीते हैं। और हम दुबारा उठाए जाने वाले नहीं हैं। यह तो बस एक ऐसा शख़्स है जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा है। और हम उसे मानने वाले नहीं। (35-38)

रसूल ने कहा, ऐ मेरे रब, मेरी मदद फ़रमा कि उन्होंने मुझे झुठला दिया। फ़रमाया कि ये लोग जल्द ही पछताएंगे। पस उन्हें एक सख़्त आवाज़ ने हक़ के मुताबिक़ पकड़ लिया। फिर हमने उन्हें ख़स व ख़ाशाक (कूड़ा-कचरा) कर दिया। पस दूर हो ज़ालिम क़ौम। (39-41)

फिर हमने उनके बाद दूसरी क़ौमें पैदा कीं। कोई क़ौम न अपने वादे से आगे जाती और न उससे पीछे रहती। फिर हमने लगातार अपने रसूल भेजे। जब भी किसी क़ौम के पास उसका रसूल आया तो उन्होंने उसे झुठलाया। तो हमने एक के बाद एक को लगा दिया। और हमने उन्हें कहानियां बना दिया। पस दूर हों वे लोग जो ईमान नहीं लाते। (42-44)

फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून को भेजा अपनी निशानियों और खुली दलील के साथ फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास तो उन्होंने तकब्बुर (घमंड) किया और वे मग़रूर (अभिमानी) लोग थे। पस उन्होंने कहा क्या हम अपने जैसे दो आदमियों की बात मान लें हालाँकि उनकी क़ौम के लोग हमारे ताबेअदार हैं। पस उन्होंने उन्हें झुठला दिया। फिर वे हलाक कर दिए गए। और हमने मूसा को किताब दी ताकि वे राह पाएं। (45-49)

और हमने मरयम के बेटे को और उसकी मां को एक निशानी बनाया और हमने उन्हें एक ऊंची ज़मीन पर ठिकाना दिया जो सुकून की जगह थी और वहां चशमा जारी था। (50)

ऐ पैग़म्बरो, सुथरी चीज़ें खाओ और नेक काम करो। मैं जानता हूं जो कुछ तुम करते हो। और यह तुम्हारा दीन एक ही दीन है। और मैं तुम्हारा रब हूं, तो तुम मुझसे डरो। (51-52)

फिर लोगों ने अपने दीन (धर्म) को आपस में टुकड़े-टुकड़े कर लिया। हर गिरोह के पास जो कुछ है उसी पर वह नाज़ां (गौरवांवित) है। पस उन्हें उनकी बेहोशी में कुछ दिन छोड़ दो। क्या वे समझते हैं कि हम उन्हें जो माल और औलाद दिए जा रहे हैं तो हम उन्हें फ़ायदा पहुंचाने में सरगर्म हैं। बल्कि वे बात को नहीं समझते। (53-56)

बेशक जो लोग अपने रब की हैबत से डरते हैं। और जो लोग अपने रब की आयतों पर यक़ीन रखते हैं। और जो लोग अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करते। और जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं और उनके दिल कांपते हैं कि वे अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं। ये लोग भलाइयों की राह में सबक़त (अग्रसरता) कर रहे हैं और वे उन पर पहुंचने वाले हैं सबसे आगे। और हम किसी पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं डालते। और हमारे पास एक किताब हे जो बिल्कुल ठीक बोलती है, और उन पर ज़ुल्म न होगा। (57-62)

बल्कि उनके दिल इसकी तरफ़ से ग़फ़लत में हैं। और उनके कुछ काम इसके अलावा हैं वे उन्हें करते रहेंगे। यहां तक कि जब हम उनके ख़ुशहाल लोगों को अज़ाब में पकड़ेंगे तो वे फ़रयाद करने लगेंगे। अब फ़रयाद न करो। अब हमारी तरफ़ से तुम्हारी कोई मदद न होगी। तुम्हें मेरी आयतें सुनाई जाती थीं तो तुम पीठ पीछे भागते थे, उससे तकब्बुर (घमंड) करके। गोया किसी क़िस्सा कहने वाले को छोड़ रहे हो। (63-67)

फिर क्या उन्होंने इस कलाम पर ग़ौर नहीं किया। या उनके पास ऐसी चीज़ आई है जो उनके अगले बाप दादा के पास नहीं आई। या उन्होंने अपने रसूल को पहचाना नहीं। इस वजह से वे उसे नहीं मानते। या वे कहते हैं कि उसे जुनून है। बल्कि वह उनके पास हक़ सत्य लेकर आया है। और उनमें

से अक्सर को हक़ बात बुरी लगती है। और अगर हक़ उनकी ख़्वाहिशों के ताबेअ (अधीन) होता तो आसमान और ज़मीन और जो उनमें हैं सब तबाह हो जाते। बल्कि हमने उनके पास उनकी नसीहत भेजी है तो वे अपनी नसीहत से एराज़ (उपेक्षा) कर रहे हैं। (68-71)

क्या तुम उनसे कोई माल मांग रहे हो तो तुम्हारे रब का माल तुम्हारे लिए बेहतर है। और वह बेहतरीन रोज़ी देने वाला है। और यक़ीनन तुम उन्हें एक सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाते हो। और जो लोग आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते वे रास्ते से हट गए हैं। (72-74)

और अगर हम उन पर रहम करें और उन पर जो तकलीफ़ है वह दूर कर दें तब भी वे अपनी सरकशी में लगे रहेंगे बहके हुए। और हमने उन्हें अज़ाब में पकड़ा। लेकिन न वे अपने रब के आगे झुके और न उन्होंने आजिज़ी की। यहां तक कि जब हम उन पर सख़्त अज़ाब का दरवाज़ा खोल देंगे तो उस वक़्त वे हैरतज़दा रह जाएंगे। (75-77)

और वही है जिसने तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनाए। तुम बहुत कम शुक्र अदा करते हो। और वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैलाया। और तुम उसी की तरफ़ जमा किए जाओगे। और वही है जो जिलाता है और मारता है और उसी के इख़्तियार में है रात और दिन का बदलना। तो क्या तुम समझते नहीं। (78-80)

बल्कि उन्होंने वही बात कही जो अगलों ने कही थी। उन्होंने कहा कि क्या जब हम मर जाएंगे और हम मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हम दुबारा उठाए जाएंगे। इसका वादा हमें और इससे पहले हमारे बाप दादा को भी दिया गया। ये महज़ अगलों के अफ़साने हैं। (81-83)

कहो कि ज़मीन और जो कोई इसमें है यह किसका है, अगर तुम जानते हो। वे कहेंगे कि अल्लाह का है। कहो कि फिर तुम सोचते नहीं। कहो कि कौन मालिक है सात आसमानों का और कौन मालिक है अर्शे अज़ीम का। वे कहेंगे कि सब अल्लाह का है। कहो, फिर क्या तुम डरते नहीं। कहो कि

कौन है जिसके हाथ में हर चीज़ का इख़्तियार है और वह पनाह देता है और उसके मुक़ाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता, अगर तुम जानते हो। वे कहेंगे कि यह अल्लाह के लिए है। कहो कि फिर कहां से तुम मस्हूर (जादूग्रस्त) किए जाते हो। (84-89)

बल्कि हम उनके पास हक़ लाए हैं और बेशक वे झूठे हैं। अल्लाह ने कोई बेटा नहीं बनाया और उसके साथ कोई और माबूद (पूज्य) नहीं। ऐसा होता तो हर माबूद अपनी मख़्लूक़ को लेकर अलग हो जाता। और एक दूसरे पर चढ़ाई करता। अल्लाह पाक है उससे जो वे बयान करते हैं। वह खुले और छुपे का जानने वाला है। वह बहुत ऊपर है उससे जिसे ये शरीक बताते हैं। (90-92)

कहो कि ऐ मेरे रब, अगर तू मुझे वह दिखा दे जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। तो ऐ मेरे रब मुझे ज़ालिम लोगों में शामिल न कर। और बेशक हम क़ादिर हैं कि हम उनसे जो वादा कर रहे हैं वह तुम्हें दिखा दें। (93-95)

तुम बुराई को उस तरीक़े से दूर करो जो बेहतर हो। हम ख़ूब जानते हैं जो ये लोग कहते हैं। और कहो कि ऐ मेरे रब मैं पनाह मांगता हूं शैतानों के वसवसों से। और ऐ मेरे रब मैं तुझसे पनाह मांगता हूं कि वे मेरे पास आएं। (96-98)

यहां तक कि जब उनमें से किसी पर मौत आती है तो वह कहता है कि ऐ मेरे रब, मुझे वापस भेज दे। ताकि जिसे मैं छोड़ आया हूं उसमें कुछ नेकी कमाऊं। हरगिज़ नहीं,यह एक बात है कि वही वह कहता है। और उनके आगे एक पर्दा है उस दिन तक के लिए जबकि वे उठाए जाएंगे। फिर जब सूर फूंका जाएगा तो फिर उनके दर्मियान न कोई रिश्ता रहेगा और न कोई किसी को पूछेगा। पस जिनके पल्ले भारी होंगे वही लोग कामयाब होंगे। और जिनके पल्ले हल्के होंगे तो यही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला, वे जहन्नम में हमेशा रहेंगे। उनके चेहरों को आग झुलस देगी और वे उसमें बदशक्ल हो रहे होंगे। (99-104)

क्या तुम्हें मेरी आयतें पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं तो तुम उन्हें झुठलाते थे। वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब हमारी बदबख़्ती ने हमें घेर लिया था और हम गुमराह लोग थे। ऐ हमारे रब हमें इससे निकाल ले, फिर अगर हम दुबारा ऐसा करें तो बेशक हम ज़ालिम हैं। ख़ुदा कहेगा कि दूर हो, इसी में पड़े रहो और मुझसे बात न करो। (105-108)

मेरे बंदों में एक गिरोह था जो कहता था कि ऐ हमारे रब हम ईमान लाए, पस तू हमें बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा और तू बेहतरीन रहम फ़रमाने वाला है। पस तुमने उन्हें मज़ाक़ बना लिया। यहां तक कि उनके पीछे तुमने हमारी याद भुला दी और तुम उन पर हंसते रहे। मैंने उन्हें आज उनके सब्र का बदला दिया कि वही हैं कामयाब होने वाले। (109-111)

इर्शाद होगा कि वर्षों के शुमार से तुम कितनी देर ज़मीन में रहे। वे कहेंगे हम एक दिन रहे या एक दिन से भी कम। तो गिनती वालों से पूछ लीजिए। इर्शाद होगा कि तुम थोड़ी ही मुद्दत रहे। काश तुम जानते होते। (112-114)

पस क्या तुम यह ख़्याल करते हो कि हमने तुम्हें बेमक़्सद पैदा किया है और तुम हमारे पास नहीं लाए जाओगे। पस बहुत बरतर (उच्च) है अल्लाह, बादशाह हक़ीक़ी, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वह मालिक है अर्शे अज़ीम का। और जो शख़्स अल्लाह के साथ किसी और माबूद को पुकारे, जिसके हक़ में उसके पास कोई दलील नहीं। तो उसका हिसाब उसके रब के पास है बेशक मुंकिरों को फ़लाह न होगी। और कहो कि ऐ मेरे रब, मुझे बख़्श दे और मुझ पर रहम फ़रमा, तू बेहतरीन रहम फ़रमाने वाला है। (115-118)

सूरह-24. अन-नूर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

यह एक सूरह है जिसे हमने उतारा है और इसे हमने फ़र्ज़ किया है। और इसमें हमने साफ़-साफ़ आयतें उतारी हैं। ज़ानी (व्यभिचारी) औरत और ज़ानी मर्द दोनों में से हर एक को सौ कौड़े मारो। और तुम्हें उन दोनों पर अल्लाह के दीन के मामले में रहम न आना चाहिए। अगर तुम अल्लाह पर

और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो। और चाहिए कि दोनों की सज़ा के वक़्त मुसलमानों का एक गिरोह मौजूद रहे। ज़ानी निकाह न करे मगर ज़ानिया (व्यभिचारिणी) के साथ या मुश्रिका (बहुदेववादी स्त्री) के साथ। और ज़ानिया के साथ निकाह न करे मगर ज़ानी या मुश्रिक (बहुदेववादी पुरुष)। और यह हराम कर दिया गया अहले ईमान पर। (1-3)

और जो लोग पाक दामन औरतों पर ऐब लगाएं, फिर चार गवाह न ले आएं उन्हें अस्सी कौड़े मारो और उनकी गवाही कभी क़ुबूल न करो। यही लोग नाफ़रमान हैं। लेकिन जो लोग इसके बाद तौबा करें और इस्लाह (सुधार) कर लें तो अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (4-5)

और जो लोग अपनी बीवियों पर ऐब लगाएं और उनके पास उनके अपने सिवा और गवाह न हों तो ऐसे शख़्स की गवाही की सूरत यह है कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खाकर कहे कि बेशक वह सच्चा है। और पांचवीं बार यह कहे कि उस पर अल्लाह की लानत हो अगर वह झूठा हो। और औरत से सज़ा इस तरह टल जाएगी कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खाकर कहे कि यह शख़्स झूठा है। और पांचवीं बार यह कहे कि मुझ पर अल्लाह का ग़ज़ब हो अगर यह शख़्स सच्चा हो। और अगर तुम लोगों पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती और यह कि अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (6-10)

जिन लोगों ने यह तूफ़ान बरपा किया वह तुम्हारे अंदर ही की एक जमाअत है। तुम उसे अपने हक़ में बुरा न समझो बल्कि यह तुम्हारे लिए बेहतर है। उनमें से हर आदमी के लिए वह है जितना उसने गुनाह कमाया। और जिसने उसमें सबसे बड़ा हिस्सा लिया उसके लिए बड़ा अज़ाब है। (11)

जब तुम लोगों ने उसे सुना तो मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों ने एक दूसरे के बाबत नेक गुमान क्यों न किया और क्यों न कहा कि यह खुला हुआ बोहतान (आक्षेप) है। ये लोग इस पर चार गवाह क्यों न लाए। पस जब वे गवाह नहीं लाए तो अल्लाह के नज़दीक वही झूठे हैं। (12-13)

और अगर तुम लोगों पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो जिन बातों में तुम पड़ गए थे उसके सबब तुम पर कोई बड़ी आफ़त आ जाती। जबकि तुम उसे अपनी ज़बानों से नक़ल कर रहे थे। और अपने मुंह से ऐसी बात कह रहे थे जिसका तुम्हें कोई इल्म न था। और तुम उसे एक मामूली बात समझ रहे थे। हालाँकि वह अल्लाह के नज़दीक बहुत भारी बात है। और जब तुमने उसे सुना तो यूं क्यों न कहा कि हमें ज़ेबा नहीं कि हम ऐसी बात मुंह से निकालें। मआज़ल्लाह, यह बहुत बड़ा बोहतान (आक्षेप) है। अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है कि फिर कभी ऐसा न करना अगर तुम मोमिन हो। अल्लाह तुमसे साफ़-साफ़ अहकाम बयान करता है। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (14-18)

बेशक जो लोग यह चाहते हैं कि मुसलमानों में बेहयाई का चर्चा हो उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक सज़ा है। और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती, और यह कि अल्लाह नर्मी करने वाला रहमत करने वाला है। (19-20)

ऐ ईमान वालो, तुम शैतान के क़दमों पर न चलो। और जो शख़्स शैतान के क़दमों पर चलेगा तो वह उसे बेहयाई और बदी ही का काम करने को कहेगा। और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो तुम में से कोई शख़्स पाक न हो सकता। लेकिन अल्लाह ही जिसे चाहता है पाक कर देता है। और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (21)

और तुम में से जो लोग फ़ज़्ल वाले और वुस्अत (सामर्थ्य) वाले हैं वे इस बात की क़सम न खाएं कि वे अपने रिश्तेदारों और मिस्कीनों और ख़ुदा की राह में हिजरत करने वालों को न देंगे। और चाहिए कि वे माफ़ कर दें और दरगुज़र करें। क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें माफ़ करे। और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (22)

बेशक जो लोग पाक दामन, बेख़बर, ईमान वाली औरतों पर तोहमत लगाते हैं, उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत की गई। और उनके लिए

बड़ा अज़ाब है। उस दिन जबकि उनकी ज़बानें उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगी और उनके हाथ और उनके पांव भी उन कामों की जो कि ये लोग करते थे। उस दिन अल्लाह उन्हें वाजिबी बदला पूरा-पूरा देगा। और वे जान लेंगे कि अल्लाह ही हक़ है, खोलने वाला है। (23-25)

ख़बीसात (गंदी बातें) ख़बीसों के लिए हैं और ख़बीस (गंदे लोग) ख़बीसात के लिए हैं। और तय्यिबात (अच्छी बातें) तय्यबों के लिए हैं और तय्यब (अच्छे लोग) तय्यिबात के लिए। वे लोग बरी हैं उन बातों से जो ये कहते हैं। उनके लिए बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी है। (26)

ऐ ईमान वालो तुम अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में दाख़िल न हो जब तक इजाज़त हासिल न कर लो और घरवालों को सलाम न कर लो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है। ताकि तुम याद रखो। फिर अगर वहां किसी को न पाओ तो उनमें दाख़िल न हो जब तक तुम्हें इजाज़त न दे दी जाए। और अगर तुमसे कहा जाए कि लौट जाओ तो तुम लौट जाओ। यह तुम्हारे लिए बेहतर है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। तुम पर इसमें कुछ गुनाह नहीं कि तुम उन घरों में दाख़िल हो जिनमें कोई न रहता हो। उनमें तुम्हारे फ़ायदे की कोई चीज़ हो। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपाते हो। (27-29)

मोमिन मर्दों से कहो वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें। यह उनके लिए पाकीज़ा है। बेशक अल्लाह बाख़बर है उससे जो वे करते हैं। (30)

और मोमिन औरतों से कहो कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें। और अपनी ज़ीनत (बनाव-सिंगार) को ज़ाहिर न करें। मगर जो उसमें से ज़ाहिर हो जाए और अपने दुपट्टे अपने सीनों पर डाले रहें। और अपनी ज़ीनत को ज़ाहिर न करें मगर अपने शौहरों पर या अपने बाप पर या अपने शौहर के बाप पर या अपने बेटों पर या अपने शौहर के बेटों पर या अपने भाइयों पर या अपने भाइयों के बेटों पर या अपनी बहिनों के बेटों पर या अपनी औरतों पर या अपने ममलूक (ग़ुलाम) पर या ज़ेरेदस्त

(अधीन) मर्दों पर जो कुछ ग़रज़ नहीं रखते। या ऐसे लड़कों पर जो औरतों के पर्दे की बातों से अभी नावाक़िफ़ हों। वे अपने पांव ज़ोर से न मारें कि उनकी छुपी ज़ीनत मालूम हो जाए। और ऐ ईमान वालो, तुम सब मिलकर अल्लाह की तरफ़ तौबा करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (31)

और तुम में जो बेनिकाह हों उनका निकाह कर दो। और तुम्हारे ग़ुलामों और दासियों में से जो निकाह के लायक़ हों उनका भी। अगर वे ग़रीब होंगे तो अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर देगा। और अल्लाह वुस्अत (सामर्थ्य) वाला, जानने वाला है। और जो निकाह का मौक़ा न पाएं उन्हें चाहिए कि वे ज़ब्त करें यहां तक कि अल्लाह अपने फ़ज़्ल से उन्हें ग़नी कर दे। और तुम्हारे ममलूकों (ग़ुलामों) में से जो मुकातब (लिखित) होने के तालिब हों तो उन्हें मुकातब बना लो अगर तुम उनमें सलाहियत (क्षमता) पाओ। और उन्हें उस माल में से दो जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है। और अपने दासियों को पेशे पर मजबूर न करो जबकि वे पाक दामन रहना चाहती हों, महज़ इसलिए कि दुनियावी ज़िंदगी का कुछ फ़ायदा तुम्हें हासिल हो जाए। और जो शख़्स उन्हें मजबूर करेगा तो अल्लाह इस जब्र के बाद बख़्शने वाला महरबान है। और बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ रोशन आयतें उतारी हैं और उन लोगों की मिसालें भी जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं और डरने वालों के लिए नसीहत भी। (32-34)

अल्लाह आसमानों और ज़मीन की रोशनी है। उसकी रोशनी की मिसाल ऐसी है जैसे एक ताक़ उसमें एक चिराग़ है। चिराग़ एक शीशे के अंदर है। शीशा ऐसा है जैसे एक चमकदार तारा। वह ज़ैतून के एक ऐसे मुबारक दरख़्त के तेल से रोशन किया जाता है जो न पूर्वी है और न पश्चिमी। उसका तेल ऐसा है गोया आग के छुए बग़ैर ही ख़ुद-ब-ख़ुद जल उठेगा। अल्लाह अपनी रोशनी की राह दिखाता है जिसे चाहता है। और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है। और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (35)

ऐसे घरों में जिनके बारे में अल्लाह ने हुक्म दिया है कि वे बुलन्द किए जाएं और उनमें उसके नाम का ज़िक्र किया जाए उनमें सुबह व शाम अल्लाह की याद करते हैं वे लोग जिन्हें तिजारत और ख़रीद व फ़रोख़्त अल्लाह की याद

से ग़ाफ़िल नहीं करती और न नमाज़ की इक़ामत से और ज़कात की अदायगी से। वे उस दिन से डरते हैं जिसमें दिल और आंखें उलट जाएंगी। कि अल्लाह उन्हें उनके अमल का बेहतरीन बदला दे और उन्हें मज़ीद (अतिरिक्त) अपने फ़ज़्ल से नवाज़े। और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है। (36-38)

और जिन लोगों ने इंकार किया उनके आमाल ऐसे हैं जैसे चटियल मैदान में सराब (मरीचिका)। प्यासा उसे पानी ख़्याल करता है यहां तक कि जब वह उसके पास आया तो उसे कुछ न पाया। और उसने वहां अल्लाह को मौजूद पाया, पस उसने उसका हिसाब चुका दिया। और अल्लाह जल्द हिसाब चुकाने वाला है। या जैसे एक गहरे समुद्र में अंधेरा हो, मौज के ऊपर मौज उठ रही हो, ऊपर से बादल छाए हुए हों, ऊपर तले बहुत से अंधेरे, अगर कोई अपना हाथ निकाले तो उसे भी न देख पाए। और जिसे अल्लाह रोशनी न दे तो उसके लिए कोई रोशनी नहीं। (39-40)

क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह की पाकी बयान करते हैं जो आसमानों और ज़मीन में हैं और चिड़ियां भी पर को फैलाए हुए। हर एक अपनी नमाज़ को और अपनी तस्बीह को जानता है। और अल्लाह को मालूम है जो कुछ वे करते हैं। और अल्लाह ही की हुकूमत है आसमानों और ज़मीन में। और अल्लाह ही की तरफ़ है सबकी वापसी। (41-42)

क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह बादलों को चलाता है। फिर उन्हें आपस में मिला देता है। फिर उन्हें तह-ब-तह कर देता है। फिर तुम बारिश को देखते हो कि उसके बीच से निकलती है और वह आसमान से—उसके अंदर के पहाड़ों से—ओले बरसाता है। फिर उसे जिस पर चाहता है गिराता है। और जिससे चाहता है उन्हें हटा देता है। उसकी बिजली की चमक से मालूम होता है कि निगाहों को उचक ले जाएगी। अल्लाह रात और दिन को बदलता रहता है। बेशक इसमें सबक़ है आंख वालों के लिए। (43-44)

और अल्लाह ने हर जानदार को पानी से पैदा किया। फिर उनमें से कोई अपने पेट के बल चलता है। और उनमें से कोई दो पांवों पर चलता

है। और उनमें से कोई चार पैरों पर चलता है। अल्लाह पैदा करता है जो वह चाहता है। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। हमने खोलकर बताने वाली आयतें उतार दी हैं। और अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह की हिदायत देता है। (45-46)

और वे कहते हैं कि हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और हमने इताअत (आज्ञापालन) की। मगर उनमें से एक गिरोह इसके बाद फिर जाता है। और ये लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं। और जब उन्हें अल्लाह और रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है ताकि ख़ुदा का रसूल उनके दर्मियान फ़ैसला करे तो उनमें से एक गिरोह रूगर्दानी (अवहेलना) करता है। और अगर हक़ उन्हें मिलने वाला हो तो उसकी तरफ़ फ़रमांबरदार बनकर आ जाते हैं। क्या उनके दिलों में बीमारी है या वे शक में पड़े हुए हैं या उन्हें यह अंदेशा है कि अल्लाह और उसका रसूल उनके साथ ज़ुल्म करेंगे। बल्कि यही लोग ज़ालिम हैं। (47-50)

ईमान वालों का क़ौल (कथन) तो यह है कि जब वे अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ बुलाए जाएं ताकि रसूल उनके दर्मियान फ़ैसला करे तो वे कहें कि हमने सुना और हमने माना। और यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करे और वह अल्लाह से डरे और वह उसकी मुख़ालिफ़त (विरोध) से बचे तो यही लोग हैं जो कामयाब होंगे। (51-52)

और वे अल्लाह की क़समें खाते हैं, बड़ी सख़्त क़समें, कि अगर तुम उन्हें हुक्म दो तो वे ज़रूर निकलेंगे। कहो कि क़समें न खाओ दस्तूर के मुताबिक़ इताअत (आज्ञापालन) चाहिए। बेशक अल्लाह को मालूम है जो तुम करते हो। कहो कि अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर तुम रूगर्दानी (अवहेलना) करोगे तो रसूल पर वह बोझ है जो उस पर डाला गया है और तुम पर वह बोझ है जो तुम पर डाला गया है। और अगर तुम उसकी इताअत करोगे तो हिदायत पाओगे। और रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ साफ़-साफ़ पहुंचा देना है। (53-54)

अल्लाह ने वादा फ़रमाया है तुम में से उन लोगों के साथ जो ईमान लाएं और नेक अमल करें कि वह उन्हें ज़मीन में इक़्तेदार (सत्ता) देगा जैसा कि उसने पहले लोगों को इक़्तेदार दिया था। और उनके लिए उनके दीन को जमा देगा जिसे उनके लिए पसंद किया है। और उनकी ख़ौफ़ की हालत के बाद उसे अम्न से बदल देगा। वे सिर्फ़ मेरी इबादत करेंगे और किसी चीज़ को मेरा शरीक न बनाएंगे। और जो इसके बाद इंकार करे तो ऐसे ही लोग नाफ़रमान हैं। (55)

और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। जो लोग इंकार कर रहे हैं उनके बारे में यह गुमान न करो कि वे ज़मीन में अल्लाह को आजिज़ कर देंगे। और उनका ठिकाना आग है और वह निहायत बुरा ठिकाना है। (56-57)

ऐ ईमान वालो, तुम्हारे ममलूकों (ग़ुलामों) को और तुम में जो बुलूग़ (युवावस्था) को नहीं पहुंचे उन्हें तीन वक़्तों में इजाज़त लेना चाहिए। फ़ज्र की नमाज़ से पहले, और दोपहर को जब तुम अपने कपड़े उतारते हो, और इशा की नमाज़ के बाद। ये तीन वक़्त तुम्हारे लिए पर्दे के हैं। इनके बाद न तुम पर कोई गुनाह है और न उन पर। तुम एक दूसरे के पास बकसरत (अधिकता से) आते जाते रहते हो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों की वज़ाहत करता है। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और जब तुम्हारे बच्चे अक़्ल की हद को पहुंच जाएं तो वे भी इसी तरह इजाज़त लें जिस तरह उनके अगले इजाज़त लेते रहे हैं। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों की वज़ाहत करता है और अल्लाह अलीम (जानने वाला) व हकीम (तत्वदर्शी) है। और बड़ी बूढ़ी औरतें जो निकाह की उम्मीद नहीं रखतीं, उन पर कोई गुनाह नहीं अगर वे अपनी चादरें उतार कर रख दें, बशर्ते कि वे ज़ीनत (बनाव-सिंगार) की नुमाइश करने वाली न हों। और अगर वे भी एहतियात करें तो उनके लिए बेहतर है। और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (58-60)

अंधे पर कोई तंगी नहीं और लंगड़े पर कोई तंगी नहीं और बीमार पर कोई तंगी नहीं और न तुम लोगों पर कोई तंगी है कि तुम अपने घरों से खाओ या अपने बाप दादा के घरों से, या अपनी मांओं के घरों से, या अपने भाइयों के घरों से, या अपने चचाओं के घरों से, या अपनी फूफियों के घरों से, या अपने मामुओं के घरों से, या अपनी ख़ालाओं के घरों से या जिस घर की कुंजियों के तुम मालिक हो या अपने दोस्तों के घरों से। तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम लोग मिलकर खाओ या अलग-अलग। फिर जब तुम घरों में दाख़िल हो तो अपने लोगों को सलाम करो जो बाबरकत दुआ है अल्लाह की तरफ़ से। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतों की वज़ाहत करता है ताकि तुम समझो। (61)

ईमान वाले वे हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर यक़ीन लाएं। और जब किसी इज्तिमाई (सामूहिक) काम के मौक़े पर रसूल के साथ हों तो जब तक तुमसे इजाज़त न ले लें वहां से न जाएं। जो लोग तुमसे इजाज़त लेते हैं वही अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं। पस जब वे अपने किसी काम के लिए तुमसे इजाज़त मांगे तो उन्हें इजाज़त दे दो। और उनके लिए अल्लाह से माफ़ी मांगो। बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला रहम करने वाला है। (62)

तुम लोग रसूल के बुलाने को इस तरह का बुलाना न समझो जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे को बुलाते हो। अल्लाह तुम में से उन लोगों को जानता है जो एक दूसरे की आड़ लेते हुए चुपके से चले जाते हैं। पस जो लोग उसके हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी करते हैं उन्हें डरना चाहिए कि उन पर कोई आज़माइश आ जाए। या उन्हें एक दर्दनाक अज़ाब पकड़ ले। याद रखो कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब अल्लाह का है। अल्लाह उस हालत को जानता है जिस पर तुम हो। और जिस दिन लोग उसकी तरफ़ लाए जाएंगे तो जो कुछ उन्होंने किया था वह उससे उन्हें बाख़बर कर देगा। और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (63-64)

सूरह-25. अल-फ़ुरक़ान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

बड़ी बाबरकत है वह ज़ात जिसने अपने बंदे पर फ़ुरक़ान उतारा ताकि वह जहान वालों के लिए डराने वाला हो। वह जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है। और उसने कोई बेटा नहीं बनाया और बादशाही में कोई उसका शरीक नहीं। और उसने हर चीज़ को पैदा किया और उसका एक अंदाज़ा मुक़र्रर किया। और लोगों ने उसके सिवा ऐसे माबूद (पूज्य) बनाए जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते, वे ख़ुद पैदा किए जाते हैं। और वे ख़ुद अपने लिए न किसी नुक़सान का इख़्तियार रखते हैं और न किसी नफ़ा का। और न वे किसी के मरने का इख़्तियार रखते हैं और न किसी के जीने का। (1-3)

और मुंकिर लोग कहते हैं कि यह सिर्फ़ एक झूठ है जिसे उसने गढ़ा है। और कुछ दूसरे लोगों ने इसमें उसकी मदद की है। पस ये लोग ज़ुल्म और झूठ के मुरतकिब हुए। और वे कहते हैं कि ये अगलों की बेसनद बातें हैं जिन्हें उसने लिखवा लिया है। पस वे उसे सुबह व शाम सुनाई जाती हैं। कहो कि इसे उसने उतारा है जो आसमानों और ज़मीन के भेद को जानता है। बेशक वह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (4-6)

और वे कहते हैं कि यह कैसा रसूल है जो खाना खाता है और बाज़ारों में चलता फिरता है। क्यों न इसके पास कोई फ़रिश्ता भेजा गया कि वह इसके साथ रहकर डराता या इसके लिए कोई ख़ज़ाना उतारा जाता। या इसके लिए कोई बाग़ होता जिससे वह खाता। और ज़ालिमों ने कहा कि तुम लोग एक सहरज़दा (जादूग्रस्त) आदमी की पैरवी कर रहे हो। देखो वे कैसी-कैसी मिसालें तुम्हारे लिए बयान कर रहे हैं। पस वे बहक गए हैं, फिर वे राह नहीं पा सकते। (7-9)

बड़ा बाबरकत है वह। अगर वह चाहे तो तुम्हें इससे भी बेहतर चीज़ दे दे। ऐसे बाग़ात जिनके नीचे नहरें जारी हों, और तुम्हें बहुत से महल दे दे। बल्कि उन्होंने क़ियामत को झुठला दिया है। और हमने ऐसे शख़्स के

लिए जो क़ियामत को झुठलाए दोज़ख़ तैयार कर रखी है। जब वह उन्हें दूर से देखेगी तो वे उसका बिफरना और दहाड़ना सुनेंगे। और जब वे उसकी किसी तंग जगह में बांध कर डाल दिए जाएंगे तो वे वहां मौत को पुकारेंगे। आज एक मौत को न पुकारो, और बहुत सी मौत को पुकारो। कहो क्या यह बेहतर है या हमेशा की जन्नत जिसका वादा ख़ुदा से डरने वालों से किया गया है, वह उनके लिए बदला और ठिकाना होगी। उसमें उनके लिए वह सब होगा जो वे चाहेंगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे। यह तेरे रब के ज़िम्मे एक वादा है वाजिबुल अदा। (10-16)

और जिस दिन वह उन्हें जमा करेगा और उन्हें भी जिनकी वे अल्लाह के सिवा इबादत करते हैं, फिर वह कहेगा, क्या तुमने मेरे उन बंदों को गुमराह किया या वे ख़ुद रास्ते से भटक गए। वे कहेंगे कि पाक है तेरी ज़ात। हमें यह सज़ावार न था कि हम तेरे सिवा दूसरों को कारसाज़ तज्वीज़ करें। मगर तूने उन्हें और उनके बाप दादा को दुनिया का सामान दिया। यहां तक कि वे नसीहत को भूल गए। और हलाक होने वाले बने। पस उन्होंने तुम्हें तुम्हारी बातों में झूठा ठहरा दिया। अब न तुम ख़ुद टाल सकते हो और न कोई मदद पा सकते हो। और तुम में से जो शख़्स ज़ुल्म करेगा हम उसे एक बड़ा अज़ाब चखाएंगे। (17-19)

और हमने तुमसे पहले जितने पैग़म्बर भेजे सब खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते फिरते थे। और हमने तुम्हें एक दूसरे के लिए आज़माइश बनाया है। क्या तुम सब्र करते हो। और तुम्हारा रब सब कुछ देखता है। (20)

और जो लोग हमारे सामने पेश होने का अंदेशा नहीं रखते वे कहते हैं कि हमारे ऊपर फ़रिश्ते क्यों नहीं उतारे गए। या हम अपने रब को देख लेते। उन्होंने अपने जी में अपने को बहुत बड़ा समझा और वे हद से गुज़र गए हैं सरकशी में। जिस दिन वे फ़रिश्तों को देखेंगे। उस दिन मुजरिमों के लिए कोई ख़ुशख़बरी न होगी। और वे कहेंगे कि पनाह, पनाह। और हम उनके हर अमल की तरफ़ बढ़ेंगे जो उन्होंने किया था और फिर उसे उड़ती

हुई ख़ाक बना देंगे। जन्नत वाले उस दिन बेहतरीन ठिकाने में होंगे। और निहायत अच्छी आरामगाह में। (21-24)

और जिस दिन आसमान बादल से फट जाएगा। और फ़रिश्ते लगातार उतारे जाएंगे। उस दिन हक़ीक़ी बादशाही सिर्फ़ रहमान की होगी। और वह दिन मुंकिरों पर बड़ा सख़्त होगा। और जिस दिन ज़ालिम अपने हाथों को काटेगा, वह कहेगा कि काश मैंने रसूल के साथ राह इख़्तियार की होती। हाय मेरी शामत, काश मैं फ़लां शख़्स को दोस्त न बनाता। उसने मुझे नसीहत से बहका दिया बाद इसके कि वह मेरे पास आ चुकी थी। और शैतान है ही इंसान को दग़ा देने वाला। और रसूल कहेगा कि ऐ मेरे रब मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को बिल्कुल नज़रअंदाज़ कर दिया। और इसी तरह हमने मुजरिमों में से हर नबी के दुश्मन बनाए। और तुम्हारा रब काफ़ी है रहनुमाई के लिए और मदद करने के लिए। (25-31)

और इंकार करने वालों ने कहा कि इसके ऊपर पूरा क़ुरआन क्यों नहीं उतारा गया। ऐसा इसलिए है ताकि इसके ज़रिए से हम तुम्हारे दिल को मज़बूत करें और हमने इसे ठहर-ठहर कर उतारा है। और ये लोग कैसा ही अजीब सवाल तुम्हारे सामने लाएं मगर हम उसका ठीक जवाब और बेहतरीन वज़ाहत तुम्हें बता देंगे। जो लोग अपने मुंह के बल जहन्नम की तरफ़ ले जाए जाएंगे। उन्हीं का बुरा ठिकाना है। और वही हैं राह से बहुत भटके हुए। (32-34)

और हमने मूसा को किताब दी। और उसके साथ उसके भाई हारून को मददगार बनाया। फिर हमने उनसे कहा कि तुम दोनों उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया है। फिर हमने उन्हें बिल्कुल तबाह कर दिया। और नूह की क़ौम को भी हमने ग़र्क़ कर दिया जबकि उन्होंने रसूलों को झुठलाया और हमने उन्हें लोगों के लिए एक निशानी बना दिया। और हमने ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। और आद और समूद को और अर-रस वालों को और उनके दर्मियान बहुत सी क़ौमों को। और हमने उनमें से हर एक को मिसालें सुनाईं और हमने हर एक

को बिल्कुल बर्बाद कर दिया। और ये लोग उस बस्ती पर से गुज़रे हैं जिस पर बुरी तरह पत्थर बरसाए गए। क्या वे उसे देखते नहीं रहे हैं। बल्कि वे लोग दुबारा उठाए जाने की उम्मीद नहीं रखते। (35-40)

और वे जब तुम्हें देखते हैं तो वे तुम्हारा मज़ाक़ बना लेते हैं। क्या यही है जिसे ख़ुदा ने रसूल बनाकर भेजा है। इसने तो हमें हमारे माबूदों (पूज्यों) से हटा ही दिया होता। अगर हम उन पर जमे न रहते। और जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा जब वे अज़ाब को देखेंगे कि सबसे ज़्यादा बेराह कौन है। (41-42)

क्या तुमने उस शख़्स को देखा जिसने अपनी ख़्वाहिश को अपना माबूद (पूज्य) बना रखा है। पस क्या तुम उसका ज़िम्मा ले सकते हो। या तुम ख़्याल करते हो कि उनमें से अक्सर सुनते और समझते हैं। वे तो महज़ जानवरों की तरह हैं बल्कि वे उनसे भी ज़्यादा बेराह हैं। (43-44)

क्या तुमने अपने रब की तरफ़ नहीं देखा कि वह किस तरह साये को फैला देता है। और अगर वह चाहता तो वह उसे ठहरा देता। फिर हमने सूरज को उस पर दलील बनाया। फिर हमने आहिस्ता-आहिस्ता उसे अपनी तरफ़ समेट लिया। और वही है जिसने तुम्हारे लिए रात को पर्दा और नींद को राहत बनाया और दिन को जी उठना का वक़्त बनाया। और वही है जो अपनी रहमत से पहले हवाओं को ख़ुशख़बरी बनाकर भेजता है। और हम आसमान से पाक पानी उतारते हैं। ताकि उसके ज़रिये से मुर्दा ज़मीन में जान डाल दें। और उसे पिलाएं अपनी मख़्लूक़ात में से बहुत से जानवरों और इंसानों को। (45-49)

और हमने इसे उनके दर्मियान तरह-तरह से बयान किया है ताकि वे सोचें। फिर भी अक्सर लोग नाशुक्री किए बग़ैर नहीं रहते। और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते। पस तुम मुंकिरों की बात न मानो और इस (क़ुरआन) के ज़रिये से उनके साथ बड़ा जिहाद करो। (50-52)

और वही है जिसने दो समुद्रों को मिलाया। यह मीठा है प्यास बुझाने वाला और यह खारी है कडुवा। और उसने उनके दर्मियान एक पर्दा रख दिया

और एक मज़बूत आड़। और वही है जिसने इंसान को पानी से पैदा किया। फिर उसे ख़ानदान वाला और सुसराल वाला बनाया। और तुम्हारा रब बड़ी क़ुदरत वाला है। (53-54)

और वे अल्लाह को छोड़कर उन चीज़ों की इबादत करते हैं जो उन्हें न नफ़ा पहुंचा सकती हैं और न नुक़सान। और मुंकिर तो अपने रब के ख़िलाफ़ मददगार बना हुआ है। और हमने तुम्हें सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। तुम कहो कि मैं तुमसे इस पर कोई उजरत (बदला) नहीं मांगता, मगर यह कि जो चाहे वह अपने रब का रास्ता पकड़ ले। (55-57)

और ज़िंदा ख़ुदा पर, जो कभी मरने वाला नहीं, भरोसा रखो और उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी तस्बीह करो। और वह अपने बंदों के गुनाहों से बाख़बर रहने के लिए काफ़ी है। जिसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है, छः दिन में। फिर वह तख़्त पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ। रहमान, पस उसे किसी जानने वाले से पूछो। और जब उनसे कहा जाता है कि रहमान को सज्दा करो तो कहते हैं कि रहमान क्या है। क्या हम उसे सज्दा करें जिसे तू हमसे कहे। और उनका बिदकना और बढ़ जाता है। (58-60)

बड़ी बाबरकत है वह ज़ात जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और उसमें एक चराग़ (सूरज) और एक चमकता चांद रखा। और वही है जिसने रात और दिन को एक के बाद दूसरे आने वाला बनाया, उस शख़्स के लिए जो सबक़ लेना चाहे और शुक्रगुज़ार बनना चाहे। (61-62)

और रहमान के बंदे वे हैं जो ज़मीन पर आजिज़ी (नम्रता) के साथ चलते हैं। और जब जाहिल लोग उनसे बात करते हैं तो वे कह देते हैं कि तुम्हें सलाम। और जो अपने रब के आगे सज्दा और क़ियाम में रातें गुज़ारते हैं। और जो कहते हैं कि ऐ हमारे रब जहन्नम के अज़ाब को हमसे दूर रख। बेशक उसका अज़ाब पूरी तबाही है। बेशक वह बुरा ठिकाना है और बुरा मक़ाम है। और वे लोग कि जब वे ख़र्च करते हैं तो न फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं

और न तंगी करते हैं। और उनका ख़र्च इसके दर्मियान एतदाल (मध्य-मार्ग) पर होता है। (63-67)

और जो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को नहीं पुकारते। और वे अल्लाह की हराम की हुई किसी जान को क़त्ल नहीं करते मगर हक़ पर। और वे बदकारी (व्यभिचार) नहीं करते। और जो शख़्स ऐसे काम करेगा तो वह सज़ा से दो चार होगा। क़ियामत के दिन उसका अज़ाब बढ़ता चला जाएगा। और वह उसमें हमेशा ज़लील होकर रहेगा। मगर जो शख़्स तौबा करे और ईमान लाए और नेक काम करे तो अल्लाह ऐसे लोगों की बुराइयों को भलाइयों से बदल देगा। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और जो शख़्स तौबा करे और नेक काम करे तो वह दरहक़ीक़त अल्लाह की तरफ़ रुजूअ कर रहा है। (68-71)

और जो लोग झूठे काम में शामिल नहीं होते। और जब किसी बेहूदा चीज़ से उनका गुज़र होता है तो संजीदगी के साथ गुज़र जाते हैं। और वे ऐसे हैं कि जब उन्हें उनके रब की आयतों के ज़रिए नसीहत की जाती है तो वे उन पर बहरे और अंधे होकर नहीं गिरते। और जो कहते हैं कि ऐ हमारे रब, हमें हमारी बीवी और औलाद की तरफ़ से आंखों की ठंडक अता फ़रमा और हमें परहेज़गारों का इमाम बना। (72-74)

ये लोग हैं कि उन्हें बालाख़ाने (उच्च भवन) मिलेंगे इसलिए कि उन्होंने सब्र किया। और उनमें उनका इस्तक़बाल दुआ और सलाम के साथ होगा। वे उनमें हमेशा रहेंगे। वह ख़ूब जगह है ठहरने की और ख़ूब जगह है रहने की। कहो कि मेरा रब तुम्हारी परवाह नहीं रखता। अगर तुम उसे न पुकारो। पस तुम झुठला चुके तो वह चीज़ अनक़रीब होकर रहेगी। (75-77)

सूरह-26. अश-शुअरा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ता० सीन० मीम०। ये वाज़ेह किताब की आयतें हैं। शायद तुम अपने को हलाक कर डालोगे इस पर कि वे ईमान नहीं लाते। अगर हम चाहें तो उन

पर आसमान से निशानी उतार दें। फिर उनकी गर्दनें उसके आगे झुक जाएं। उनके पास रहमान की तरफ़ से कोई भी नई नसीहत ऐसी नहीं आती जिससे वे बेरुख़ी न करते हों। पस उन्होंने झुठला दिया। तो अब अनक़रीब उन्हें उस चीज़ की हक़ीक़त मालूम हो जाएगी जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे। (1-6)

क्या उन्होंने ज़मीन को नहीं देखा कि हमने उसमें किस क़द्र तरह-तरह की उम्दा चीज़ें उगाई हैं। बेशक इसमें निशानी है और उनमें से अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। और बेशक तुम्हारा रब ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है, रहम करने वाला है। (7-9)

और जब तुम्हारे रब ने मूसा को पुकारा कि तुम ज़ालिम क़ौम के पास जाओ, फ़िरऔन की क़ौम के पास, क्या वे नहीं डरते। मूसा ने कहा ऐ मेरे रब, मुझे अंदेशा है कि वे मुझे झुठला देंगे। और मेरा सीना तंग होता है और मेरी ज़बान नहीं चलती। पस तू हारून के पास पैग़ाम भेज दे। और मेरे ऊपर उनका एक जुर्म भी है पस मैं डरता हूं कि वे मुझे क़त्ल कर देंगे। (10-14)

फ़रमाया कभी नहीं। पस तुम दोनों हमारी निशानियों के साथ जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनने वाले हैं। पस तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और कहो कि हम ख़ुदावंद आलम के रसूल हैं। कि तू बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे। फ़िरऔन ने कहा, क्या हमने तुम्हें बचपन में अपने अंदर नहीं पाला। और तुमने अपने उम्र के कई साल हमारे यहां गुज़ारे। और तुमने अपना वह फ़ेअल (कृत्य) किया जो किया। और तुम नाशुक्रों में से हो। (15-19)

मूसा ने कहा। उस वक़्त मैंने किया था और मुझसे ग़लती हो गई। फिर मुझे तुम लोगों से डर लगा तो मैं तुमसे भाग गया। फिर मुझे मेरे रब ने दानिशमंदी (सूझबूझ) अता फ़रमाई और मुझे रसूलों में से बना दिया। और यह एहसान है जो तुम मुझे जता रहे हो कि तुमने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बना लिया। (20-22)

फ़िरऔन ने कहा कि रब्बुल आलमीन क्या है। मूसा ने कहा, आसमानों और ज़मीन का रब और उन सबका जो उनके दर्मियान हैं, अगर तुम यक़ीन

लाने वाले हो। फ़िरऔन ने अपने इर्द-गिर्द वालों से कहा, क्या तुम सुनते नहीं हो। मूसा ने कहा वह तुम्हारा भी रब है। और तुम्हारे अगले बुज़ुर्गों का भी। फ़िरऔन ने कहा तुम्हारा यह रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है मजनून है। मूसा ने कहा, मश्रिक़ (पूर्व) व मग़्रिब (पश्चिम) का रब और जो कुछ इनके दर्मियान है, अगर तुम अक़्ल रखते हो। फ़िरऔन ने कहा, अगर तुमने मेरे सिवा किसी को माबूद (पूज्य) बनाया तो मैं तुम्हें क़ैद कर दूंगा। मूसा ने कहा क्या अगर मैं कोई वाज़ेह दलील पेश करूं तब भी। फ़िरऔन ने कहा फिर उसे पेश करो अगर तुम सच्चे हो। फिर मूसा ने अपना असा (डंडा) डाल दिया तो यकायक वह एक सरीह (साक्षात) अज़दहा था। और उसने अपना हाथ खींचा तो यकायक वह देखने वालों के लिए चमक रहा था। फ़िरऔन ने अपने इर्द गिर्द के सरदारों से कहा, यक़ीनन यह शख़्स एक माहिर जादूगर है। वह चाहता है कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दे। पस तुम क्या मश्विरा देते हो। (23-35)

दरबारियों ने कहा कि इसे और इसके भाई को मोहलत दीजिए। और शहरों में हरकारे भेजिए कि वे आपके पास तमाम माहिर जादूगरों को लाएं। पस जादूगर एक दिन मुक़र्रर वक़्त पर इकट्ठा किए गए और लोगों से कहा गया कि क्या तुम जमा होगे। ताकि हम जादूगरों का साथ दें अगर वे ग़ालिब रहने वाले हों। फिर जब जादूगर आए तो उन्होंने फ़िरऔन से कहा, क्या हमारे लिए कोई इनाम है अगर हम ग़ालिब रहे। उसने कहा हां, और तुम इस सूरत में मुक़र्रब (निकटवर्ती) लोगों में शामिल हो जाओगे। (36-42)

मूसा ने उनसे कहा कि तुम्हें जो कुछ डालना हो डालो। पस उन्होंने अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं। और कहा कि फ़िरऔन के इक़बाल की क़सम हम ही ग़ालिब रहेंगे। फिर मूसा ने अपना असा (डंडा) डाला तो अचानक वह उस स्वांग को निगलने लगा जो उन्होंने बनाया था। फिर जादूगर सज्दे में गिर पड़े। उन्होंने कहा हम ईमान लाए रब्बुल आलमीन पर जो मूसा और हारून का रब है। (43-48)

फ़िरऔन ने कहा, तुमने उसे मान लिया इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं। बेशक वही तुम्हारा उस्ताद है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। पस अब तुम्हें मालूम हो जाएगा। मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पांव काटूंगा और तुम सबको सूली पर चढ़ाऊंगा। उन्होंने कहा कि कुछ हरज नहीं। हम अपने मालिक के पास पहुंच जाएंगे। हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी ख़ताओं को माफ़ कर देगा। इसलिए कि हम पहले ईमान लाने वाले बने। (49-51)

और हमने मूसा को 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी कि मेरे बंदों को लेकर रात को निकल जाओ। बेशक तुम्हारा पीछा किया जाएगा। पस फ़िरऔन ने शहरों में हरकारे भेजे। ये लोग थोड़ी सी जमाअत हैं। और उन्होंने हमें ग़ुस्सा दिलाया है। और हम एक मुस्तइद (चुस्त) जमाअत हैं। पस हमने उन्हें बाग़ों और चशमों (स्रोतों) से निकाला, और ख़ज़ानों और उम्दा मकानात से। यह हुआ, और हमने बनी इस्राईल को इन चीज़ों का वारिस बना दिया। (52-59)

पस उन्होंने सूरज निकलने के वक़्त उनका पीछा किया। फिर जब दोनों जमाअतें आमने सामने हुईं तो मूसा के साथियों ने कहा कि हम तो पकड़े गए। मूसा ने कहा कि हरगिज़ नहीं, बेशक मेरा रब मेरे साथ है। वह मुझे राह बताएगा। फिर हमने मूसा को 'वही' (प्रकाशना) की कि अपना असा दरिया पर मारो। पस वह फट गया और हर हिस्सा ऐसा हो गया जैसे बड़ा पहाड़। और हमने दूसरे फ़रीक़ (पक्ष) को भी उसके क़रीब पहुंचा दिया। और हमने मूसा को और उन सबको जो उसके साथ थे बचा लिया। फिर दूसरों को ग़र्क़ कर दिया। बेशक इसके अंदर निशानी है। और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं हैं। और बेशक तेरा रब ज़बरदस्त है रहमत वाला है। (60-68)

और उन्हें इब्राहीम का क़िस्सा सुनाओ। जबकि उसने अपने बाप से और अपनी क़ौम से कहा कि तुम किस चीज़ की इबादत करते हो। उन्होंने कहा कि हम बुतों की इबादत करते हैं और बराबर इस पर जमे रहेंगे। इब्राहीम ने कहा, क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम इन्हें पुकारते हो। या वे तुम्हें नफ़ा

नुक़सान पहुंचाते हैं। उन्होंने कहा, बल्कि हमने अपने बाप दादा को ऐसा ही करते हुए पाया है। (69-74)

इब्राहीम ने कहा, क्या तुमने उन चीज़ों को देखा भी जिनकी इबादत करते हो, तुम भी और तुम्हारे बड़े भी। ये सब मेरे दुश्मन हैं सिवा एक ख़ुदावंद आलम के जिसने मुझे पैदा किया, फिर वही मेरी रहनुमाई फ़रमाता है। और जो मुझे खिलाता है और पिलाता है। और जब मैं बीमार होता हूं तो वही मुझे शिफ़ा देता है। और जो मुझे मौत देगा फिर मुझे ज़िंदा करेगा। और वह जिससे मैं उम्मीद रखता हूं कि बदले के दिन मेरी ख़ता माफ़ करेगा। (75-82)

ऐ मेरे रब, मुझे हिक्मत (तत्वदर्शिता) अता फ़रमा और मुझे नेक लोगों में शामिल फ़रमा। और मेरा बोल सच्चा रख बाद के आने वालों में। और मुझे बाग़े नेमत के वारिसों में से बना। और मेरे बाप को माफ़ फ़रमा, बेशक वह गुमराहों में से है। और मुझे उस दिन रुसवा न कर जबकि लोग उठाए जाएंगे। जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद। मगर वह जो अल्लाह के पास क़ल्बे सलीम (पाकदिल) लेकर आए। (83-89)

और जन्नत डरने वालों के क़रीब लाई जाएगी। और जहन्नम गुमराहों के लिए ज़ाहिर की जाएगी। और उनसे कहा जाएगा। कहां हैं वे जिनकी तुम इबादत करते थे, अल्लाह के सिवा। क्या वे तुम्हारी मदद करेंगे। या वे अपना बचाव कर सकते हैं। फिर उसमें औंधे मुंह डाल दिए जाएंगे, वे और गुमराह लोग और इब्लीस (शैतान) का लश्कर, सबके सब। वे उसमें बाहम झगड़ते हुए कहेंगे। ख़ुदा की क़सम, हम खुली हुई गुमराही में थे। जबकि हम तुम्हें ख़ुदावंद आलम के बराबर करते थे। और हमें तो बस मुजरिमों ने रास्ते से भटकाया। पस अब हमारा कोई सिफ़ारिशी नहीं। और न कोई मुख़्लिस (निष्ठावान) दोस्त। पस काश हमें फिर वापस जाना हो कि हम ईमान वालों में से बनें। बेशक इसमें निशानी है। और उनमें अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं। और बेशक तेरा रब ज़बरदस्त है, रहमत वाला है। (90-104)

नूह की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया। जबकि उनके भाई नूह ने उनसे

कहा, क्या तुम डरते नहीं हो। मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूं। पस तुम लोग अल्लाह से डरो। और मेरी बात मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई अज्र (बदला) नहीं मांगता। मेरा अज्र तो सिर्फ़ रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। उन्होंने कहा क्या हम तुम्हें मान लें। हालाँकि तुम्हारी पैरवी रज़ील (नीच) लोगों ने की है। नूह ने कहा कि मुझे क्या ख़बर जो वे करते रहे हैं। उनका हिसाब तो मेरे रब के ज़िम्मे है, अगर तुम समझो। और मैं मोमिनों को दूर करने वाला नहीं हूं। मैं तो बस एक खुला हुआ डराने वाला हूं। (105-115)

उन्होंने कहा कि ऐ नूह अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर संगसार कर दिए जाओगे। नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरी क़ौम ने मुझे झुठला दिया। पस तू मेरे और उनके दर्मियान वाज़ेह फ़ैसला फ़रमा दे। और मुझे और जो मोमिन मेरे साथ हैं उन्हें नजात दे। फिर हमने उसे और उसके साथियों को एक भरी हुई कश्ती में बचा लिया। फिर इसके बाद हमने बाक़ी लोगों को ग़र्क़ कर दिया। यक़ीनन इसके अंदर निशानी है, और उनमें से अक्सर लोग मानने वाले नहीं। और बेशक तेरा रब वही ज़बरदस्त है, रहमत वाला है। (116-122)

आद ने रसूलों को झुठलाया। जबकि उनके भाई हूद ने उनसे कहा कि क्या तुम लोग डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूं। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला सिर्फ़ ख़ुदावंद आलम के ज़िम्मे है। क्या तुम हर ऊंची ज़मीन पर लाहासिल (व्यर्थ) एक यादगार इमारत बनाते हो और बड़े-बड़े महल तामीर करते हो। गोया तुम्हें हमेशा रहना है। और जब किसी पर हाथ डालते हो तो जब्बार (दमनकारी) बनकर डालते हो। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और उस अल्लाह से डरो जिसने उन चीज़ों से तुम्हें मदद पहुंचाई जिन्हें तुम जानते हो। उसने तुम्हारी मदद की चौपायों और औलाद से और बाग़ों और चशमों (स्रोतों) से। मैं तुम्हारे ऊपर एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूं। (123-135)

उन्होंने कहा, हमारे लिए बराबर है, चाहे तुम नसीहत करो या नसीहत करने वालों में से न बनो। यह तो बस अगले लोगों की एक आदत है। और हम पर हरगिज़ अज़ाब आने वाला नहीं है। पस उन्होंने उसे झुठला दिया, फिर हमने उन्हें हलाक कर दिया। बेशक इसके अंदर निशानी है। और उनमें से अक्सर लोग मानने वाले नहीं हैं। और बेशक तुम्हारा रब वह ज़बरदस्त है रहमत वाला है। (136-140)

समूद ने रसूलों को झुठलाया। जब उनके भाई सालेह ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूं। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और मैं तुमसे इस पर कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला सिर्फ़ ख़ुदावंद आलम के ज़िम्मे है। क्या तुम्हें उन चीज़ों में बेफ़िक्री से रहने दिया जाएगा जो यहां हैं, बाग़ों और चशमों में। और खेतों और रस भरे गुच्छों वाले खजूरों में। और तुम पहाड़ खोदकर फ़ख़्र करते हुए मकान बनाते हो। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो और हद से गुज़र जाने वालों की बात न मानो जो ज़मीन में ख़राबी करते हैं। और इस्लाह नहीं करते। (141-152)

उन्होंने कहा, तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। तुम सिर्फ़ हमारे जैसे एक आदमी हो, पस तुम कोई निशानी लाओ अगर तुम सच्चे हो, सालेह ने कहा यह एक ऊंटनी है। इसके लिए पानी पीने की एक बारी है। और एक मुक़र्रर दिन की बारी तुम्हारे लिए है। और इसे बुराई के साथ मत छेड़ना वरना एक बड़े दिन का अज़ाब तुम्हें पकड़ लेगा। फिर उन्होंने उस ऊंटनी को मार डाला फिर पशेमां (पछतावा-ग्रस्त) होकर रह गए। फिर उन्हें अज़ाब ने पकड़ लिया। बेशक इसमें निशानी है और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं। और बेशक तुम्हारा रब वह ज़बरदस्त है, रहमत वाला है। (153-159)

लूत की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया। जब उनके भाई लूत ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूं। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं

मांगता। मेरा बदला तो ख़ुदावंद आलम के ज़िम्मे है। क्या तुम दुनिया वालों में से मर्दों के पास जाते हो। और तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए जो बीवियां पैदा की हैं उन्हें छोड़ते हो, बल्कि तुम हद से गुज़र जाने वाले लोग हो। (160-166)

उन्होंने कहा कि ऐ लूत, अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर तुम निकाल दिए जाओगे। उसने कहा मैं तुम्हारे अमल से सख़्त बेज़ार हूं। ऐ मेरे रब, तू मुझे और मेरे घरवालों को उनके अमल से नजात दे। पस हमने उसे और उसके सब घरवालों को बचा लिया। मगर एक बुढ़िया कि वह रहने वालों में रह गई। फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया। और हमने उन पर बरसाया एक मेंह। पस कैसा बुरा मेंह था जो उन पर बरसा जिन्हें डराया गया था। बेशक इसमें निशानी है। और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं। और बेशक तेरा रब वह ज़बरदस्त है, रहमत वाला है। (167-175)

ऐका वालों ने रसूलों को झुठलाया। जब शुऐब ने उनसे कहा क्या तुम डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूं। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला ख़ुदावंद आलम के ज़िम्मे है। तुम लोग पूरा-पूरा नापो और नुक़सान देने वालों में से न बनो। और सीधी तराज़ू से तोलो और लोगों को उनकी चीज़ें घटाकर न दो और ज़मीन में फ़साद न फैलाओ। और उस ज़ात से डरो जिसने तुम्हें पैदा किया है और पिछली नस्लों को भी। (176-184)

उन्होंने कहा कि तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। और तुम हमारे ही जैसे एक आदमी हो। और हम तो तुम्हें झूठे लोगों में से ख़्याल करते हैं। पस हमारे ऊपर आसमान से कोई टुकड़ा गिराओ अगर तुम सच्चे हो। शुऐब ने कहा, मेरा रब ख़ूब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो। पस उन्होंने उसे झुठला दिया। फिर उन्हें बादल वाले दिन के अज़ाब ने पकड़ लिया। बेशक वह एक बड़े दिन का अज़ाब था। बेशक इसमें निशानी है और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं। और बेशक तुम्हारा रब ज़बरदस्त है, रहमत वाला है। (185-191)

और बेशक यह ख़ुदावंद आलम का उतारा हुआ कलाम है। इसे अमानतदार फ़रिश्ता लेकर उतरा है तुम्हारे दिल पर ताकि तुम डराने वालों में से बनो। साफ़ अरबी ज़बान में और इसका ज़िक्र अगले लोगों की किताबों में है और क्या उनके लिए यह निशानी नहीं है कि इसे बनी इस्राईल के उलमा (विद्वान) जानते हैं। (192-197)

और अगर हम इसे किसी अजमी (ग़ैर अरबी) पर उतारते फिर वह उन्हें पढ़कर सुनाता तो वे इस पर ईमान लाने वाले न बनते। इसी तरह हमने ईमान न लाने को मुजरिमों के दिलों में डाल रखा है। ये लोग ईमान न लाएंगे जब तक सख़्त अज़ाब न देख लें। पस वह उन पर अचानक आ जाएगा और उन्हें ख़बर भी न होगी। फिर वे कहेंगे कि क्या हमें कुछ मोहलत मिल सकती है। (198-203)

क्या वे हमारे अज़ाब को जल्द मांग रहे हैं। बताओ कि अगर हम उन्हें चन्द साल तक फ़ायदा पहुंचाते रहें फिर उन पर वह चीज़ आ जाए जिससे उन्हें डराया जा रहा है तो यह फ़ायदामंदी उनके किस काम आएगी। और हमने किसी बस्ती को भी हलाक नहीं किया मगर उसके लिए डराने वाले थे याद दिलाने के लिए, और हम ज़ालिम नहीं हैं। और इसे शैतान लेकर नहीं उतरे हैं। न यह उनके लिए लायक़ है। और न वे ऐसा कर सकते हैं। वे इसे सुनने से रोक दिए गए हैं। (204-212)

पस तुम अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को न पुकारो कि तुम भी सज़ा पाने वालों में से हो जाओ। और अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराओ। और उन लोगों के लिए अपने बाज़ू झुकाए रखो जो मोमिनीन में दाख़िल होकर तुम्हारी पैरवी करें। पस अगर वे तुम्हारी नाफ़रमानी करें तो कहो कि जो कुछ तुम कर रहे हो मैं उससे बरी हूं। और ज़बरदस्त और महरबान ख़ुदा पर भरोसा रखो। जो देखता है तुम्हें जबकि तुम उठते हो और तुम्हारी चलत-फिरत नमाज़ियों के साथ, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (213-220)

क्या मैं तुम्हें बताऊं कि शैतान किस पर उतरते हैं। वे हर झूठे गुनाहगार पर उतरते हैं। वे कान लगाते हैं और उनमें से अक्सर झूठे हैं। और शायरों के पीछे बेराह लोग चलते हैं। क्या तुम नहीं देखते कि वे हर वादी में भटकते हैं और वह कहते हैं जो वह करते नहीं। मगर जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए और उन्होंने अल्लाह को बहुत याद किया और उन्होंने बदला लिया बाद इसके कि उन पर ज़ुल्म हुआ। और ज़ुल्म करने वालों को बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि उन्हें कैसी जगह लौटकर जाना है। (221-227)

सूरह-27. अन-नम्ल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ता० सीन०। ये आयतें हैं क़ुरआन की और एक वाज़ेह किताब की। रहनुमाई और ख़ुशख़बरी ईमान वालों के लिए। जो नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और वे आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं। जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके कामों को हमने उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिया है, पस वे भटक रहे हैं। ये लोग हैं जिनके लिए बुरी सज़ा है और वे आख़िरत में सख़्त ख़सारे (घाटे) में होंगे। और बेशक क़ुरआन तुम्हें एक हकीम (तत्वदर्शी) और अलीम (ज्ञानवान) की तरफ़ से दिया जा रहा है। (1-6)

जब मूसा ने अपने घरवालों से कहा कि मैंने एक आग देखी है। मैं वहां से कोई ख़बर लाता हूं या आग का कोई अंगारा लाता हूं ताकि तुम तापो। फिर जब वह उसके पास पहुंचा तो आवाज़ दी गई कि मुबारक है वह जो आग में है और जो उसके पास है। और पाक है अल्लाह जो रब है सारे जहान का। (7-8)

ऐ मूसा यह मैं हूं अल्लाह, ज़बरदस्त हकीम (तत्वदर्शी)। और तुम अपना असा (डंडा) डाल दो। फिर जब उसने उसे इस तरह हरकत करते देखा जैसे वह सांप हो तो वह पीछे को मुड़ा और पलट कर न देखा। ऐ मूसा, डरो नहीं मेरे हुज़ूर पैग़म्बर डरा नहीं करते। मगर जिसने ज़्यादती की। फिर उसने बुराई के बाद उसे भलाई से बदल दिया। तो मैं बख़्शने वाला महरबान हूं।

और तुम अपना हाथ अपने गिरेबान में डालो, वह किसी ऐब के बग़ैर सफ़ेद निकलेगा। यह दोनों मिलकर नौ निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसकी क़ौम के पास जाओ। बेशक वे नाफ़रमान लोग हैं। पस जब उनके पास हमारी वाज़ेह निशानियां आईं, उन्होंने कहा यह खुला हुआ जादू है। और उन्होंने उनका इंकार किया हालाँकि उनके दिलों ने उनका यक़ीन कर लिया था, ज़ुल्म और घमंड की वजह से। पस देखो कैसा बुरा अंजाम हुआ मुफ़्सिदों (उपद्रवियों) का। (9-14)

और हमने दाऊद और सुलैमान को इल्म अता किया। और उन दोनों ने कहा कि शुक्र है अल्लाह के लिए जिसने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बंदों पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) अता फ़रमाई। और दाऊद का वारिस सुलैमान हुआ। और कहा कि ऐ लोगो, हमें परिंदों की बोली सिखाई गई है, और हमें हर क़िस्म की चीज़ दी गई। बेशक यह खुला हुआ फ़ज़्ल है। (15-16)

और सुलैमान के लिए उसका लश्कर जमा किया गया, जिन्न और इंसान और परिंदे, फिर उनकी जमाअतें बनाई जातीं, यहां तक कि जब वह चींटियों की वादी पर पहुंचे। एक चींटी ने कहा, ऐ चींटियो, अपने सुराख़ों में दाख़िल हो जाओ, कहीं सुलैमान और उसका लश्कर तुम्हें कुचल डालें और उन्हें ख़बर भी न हो। पस सुलैमान उसकी बात पर मुस्कराते हुए हंस पड़ा और कहा, ऐ मेरे रब मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र अदा करूं जो तूने मुझ पर और मेरे वालिदैन पर किया है और यह कि मैं नेक काम करूं जो तुझे पसंद हो और अपनी रहमत से तू मुझे अपने नेक बंदों में दाख़िल कर। (17-19)

और सुलैमान ने परिंदों का जायज़ा लिया तो कहा, क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देख रहा हूं। क्या वह कहीं ग़ायब हो गया है। मैं उसे सख़्त सज़ा दूंगा। या उसे ज़िब्ह कर दूंगा, या वह मेरे सामने कोई साफ़ हुज्जत लाए। ज़्यादा देर नहीं गुज़री थी कि उसने आकर कहा, कि मैं एक चीज़ की ख़बर लाया हूं जिसकी आपको ख़बर न थी। और मैं सबा से एक यक़ीनी ख़बर लेकर आया हूं। मैंने पाया कि एक औरत उन पर बादशाही करती है और उसे सब चीज़ मिली है। और उसका एक बड़ा तख़्त है। मैंने उसे

और उसकी क़ौम को पाया कि सूरज को सज्दा करते हैं अल्लाह के सिवा। और शैतान ने उनके आमाल उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिए, फिर उन्हें रास्ते से रोक दिया, पस वे राह नहीं पाते, कि वे अल्लाह को सज्दा न करें जो आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ को निकालता है और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो। अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, मालिक अर्शे अज़ीम (महान सिंहासन) का। (20-26)

सुलैमान ने कहा, हम देखेंगे कि तुमने सच कहा या तुम झूठों में से हो। मेरा यह ख़त लेकर जाओ। फिर इसे उन लोगों की तरफ़ डाल दो। फिर उनसे हट जाना। फिर देखना कि वे क्या रद्देअमल (प्रतिक्रिया) ज़ाहिर करते हैं। मलिका सबा ने कहा कि ऐ दरबार वालो, मेरी तरफ़ एक बावक़अत (प्रतिष्ठित) ख़त डाला गया है। वह सुलैमान की तरफ़ से है। और वह है— शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है कि तुम मेरे मुक़ाबले में सरकशी न करो। और मुतीअ (आज्ञाकारी) होकर मेरे पास आ जाओ। मलिका ने कहा कि ऐ दरबारियो, मेरे मामले में मुझे राय दो। मैं किसी मामले का फ़ैसला नहीं करती जब तक तुम लोग मौजूद न हो। उन्होंने कहा, हम लोग ज़ोरआवर हैं। और सख़्त लड़ाई वाले हैं। और फ़ैसला आपके इख़्तियार में है। पस आप देख लें कि आप क्या हुक्म देती हैं। मलिका ने कहा कि बादशाह लोग जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसे ख़राब कर देते हैं और उसके इज़्ज़त वालों को ज़लील कर देते हैं। और यही ये लोग करेंगे। और मैं उनकी तरफ़ एक हदिया (उपहार) भेजती हूं, फिर देखती हूं कि सफ़ीर (दूत) क्या जवाब लाते हैं। (27-35)

फिर जब सफ़ीर (दूत) सुलैमान के पास पहुंचा, उसने कहा क्या तुम लोग माल से मेरी मदद करना चाहते हो। पस अल्लाह ने जो कुछ मुझे दिया है वह उससे बेहतर है जो उसने तुम्हें दिया है। बल्कि तुम ही अपने तोहफ़े से ख़ुश हो। उनके पास वापस जाओ। हम उन पर ऐसे लश्कर लेकर आएंगे जिनका मुक़ाबला वे न कर सकेंगे और हम उन्हें वहां से बेइज़्ज़त करके निकाल देंगे। और वे ख़्वार सम्मानहीन होंगे। (36-37)

सुलैमान ने कहा ऐ दरबार वालो, तुम में से कौन उसका तख़्त (सिंहासन) मेरे पास लाता है इससे पहले की वे लोग मुतीअ (आज्ञाकारी) होकर मेरे पास आएं। जिन्नों में से एक देव ने कहा, मैं उसे आपके पास ले आऊंगा इससे पहले कि आप अपनी जगह से उठें, और मैं इस पर क़ुदरत रखने वाला, अमानतदार हूं। जिसके पास किताब का एक इल्म था उसने कहा, मैं आपके पलक झपकने से पहले उसे ला दूंगा। फिर जब उसने तख़्त को अपने पास रखा हुआ देखा तो उसने कहा, यह मेरे रब का फ़ज़्ल है। ताकि वह मुझे जांचे कि मैं शुक्र करता हूं या नाशुक्री। और जो शख़्स शुक्र करे तो अपने ही लिए शुक्र करता है। और जो शख़्स नाशुक्री करे तो मेरा रब बेनियाज़ (निस्पृह) है करम करने वाला है। (38-40)

सुलैमान ने कहा कि उसके तख़्त (सिंहासन) का रूप बदल दो, देखें वह समझ पाती है या उन लोगों में से हो जाती है जिन्हें समझ नहीं। पस जब वह आई तो कहा गया क्या तुम्हारा तख़्त ऐसा ही है। उसने कहा, गोया कि यह वही है। और हमें इससे पहले मालूम हो चुका था। और हम फ़रमांबरदारों में थे। और उसे रोक रखा था उन चीज़ों ने जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पूजती थी। वह मुंकिर लोगों में से थी। उससे कहा गया कि महल में दाख़िल हो। पस जब उसने उसे देखा तो उसे ख़्याल किया कि वह गहरा पानी है और अपनी दोनों पिंडलियां खोल दीं। सुलैमान ने कहा, यह तो एक महल है जो शीशों से बनाया गया है। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया। और मैं सुलैमान के साथ होकर अल्लाह रब्बुल आलमीन पर ईमान लाई। (41-44)

और हमने समूद की तरफ़ उनके भाई सालेह को भेजा, कि अल्लाह की इबादत करो, फिर वे दो फ़रीक़ (पक्ष) बनकर आपस में झगड़ने लगे। उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो, तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी कर रहे हो। तुम अल्लाह से माफ़ी क्यों नहीं चाहते कि तुम पर रहम किया जाए। उन्होंने कहा, हम तो तुम्हें और तुम्हारे साथ वालों को मनहूस समझते

हैं। उसने कहा कि तुम्हारी बुरी क़िस्मत अल्लाह के पास है बल्कि तुम तो आज़माए जा रहे हो। (45-47)

और शहर में नौ शख़्स थे जो ज़मीन में फ़साद करते थे और इस्लाह (सुधार) का काम न करते थे। उन्होंने कहा कि तुम लोग अल्लाह की क़सम खाओ कि हम उसे और उसके लोगों को चुपके से हलाक कर देंगे। फिर उसके वली (संरक्षक) से कह देंगे कि हम उसके घरवालों की हलाकत के वक़्त मौजूद न थे। और बेशक हम सच्चे हैं। और उन्होंने एक तदबीर (युक्ति) की और हमने भी एक तदबीर की और उन्हें ख़बर भी न हुई। पस देखो कैसा हुआ उनकी तदबीर का अंजाम। हमने उन्हें और उनकी पूरी क़ौम को हलाक कर दिया। पस ये हैं उनके घर वीरान पड़े हुए उनके ज़ुल्म के सबब से। बेशक इसमें सबक़ है उन लोगों के लिए जो जानें। और हमने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए और जो डरते थे। (48-53)

और लूत को जब उसने अपनी क़ौम से कहा, क्या तुम बेहयाई करते हो और तुम देखते हो। क्या तुम मर्दों के साथ शहवतरानी करते हो। औरतों को छोड़कर, बल्कि तुम लोग बेसमझ हो। फिर उसकी क़ौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा, लूत के घरवालों को अपनी बस्ती से निकाल दो, ये लोग पाक साफ़ बनते हैं। फिर हमने उसे और उसके लोगों को नजात दी सिवा उसकी बीवी के, जिसका पीछे रह जाना हमने तै कर दिया था। और हमने उन पर बरसाया एक हौलनाक बरसाना। पस कैसा बुरा बरसाव था उन पर जिन्हें आगाह किया जा चुका था, कहो हम्द है अल्लाह के लिए और सलाम उसके उन बंदों पर जिन्हें उसने मुंतख़ब फ़रमाया। क्या अल्लाह बेहतर है या वे जिन्हें वे शरीक करते हैं। (54-59)

भला वह कौन है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया। और तुम्हारे लिए आसमान से पानी उतारा। फिर हमने उससे रौनक़ वाले बाग़ उगाए। तुम्हारे वश में न था कि तुम इन दरख़्तों को उगा सकते। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद (पूज्य) है। बल्कि वे राह से इंहिराफ़ करने वाले लोग हैं। भला किसने ज़मीन का ठहरने के लायक़ बनाया और उसके

दर्मियान नदियां जारी कीं। और उसके लिए उसने पहाड़ बनाए। और दो समुद्रों के दर्मियान पर्दा डाल दिया। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है। बल्कि उनके अक्सर लोग नहीं जानते। (60-61)

कौन है जो बेबस की पुकार को सुनता है और उसके दुख को दूर कर देता है। और तुम्हें ज़मीन का जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाता है। क्या अल्लाह के सिवा कोई और माबूद (पूज्य) है। तुम बहुत कम नसीहत पकड़ते हो। कौन है जो तुम्हें ख़ुश्की और समुद्र के अंधेरों में रास्ता दिखाता है। और कौन अपनी रहमत के आगे हवाओं को ख़ुशख़बरी बनाकर भेजता है। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है। अल्लाह बहुत बरतर है उससे जिन्हें वे शरीक ठहराते हैं। कौन है जो ख़ल्क़ (सृष्टि) की इब्तिदा करता है और फिर उसे दोहराता है। और कौन तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी देता है। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है। कहो कि अपनी दलील लाओ, अगर तुम सच्चे हो। (62-64)

कहो कि अल्लाह के सिवा, आसमानों और ज़मीन में कोई ग़ैब (अप्रकट) का इल्म नहीं रखता। और वे नहीं जानते वे कब उठाए जाएंगे। बल्कि आख़िरत के बारे में उनका इल्म उलझ गया है। बल्कि वे उसकी तरफ़ से शक में हैं। बल्कि वे उससे अंधे हैं। और इंकार करने वालों ने कहा, क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे और हमारे बाप दादा भी, तो क्या हम ज़मीन से निकाले जाएंगे। इसका वादा हमें भी दिया गया और इससे पहले हमारे बाप दादा को भी। यह महज़ अगलों की कहानियां हैं। कहो कि ज़मीन में चलो फिरो, पस देखो कि मुजरिमों का अंजाम क्या हुआ। (65-69)

और उन पर ग़म न करो और दिल तंग न हो उन तदबीरों पर जो वे कर रहे हैं। और वे कहते हैं कि यह वादा कब है अगर तुम सच्चे हो। कहो कि जिस चीज़ की तुम जल्दी कर रहे हो शायद उसमें से कुछ तुम्हारे पास आ लगा हो। और बेशक तुम्हारा रब लोगों पर बड़े फ़ज़्ल वाला है। मगर उनमें से अक्सर शुक्र नहीं करते। और बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उनके सीने छुपाए हुए हैं और जो वे ज़ाहिर करते हैं। और आसमानों और ज़मीन

की कोई पोशीदा चीज़ नहीं है जो एक वाज़ेह किताब में दर्ज न हो। (70-75)

बेशक यह क़ुरआन बनी इस्राईल पर बहुत सी चीज़ों को वाज़ेह कर रहा है जिनमें वे इख़्तेलाफ़ (मतभेद) रखते हैं। और वह हिदायत और रहमत है ईमान वालों के लिए। बेशक तुम्हारा रब अपने हुक्म के ज़रिए उनके दर्मियान फ़ैसला करेगा और वह ज़बरदस्त है, जानने वाला है। पस अल्लाह पर भरोसा करो। बेशक तुम सरीह हक़ (सुस्पष्ट सत्य) पर हो। तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते और न तुम बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो जबकि वे पीठ फेरकर चले जाएं। और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से बचाकर रास्ता दिखाने वाले हो। तुम तो सिर्फ़ उन्हें सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, फिर फ़रमांबरदार बन जाते हैं। (76-81)

और जब उन पर बात आ पड़ेगी तो हम उनके लिए ज़मीन से एक दाब्बह (जानवर) निकालेंगे जो उनसे कलाम करेगा। कि लोग हमारी आयतों पर यक़ीन नहीं रखते थे। और जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गिरोह उन लोगों का जमा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाते थे, फिर उनकी जमाअतबंदी की जाएगी। यहां तक कि जब वे आ जाएंगे तो ख़ुदा कहेगा कि तुमने मेरी आयतों को झुठलाया हालाँकि तुम्हारा इल्म उनका अहाता न कर सका, या बोलो कि तुम क्या करते थे। और उन पर बात पूरी हो जाएगी इस सबब से कि उन्होंने ज़ुल्म किया, पस वे कुछ न बोल सकेंगे। क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने रात बनाई ताकि लोग उसमें आराम करें। और दिन कि उसमें देखें। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो यक़ीन करते हैं। (82-86)

और जिस दिन सूर फूंका जाएगा तो घबरा उठेंगे जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं मगर वह जिसे अल्लाह चाहे। और सब चले आएंगे उसके आगे आजिज़ी से। और तुम पहाड़ों को देखकर गुमान करते हो कि वे जमे हुए हैं, और वे चलेंगे जैसे बादल चलें। यह अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर चीज़ को मोहकम (सुदृढ़) किया है। बेशक वह जानता है जो तुम करते हो। जो शख़्स भलाई लेकर आएगा तो उसके लिए इससे बेहतर है, और वे उस दिन घबराहट से महफ़ूज़ होंगे। और जो शख़्स बुराई लेकर आया

तो ऐसे लोग औंधे मुंह आग में डाल दिए जाएंगे। तुम वही बदला पा रहे हो जो तुम करते थे। (87-90)

मुझे यही हुक्म दिया गया है कि मैं इस शहर (मक्का) के रब की इबादत करूं जिसने इसे मोहतरम (आदरणीय) ठहराया और हर चीज़ उसी की है। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं फ़रमांबरदारी करने वालों में से बनूं। और यह कि क़ुरआन को सुनाऊं। फिर जो शख़्स राह पर आएगा तो वह अपने लिए राह पर आएगा और जो गुमराह हुआ तो कह दो कि मैं तो सिर्फ़ डराने वालों में से हूं। और कहो कि सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है, वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाएगा तो तुम उन्हें पहचान लोगे और तुम्हारा रब उससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (91-93)

सूरह-28. अल-क़सस

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ता० सीन० मीम०। ये वाज़ेह किताब की आयतें हैं। हम मूसा और फ़िरऔन का कुछ हाल तुम्हें ठीक-ठीक सुनाते हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं। बेशक फ़िरऔन ने ज़मीन में सरकशी की। और उसने उसके बाशिंदों को गिरोहों में तक़्सीम कर दिया। उनमें से एक गिरोह को उसने कमज़ोर कर रखा था। वह उनके लड़कों को ज़बह करता था और उनकी औरतों को ज़िंदा रखता था। बेशक वह फ़साद करने वालों में से था। और हम चाहते थे कि उन लोगों पर एहसान करें जो ज़मीन में कमज़ारे कर दिए गए थे और उन्हें पेशवा (नायक) बनाएं और उन्हें वारिस बना दें और उन्हें ज़मीन में इक़्तेदार (सत्ता) अता करें। और फ़िरऔन और हामान और उनकी फ़ौजों को उनसे वही दिखा दें जिससे वे डरते थे। (1-6)

और हमने मूसा की मां को इल्हाम (दिव्य संकेत) किया कि उसे दूध पिलाओ। फिर जब तुम्हें उसके बारे में डर हो तो तुम उसे दरिया में डाल दो। और न अंदेशा करो और न ग़मगीन हो। हम उसे तुम्हारे पास लौटा कर लाएंगे। और उसे पैग़म्बरों में से बनाएंगे। फिर उसे फ़िरऔन के घरवालों ने

उठा लिया ताकि वह उनके लिए दुश्मन हो और ग़म का बाइस बने। बेशक फ़िरऔन और हामान और उनके लश्कर ख़ताकार थे। और फ़िरऔन की बीवी ने कहा कि यह आंख की ठंडक है, मेरे लिए और तुम्हारे लिए। इसे क़त्ल न करो। क्या अजब कि यह हमें नफ़ा दे या हम इसे बेटा बना लें। और वे समझते न थे। (7-9)

और मूसा की मां का दिल बेचैन हो गया। क़रीब था कि वह उसे ज़ाहिर कर दे अगर हम उसके दिल को न संभालते कि वह यक़ीन करने वालों में से रहे। और उसने उसकी बहिन से कहा कि तू इसके पीछे-पीछे जा। तो वह उसे अजनबी बनकर देखती रही और उन लोगों को ख़बर नहीं हुई। और हमने पहले ही मूसा से दाइयों को रोक रखा था। तो लड़की ने कहा, क्या मैं तुम्हें ऐसे घरवालों का पता दूं जो इसे तुम्हारे लिए पालें और वे इसकी ख़ैरख़्वाही करें। पस हमने उसे उसकी मां की तरफ़ लौटा दिया ताकि उसकी आंखें ठंडी हों। और वह ग़मगीन न हो। और ताकि वह जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, मगर अक्सर लोग नहीं जानते। और जब मूसा अपनी जवानी को पहुंचा और पूरा हो गया तो हमने उसे हिक्मत (तत्वदर्शिता) और इल्म अता किया और हम इसी तरह बदला देते हैं नेकी करने वालों को। (10-14)

और शहर में वह ऐसे वक़्त में दाख़िल हुआ जबकि शहर वाले ग़फ़लत में थे तो उसने वहां दो आदमियों को लड़ते हुए पाया। एक उसकी अपनी क़ौम का था और दूसरा दुश्मनों में से था। तो जो उसकी क़ौम में से था उसने उसके ख़िलाफ़ मदद तलब की जो उसके दुश्मनों में से था। पस मूसा ने उसे घूंसा मारा। फिर उसका काम तमाम कर दिया। मूसा ने कहा कि यह शैतान के काम से है। बेशक वह दुश्मन है, खुला गुमराह करने वाला। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया है। पस तू मुझे बख़्श दे तो ख़ुदा ने उसे बख़्श दिया। बेशक वह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, जैसा तूने मेरे ऊपर फ़ज़्ल किया तो मैं कभी मुजरिमों का मददगार नहीं बनूंगा। (15-17)

फिर सुबह को वह शहर में उठा डरता हुआ, ख़बर लेता हुआ। तो देखा कि वही शख़्स जिसने कल मदद मांगी थी, वही आज फिर उसे मदद के लिए पुकार रहा है। मूसा ने उससे कहा, बेशक तुम सरीह गुमराह हो। फिर जब उसने चाहा कि उसे पकड़े जो उन दोनों का दुश्मन था तो उसने कहा कि ऐ मूसा क्या तुम मुझे क़त्ल करना चाहते हो जिस तरह तुमने कल एक शख़्स को क़त्ल किया। तो तुम ज़मीन में सरकश बनकर रहना चाहते हो। तुम सुलह करने वालों में से बनना नहीं चाहते। और एक शख़्स शहर के किनारे से दौड़ता हुआ आया। उसने कहा ऐ मूसा, दरबार वाले मश्विरा कर रहे हैं कि तुम्हें मार डालें। पस तुम निकल जाओ, मैं तुम्हारे ख़ैरख़्वाहों में से हूं। फिर वह वहां से निकला डरता हुआ, ख़बर लेता हुआ। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मुझे ज़ालिम लोगों से नजात दे। (18-21)

और जब उसने मदयन का रुख़ किया तो उसने कहा, उम्मीद है कि मेरा रब मुझे सीधा रास्ता दिखा दे। और जब वह मदयन के पानी पर पहुंचा तो वहां लोगों की एक जमाअत को पानी पिलाते हुए पाया। और उनसे अलग एक तरफ़ दो औरतों को देखा कि वे अपनी बकरियों को रोके हुए खड़ी हैं। मूसा ने उनसे पूछा कि तुम्हारा क्या माजरा है। उन्होंने कहा कि हम पानी नहीं पिलाते जब तक चरवाहे अपनी बकरियां न हटा लें। और हमारा बाप बहुत बूढ़ा है तो उसने उनके जानवरों को पानी पिलाया। फिर साये की तरफ़ हट गया। फिर कहा कि ऐ मेरे रब, तू जो चीज़ मेरी तरफ़ उतारे मैं उसका मोहताज हूं। (22-24)

फिर उन दोनों में से एक आई शर्म से चलती हुई। उसने कहा कि मेरा बाप आपको बुला रहा है कि आपने हमारी ख़ातिर जो पानी पिलाया उसका आपको बदला दे। फिर जब वह उसके पास आया और उससे सारा क़िस्सा बयान किया तो उसने कहा कि अंदेशा न करो। तुमने ज़ालिमों से नजात पाई। उनमें से एक ने कहा कि ऐ बाप इसे मुलाज़िम रख लीजिए। बेहतरीन आदमी जिसे आप मुलाज़िम रखें वही है जो मज़बूत और अमानतदार हो।

उसने कहा कि मैं चाहता हूं कि अपनी इन दो लड़कियों में से एक का निकाह तुम्हारे साथ कर दूं। इस शर्त पर कि तुम आठ साल मेरी मुलाज़िमत करो। फिर अगर तुम दस साल पूरे कर दो तो वह तुम्हारी तरफ़ से है। और मैं तुम पर मशक़्क़त डालना नहीं चाहता। इंशाअल्लाह तुम मुझे भला आदमी पाओगे। मूसा ने कहा कि यह बात मेरे और आपके दर्मियान तै है। इन दोनों मुद्दतों में से जो भी मैं पूरी करूं तो मुझ पर कोई जब्र न होगा। और अल्लाह हमारे क़ौल व क़रार पर गवाह है। (25-28)

फिर मूसा ने मुद्दत पूरी कर दी और वह अपने घरवालों के साथ रवाना हुआ तो उसने तूर की तरफ़ से एक आग देखी। उसने अपने घरवालों से कहा कि तुम ठहरो, मैंने एक आग देखी है। शायद मैं वहां से कोई ख़बर ले आऊं या आग का अंगारा ताकि तुम तापो। फिर जब वह वहां पहुंचा तो वादी के दाहिने किनारे से बरकत वाले ख़ित्ते में दरख़्त से पुकारा गया कि ऐ मूसा, मैं अल्लाह हूं, सारे जहान का मालिक। और यह कि तुम अपना असा (डंडा) डाल दो। तो जब उसने उसे हरकत करते हुए देखा कि गोया सांप हो, तो वह पीठ फेरकर भागा और उसने मुड़कर न देखा। ऐ मूसा आगे आओ और न डरो। तुम बिल्कुल महफ़ूज़ हो। अपना हाथ गरेबान में डालो, वह चमकता हुआ निकलेगा बग़ैर किसी मरज़ के, और ख़ौफ़ के वास्ते अपना बाज़ू अपनी तरफ़ मिला लो। पस यह तुम्हारे रब की तरफ़ से दो सनदें हैं फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास जाने के लिए। बेशक वे नाफ़रमान लोग हैं। (29-32)

मूसा ने कहा ऐ मेरे रब मैंने उनमें से एक शख़्स को क़त्ल किया है तो मैं डरता हूं कि वे मुझे मार डालेंगे। और मेरा भाई हारून वह मुझसे ज़्यादा फ़सीह (वाक-कुशल) है ज़बान में, पस तू उसे मेरे साथ मददगार की हैसियत से भेज कि वह मेरी ताईद करे। मैं डरता हूं कि वे लोग मुझे झुठला देंगे। फ़रमाया कि हम तुम्हारे भाई के ज़रिए तुम्हारे बाज़ू को मज़बूत कर देंगे और हम तुम दोनों को ग़लबा देंगे तो वे तुम लोगों तक न पहुंच सकेंगे। हमारी निशानियों के साथ, तुम दोनों और तुम्हारी पैरवी करने वाले ही ग़ालिब रहेंगे। (33-35)

फिर जब मूसा उन लोगों के पास हमारी वाज़ेह निशानियों के साथ पहुंचा, उन्होंने कहा कि यह महज़ गढ़ा हुआ जादू है। और यह बात हमने अपने अगले बाप दादा में नहीं सुनी। और मूसा ने कहा मेरा रब ख़ूब जानता है उसे जो उसकी तरफ़ से हिदायत लेकर आया है और जिसे आख़िरत का घर मिलेगा। बेशक ज़ालिम फ़लाह न पाएंगे। और फ़िरऔन ने कहा कि ऐ दरबार वालो, मैं तुम्हारे लिए अपने सिवा किसी माबूद को नहीं जानता। तो ऐ हामान मेरे लिए मिट्टी को आग दे, फिर मेरे लिए एक ऊंची इमारत बना ताकि मैं मूसा के रब को झांक कर देखूं, और मैं तो इसे एक झूठा आदमी समझता हूं। (36-38)

और उसने और उसकी फ़ौजों ने ज़मीन में नाहक़ घमंड किया और उन्होंने समझा कि उन्हें हमारी तरफ़ लौट कर आना नहीं है। तो हमने उसे और उसकी फ़ौजों को पकड़ा। फिर उन्हें समुद्र में फेंक दिया। तो देखो कि ज़ालिमों का अंजाम क्या हुआ। और हमने उन्हें सरदार बनाया कि आग की तरफ़ बुलाते हैं। और क़ियामत के दिन उन्हें मदद नहीं मिलेगी। और हमने इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी। और क़ियामत के दिन वे बदहाल लोगों में से होंगे, और हमने अगली उम्मतों को हलाक करने के बाद मूसा को किताब दी। लोगों के लिए बसीरत (सूझबूझ) का सामान, और हिदायत और रहमत ताकि वे नसीहत पकड़ें। (39-43)

और तुम पहाड़ के मग़्रिबी (पश्चिमी) जानिब मौजूद न थे जबकि हमने मूसा को अहकाम दिए और न तुम गवाहों में शामिल थे। लेकिन हमने बहुत सी नस्लें पैदा कीं फिर उन पर बहुत ज़माना गुज़र गया। और तुम मदयन वालों में भी न रहते थे कि उन्हें हमारी आयतें सुनाते। मगर हम हैं पैग़म्बर भेजने वाले। और तुम तूर के किनारे न थे जब हमने मूसा को पुकारा, लेकिन यह तुम्हारे रब का इनाम है, ताकि तुम एक ऐसी क़ौम को डरा दो जिनके पास तुमसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया ताकि वे नसीहत पकड़ें। (44-46)

और अगर ऐसा न होता कि उन पर उनके आमाल के सबब से कोई

आफ़त आई तो वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब, तूने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और हम ईमान वालों में से होते। फिर जब उनके पास हमारी तरफ़ से हक़ (सत्य) आया तो उन्होंने कहा कि क्यों न इसे वैसा मिला जैसा मूसा को मिला था। क्या लोगों ने उसका इंकार नहीं किया जो इससे पहले मूसा को दिया गया था, उन्होंने कहा कि दोनों जादू हैं एक दूसरे के मददगार, और उन्होंने कहा कि हम दोनों का इंकार करते हैं। (47-48)

कहो कि तुम अल्लाह के पास से कोई किताब ले आओ जो हिदायत करने में इन दोनों से बेहतर हो, मैं उसकी पैरवी करूंगा अगर तुम सच्चे हो। पस अगर ये लोग तुम्हारा कहा न कर सकें तो जान लो कि वे सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिश की पैरवी कर रहे हैं। और उससे ज़्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह की हिदायत के बग़ैर अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करे। बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। और हमने उन लोगों के लिए पे दर पे अपना कलाम भेजा ताकि वे नसीहत पकड़ें। (49-51)

जिन लोगों को हमने इससे पहले किताब दी है वे इस (क़ुरआन) पर ईमान लाते हैं। और जब वह उन्हें सुनाया जाता है तो वे कहते हैं कि हम इस पर ईमान लाए। बेशक यह हक़ (सत्य) है हमारे रब की तरफ़ से, हम तो पहले ही से इसे मानने वाले हैं। ये लोग हैं कि उन्हें उनका अज्र (प्रतिफल) दोहरा दिया जाएगा इस पर कि इन्होंने सब्र किया। और वे बुराई को भलाई से दूर करते हैं और हमने जो कुछ उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं और जब वे लग्व (घटिया निरर्थक) बात सुनते हैं तो उससे एराज़ (उपेक्षा) करते हैं और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल। तुम्हें सलाम, हम बेसमझ लोगों से उलझना नहीं चाहते। तुम जिसे चाहो हिदायत नहीं दे सकते। बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है। और वही ख़ूब जानता है जो हिदायत क़ुबूल करने वाले हैं। (52-56)

और वे कहते हैं कि अगर हम तुम्हारे साथ होकर इस हिदायत पर

चलने लगें तो हम अपनी ज़मीन से उचक लिए जाएंगे। क्या हमने उन्हें अम्न व अमान वाले हरम में जगह नहीं दी। जहां हर क़िस्म के फल खिंचे चले आते हैं, हमारी तरफ़ से रिज़्क़ के तौर पर, लेकिन उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते। (57)

और हमने कितनी ही बस्तियां हलाक कर दीं जो अपने सामाने मईशत (जीविका के साधन) पर नाज़ां (गौरवांवित) थीं। पस ये हैं उनकी बस्तियां जो उनके बाद आबाद नहीं हुईं मगर बहुत कम, और हम ही उनके वारिस हुए और तेरा रब बस्तियों को हलाक करने वाला न था जब तक उनकी बड़ी बस्ती में किसी पैग़म्बर को न भेज ले जो उन्हें हमारी आयतें पढ़कर सुनाए और हम हरगिज़ बस्तियों को हलाक करने वाले नहीं मगर जबकि वहां के लोग ज़ालिम हों। (58-59)

और जो चीज़ भी तुम्हें दी गई है तो वह बस दुनिया की ज़िंदगी का सामान और उसकी रौनक़ है। और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बेहतर है और बाक़ी रहने वाला है, फिर क्या तुम समझते नहीं। भला वह शख़्स जिससे हमने अच्छा वादा किया है फिर वह उसे पाने वाला है, क्या उस शख़्स जैसा हो सकता है जिसे हमने सिर्फ़ दुनियावी ज़िंदगी का फ़ायदा दिया है, फिर क़ियामत के दिन वह हाज़िर किए जाने वालों में से है। (60-61)

और जिस दिन ख़ुदा उन्हें पुकारेगा फिर कहेगा कि कहां हैं मेरे वे शरीक जिनका तुम दावा करते थे। जिन पर बात साबित हो चुकी होगी वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब ये लोग हैं जिन्होंने हमें बहकाया। हमने उन्हें उसी तरह बहकाया जिस तरह हम ख़ुद बहके थे। हम इनसे बरा-त (विरक्ति) करते हैं। ये लोग हमारी इबादत नहीं करते थे। (62-63)

और कहा जाएगा कि अपने शरीकों को बुलाओ तो वे उन्हें पुकारेंगे तो वे उन्हें जवाब न देंगे। और वे अज़ाब को देखेंगे। काश वे हिदायत इख़्तियार करने वाले होते। और जिस दिन ख़ुदा उन्हें पुकारेगा और फ़रमाएगा कि तुमने पैग़ाम पहुंचाने वालों को क्या जवाब दिया था। फिर उस दिन उनकी

तमाम बातें गुम हो जाएंगी। तो वे आपस में भी न पूछ सकेंगे। अलबत्ता जिसने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किया तो उम्मीद है कि वह फ़लाह (कल्याण, सफलता) पाने वालों में से होगा। (64-67)

और तेरा रब पैदा करता है जो चाहे और वह पसंद करता है जिसे चाहे। उनके हाथ में नहीं है पसंद करना। अल्लाह पाक और बरतर है उससे जिसे वे शरीक ठहराते हैं और तेरा रब जानता है जो कुछ उनके सीने छुपाते हैं और जो कुछ वे ज़ाहिर करते हैं। और वही अल्लाह है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। उसी के लिए हम्द (प्रशंसा) है दुनिया में और आख़िरत में। और उसी के लिए फ़ैसला है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (68-70)

कहो कि बताओ, अगर अल्लाह क़ियामत के दिन तक तुम पर हमेशा के लिए रात कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद (पूज्य) है जो तुम्हारे लिए रोशनी ले आए। तो क्या तुम लोग सुनते नहीं। कहो कि बताओ अगर अल्लाह क़ियामत तक तुम पर हमेशा के लिए दिन कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है जो तुम्हारे लिए रात को ले आए जिसमें तुम सुकून हासिल करते हो। क्या तुम लोग देखते नहीं। और उसने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया ताकि तुम उसमें सुकून हासिल करो और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल (जीविका) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (71-73)

और जिस दिन अल्लाह उन्हें पुकारेगा फिर कहेगा कि कहां हैं मेरे शरीक जिनका तुम गुमान रखते थे। और हम हर उम्मत में से एक गवाह निकाल कर लाएंगे। फिर लोगों से कहेंगे कि अपनी दलील लाओ, तब वे जान लेंगे कि हक़ अल्लाह की तरफ़ है। और वे बातें उनसे गुम हो जाएंगी जो वे गढ़ते थे। (74-75)

क़ारून मूसा की क़ौम में से था। फिर वह उनके ख़िलाफ़ सरकश हो गया। और हमने उसे इतने ख़ज़ाने दिए थे कि उनकी कुंजियां उठाने से कई ताक़तवर मर्द थक जाते थे। जब उसकी क़ौम ने उससे कहा कि इतराओ मत, अल्लाह इतराने वालों को पसंद नहीं करता। और जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें दिया है उसमें आख़िरत के तालिब बनो। और दुनिया में से अपने हिस्से

को न भूलो। और लोगों के साथ भलाई करो जिस तरह अल्लाह ने तुम्हारे साथ भलाई की है। और ज़मीन में फ़साद के तालिब न बनो, अल्लाह फ़साद करने वालों को पसंद नहीं करता। (76-77)

उसने कहा, यह माल मुझे एक इल्म की बिना पर मिला है जो मेरे पास है। क्या उसने यह नहीं जाना कि अल्लाह उससे पहले कितनी जमाअतों को हलाक कर चुका है जो उससे ज़्यादा क़ुव्वत और जमीयत (जन-समूह) रखती थीं। और मुजरिमों से उनके गुनाह पूछे नहीं जाते। (78)

पस वह अपनी क़ौम के सामने अपनी पूरी आराइश (भव्यता) के साथ निकला। जो लोग हयाते दुनिया के तालिब थे उन्होंने कहा, काश हमें भी वही मिलता जो क़ारून को दिया गया है, बेशक वह बड़ी क़िस्मत वाला है, और जिन लोगों को इल्म मिला था उन्होंने कहा, तुम्हारा बुरा हो अल्लाह का सवाब बेहतर है उस शख़्स के लिए जो ईमान लाए और नेक अमल करे। और यह उन्हीं को मिलता है जो सब्र करने वाले हैं। (79-80)

फिर हमने उसे और उसके घर को ज़मीन में धंसा दिया। फिर उसके लिए कोई जमाअत न उठी जो अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी मदद करती। और न वह ख़ुद ही अपने को बचा सका। और जो लोग कल उसके जैसा होने की तमन्ना कर रहे थे वे कहने लगे कि अफ़सोस, बेशक अल्लाह अपने बंदों में से जिसके लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। अगर अल्लाह ने हम पर एहसान न किया होता तो हमें भी ज़मीन में धंसा देता। अफ़सोस, बेशक इंकार करने वाले फ़लाह (कल्याण, सफलता) नहीं पाएंगे। (81-82)

यह आख़िरत का घर हम उन लोगों को देंगे जो ज़मीन में न बड़ा बनना चाहते हैं और न फ़साद करना। और आख़िरी अंजाम डरने वालों के लिए है। जो शख़्स नेकी लेकर आएगा उसके लिए उससे बेहतर है और जो शख़्स बुराई लेकर आएगा तो जो लोग बुराई करते हैं उन्हें वही मिलेगा जो उन्होंने किया। (83-84)

बेशक जिसने तुम पर क़ुरआन को फ़र्ज़ किया है वह तुम्हें एक अच्छे अंजाम तक पहुंचा कर रहेगा। कहो कि मेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन हिदायत लेकर आया है और कौन खुली हुई गुमराही में है। और तुम्हें यह उम्मीद न थी कि तुम पर किताब उतारी जाएगी। मगर तुम्हारे रब की महरबानी से। पस तुम मुंकिरों के मददगार न बनो। और वे तुम्हें अल्लाह की आयतों से रोक न दें जबकि वे तुम्हारी तरफ़ उतारी जा चुकी हैं। और तुम अपने रब की तरफ़ बुलाओ और मुश्रिकों में से न बनो। और अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को न पुकारो। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। हर चीज़ हलाक (विनष्ट) होने वाली है सिवा उसकी ज़ात के। फ़ैसला उसी के लिए है और तुम लोग उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे। (85-88)

सूरह-29. अल-अनकबूत

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़० लाम० मीम०। क्या लोग यह समझते हैं कि वे महज़ यह कहने पर छोड़ दिए जाएंगे कि हम ईमान लाए और उन्हें जांचा न जाएगा। और हमने उन लोगों को जांचा है जो इनसे पहले थे, पस अल्लाह उन लोगों को जानकर रहेगा जो सच्चे हैं और वह झूठों को भी ज़रूर मालूम करेगा। (1-3)

क्या जो लोग बुराइयां कर रहे हैं वे समझते हैं कि वे हमसे बच जाएंगे। बहुत बुरा फ़ैसला है जो वे कर रहे हैं। जो शख़्स अल्लाह से मिलने की उम्मीद रखता है तो अल्लाह का वादा ज़रूर आने वाला है। और वह सुनने वाला है, जानने वाला है। और जो शख़्स मेहनत करे तो वह अपने ही लिए मेहनत करता है। बेशक अल्लाह जहान वालों से बेनियाज़ (निस्पृह) है। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किया तो हम उनकी बुराइयां उनसे दूर कर देंगे और उन्हें उनके अमल का बेहतरीन बदला देंगे। (4-7)

और हमने इंसान को ताकीद की कि वह अपने मां-बाप के साथ नेक सुलूक करे। और अगर वे तुझ पर दबाव डालें कि तू ऐसी चीज़ को मेरा

शरीक ठहराए जिसका तुझे कोई इल्म नहीं तो उनकी इताअत (आज्ञापालन) न कर। तुम सबको मेरे पास लौट कर आना है, फिर मैं तुम्हें बता दूंगा जो कुछ तुम करते थे। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए तो हम उन्हें नेक बंदों में दाख़िल करेंगे। (8-9)

और लोगों में कोई ऐसा है जो कहता है कि हम अल्लाह पर ईमान लाए। फिर जब अल्लाह की राह में उसे सताया जाता है तो वह लोगों के सताने को अल्लाह के अज़ाब की तरह समझ लेता है। और अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई मदद आ जाए तो वे कहेंगे कि हम तो तुम्हारे साथ थे। क्या अल्लाह उससे अच्छी तरह बाख़बर नहीं जो लोगों के दिलों में है। और अल्लाह ज़रूर मालूम करेगा उन लोगों को जो ईमान लाए और वह ज़रूर मालूम करेगा मुनाफ़िक़ीन (पाखंडियों) को। (10-11)

और मुंकिर लोग ईमान वालों से कहते हैं कि तुम हमारे रास्ते पर चलो और हम तुम्हारे गुनाहों को उठा लेंगे। और वे उनके गुनाहों में से कुछ भी उठाने वाले नहीं हैं। बेशक वे झूठे हैं। और वे अपने बोझ उठाएंगे, और अपने बोझ के साथ कुछ और बोझ भी। और ये लोग जो झूठी बातें बनाते हैं क़ियामत के दिन उसके बारे में उनसे पूछ होगी। (12-13)

और हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो वह उनके अंदर पचास साल कम एक हज़ार साल रहा। फिर उन्हें तूफ़ान ने पकड़ लिया और वे ज़ालिम थे। फिर हमने नूह को और कश्ती वालों को बचा लिया। और हमने इस वाक़ये को दुनिया वालों के लिए एक निशानी बना दिया। (14-15)

और इब्राहीम को जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। तुम लोग अल्लाह को छोड़कर महज़ बुतों को पूजते हो और तुम झूठी बातें गढ़ते हो। अल्लाह के सिवा तुम जिनकी इबादत करते हो वे तुम्हें रिज़्क़ देने का इख़्तियार नहीं रखते। पस तुम अल्लाह के पास रिज़्क़ तलाश करो और उसकी इबादत करो और उसका शुक्र अदा करो। उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।

और अगर तुम झुठलाओगे तो तुमसे पहले बहुत सी क़ौमें झुठला चुकी हैं। और रसूल पर साफ़-साफ़ पहुंचा देने के सिवा कोई ज़िम्मेदारी नहीं। (16-18)

क्या लोगों ने नहीं देखा कि अल्लाह किस तरह ख़ल्क़ (सृष्टि) को शुरू करता है, फिर वह उसे दोहराएगा। बेशक यह अल्लाह पर आसान है। कहो कि ज़मीन में चलो फिरो फिर देखो कि अल्लाह ने किस तरह ख़ल्क़ को शुरू किया, फिर वह उसे दुबारा उठाएगा। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। वह जिसे चाहेगा अज़ाब देगा और जिस पर चाहेगा रहम करेगा। और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। और तुम न ज़मीन में आजिज़ करने वाले हो और न आसमान में, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई कारसाज़ है और न कोई मददगार। और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का और उससे मिलने का इंकार किया तो वही मेरी रहमत से महरूम हुए और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। (19-23)

फिर उसकी क़ौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा कि उसे क़त्ल कर दो या उसे जला दो। तो अल्लाह ने उसे आग से बचा लिया। बेशक इसके अंदर निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाए। और उसने कहा कि तुमने अल्लाह के सिवा जो बुत बनाए हैं, बस वह तुम्हारे आपसी दुनिया के तअल्लुक़ात की वजह से है, फिर क़ियामत के दिन तुम में से हर एक दूसरे का इंकार करेगा और एक दूसरे पर लानत करेगा। और आग तुम्हारा ठिकाना होगी और कोई तुम्हारा मददगार न होगा। फिर लूत ने उसे माना और कहा कि मैं अपने रब की तरफ़ हिजरत करता हूं। बेशक वह ज़बरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और हमने अता किए उसे इस्हाक़ और याक़ूब और उसकी नस्ल में नुबुव्वत और किताब रख दी। और हमने दुनिया में उसे अज्र (प्रतिफल) अता किया और आख़िरत में यक़ीनन वह सालिहीन में से होगा। (24-27)

और लूत को, जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा कि तुम ऐसी बेहयाई का काम करते हो कि तुमसे पहले दुनिया वालों में से किसी ने नहीं किया। क्या तुम मर्दों के पास जाते हो और राह मारते हो। और अपनी मज्लिस में

बुरा काम करते हो। पस उसकी क़ौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उसने कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे ऊपर अल्लाह का अज़ाब लाओ। लूत ने कहा कि ऐ मेरे रब, मुफ़्सिद (उपद्रवी) लोगों के मुक़ाबले में मेरी मदद फ़रमा। (28-30)

और जब हमारे भेजे हुए इब्राहीम के पास बशारत लेकर पहुंचे, उन्होंने कहा कि हम इस बस्ती के लोगों को हलाक करने वाले हैं। बेशक इसके लोग सख़्त ज़ालिम हैं। इब्राहीम ने कहा कि इसमें तो लूत भी है। उन्होंने कहा कि हम ख़ूब जानते हैं कि वहां कौन है। हम उसे और उसके घरवालों को बचा लेंगे मगर उसकी बीवी कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी। फिर जब हमारे भेजे हुए लूत के पास आए तो वह उनसे परेशान हुआ और दिल तंग हुआ। और उन्होंने कहा कि तुम न डरो और न ग़म करो। हम तुम्हें और तुम्हारे घरवालों को बचा लेंगे मगर तुम्हारी बीवी कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी। हम इस बस्ती के बाशिंदों पर एक आसमानी अज़ाब उनकी बदकारियों की सज़ा में नाज़िल करने वाले हैं। और हमने उस बस्ती के कुछ निशान रहने दिए हैं उन लोगों की इबरत (सीख) के लिए जो अक़्ल रखते हैं। (31-35)

और मदयन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को। पस उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत करो। और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखो और ज़मीन में फ़साद फैलाने वाले न बनो। तो उन्होंने उसे झुठला दिया। पस ज़लज़ले ने उन्हें आ पकड़ा। फिर वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए। (36-37)

और आद और समूद को, और तुम पर हाल खुल चुका है उनके घरों से। और उनके आमाल को शैतान ने उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिया। फिर उन्हें रास्ते से रोक दिया और वे होशियार लोग थे। (38)

और क़ारून को और फ़िरऔन को और हामान को और मूसा उनके पास खुली निशानियां लेकर आया तो उन्होंने ज़मीन में घमंड किया और वे हमसे भाग जाने वाले न थे। पस हमने हर एक को उसके गुनाह में पकड़ा। फिर उनमें से कुछ पर हमने पथराव करने वाली हवा भेजी। और उनमें से

कुछ को कड़क ने आ पकड़ा। और उनमें से कुछ को हमने ज़मीन में धंसा दिया। और उनमें से कुछ को हमने ग़र्क़ कर दिया। और अल्लाह उन पर ज़ुल्म करने वाला न था। मगर वे ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे थे। (39-40)

जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे कारसाज़ बनाए हैं उनकी मिसाल मकड़ी की सी है। उसने एक घर बनाया। और बेशक तमाम घरों से ज़्यादा कमज़ोर मकड़ी का घर है। काश कि लोग जानते। बेशक अल्लाह जानता है उन चीज़ों को जिन्हें वे उसके सिवा पुकारते हैं। और वह ज़बरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और ये मिसालें हैं जिन्हें हम लोगों के लिए बयान करते रहे हैं और इन्हें वही लोग समझते हैं जो इल्म वाले हैं। अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को बरहक़ पैदा किया है। बेशक इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए। (41-44)

तुम उस किताब को पढ़ो जो तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की गई है। और नमाज़ क़ायम करो। बेशक नमाज़ बेहयाई से और बुरे कामों से रोकती है। और अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज़ है। ओर अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (45)

और तुम अहले किताब से बहस न करो मगर उस तरीक़े पर जो बेहतर है, मगर जो उनमें बेइंसाफ़ हैं। और कहो कि हम ईमान लाए उस चीज़ पर जो हमारी तरफ़ भेजी गई है। और उस पर जो तुम्हारी तरफ़ भेजी गई है। हमारा माबूद (पूज्य) और तुम्हारा माबूद एक है और हम उसी की फ़रमांबरदारी करने वाले हैं। (46)

और इसी तरह हमने तुम्हारे ऊपर किताब उतारी। तो जिन लोगों को हमने किताब दी है वे उस पर ईमान लाते हैं। और इन लोगों में से भी कुछ ईमान लाते हैं। और हमारी आयतों का इंकार सिर्फ़ मुंकिर ही करते हैं। और तुम इससे पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे और न उसे अपने हाथ से लिखते थे। ऐसी हालत में बातिलपरस्त (असत्यवादी) लोग शुबह में पड़ते। बल्कि ये खुली हुई आयतें हैं उन लोगों के सीनों में जिन्हें इल्म अता हुआ है। और हमारी आयतों का इंकार नहीं करते मगर वे जो ज़ालिम हैं। (47-49)

और वे कहते हैं कि उस पर उसके रब की तरफ़ से निशानियां क्यों नहीं उतारी गईं। कहो कि निशानियां तो अल्लाह के पास हैं। और मैं सिर्फ़ खुला हुआ डराने वाला हूं। क्या उनके लिए यह काफ़ी नहीं है कि हमने तुम पर किताब उतारी जो उन्हें पढ़कर सुनाई जाती है। बेशक इसमें रहमत और याददिहानी है उन लोगों के लिए जो ईमान लाए हैं। कहो कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाही के लिए काफ़ी है। वह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। और जो लोग बातिल (असत्य) पर ईमान लाए और जिन्होंने अल्लाह का इंकार किया वही ख़सारे (घाटे) में रहने वाले हैं। (50-52)

और ये लोग तुमसे अज़ाब जल्द मांग रहे हैं। और अगर एक वक़्त मुक़र्रर न होता तो उन पर अज़ाब आ जाता। और यक़ीनन वह उन पर अचानक आएगा और उन्हें ख़बर भी न होगी। वे तुमसे अज़ाब जल्द मांग रहे हैं। और जहन्नम मुंकिरों को घेरे हुए है। जिस दिन अज़ाब उन्हें ऊपर से ढांक लेगा और पांव के नीचे से भी, और कहेगा कि चखो उसे जो तुम करते थे। (53-55)

ऐ मेरे बंदो जो ईमान लाए हो, बेशक मेरी ज़मीन वसीअ (विस्तृत) है तो तुम मेरी ही इबादत करो। हर जान को मौत का मज़ा चखना है। फिर तुम हमारी तरफ़ लौटाए जाओगे। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए उन्हें हम जन्नत के बालाख़ानों (उच्च भवनों) में जगह देंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी वे उनमें हमेशा रहेंगे। क्या ही अच्छा अज्र है अमल करने वालों का। जिन्होंने सब्र किया और जो अपने रब पर भरोसा रखते हैं। और कितने जानवर हैं जो अपना रिज़्क़ उठाए नहीं फिरते। अल्लाह उन्हें रिज़्क़ देता है और तुम्हें भी। और वह सुनने वाला जानने वाला है। (56-60)

और अगर तुम उनसे पूछो कि किसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को, और मुसख़्ख़र किया सूरज को और चांद को, तो वे ज़रूर कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर वे कहां से फेर दिए जाते हैं। अल्लाह ही अपने बंदों में से जिसका चाहता है रिज़्क़ कुशादा कर देता है और जिसका चाहता है तंग कर देता है। बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। और अगर तुम उनसे पूछो कि किसने आसमान से पानी उतारा, फिर उसने ज़मीन को ज़िंदा किया

उसके मर जाने के बाद, तो ज़रूर वे कहेंगे कि अल्लाह ने। कहो कि सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है। बल्कि उनमें से अक्सर लोग नहीं समझते। (61-63)

और यह दुनिया की ज़िंदगी कुछ नहीं है मगर एक खेल और दिल का बहलावा। और आख़िरत का घर ही अस्ल ज़िंदगी की जगह है, काश कि वे जानते। पस जब वे कश्ती में सवार होते हैं तो अल्लाह को पुकारते हैं, उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। फिर जब वह उन्हें नजात देकर ख़ुश्की की तरफ़ ले जाता है तो वे फ़ौरन शिर्क करने लगते हैं। ताकि हमने जो नेमत उन्हें दी है उसकी नाशुक्री करें और चन्द दिन फ़ायदा उठाएं। पस वे अनक़रीब जान लेंगे। (64-66)

क्या वे देखते नहीं कि हमने एक पुरअम्न हरम बनाया। और उनके गिर्द व पेश (आस पास) लोग उचक लिए जाते हैं। तो क्या वे बातिल (असत्य) को मानते हैं और अल्लाह की नेमत की नाशुक्री करते हैं। और उस शख़्स से बड़ा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे या हक़ को झुठलाए जबकि वह उसके पास आ चुका। क्या मुंकिरों का ठिकाना जहन्नम में न होगा। और जो लोग हमारी ख़ातिर मशक़्क़त उठाएंगे उन्हें हम अपने रास्ते दिखाएंगे। और यक़ीनन अल्लाह नेकी करने वालों के साथ है। (67-69)

सूरह-30. अर-रूम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० मीम०। रूमी पास के इलाक़े में मग़लूब (परास्त) हो गए, और वे अपनी मग़लूबियत के बाद अनक़रीब ग़ालिब होंगे। चन्द वर्षों में। अल्लाह ही के हाथ में सब काम है, पहले भी और पीछे भी। और उस दिन ईमान वाले ख़ुश होंगे, अल्लाह की मदद से। वह जिसकी चाहता है मदद करता है। और वह ज़बरदस्त है, रहमत वाला है। अल्लाह का वादा है। अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। वे दुनिया की ज़िंदगी के सिर्फ़ ज़ाहिर को जानते हैं, और वे आख़िरत से बेख़बर हैं। (1-7)

क्या उन्होंने अपने जी में ग़ौर नहीं किया, अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ इनके दर्मियान है बरहक़ पैदा किया है। और सिर्फ़ एक मुक़र्रर मुद्दत के लिए। और लोगों में बहुत से हैं जो अपने रब से मुलाक़ात के मुंकिर हैं। क्या वे ज़मीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि कैसा अंजाम हुआ उन लोगों का जो उनसे पहले थे। वे उनसे ज़्यादा ताक़त रखते थे। और उन्होंने ज़मीन को जोता और उसे उससे ज़्यादा आबाद किया जितना इन्होंने आबाद किया है। और उनके पास उनके रसूल वाज़ेह निशानियां लेकर आए। पस अल्लाह उन पर ज़ुल्म करने वाला न था। मगर वे ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे थे। फिर जिन लोगों ने बुरा काम किया था उनका अंजाम बुरा हुआ, इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया। और वे उनकी हंसी उड़ाते थे। (8-10)

अल्लाह ख़ल्क़ (सृष्टि) को पहली बार पैदा करता है, फिर वही दुबारा उसे पैदा करेगा। फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी उस दिन मुजरिम लोग हैरतज़दा रह जाएंगे। और उनके शरीकों में से उनका कोई सिफ़ारिशी न होगा और वे अपने शरीकों के मुंकिर हो जाएंगे। और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी उस दिन सब लोग जुदा-जुदा हो जाएंगे। पस जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए वे एक बाग़ में मसरूर (प्रसन्न) होंगे। और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को और आख़िरत के पेश आने को झुठलाया तो वे अज़ाब में पकड़े हुए होंगे। पस तुम पाक अल्लाह की याद करो जब तुम शाम करते हो और जब तुम सुबह करते हो। और असामानों और ज़मीन में उसी के लिए हम्द (प्रशंसा) है और तीसरे पहर और जब तुम ज़ुहर करते हो। (11-18)

वह ज़िंदा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को ज़िंदा से निकालता है। और वह ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िंदा करता है और इसी तरह तुम लोग निकाले जाओगे। और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया है। फिर यकायक तुम बशर इंसान बनकर फैल जाते हो। और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारी जिन्स

से तुम्हारे लिए जोड़े पैदा किए ताकि तुम उनसे सुकून हासिल करो। और उसने तुम्हारे दर्मियान मुहब्बत और रहमत रख दी। बेशक इसमें बहुत सी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (19-21)

और उसकी निशानियों में से आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और तुम्हारी बोलियों ओर तुम्हारे रंगों का इख़्तेलाफ़ (मतभेद) है। बेशक इसमें बहुत सी निशानियां हैं इल्म वालों के लिए। और उसकी निशानियों में से तुम्हारा रात और दिन में सोना और तुम्हारा उसके फ़ज़्ल (जीविका) को तलाश करना है। बेशक इसमें बहुत सी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। और उसकी निशानियों में से यह है कि वह तुम्हें बिजली दिखाता है, ख़ौफ़ के साथ और उम्मीद के साथ। और वह आसमान से पानी उतारता है फिर उससे ज़मीन को ज़िंदा करता है उसके मुर्दा हो जाने के बाद। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अक़्ल से काम लेते हैं। (22-24)

और उसकी निशानियों में से यह है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म से क़ायम है। फिर जब वह तुम्हें एक बार पुकारेगा तो तुम उसी वक़्त ज़मीन से निकल पड़ोगे। और आसमानों और ज़मीन में जो भी है उसी का है। सब उसी के ताबेअ (अधीन) हैं और वही है जो अव्वल बार पैदा करता है फिर वही दुबारा पैदा करेगा। और यह उसके लिए ज़्यादा आसान है। और आसमानों और ज़मीन में उसी के लिए सबसे बरतर सिफ़त (गुण) है। और वह ज़बरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (25-27)

वह तुम्हारे लिए ख़ुद तुम्हारी ज़ात से एक मिसाल बयान करता है। क्या तुम्हारे ग़ुलामों में कोई तुम्हारे उस माल में शरीक है जो हमने तुम्हें दिया है कि तुम और वह उसमें बराबर हों। और जिस तरह तुम अपनों का लिहाज़ करते हो उसी तरह उनका भी लिहाज़ करते हो। इस तरह हम आयतें खोलकर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो अक़्ल से काम लेते हैं। बल्कि अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वालों ने बग़ैर दलील अपने ख़्यालात की पैरवी कर रखी है तो उसे कौन हिदायत दे सकता है जिसे अल्लाह ने भटका दिया हो। और कोई उनका मददगार नहीं। (28-29)

पस तुम यकसू होकर अपना रुख़ इस दीन की तरफ़ रखो, अल्लाह की फ़ितरत जिस पर उसने लोगों को बनाया है। उसके बनाए हुए को बदलना नहीं। यही सीधा दीन है। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। उसी की तरफ़ मुतवज्जह होकर और उसी से डरो और नमाज़ क़ायम करो और मुश्रिकीन में से न बनो जिन्होंने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर लिया। और बहुत से गिरोह हो गए। हर गिरोह अपने तरीक़े पर नाज़ां (मग्न) है जो उसके पास है। (30-32)

और जब लोगों को कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो वे अपने रब को पुकारते हैं उसी की तरफ़ मुतवज्जह होकर। फिर जब वह अपनी तरफ़ से उन्हें महरबानी चखाता है तो उनमें से एक गिरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है कि जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसके मुंकिर हो जाएं। तो चन्द दिन फ़ायदा उठा लो, अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा। क्या हमने उन पर कोई सनद उतारी है कि वह उन्हें ख़ुदा के साथ शिर्क करने को कह रही है। (33-35)

और जब हम लोगों को महरबानी चखाते हैं तो वे उससे ख़ुश हो जाते हैं। और अगर उनके आमाल के सबब से उन्हें कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो यकायक वे मायूस हो जाते हैं। क्या वे देखते नहीं कि अल्लाह जिसे चाहे ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसे चाहे कम। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। पस रिश्तेदार को उसका हक़ दो और मिस्कीन को और मुसाफ़िर को। यह बेहतर है उन लोगों के लिए जो अल्लाह की रिज़ा चाहते हैं और वही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। और जो सूद तुम देते हो ताकि लोगों के माल में शामिल होकर वह बढ़ जाए, तो अल्लाह के नज़दीक वह नहीं बढ़ता। और जो ज़कात तुम दोगे अल्लाह की रिज़ा हासिल करने के लिए तो यही लोग हैं जो अल्लाह के यहां अपने माल को बढ़ाने वाले हैं। (36-39)

अल्लाह ही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर उसने तुम्हें रोज़ी दी, फिर वह तुम्हें मौत देता है, फिर वह तुम्हें ज़िंदा करेगा। क्या तुम्हारे शरीकों में से कोई ऐसा है जो इनमें से कोई काम करता हो। वह पाक है और बरतर है उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं। ख़ुश्की और तरी में फ़साद फैल गया लोगों

के अपने हाथों की कमाई से, ताकि अल्लाह मज़ा चखाए उन्हें उनके कुछ आमाल का, शायद की वे बाज़ आएं। कहो कि ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कि उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जो इससे पहले गुज़रे हैं। उनमें से अक्सर मुश्रिक (बहुदेववादी) थे। (40-42)

पस अपना रुख़ दीने क़य्यिम (सीधे-सहज धर्म) की तरफ़ सीधा रखो। इससे पहले कि अल्लाह की तरफ़ से ऐसा दिन आ जाए जिसके लिए वापसी नहीं है। उस दिन लोग जुदा-जुदा हो जाएंगे। जिसने इंकार किया तो उसका इंकार उसी पर पड़ेगा। और जिसने नेक अमल किया तो ये लोग अपने ही लिए सामान कर रहे हैं। ताकि अल्लाह ईमान लाने वालों को और नेक अमल करने वालों को अपने फ़ज़्ल से जज़ा (प्रतिफल) दे। बेशक अल्लाह मुंकिरों को पसंद नहीं करता। (43-45)

और उसकी निशानियों में से यह है कि वह हवाएं भेजता है ख़ुशख़बरी देने के लिए और ताकि वह तुम्हें अपनी रहमत से नवाज़े। और ताकि कश्तियां उसके हुक्म से चलें। और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो। और ताकि तुम उसका शुक्र अदा करो। और हमने तुमसे पहले रसूलों को भेजा उनकी क़ौम की तरफ़। पस वे उनके पास खुली निशानियां लेकर आए। तो हमने उन लोगों से इंतिक़ाम लिया जिन्होंने जुर्म किया था। और हम पर यह हक़ था कि हम मोमिनों की मदद करें। (46-47)

अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है। पस वे बादल को उठाती हैं। फिर अल्लाह उन्हें आसमान में फैला देता है जिस तरह चाहता है। और वह उन्हें तह-ब-तह करता है। फिर तुम बारिश को देखते हो कि उसके अंदर से निकलती है। फिर जब वह अपने बंदों में से जिसे चाहता है उसे पहुंचा देता है तो यकायक वे ख़ुश हो जाते हैं। और वे उसके नाज़िल किए जाने से पहले, ख़ुशी से पहले, नाउम्मीद थे। पस अल्लाह की रहमत के आसार (निशान) को देखो, वह किस तरह ज़मीन को ज़िंदा कर देता है उसके मुर्दा हो जाने के बाद। बेशक वही मुर्दों को ज़िंदा करने वाला है। और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। और अगर हम एक हवा भेज दें, फिर वे खेती को ज़र्द हुई देखें

तो इसके बाद वे इंकार करने लगेंगे। तो तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते, और न तुम बहरों को अपनी पुकार सुना सकते जबकि वे पीठ फेरकर चले जा रहे हों। और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से निकाल कर राह पर ला सकते हो। तुम सिर्फ़ उसे सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाने वाला हो। पस यही लोग इताअत (आज्ञापालन) करने वाले हैं। (48-53)

अल्लाह ही है जिसने तुम्हें कमज़ोरी से पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद क़ुव्वत (शक्ति) दी, फिर क़ुव्वत के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा तारी कर दिया। वह जो चाहता है पैदा करता है। और वह इल्म वाला, क़ुदरत वाला है। और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी, मुजरिम क़सम खाकर कहेंगे कि वे एक घड़ी से ज़्यादा नहीं रहे। इस तरह वे फेरे जाते थे। और जिन लोगों को इल्म व ईमान अता हुआ था वे कहेंगे कि अल्लाह की किताब में तो तुम हश्र (जीवित हो उठने) के दिन तक पड़े रहे। पस यह हश्र (जीवित हो उठने) का दिन है, लेकिन तुम जानते न थे। पस उस दिन ज़ालिमों को उनकी मअज़रत (सफ़ाई पेश करना) कुछ नफ़ा न देगी और न उनसे माफ़ी मांगने के लिए कहा जाएगा। (54-57)

और हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर क़िस्म की मिसालें बयान की हैं। और अगर तुम उनके पास कोई निशानी ले आओ तो जिन लोगों ने इंकार किया है वे यही कहेंगे कि तुम सब बातिल (असत्य) पर हो। इस तरह अल्लाह मुहर कर देता है उन लोगों के दिलों पर जो नहीं जानते। पस तुम सब्र करो, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है। और तुम्हें बेबरदाश्त न कर दें वे लोग जो यक़ीन नहीं रखते। (58-60)

सूरह-31. लुक़मान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़० लाम० मीम०। ये पुरहिक्मत (तत्वज्ञानपूर्ण) किताब की आयतें हैं, हिदायत और रहमत नेकी करने वालों के लिए। जो कि नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं। और वे आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं।

ये लोग अपने रब के सीधे रास्ते पर हैं और यही लोग फ़लाह (कल्याण, सफलता) पाने वाले हैं। (1-5)

और लोगों में कोई ऐसा है जो उन बातों का ख़रीदार बनता है जो ग़ाफ़िल करने वाली हैं। ताकि अल्लाह की राह से गुमराह करे, बग़ैर किसी इल्म के। और उसकी हंसी उड़ाए। ऐसे लोगों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। और जब उन्हें हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह तकब्बुर (घमंड) करता हुआ मुंह मोड़ लेता है, जैसे उसने सुना ही नहीं, जैसे उसके कानों में बहरापन है। तो उसे एक दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो। बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किया। उनके लिए नेमत के बाग़ हैं। उनमें वे हमेशा रहेंगे। यह अल्लाह का पुख़्ता वादा है और वह ज़बरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (6-9)

अल्लाह ने आसमानों को पैदा किया, ऐसे सुतूनों (स्तंभों) के बग़ैर जो तुम्हें नज़र आएं। और उसने ज़मीन में पहाड़ रख दिए कि वे तुम्हें लेकर झुक न जाए। और उसमें हर क़िस्म के जानदार फैला दिए। और हमने आसमान से पानी उतारा फिर ज़मीन में हर क़िस्म की उम्दा चीज़ें उगाईं। यह है अल्लाह की तख़्लीक़, तो तुम मुझे दिखाओ कि उसके सिवा जो हैं उन्होंने क्या पैदा किया है। बल्कि ज़ालिम लोग खुली गुमराही में हैं। (10-11)

और हमने लुक़मान को हिक्मत (तत्वज्ञान) अता फ़रमाई कि अल्लाह का शुक्र करो। और जो शख़्स शुक्र करेगा तो वह अपने ही लिए शुक्र करेगा और जो नाशुक्री करेगा तो अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है ख़ूबियों वाला है। और जब लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि ऐ मेरे बेटे, अल्लाह के साथ शरीक न ठहराना, बेशक शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है। (12-13)

और हमने इंसान को उसके मां-बाप के मामले में ताकीद की। उसकी मां ने दुख पर दुख उठाकर उसे पेट में रखा और दो वर्ष में उसका दूध छुड़ाना हुआ। कि तू मेरा शुक्र कर और अपने वालिदैन का। मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है और अगर वे दोनों तुझ पर ज़ोर डालें कि तू मेरे साथ ऐसी चीज़ को शरीक ठहराए जो तुझे मालूम नहीं तो उनकी बात न मानना। और दुनिया में

उनके साथ नेक बर्ताव करना। और तुम उस शख़्स के रास्ते की पैरवी करना जिसने मेरी तरफ़ रुजूअ किया है। फिर तुम सबको मेरे पास आना है। फिर मैं तुम्हें बता दूंगा जो कुछ तुम करते रहे। (14-15)

ऐ मेरे बेटे, कोई अमल अगर राई के दाने के बराबर हो फिर वह किसी पत्थर के अंदर हो या आसमानों में हो या ज़मीन में हो, अल्लाह उसे हाज़िर कर देगा। बेशक अल्लाह बारीकबीं है, बाख़बर है। ऐ मेरे बेटे नमाज़ क़ायम करो, अच्छे काम की नसीहत करो और बुराई से रोको और जो मुसीबत तुम्हें पहुंचे उस पर सब्र करो। बेशक यह हिम्मत के कामों में से है। और लोगों से बेरुख़ी न कर। और ज़मीन में अकड़ कर न चल। बेशक अल्लाह किसी अकड़ने वाले और फ़ख़्र करने वाले को पसंद नहीं करता। और अपनी चाल में मियानारवी (शालीनता) इख़्तियार कर और अपनी आवाज़ को पस्त कर। बेशक सबसे बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है। (16-19)

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने तुम्हारे काम में लगा दिया है जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है। और उसने अपनी खुली और छुपी नेमतें तुम पर तमाम कर दीं। और लोगों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, किसी इल्म और किसी हिदायत और किसी रोशन किताब के बग़ैर। और जब उनसे कहा जाता है कि तुम पैरवी करो उस चीज़ की जो अल्लाह ने उतारी है तो वे कहते हैं कि नहीं, हम उस चीज़ की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है। क्या अगर शैतान उन्हें आग के अज़ाब की तरफ़ बुला रहा हो तब भी। (20-21)

और जो शख़्स अपना रुख़ अल्लाह की तरफ़ झुका दे और वह नेक अमल करने वाला भी हो तो उसने मज़बूत रस्सी पकड़ ली। और अल्लाह ही की तरफ़ है तमाम मामलात का अंजामकार। और जिसने इंकार किया तो उसका इंकार तुम्हें ग़मगीन न करे। हमारी ही तरफ़ है उनकी वापसी। तो हम उन्हें बता देंगे जो कुछ उन्होंने किया। बेशक अल्लाह दिलों की बात से भी वाक़िफ़ है। उन्हें हम थोड़ी मुद्दत फ़ायदा देंगे। फिर उन्हें एक सख़्त अज़ाब की तरफ़ खींच लाएंगे। (22-24)

और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया, तो वे ज़रूर कहेंगे कि अल्लाह ने। कहो कि सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है, बल्कि उनमें से अक्सर नहीं जानते। अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और ज़मीन में। बेशक अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है, ख़ूबियों वाला है। और अगर ज़मीन में जो दरख़्त हैं वे क़लम बन जाएं और समुद्र, सात अतिरिक्त समुद्रों के साथ, रोशनाई बन जाएं, तब भी अल्लाह की बातें ख़त्म न हों। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (25-27)

तुम सबका पैदा करना और ज़िंदा करना बस ऐसा ही है जैसा एक शख़्स का। बेशक अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है। और उसने सूरज और चांद को काम में लगा दिया है। हर एक चलता है एक मुक़र्रर वक़्त तक। और यह कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। यह इस वजह से है कि अल्लाह ही हक़ है। और उसके सिवा जिन चीज़ों को वे पुकारते हैं वे बातिल हैं और बेशक अल्लाह बरतर (सर्वोच्च) है, बड़ा है। (28-30)

क्या तुमने देखा नहीं कि कश्ती समुद्र में अल्लाह के फ़ज़्ल (अनुग्रह) से चलती है ताकि वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाए। बेशक इसमें निशानियां हैं हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। और जब मौत उनके सर पर बादल की तरह छा जाती है, वे अल्लाह को पुकारते हैं उसके लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। फिर जब वह उन्हें नजात देकर ख़ुश्की की तरफ़ ले आता है तो उनमें कुछ एतदाल (संतुलित मार्ग) पर रहते हैं। और हमारी निशानियों का इंकार वही लोग करते हैं जो बदअहद (वचन तोड़ने वाले) और नाशुक्रगुज़ार हैं। (31-32)

ऐ लोगो अपने रब से डरो और उस दिन से डरो जबकि कोई बाप अपने बेटे की तरफ़ से बदला न देगा और न कोई बेटा अपने बाप की तरफ़ से कुछ बदला देने वाला होगा। बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है तो दुनिया की ज़िंदगी तुम्हें धोखे में न डाले न धोखेबाज़ तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने

पाए। बेशक अल्लाह ही को क़ियामत का इल्म है और वही बारिश बरसाता है और वह जानता है जो कुछ रहम (गर्भ) में है। और कोई शख़्स नहीं जानता कि कल वह क्या कमाई करेगा। और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा। बेशक अल्लाह जानने वाला, बाख़बर है। (33-34)

सूरह-32. अस-सज्दह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़० लाम० मीम०। यह नाज़िल की हुई किताब है, इसमें कुछ शुबह नहीं, ख़ुदावंद आलम की तरफ़ से है। क्या वे कहते हैं कि इस शख़्स ने इसे ख़ुद गढ़ लिया है। बल्कि यह हक़ है तुम्हारे रब की तरफ़ से, ताकि तुम उन लोगों को डरा दो जिनके पास तुमसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया, ताकि वे राह पर आ जाएं। (1-3)

अल्लाह ही है जिसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को और जो इनके दर्मियान है छः दिनों में, फिर वह अर्श (सिंहासन) पर क़ायम हुआ। उसके सिवा न तुम्हारा कोई मददगार है और न कोई सिफ़ारिश करने वाला। तो क्या तुम ध्यान नहीं करते। वह आसमान से ज़मीन तक तमाम मामलात की तदबीर करता है। फिर वे उसकी तरफ़ लौटते हैं एक ऐसे दिन में जिसकी मिक़्दार तुम्हारी गिनती से हज़ार साल के बराबर है। वही है पोशीदा और ज़ाहिर को जानने वाला। ज़बरदस्त है, रहमत वाला है। उसने जो चीज़ भी बनाई ख़ूब बनाई। और उसने इंसान की तख़्लीक़ की इब्तिदा मिट्टी से की। फिर उसकी नस्ल हक़ीर पानी के ख़ुलासा (सत्त) से चलाई। फिर उसके आज़ा (शरीरांग) दुरुस्त किए। और उसमें अपनी रूह फूंकी। तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनाए। तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो। (4-9)

और उन्होंने कहा कि क्या जब हम ज़मीन में गुम हो जाएंगे तो हम फिर नए सिरे से पैदा किया जाएंगे। बल्कि वे अपने रब की मुलाक़ात के मुंकिर हैं। कहो कि मौत का फ़रिश्ता तुम्हारी जान क़ब्ज़ करता है जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है। फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे।

और काश तुम देखो जबकि ये मुजरिम लोग अपने रब के सामने सर झुकाए होंगे। ऐ हमारे रब, हमने देख लिया और हमने सुन लिया तू हमें वापस भेज दे कि हम नेक काम करें। हम यक़ीन करने वाले बन गए। और अगर हम चाहते तो हर शख़्स को उसकी हिदायत दे देते। लेकिन मेरी बात साबित हो चुकी कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों से भर दूंगा। तो अब मज़ा चखो इस बात का कि तुमने इस दिन की मुलाक़ात को भुला दिया। हमने भी तुम्हें भुला दिया। और अपने किए की बदौलत हमेशा का अज़ाब चखो। (10-14)

हमारी आयतों पर वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उन्हें उनके ज़रिए से याददिहानी की जाती है तो वे सज्दे में गिर पड़ते हैं और अपने रब की हम्द के साथ उसकी तस्बीह करते हैं। और वे तकब्बुर (घमंड) नहीं करते। उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं। वे अपने रब को पुकारते हैं डर से और उम्मीद से। और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। तो किसी को ख़बर नहीं कि उन लोगों के लिए उनके आमाल के बदले में आंखों की क्या ठंडक छुपा रखी गई है। (15-17)

तो क्या जो मोमिन है वह उस शख़्स जैसा होगा जो नाफ़रमान है। दोनों बराबर नहीं हो सकते। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो उनके लिए जन्नत की क़ियामगाहें हैं, ज़ियाफ़त (सत्कार) उन कामों की वजह से जो वे करते थे। और जिन लोगों ने नाफ़रमानी की तो उनका ठिकाना आग है, वे लोग जब उससे निकलना चाहेंगे तो फिर उसी में धकेल दिए जाएंगे। और उनसे कहा जाएगा कि आग का अज़ाब चखो जिसे तुम झुठलाते थे। और हम उन्हें बड़े अज़ाब से पहले क़रीब का अज़ाब चखाएंगे शायद कि वे बाज़ आ जाएं। और उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के ज़रिए नसीहत की जाए। फिर वह उनसे मुंह मोड़े हम ऐसे मुजरिमों से ज़रूर बदला लेंगे। (18-22)

और हमने मूसा को किताब दी। तो तुम उसके मिलने में कुछ शक न करो। और हमने उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया। और हमने उनमें पेशवा बनाए जो हमारे हुक्म से लोगों की रहनुमाई करते थे। जबकि

उन्होंने सब्र किया। और वे हमारी आयतों पर यक़ीन रखते थे। बेशक तेरा रब क़ियामत के दिन उनके दर्मियान उन मामलों में फ़ैसला कर देगा जिनमें वे बाहम इख़्तेलाफ़ (मतभेद) करते थे। क्या उनके लिए यह चीज़ हिदायत देने वाली न बनी कि उनसे पहले हमने कितनी क़ौमों को हलाक कर दिया। जिनकी बस्तियों में ये लोग आते जाते हैं। बेशक इसमें निशानियां हैं, क्या ये लोग सुनते नहीं। (23-26)

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम पानी को चटियल ज़मीन की तरफ़ हांककर ले जाते हैं। फिर हम उससे खेती निकालते हैं जिससे उनके चौपाए खाते हैं और वे ख़ुद भी। फिर क्या वे देखते नहीं। और वे कहते हैं कि यह फ़ैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो कि फ़ैसले के दिन उन लोगों का ईमान नफ़ा न देगा जिन्होंने इंकार किया। और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। तो उनसे दूर रहो और इंतज़ार करो, ये भी मुंतज़िर हैं। (27-30)

सूरह-33. अल-अहज़ाब

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ नबी, अल्लाह से डरो और मुंकिरों और मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) की इताअत (आज्ञापालन) न करो, बेशक अल्लाह जानने वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और पैरवी करो उस चीज़ की जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है, बेशक अल्लाह बाख़बर है उससे जो तुम लोग करते हो। और अल्लाह पर भरोसा रखो, और अल्लाह कारसाज़ (कार्यपालक) होने के लिए काफ़ी है। (1-3)

अल्लाह ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं रखे, और न तुम्हारी बीवियों को जिनसे तुम ज़िहार (तलाक देने की एक सूरत जिसमें शहिर अपनी बीबी से कहता था कि तुम मेरे लिए मेरी माँ की पीठ की तरह हो।) करते हो तुम्हारी मां बनाया और न तुम्हारे मुंह बोले बेटों को तुम्हारा बेटा बना दिया। ये सब तुम्हारे अपने मुंह की बातें हैं। और अल्लाह हक़ बात कहता है और वह सीधा रास्ता दिखाता है। मुंह बोले बेटों को उनके बापों

की निस्बत से पुकारो यह अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा मुंसिफ़ाना बात है। फिर अगर तुम उनके बाप को न जानो तो वे तुम्हारे दीनी भाई हैं और तुम्हारे रफ़ीक़ हैं। और जिस चीज़ में तुमसे भूल चूक हो जाए तो उसका तुम पर कुछ गुनाह नहीं मगर जो तुम दिल से इरादा करके करो। और अल्लाह माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है। (4-5)

और नबी का हक़ मोमिनों पर उनकी अपनी जान से भी ज़्यादा है, और नबी की बीवियां उनकी माएं हैं। और रिश्तेदार ख़ुदा की किताब में, दूसरे मोमिनीन और मुहाजिरीन की बनिस्बत, एक दूसरे से ज़्यादा तअल्लुक़ रखते हैं। मगर यह कि तुम अपने दोस्तों से कुछ सुलूक करना चाहो। यह किताब में लिखा हुआ है। (6)

और जब हमने पैग़म्बरों से उनका अहद (वचन) लिया और तुमसे और नूह से और इब्राहीम और मूसा और ईसा बिन मरयम से। और हमने उनसे पुख़्ता अहद लिया। ताकि अल्लाह सच्चे लोगों से उनकी सच्चाई के बारे में सवाल करे, और मुंकिरों के लिए उसने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। (7-8)

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो, जब तुम पर फ़ौजें चढ़ आईं तो हमने उन पर एक आंधी भेजी और ऐसी फ़ौज जो तुम्हें दिखाई न देती थी। और अल्लाह देखने वाला है जो कुछ तुम करते हो। जबकि वे तुम पर चढ़ आए, तुम्हारे ऊपर की तरफ़ से और तुम्हारे नीचे की तरफ़ से। और जब आंखें खुल गईं और दिल गलों तक पहुंच गए और तुम अल्लाह के साथ तरह-तरह के गुमान करने लगे। उस वक़्त ईमान वाले इम्तेहान में डाले गए और बिल्कुल हिला दिए गए। (9-11)

और जब मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) और वे लोग जिनके दिलों में रोग है, कहते थे कि अल्लाह और उसके रसूल ने जो वादा हमसे किया था वह सिर्फ़ फ़रेब था। और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा कि ऐ यसरिब वालो, तुम्हारे लिए ठहरने का मौक़ा नहीं, तो तुम लौट चलो। और उनमें से एक गिरोह पैग़म्बर से इजाज़त मांगता था, वह कहता था कि हमारे घर ग़ैर महफ़ूज़ हैं, और वे ग़ैर महफ़ूज़ नहीं। वे सिर्फ़ भागना चाहते थे। और अगर मदीना के

अतराफ़ से उन पर कोई घुस आता और उन्हें फ़ितने की दावत देता तो वे मान लेते और वे इसमें बहुत कम देर करते। और उन्होंने इससे पहले अल्लाह से अहद किया था कि वे पीठ न फेरेंगे। और अल्लाह से किए हुए अहद (वचन) की पूछ होगी। कहो कि अगर तुम मौत से या क़त्ल से भागो तो यह भागना तुम्हारे कुछ काम न आएगा। और इस हालत में तुम्हें सिर्फ़ थोड़े दिनों फ़ायदा उठाने का मौक़ा मिलेगा। कहो, कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचाए अगर वह तुम्हें नुक़सान पहुंचाना चाहे, या वह तुम पर रहमत करना चाहे। और वे अपने लिए अल्लाह के मुक़ाबले में कोई हिमायती और मददगार न पाएंगे। (12-17)

अल्लाह तुम में से उन लोगों को जानता है जो तुम में से रोकने वाले हैं और जो अपने भाइयों से कहते हैं कि हमारे पास आ जाओ। और वे लड़ाई में कम ही आते हैं। वे तुमसे बुख़्ल (कृपणता) करते हैं। पस जब ख़ौफ़ पेश आता है तो तुम देखते हो कि वे तुम्हारी तरफ़ इस तरह देखने लगते हैं कि उनकी आंखें उस शख़्स की आंखों की तरह गर्दिश कर रही हैं जिस पर मौत की बेहोशी तारी हो। फिर जब ख़तरा दूर हो जाता है तो वे माल की हिर्स में तुमसे तेज़ ज़बानी के साथ मिलते हैं। ये लोग यक़ीन नहीं लाए तो अल्लाह ने उनके आमाल अकारत कर दिए। और यह अल्लाह के लिए आसान है। वे समझते हैं कि फ़ौजें अभी गई नहीं हैं। और अगर फ़ौजें आ जाएं तो ये लोग यही पसंद करें कि काश हम बद्दुओं के साथ देहात में हों, तुम्हारी ख़बरें पूछते रहें। और अगर वे तुम्हारे साथ होते तो लड़ाई में कम ही हिस्सा लेते। (18-20)

तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में बेहतरीन नमूना था, उस शख़्स के लिए जो अल्लाह का और आख़िरत के दिन का उम्मीदवार हो और कसरत से अल्लाह को याद करे। और जब ईमान वालों ने फ़ौजों को देखा, वे बोले यह वही है जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा। और इसने उनके ईमान और इताअत में इज़ाफ़ा कर दिया। ईमान वालों में ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने अल्लाह से

किए हुए अहद (वचन) को पूरा कर दिखाया। पस उनमें से कोई अपना ज़िम्मा पूरा कर चुका और उनमें से कोई मुंतज़िर है। और उन्होंने ज़रा भी तब्दीली नहीं की। ताकि अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे और मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) को अज़ाब दे अगर चाहे या उनकी तौबा क़ुबूल करे। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (21-24)

और अल्लाह ने मुंकिरों को उनके ग़ुस्से के साथ फेर दिया कि उनकी कुछ भी मुराद पूरी न हुई और मोमिनीन की तरफ़ से अल्लाह लड़ने के लिए काफ़ी हो गया। अल्लाह क़ुव्वत (शक्ति) वाला ज़बरदस्त है। और अल्लाह ने उन अहले किताब को जिन्होंने हमलाआवरों का साथ दिया उनके क़िलों से उतारा। और उनके दिलों में उसने रौब डाल दिया, तुम उनके एक गिरोह को क़त्ल कर रहे हो और एक गिरोह को क़ैद कर रहे हो। और उसने उनकी ज़मीन और उनके घरों और उनके मालों का तुम्हें वारिस बना दिया। और ऐसी ज़मीन का भी जिस पर तुमने क़दम नहीं रखा। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (25-27)

ऐ नबी, अपनी बीवियों से कहो कि अगर तुम दुनिया की ज़िंदगी और उसकी ज़ीनत चाहती हो तो आओ, मैं तुम्हें कुछ माल व मताअ देकर ख़ूबी के साथ रुख़्सत कर दूं। और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत के घर को चाहती हो तो अल्लाह ने तुम में से नेक किरदारों के लिए बड़ा अज्र मुहय्या कर रखा है। ऐ नबी की बीवियो, तुम में से जो कोई खुली बेहयाई करेगी, उसे दोहरा अज़ाब दिया जाएगा। और यह अल्लाह के लिए आसान है। (28-30)

और तुम में से जो अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी करेगी और नेक अमल करेगी तो हम उसे उसका दोहरा अज्र देंगे। और हमने उसके लिए बाइज़्ज़त रोज़ी तैयार कर रखी है। ऐ नबी की बीवियो, तुम आम औरतों की तरह नहीं हो। अगर तुम अल्लाह से डरो तो तुम लहजे में नर्मी न इख़्तियार करो कि जिसके दिल में बीमारी है वह लालच में पड़ जाए और मारूफ़ (सामान्य नियम) के मुताबिक़ बात कहो। (31-32)

और तुम अपने घर में क़रार से रहो और पहले की जाहिलियत की तरह दिखलाती न फिरो। और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो। अल्लाह तो चाहता है कि तुम अहलेबैत (रसूल के घरवालों) से आलूदगी को दूर करे और तुम्हें पूरी तरह पाक कर दे। और तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतों और हिक्मत (तत्वज्ञान) की जो तालीम होती है उसे याद रखो। बेशक अल्लाह बारीकबीं (सूक्ष्मदर्शी) है ख़बर रखने वाला है। (33-34)

बेशक इताअत (आज्ञापालन) करने वाले मर्द और इताअत करने वाली औरतें। और ईमान लाने वाले मर्द और ईमान लाने वाली औरतें। और फ़रमांबरदारी करने वाले मर्द और फ़रमांबरदारी करने वाली औरतें। और रास्तबाज़ (सत्यनिष्ठ) मर्द और रास्तबाज़ औरतें। और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें। और ख़ुशूअ (विनय) करने वाले मर्द और ख़ुशूअ करने वाली औरतें। और सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें। और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें। और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें। और अल्लाह को कसरत (अधिकता) से याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें। इनके लिए अल्लाह ने मग़्फ़िरत और बड़ा अज्र मुहय्या कर रखा है। (35)

किसी मोमिन मर्द या किसी मोमिन औरत के लिए गुंजाइश नहीं है कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मामले का फ़ैसला कर दें तो फिर उनके लिए उसमें इख़्तियार बाक़ी रहे। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा तो वह सरीह गुमराही में पड़ गया। (36)

और जब तुम उस शख़्स से कह रहे थे जिस पर अल्लाह ने इनाम किया और तुमने इनाम किया कि अपनी बीवी को रोके रखो और अल्लाह से डरो। और तुम अपने दिल में वह बात छुपाए हुए थे जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था। और तुम लोगों से डर रहे थे, और अल्लाह ज़्यादा हक़दार है कि तुम उससे डरो। फिर जब ज़ैद उससे अपनी ग़रज़ तमाम कर चुका, हमने तुमसे उसका निकाह कर दिया ताकि मुसलमानों पर अपने मुंह बोले बेटों की

बीवियों के बारे में कुछ तंगी न रहे। जबकि वे उनसे अपनी ग़रज़ पूरी कर लें। और अल्लाह का हुक्म होने वाला ही था। (37)

पैग़म्बर के लिए इसमें कोई हरज नहीं जो अल्लाह ने उसके लिए मुक़र्रर कर दिया हो। यही अल्लाह की सुन्नत (तरीक़ा) उन पैग़म्बरों के साथ रही है जो पहले गुज़र चुके हैं। और अल्लाह का हुक्म एक क़तई फ़ैसला होता है। वे अल्लाह के पैग़ामों को पहुंचाते थे और उसी से डरते थे और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते थे। और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफ़ी है। मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल और नबियों के ख़ातम (समापक) हैं। और अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखने वाला है। (38-40)

ऐ ईमान वालो, अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करो। और उसकी तस्बीह करो सुबह और शाम। वही है जो तुम पर रहमत भेजता है और उसके फ़रिश्ते भी ताकि तुम्हें तारीकियों से निकाल कर रोशनी में लाए। और वह मोमिनों पर बहुत महरबान है। जिस रोज़ वे उससे मिलेंगे, उनका इस्तक़बाल सलाम से होगा। और उसने उनके लिए बाइज़्ज़त सिला (प्रतिफल) तैयार कर रखा है। (41-44)

ऐ नबी, हमने तुम्हें गवाही देने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। और अल्लाह की तरफ़, उसके इज़्न (आज्ञा) से, दावत देने वाला (आह्वानकर्ता) और एक रोशन चराग़। और मोमिनों को बशारत (शुभ सूचना) दे दो कि उनके लिए अल्लाह की तरफ़ से बहुत बड़ा फ़ज़्ल (अनुग्रह) है। और तुम मुंकिरों और मुनाफ़िक़ों की बात न मानो और उनके सताने को नज़रअंदाज़ करो और अल्लाह पर भरोसा रखो। और अल्लाह भरोसे के लिए काफ़ी है। (45-48)

ऐ ईमान वालो, जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो, फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो तो उनके बारे में तुम पर कोई इद्‌दत लाज़िम नहीं है जिसका तुम शुमार करो। पस उन्हें कुछ मताअ (सामग्री) दे दो और ख़ूबी के साथ उन्हें रुख़्सत कर दो। (49)

ऐ नबी हमने तुम्हारे लिए हलाल कर दीं तुम्हारी वे बीवियां जिनकी महर तुम दे चुके हो और वे औरतें भी जो तुम्हारी ममलूका (मिल्कियत में) हैं जो अल्लाह ने ग़नीमत में तुम्हें दी हैं और तुम्हारे चचा की बेटियां और तुम्हारी फूफियों की बेटियां और तुम्हारे मामुओं की बेटियां और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियां जिन्होंने तुम्हारे साथ हिजरत की हो। और उस मुसलमान औरत को भी जो अपने आपको पैग़म्बर को दे दे, बशर्ते कि पैग़म्बर उसे निकाह में लाना चाहे, यह ख़ास तुम्हारे लिए है, मुसलमानों से अलग। हमें मालूम है जो हमने उन पर उनकी बीवियों और उनकी दासियों के बारे में फ़र्ज़ किया है, ताकि तुम पर कोई तंगी न रहे और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (50)

तुम उनमें से जिस-जिसको चाहो दूर रखो और जिसे चाहो अपने पास रखो। और जिन्हें दूर किया था उनमें से फिर किसी को तलब करो तब भी तुम पर कोई गुनाह नहीं। इसमें ज़्यादा तवक़्क़ोअ (संभावना) है कि उनकी आंखें ठंडी रहेंगी, और वे रंजीदा न होंगी। और वे इस पर राज़ी रहें जो तुम उन सबको दो। और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह जानने वाला है, बुर्दबार (उदार) है। इनके अलावा और औरतें तुम्हारे लिए हलाल नहीं हैं। और न यह दुरुस्त है कि तुम उनकी जगह दूसरी बीवियां कर लो, अगरचे उनकी सूरत तुम्हें अच्छी लगे। मगर जो तुम्हारी ममलूका (मिल्कियत में) हो। और अल्लाह हर चीज़ पर निगरां है। (51-52)

ऐ ईमान वालो, नबी के घरों में मत जाया करो मगर जिस वक़्त तुम्हें खाने के लिए इजाज़त दी जाए, ऐसे तौर पर कि उसकी तैयारी के मुंतज़िर न रहो। लेकिन जब तुम्हें बुलाया जाए तो दाख़िल हो। फिर जब तुम खा चुको तो उठकर चले जाओ और बातों में लगे हुए बैठे न रहो। इस बात से नबी को नागवारी होती है। मगर वह तुम्हारा लिहाज़ करते हैं। और अल्लाह हक़ बात कहने में किसी का लिहाज़ नहीं करता। और जब तुम रसूल की बीवियों से कोई चीज़ मांगो तो पर्दे की ओट से मांगो। यह तरीक़ा तुम्हारे दिलों के लिए ज़्यादा पाकीज़ा है और उनके दिलों के लिए भी। और तुम्हारे लिए जाइज़ नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल को तकलीफ़ दो और न यह जाइज़ है कि तुम

उनके बाद उनकी बीवियों से कभी निकाह करो। यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी संगीन बात है। तुम किसी चीज़ को ज़ाहिर करो या उसे छुपाओ तो अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (53-54)

पैग़म्बर की बीवियों पर अपने बापों के बारे में कोई गुनाह नहीं है। और न अपने बेटों के बारे में और न अपने भाइयों के बारे में और न अपने भतीजों के बारे में और न अपने भांजों के बारे में और न अपनी औरतों के बारे में और न अपनी दासियों के बारे में। और तुम अल्लाह से डरती रहो, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर निगाह रखता है। (55)

अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं। ऐ ईमान वालो, तुम भी उस पर दुरूद व सलाम भेजो। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को अज़िय्यत (यातना) देते हैं, अल्लाह ने उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत की और उनके लिए ज़लील करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को अज़िय्यत देते हैं बग़ैर इसके कि उन्होंने कुछ किया हो तो उन्होंने बोहतान का और सरीह गुनाह का बोझ उठाया। (56-58)

ऐ नबी, अपनी बीवियों से कहो और अपनी बेटियों से और मुसलमानों की औरतों से कि नीचे कर लिया करें अपने ऊपर थोड़ी सी अपनी चादरें इससे जल्दी पहचान हो जाएगी तो वे सताई न जाएंगी। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) और वे लोग जिनके दिलों में रोग है और जो मदीना में झूठी ख़बरें फैलाने वाले हैं, अगर वे बाज़ न आए तो हम तुम्हें उनके पीछे लगा देंगे। फिर वे तुम्हारे साथ मदीना में बहुत कम रहने पाएंगे। फिटकारे हुए, जहां पाए जाएंगे पकड़े जाएंगे और बुरी तरह मारे जाएंगे। यह अल्लाह का दस्तूर है उन लोगों के बारे में जो पहले गुज़र चुके हैं। और तुम अल्लाह के दस्तूर में कोई तब्दीली न पाओगे। (59-62)

लोग तुमसे क़ियामत के बारे में पूछते हैं। कहो कि उसका इल्म तो सिर्फ़ अल्लाह के पास है। और तुम्हें क्या ख़बर, शायद क़ियामत क़रीब आ लगी

हो। बेशक अल्लाह ने मुंकिरों को रहमत से दूर कर दिया है। और उनके लिए भड़कती हुई आग तैयार है, उसमें वे हमेशा रहेंगे। वे न कोई हामी पाएंगे और न कोई मददगार। जिस दिन उनके चेहरे आग में उलट-पलट किए जाएंगे, वे कहेंगे, ऐ काश हमने अल्लाह की इताअत की होती और हमने रसूल की इताअत (आज्ञापालन) की होती। और वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब, हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहना माना तो उन्होंने हमें रास्ते से भटका दिया। ऐ हमारे रब, उन्हें दोहरा अज़ाब दे और उन पर भारी लानत कर। (63-68)

ऐ ईमान वालो, तुम उन लोगों की तरह न बनो जिन्होंने मूसा को अज़िय्यत (यातना) पहुंचाई तो अल्लाह ने उसे उन लोगों की बातों से बरी साबित किया। और वह अल्लाह के नज़दीक बाइज़्ज़त था। ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और दुरुस्त बात कहो। वह तुम्हारे आमाल सुधारेगा और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करे उसने बड़ी कामयाबी हासिल की। (69-71)

हमने अमानत को आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश किया तो उन्होंने उसे उठाने से इंकार किया और वे उससे डर गए, और इंसान ने उसे उठा लिया। बेशक वह ज़ालिम और जाहिल था। ताकि अल्लाह मुनाफ़िक (पाखंडी) मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को सज़ा दे। और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों पर तवज्जोह फ़रमाए। और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (72-73)

सूरह-34. सबा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

तारीफ़ ख़ुदा के लिए है जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है और उसी की तारीफ़ है आख़िरत में और वह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला जानने वाला है। वह जानता है जो कुछ ज़मीन के अंदर दाख़िल होता है और जो कुछ उससे निकलता है। और जो आसमान से उतरता है और जो उसमें चढ़ता है। और वह रहमत वाला बख़्शने वाला है। (1-2)

और जिन्होंने इंकार किया वे कहते हैं कि हम पर क़ियामत नहीं आएगी। कहो कि क्यों नहीं, क़सम है मेरे परवरदिगार आलिमुलग़ैब की, वह ज़रूर तुम पर आएगी। उससे ज़र्रा बराबर कोई चीज़ छुपी नहीं, न आसमानों में और न ज़मीन में। और न कोई चीज़ उससे छोटी और न बड़ी, मगर वह एक खुली किताब में है। ताकि वह उन लोगों को बदला दे जो ईमान लाए और नेक काम किया। यही लोग हैं जिनके लिए माफ़ी है और इज़्ज़त की रोज़ी। और जिन लोगों ने हमारी आयतों को आजिज़ (मात) करने की कोशिश की, उनके लिए सख़्ती का दर्दनाक अज़ाब है। और जिन्हें इल्म दिया गया वे, उस चीज़ को जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे पास भेजा गया है, जानते हैं कि वह हक़ है और वह ख़ुदाए अज़ीज़ (प्रभुत्वशाली) व हमीद (प्रशंस्य) का रास्ता दिखाता है। (3-6)

और जिन्होंने इंकार किया वे कहते हैं, क्या हम तुम्हें एक ऐसा आदमी बताएं जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम बिल्कुल रेज़ा-रेज़ा हो जाओगे तो फिर तुम्हें नए सिरे से बनना है। क्या उसने अल्लाह पर झूठ बांधा है या उसे किसी तरह का जुनून है। बल्कि जो लोग आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते वही अज़ाब में और दूर की गुमराही में मुब्तिला हैं। तो क्या उन्होंने आसमान और ज़मीन की तरफ़ नज़र नहीं की जो उनके आगे है और उनके पीछे भी। अगर हम चाहें तो उन्हें ज़मीन में धंसा दें या उन पर आसमान से टुकड़ा गिरा दें। बेशक इसमें निशानी है हर उस बंदे के लिए जो मुतवज्जह होने वाला हो। (7-9)

और हमने दाऊद को अपनी तरफ़ से बड़ी नेमत दी। ऐ पहाड़ो तुम भी उसके साथ तस्बीह में शिरकत करो। और इसी तरह परिंदों को हुक्म दिया। और हमने लोहे को उसके लिए नर्म कर दिया कि तुम कुशादा ज़िरहें (कवच) बनाओ और कड़ियों को अंदाज़े से जोड़ो। और नेक अमल करो, जो कुछ तुम करते हो उसे मैं देख रहा हूं। (10-11)

और सुलैमान के लिए हमने हवा को मुसख़्ख़र (अधीन) कर दिया, उसकी सुबह की मंज़िल एक महीने की होती और उसकी शाम की मंज़िल एक महीने

की। और हमने उसके लिए तांबे का चशमा बहा दिया। और जिन्नात में से ऐसे थे जो उसके रब के हुक्म से उसके आगे काम करते थे। और उनमें से जो कोई हमारे हुक्म से फिरे तो हम उसे आग का अज़ाब चखाएंगे। वे उसके लिए बनाते जो वह चाहता, इमारतें और तस्वीरें और हौज़ जैसे लगन (थाल) और जमी हुई देगें। ऐ आले दाऊद, शुक्रगुज़ारी के साथ अमल करो और मेरे बंदों में कम ही शुक्रगुज़ार हैं। (12-13)

फिर जब हमने उस पर मौत का फ़ैसला नाफ़िज़ किया तो किसी चीज़ ने उन्हें उसके मरने का पता नहीं दिया मगर ज़मीन के कीड़े ने, वह उसकी लाठी को खाता था। पस जब वह गिर पड़ा तब जिन्नों पर खुला कि अगर वे ग़ैब (अप्रकट) को जानते तो इस ज़िल्लत की मुसीबत में न रहते। (14)

सबा के लिए उनके अपने मस्कन (आवासीय क्षेत्र) में निशानी थी। दो बाग़ दाएं और बाएं, अपने रब के रिज़्क़ से खाओ और उसका शुक्र करो। उम्दा शहर और बख़्शने वाला रब। पस उन्होंने सरताबी (विमुखता) की तो हमने उन पर बांध का सैलाब भेज दिया और उनके बाग़ों को दो ऐसे बाग़ों से बदल दिया जिनमें बदमज़ा फल और झाव के दरख़्त और कुछ थोड़े से बेर। यह हमने उनकी नाशुक्री का बदला दिया और ऐसा बदला हम उसी को देते हैं जो नाशुक्र हो। (15-17)

और हमने उनके और उनकी बस्तियों के दर्मियान, जहां हमने बरकत रखी थी, ऐसी बस्तियां आबाद कीं जो नज़र आती थीं। और हमने उनके दर्मियान सफ़र की मंज़िलें ठहरा दीं। उनमें रात दिन अम्न के साथ चलो। फिर उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब, हमारे सफ़रों के दर्मियान दूरी डाल दे। और उन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया तो हमने उन्हें अफ़साना बना दिया और हमने उन्हें बिल्कुल तितर-बितर कर दिया। बेशक इसमें निशानी है हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। (18-19)

और इब्लीस (शैतान) ने उनके ऊपर अपना गुमान सच कर दिखाया। पस उन्होंने उसकी पैरवी की मगर ईमान वालों का एक गिरोह। और इब्लीस को उनके ऊपर कोई इख़्तियार न था, मगर यह कि हम मालूम कर लें उन

लोगों को जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं उन लोगों से (अलग करके जो उसकी तरफ़ से शक में हैं) और तुम्हारा रब हर चीज़ पर निगरां (निगरानी करने वाला) है। (20-21)

कहो कि उन्हें पुकारो जिन्हें तुमने ख़ुदा के सिवा माबूद (पूज्य) समझ रखा है, वे न आसमानों में ज़र्रा बराबर इख़्तियार रखते और न ज़मीन में और न इन दोनों में उनकी कोई शिरकत है। और न इनमें से कोई उसका मददगार है। और उसके सामने कोई शफ़ाअत (सिफ़ारिश) काम नहीं आती मगर उसके लिए जिसके लिए वह इजाज़त दे। यहां तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर होगी तो वे पूछेंगे कि तुम्हारे रब ने क्या फ़रमाया। वे कहेंगे कि हक़ बात का हुक्म फ़रमाया। और वह सबसे ऊपर है, सबसे बड़ा है। (22-23)

कहो कि कौन तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रिज़्क़ देता है। कहो कि अल्लाह। और हम में से और तुम में से कोई एक हिदायत पर है या खुली हुई गुमराही में। कहो कि जो क़ुसूर हमने किया उसकी कोई पूछ तुमसे न होगी। और जो कुछ तुम कर रहे हो उसकी बाबत हमसे नहीं पूछा जाएगा। कहो कि हमारा रब हमें जमा करेगा, फिर हमारे दर्मियान हक़ के मुताबिक़ फ़ैसला फ़रमाएगा। और वह फ़ैसला फ़रमाने वाला है, इल्म वाला है। कहो, मुझे उन्हें दिखाओ जिन्हें तुमने शरीक बनाकर ख़ुदा के साथ मिला रखा है। हरगिज़ नहीं, बल्कि वह अल्लाह ज़बरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (24-27)

और हमने तुम्हें तमाम इंसानों के लिए ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है मगर अक्सर लोग नहीं जानते। और वे कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो कि तुम्हारे लिए एक ख़ास दिन का वादा है कि उससे न एक साअत (क्षण) पीछे हट सकते हो और न आगे बढ़ सकते हो। (28-30)

और जिन लोगों ने इंकार किया वे कहते हैं कि हम हरगिज़ न इस क़ुरआन को मानेंगे और न उसे जो इसके आगे है। और अगर तुम उस वक़्त को देखो जबकि ये ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे। एक दूसरे पर बात डालता होगा। जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे वे बड़ा बनने वालों

से कहेंगे कि अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान वाले होते। बड़ा बनने वाले कमज़ोर लोगों को जवाब देंगे, क्या हमने तुम्हें हिदायत से रोका था। जबकि वह तुम्हें पहुंच चुकी थी, बल्कि तुम ख़ुद मुजरिम हो। और कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे, नहीं बल्कि तुम्हारी रात दिन की तदबीरों से, जबकि तुम हमसे कहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ्र करें और उसके शरीक ठहराएं। और वे अपनी पशेमानी (पछतावे) को छुपाएंगे जबकि वे अज़ाब देखेंगे। और हम मुंकिरों की गर्दन में तौक़ डालेंगे। वे वही बदला पाएंगे जो वे करते थे। (31-33)

और हमने जिस बस्ती में भी कोई डराने वाला भेजा तो उसके ख़ुशहाल लोगों ने यही कहा कि हम तो उसके मुंकिर हैं जो देकर तुम भेजे गए हो। और उन्होंने कहा कि हम माल और औलाद में ज़्यादा हैं और हम कभी सज़ा पाने वाले नहीं। कहो कि मेरा रब जिसे चाहता है ज़्यादा रोज़ी देता है। और जिसे चाहता है कम कर देता है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद वह चीज़ नहीं जो दर्जे में तुम्हें हमारा मुक़र्रब (निकटवर्ती) बना दे, अलबत्ता जो ईमान लाया और उसने नेक अमल किया, ऐसे लोगों के लिए उनके अमल का दुगना बदला है। और वे बालाख़ानों (उच्च भवनों) में इत्मीनान से रहेंगे। और जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए सरगर्म हैं वे अज़ाब में दाख़िल किए जाएंगे। कहो कि मेरा रब अपने बंदों में से जिसे चाहता है कुशादा रोज़ी देता है और जिसे चाहता है तंग कर देता है। और जो चीज़ भी तुम ख़र्च करोगे तो वह उसका बदला देगा। और वह बेहतर रिज़्क़ देने वाला है। (34-39)

और जिस दिन वह उन सबको जमा करेगा फिर वह फ़रिश्तों से पूछेगा, क्या ये लोग तुम्हारी इबादत करते थे। वे कहेंगे पाक है तेरी ज़ात, हमारा तअल्लुक़ तुझसे है न कि इन लोगों से। बल्कि ये जिन्नों की इबादत करते थे। उनमें से अक्सर लोग उन्हीं के मोमिन थे। पस आज तुम में से कोई एक दूसरे को न फ़ायदा पहुंचा सकता है और न नुक़सान। और हम ज़ालिमों से कहेंगे कि आग का अज़ाब चखो जिसे तुम झुठलाते थे। (40-42)

और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो वे कहते हैं कि यह तो बस एक शख़्स है जो चाहता है कि तुम्हें उनसे रोक दे जिनकी तुम्हारे बाप दादा इबादत करते थे। और उन्होंने कहा, यह तो महज़ एक झूठ है गढ़ा हुआ। और उन मुंकिरों के सामने जब हक़ आया तो उन्होंने कहा कि यह तो बस खुला हुआ जादू है। और हमने उन्हें किताबें नहीं दी थीं जिन्हें वे पढ़ते हों। और हमने तुमसे पहले उनके पास कोई डराने वाला नहीं भेजा। और उनसे पहले वालों ने भी झुठलाया। और ये उसके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचे जो हमने उन्हें दिया था। पस उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया, तो कैसा था उन पर मेरा अज़ाब। (43-45)

कहो मैं तुम्हें एक बात की नसीहत करता हूं। यह कि तुम ख़ुदा के वास्ते खड़े हो जाओ, दो-दो और एक-एक, फिर सोचो कि तुम्हारे साथी को जुनून नहीं है। वह तो बस एक सख़्त अज़ाब से पहले तुम्हें डराने वाला है। कहो कि मैंने तुमसे कुछ मुआवज़ा मांगा हो तो वह तुम्हारा ही है। मेरा मुआवज़ा तो बस अल्लाह के ऊपर है। और वह हर चीज़ पर गवाह है। (46-47)

कहो कि मेरा रब हक़ को (बातिल पर) मारेगा, वह छुपी चीज़ों को जानने वाला है। कहो कि हक़ (सत्य) आ गया और बातिल (असत्य) न आग़ाज़ करता है और न इआदा (पुनरावृत्ति)। कहो कि अगर मैं गुमराही पर हूं तो मेरी गुमराही का वबाल मुझ पर है और अगर मैं हिदायत पर हूं तो यह उस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) की बदौलत है जो मेरा रब मेरी तरफ़ भेज रहा है। बेशक वह सुनने वाला है, क़रीब है। (48-50)

और अगर तुम देखो, जब ये घबराए हुए होंगे। पस वे भाग न सकेंगे और क़रीब ही से पकड़ लिए जाएंगे। और वे कहेंगे कि हम उस पर ईमान लाए। और इतनी दूर से उनके लिए उसका पाना कहां। और इससे पहले उन्होंने उसका इंकार किया। और बिना देखे दूर जगह से बातें फेंकते रहे। और उनकी और उनकी आरज़ू में आड़ कर दी जाएगी जैसा कि इससे पहले उनके सहमार्गी लोगों के साथ किया गया। वे बड़े धोखे वाले शक में पड़े रहे। (51-54)

सूरह-35. फ़ातिर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

तारीफ़ अल्लाह के लिए है, आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला, फ़रिश्तों को पैग़ामरसां (संदेशवाहक) बनाने वाला जिनके पर हैं दो-दो और तीन-तीन और चार-चार। वह पैदाइश में जो चाहे ज़्यादा कर देता है। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। अल्लाह जो रहमत लोगों के लिए खोले तो कोई उसका रोकने वाला नहीं। और जिसे वह रोक ले तो कोई उसे खोलने वाला नहीं। और वह ज़बरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (1-2)

ऐ लोगो अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो। क्या अल्लाह के सिवा कोई और ख़ालिक़ है जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रिज़्क़ देता हो। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। तो तुम कहां से धोखा खा रहे हो। और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाएं तो तुमसे पहले भी बहुत से पैग़म्बर झुठलाए जा चुके हैं। और सारे मामले अल्लाह ही की तरफ़ रुजूअ (प्रवृत्त) होने वाले हैं। (3-4)

ऐ लोगो, बेशक अल्लाह का वादा बरहक़ है। तो दुनिया की ज़िंदगी तुम्हें धोखे में न डाले। और न वह बड़ा धोखेबाज़ तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने पाए। बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम उसे दुश्मन ही समझो वह तो अपने गिरोह को इसीलिए बुलाता है कि वे दोज़ख़ वालों में से हो जाएं। जिन लोगों ने इंकार किया उनके लिए सख़्त अज़ाब है। और जो ईमान लाए और नेक अमल किया उनके लिए माफ़ी है और बड़ा अज्र (प्रतिफल) है। (5-7)

क्या ऐसा शख़्स जिसे उसका बुरा अमल अच्छा करके दिखाया गया, फिर वह उसे अच्छा समझने लगे, पस अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है। पस उन पर अफ़सोस करके तुम अपने को हल्कान (व्यथित) न करो। अल्लाह को मालूम है जो कुछ वे करते हैं। (8)

और अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है। फिर वे बादल को उठाती हैं। फिर हम उसे एक मुर्दा देस की तरफ़ ले जाते हैं। पस हमने उससे उस

ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद फिर ज़िंदा कर दिया। इसी तरह होगा दुबारा जी उठना। जो शख़्स इज़्ज़त चाहता हो तो इज़्ज़त तमामतर अल्लाह के लिए है। उसकी तरफ़ पाकीज़ा (पावन) कलाम चढ़ता है और अमले सालेह (सत्कर्म) उसे ऊपर उठाता है। और जो लोग बुरी तदबीरें कर रहे हैं उनके लिए सख़्त अज़ाब है। और उनकी तदबीरें नाबूद (विनष्ट) होकर रहेंगी। (9-10)

और अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया। फिर पानी की बूंद से, फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े बनाया। और कोई औरत न हामिला (गर्भवती) होती है और न जन्म देती है मगर उसके इल्म से। और न कोई उम्र वाला बड़ी उम्र पाता है और न किसी की उम्र घटती है मगर वह एक किताब में दर्ज है। बेशक यह अल्लाह पर आसान है। (11)

और दोनों दरिया यकसां (समान) नहीं। यह मीठा है प्यास बुझाने वाला, पीने के लिए ख़ुशगवार। और यह खारी कड़ुवा है। और तुम दोनों से ताज़ा गोश्त खाते हो और ज़ीनत की चीज़ निकालते हो जिसे पहनते हो। और तुम देखते हो जहाज़ों को कि वे उसमें फाड़ते हुए चलते हैं। ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र अदा करो। वह दाख़िल करता है रात को दिन में और वह दाख़िल करता है दिन को रात में। और उसने सूरज और चांद को सक्रिय कर दिया है। हर एक चलता है एक मुक़र्रर वक़्त के लिए। यह अल्लाह ही तुम्हारा रब है, उसी के लिए बादशाही है। और उसके सिवा तुम जिन्हें पुकारते हो वे खजूर की गुठली के एक छिलके के भी मालिक नहीं। अगर तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार नहीं सुनेंगे। और अगर वे सुनें तो वे तुम्हारी फ़रयादरसी नहीं कर सकते। और वे क़ियामत के दिन तुम्हारे शिर्क का इंकार करेंगे। और एक बाख़बर की तरह कोई तुम्हें नहीं बता सकता। (12-14)

ऐ लोगो, तुम अल्लाह के मोहताज हो और अल्लाह तो बेनियाज़ (निस्पृह) है तारीफ़ वाला है। अगर वह चाहे तो तुम्हें ले जाए और एक नई मख़्लूक़ ले आए। और यह अल्लाह के लिए कुछ मुश्किल नहीं। और कोई उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और अगर कोई भारी बोझ वाला अपना

बोझ उठाने के लिए पुकारे तो उसमें से ज़रा भी न उठाया जाएगा, अगरचे वह क़रीबी संबंधी क्यों न हो। तुम तो सिर्फ़ उन्हीं लोगों को डरा सकते हो जो बेदेखे अपने रब से डरते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं। और जो शख़्स पाक होता है वह अपने लिए पाक होता है और अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है। (15-18)

और अंधा और आंखों वाला बराबर नहीं। और न अंधेरा और न उजाला। और न साया और न धूप। और ज़िंदा और मुर्दा बराबर नहीं हो सकते। बेशक अल्लाह सुनाता है जिसे वह चाहता है। और तुम उन्हें सुनाने वाले नहीं बन सकते जो क़ब्रों में हैं। तुम तो बस एक ख़बरदार करने वाले हो। हमने तुम्हें हक़ (सत्य) के साथ भेजा है, ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर। और कोई उम्मत ऐसी नहीं जिसमें कोई डराने वाला न आया हो। और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाते हैं तो इनसे पहले जो लोग हुए हैं। उन्होंने भी झुठलाया। उनके पास उनके पैग़म्बर खुले दलाइल और सहीफ़े (ग्रंथ) और रोशन किताब लेकर आए। फिर जिन लोगों ने न माना उन्हें मैंने पकड़ लिया, तो देखो कि कैसा हुआ उनके ऊपर मेरा अज़ाब। (19-26)

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर हमने उससे मुख़्तलिफ़ रंगों के फल पैदा कर दिए। और पहाड़ों में भी सफ़ेद और सुर्ख़ मुख़्तलिफ़ रंगों के टुकड़े हैं और गहरे स्याह भी। और इसी तरह इंसानों और जानवरों और चौपायों में भी मुख़्तलिफ़ रंग के हैं। अल्लाह से उसके बंदों में से सिर्फ़ वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है, बख़्शने वाला है। (27-28)

जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अता किया है उसमें से छुपे और खुले ख़र्च करते हैं, वे ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जो कभी मांद न होगी ताकि अल्लाह उन्हें उनका पूरा अज्र दे। और उनके लिए अपने फ़ज़्ल से और ज़्यादा कर दे। बेशक वह बख़्शने वाला है, क़द्रदां है। और हमने तुम्हारी तरफ़ जो किताब 'वही' (प्रकाशना) की है वह हक़ है, उसकी तस्दीक़ करने वाली है जो इसके

पहले से मौजूद है। बेशक अल्लाह अपने बंदों की ख़बर रखने वाला है, देखने वाला है। (29-31)

फिर हमने किताब का वारिस बनाया उन लोगों को जिन्हें हमने अपने बंदों में से चुन लिया। पस उनमें से कुछ अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले हैं और उनमें से कुछ बीच की चाल पर हैं। और उनमें से कुछ अल्लाह की तौफ़ीक़ से भलाइयों में सबक़त (अग्रसरता) करने वाले हैं। यही सबसे बड़ा फ़ज़्ल है। हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनमें ये लोग दाख़िल होंगे, वहां उन्हें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे, और वहां उनका लिबास रेशम होगा। और वे कहेंगे, शुक्र है अल्लाह का जिसने हमसे ग़म को दूर किया। बेशक हमारा रब माफ़ करने वाला, क़द्र करने वाला है। जिसने हमें अपने फ़ज़्ल से आबाद रहने के घर में उतारा, इसमें हमें न कोई मशक़्क़त पहुंचेगी और न कभी थकान लाहिक़ होगी। (32-35)

और जिन्होंने इंकार किया उनके लिए जहन्नम की आग है, न उनकी क़ज़ा! आएगी कि वे मर जाएं और न दोज़ख़ का अज़ाब ही उनसे हल्का किया जाएगा। हम हर मुंकिर को ऐसी ही सज़ा देते हैं। और वे लोग उसमें चिल्लाएंगे। ऐ हमारे रब हमें निकाल ले। हम नेक अमल करेंगे, उससे मुख़्तलिफ़ जो हम किया करते थे। क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र न दी कि जिसे समझना होता वह समझ सकता। और तुम्हारे पास डराने वाला आया। अब चखो कि ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (36-37)

अल्लाह आसमानों और ज़मीन के ग़ैब (अप्रकट) को जानने वाला है। बेशक वह दिल की बातों से भी बाख़बर है। वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में आबाद किया। तो जो शख़्स इंकार करेगा उसका इंकार उसी पर पड़ेगा। और मुंकिरों के लिए उनका इंकार, उनके रब के नज़दीक, नाराज़ी ही बढ़ने का सबब होता है। और मुंकिरों के लिए उनका इंकार ख़सारे (घाटे) ही में इज़ाफ़ा करेगा। (38-39)

कहो, ज़रा तुम देखो अपने उन शरीकों को जिन्हें तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो। मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में से क्या बनाया है। या उनकी

आसमानों में कोई हिस्सेदारी है। या हमने उन्हें कोई किताब दी है तो वे उसकी किसी दलील पर हैं। बल्कि ये ज़ालिम एक दूसरे से सिर्फ़ धोखे की बातों का वादा कर रहे हैं। बेशक अल्लाह ही आसमानों और ज़मीनों को थामे हुए है कि वे टल न जाएं। और अगर वे टल जाएं तो उसके सिवा कोई और उन्हें थाम नहीं सकता। बेशक वह तहम्मुल (उदारता) वाला है, बख़्शने वाला है। (40-41)

और उन्होंने अल्लाह की ताकीदी क़समें खाई थीं कि अगर उनके पास कोई डराने वाला आया तो वे हर एक उम्मत से ज़्यादा हिदायत क़ुबूल करने वाले होंगे। फिर जब उनके पास एक डराने वाला आया तो सिर्फ़ उनकी बेज़ारी (अरुचि) ही को तरक़्क़ी हुई, ज़मीन में अपने को बड़ा समझने की वजह से, और उनकी बुरी तदबीरों को। और बुरी तदबीरों का वबाल तो बुरी तदबीर करने वालों ही पर पड़ता है। तो क्या ये उसी दस्तूर के मुंतज़िर हैं जो अगले लोगों के बारे में ज़ाहिर हुआ। पस तुम ख़ुदा के दस्तूर में न कोई तब्दीली पाओगे और न ख़ुदा के दस्तूर को टलता हुआ पाओगे। क्या ये लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि कैसा हुआ अंजाम उन लोगों का जो इनसे पहले गुज़रे हैं, और वे क़ुव्वत (शक्ति) में इनसे बढ़े हुए थे। और ख़ुदा ऐसा नहीं कि कोई चीज़ उसे आजिज़ (निर्बल) कर दे, न आसमानों में और न ज़मीन में। बेशक वह इल्म वाला है, क़ुदरत वाला है। (42-44)

और अगर अल्लाह लोगों के आमाल पर उन्हें पकड़ता तो ज़मीन पर वह एक जानदार को भी न छोड़ता। लेकिन वह उन्हें एक मुक़र्रर मुद्दत तक मोहलत देता है। फिर जब उनकी मुद्दत पूरी हो जाएगी तो अल्लाह अपने बंदों को ख़ुद देखने वाला है। (45)

सूरह-36. या० सीन०

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

या० सीन०। क़सम है बाहिक्मत (तत्वज्ञानपूर्ण) क़ुरआन की। बेशक तुम रसूलों में से हो। निहायत सीधे रास्ते पर। यह ख़ुदाए अज़ीज़ (प्रभुत्वशाली)

व रहीम (दयावान) की तरफ़ से उतारा गया है। ताकि तुम उन लोगों को डरा दो जिनके अगलों को नहीं डराया गया। पस वे बेख़बर हैं। (1-6)

उनमें से अक्सर लोगों पर बात साबित हो चुकी है तो वे ईमान नहीं लाएंगे। हमने उनकी गर्दनों में तौक़ डाल दिए हैं सो वे ठोडियों तक हैं, पस उनके सिर ऊंचे हो रहे हैं। और हमने एक आड़ उनके सामने कर दी है और एक आड़ उनके पीछे कर दी। फिर हमने उन्हें ढांक दिया तो उन्हें दिखाई नहीं देता। और उनके लिए यकसां (समान) है, तुम उन्हें डराओ या न डराओ, वे ईमान नहीं लाएंगे। तुम तो सिर्फ़ उस शख़्स को डरा सकते हो जो नसीहत पर चले और ख़ुदा से डरे, बिना देखे। तो ऐसे शख़्स को माफ़ी की और बाइज़्ज़त सवाब की बशारत (शुभ सूचना) दे दो। (7-11)

यक़ीनन हम मुर्दों को ज़िंदा करेंगे। और हम लिख रहे हैं जो उन्होंने आगे भेजा और जो उन्होंने पीछे छोड़ा। और हर चीज़ हमने दर्ज कर ली है एक खुली किताब में और उन्हें बस्ती वालों की मिसाल सुनाओ, जबकि उसमें रसूल आए। (12-13)

जबकि हमने उनके पास दो रसूल भेजे तो उन्होंने दोनों को झुठलाया, फिर हमने तीसरे से उनकी ताईद की, उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे पास भेजे गए हैं। लोगों ने कहा कि तुम तो हमारे ही जैसे बशर (इंसान) हो और रहमान ने कोई चीज़ नहीं उतारी है, तुम महज़ झूठ बोलते हो। उन्होंने कहा कि हमारा रब जानता है कि हम बेशक तुम्हारे पास भेजे गए हैं। और हमारे ज़िम्मे तो सिर्फ़ वाज़ेह तौर पर पहुंचा देना है। लोगों ने कहा कि हम तो तुम्हें मनहूस समझते हैं, अगर तुम लोग बाज़ न आए तो हम तुम्हें संगसार करेंगे और तुम्हें हमारी तरफ़ से सख़्त तकलीफ़ पहुंचेगी। उन्होंने कहा कि तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है, क्या इतनी बात पर कि तुम्हें नसीहत की गई। बल्कि तुम हद से निकल जाने वाले लोग हो। (14-19)

और शहर के दूर मक़ाम से एक शख़्स दौड़ता हुआ आया। उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम रसूलों की पैरवी करो। उन लोगों की पैरवी करो जो तुमसे कोई बदला नहीं मांगते। और वे ठीक रास्ते पर हैं। (20-21)

और मैं क्यों न इबादत करूं उस ज़ात की जिसने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। क्या मैं उसके सिवा दूसरों को माबूद (पूज्य) बनाऊं। अगर रहमान मुझे कोई तकलीफ़ पहुंचाना चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आएगी और न वे मुझे छुड़ा सकेंगे। बेशक उस वक़्त मैं एक खुली हुई गुमराही में हूंगा। मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया तो तुम भी मेरी बात सुन लो। इर्शाद हुआ कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ। उसने कहा काश मेरी क़ौम जानती कि मेरे रब ने मुझे बख़्श दिया और मुझे इज़्ज़तदारों में शामिल कर दिया। (22-27)

और इसके बाद उसकी क़ौम पर हमने आसमान से कोई फ़ौज नहीं उतारी, और हम फ़ौज नहीं उतारा करते। बस एक धमाका हुआ तो यकायक वे सब बुझकर रह गए। अफ़सोस है बंदों के ऊपर, जो रसूल भी उनके पास आया वे उसका मज़ाक़ ही उड़ाते रहे। क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी ही क़ौमें हलाक कर दीं। अब वे उनकी तरफ़ वापस आने वाली नहीं। और उनमें कोई ऐसा नहीं जो इकट्ठा होकर हमारे पास हाज़िर न किया जाए। (28-32)

और एक निशानी उनके लिए मुर्दा ज़मीन है। उसे हमने ज़िंदा किया और उससे हमने ग़ल्ला निकाला। पस वे उसमें से खाते हैं। और उसमें हमने खजूर के और अंगूर के बाग़ बनाए। और उसमें हमने चशमे (स्रोत) जारी किए। ताकि लोग उसके फल खाएं। और उसे उनके हाथों ने नहीं बनाया। तो क्या वे शुक्र नहीं करते। पाक है वह ज़ात जिसने सब चीज़ के जोड़े बनाए, उनमें से भी जिन्हें ज़मीन उगाती है और ख़ुद उनके अंदर से भी। और उनमें से भी जिन्हें वे नहीं जानते। (33-36)

और एक निशानी उनके लिए रात है, हम उससे दिन को खींच लेते हैं तो वे अंधेरे में रह जाते हैं। और सूरज, वह अपनी ठहरी हुई राह पर चलता रहता है। यह अज़ीज़ (प्रभुत्वशाली) व अलीम (ज्ञानवान) का बांधा हुआ अंदाज़ा है। और चांद के लिए हमने मंज़िलें मुक़र्रर कर दीं, यहां तक कि वह ऐसा रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी शाख़। न सूरज के वश में है कि

वह चांद को पकड़ ले और न रात दिन से पहले आ सकती है। और सब एक-एक दायरे में तैर रहे हैं। (37-40)

और एक निशानी उनके लिए यह है कि हमने उनकी नस्ल को भरी हुई कश्ती में सवार किया। और हमने उनके लिए उसी के मानिंद और चीज़ें पैदा कीं जिन पर वे सवार होते हैं। और अगर हम चाहें तो उन्हें ग़र्क़ कर दें, फिर न कोई उनकी फ़रयाद सुनने वाला हो और न वे बचाए जा सकें। मगर यह हमारी रहमत है और उन्हें एक निर्धारित वक़्त तक फ़ायदा देना है। (41-44)

और जब उनसे कहा जाता है कि उससे डरो जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है ताकि तुम पर रहम किया जाए। और उनके रब की निशानियों में से कोई निशानी भी उनके पास ऐसी नहीं आती जिसकी वे उपेक्षा न करते हों। और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से ख़र्च करो तो जिन लोगों ने इंकार किया वे ईमान लाने वालों से कहते हैं कि क्या हम ऐसे लोगों को खिलाएं जिन्हें अल्लाह चाहता तो वह उन्हें खिला देता। तुम लोग तो खुली गुमराही में हो। (45-47)

और वे कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो। ये लोग बस एक चिंघाड़ की राह देख रहे हैं जो उन्हें आ पकड़ेगी और वे झगड़ते ही रह जाएंगे। फिर वे न कोई वसीयत कर पाएंगे और न अपने लोगों की तरफ़ लौट सकेंगे। और सूर फूंका जाएगा तो यकायक वे क़ब्रों से अपने रब की तरफ़ चल पड़ेंगे। वे कहेंगे, हाय हमारी बदबख़्ती, हमारी क़ब्र से किसने हमें उठाया— यह वही है जिसका रहमान ने वादा किया था और पैग़म्बरों ने सच कहा था। बस वह एक चिंघाड़ होगी, फिर यकायक सब जमा होकर हमारे पास हाज़िर कर दिए जाएंगे। (48-53)

पस आज के दिन किसी शख़्स पर कोई ज़ुल्म न होगा। और तुम्हें वही बदला मिलेगा जो तुम करते थे। बेशक जन्नत के लोग आज अपने मशग़लों में ख़ुश होंगे। और उनकी बीवियां, सायों में मसहरियों पर तकिया लगाए हुए बैठे होंगे। उनके लिए वहां मेवे होंगे और उनके लिए वह सब कुछ होगा जो वे मांगेंगे। उन्हें सलाम कहलाया जाएगा महरबान रब की तरफ़ से। (54-58)

और ऐ मुजरिमो, आज तुम अलग हो जाओ। ऐ औलादे आदम, क्या मैंने तुम्हें ताकीद नहीं कर दी थी कि तुम शैतान की इबादत न करना। बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। और यह कि तुम मेरी ही इबादत करना, यही सीधा रास्ता है। और उसने तुम में से बहुत से गिरोहों को गुमराह कर दिया। तो क्या तुम समझते नहीं थे। यह है जहन्नम जिसका तुमसे वादा किया जाता था। अब अपने कुफ्र के बदले में इसमें दाख़िल हो जाओ। आज हम उनके मुंह पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे बोलेंगे और उनके पांव गवाही देंगे जो कुछ ये लोग करते थे। (59-65)

और अगर हम चाहते तो उनकी आंखों को मिटा देते। फिर वे रास्ते की तरफ़ दौड़ते तो उन्हें कहां नज़र आता। और अगर हम चाहते तो उनकी जगह ही पर उनकी सूरतें बदल देते तो वे न आगे बढ़ सकते और न पीछे लौट सकते। और हम जिसकी उम्र ज़्यादा कर देते हैं तो उसे उसकी पैदाइश में पीछे लौटा देते हैं, तो क्या वे समझते नहीं। (66-68)

और हमने उसे शेअर (काव्य) नहीं सिखाया और न यह उसके लायक़ है। यह तो सिर्फ़ एक नसीहत है और वाज़ेह (सुस्पष्ट) क़ुरआन है ताकि वह उस शख़्स को ख़बरदार कर दे जो ज़िंदा हो और इंकार करने वालों पर हुज्जत क़ायम हो जाए। (69-70)

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने अपने हाथ की बनाई हुई चीज़ों में से उनके लिए मवेशी पैदा किए, तो वे उनके मालिक हैं। और हमने उन्हें उनका ताबेअ (अधीन) बना दिया, तो उनमें से कोई उनकी सवारी है और किसी को वे खाते हैं। और उनके लिए उनमें फ़ायदे हैं और पीने की चीज़ें भी, तो क्या वे शुक्र नहीं करते। और उन्होंने अल्लाह के सिवा दूसरे माबूद (पूज्य) बनाए कि शायद उनकी मदद की जाए। वे उनकी मदद न कर सकेंगे, और वे उनकी फ़ौज होकर हाज़िर किए जाएंगे। तो उनकी बात तुम्हें ग़मगीन न करे। हम जानते हैं जो कुछ वे छुपाते हैं और जो कुछ वे ज़ाहिर करते हैं। (71-76)

क्या इंसान ने नहीं देखा कि हमने उसे एक बूंद से पैदा किया, फिर वह सरीह झगड़ालू बन गया। और वह हम पर मिसाल चसपां करता है और

वह अपनी पैदाइश को भूल गया। वह कहता है कि हड्डियों को कौन ज़िंदा करेगा जबकि वे बोसीदा हो गई हों। कहो, उन्हें वही ज़िंदा करेगा जिसने उन्हें पहली मर्तबा पैदा किया। और वह सब तरह पैदा करना जानता है। वही है जिसने तुम्हारे लिए हरे भरे दरख़्त से आग पैदा कर दी। फिर तुम उससे आग जलाते हो। क्या जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया वह इस पर क़ादिर नहीं कि उन जैसों को पैदा कर दे। हां वह क़ादिर है। और वही है अस्ल पैदा करने वाला, जानने वाला। उसका मामला तो बस यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो कहता है कि हो जा तो वह हो जाती है। पस पाक है वह ज़ात जिसके हाथ में हर चीज़ का इख़्तियार है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (77-83)

सूरह-37. अस-साफ़्फ़ात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम है क़तार दर क़तार सफ़ बांधने वाले फ़रिश्तों की। फिर डांटने वालों की झिड़क कर। फिर उनकी जो नसीहत सुनाने वाले हैं। कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) एक ही है। आसमानों और ज़मीन का रब और जो कुछ उनके दर्मियान है और सारे मश्रिक़ों (पूर्वी दिशाओं) का रब। (1-5)

हमने आसमाने दुनिया को सितारों की ज़ीनत (शोभा) से सजाया है। और हर शैतान सरकश से उसे महफ़ूज़ किया है। वे मलए आला (आकाश लोक) की तरफ़ कान नहीं लगा सकते और वे हर तरफ़ से मारे जाते हैं, भगाने के लिए। और उनके लिए एक दाइमी (स्थाई) अज़ाब है। मगर जो शैतान कोई बात उचक ले तो एक दहकता हुआ शोला उसका पीछा करता है। (6-10)

पस उनसे पूछो कि उनकी पैदाइश ज़्यादा मुश्किल है या उन चीज़ों की जो हमने पैदा की हैं। हमने उन्हें चिपकती मिट्टी से पैदा किया है। बल्कि तुम तअज्जुब करते हो और वे मज़ाक़ उड़ा रहे हैं। और जब उन्हें समझाया जाता है तो वे समझते नहीं। और जब वे कोई निशानी देखते हैं तो वे उसे हंसी में टाल देते हैं। और कहते हैं कि यह तो बस खुला हुआ जादू है। क्या

जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियां बन जाएंगे तो फिर हम उठाए जाएंगे। और क्या हमारे अगले बाप दादा भी। कहो कि हां, और तुम ज़लील भी होगे। (11-18)

पस वह तो एक झिड़की होगी, फिर उसी वक़्त वे देखने लगेंगे और वे कहेंगे कि हाय हमारी कमबख़्ती यह तो जज़ा (बदले) का दिन है। यह वही फ़ैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाते थे। जमा करो उन्हें जिन्होंने ज़ुल्म किया और उनके साथियों को और उन माबूदों को जिनकी वे अल्लाह के सिवा इबादत करते थे, फिर उन सबको दोज़ख़ का रास्ता दिखाओ और उन्हें ठहराओ, इनसे कुछ पूछना है। तुम्हें क्या हुआ कि तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते। बल्कि आज तो वे फ़रमांबरदार हैं। (19-26)

और वे एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर सवाल व जवाब करेंगे। कहेंगे तुम हमारे पास दाईं तरफ़ से आते थे। वे जवाब देंगे, बल्कि तुम ख़ुद ईमान लाने वाले नहीं थे। और हमारा तुम्हारे ऊपर कोई ज़ोर न था, बल्कि तुम ख़ुद ही सरकश लोग थे। पस हम सब पर हमारे रब की बात पूरी होकर रही, हमें उसका मज़ा चखना ही है। हमनें तुम्हें गुमराह किया, हम ख़ुद भी गुमराह थे। पस वे सब उस दिन अज़ाब में मुशतरक (सह भागी) होंगे। (27-33)

हम मुजरिमों के साथ ऐसा ही करते हैं। ये वे लोग थे कि जब उनसे कहा जाता कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं तो वे तकब्बुर (घमंड) करते थे। और वे कहते थे कि क्या हम एक शायर दीवाने के कहने से अपने माबूदों को छोड़ दें। बल्कि वह हक़ लेकर आया है। और वह रसूलों की पेशीनगोइयों (भविियवाणियों) का मिस्दाक़ (पुष्टि रूप) है। बेशक तुम्हें दर्दनाक अज़ाब चखना होगा। और तुम उसी का बदला दिए जा रहे हो जो तुम करते थे। (34-39)

मगर जो अल्लाह के चुने हुए बंदे हैं। उनके लिए मालूम रिज़्क़ होगा। मेवे, और वे निहायत इज़्ज़त से होंगे, आराम के बाग़ों में। तख़्तों पर आमने सामने बैठे होंगे। उनके पास ऐसा प्याला लाया जाएगा जो बहती हुई शराब

से भरा जाएगा। साफ़ शफ़्फ़ाफ़ पीने वालों के लिए लज़्ज़त। न उसमें कोई ज़रर (हानिकारकता) होगा और न उससे अक़्ल ख़राब होगी। और उनके पास नीची निगाह वाली, बड़ी आंखों वाली औरतें होंगी। गोया कि वे अंडे हैं जो छुपे हुए रखे हों। (40-49)

फिर वे एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बात करेंगे। उनमें से एक कहने वाला कहेगा कि मेरा एक मुलाक़ाती था। वह कहा करता था कि क्या तुम भी तस्दीक़ (पुष्टि) करने वालों में से हो। क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हमें जज़ा मिलेगी। कहेगा, क्या तुम झांक कर देखोगे। तो वह झांकेगा और उसे जहन्नम के बीच में देखेगा। कहेगा कि ख़ुदा की क़सम तुम तो मुझे तबाह कर देने वाले थे। और अगर मेरे रब का फ़ज़्ल न होता तो मैं भी उन्हीं लोगों में होता जो पकड़े हुए आए हैं। क्या अब हमें मरना नहीं है, मगर पहली बार जो हम मर चुके और अब हमें अज़ाब न होगा। बेशक यही बड़ी कामयाबी है। ऐसी ही कामयाबी के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिए। (50-61)

यह ज़ियाफ़त (सत्कार) अच्छी है या ज़क़्क़ूम का दरख़्त। हमने उसे ज़ालिमों के लिए फ़ितना बनाया है। वह एक दरख़्त है जो दोज़ख़ की तह से निकलता है। उसका ख़ोशा ऐसा है जैसे शैतान का सर। तो वे लोग उससे खाएंगे। फिर उसी से पेट भरेंगे। फिर उन्हें खौलता हुआ पानी मिलाकर दिया जाएगा। फिर उनकी वापसी दोज़ख़ ही की तरफ़ होगी। उन्होंने अपने बाप दादा को गुमराही में पाया। फिर वे भी उन्हीं के क़दम बक़दम दौड़ते रहे, और उनसे पहले भी अगले लोगों में अक्सर गुमराह हुए। और हमने उनमें भी डराने वाले भेजे। तो देखो, उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जिन्हें डराया गया था। मगर वे जो अल्लाह के चुने हुए बंदे थे। (62-74)

और हमें नूह ने पुकारा तो हम क्या ख़ूब पुकार सुनने वाले हैं। और हमने उसे और उसके लोगों को बहुत बड़े ग़म से बचा लिया। और हमने उसकी नस्ल को बाक़ी रहने वाला बनाया। और हमने उसके तरीक़े पर पिछलों में एक गिरोह को छोड़ा। सलाम है नूह पर तमाम दुनिया वालों में। हम नेकी

करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। बेशक वह हमारे मोमिन बंदों में से था। फिर हमने दूसरों को ग़र्क़ कर दिया। (75-82)

और उसी के तरीक़े वालों में से इब्राहीम भी था। जबकि वह आया अपने रब के पास क़ल्बे सलीम (पाक दिल) के साथ। जब उसने अपने बाप से और अपनी क़ौम से कहा कि तुम किस चीज़ की इबादत करते हो। क्या तुम अल्लाह के सिवा मनगढ़त माबूदों को चाहते हो तो ख़ुदावंद आलम के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है। (83-87)

फिर इब्राहीम ने सितारों पर एक नज़र डाली। पस कहा कि मैं बीमार हूं। फिर वे लोग उसे छोड़कर चले गए। तो वह उनके बुतों में घुस गया, कहा कि क्या तुम खाते नहीं हो। तुम्हें क्या हुआ कि तुम कुछ बोलते नहीं। फिर उन्हें मारा पूरी क़ुव्वत के साथ। फिर लोग उसके पास दौड़े हुए आए। इब्राहीम ने कहा, क्या तुम लोग उन चीज़ों को पूजते हो जिन्हें ख़ुद तराशते हो। और अल्लाह ही ने पैदा किया है तुम्हें भी और उन चीज़ों को भी जिन्हें तुम बनाते हो। उन्होंने कहा, इसके लिए एक मकान बनाओ फिर इसे दहकती आग में डाल दो। पस उन्होंने उसके ख़िलाफ़ एक कार्रवाई करनी चाही तो हमने उन्हीं को नीचा कर दिया। और उसने कहा कि मैं अपने रब की तरफ़ जा रहा हूं, वह मेरी रहनुमाई फ़रमाएगा। ऐ मेरे रब, मुझे नेक औलाद अता फ़रमा। तो हमने उसे एक बुर्दबार (संयमी) लड़के की बशारत (शुभ सूचना) दी। (88-101)

पस जब वह उसके साथ चलने फिरने की उम्र को पहुंचा, उसने कहा कि ऐ मेरे बेटे, मैं ख़्वाब में देखता हूं कि तुम्हें ज़बह कर रहा हूं पस तुम सोच लो कि तुम्हारी क्या राय है। उसने कहा कि ऐ मेरे बाप, आपको जो हुक्म दिया जा रहा है उसे कर डालिए, इंशाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वालों में से पाएंगे। पस जब दोनों मुतीअ (आज्ञाकारी) हो गए और इब्राहीम ने उसे माथे के बल डाल दिया। और हमने उसे आवाज़ दी कि ऐ इब्राहीम, तुमने ख़्वाब को सच कर दिखाया। बेशक हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। यक़ीनन यह एक खुली हुई आज़माइश थी और हमने एक बड़ी क़ुर्बानी

के एवज़ उसे छुड़ा लिया। और हमने उस पर पिछलों में एक गिरोह को छोड़ा। सलामती हो इब्राहीम पर। हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं। बेशक वह हमारे मोमिन बंदों में से था। और हमने उसे इस्हाक़ की ख़ुशख़बरी दी, एक नबी सालेहीन (नेकों) में से। और हमने उसे और इस्हाक़ को बरकत दी। और इन दोनों की नस्ल में अच्छे भी हैं और ऐसे भी जो अपने नफ़्स पर सरीह ज़ुल्म करने वाले हैं। (102-113)

और हमने मूसा और हारून पर एहसान किया। और उन्हें और उनकी क़ौम को एक बड़ी मुसीबत से नजात दी। और हमने उनकी मदद की तो वही ग़ालिब आने वाले बने। और हमने उन दोनों को वाज़ेह किताब दी। और हमने उन दोनों को सीधा रास्ता दिखाया। और हमने उनके तरीक़े पर पीछे वालों के एक गिरोह को छोड़ा। सलामती हो मूसा और हारून पर। हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। बेशक वे दोनों हमारे मोमिन बंदों में से थे। (114-122)

और इलयास भी पैग़म्बरों में से था। जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा, क्या तुम डरते नहीं। क्या तुम बअल (एक बुत का नाम) को पुकारते हो और बेहतरीन ख़ालिक़ को छोड़ देते हो, अल्लाह को जो तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे अगले बाप दादा का भी। पस उन्होंने उसे झुठलाया तो वे पकड़े जाने वालों में से होंगे। मगर जो अल्लाह के ख़ास बंदे थे। और हमने उसके तरीक़े पर पिछलों में एक गिरोह को छोड़ा। सलामती हो इलयास पर। हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। बेशक वह हमारे मोमिन बंदों में से था। (123-132)

और बेशक लूत भी पैग़म्बरों में से था। जबकि हमने उसे और उसके लोगों को नजात दी। मगर एक बुढ़िया जो पीछे रह जाने वालों में से थी। फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया। और तुम उनकी बस्तियों पर गुज़रते हो सुबह को भी और रात को भी, तो क्या तुम नहीं समझते। (133-138)

और बेशक यूनुस भी रसूलों में से था। जबकि वह भाग कर भरी हुई कश्ती पर पहुंचा। फिर क़ुरआ (कई में से एक का चयन) डाला तो वही ख़तावार

निकला। फिर उसे मछली ने निगल लिया। और वह अपने को मलामत कर रहा था। पस अगर वह तस्बीह करने वालों में से न होता तो लोगों के उठाए जाने के दिन तक उसके पेट ही में रहता। फिर हमने उसे एक मैदान में डाल दिया और वह निढाल था। और हमने उस पर एक बेलदार दरख़्त उगा दिया। और हमने उसे एक लाख या इससे ज़्यादा लोगों की तरफ़ भेजा। फिर वे लोग ईमान लाए तो हमने उन्हें फ़ायदा उठाने दिया एक मुद्दत तक। (139-148)

पस उनसे पूछो क्या तुम्हारे रब के लिए बेटियां हैं और उनके लिए बेटे। क्या हमने फ़रिश्तों को औरत बनाया है और वे देख रहे थे। सुन लो, ये लोग सिर्फ़ मनगढ़त के तौर पर ऐसा कहते हैं कि अल्लाह औलाद रखता है और यक़ीनन वे झूठे हैं। क्या अल्लाह ने बेटों के मुक़ाबले में बेटियां पसंद की हैं। तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा हुक्म लगा रहे हो। फिर क्या तुम सोच से काम नहीं लेते। क्या तुम्हारे पास कोई वाज़ेह दलील है। तो अपनी किताब लाओ अगर तुम सच्चे हो। (149-157)

और उन्होंने ख़ुदा और जिन्नात में भी रिश्तेदारी क़रार दी है। और जिन्नों को मालूम है कि यक़ीनन वे पकड़े हुए आएंगे। अल्लाह पाक है उन बातों से जो ये बयान करते हैं। मगर वे जो अल्लाह के चुने हुए बंदे हैं। पस तुम और जिनकी तुम इबादत करते हो, ख़ुदा से किसी को फेर नहीं सकते। मगर उसे जो जहन्नम में पड़ने वाला है। और हम में से हर एक का एक मुअय्यन (निश्चित) मक़ाम है। और हम ख़ुदा के हुज़ूर बस सफ़बस्ता (पंक्तिबद्ध) रहने वाले हैं। और हम उसकी तस्बीह करने वाले हैं। (158-166)

और ये लोग कहा करते थे कि अगर हमारे पास पहलों की कोई तालीम होती तो हम अल्लाह के ख़ास बंदे होते। फिर उन्होंने उसका इंकार कर दिया तो अनक़रीब वे जान लेंगे। और अपने भेजे हुए बंदों के लिए हमारा यह फ़ैसला पहले ही हो चुका है। कि बेशक वही ग़ालिब किए जाएंगे। और हमारा लश्कर ही ग़ालिब रहने वाला है। तो कुछ मुद्दत तक उनसे रुख़ फेर लो और देखते रहो, अनक़रीब वे भी देख लेंगे। (167-175)

क्या वे हमारे अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं। पस जब वह उनके

सेहन में उतरेगा तो बड़ी ही बुरी होगी उन लोगों की सुबह जिन्हें उससे डराया जा चुका है। तो कुछ मुद्दत के लिए उनसे रुख़ फेर लो। और देखते रहो, अनक़रीब वे ख़ुद देख लेंगे। पाक है तेरा रब, इज़्ज़त का मालिक, उन बातों से जो ये लोग बयान करते हैं। और सलाम है पैग़म्बरों पर। और सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का। (176-182)

सूरह-38. साद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

साद०। क़सम है नसीहत वाले क़ुरआन की। बल्कि जिन लोगों ने इंकार किया, वे घमंड और ज़िद में हैं। उनसे पहले हमने कितनी ही क़ौमें हलाक कर दीं, तो वे पुकारने लगे और वह वक़्त बचने का न था। (1-3)

और उन लोगों ने तअज्जुब किया कि उनके पास उनमें से एक डराने वाला आया। और इंकार करने वालों ने कहा कि यह जादूगर है, झूठा है। क्या उसने इतने माबूदों (पूज्यों) की जगह एक माबूद कर दिया, यह तो बड़ी अजीब बात है। और उनके सरदार उठ खड़े हुए कि चलो और अपने माबूदों पर जमे रहो, यह कोई मतलब की बात है। हमने यह बात पिछले मज़हब में नहीं सुनी, यह सिर्फ़ एक बनाई बात है। क्या हम सब में से इसी शख़्स पर कलामे इलाही नाज़िल किया गया। बल्कि ये लोग मेरी याददिहानी की तरफ़ से शक में हैं। बल्कि उन्होंने अब तक मेरे अज़ाब का मज़ा नहीं चखा। (4-8)

क्या तेरे रब की रहमत के ख़ज़ाने उनके पास हैं जो ज़बरदस्त है, फ़य्याज़ (दाता) है। क्या आसमानों और ज़मीन और इनके दर्मियान की चीज़ों की बादशाही उनके इख़्तियार में है। फिर वे सीढ़ियां लगाकर चढ़ जाएं। एक लश्कर यह भी यहां तबाह होगा सब लश्करों में से। इनसे पहले क़ौमे नूह और आद और मेख़ों (कीलों) वाला फ़िरऔन। और समूद और क़ौमे लूत और ऐका वालों ने झुठलाया। ये लोग बड़ी-बड़ी जमाअतें थे। उन सब ने रसूलों को झुठलाया तो मेरा अज़ाब नाज़िल होकर रहा। और ये लोग सिर्फ़ एक चिंघाड़ के मुंतज़िर हैं, जिसके बाद कोई ढील नहीं। और उन्होंने कहा

कि ऐ हमारे रब, हमारा हिस्सा हमें हिसाब के दिन से पहले दे दे। (9-16)

जो कुछ वे कहते हैं उस पर सब्र करो, और हमारे बंदे दाऊद को याद करो जो क़ुव्वत वाला, रुजूअ करने वाला था। हमने पहाड़ों को उसके साथ मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर दिया कि वे उसके साथ सुबह व शाम तस्बीह करते थे, और परिंदों को भी जमा होकर। सब अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करने वाले थे। और हमने उसकी सल्तनत मज़बूत की, और उसे हिक्मत अता की। और मामलात का फ़ैसला करने की सलाहियत दी। (17-20)

और क्या तुम्हें ख़बर पहुंची है मुक़दमा वालों की जबकि वे दीवार फांदकर इबादतख़ाने में दाख़िल हो गए। जब वे दाऊद के पास पहुंचे तो वह उनसे घबरा गया, उन्होंने कहा कि आप डरें नहीं, हम दो फ़रीक़े मामला (विवाद के पक्ष) हैं, एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है तो आप हमारे दर्मियान हक़ के साथ फ़ैसला कीजिए, बेइंसाफ़ी न कीजिए और हमें राहेरास्त (सन्मार्ग) बताइए। (21-22)

यह मेरा भाई है, इसके पास निन्नानवे दुंबियां हैं और मेरे पास सिर्फ़ एक दुंबी है। तो वह कहता है कि वह भी मेरे हवाले कर दे। और उसने गुफ़्तुगू में मुझे दबा लिया। दाऊद ने कहा, उसने तुम्हारी दुंबी को अपनी दुंबियों में मिलाने का मुतालबा करके वाक़ई तुम पर ज़ुल्म किया है। और अक्सर शुरका (साझीदार) एक दूसरे पर ज़्यादती किया करते हैं। मगर वे जो ईमान रखते हैं और नेक अमल करते हैं, और ऐसे लोग बहुत कम हैं। और दाऊद को ख़्याल आया कि हमने उसका इम्तेहान किया है, तो उसने अपने रब से माफ़ी मांगी और सज्दे में गिर गया। और रुजूअ हुआ। फिर हमने उसे वह माफ़ कर दिया। और बेशक हमारे यहां उसके लिए तक़र्रुब (सान्निध्य) है और अच्छा अंजाम। (23-25)

ऐ दाऊद हमने तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा (हाकिम) बनाया है तो लोगों के दर्मियान इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करो और ख़्वाहिश की पैरवी न करो वह तुझे अल्लाह की राह से भटका देगी। जो लोग अल्लाह की राह से भटकते हैं उनके लिए सख़्त अज़ाब है इस वजह से कि वे रोज़े हिसाब को भूले रहे। (26)

और हमने ज़मीन और आसमान और जो इनके दर्मियान है अबस (व्यर्थ) नहीं पैदा किया, यह उन लोगों का गुमान है जिन्होंने इंकार किया, तो जिन लोगों ने इंकार किया उनके लिए बर्बादी है आग से। क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किए उनकी मानिंद कर देंगे जो ज़मीन में फ़साद करने वाले हैं। या हम परहेज़गारों को बदकारों जैसा कर देंगे। यह एक बाबरकत किताब है जो हमने तुम्हारी तरफ़ उतारी है ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि अक़्ल वाले इससे नसीहत हासिल करें। (27-29)

और हमने दाऊद को सुलैमान अता किया, बेहतरीन बंदा, अपने रब की तरफ़ बहुत रुजूअ करने वाला। जब शाम के वक़्त उसके सामने तेज़ रफ़्तार, उम्दा घोड़े पेश किए गए। तो उसने कहा, मैंने दोस्त रखा माल की मुहब्बत को अपने रब की याद से, यहां तक कि छुप गया ओट में। उन्हें मेरे पास वापस लाओ। फिर वह झाड़ने लगा पिंडलियां और गर्दनें। (30-33)

और हमने सुलैमान को आज़माया। और हमने उसके तख़्त पर एक धड़ डाल दिया, फिर उसने रुजूअ किया। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मुझे माफ़ कर दे और मुझे ऐसी सल्तनत दे जो मेरे बाद किसी के लिए सज़ावार (उपलब्ध) न हो। बेशक तू बड़ा देने वाला है। तो हमने हवा को उसके ताबेअ (अधीन) कर दिया। वह उसके हुक्म से नर्मी के साथ चलती थी जिधर वह चाहता। और जिन्नात को भी उसका ताबेअ कर दिया। हर तरह के कामगर और ग़ोताख़ोर। और दूसरे जो ज़ंजीरों में जकड़े हुए रहते। यह हमारा अतिया (देन) है तो चाहे उसे दो या रोको, बेहिसाब। और उसके लिए हमारे यहां क़ुर्ब (समीपता) है और बेहतर अंजाम। (34-40)

और हमारे बंदे अय्यूब को याद करो। जब उसने अपने रब को पुकारा कि शैतान ने मुझे तकलीफ़ और अज़ाब में डाल दिया है। अपना पांव मारो। यह ठंडा पानी है, नहाने के लिए और पीने के लिए। और हमने उसे उसका कुंबा अता किया और उनके साथ उनके बराबर और भी, अपनी तरफ़ से रहमत के तौर पर और अक़्ल वालों के लिए नसीहत के तौर पर। और अपने हाथ में सींकों का एक मुट्ठा लो और उससे मारो और क़सम न तोड़ो। बेशक

हमने उसे साबिर (धैर्यवान) पाया, बेहतरीन बंदा, अपने रब की तरफ़ बहुत रुजूअ करने वाला। (41-44)

और हमारे बंदो, इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब को याद करो, वे हाथों वाले और आंखों वाले थे। हमने उन्हें एक ख़ास बात के साथ मख़्सूस किया था कि वह आख़िरत (परलोक) की याददिहानी है। और वे हमारे यहां चुने हुए नेक लोगों में से हैं। और इस्माईल और अल यसअ और ज़ुलकिफ़्ल को याद करो, सब नेक लोगों में से थे। (45-48)

यह नसीहत है, और बेशक अल्लाह से डरने वालों के लिए अच्छा ठिकाना है, हमेशा के बाग़ जिनके दरवाज़े उनके लिए खुले होंगे। वे उनमें तकिया लगाए बैठे होंगे। और बहुत से मेवे और मशरूबात (पेय पदार्थ) तलब करते होंगे। और उनके पास शर्मीली हमसिन (समान अवस्था वाली) बीवियां होंगी। यह है वह चीज़ जिसका तुमसे रोज़े हिसाब आने पर वादा किया जाता है। यह हमारा रिज़्क़ है जो कभी ख़त्म होने वाला नहीं। (49-54)

यह बात हो चुकी, और सरकशों के लिए बुरा ठिकाना है। जहन्नम, उसमें वे दाख़िल होंगे। पस क्या ही बुरी जगह है। यह खौलता हुआ पानी और पीप है, तो ये लोग उन्हें चखें। और इस क़िस्म की दूसरी और भी चीज़ें होंगी। यह एक फ़ौज तुम्हारे पास घुसी चली आ रही है, उनके लिए कोई ख़ुशआमदीद (स्वागत) नहीं। वे आग में पड़ने वाले हैं। वे कहेंगे बल्कि तुम, तुम्हारे लिए कोई ख़ुशआमदीद नहीं। तुम्हीं तो यह हमारे आगे लाए हो, पस कैसा बुरा है यह ठिकाना। वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब, जो शख़्स इसे हमारे आगे लाया उसे तू दुगना अज़ाब दे, जहन्नम में। और वे कहेंगे, क्या बात है कि हम उन लोगों को यहां नहीं देख रहे हैं जिन्हें हम बुरे लोगों में शुमार करते थे। क्या हमने उन्हें मज़ाक़ बना लिया था या उनसे निगाहें चूक रही हैं। बेशक यह बात सच्ची है, अहले दोज़ख़ का आपस में झगड़ना। (55-64)

कहो कि मैं तो सिर्फ़ एक डराने वाला हूं। और कोई माबूद (पूज्य) नहीं मगर अल्लाह, यकता (एक) और ग़ालिब (वर्चस्वशील)। वह रब है आसमानों और ज़मीन का और उन चीज़ों को जो इनके दर्मियान हैं, वह ज़बरदस्त है,

बख़्शने वाला है। कहो कि यह एक बड़ी ख़बर है, जिससे तुम बेपरवाह हो रहे हो। मुझे आलमे बाला (आकाश लोक) की कुछ ख़बर नहीं थी जबकि वे आपस में तकरार कर रहे थे। मेरे पास तो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) बस इसलिए आती है कि मैं एक खुला डराने वाला हूं। (65-70)

जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से एक बशर (इंसान) बनाने वाला हूं। फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर लूं और उसमें अपनी रूह फूंक दूं तो तुम उसके आगे सज्दे मे गिर पड़ना। पस तमाम फ़रिश्तों ने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान), कि उसने घमंड किया और वह इंकार करने वालों में से हो गया। फ़रमाया कि ऐ इब्लीस, किस चीज़ ने तुझे रोक दिया कि तू उसे सज्दा करे जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया। यह तूने तकब्बुर (घमंड) किया या तू बड़े दर्जे वालों में से है। उसने कहा कि मैं आदम से बेहतर हूं। तूने मुझे आग से पैदा किया है और उसे मिट्टी से। फ़रमाया कि तू यहां से निकल जा, क्योंकि तू मर्दूद (धुत्कारा हुआ) है। और तुझ पर मेरी लानत है जज़ा के दिन तक। (71-78)

इब्लीस ने कहा कि ऐ मेरे रब, मुझे मोहलत दे उस दिन तक के लिए जब लोग दुबारा उठाए जाएंगे। फ़रमाया कि तुझे मोहलत दी गई, मुअय्यन (निश्चित) वक़्त तक के लिए। उसने कहा कि तेरी इज़्ज़त की क़सम, मैं उन सबको गुमराह करके रहूंगा, सिवाए तेरे उन बंदों के जिन्हें तूने ख़ालिस कर लिया है। फ़रमाया, तो हक़ यह है और मैं हक़ ही कहता हूं कि मैं जहन्नम को तुझसे और उन तमाम लोगों से भर दूंगा जो उनमें से तेरी पैरवी करेंगे। (79-85)

कहो कि मैं इस पर तुमसे कोई अज्र (मेहनताना) नहीं मांगता और न मैं तकल्लुफ़ (बनावट) करने वालों में से हूं। यह तो बस एक नसीहत है दुनिया वालों के लिए। और तुम जल्द उसकी दी हुई ख़बर को जान लोगे। (86-88)

सूरह-39. अज़्-ज़ुमर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

यह किताब अल्लाह की तरफ़ से उतारी गई है जो ज़बरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। बेशक हमने यह किताब तुम्हारी तरफ़ हक़ के साथ उतारी है, पस तुम अल्लाह ही की इबादत करो उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। आगाह, दीन ख़ालिस सिर्फ़ अल्लाह के लिए है। और जिन लोगों ने उसके सिवा दूसरे हिमायती बना रखे हैं, कि हम तो उनकी इबादत सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि वे हमें ख़ुदा से क़रीब कर दें। बेशक अल्लाह उनके दर्मियान उस बात का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे इख़्तेलाफ़ (मतभेद) कर रहे हैं। अल्लाह ऐसे शख़्स को हिदायत नहीं देता जो झूठा, हक़ को न मानने वाला हो। (1-3)

अगर अल्लाह चाहता कि वह बेटा बनाए तो अपनी मख़्लूक़ में से जिसे चाहता चुन लेता, वह पाक है। वह अल्लाह है, अकेला, सब पर ग़ालिब। उसने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया। वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है। और उसने सूरज और चांद को मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर रखा है। हर एक एक ठहरी हुई मुद्दत पर चलता है। सुन लो कि वह ज़बरदस्त है, बख़्शने वाला है। (4-5)

अल्लाह ने तुम्हें एक जान से पैदा किया, फिर उसने उसी से उसका जोड़ा बनाया। और उसी ने तुम्हारे लिए नर व मादा चौपायों की आठ क़िस्में उतारीं। वह तुम्हें तुम्हारी मांओं के पेट में बनाता है, एक ख़िलक़त (सृजनरूप) के बाद दूसरी ख़िलक़त, तीन तारीकियों के अंदर। यही अल्लाह तुम्हारा रब है। बादशाही उसी की है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। फिर तुम कहां से फेरे जाते हो। (6)

अगर तुम इंकार करो तो अल्लाह तुमसे बेनियाज़ (निस्पृह) है। और वह अपने बंदों के लिए इंकार को पसंद नहीं करता। और अगर तुम शुक्र करो तो वह उसे तुम्हारे लिए पसंद करता है। और कोई बोझ उठाने वाला किसी

दूसरे का बोझ न उठाएगा। फिर तुम्हारे रब ही की तरफ़ तुम्हारी वापसी है। तो वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे। बेशक वह दिलों की बात को जानने वाला है। (7)

और जब इंसान को कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो वह अपने रब को पुकारता है, उसकी तरफ़ रुजूअ (प्रवृत्त) होकर। फिर जब वह उसे अपने पास से नेमत दे देता है तो वह उस चीज़ को भूल जाता है जिसके लिए वह पहले पुकार रहा था और वह दूसरों को अल्लाह का बराबर ठहराने लगता है ताकि उसकी राह से गुमराह कर दे। कहो कि अपने कुफ्र से थोड़े दिन फ़ायदा उठा ले, बेशक तू आग वालों में से है। भला जो शख़्स रात की घड़ियों में सज्दा और क़ियाम की हालत में आजिज़ी (विनय) कर रहा हो, आख़िरत से डरता हो और अपने रब की रहमत का उम्मीदवार हो, कहो, क्या जानने वाले और न जानने वाले दोनों बराबर हो सकते हैं। नसीहत तो वही लोग पकड़ते हैं जो अक़्ल वाले हैं। (8-9)

कहो कि ऐ मेरे बंदो जो ईमान लाए हो, अपने रब से डरो। जो लोग इस दुनिया में नेकी करेंगे उनके लिए नेक सिला (प्रतिफल) है। और अल्लाह की ज़मीन वसीअ (विस्तृत) है। बेशक सब्र करने वालों को उनका अज्र बेहिसाब दिया जाएगा। (10)

कहो, मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह ही की इबादत करूं, उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं सबसे पहले ख़ुद मुस्लिम (आज्ञाकारी) बनूं। कहो कि अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी (अवज्ञा) करूं तो मैं एक हौलनाक दिन के अज़ाब से डरता हूं। कहो कि मैं अल्लाह की इबादत करता हूं उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। पस तुम उसके सिवा जिसकी चाहे इबादत करो। कहो कि असली घाटे वाले तो वे हैं जिन्होंने अपने आपको और अपने घरवालों को क़ियामत के दिन घाटे में डाला। सुन लो यही खुला हुआ घाटा है। उनके लिए उनके ऊपर से भी आग के सायबान होंगे और उनके नीचे से भी। यह चीज़ है जिससे अल्लाह अपने बंदों को डराता है। ऐ मेरे बंदो, पस मुझसे डरो। (11-16)

और जो लोग शैतान से बचे कि वे उसकी इबादत करें और वे अल्लाह की तरफ़ रुजूअ हुए, उनके लिए ख़ुशख़बरी है, तो मेरे बंदों को ख़ुशख़बरी दे दो जो बात को ग़ौर से सुनते हैं। फिर उसके बेहतर की पैरवी करते हैं। यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत बख़्शी है और यही हैं जो अक़्ल वाले हैं। (17-18)

क्या जिस पर अज़ाब की बात साबित हो चुकी, पस क्या तुम ऐसे शख़्स को बचा सकते हो जो कि आग में है। लेकिन जो लोग अपने रब से डरे, उनके लिए बालाख़ाने (उच्च भवन) हैं जिनके ऊपर और बालाख़ाने हैं, बने हुए। उनके नीचे नहरें बहती हैं। यह अल्लाह का वादा है। अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (19-20)

क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर उसे ज़मीन के चशमों (स्रोतों) में जारी कर दिया। फिर वह उससे मुख़्तलिफ़ क़िस्म की खेतियां निकालता है, फिर वह ख़ुश्क हो जाती है, तो तुम उसे ज़र्द देखते हो। फिर वह उसे रेज़ा-रेज़ा कर देता है। बेशक इसमें नसीहत है अक़्ल वालों के लिए। क्या वह शख़्स जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया, पस वह अपने रब की तरफ़ से एक रोशनी पर है। तो ख़राबी है उनके लिए जिनके दिल अल्लाह की नसीहत के मामले में सख़्त हो गए। ये लोग खुली हुई गुमराही में हैं। (21-22)

अल्लाह ने बेहतरीन कलाम उतारा है। एक ऐसी किताब आपस में मिलती-जुलती, बार-बार दोहराई हुई, इससे उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने रब से डरने वाले हैं। फिर उनके बदन और उनके दिल नर्म होकर अल्लाह की याद की तरफ़ मुतवज्जह हो जाते हैं। यह अल्लाह की हिदायत है, इससे वह हिदायत देता है जिसे वह चाहता है। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तो उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। (23)

क्या वह शख़्स जो क़ियामत के दिन अपने चेहरे को बुरे अज़ाब की सिपर (ढाल) बनाएगा, और ज़ालिमों से कहा जाएगा कि चखो मज़ा उस कमाई का जो तुम करते थे। उनसे पहले वालों ने भी झुठलाया तो उन पर अज़ाब वहां

से आ गया जिधर उनका ख़्याल भी न था। तो अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में रुसवाई का मज़ा चखाया और आख़िरत का अज़ाब और भी बड़ा है, काश ये लोग जानते। (24-26)

और हमने इस क़ुरआन में हर क़िस्म की मिसालें बयान की हैं ताकि वे नसीहत हासिल करें। यह अरबी क़ुरआन है, इसमें कोई टेढ़ नहीं, ताकि लोग डरें। अल्लाह मिसाल बयान करता है एक शख़्स की जिसकी मिल्कियत में कई ज़िद्दी आक़ा (स्वामी) शरीक हैं। और दूसरा शख़्स पूरा का पूरा एक ही आक़ा का ग़ुलाम है। क्या इन दोनों का हाल यकसां (समान) होगा। सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। तुम्हें भी मरना है और वे भी मरने वाले हैं। फिर तुम लोग क़ियामत के दिन अपने रब के सामने अपना मुक़दमा पेश करोगे। (27-31)

उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा। और सच्चाई को झुठला दिया जबकि वह उसके पास आई। क्या ऐसे मुंकिरों का ठिकाना जहन्नम में न होगा। और जो शख़्स सच्चाई लेकर आया और जिसने उसकी तस्दीक़ (पुष्टि) की, यही लोग अल्लाह से डरने वाले हैं। उनके लिए उनके रब के पास वह सब है जो वे चाहेंगे, यह बदला है नेकी करने वालों का ताकि अल्लाह उनसे उनके बुरे अमलों को दूर कर दे और उनके नेक कामों के एवज़ उन्हें उनका सवाब दे। (32-35)

क्या अल्लाह अपने बंदे के लिए काफ़ी नहीं। और ये लोग उसके सिवा दूसरों से तुम्हें डराते हैं, और अल्लाह जिसे गुमराह कर दे उसे कोई रास्ता दिखाने वाला नहीं। और अल्लाह जिसे हिदायत दे उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या अल्लाह ज़बरदस्त, इंतिक़ाम (प्रतिशोध) लेने वाला नहीं। (36-37)

और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों को और ज़मीन को किसने पैदा किया तो वे कहेंगे कि अल्लाह ने। कहो, तुम्हारा क्या ख़्याल है, अल्लाह के सिवा तुम जिन्हें पुकारते हो, अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुंचाना चाहे तो क्या ये उसकी दी हुई तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं, या अल्लाह

मुझ पर कोई महरबानी करना चाहे तो क्या ये उसकी महरबानी को रोकने वाले बन सकते हैं। कहो कि अल्लाह मेरे लिए काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं। कहो कि ऐ मेरी क़ौम, तुम अपनी जगह अमल करो, मैं भी अमल कर रहा हूं, तो तुम जल्द जान लोगे कि किस पर रुसवा करने वाला अज़ाब आता है और किस पर वह अज़ाब आता है जो कभी टलने वाला नहीं। हमने लोगों की हिदायत के लिए यह किताब तुम पर हक़ के साथ उतारी है। पस जो शख़्स हिदायत हासिल करेगा वह अपने ही लिए करेगा। और जो शख़्स बेराह होगा तो उसका बेराह होना उसी पर पड़ेगा। और तुम उनके ऊपर ज़िम्मेदार नहीं हो। (38-41)

अल्लाह ही वफ़ात देता है जानों को उनकी मौत के वक़्त, और जिनकी मौत नहीं आई उन्हें सोने के वक़्त। फिर वह उन्हें रोक लेता है जिनकी मौत का फ़ैसला कर चुका है और दूसरों को एक वक़्त मुक़र्रर तक के लिए रिहा कर देता है। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (42)

क्या उन्होंने अल्लाह को छोड़कर दूसरों को सिफ़ारिशी बना रखा है। कहो, अगरचे वे न कुछ इख़्तियार रखते हों और न कुछ समझते हों। कहो, सिफ़ारिश सारी की सारी अल्लाह के इख़्तियार में है। आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है। फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे। और जब अकेले अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उन लोगों के दिल कुढ़ते हैं जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते। और जब उसके सिवा दूसरों का ज़िक्र होता है तो उस वक़्त वे ख़ुश हो जाते हैं। कहो कि ऐ अल्लाह, आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, ग़ायब और हाज़िर के जानने वाले, तू अपने बंदों के दर्मियान उस चीज़ का फ़ैसला करेगा जिसमें वे इख़्तेलाफ़ (मतभेद) कर रहे हैं। और अगर ज़ुल्म करने वालों के पास वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है और उसी के बराबर और भी, तो वे क़ियामत के दिन सख़्त अज़ाब से बचने के लिए उसे फ़िदये (बदल) में दे दें। और अल्लाह की तरफ़ से उन्हें वह मामला पेश आएगा जिसका उन्हें गुमान भी न था। और उनके सामने

आ जाएंगे उनके बुरे आमाल और वह चीज़ उन्हें घेर लेगी जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे। (43-48)

पस जब इंसान को कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो वह हमें पुकारता है, फिर जब हम अपनी तरफ़ से उसे नेमत दे देते हैं तो वह कहता है कि यह तो मुझे इल्म की बिना पर दिया गया है। बल्कि यह आज़माइश है मगर उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते। उनसे पहले वालों ने भी यह बात कही तो जो कुछ वे कमाते थे वह उनके काम न आया। पस उन पर वे बुराइयां आ पड़ीं जो उन्होंने कमाई थीं। और उन लोगों में से जो ज़ालिम हैं उनके सामने भी उनकी कमाई के बुरे नताइज जल्द आएंगे। वे हमें आजिज़ (निर्बल) कर देने वाले नहीं हैं। क्या उन्हें मालूम नहीं कि अल्लाह जिसे चाहता है रिज़्क़ कुशादा कर देता है। और वही तंग कर देता है। बेशक इसके अंदर निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाने वाले हैं। (49-52)

कहो कि ऐ मेरे बंदो जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है, अल्लाह की रहमत से मायूस न हो। बेशक अल्लाह तमाम गुनाहों को माफ़ कर देता है, वह बड़ा बख़्शने वाला महरबान है। और तुम अपने रब की तरफ़ रुजूअ करो और उसके फ़रमांबरदार बन जाओ। इससे पहले कि तुम पर अज़ाब आ जाए, फिर तुम्हारी कोई मदद न की जाए। (53-54)

और तुम पैरवी करो अपने रब की भेजी हुई किताब के बेहतर पहलू की, इससे पहले इसके कि तुम पर अचानक अज़ाब आ जाए और तुम्हें ख़बर भी न हो। कहीं कोई शख़्स यह कहे कि अफ़सोस मेरी कोताही पर जो मैंने ख़ुदा की जनाब में की, और मैं तो मज़ाक़ उड़ाने वालों में शामिल रहा। या कोई यह कहे कि अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं भी डरने वालों में से होता। या अज़ाब को देखकर कोई शख़्स यह कहे कि काश मुझे दुनिया में फिर जाना हो तो मैं नेक बंदों में से हो जाऊं। हां तुम्हारे पास मेरी आयतें आईं फिर तूने उन्हें झुठलाया और तकब्बुर (घमंड) किया और तू मुंकिरों में शामिल रहा। और तुम क़ियामत के दिन उन लोगों के चेहरे स्याह देखोगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोला था। क्या घमंड करने वालों का

ठिकाना जहन्नम में न होगा। और जो लोग डरते रहे। अल्लाह उन लोगों को कामयाबी के साथ नजात (मुक्ति) देगा, और उन्हें कोई तकलीफ़ न पहुंचेगी और न वे ग़मगीन होंगे। (55-61)

अल्लाह हर चीज़ का ख़ालिक़ है और वही हर चीज़ पर निगहबान है। आसमानों और ज़मीन की कुंजियां उसी के पास हैं। और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इंकार किया वही घाटे में रहने वाले हैं। कहो कि ऐ नादानो, क्या तुम मुझे ग़ैर अल्लाह की इबादत करने के लिए कहते हो। और तुमसे पहले वालों की तरफ़ भी 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी जा चुकी है कि अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा अमल ज़ाया हो जाएगा। और तुम ख़सारे (घाटे) में रहोगे। बल्कि सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करो और शुक्र करने वालों में से बनो। (62-66)

और लोगों ने अल्लाह की क़द्र न की जैसा कि उसकी क़द्र करने का हक़ है। और ज़मीन सारी उसकी मुट्ठी में होगी क़ियामत के दिन और तमाम आसमान लिपटे होंगे उसके दाहिने हाथ में। वह पाक और बरतर है उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं। और सूर फूंका जाएगा तो आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे, मगर जिसे अल्लाह चाहे। फिर दुबारा उसमें फूंका जाएगा तो यकायक सब के सब उठकर देखने लगेंगे और ज़मीन अपने रब के नूर (आलोक) से चमक उठेगी। और किताब रख दी जाएगी और पैग़म्बर और गवाह हाज़िर किए जाएंगे। और लोगों के दर्मियान ठीक-ठीक फ़ैसला कर दिया जाएगा और उन पर कोई ज़ुल्म न होगा। और हर शख़्स को उसके आमाल का पूरा बदला दिया जाएगा। और वह ख़ूब जानता है जो कुछ वे करते हैं। (67-70)

और जिन लोगों ने इंकार किया वे गिरोह-गिरोह बनाकर जहन्नम की तरफ़ हांके जाएंगे। यहां तक कि जब वे उसके पास पहुंचेंगे उसके दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और उसके मुहाफ़िज़ (प्रहरी) उनसे कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हीं लोगों में से पैग़म्बर नहीं आए जो तुम्हें तुम्हारे रब की आयतें सुनाते थे और तुम्हें तुम्हारे इस दिन की मुलाक़ात से डराते थे। वे कहेंगे कि हां,

लेकिन अज़ाब का वादा मुंकिरों पर पूरा होकर रहा। कहा जाएगा कि जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, उसमें हमेशा रहने के लिए। पस कैसा बुरा ठिकाना है तकब्बुर (घमंड) करने वालों का। (71-72)

और जो लोग अपने रब से डरे वे गिरोह दर गिरोह जन्नत की तरफ़ ले जाए जाएंगे। यहां तक कि जब वे वहां पहुंचेंगे और उसके दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और उसके मुहाफ़िज़ (प्रहरी) उनसे कहेंगे कि सलाम हो तुम पर, ख़ुशहाल रहो, पस इसमें दाख़िल हो जाओ हमेशा के लिए। और वे कहेंगे कि शुक्र है उस अल्लाह का जिसने हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया और हमें इस ज़मीन का वारिस बना दिया। हम जन्नत में जहां चाहें रहें। पस क्या ख़ूब बदला है अमल करने वालों का। और तुम फ़रिश्तों को देखोगे कि अर्श के गिर्द हलक़ा बनाए हुए अपने रब की हम्द व तस्बीह करते होंगे। और लोगों के दर्मियान ठीक-ठीक फ़ैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा कि सारी हम्द अल्लाह के लिए है, आलम का ख़ुदावंद। (73-75)

सूरह-40. अल-मोमिन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। यह किताब उतारी गई है अल्लाह की तरफ़ से जो ज़बरदस्त है, जानने वाला है। माफ़ करने वाला और तौबा क़ुबूल करने वाला है, सख़्त सज़ा देने वाला, बड़ी क़ुदरत वाला है। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। उसी की तरफ़ लौटना है। (1-3)

अल्लाह की आयतों में वही लोग झगड़े निकालते हैं जो मुंकिर हैं। तो उन लोगों का शहरों में चलना फिरना तुम्हें धोखे में न डाले। उनसे पहले नूह की क़ौम ने झुठलाया। और उनके बाद के गिरोह ने भी। और हर उम्मत ने इरादा किया कि अपने रसूल को पकड़ लें और उन्होंने नाहक़ के झगड़े निकाले ताकि उससे हक़ को पसपा (परास्त) कर दें तो मैंने उन्हें पकड़ लिया। फिर कैसी थी मेरी सज़ा। और इसी तरह तेरे रब की बात उन लोगों पर पूरी हो चुकी है जिन्होंने इंकार किया कि वे आग वाले हैं। (4-6)

जो अर्श को उठाए हुए हैं और जो उसके इर्द-गिर्द हैं वे अपने रब की तस्बीह करते हैं, उसकी हम्द के साथ। और वे उस पर ईमान रखते हैं। और वे ईमान वालों के लिए मग़्फ़िरत (क्षमा) की दुआ करते हैं। ऐ हमारे रब तेरी रहमत और तेरा इल्म हर चीज़ का इहाता किए हुए है। पस तू माफ़ कर दे उन लोगों को जो तौबा करें और तेरे रास्ते की पैरवी करें और तू उन्हें जहन्नम के अज़ाब से बचा। ऐ हमारे रब, और तू उन्हें हमेशा रहने वाले बाग़ों में दाख़िल कर जिनका तूने उनसे वादा किया है। और उन्हें भी जो सालेह हों उनके वालिदैन और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से। बेशक तू ज़बरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और उन्हें बुराइयों से बचा ले। और जिसे तूने उस दिन बुराइयों से बचाया तो उन पर तूने रहम किया। और यही बड़ी कामयाबी है। (7-9)

जिन लोगों ने इंकार किया, उन्हें पुकार कर कहा जाएगा, ख़ुदा की बेज़ारी (खिन्नता) तुमसे इससे ज़्यादा है जितनी बेज़ारी तुम्हें अपने आप पर है। जब तुम्हें ईमान की तरफ़ बुलाया जाता था तो तुम इंकार करते थे। वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब, तूने हमें दो बार मौत दी और दो बार हमें ज़िंदगी दी, पस हमने अपने गुनाहों का इक़रार किया, तो क्या निकलने की कोई सूरत है। यह तुम पर इसलिए है कि जब अकेले अल्लाह की तरफ़ बुलाया जाता था तो तुम इंकार करते थे। और जब उसके साथ शरीक किया जाता तो तुम मान लेते। पस फ़ैसला अल्लाह के इख़्तियार में है जो अज़ीम है, बड़े मर्तबे वाला है। (10-12)

वही है जो तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है और आसमान से तुम्हारे लिए रिज़्क़ उतारता है। और नसीहत सिर्फ़ वही शख़्स क़ुबूल करता है जो अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करने वाला हो। पस अल्लाह ही को पुकारो, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करके, चाहे मुंकिरों को नागवार क्यों न हो। वह बुलन्द दर्जों वाला, अर्श का मालिक है। वह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजता है ताकि वह मुलाक़ात के दिन से डराए। जिस दिन कि वे ज़ाहिर होंगे। अल्लाह से उनकी कोई चीज़ छुपी हुई न होगी।

आज बादशाही किस की है, अल्लाह वाहिद क़ह्हार (वर्चस्वशाली) की। आज हर शख़्स को उसके किए का बदला मिलेगा, आज कोई ज़ुल्म न होगा। बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (13-17)

और उन्हें क़रीब आने वाली मुसीबत के दिन से डराओ जबकि दिल हलक़ तक आ पहुंचेंगे, वे ग़म से भरे हुए होंगे। ज़ालिमों का न कोई दोस्त होगा और न कोई सिफ़ारिशी जिसकी बात मानी जाए। वह निगाहों की चोरी को जानता है और उन बातों को भी जिन्हें सीने छुपाए हुए हैं। और अल्लाह हक़ के साथ फ़ैसला करेगा। और जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज़ का फ़ैसला नहीं करते। बेशक अल्लाह सुनने वाला है, देखने वाला है। (18-20)

क्या वे ज़मीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि क्या अंजाम हुआ उन लोगों का जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं। वे इनसे बहुत ज़्यादा थे क़ुव्वत में और उन आसार के एतबार से भी जो उन्होंने ज़मीन में छोड़े। फिर अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उन्हें पकड़ लिया और कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला न था। यह इसलिए हुआ कि उनके पास उनके रसूल खुली निशानियां लेकर आए तो उन्होंने इंकार किया। तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया। यक़ीनन वह ताक़तवर है सख़्त सज़ा देने वाला है। (21-22)

और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ और खुली दलील के साथ, फ़िरऔन और हामान और क़ारून के पास भेजा, तो उन्होंने कहा कि यह एक जादूगर है, झूठा है। फिर जब वह हमारी तरफ़ से हक़ लेकर उनके पास पहुंचा, उन्होंने कहा कि इन लोगों के बेटों को क़त्ल कर डालो जो इसके साथ ईमान लाएं और उनकी औरतों को ज़िंदा रखो। और उन मुंकिरों की तदबीर महज़ बेअसर रही। (23-25)

और फ़िरऔन ने कहा, मुझे छोड़ो, मैं मूसा को क़त्ल कर डालूं और वह अपने रब को पुकारे, मुझे अंदेशा है कि कहीं वह तुम्हारा दीन (धर्म) बदल डाले या मुल्क में फ़साद फैला दे। और मूसा ने कहा कि मैंने अपने और

तुम्हारे रब की पनाह ली हर उस मुतकब्बिर (घमंडी) से जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता। (26-27)

और आले फ़िरऔन में से एक मोमिन शख़्स, जो अपने ईमान को छुपाए हुए था, बोला, क्या तुम लोग एक शख़्स को सिर्फ़ इस बात पर क़त्ल कर दोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है, हालाँकि वह तुम्हारे रब की तरफ़ से खुली दलीलें भी लेकर आया है। और अगर वह झूठा है तो उसका झूठ उसी पर पड़ेगा। और अगर वह सच्चा है तो उसका कोई हिस्सा तुम्हें पहुंच कर रहेगा। जिसका वादा वह तुमसे करता है। बेशक अल्लाह ऐसे शख़्स को हिदायत नहीं देता जो हद से गुज़रने वाला हो, झूठा हो। ऐ मेरी क़ौम, आज तुम्हारी सल्तनत है कि तुम ज़मीन में ग़ालिब हो। फिर अल्लाह के अज़ाब के मुक़ाबिल हमारी कौन मदद करेगा, अगर वह हम पर आ गया। फ़िरऔन ने कहा, मैं तुम्हें वही राय देता हूं जिसे मैं समझ रहा हूं, और मैं तुम्हारी रहनुमाई ठीक भलाई के रास्ते की तरफ़ कर रहा हूं। (28-29)

और जो शख़्स ईमान लाया था उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, मैं डरता हूं कि तुम पर और गिरोहों जैसा दिन आ जाए, जैसा दिन क़ौमे नूह और आद और समूद और उनके बाद वालों पर आया। और अल्लाह अपने बंदों पर कोई ज़ुल्म करना नहीं चाहता। और ऐ मेरी क़ौम, मैं डरता हूं कि तुम पर चीख़ पुकार का दिन आ जाए, जिस दिन तुम पीठ फेरकर भागोगे। और तुम्हें ख़ुदा से बचाने वाला कोई न होगा। और जिसे ख़ुदा गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। (30-33)

और इससे पहले यूसुफ़ तुम्हारे पास खुले दलाइल के साथ आए तो तुम उनकी लाई हुई बातों की तरफ़ से शक ही में पड़े रहे। यहां तक कि जब उनकी वफ़ात हो गई तो तुमने कहा कि अल्लाह इनके बाद हरगिज़ कोई रसूल न भेजेगा। इसी तरह अल्लाह उन लोगों को गुमराह कर देता है जो हद से गुज़रने वाले और शक करने वाले होते हैं। जो अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं बग़ैर किसी दलील के जो उनके पास आई हो। अल्लाह और ईमान

वालों के नज़दीक यह सख़्त मबग़ूज़ (अप्रिय) है। इसी तरह अल्लाह मुहर कर देता है हर मग़रूर (अभिमानी), सरकश के दिल पर। (34-35)

और फ़िरऔन ने कहा कि ऐ हामान, मेरे लिए एक ऊंची इमारत बना ताकि मैं रास्तों पर पहुंचूं, आसमानों के रास्तों तक, पस मूसा के माबूद (पूज्य) को झांक कर देखूं, और मैं तो उसे झूठा ख़्याल करता हूं। और इस तरह फ़िरऔन के लिए उसकी बदअमली ख़ुशनुमा बना दी गई और वह सीधे रास्ते से रोक दिया गया। और फ़िरऔन की तदबीर ग़ारत होकर रही। (36-37)

और जो शख़्स ईमान लाया था उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, तुम मेरी पैरवी करो, मैं तुम्हें सही रास्ता बता रहा हूं। ऐ मेरी क़ौम, यह दुनिया की ज़िंदगी महज़ चन्द रोज़ा है और अस्ल ठहरने का मक़ाम आख़िरत (परलोक) है। जो शख़्स बुराई करेगा तो वह उसके बराबर बदला पाएगा। और जो शख़्स नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, बशर्ते कि वह मोमिन हो तो यही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, वहां वे बेहिसाब रिज़्क़ पाएंगे। और ऐ मेरी क़ौम, क्या बात है कि मैं तो तुम्हें नजात (मुक्ति) की तरफ़ बुलाता हूं और तुम मुझे आग की तरफ़ बुला रहे हो। तुम मुझे बुला रहे हो कि मैं ख़ुदा के साथ कुफ़्र करूं और ऐसी चीज़ को उसका शरीक बनाऊं जिसका मुझे कोई इल्म नहीं। और मैं तुम्हें ज़बरदस्त मग़्फ़िरत (क्षमा) करने वाले ख़ुदा की तरफ़ बुला रहा हूं। यक़ीनी बात है कि तुम जिस चीज़ की तरफ़ मुझे बुलाते हो उसकी कोई आवाज़ न दुनिया में है और न आख़िरत में। और बेशक हम सबकी वापसी अल्लाह ही की तरफ़ है और हद से गुज़रने वाले ही आग में जाने वाले हैं। पस तुम आगे चलकर मेरी बात को याद करोगे। और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूं। बेशक अल्लाह तमाम बंदों का निगरां (निगाह रखने वाला) है। (38-44)

फिर अल्लाह ने उसे उनकी बुरी तदबीरों से बचा लिया। और फ़िरऔन वालों को बुरे अज़ाब ने घेर लिया। आग, जिस पर वे सुबह व शाम पेश किए जाते हैं। और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी, फ़िरऔन वालों को सख़्ततरीन अज़ाब में दाख़िल करो। (45-46)

और जब वे दोज़ख़ में एक दूसरे से झगड़ेंगे तो कमज़ोर लोग बड़ा बनने वालों से कहेंगे कि हम तुम्हारे ताबेअ (अधीन) थे, तो क्या तुम हमसे आग का कोई हिस्सा हटा सकते हो। बड़े लोग कहेंगे कि हम सब ही इसमें हैं। अल्लाह ने बंदों के दर्मियान फ़ैसला कर दिया। और जो लोग आग में होंगे वे जहन्नम के निगहबानों से कहेंगे कि तुम अपने रब से दरख़्वास्त करो कि हमारे अज़ाब में से एक दिन की तख़्फ़ीफ़ (कमी) कर दे। वे कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल वाज़ेह दलीलें लेकर नहीं आए। वे कहेंगे कि हां। निगहबान कहेंगे फिर तुम ही दरख़्वास्त करो। और मुंकिरों की पुकार अकारत ही जाने वाली है। (47-50)

बेशक हम मदद करते हैं अपने रसूलों की और ईमान वालों की दुनिया की ज़िंदगी में, और उस दिन भी जबकि गवाह खड़े होंगे, जिस दिन ज़ालिमों को उनकी मअज़रत (सफ़ाई पेश करना) कुछ फ़ायदा न देगी और उनके लिए लानत होगी और उनके लिए बुरा ठिकाना होगा। और हमने मूसा को हिदायत अता की और बनी इस्राईल को किताब का वारिस बनाया, रहनुमाई और नसीहत अक़्ल वालों के लिए। पस तुम सब्र करो, बेशक अल्लाह का वादा बरहक़ है और अपने क़ुसूर की माफ़ी चाहो। और सुबह व शाम अपने रब की तस्बीह करो उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ। (51-55)

जो लोग किसी सनद के बग़ैर जो उनके पास आई हो, अल्लाह की आयतों में झगड़े निकालते हैं, उनके दिलों में सिर्फ़ बड़ाई है कि वे उस तक कभी पहुंचने वाले नहीं। पस तुम अल्लाह की पनाह मांगो, बेशक वह सुनने वाला है, देखने वाला है। (56)

यक़ीनन आसमानों और ज़मीन का पैदा करना इंसानों को पैदा करने की निस्बत ज़्यादा बड़ा काम है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और अंधा और आंखों वाला यकसां (समान) नहीं हो सकता, और न ईमानदार और नेकोकार (सत्कर्मी) और वे जो बुराई करने वाले हैं। तुम लोग बहुत कम सोचते हो। बेशक क़ियामत आकर रहेगी। इसमें कोई शक नहीं, मगर अक्सर लोग नहीं मानते। (57-59)

और तुम्हारे रब ने फ़रमा दिया है कि मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी दरख़्वास्त क़ुबूल करूंगा। जो लोग मेरी इबादत से सरताबी (विमुखता) करते हैं वे अनक़रीब ज़लील होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे। अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो, और दिन को रोशन किया। बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। यही अल्लाह तुम्हारा रब है, हर चीज़ का पैदा करने वाला, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। फिर तुम कहां से बहकाए जाते हो। इसी तरह वे लोग बहकाए जाते रहे हैं जो अल्लाह की आयतों का इंकार करते थे। (60-63)

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को ठहरने की जगह बनाया और आसमान को छत बनाया और तुम्हारा नक़्शा बनाया पस उम्दा नक़्शा बनाया। और उसने तुम्हें उम्दा चीज़ों का रिज़्क़ दिया। यह अल्लाह है तुम्हारा रब, पस बड़ा ही बाबरकत है अल्लाह जो रब है सारे जहान का। वही ज़िंदा है उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। पस तुम उसी को पुकारो। दीन (धर्म) को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए। सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का। (64-65)

कहो, मुझे इससे मना कर दिया गया है कि मैं उनकी इबादत करूं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, जबकि मेरे पास खुली दलीलें आ चुकीं। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अपने आपको रब्बुल आलमीन (सृष्टि के प्रभु) के हवाले कर दूं। वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़ा (वीर्य) से, फिर ख़ून के लौथड़े से, फिर वह तुम्हें बच्चे की शक्ल में निकालता है, फिर वह तुम्हें बढ़ाता है ताकि तुम अपनी पूरी ताक़त को पहुंचो, फिर ताकि तुम बूढ़े हो जाओ। और तुम में से कोई पहले ही मर जाता है। और ताकि तुम मुक़र्रर वक़्त तक पहुंच जाओ और ताकि तुम सोचो। वही है जो जिलाता है और मारता है। पस जब वह किसी काम का फ़ैसला कर लेता है तो बस उसे कहता है कि हो जा पस वह हो जाता है। (66-68)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़े निकालते हैं। वे कहां से फेरे जाते हैं। जिन्होंने किताब को झुठलाया और

उस चीज़ को भी जिसके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा। तो अनक़रीब वे जानेंगे, जबकि उनकी गर्दनों में तौक़ होंगे। और ज़ंजीरें, वे घसीटे जाएंगे जलते हुए पानी में। फिर वे आग में झौंक दिए जाएंगे। फिर उनसे कहा जाएगा, कहां हैं वे जिन्हें तुम शरीक करते थे अल्लाह के सिवा। वे कहेंगे, वे हमसे खोए गए बल्कि हम इससे पहले किसी चीज़ को पुकारते न थे। इस तरह अल्लाह गुमराह करता है मुंकिरों को। यह इस सबब से कि तुम ज़मीन में नाहक़ ख़ुश होते थे और इस सबब से कि तुम घमंड करते थे। जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, उसमें हमेशा रहने के लिए। पस कैसा बुरा ठिकाना है घमंड करने वालों का। (69-76)

पस सब्र करो बेशक अल्लाह का वादा बरहक़ है। फिर जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं उसका कुछ हिस्सा हम तुम्हें दिखा देंगे। या तुम्हें वफ़ात देंगे, पस उनकी वापसी हमारी ही तरफ़ है। (77)

और हमने तुमसे पहले बहुत से रसूल भेजे, उनमें से कुछ के हालात हमने तुम्हें सुनाए हैं और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जिनके हालात हमने तुम्हें नहीं सुनाए। और किसी रसूल को यह मक़दूर (सामर्थ्य) न था कि वह अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर कोई निशानी ले आए। फिर जब अल्लाह का हुक्म आ गया तो हक़ के मुताबिक़ फ़ैसला कर दिया गया। और ग़लतकार लोग उस वक़्त ख़सारे (घाटे) में रह गए। (78)

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए मवेशी बनाए ताकि तुम कुछ से सवारी का काम लो और उनमें से कुछ को तुम खाते हो। और तुम्हारे लिए उनमें और भी फ़ायदे हैं। और ताकि तुम उनके ज़रिए से अपनी ज़रूरत तक पहुंचो जो तुम्हारे दिलों में हो और उन पर और कश्ती पर तुम सवार किए जाते हो और वह तुम्हें और भी निशानियां दिखाता है तो तुम अल्लाह की किन-किन निशानियों का इंकार करोगे। (79-81)

क्या वे ज़मीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि क्या अंजाम हुआ उन लोगों का जो इनसे पहले गुज़रे हैं। वे इनसे ज़्यादा थे, और क़ुव्वत (शक्ति) में और निशानियों में जो कि वे ज़मीन पर छोड़ गए, बढ़े हुए थे। पस उनकी

कमाई उनके कुछ काम न आई। पस जब उनके पैग़म्बर उनके पास खुली दलीलें लेकर आए तो वे अपने उस इल्म पर नाज़ां (गौरवांवित) रहे जो उनके पास था, और उन पर वह अज़ाब आ पड़ा जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे। फिर जब उन्होंने हमारा अज़ाब देखा, कहने लगे कि हम अल्लाह वाहिद (एकेश्वर) पर ईमान लाए और हम इंकार करते हैं जिन्हें हम उसके साथ शरीक करते थे। पस उनका ईमान उनके काम न आया जबकि उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया। यही अल्लाह की सुन्नत (तरीक़ा) है जो उसके बंदों में जारी रही है, और उस वक़्त इंकार करने वाले ख़सारे (घाटे) में रह गए। (82-85)

सूरह-41. हा० मीम० अस-सज्दह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। यह बड़े महरबान, निहायत रहम वाले की तरफ़ से उतारा हुआ कलाम है। यह एक किताब है जिसकी आयतें खोल-खोल कर बयान की गई हैं, अरबी ज़बान का क़ुरआन, उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं। ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला। पस उन लोगों में से अक्सर ने इससे मुंह मोड़ा। पस वे नहीं सुन रहे हैं। और उन्होंने कहा हमारे दिल उससे पर्दे में हैं जिसकी तरफ़ तुम हमें बुलाते हो और हमारे कानों में डाट है। और हमारे और तुम्हारे दर्मियान में एक हिजाब (ओट) है। पस तुम अपना काम करो, हम भी अपना काम कर रहे हैं। (1-5)

कहो, मैं तो एक बशर (इंसान) हूं तुम जैसा। मेरे पास यह 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आती है कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) बस एक ही माबूद है, पस तुम सीधे रहो उसी की तरफ़ और उससे माफ़ी चाहो। और ख़राबी है मुश्रिकों के लिए, जो ज़कात नहीं देते और वे आख़िरत के मुंकिर हैं। बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनके लिए ऐसा अज्र (प्रतिफल) है जो मौक़ूफ़ (बाधित) होने वाला नहीं। (6-8)

कहो क्या तुम लोग उस हस्ती का इंकार करते हो जिसने ज़मीन को दो दिन में बनाया, और तुम उसके हमसर (समकक्ष) ठहराते हो। वह रब है

तमाम जहान वालों का। और उसने ज़मीन में उसके ऊपर पहाड़ बनाए। और उसमें फ़ायदे की चीज़ें रख दीं। और उसमें उसकी ग़िज़ाएं ठहरा दीं चार दिन में, पूरा हुआ पूछने वालों के लिए। फिर वह आसमान की तरफ़ मुतवज्जह हुआ, और वह धुवां था। फिर उसने आसमान और ज़मीन से कहा कि तुम दोनों आओ ख़ुशी से या नाख़ुशी से। दोनों ने कहा कि हम ख़ुशी से हाज़िर हैं। फिर उसने दो दिन में उसके सात आसमान बनाए और हर आसमान में उसका हुक्म भेज दिया। और हमने आसमाने दुनिया को चराग़ों से ज़ीनत (साज-सज्जा) दी, और उसे महफ़ूज़ कर दिया। यह अज़ीज़ (प्रभुत्वशाली) व अलीम (सर्वज्ञ) की मंसूबाबंदी है। (9-12)

पस अगर वे एराज़ (उपेक्षा) करते हैं तो कहो कि मैं तुम्हें उसी तरह के अज़ाब से डराता हूं जैसा अज़ाब आद व समूद पर नाज़िल हुआ। जबकि उनके पास रसूल आए, उनके आगे से और उनके पीछे से कि अल्लाह के सिवा तुम किसी की इबादत न करो। उन्होंने कहा कि अगर हमारा रब चाहता तो वह फ़रिश्ते उतारता, पस हम उस चीज़ के मुंकिर हैं जिसे देकर तुम भेजे गए हो। (13-14)

आद का यह हाल था कि उन्होंने ज़मीन में बग़ैर किसी हक़ के घमंड किया, और उन्होंने कहा, कौन है जो क़ुव्वत (शक्ति) में हमसे ज़्यादा है। क्या उन्होंने नहीं देखा कि जिस ख़ुदा ने उन्हें पैदा किया है वह क़ुव्वत में उनसे ज़्यादा है और वे हमारी निशानियों का इंकार करते रहे। तो हमने चन्द मनहूस दिनों में उन पर सख़्त तूफ़ानी हवा भेज दी ताकि उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में रुसवाई का अज़ाब चखाएं, और आख़िरत का अज़ाब इससे भी ज़्यादा रुसवाकुन है और उन्हें कोई मदद न पहुंचेगी। और वे जो समूद थे, तो हमने उन्हें हिदायत का रास्ता दिखाया मगर उन्होंने हिदायत के मुक़ाबले में अंधेपन को पसंद किया, तो उन्हें अज़ाबे ज़िल्लत के कड़के ने पकड़ लिया उनकी बदकिरदारियों की वजह से। और हमने उन लोगों को नजात दी जो ईमान लाए और डरने वाले थे। (15-18)

और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन आग की तरफ़ जमा किए जाएंगे, फिर

वे जुदा-जुदा किए जाएंगे, यहां तक कि जब वे उसके पास आ जाएंगे, उनके कान और उनकी आंखें और उनकी खालें उन पर उनके आमाल की गवाही देंगी। और वे अपनी खालों से कहेंगे, तुमने हमारे ख़िलाफ़ क्यों गवाही दी। वे कहेंगी कि हमें उसी अल्लाह ने गोयाई (बोलने की ताक़त) दी है जिसने हर चीज़ को गोया कर दिया है। और उसी ने तुम्हें पहली मर्तबा पैदा किया और उसी के पास तुम लाए गए हो। और तुम अपने को इससे छुपा न सकते थे कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें और तुम्हारी खालें तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही दें, लेकिन तुम इस गुमान में रहे कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से उन आमाल को नहीं जानता जो तुम करते हो। और तुम्हारे उसी गुमान ने जो कि तुमने अपने रब के साथ किया था तुम्हें बर्बाद किया, पस तुम ख़सारा (घाटा) उठाने वालों में से हो गए। पस अगर वे सब्र करें तो आग ही उनका ठिकाना है, और अगर वे माफ़ी मांगें तो उन्हें माफ़ी नहीं मिलेगी। (19-24)

और हमने उन पर कुछ साथी मुसल्लत कर दिए तो उन्होंने उनके आगे और पीछे की हर चीज़ उन्हें ख़ुशनुमा बनाकर दिखाई। और उन पर वही बात पूरी होकर रही जो जिन्नों और इंसानों के उन गिरोहों पर पूरी हुई जो इनसे पहले गुज़र चुके थे। बेशक वे ख़सारे (घाटे) में रह जाने वाले थे। (25)

और कुफ़्र करने वालों ने कहा कि इस क़ुरआन को न सुनो और इसमें ख़लल डालो, ताकि तुम ग़ालिब रहो। पस हम इंकार करने वालों को सख़्त अज़ाब चखाएंगे और उन्हें उनके अमल का बदतरीन बदला देंगे। यह अल्लाह के दुश्मनों का बदला है, यानी आग। उनके लिए उसमें हमेशगी का ठिकाना होगा, इस बात के बदले में कि वे हमारी आयतों का इंकार करते थे। (26-28)

और कुफ़्र करने वाले कहेंगे कि ऐ हमारे रब, हमें उन लोगों को दिखा जिन्होंने जिन्नों और इंसानों में से हमें गुमराह किया, हम उन्हें अपने पांवों के नीचे डालेंगे ताकि वे ज़लील हों। जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह हमारा रब है, फिर वे साबितक़दम रहे, यक़ीनन उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं और उनसे कहते हैं कि तुम न अंदेशा करो और न रंज करो और उस जन्नत की बशारत (शुभ सूचना) से ख़ुश हो जाओ जिसका तुमसे वादा किया गया है।

हम दुनिया की ज़िंदगी में तुम्हारे साथी हैं और आख़िरत में भी। और तुम्हारे लिए वहां हर चीज़ है जिसे तुम्हारा दिल चाहे और तुम्हारे लिए उसमें हर वह चीज़ है जो तुम तलब करोगे, ग़फ़ूर (क्षमाशील) व रहीम (दयावान) की तरफ़ से मेहमानी के तौर पर। (29-32)

और उससे बेहतर किसकी बात होगी जिसने अल्लाह की तरफ़ बुलाया और नेक अमल किया और कहा कि मैं फ़रमांबरदारों में से हूं। और भलाई और बुराई दोनों बराबर नहीं, तुम जवाब में वह कहो जो उससे बेहतर हो फिर तुम देखोगे कि तुम में और जिसमें दुश्मनी थी, वह ऐसा हो गया जैसे कोई दोस्त क़राबत (घनिष्टता) वाला। और यह बात उसी को मिलती है जो सब्र करने वाले हैं, और यह बात उसी को मिलती है जो बड़ा नसीबे वाला है। और अगर शैतान तुम्हारे दिल में कुछ वसवसा डाले तो अल्लाह की पनाह मांगो। बेशक वह सुनने वाला, जानने वाला है। (33-36)

और उसकी निशानियों में से है रात और दिन और सूरज और चांद। तुम सूरज और चांद को सज्दा न करो बल्कि उस अल्लाह को सज्दा करो जिसने इन सबको पैदा किया है, अगर तुम उसी की इबादत करने वाले हो। पस अगर वे तकब्बुर (घमंड) करें तो जो लोग तेरे रब के पास हैं वे शब व रोज़ उसी की तस्बीह करते हैं और वे कभी नहीं थकते। (37-38)

और उसकी निशानियों में से यह है कि तुम ज़मीन को फ़रसूदा (मृत) हालत में देखते हो फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह उभरती है और फूल जाती है। बेशक जिसने उसे ज़िंदा कर दिया वह मुर्दों को भी ज़िंदा कर देने वाला है। बेशक वह हर चीज़ पर क़ादिर है। जो लोग हमारी आयतों को उल्टे मअना पहनाते हैं वे हमसे छुपे हुए नहीं हैं। क्या जो आग में डाला जाएगा वह अच्छा है या वह शख़्स जो क़ियामत के दिन अम्न के साथ आएगा। जो कुछ चाहे कर लो, बेशक वह देखता है जो तुम कर रहे हो। (39-40)

जिन लोगों ने अल्लाह की नसीहत का इंकार किया जबकि वह उनके पास आ गई, और बेशक यह एक ज़बरदस्त किताब है। इसमें बातिल (असत्य) न इसके आगे से आ सकता है और न उसके पीछे से, यह हकीम (तत्वदर्शी)

व हमीद (प्रशंस्य) की तरफ़ से उतारी गई है। तुम्हें वही बातें कही जा रही हैं जो तुमसे पहले रसूलों को कही गई हैं। बेशक तुम्हारा रब मग़्फ़िरत वाला (क्षमाशील) है और दर्दनाक सज़ा देने वाला भी। (41-43)

और अगर हम इसे अजमी (ग़ैर-अरबी) क़ुरआन बनाते तो वे कहते कि इसकी आयतें साफ़-साफ़ क्यों नहीं बयान की गईं। क्या अजमी किताब और अरबी लोग। कहो कि वह ईमान लाने वालों के लिए तो हिदायत और शिफ़ा (निदान) है, और लोग जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में डाट है और वह उनके हक़ में अंधापन है। ये लोग गोया कि दूर की जगह से पुकारे जा रहे हैं। (44)

और हमने मूसा को किताब दी थी तो उसमें इख़्तेलाफ़ पैदा किया गया। और अगर तेरे रब की तरफ़ से एक बात पहले तै न हो चुकी होती तो उनके दर्मियान फ़ैसला कर दिया जाता। और ये लोग उसकी तरफ़ से ऐसे शक में हैं जिसने उन्हें तरद्दुद (असमंजस) में डाल रखा है। जो शख़्स नेक अमल करेगा तो अपने ही लिए करेगा और जो शख़्स बुराई करेगा तो उसका वबाल उसी पर आएगा। और तेरा रब बंदों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं। (45-46)

क़ियामत का इल्म अल्लाह ही से मुतअल्लिक़ है। और कोई फल अपने ख़ोल से नहीं निकलता और न कोई औरत हामिला (गर्भवती) होती और न जनती है मगर यह सब उसकी इत्तिला से होता है। और जिस दिन अल्लाह उन्हें पुकारेगा कि मेरे शरीक कहां हैं, वे कहेंगे कि हम आपसे यही अर्ज़ करते हैं कि हम में कोई इसका दावेदार नहीं। और जिन्हें वे पहले पुकारते थे वे सब उनसे गुम हो जाएंगे, और वे समझ लेंगे कि उनके लिए कोई बचाव की सूरत नहीं। (47-48)

और इंसान भलाई मांगने से नहीं थकता, और अगर उसे कोई तकलीफ़ पहुंच जाए तो मायूस व दिल शिकस्ता हो जाता है। और अगर हम उसे तकलीफ़ के बाद जो कि उसे पहुंची थी, अपनी महरबानी का मज़ा चखा देते हैं तो वह कहता है यह तो मेरा हक़ ही है, और मैं नहीं समझता कि क़ियामत कभी आएगी। और अगर मैं अपने रब की तरफ़ लौटाया गया तो उसके पास

भी मेरे लिए बेहतरी ही है। पस हम उन मुंकिरों को उनके आमाल से ज़रूर आगाह करेंगे। और उन्हें सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएंगे। (49-50)

और जब हम इंसान पर फ़ज़्ल करते हैं तो वह एराज़ (उपेक्षा) करता है और अपनी करवट फेर लेता है। और जब उसे तकलीफ़ पहुंचती है तो वह लम्बी-लम्बी दुआएं करने वाला बन जाता है। कहो कि बताओ, अगर यह क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से आया हो, फिर तुमने इसका इंकार किया तो उस शख़्स से ज़्यादा गुमराह और कौन होगा जो मुख़ालिफ़त (विरोध) में बहुत दूर चला जाए। (51-52)

हम उन्हें अपनी निशानियां दिखाएंगे आफ़ाक़ (वाह्य क्षेत्रों) में भी और ख़ुद उनके अंदर भी। यहां तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि यह क़ुरआन हक़ है। और क्या यह बात काफ़ी नहीं कि तेरा रब हर चीज़ का गवाह है। सुन लो, ये लोग अपने रब की मुलाक़ात में शक रखते हैं, सुन लो, वह हर चीज़ का इहाता (आच्छादन) किए हुए है। (53-54)

सूरह-42. अश-शूरा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। अइन० सीन० क़ाफ़०। इसी तरह अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) व हकीम (तत्वदर्शी) 'वही' (प्रकाशना) करता है तुम्हारी तरफ़ और उनकी तरफ़ जो तुमसे पहले गुज़रे हैं। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, वह सबसे ऊपर है, सबसे बड़ा। क़रीब है कि आसमान अपने ऊपर से फट पड़े और फ़रिश्ते अपने रब की तस्बीह करते हैं उसी की हम्द (प्रशंसा) के साथ और ज़मीन वालों के लिए माफ़ी मांगते हैं। सुन लो कि अल्लाह ही माफ़ करने वाला, रहमत करने वाला है। और जिन लोगों ने उसके सिवा दूसरे कारसाज़ (कार्य-साधक) बनाए हैं, अल्लाह उनके ऊपर निगहबान है और तुम उनके ऊपर ज़िम्मेदार नहीं। (1-6)

और हमने इसी तरह तुम्हारी तरफ़ अरबी क़ुरआन उतारा है ताकि तुम मक्का वालों को और उसके आस-पास वालों को डरा दो और उन्हें जमा

होने के दिन से डरा दो जिसके आने में कोई शक नहीं। एक गिरोह जन्नत में होगा और एक गिरोह आग में। (7)

और अगर अल्लाह चाहता तो उन सबको एक ही उम्मत बना देता। लेकिन वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है और ज़ालिमों का कोई हामी व मददगार नहीं। क्या उन्होंने उसके सिवा दूसरे कारसाज़ (कार्य-साधक) बना रखे हैं, पस अल्लाह ही कारसाज़ है और वही मुर्दों को ज़िंदा करता है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। और जिस किसी बात में तुम इख़्तेलाफ़ (मतभेद) करते हो उसका फ़ैसला अल्लाह ही के सुपुर्द है। वही अल्लाह मेरा रब है, उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की तरफ़ मैं रुजूअ करता हूं। (8-10)

वह आसमानों का और ज़मीन का पैदा करने वाला है। उसने तुम्हारी जिन्स से तुम्हारे जोड़े पैदा किए और जानवरों के भी जोड़े बनाए। उसके ज़रिए वह तुम्हारी नस्ल चलाता है। कोई चीज़ उसके मिस्ल (सदृश) नहीं और वह सुनने वाला, देखने वाला है। उसी के इख़्तियार में आसमानों और ज़मीन की कुंजियां हैं। वह जिसके लिए चाहता है ज़्यादा रोज़ी कर देता है और जिसे चाहता है कम कर देता है। बेशक वह हर चीज़ का इल्म रखने वाला है। (11-12)

अल्लाह ने तुम्हारे लिए वही दीन (धर्म) मुक़र्रर किया है जिसका उसने नूह को हुक्म दिया था और जिसकी 'वही' (प्रकाशना) हमने तुम्हारी तरफ़ की है और जिसका हुक्म हमने इब्राहीम को और मूसा को और ईसा को दिया था कि दीन को क़ायम रखो और उसमें इख़्तेलाफ़ (मत-भिन्नता, बिखराव) न डालो। मुश्रिकीन पर वह बात बहुत गिरां (भार) है जिसकी तरफ़ तुम उन्हें बुला रहे हो। अल्लाह जिसे चाहता है अपनी तरफ़ चुन लेता है। और वह अपनी तरफ़ उनकी रहनुमाई करता है जो उसकी तरफ़ मुतवज्जह होते हैं। (13)

और जो लोग मुतफ़र्रिक़ (विभाजित) हुए वे इल्म आने के बाद हुए, सिर्फ़ आपस की ज़िद की वजह से। और अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से एक वक़्त मुअय्यन (निर्धारित) तक की बात तै न हो चुकी होती तो उनके दर्मियान

फ़ैसला कर दिया जाता। और जिन लोगों को उनके बाद किताब दी गई वे उसकी तरफ़ से शक में पड़े हुए हैं जिसने उन्हें तरद्दुद (असमंजस) में डाल दिया है। (14)

पस तुम उसी की तरफ़ बुलाओ और उस पर जमे रहो जिस तरह तुम्हें हुक्म हुआ है और उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करो। और कहो कि अल्लाह ने जो किताब उतारी है मैं उस पर ईमान लाता हूं। और मुझे यह हुक्म हुआ है कि मैं तुम्हारे दर्मियान इंसाफ़ करूं। अल्लाह हमारा रब है और तुम्हारा रब भी। हमारा अमल हमारे लिए और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए। हम में और तुम में कुछ झगड़ा नहीं। अल्लाह हम सबको जमा करेगा और उसी के पास जाना है। और जो लोग अल्लाह के बारे में हुज्जत कर रहे हैं, बाद इसके कि वह मान लिया गया, उनकी हुज्जत उनके रब के नज़दीक बातिल (झूठ) है और उन पर ग़ज़ब है और उनके लिए सख़्त अज़ाब है। (15-16)

अल्लाह ही है जिसने हक़ के साथ किताब उतारी और तराज़ू भी। और तुम्हें क्या ख़बर शायद वह घड़ी क़रीब हो। जो लोग उसका यक़ीन नहीं रखते वे उसकी जल्दी कर रहे हैं। और जो लोग यक़ीन रखने वाले हैं वे उससे डरते हैं और वे जानते हैं कि वह बरहक़ है। याद रखो कि जो लोग उस घड़ी के बारे में झगड़ते हैं वे गुमराही में बहुत दूर निकल गए हैं। (17-18)

अल्लाह अपने बंदों पर महरबान है। वह जिसे चाहता है रोज़ी देता है। और वह क़ुव्वत वाला, ज़बरदस्त है। जो शख़्स आख़िरत की खेती चाहे हम उसे उसकी खेती में तरक़्क़ी देंगे। और जो शख़्स दुनिया की खेती चाहे हम उसे उसमें से कुछ दे देते हैं और आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। (19-20)

क्या उनके कुछ शरीक हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसा दीन मुक़र्रर किया है जिसकी अल्लाह ने इजाज़त नहीं दी। और अगर फ़ैसले की बात तै न पा चुकी होती तो उनका फ़ैसला कर दिया जाता। और बेशक ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। तुम ज़ालिमों को देखोगे कि वे डर रहे होंगे उससे जो उन्होंने कमाया। और वह उन पर ज़रूर पड़ने वाला है। और जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे काम किए वे जन्नत के बाग़ों में होंगे। उनके लिए

उनके रब के पास वह सब होगा जो वे चाहेंगे, यही बड़ा इनाम है। यह चीज़ है जिसकी ख़ुशख़बरी अल्लाह अपने उन बंदों को देता है जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया। कहो कि मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं चाहता मगर क़राबतदारी की मुहब्बत। और जो शख़्स कोई नेकी करेगा हम उसके लिए इसमें भलाई बढ़ा देंगे। बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, क़द्रदां है। (21-23)

क्या वे कहते हैं कि इसने अल्लाह पर झूठ बांधा है। पस अगर अल्लाह चाहे तो वह तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे। और अल्लाह बातिल (असत्य) को मिटाता है और हक़ (सत्य) को साबित करता है अपनी बातों से। बेशक वह दिलों की बातें जानता है। और वही है जो अपने बंदों की तौबा क़ुबूल करता है और बुराइयों को माफ़ करता है और वह जानता है जो कुछ तुम करते हो। और वह उन लोगों की दुआएं क़ुबूल करता है जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया। और वह उन्हें अपने फ़ज़्ल से ज़्यादा दे देता है। और जो इंकार करने वाले हैं उनके लिए सख़्त अज़ाब है। (24-26)

और अगर अल्लाह अपने बंदों के लिए रोज़ी को खोल देता तो वे ज़मीन में फ़साद करते। लेकिन वह अंदाज़े के साथ उतारता है जितना चाहता है। बेशक वह अपने बंदों को जानने वाला है, देखने वाला है। और वही है जो लोगों के मायूस हो जाने के बाद बारिश बरसाता है और अपनी रहमत फैला देता है और वह काम बनाने वाला है, क़ाबिले तारीफ़ है। और उसी की निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना। और वे जानदार जो उसने इनके दर्मियान फैलाए हैं। और वह उन्हें जमा करने पर क़ादिर है जब वह उन्हें जमा करना चाहे। (27-29)

और जो मुसीबत तुम्हें पहुंचती है तो वह तुम्हारे हाथों के किए हुए कामों ही से, और बहुत से क़ुसूरों को वह माफ़ कर देता है। और तुम ज़मीन में ख़ुदा के क़ाबू से निकल नहीं सकते। और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई काम बनाने वाला है और न कोई मददगार। (30-31)

और उसकी निशानियों में से यह है कि जहाज़ समुद्र में चलते हैं जैसे

पहाड़। अगर वह चाहे तो वह हवा को रोक दे फिर वे समुद्र की सतह पर ठहरे रह जाएं। बेशक इसके अंदर निशानियां हैं हर उस शख़्स के लिए जो सब्र करने वाला, शुक्र करने वाला है। या वह उन्हें तबाह कर दे उनके आमाल के सबब से और माफ़ कर दे बहुत से लोगों को। और ताकि जान लें वे लोग जो हमारी निशानियों में झगड़ते हैं कि उनके लिए भागने की कोई जगह नहीं। (32-35)

पस जो कुछ तुम्हें मिला है वह महज़ दुनियावी ज़िंदगी के बरतने के लिए है। और जो कुछ अल्लाह के पास है वह ज़्यादा बेहतर है और बाक़ी रहने वाला है उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और वे अल्लाह पर भरोसा रखते हैं। (36)

और वे लोग जो बड़े गुनाहों से और बेहयाई से बचते हैं और जब उन्हें ग़ुस्सा आता है तो वे माफ़ कर देते हैं और वे जिन्होंने अपने रब की दावत (आह्वान) को क़ुबूल किया और नमाज़ क़ायम की और वे अपना काम आपस के मश्विरे से करते हैं। और हमने जो कुछ उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। और वे लोग कि जब उन पर चढ़ाई होती है तो वे बदला लेते हैं। और बुराई का बदला है वैसी ही बुराई। फिर जिसने माफ़ कर दिया और इस्लाह की तो उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे है। बेशक वह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता। और जो शख़्स अपने मज़लूम होने के बाद बदला ले तो ऐसे लोगों के ऊपर कुछ इल्ज़ाम नहीं। इल्ज़ाम सिर्फ़ उन पर है जो लोगों के ऊपर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ सरकशी करते हैं। यही लोग हैं जिनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। और जिस शख़्स ने सब्र किया और माफ़ कर दिया तो बेशक ये हिम्मत के काम हैं। (37-43)

और जिस शख़्स को अल्लाह भटका दे तो इसके बाद उसका कोई कारसाज़ (संरक्षक) नहीं। और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वे अज़ाब को देखेंगे तो वे कहेंगे कि क्या वापस जाने की कोई सूरत है। और तुम उन्हें देखोगे कि वे दोज़ख़ के सामने लाए जाएंगे, वे ज़िल्लत से झुके हुए होंगे। छुपी निगाह से देखते होंगे। और ईमान वाले कहेंगे कि ख़सारे (घाटे) वाले वही लोग हैं

जिन्होंने क़ियामत के दिन अपने आपको और अपने मुताल्लिक़ीन (संबंधियों) को ख़सारे में डाल दिया। सुन लो, ज़ालिम लोग दाइमी (स्थाई) अज़ाब में रहेंगे। और उनके लिए कोई मददगार न होंगे जो अल्लाह के मुक़ाबले में उनकी मदद करें। और ख़ुदा जिसे भटका दे तो उसके लिए कोई रास्ता नहीं। (44-46)

तुम अपने रब की दावत (आह्वान) क़ुबूल करो इससे पहले कि ऐसा दिन आ जाए जिसके लिए ख़ुदा की तरफ़ से हटना न होगा। उस दिन तुम्हारे लिए कोई पनाह न होगी और न तुम किसी चीज़ को रद्द कर सकोगे। पस अगर वे एराज़ (उपेक्षा) करें तो हमने तुम्हें उनके ऊपर निगरां बनाकर नहीं भेजा है। तुम्हारा ज़िम्मा सिर्फ़ पहुंचा देना है। और इंसान को जब हम अपनी रहमत से नवाज़ते हैं तो वह उस पर ख़ुश हो जाता है। और अगर उनके आमाल के बदले में उन पर कोई मुसीबत आ पड़ती है तो आदमी नाशुक्री करने लगता है। (47-48)

आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह के लिए है, वह जो चाहता है पैदा करता है। वह जिसे चाहता है बेटियां अता करता है और जिसे चाहता है बेटे अता करता है या उन्हें जमा कर देता है बेटे भी और बेटियां भी। और जिसे चाहता है बेऔलाद रखता है। बेशक वह जानने वाला है, क़ुदरत वाला है। (49-50)

और किसी आदमी की यह ताक़त नहीं कि अल्लाह उससे कलाम करे, मगर 'वही' (प्रकाशना) के ज़रिए से या पर्दे के पीछे से या वह किसी फ़रिश्ते को भेजे कि वह 'वही' कर दे उसके इज़्न (आज्ञा) से जो वह चाहे। बेशक वह सबसे ऊपर है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और इसी तरह हमने तुम्हारी तरफ़ भी 'वही' की है, एक रूह अपने हुक्म से। तुम न जानते थे कि किताब क्या है और न यह जानते थे कि ईमान क्या है। लेकिन हमने उसे एक नूर बनाया, उससे हम हिदायत देते हैं अपने बंदों में से जिसे चाहते हैं। और बेशक तुम एक सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई कर रहे हो। उस अल्लाह के रास्ते की तरफ़ जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों और ज़मीन में है। सुन लो, सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ़ लौटने वाले हैं। (51-53)

सूरह-43. अज़-ज़ुख़रुफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। क़सम है इस वाज़ेह किताब की। हमने इसे अरबी ज़बान का क़ुरआन बनाया है ताकि तुम समझो। और बेशक यह अस्ल किताब में हमारे पास है, बुलन्द और पुरहिक्मत (तत्वदर्शितापूर्ण)। (1-4)

क्या हम तुम्हारी नसीहत से इसलिए नज़र फेर लेंगे कि तुम हद से गुज़रने वाले हो और हमने अगले लोगों में कितने ही नबी भेजे। और उन लोगों के पास कोई नबी नहीं आया जिसका उन्होंने मज़ाक़ न उड़ाया हो। फिर जो लोग उनसे ज़्यादा ताक़तवर थे उन्हें हमने हलाक कर दिया। और अगले लोगों की मिसालें गुज़र चुकीं। (5-8)

और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया तो वे ज़रूर कहेंगे कि उन्हें ज़बरदस्त, जानने वाले ने पैदा किया। जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया। और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बनाए ताकि तुम राह पाओ। और जिसने आसमान से पानी उतारा एक अंदाज़े के साथ। फिर हमने उससे मुर्दा ज़मीन को ज़िंदा कर दिया, इसी तरह तुम निकाले जाओगे। और जिसने तमाम क़िस्में बनाईं और तुम्हारे लिए वे कश्तियां और चौपाए बनाए जिन पर तुम सवार होते हो। ताकि तुम उनकी पीठ पर जमकर बैठो। फिर तुम अपने रब की नेमत को याद करो जबकि तुम उन पर बैठो। और कहो कि पाक है वह जिसने इन चीज़ों को हमारे वश में कर दिया, और हम ऐसे न थे कि उन्हें क़ाबू में करते। और बेशक हम अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं। (9-14)

और उन लोगों ने ख़ुदा के बंदों में से ख़ुदा का जुज़ (अंश) ठहराया, बेशक इंसान खुला नाशुक्रा है। क्या ख़ुदा ने अपनी मख़्लूक़ात में से बेटियां पसंद कीं और तुम्हें बेटों से नवाज़ा। और जब उनमें से किसी को उस चीज़ की ख़बर दी जाती है जिसे वह रहमान की तरफ़ मंसूब करता है तो उसका चेहरा स्याह पड़ जाता है और वह ग़म से भर जाता है। क्या वह जो आराइश

(आभूषणों) में परवरिश पाए और झगड़े में बात न कह सके। और फ़रिश्ते जो रहमान के बंदे हैं उन्हें उन्होंने औरत क़रार दे रखा है। क्या वे उनकी पैदाइश के वक़्त मौजूद थे। उनका यह दावा लिख लिया जाएगा और उनसे पूछ होगी। (15-19)

और वे कहते हैं कि अगर रहमान चाहता तो हम उनकी इबादत न करते। उन्हें इसका कोई इल्म नहीं। वे महज़ बेतहक़ीक़ बात कह रहे हैं। क्या हमने उन्हें इससे पहले कोई किताब दी है तो उन्होंने उसे मज़बूत पकड़ रखा है। बल्कि वे कहते हैं कि हमने अपने बाप दादा को एक तरीक़े पर पाया है और हम उनके पीछे चल रहे हैं। और इसी तरह हमने तुमसे पहले जिस बस्ती में भी कोई नज़ीर (डराने वाला) भेजा तो उसके ख़ुशहाल लोगों ने कहा कि हमने अपने बाप दादा को एक तरीक़े पर पाया है और हम उनके पीछे चले जा रहे हैं। नज़ीर ने कहा, अगरचे मैं उससे ज़्यादा सही रास्ता तुम्हें बताऊं जिस पर तुमने अपने बाप दादा को पाया है। उन्होंने कहा कि हम उसके मुंकिर हैं जो देकर तुम भेजे गए हो। तो हमने उनसे इंतिक़ाम (प्रतिशोध) लिया, पस देखो कि कैसा अंजाम हुआ झुठलाने वालों का। (20-25)

और जब इब्राहीम ने अपने बाप से और अपनी क़ौम से कहा कि मैं उन चीज़ों से बरी हूं जिसकी तुम इबादत करते हो। मगर वह जिसने मुझे पैदा किया, पस बेशक वह मेरी रहनुमाई करेगा और इब्राहीम यही कलिमा अपने पीछे अपनी औलाद में छोड़ गया ताकि वे उसकी तरफ़ रुजूअ करें। बल्कि मैंने उन्हें और उनके बाप दादा को दुनिया का सामान दिया यहां तक कि उनके पास हक़ (सत्य) आया और रसूल खोल कर सुना देने वाला। और जब उनके पास हक़ आ गया उन्होंने कहा कि यह जादू है और हम इसके मुंकिर हैं। (26-30)

और उन्होंने कहा कि यह क़ुरआन दोनों बस्तियों में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतारा गया। क्या ये लोग तेरे रब की रहमत को तक़्सीम करते हैं। दुनिया की ज़िंदगी में उनकी रोज़ी को तो हमने तक़्सीम किया है और हमने एक को दूसरे पर फ़ौक़ियत (उच्चता) दी है ताकि वे एक दूसरे से काम

लें। और तेरे रब की रहमत इससे बेहतर है जो ये जमा कर रहे हैं। और अगर यह बात न होती कि सब लोग एक ही तरीक़े के हो जाएंगे तो जो लोग रहमान का इंकार करते हैं उनके लिए हम उनके घरों की छतें चांदी की बना देते और ज़ीने भी जिन पर वे चढ़ते हैं। और उनके घरों के किवाड़ भी और तख़्त भी जिन पर वे तकिया लगाकर बैठते हैं। और सोने के भी, और ये चीज़ें तो सिर्फ़ दुनिया की ज़िंदगी का सामान हैं और आख़िरत तेरे रब के पास मुत्तक़ियों (ईश-परायण लोगों) के लिए है। (31-35)

और जो शख़्स रहमान की नसीहत से एराज़ (उपेक्षा) करता है तो हम उस पर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं, पस वह उसका साथी बन जाता है और वे उन्हें राहे हक़ (सन्मार्ग) से रोकते रहते हैं। और ये लोग समझते हैं कि वे हिदायत पर हैं। यहां तक कि जब वह हमारे पास आएगा तो वह कहेगा कि काश मेरे और तेरे दर्मियान मश्रिक़ और मग़्रिब की दूरी होती। पस क्या ही बुरा साथी था। और जबकि तुम ज़ुल्म कर चुके तो आज यह बात तुम्हें कुछ भी फ़ायदा नहीं देगी कि तुम अज़ाब में एक दूसरे के शरीक हो। (36-39)

पस क्या तुम बहरों को सुनाओगे या तुम अंधों को राह दिखाओगे और उन्हें जो खुली हुई गुमराही में हैं। पस अगर हम तुम्हें उठा लें तो हम उनसे बदला लेने वाले हैं। या तुम्हें दिखा देंगे वह चीज़ जिसका हमने उनसे वादा किया है। पस हम उन पर पूरी तरह क़ादिर हैं। पस तुम उसे मज़बूती से थामे रहो जो तुम्हारे ऊपर 'वही' (प्रकाशना) की गई है। बेशक तुम एक सीधे रास्ते पर हो। और यह तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए नसीहत है। और अनक़रीब तुमसे पूछ होगी। और जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा है उनसे पूछ लो कि क्या हमने रहमान से सिवा दूसरे माबूद (पूज्य) ठहराए थे कि उनकी इबादत की जाए। (40-45)

और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा तो उसने कहा कि मैं ख़ुदावंद आलम का रसूल हूं। पस जब वह उनके पास हमारी निशानियों के साथ आया तो वे उस पर हंसने लगे। और हम उन्हें जो निशानियां दिखाते थे वह पहली से बढ़कर होती थीं।

और हमने उन्हें अज़ाब में पकड़ा ताकि वे रुजूअ करें। और उन्होंने कहा कि ऐ जादूगर, हमारे लिए अपने रब से दुआ करो, उस अहद (वचन) की बिना पर जो उसने तुमसे किया है, हम ज़रूर राह पर आ जाएंगे। फिर जब हमने वह अज़ाब उनसे हटा दिया तो उन्होंने अपना अहद तोड़ दिया। (46-50)

और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम के दर्मियान पुकार कर कहा कि ऐ मेरी क़ौम क्या मिस्र की बादशाही मेरी नहीं है, और ये नहरें जो मेरे नीचे बह रही हैं। क्या तुम लोग देखते नहीं। बल्कि मैं बेहतर हूं उस शख़्स से जो कि हक़ीर (तुच्छ) है। और साफ़ बोल नहीं सकता। फिर क्यों न उस पर सोने के कंगन आ पड़े या फ़रिश्ते उसके साथ परा बांध कर (पार्श्ववर्ती होकर) आते। पस उसने अपनी क़ौम को बेअक़्ल कर दिया। फिर उन्होंने उसकी बात मान ली। ये नाफ़रमान क़िस्म के लोग थे। फिर जब उन्होंने हमें ग़ुस्सा दिलाया तो हमने उनसे बदला लिया। और हमने उन सबको ग़र्क़ कर दिया। फिर हमनें उन्हें माज़ी (अतीत) की दास्तान बना दिया और दूसरों के लिए एक नमूनए इबरत (सीख)। (51-56)

और जब इब्ने मरयम की मिसाल दी गई तो तुम्हारी क़ौम के लोग उस पर चिल्ला उठे। और उन्होंने कहा कि हमारे माबूद (पूज्य) अच्छे हैं या वह। यह मिसाल वे तुमसे सिर्फ़ झगड़ने के लिए बयान करते हैं। बल्कि ये लोग झगड़ालू हैं। ईसा तो बस हमारा एक बंदा था जिस पर हमने फ़ज़्ल फ़रमाया और उसे बनी इस्राईल के लिए एक मिसाल बना दिया। और अगर हम चाहें तो तुम्हारे अंदर से फ़रिश्ते बना दें जो ज़मीन में तुम्हारे जानशीन (उत्तराधिकारी) हों। और बेशक ईसा क़ियामत का एक निशान हैं, तो तुम इसमें शक न करो और मेरी पैरवी करो। यही सीधा रास्ता है। और शैतान तुम्हें इससे रोकने न पाए। बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (57-62)

और जब ईसा खुली निशानियों के साथ आया, उसने कहा कि मैं तुम्हारे पास हिक्मत (तत्वदर्शिता) लेकर आया हूं और ताकि मैं तुम पर वाज़ेह कर दूं कुछ बातें जिनमें तुम इख़्तेलाफ़ (मतभेद) कर रहे हो। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत (आज्ञापालन) करो। बेशक अल्लाह ही मेरा रब है

और तुम्हारा रब भी। तो तुम उसी की इबादत करो। यही सीधा रास्ता है। फिर गिरोहों ने आपस में इख़्तेलाफ़ किया। पस तबाही है उन लोगों के लिए जिन्होंने ज़ुल्म किया, एक दर्दनाक दिन के अज़ाब से। (63-65)

ये लोग बस क़ियामत का इंतज़ार कर रहे हैं कि वह उन पर अचानक आ पड़े और उन्हें ख़बर भी न हो। तमाम दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे, सिवाए डरने वालों के। ऐ मेरे बंदो आज तुम पर न कोई ख़ौफ़ है और न तुम ग़मगीन होगे। जो लोग ईमान लाए और फ़रमांबरदार रहे। जन्नत में दाख़िल हो जाओ तुम और तुम्हारी बीवियां, तुम शाद (हर्षित) किए जाओगे। उनके सामने सोने की रिकाबियां और प्याले पेश किए जाएंगे। और वहां वे चीज़ें होंगी जिन्हें जी चाहेगा और जिनसे आंखों को लज़्ज़त होगी। और तुम यहां हमेशा रहोगे। और यह वह जन्नत है जिसके तुम मालिक बना दिए गए उसकी वजह से जो तुम करते थे। तुम्हारे लिए इसमें बहुत से मेवे हैं जिनमें से तुम खाओगे। (66-73)

बेशक मुजरिम लोग हमेशा दोज़ख़ के अज़ाब में रहेंगे। वह उनसे हल्का न किया जाएगा और वे उसमें मायूस पड़े रहेंगे। और हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वे ख़ुद ही ज़ालिम थे। और वे पुकारेंगे कि ऐ मालिक, तुम्हारा रब हमारा ख़ात्मा ही कर दे। फ़रिश्ता कहेगा तुम्हें इसी तरह पड़े रहना है। हम तुम्हारे पास हक़ (सत्य) लेकर आए मगर तुम में से अक्सर हक़ से बेज़ार रहे। क्या उन्होंने कोई बात ठहरा ली है तो हम भी एक बात ठहरा लेंगे। क्या उनका गुमान है कि हम उनके राज़ों को और उनके मश्विरों को नहीं सुन रहे हैं। हां, और हमारे भेजे हुए उनके पास लिखते रहते हैं। (74-80)

कहो कि अगर रहमान के कोई औलाद हो तो मैं सबसे पहले उसकी इबादत करने वाला हूं। आसमानों और ज़मीन का ख़ुदावंद, अर्श का मालिक। वह उन बातों से पाक है जिसे लोग बयान करते हैं। पस उन्हें छोड़ दो कि वे बहस करें और खेलें यहां तक कि वे उस दिन से दो चार हों जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। (81-83)

और वही है जो आसमान में ख़ुदावंद है और वही ज़मीन में ख़ुदावंद है

और वह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला, इल्म वाला है। और बड़ी बाबरकत है वह ज़ात जिसकी बादशाही आसमानों और ज़मीन में है और जो कुछ उनके दर्मियान है। और उसी के पास क़ियामत की ख़बर है। और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (84-85)

और अल्लाह के सिवा जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे सिफ़ारिश का इख़्तियार नहीं रखते, मगर वे जो हक़ की गवाही देंगे और वे जानते होंगे। और अगर तुम उनसे पूछो कि उन्हें किसने पैदा किया है तो वे यही कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर वे कहां भटक जाते हैं। और उसे रसूल के इस कहने की ख़बर है कि ऐ मेरे रब, ये ऐसे लोग हैं कि ईमान नहीं लाते। पस उनसे दरगुज़र करो (रुख़ फेर लो) और कहो कि सलाम है तुम्हें, अनक़रीब उन्हें मालूम हो जाएगा। (86-89)

सूरह-44. अद-दुख़ान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। क़सम है इस वाज़ेह (सुस्पष्ट) किताब की। हमने इसे एक बरकत वाली रात में उतारा है, बेशक हम आगाह करने वाले थे। इस रात में हर हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला मामला तै किया जाता है, हमारे हुक्म से। बेशक हम थे भेजने वाले। तेरे रब की रहमत से, वही सुनने वाला है, जानने वाला है। आसमानों और ज़मीन का रब और जो कुछ उनके दर्मियान है, अगर तुम यक़ीन करने वाले हो। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वही ज़िंदा करता है और मारता है, तुम्हारा भी रब और तुम्हारे अगले बाप दादा का भी रब। (1-8)

बल्कि वे शक में पड़े हुए खेल रहे हैं। पस इंतज़ार करो उस दिन का जब आसमान एक खुले हुए धुवें के साथ ज़ाहिर होगा। वह लोगों को घेर लेगा। यह एक दर्दनाक अज़ाब है। ऐ हमारे रब, हम पर से अज़ाब टाल दे, हम ईमान लाते हैं। उनके लिए नसीहत कहां, और उनके पास रसूल आ चुका था खोल कर सुनाने वाला। फिर उन्होंने उससे पीठ फेरी और कहा कि यह

तो एक सिखाया हुआ दीवाना है। हम कुछ वक़्त के लिए अज़ाब को हटा दें, तुम फिर अपनी उसी हालत पर आ जाओगे। जिस दिन हम पकड़ेंगे बड़ी पकड़ उस दिन हम पूरा बदला लेंगे। (9-16)

और उनसे पहले हमने फ़िरऔन की क़ौम को आज़माया। और उनके पास एक मुअज़्ज़ज़ (सम्मानीय) रसूल आया कि अल्लाह के बंदों को मेरे हवाले करो। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूं। और यह कि अल्लाह के मुक़ाबले में सरकशी न करो। मैं तुम्हारे सामने एक वाज़ेह दलील पेश करता हूं। और मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह ले चुका हूं इस बात से कि तुम मुझे संगसार (पत्थरों से मार डालना) करो। और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो तुम मुझसे अलग रहो। (18-21)

पस मूसा ने अपने रब को पुकारा कि ये लोग मुजरिम हैं। तो अब तुम मेरे बंदों को रात ही रात में लेकर चले जाओ, तुम्हारा पीछा किया जाएगा। और तुम दरिया को थमा हुआ छोड़ दो, उनका लश्कर डूबने वाला है। उन्होंने कितने ही बाग़ और चशमे (स्रोत) और खेतियां और उम्दा मकानात और आराम के सामान जिनमें वे ख़ुश रहते थे सब छोड़ दिए। इसी तरह हुआ और हमने दूसरी क़ौम को उनका मालिक बना दिया। पस न उन पर आसमान रोया और न ज़मीन, और न उन्हें मोहलत दी गई। (22-29)

और हमने बनी इस्राईल को ज़िल्लत वाले अज़ाब से नजात दी। यानी फ़िरऔन से, बेशक वह सरकश और हद से निकल जाने वालों में से था। और हमने उन्हें अपने इल्म से दुनिया वालों पर तरजीह (वरीयता) दी। और हमने उन्हें ऐसी निशानियां दीं जिनमें खुला हुआ इनाम था। (30-33)

ये लोग कहते हैं, बस यही हमारा पहला मरना है और हम फिर उठाए नहीं जाएंगे। अगर तुम सच्चे हो तो ले आओ हमारे बाप दादा को। क्या ये बेहतर हैं या तुब्बअ की क़ौम और जो उनसे पहले थे। हमने उन्हें हलाक कर दिया, बेशक वे नाफ़रमान थे। (34-37)

और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है

खेल के तौर पर नहीं बनाया। इन्हें हमने हक़ के साथ बनाया है लेकिन उनके अक्सर लोग नहीं जानते। बेशक फ़ैसले का दिन उन सबका तैशुदा वक़्त है। जिस दिन कोई रिश्तेदार किसी रिश्तेदार के काम नहीं आएगा और न उनकी कुछ हिमायत की जाएगी। हां मगर वह जिस पर अल्लाह रहम फ़रमाए। बेशक वह ज़बरदस्त है, रहमत वाला है। (38-42)

ज़क़्क़ूम का दरख़्त गुनाहगार का खाना होगा, तेल की तलछट जैसा, वह पेट में खौलेगा जिस तरह गर्म पानी खौलता है। उसे पकड़ो और उसे घसीटते हुए जहन्नम के बीच तक ले जाओ। फिर उसके सर पर खौलते हुए पानी का अज़ाब उंडेल दो। चख इसे, तू बड़ा मुअज़्ज़ज़, मुकर्रम है। यह वही चीज़ है जिसमें तुम शक करते थे। (43-50)

बेशक ख़ुदा से डरने वाले अम्न की जगह में होंगे, बाग़ों और चशमों (स्रोतों) में। बारीक रेशम और दबीज़ रेशम के लिबास पहने हुए आमने सामने बैठे होंगे। यह बात इसी तरह है, और हम उनसे ब्याह देंगे हूरें बड़ी-बड़ी आंखों वाली। वे उसमें तलब करेंगे हर क़िस्म के मेवे निहायत इत्मीनान से। वे वहां मौत को न चखेंगे मगर वह मौत जो पहले आ चुकी है और अल्लाह ने उन्हें जहन्नम के अज़ाब से बचा लिया। यह तेरे रब के फ़ज़्ल से होगा, यही है बड़ी कामयाबी। (51-57)

पस हमने इस किताब को तुम्हारी ज़बान में आसान बना दिया है ताकि लोग नसीहत हासिल करें। पस तुम भी इंतज़ार करो, वे भी इंतज़ार कर रहे हैं। (58-59)

सूरह-45. अल-जासियह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। यह नाज़िल की हुई किताब है। अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाले की तरफ़ से। बेशक आसमानों और ज़मीन में निशानियां हैं ईमान वालों के लिए। और तुम्हारे बनाने में और उन हैवानात में जो उसने ज़मीन में फैला रखे हैं, निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो

यक़ीन रखते हैं और रात और दिन के आने जाने में और उस रिज़्क़ में जिसे अल्लाह ने आसमान से उतारा, फिर उससे ज़मीन को ज़िंदा कर दिया उसके मर जाने के बाद, और हवाओं की गर्दिश में भी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं। ये अल्लाह की आयतें हैं जिन्हें हम हक़ के साथ तुम्हें सुना रहे हैं। फिर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद कौन सी बात है जिस पर वे ईमान लाएंगे। (1-6)

ख़राबी है हर शख़्स के लिए जो झूठा हो। जो ख़ुदा की आयतों को सुनता है जबकि वे उसके सामने पढ़ी जाती हैं फिर वह तकब्बुर (घमंड) के साथ अड़ा रहता है, गोया उसने उन्हें सुना ही नहीं। पस तुम उसे एक दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो। और जब वह हमारी आयतों में से किसी चीज़ की ख़बर पाता है तो वह उसे मज़ाक़ बना लेता है। ऐसे लोगों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। उनके आगे जहन्नम है। और जो कुछ उन्होंने कमाया वह उनके कुछ काम अपने वाला नहीं। और न वे जिन्हें उन्होंने अल्लाह के सिवा कारसाज़ बनाया। और उनके लिए बड़ा अज़ाब है। यह हिदायत है, और जिन्होंने अपने रब की आयतों का इंकार किया उनके लिए सख़्ती का दर्दनाक अज़ाब है। (7-11)

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए समुद्र को मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर दिया ताकि उसके हुक्म से उसमें कश्तियां चलें और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। और उसने आसमानों और ज़मीन की तमाम चीज़ों को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया, सबको अपनी तरफ़ से। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (12-13)

ईमान वालों से कहो कि उन लोगों से दरगुज़र करें जो ख़ुदा के दिनों की उम्मीद नहीं रखते, ताकि अल्लाह एक क़ौम को उसकी कमाई का बदला दे। जो शख़्स नेक अमल करेगा तो उसका फ़ायदा उसी के लिए है। और जिस शख़्स ने बुरा किया तो उसका वबाल उसी पर पड़ेगा। फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे। (14-15)

और हमने बनी इस्राईल को किताब और हुक्म और नुबुव्वत दी और उन्हें पाकीज़ा रिज़्क़ अता किया और हमने उन्हें दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत

(श्रेष्ठता) बख़्शी। और हमने उन्हें दीन के बारे में खुली-खुली दलीलें दीं। फिर उन्होंने इख़्तेलाफ़ (मतभेद) नहीं किया मगर इसके बाद कि उनके पास इल्म आ चुका था, आपस की ज़िद की वजह से। बेशक तेरा रब क़ियामत के दिन उनके दर्मियान फ़ैसला कर देगा उन चीज़ों के बारे में जिनमें वे आपस में इख़्तेलाफ़ (मतभेद) करते थे। फिर हमने तुम्हें दीन के एक वाज़ेह (स्पष्ट) तरीक़े पर क़ायम किया। पस तुम उसी पर चलो और उन लोगों की ख़्वाहिशों की पैरवी न करो जो इल्म नहीं रखते। ये लोग अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकते। और ज़ालिम लोग एक दूसर के साथी हैं, और डरने वालों का साथी अल्लाह है। ये लोगों को लिए बसीरत (सूझबूझ) की बातें हैं और हिदायत और रहमत उन लोगों के लिए जो यक़ीन करें। (16-20)

क्या वे लोग जिन्होंने बुरे कार्य किए हैं यह ख़्याल करते हैं कि हम उन्हें उन लोगों की मानिंद कर देंगे जो ईमान लाए और नेक अमल किया, उन सबका जीना और मरना यकसां (समान) हो जाए। बहुत बुरा फ़ैसला है जो वे कर रहे हैं। और अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हिक्मत (तत्वदर्शिता) के साथ पैदा किया और ताकि हर शख़्स को उसके किए का बदला दिया जाए और उन पर कोई ज़ुल्म न होगा। (21-22)

क्या तुमने उस शख़्स को देखा जिसने अपनी ख़्वाहिश (इच्छा) को अपना माबूद (पूज्य) बना रखा है और अल्लाह ने उसके इल्म के बावजूद उसे गुमराही में डाल दिया और उसके कान और उसके दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आंख पर पर्दा डाल दिया। पस ऐसे शख़्स को कौन हिदायत दे सकता है, इसके बाद कि अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया हो, क्या तुम ध्यान नहीं करते। (23)

और वे कहते हैं कि हमारी इस दुनिया की ज़िंदगी के सिवा कोई और ज़िंदगी नहीं। हम मरते हैं और जीते हैं और हमें सिर्फ़ ज़माने की गर्दिश (कालचक्र) हलाक करती है। और उन्हें इस बारे में कोई इल्म नहीं। वे महज़ गुमान की बिना पर ऐसा कहते हैं। और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो उनके पास कोई हुज्जत इसके सिवा नहीं होती कि हमारे

बाप दादा को ज़िंदा करके लाओ अगर तुम सच्चे हो। कहो कि अल्लाह ही तुम्हें ज़िंदा करता है फिर वह तुम्हें मारता है फिर वह क़ियामत के दिन तुम्हें जमा करेगा, इसमें कोई शक नहीं, लेकिर अक्सर लोग नहीं जानते। (24-26)

और अल्लाह ही की बादशाही है आसमानों में और ज़मीन में और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी उस दिन अहले बातिल (असत्यवादी) ख़सारे (घाटे) में पड़ जाएंगे। और तुम देखोगे कि हर गिरोह घुटनों के बल गिर पड़ेगा। हर गिरोह अपने नामए आमाल (कर्म-पत्र) की तरफ़ बुलाया जाएगा। आज तुम्हें उस अमल का बदला दिया जाएगा जो तुम कर रहे थे। यह हमारा दफ़्तर है जो तुम्हारे ऊपर ठीक-ठीक गवाही दे रहा है। हम लिखवाते जा रहे थे जो कुछ तुम करते थे। (27-29)

पस जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो उनका रब उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा। यही खुली कामयाबी है। और जिन्होंने इंकार किया, क्या तुम्हें मेरी आयतें पढ़कर सुनाई नहीं जाती थीं। पस तुमने तकब्बुर (घमंड) किया और तुम मुजरिम लोग थे। और जब कहा जाता था कि अल्लाह का वादा हक़ है और क़ियामत में कोई शक नहीं तो तुम कहते थे कि हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या है, हम तो बस एक गुमान सा रखते हैं, और हम इस पर यक़ीन करने वाले नहीं। (30-32)

और उन पर उनके आमाल की बुराइयां खुल जाएंगी और वह चीज़ उन्हें घेर लेगी जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे। और कहा जाएगा कि आज हम तुम्हें भुला देंगे जिस तरह तुमने अपने इस दिन के आने को भुलाए रखा। और तुम्हारा ठिकाना आग है और कोई तुम्हारा मददगार नहीं। यह इस वजह से कि तुमने अल्लाह की आयतों का मज़ाक़ उड़ाया। और दुनिया की ज़िंदगी ने तुम्हें धोखे में रखा। पस आज न वे उससे निकाले जाएंगे और न उनका उज़्र क़ुबूल किया जाएगा। (33-35)

पस सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो रब है आसमानों का और रब है ज़मीन का, रब है तमाम आलम का। और उसी के लिए बड़ाई है आसमानों और ज़मीन में। और वह ज़बरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (36-37)

सूरह-46. अल-अहक़ाफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। यह किताब अल्लाह ज़बरदस्त हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाले की तरफ़ से उतारी गई है। हमने आसमानों और ज़मीन को और उनके दर्मियान की चीज़ों को नहीं पैदा किया मगर हक़ के साथ और मुअय्यन (निश्चित) मुद्दत के लिए। और जो लोग मुंकिर हैं वे उससे बेरुख़ी करते हैं जिससे उन्हें डराया गया है। (1-3)

कहो कि तुमने ग़ौर भी किया उन चीज़ों पर जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में क्या बनाया है। या उनका आसमान में कुछ साझा है। मेरे पास इससे पहले की कोई किताब ले आओ या कोई इल्म जो चला आता हो, अगर तुम सच्चे हो। और उस शख़्स से ज़्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारे जो क़ियामत तक उसका जवाब नहीं दे सकते, और उन्हें उनके पुकारने की भी ख़बर नहीं। और जब लोग इकट्ठा किए जाएंगे तो वे उनके दुश्मन होंगे और उनकी इबादत के मुंकिर बन जाएंगे। (4-6)

और जब हमारी खुली-खुली आयतें उन्हें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो मुंकिर लोग इस हक़ की बाबत, जबकि वह उनके पास पहुंचता है, कहते हैं कि यह खुला हुआ जादू है। क्या ये लोग कहते हैं कि उसने इसे अपनी तरफ़ से बना लिया है, कहो कि अगर मैंने इसे अपनी तरफ़ से बनाया है तो तुम लोग मुझे ज़रा भी अल्लाह से बचा नहीं सकते। जो बातें तुम बनाते हो अल्लाह उन्हें ख़ूब जानता है। वह मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाही के लिए काफ़ी है। और वह बख़्शने वाला, रहमत वाला है। (7-8)

कहो कि मैं कोई अनोखा रसूल नहीं हूं। और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या। मैं तो सिर्फ़ उसी का इत्तिबाअ (अनुसरण) करता हूं जो मेरी तरफ़ 'वही' (प्रकाशना) के ज़रिए आता है और मैं तो सिर्फ़ एक खुला हुआ आगाह करने वाला हूं। कहो, क्या तुमने कभी

सोचा कि अगर यह क़ुरआन अल्लाह की जानिब से हो और तुमने इसे नहीं माना, और बनी इस्राईल में से एक गवाह ने इस जैसी किताब पर गवाही दी है। पस वह ईमान लाया और तुमने तकब्बुर (घमंड) किया। बेशक अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता। (9-10)

और इंकार करने वाले ईमान लाने वालों के बारे में कहते हैं कि अगर यह कोई अच्छी चीज़ होती तो वे इस पर हमसे पहले न दौड़ते। और चूंकि उन्होंने इससे हिदायत नहीं पाई तो अब वे कहेंगे कि यह तो पुराना झूठ है। (11)

और इससे पहले मूसा की किताब थी रहनुमा और रहमत। और यह एक किताब है जो उसे सच्चा करती है, अरबी ज़बान में, ताकि उन लोगों को डराए जिन्होंने ज़ुल्म किया। और वह ख़ुशख़बरी है नेक लोगों को लिए। बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर वे उस पर जमे रहे तो उन लोगों पर कोई ख़ौफ़ नहीं और न वे ग़मगीन होंगे। यही लोग जन्नत वाले हैं जो उसमें हमेशा रहेंगे, उन आमाल के बदले जो वे दुनिया में करते थे। (12-14)

और हमने इंसान को हुक्म दिया कि वह अपने मां-बाप के साथ भलाई करे। उसकी मां ने तकलीफ़ के साथ उसे पेट में रखा। और तकलीफ़ के साथ उसे जना। और उसका दूध छुड़ाना तीस महीने में हुआ। यहां तक कि जब वह अपनी पुख़्तगी को पहुंचा और चालीस वर्ष को पहुंच गया तो वह कहने लगा कि ऐ मेरे रब, मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरे एहसान का शुक्र करूं जो तूने मुझ पर किया और मेरे मां-बाप पर किया और यह कि मैं वह नेक अमल करूं जिससे तू राज़ी हो। और मेरी औलाद में भी मुझे नेक औलाद दे। मैंने तेरी तरफ़ रुजूअ किया और मैं फ़रमांबरदारों में से हूं। ये लोग हैं जिनके अच्छे आमाल को हम क़ुबूल करेंगे और उनकी बुराइयों से दरगुज़र करेंगे, वे अहले जन्नत में से होंगे, सच्चा वादा जो उनसे किया जाता था। (15-16)

और जिसने अपने मां-बाप से कहा कि मैं बेज़ार हूं तुमसे। क्या तुम मुझे यह ख़ौफ़ दिलाते हो कि मैं क़ब्र से निकाला जाऊंगा, हालाँकि मुझ से पहले बहुत सी क़ौमें गुज़र चुकी हैं और वे दोनों अल्लाह से फ़रयाद करते हैं कि

अफ़सोस है तुझ पर, तू ईमान ला, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है। पस वह कहता है कि यह सब अगलों की कहानियां हैं। ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह का क़ौल पूरा हुआ उन गिरोहों के साथ जो उनसे पहले गुज़रे जिन्नों और इंसानों में से। बेशक वे ख़सारे (घाटे) में रहे। (17-18)

और हर एक के लिए उनके आमाल के एतबार से दर्जे होंगे। और ताकि अल्लाह सबको उनके आमाल पूरे कर दे और उन पर ज़ुल्म न होगा। और जिस दिन इंकार करने वाले आग के सामने लाए जाएंगे, तुम अपनी अच्छी चीज़ें दुनिया की ज़िंदगी में ले चुके और उन्हें बरत चुके तो आज तुम्हें ज़िल्लत की सज़ा दी जाएगी, इस वजह से कि तुम दुनिया में नाहक़ तकब्बुर (घमंड) करते थे और इस वजह से कि तुम नाफ़रमानी करते थे। (19-20)

और आद के भाई (हूद) को याद करो। जबकि उसने अपनी क़ौम को अहक़ाफ़ में डराया—और डराने वाले उससे पहले भी गुज़र चुके थे और उसके बाद भी आए—कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। मैं तुम पर एक हौलनाक दिन के अज़ाब से डरता हूं। उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमें हमारे माबूदों (पूज्यों) से फेर दो। पस अगर तुम सच्चे हो तो वह चीज़ हम पर लाओ जिसका तुम हमसे वादा करते हो। उसने कहा कि इसका इल्म तो अल्लाह को है, और मैं तो तुम्हें वह पैग़ाम पहुंचा रहा हूं जिसके साथ मुझे भेजा गया है। लेकिन मैं तुम्हें देखता हूं कि तुम लोग नादानी की बातें करते हो। (21-23)

पस जब उन्होंने उसे बादल की शक्ल में अपनी वादियों की तरफ़ आते हुए देखा तो उन्होंने कहा कि यह तो बादल है जो हम पर बरसेगा। नहीं बल्कि यह वह चीज़ है जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे। एक आंधी है जिसमें दर्दनाक अज़ाब है। वह हर चीज़ को अपने रब के हुक्म से उखाड़ फेंकेगी। पस वे ऐसे हो गए कि उनके घरों के सिवा वहां कुछ नज़र न आता था। मुजरिमों को हम इसी तरह सज़ा देते हैं। (24-25)

और हमने उन लोगों को उन बातों में क़ुदरत दी थी कि तुम्हें उन बातों

में क़ुदरत नहीं दी और हमने उन्हें कान और आंख और दिल दिए। मगर वे कान उनके कुछ काम न आए और न आंखें और न दिल। क्योंकि वे अल्लाह की आयतों का इंकार करते थे और उन्हें उस चीज़ ने घेर लिया जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे। और हमने तुम्हारे आस पास की बस्तियां भी तबाह कर दीं। और हमने बार-बार अपनी निशानियां बताईं ताकि वे बाज़ आएं। पस क्यों न उनकी मदद की उन्होंने जिनको उन्होंने ख़ुदा के तक़र्रुब (समीपता) के लिए माबूद (पूज्य) बना रखा था। बल्कि वे सब उनसे खोए गए और यह उनका झूठ था और उनकी गढ़ी हुई बात थी। (26-28)

और जब हम जिन्नात के एक गिरोह को तुम्हारी तरफ़ ले आए, वे क़ुरआन सुनने लगे। पस जब वे उसके पास आए तो कहने लगे कि चुप रहो। फिर जब क़ुरआन पढ़ा जा चुका तो वे लोग डराने वाले बनकर अपनी क़ौम की तरफ़ वापस गए। उन्होंने कहा कि ऐ हमारी क़ौम, हमने एक किताब सुनी है जो मूसा के बाद उतारी गई है, उन पेशीनगोइयों (भव्रियवाणियों) की तस्दीक़ (प्रष्टि) करती हुई जो उसके पहले से मौजूद हैं। वह हक़ की तरफ़ और एक सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करती है। ऐ हमारी क़ौम, अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले की दावत (आह्वान) क़ुबूल करो और उस पर ईमान ले आओ, अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा और तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचाएगा। और जो शख़्स अल्लाह के दाअी (आह्वानकर्ता) की दावत पर लब्बैक नहीं कहेगा तो वह ज़मीन में हरा नहीं सकता और अल्लाह के सिवा उसका कोई मददगार न होगा। ऐसे लोग खुली हुई गुमराही में हैं। (29-32)

क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि जिस ख़ुदा ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और वह उनके पैदा करने से नहीं थका, इस पर क़ुदरत रखता है कि वह मुर्दों को ज़िंदा कर दे, हां वह हर चीज़ पर क़ादिर है। और जिस दिन ये इंकार करने वाले आग के सामने लाए जाएंगे, क्या यह हक़ीक़त नहीं है। वे कहेंगे कि हां, हमारे रब की क़सम। इर्शाद होगा फिर चखो अज़ाब उस इंकार के बदले जो तुम कर रहे थे। (33-34)

पस तुम सब्र करो जिस तरह हिम्मत वाले पैग़म्बरों ने सब्र किया। और

उनके लिए जल्दी न करो। जिस दिन ये लोग उस चीज़ को देखेंगे जिसका उनसे वादा किया जा रहा है तो गोया कि वे दिन की एक घड़ी से ज़्यादा नहीं रहे। यह पहुंचा देना है। पस वही लोग बर्बाद होंगे जो नाफ़रमानी करने वाले हैं। (35)

सूरह-47. मुहम्मद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, अल्लाह ने उनके आमाल को रायगां (अकारत) कर दिया। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए और उस चीज़ को माना जो मुहम्मद पर उतारा गया है, और वह हक़ है उनके रब की तरफ़ से, अल्लाह ने उनकी बुराइयां उनसे दूर कर दीं और उनका हाल दुरुस्त कर दिया। यह इसलिए कि जिन लोगों ने इंकार किया उन्होंने बातिल (असत्य) की पैरवी की। और जो लोग ईमान लाए उन्होंने हक़ (सत्य) की पैरवी की जो उनके रब की तरफ़ से है। इस तरह अल्लाह लोगों के लिए उनकी मिसालें बयान करता है। (1-3)

पस जब मुंकिरों से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उनकी गर्दनें मारो। यहां तक कि जब ख़ूब क़त्ल कर चुको तो उन्हें मज़बूत बांध लो। फिर इसके बाद या तो एहसान करके छोड़ना है या मुआवज़ा लेकर, यहां तक कि जंग अपने हथियार रख दे। यह है काम। और अगर अल्लाह चाहता तो वह उनसे बदला ले लेता, मगर ताकि वह तुम लोगों को एक दूसरे से आज़माए। और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएंगे, अल्लाह उनके आमाल को हरगिज़ ज़ाए (नष्ट) नहीं करेगा। वह उनकी रहनुमाई फ़रमाएगा और उनका हाल दुरुस्त कर देगा। और उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा जिसकी उन्हें पहचान करा दी है। (4-6)

ऐ ईमान वालो, अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दमों को जमा देगा। और जिन लोगों ने इंकार किया उनके लिए तबाही है और अल्लाह उनके आमाल को ज़ाया कर देगा। यह इस सबब से कि उन्होंने उस चीज़ को नापसंद किया जो अल्लाह ने उतारी

है। पस अल्लाह ने उनके आमाल को अकारत कर दिया। क्या ये लोग मुल्क मे चले फिरे नहीं कि वे उन लोगों का अंजाम देखते जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं, अल्लाह ने उन्हें उखाड़ फेंका और मुंकिरों के सामने उन्हीं की मिसालें आनी हैं। यह इस सबब से कि अल्लाह ईमान वालों का कारसाज़ है और मुंकिरों का कोई कारसाज़ (संरक्षक) नहीं। (7-11)

बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और जिन लोगों ने इंकार किया वे बरत रहे हैं और खा रहे हैं जैसे कि चौपाए खाएं, और आग उन लोगों का ठिकाना है। और कितनी ही बस्तियां हैं जो क़ुव्वत (शक्ति) में तुम्हारी उस बस्ती से ज़्यादा थीं जिसने तुम्हें निकाला है। हमने उन्हें हलाक कर दिया। पस कोई उनका मददगार न हुआ। (12-13)

क्या वह जो अपने रब की तरफ़ से एक वाज़ेह (स्पष्ट) दलील पर है। वह उसकी तरह हो जाएगा जिसकी बदअमली उसके लिए ख़ुशनुमा बना दी गई है और वे अपनी ख़्वाहिशात (इच्छाओं) पर चल रहे हैं। जन्नत की मिसाल जिसका वादा डरने वालों से किया गया है उसकी कैफ़ियत यह है कि उसमें नहरें हैं ऐसे पानी की जिसमें तब्दीली न होगी और नहरें होंगी दूध की जिसका मज़ा नहीं बदला होगा और नहरें होंगी शराब की जो पीने वालों के लिए लज़ीज़ होगीं और नहरें होंगी शहद की जो बिल्कुल साफ़ होगा। और उनके लिए वहां हर क़िस्म के फल होंगे। और उनके रब की तरफ़ से बख़्शिश (क्षमा) होगी। क्या ये लोग उन जैसे हो सकते हैं जो हमेशा आग में रहेंगे और उन्हें खौलता हुआ पानी पीने के लिए दिया जाएगा, पस वह उनकी आंतों को टुकड़े-टुकड़े कर देगा। (14-15)

तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं तो इल्म वालों से पूछते हैं कि उन्होंने अभी क्या कहा। यही लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी। और वे अपनी ख़्वाहिशों पर चलते हैं। और जिन लोगों ने हिदायत की राह इख़्तियार की तो अल्लाह उन्हें और ज़्यादा हिदायत देता है और उन्हें उनकी परहेज़गारी (ईश-परायणता)अता करता है। (16-17)

ये लोग तो बस इसके मुंतज़िर हैं कि क़ियामत उन पर अचानक आ जाए तो उसकी अलामतें ज़ाहिर हो चुकी हैं। पस जब वह आ जाएगी तो उनके लिए नसीहत हासिल करने का मौक़ा कहां रहेगा। पस जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं और माफ़ी मांगों अपने क़ुसूर के लिए और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए। और अल्लाह जानता है तुम्हारे चलने फिरने को और तुम्हारे ठिकानों को। (18-19)

और जो लोग ईमान लाए हैं वे कहते हैं कि कोई सूरह क्यों नहीं उतारी जाती। पस जब एक वाज़ेह सूरह उतार दी गई और उसमें जंग का भी ज़िक्र था तो तुमने देखा कि जिनके दिलों में बीमारी है वे तुम्हारी तरफ़ इस तरह देख रहे हैं जैसे किसी पर मौत छा गई हो। पस ख़राबी है उनकी। हुक्म मानना है और भली बात कहना है। पस जब मामले का क़तई फ़ैसला हो जाए तो अगर वे अल्लाह से सच्चे रहते तो उनके लिए बहुत बेहतर होता। पस अगर तुम फिर गए तो इसके सिवा तुमसे कुछ उम्मीद नहीं कि तुम ज़मीन में फ़साद करो और आपस के रिश्तों को तोड़ दो। यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने अपनी रहमत से दूर किया, पस उन्हें बहरा कर दिया और उनकी आंखों को अंधा कर दिया। (20-23)

क्या ये लोग क़ुरआन में ग़ौर नहीं करते या दिलों पर उनके ताले लगे हुए हैं। जो लोग पीठ फेरकर हट गए, बाद इससे कि हिदायत उन पर वाज़ेह हो गई, शैतान ने उन्हें फ़रेब दिया और अल्लाह ने उन्हें ढील दे दी। यह इस सबब से हुआ कि उन्होंने उन लोगों से जो कि ख़ुदा की उतारी हुई चीज़ को नापसंद करते हैं, कहा कि कुछ बातों में हम तुम्हारा कहना मान लेंगे। और अल्लाह उनकी राज़दारी को जानता है। पस उस वक़्त क्या होगा जबकि फ़रिश्ते उनकी रूहें क़ब्ज़ करते होंगे, उनके मुंह और उनकी पीठों पर मारते हुए यह इस सबब से कि उन्होंने उस चीज़ की पैरवी की जो अल्लाह को ग़ुस्सा दिलाने वाली थी और उन्होंने उसकी रिज़ा को नापसंद किया। पस अल्लाह ने उनके आमाल अकारत कर दिए। (24-28)

जिन लोगों के दिलों में बीमारी है क्या वे ख़्याल करते हैं कि अल्लाह

उनके कीने (द्वेषों) को कभी ज़ाहिर न करेगा। और अगर हम चाहते तो हम उनको तुम्हें दिखा देते, पस तुम उनकी अलामतों से उन्हें पहचान लेते। और तुम उनके अंदाज़े कलाम से ज़रूर उन्हें पहचान लोगे। और अल्लाह तुम्हारे आमाल को जानता है। (29-30)

और हम ज़रूर तुम्हें आज़माएंगे ताकि हम उन लोगों को जान लें जो तुम में जिहाद करने वाले हैं और साबितक़दम रहने वाले हैं और हम तुम्हारे हालात की जांच कर लें। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका और रसूल की मुख़ालिफ़त की जबकि हिदायत उन पर वाज़ेह हो चुकी थी, वे अल्लाह को कुछ नुक़सान न पहुंचा सकेंगे। और अल्लाह उनके आमाल को ढा देगा। (31-32)

ऐ ईमान वालो, अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो और अपने आमाल को बर्बाद न करो। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका। फिर वे मुंकिर ही मर गए, अल्लाह उन्हें कभी न बख़्शेगा। पस तुम हिम्मत न हारो और सुलह की दरख़्वास्त न करो। और तुम ही ग़ालिब रहोगे। और अल्लाह तुम्हारे साथ है। और वह हरगिज़ तुम्हारे आमाल में कमी न करेगा। (33-35)

दुनिया की ज़िंदगी तो महज़ एक खेल तमाशा है और अगर तुम ईमान लाओ और तक़वा (ईशपरायणता) इख़्तियार करो तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारे अज्र अता करेगा और वह तुम्हारे माल तुमसे न मांगेगा। अगर वह तुमसे तुम्हारे माल तलब करे फिर आख़िर तक तलब करता रहे तो तुम बुख़्ल (कंजूसी) करने लगो और अल्लाह तुम्हारे कीने को ज़ाहिर कर दे। हां, तुम वे लोग हो कि तुम्हें अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिए बुलाया जाता है, पस तुम में से कुछ लोग हैं जो बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं। और जो शख़्स बुख़्ल करता। तो वह अपने ही से बुख़्ल करता है। और अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है, तुम मोहताज हो। और अगर तुम फिर जाओ तो अल्लाह तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम ले आएगा, फिर वे तुम जैसे न होंगे। (36-38)

सूरह-48. अल-फ़तह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

बेशक हमने तुम्हें खुली फ़तह दे दी। ताकि अल्लाह तुम्हारी अगली और पिछली ख़ताएं माफ़ कर दे। और तुम्हारे ऊपर अपनी नेमत की तक्मील कर दे। और तुम्हें सीधा रास्ता दिखाए। और तुम्हें ज़बरदस्त मदद अता करे। (1-3)

वही है जिसने मोमिनों के दिल में इत्मीनान उतारा ताकि उनके ईमान के साथ उनका ईमान और बढ़ जाए। और आसमानों और ज़मीन की फ़ौजें अल्लाह ही की हैं। और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। ताकि अल्लाह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उनमें हमेशा रहेंगे। और ताकि उनकी बुराइयां उनसे दूर कर दे। और यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी कामयाबी है। और ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ (पाखंडी) मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को अज़ाब दे जो अल्लाह के साथ बुरे गुमान रखते थे। बुराई की गर्दिश उन्हीं पर है। और उन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ और उन पर उसने लानत की। और उनके लिए उसने जहन्नम तैयार कर रखी है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। और आसमानों और ज़मीन की फ़ौजें अल्लाह ही की हैं। और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (4-7)

बेशक हमने तुम्हें गवाही देने वाला और बशारत (शुभ-सूचना) देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसकी ताज़ीम (सम्मान) करो। और तुम अल्लाह की तस्बीह करो सुबह व शाम। जो लोग तुमसे बैअत (प्रतिज्ञा) करते हैं वे दरहक़ीक़त अल्लाह से बैअत करते हैं। अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर है। फिर जो शख़्स उसे तोड़ेगा उसके तोड़ने का वबाल उसी पर पड़ेगा। और जो शख़्स उस अहद (वचन) को पूरा करेगा जो उसने अल्लाह से किया है तो अल्लाह उसे बड़ा अज्र अता फ़रमाएगा। (8-10)

जो देहाती पीछे रह गए वे अब तुमसे कहेंगे कि हमें हमारे अमवाल

(धन-सम्पत्ति) और हमारे बाल बच्चों ने मशग़ूल रखा, पस आप हमारे लिए माफ़ी की दुआ फ़रमाएं। यह अपनी ज़बानों से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है। तुम कहो कि कौन है जो अल्लाह के सामने तुम्हारे लिए कुछ इख़्तियार रखता हो। अगर वह तुम्हें कोई नुक़सान या नफ़ा पहुंचाना चाहे। बल्कि अल्लाह उससे बाख़बर है जो तुम कर रहे हो। बल्कि तुमने यह गुमान किया कि रसूल और मोमिनीन कभी अपने घरवालों की तरफ़ लौटकर न आएंगे। और यह ख़्याल तुम्हारे दिलों को बहुत भला नज़र आया और तुमने बहुत बुरे गुमान किए। और तुम बर्बाद होने वाले लोग हो गए। और जो ईमान न लाया अल्लाह पर और उसके रसूल पर तो हमने ऐसे मुंकिरों के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है। और आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है। वह जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अज़ाब दे। और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (11-14)

जब तुम ग़नीमतें लेने के लिए चलोगे तो पीछे रह जाने वाले लोग कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने दो। वे चाहते हैं कि अल्लाह की बात को बदल दें। कहो कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चल सकते। अल्लाह पहले ही यह फ़रमा चुका है। तो वे कहेंगे बल्कि तुम लोग हमसे हसद करते हो। बल्कि यही लोग बहुत कम समझते हैं। (15)

पीछे रहने वाले देहातियों से कहो कि अनक़रीब तुम ऐसे लोगों की तरफ़ बुलाए जाओगे जो बड़े ज़ोरआवर हैं, तुम उनसे लड़ोगे या वे इस्लाम लाएंगे। पस अगर तुम हुक्म मानोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा अज्र देगा और अगर तुम रूगर्दानी (अवहेलना) करोगे जैसा कि तुम इससे पहले रूगर्दानी कर चुके हो तो वह तुम्हें दर्दनाक अज़ाब देगा। न अंधे पर कोई गुनाह है और न लंगड़े पर कोई गुनाह है और न बीमार पर कोई गुनाह है। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करेगा उसे अल्लाह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और जो शख़्स रूगर्दानी करेगा उसे वह दर्दनाक अज़ाब देगा। (16-17)

अल्लाह ईमान वालों से राज़ी हो गया जबकि वे तुमसे दरख़्त के नीचे

बैअत (प्रतिज्ञा) कर रहे थे, अल्लाह ने जान लिया जो कुछ उनके दिलों में था। पस उसने उन पर सकीनत (शांति) नाज़िल फ़रमाई और उन्हें इनाम में एक क़रीबी फ़तह दे दी। और बहुत सी ग़नीमतें भी जिन्हें वे हासिल करेंगे। और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और अल्लाह ने तुमसे बहुत सी ग़नीमतों का वादा किया है जिन्हें तुम लोगे, पस यह उसने तुम्हें फ़ौरी तौर पर दे दिया। और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिए और ताकि अहले ईमान के लिए यह एक निशानी बन जाए। और ताकि वह तुम्हें सीधे रास्ते पर चलाए। और एक फ़तह और भी है जिस पर तुम अभी क़ादिर नहीं हुए। अल्लाह ने उसका इहाता (आच्छादन) कर रखा है। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (18-21)

और अगर ये मुंकिर लोग तुमसे लड़ते तो ज़रूर पीठ फेरकर भागते, फिर वे न कोई हिमायती पाते और न मददगार। यह अल्लाह की सुन्नत (तरीक़ा) है जो पहले से चली आ रही है। और तुम अल्लाह की सुन्नत में कोई तब्दीली न पाओगे। और वही है जिसने मक्का की वादी में उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिए। बाद इसके कि तुम्हें उन पर क़ाबू दे दिया था। और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा है। (22-24)

वही लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका और क़ुर्बानी के जानवरों को भी रोके रखा कि वे अपनी जगह पर न पहुंचें। और अगर (मक्का में) बहुत से मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें न होतीं जिन्हें तुम लाइल्मी में पीस डालते, फिर उनके सबब तुम पर बेख़बरी में इल्ज़ाम आता, ताकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल करे। और अगर वे लोग अलग हो गए होते तो उनमें जो मुंकिर थे उन्हें हम दर्दनाक सज़ा देते। (25)

जब इंकार करने वालों ने अपने दिलों में हमिय्यत (हठ) पैदा की, जाहिलियत की हमिय्यत, फिर अल्लाह ने अपनी तरफ़ से सकीनत (शांति) नाज़िल फ़रमाई अपने रसूल पर और ईमान वालों पर, और अल्लाह ने उन्हें तक़वा (ईशपरायणता) की बात पर जमाए रखा और वे उसके ज़्यादा हक़दार और उसके अहल थे। और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (26)

बेशक अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा ख़्वाब दिखाया जो वाक़्या के अनुसार है। बेशक अल्लाह ने चाहा तो तुम मस्जिदे हराम में ज़रूर दाख़िल होगे, अम्न के साथ, बाल मूंडते हुए अपने सरों पर और कतरते हुए, तुम्हें कोई अंदेशा न होगा। पस अल्लाह ने वह बात जानी जो तुमने नहीं जानी, पस इससे पहले उसने एक फ़तह (विजय) दे दी। (27)

और अल्लाह ही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और दीने हक़ के साथ भेजा ताकि वह इसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे। और अल्लाह काफ़ी गवाह है। (28)

मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं वे मुंकिरों पर सख़्त हैं और आपस में महरबान हैं तुम उन्हें रुकूअ में और सज्दे में देखोगे, वे अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रिज़ामंदी की तलब में लगे रहते हैं। उनकी निशानी उनके चेहरों पर है सज्दे के असर से, उनकी यह मिसाल तौरात में है। और इंजील में उनकी मिसाल यह है कि जैसे खेती, उसने अपना अंकुर निकाला, फिर उसे मज़बूत किया, फिर वह और मोटा हुआ, फिर अपने तने पर खड़ा हो गया, वह किसानों को भला लगता है ताकि उनसे मुंकिरों को जलाए। उनमें से जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किया अल्लाह ने उनसे माफ़ी का और बड़े सवाब का वादा किया है। (29)

सूरह-49. अल-हुजुरात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ ईमान वालो, तुम अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (1)

ऐ ईमान वालो, तुम अपनी आवाज़ें पैग़म्बर की आवाज़ से ऊपर मत करो और न उसे इस तरह आवाज़ देकर पुकारो जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे को पुकारते हो। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे आमाल बर्बाद हो जाएं और तुम्हें ख़बर भी न हो। जो लोग अल्लाह के रसूल के आगे अपनी

आवाज़ें पस्त रखते हैं वही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने तक़वे (ईशपरायणता) के लिए जांच लिया है। उनके लिए माफ़ी है और बड़ा सवाब है। जो लोग तुम्हें हुजरों (कमरों) के बाहर से पुकारते हैं उनमें से अक्सर समझ नहीं रखते। और अगर वे सब्र करते यहां तक कि तुम ख़ुद उनके पास निकल कर आ जाओ तो यह उनके लिए बेहतर होता। और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (2-5)

ऐ ईमान वालो, अगर कोई फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) तुम्हारे पास ख़बर लाए तो तुम अच्छी तरह तहक़ीक़ कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को नादानी से कोई नुक़सान पहुंचा दो, फिर तुम्हें अपने किए पर पछताना पड़े। और जान लो कि तुम्हारे दर्मियान अल्लाह का रसूल है। अगर वह बहुत से मामलात में तुम्हारी बात मान ले तो तुम बड़ी मुश्किल में पड़ जाओ। लेकिन अल्लाह ने तुम्हें ईमान की मुहब्बत दी और उसे तुम्हारे दिलों में मरग़ूब (प्रिय) बना दिया, और कुफ़्र और फ़िस्क़ (अवज्ञा) और नाफ़रमानी से तुम्हें मुतनफ़्फ़िर (खिन्न) कर दिया। ऐसे ही लोग अल्लाह के फ़ज़्ल और इनाम से राहेरास्त (सन्मार्ग) पर हैं। और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (6-8)

और अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ जाएं तो उनके दर्मियान सुलह कराओ। फिर अगर उनमें का एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ज़्यादती करे तो उस गिरोह से लड़ो जो ज़्यादती करता है। यहां तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ लौट आए। फिर अगर वह लौट आए तो उनके दर्मियान अद्ल (न्याय) के साथ सुलह कराओ और इंसाफ़ करो, बेशक अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को पसंद करता है। मुसलमान सब भाई हैं, पस अपने भाइयों के दर्मियान मिलाप कराओ और अल्लाह से डरो, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (9-10)

ऐ ईमान वालो, न मर्द दूसरे मर्दों का मज़ाक़ उड़ाएं, हो सकता है कि वे उनसे बेहतर हों। और न औरतें दूसरी औरतों का मज़ाक़ उड़ाएं, हो सकता है कि वे उनसे बेहतर हों। और न एक दूसरे को ताना दो और न एक दूसरे

को बुरे लक़ब से पुकारो। ईमान लाने के बाद गुनाह का नाम लगना बुरा है। और जो बाज़ न आएं तो वही लोग ज़ालिम हैं। (11)

ऐ ईमान वालो, बहुत से गुमानों से बचो, क्योंकि कुछ गुमान गुनाह होते हैं। और टोह में न लगो। और तुम में से कोई किसी की ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) न करे। क्या तुम में से कोई इस बात को पसंद करेगा कि वह अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए, इसे तुम ख़ुद नागवार समझते हो। और अल्लाह से डरो। बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है। (12)

ऐ लोगो, हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया। और तुम्हें क़ौमों और ख़ानदानों में तक़्सीम कर दिया ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो। बेशक अल्लाह के नज़दीक तुम में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है जो सबसे ज़्यादा परहेज़गार है। बेशक अल्लाह जानने वाला, ख़बर रखने वाला है। (13)

देहाती कहते हैं कि हम ईमान लाए, कहो कि तुम ईमान नहीं लाए, बल्कि यूं कहो कि हमने इस्लाम क़ुबूल किया, और अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुआ। और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो तो अल्लाह तुम्हारे आमाल में से कुछ कमी नहीं करेगा। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। मोमिन तो बस वे हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए फिर उन्होंने शक नहीं किया और अपने माल और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद (जद्दोजहद) किया, यही सच्चे लोग हैं। (14-15)

कहो, क्या तुम अल्लाह को अपने दीन से आगाह कर रहे हो। हालाँकि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। और अल्लाह हर चीज़ से बाख़बर है। ये लोग तुम पर एहसान रखते हैं कि उन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया है। कहो कि अपने इस्लाम का एहसान मुझ पर न रखो, बल्कि अल्लाह का तुम पर एहसान है कि उसने तुम्हें ईमान की हिदायत दी। अगर तुम सच्चे हो। बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन की छुपी बातों को जानता है। और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो। (16-18)

सूरह-50. क़ाफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़ाफ़०। क़सम है बाअज़्मत क़ुरआन की। बल्कि उन्हें तअज्जुब हुआ कि उनके पास उन्हीं में से एक डराने वाला आया, पस मुंकिरों ने कहा कि यह तअज्जुब की चीज़ है। क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे, यह दुबारा ज़िंदा होना बहुत बईद (दूर की बात) है। हमें मालूम है जितना ज़मीन उनके अंदर से घटाती है और हमारे पास किताब है जिसमें सब कुछ महफ़ूज़ है। बल्कि उन्होंने हक़ को झुठलाया है जबकि वह उनके पास आ चुका है, पस वे उलझन में पड़े हुए हैं। (1-5)

क्या उन लोगों ने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा, हमने कैसा उसे बनाया और उसे रौनक़ दी और उसमें कोई दरार नहीं। और ज़मीन को हमने फैलाया और उसमें पहाड़ डाल दिए और उसमें हर क़िस्म की रौनक़ की चीज़ उगाई, समझाने को और याद दिलाने को हर उस बंदे के लिए जो रुजूअ करे। और हमने आसमान से बरकत वाला पानी उतारा, फिर उससे हमने बाग़ उगाए और काटी जाने वाली फ़सलें। और खजूरों के लम्बे दरख़्त जिनमें तह-ब-तह ख़ोशे लगते हैं, बंदों की रोज़ी के लिए। और हमने उसके ज़रिए से मुर्दा ज़मीन को ज़िंदा किया। इसी तरह ज़मीन से निकलना होगा। (6-11)

उनसे पहले नूह की क़ौम और अर-रस वाले और समूद। और आद और फ़िरऔन और लूत के भाई और ऐका वाले और तुब्बअ की क़ौम ने भी झुठलाया। सबने पैग़म्बरों को झुठलाया, पस मेरा डराना उन पर वाक़ेअ होकर रहा। क्या हम पहली बार पैदा करने से आजिज़ रहे। बल्कि ये लोग नए सिरे से पैदा करने की तरफ़ से शुबह में हैं। (12-15)

और हमने इंसान को पैदा किया और हम जानते हैं उन बातों को जो उसके दिल में आती हैं। और हम रगे गर्दन से भी ज़्यादा उससे क़रीब हैं। जब दो लेने वाले लेते रहते हैं जो कि दाईं और बाईं तरफ़ बैठे हैं। कोई

लफ़्ज़ वह नहीं बोलता मगर उसके पास एक मुस्तइद (चुस्त) निगरां (सतर्क निरीक्षक) मौजूद है। (16-18)

और मौत की बेहोशी हक़ के साथ आ पहुंची। यह वही चीज़ है जिससे तू भागता था। और सूर फूंका जाएगा, यह डराने का दिन होगा। हर शख़्स इस तरह आ गया कि उसके साथ एक हांकने वाला है और एक गवाही देने वाला। तुम उससे ग़फ़लत में रहे, पस हमने तुम्हारे ऊपर से पर्दा हटा दिया, पस आज तुम्हारी निगाह तेज़ है। और उसके साथ का फ़रिश्ता कहेगा, यह जो मेरे पास था हाज़िर है। जहन्नम में डाल दो नाशुक्र, मुख़ालिफ़ को। नेकी से रोकने वाला, हद से बढ़ने वाला, शुबह डालने वाला। जिसने अल्लाह के साथ दूसरे माबूद (पूज्य) बनाए, पस उसे डाल दो सख़्त अज़ाब में। उसका साथी शैतान कहेगा कि ऐ हमारे रब मैंने इसे सरकश नहीं बनाया बल्कि वह ख़ुद राह भूला हुआ, दूर पड़ा था। इर्शाद होगा, मेरे सामने झगड़ा न करो और मैंने पहले ही तुम्हें अज़ाब से डरा दिया था। मेरे यहां बात बदली नहीं जाती और मैं बंदों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं हूं। (19-29)

जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे, क्या तू भर गई। और वह कहेगी कि कुछ और भी है। और जन्नत डरने वालों के क़रीब लाई जाएगी, कुछ दूर न रहेगी। यह है वह चीज़ जिसका तुमसे वादा किया जाता था, हर रुजूअ करने वाले और याद रखने वाले के लिए। जो शख़्स रहमान से डरा बिना देखे और रुजूअ होने वाला दिल लेकर आया, दाख़िल हो जाओ उसमें सलामती के साथ, यह दिन हमेशा रहेगा। वहां उनके लिए वह सब होगा जो वे चाहें, और हमारे पास मज़ीद (और भी) है। (30-35)

और हम उनसे पहले कितनी ही क़ौमों को हलाक कर चुके हैं, वे क़ुव्वत (शक्ति) में उनसे ज़्यादा थीं, पस उन्होंने मुल्कों को छान मारा कि है कोई पनाह की जगह। इसमें याददिहानी है उस शख़्स के लिए जिसके पास दिल हो या वह कान लगाए मुतवज्जह होकर। (36-37)

और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है

छः दिन में बनाया और हमें कुछ थकान नहीं ह0ई। पस जो कुछ वे कहते हैं उस पर सब्र करो और अपने रब की तस्बीह करो हम्द (प्रशंसा) के साथ, सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले। और रात में उसकी तस्बीह करो और सज्दों के पीछे। (38-40)

और कान लगाए रखो कि जिस दिन पुकारने वाला बहुत क़रीब से पुकारेगा। जिस दिन लोग यक़ीन के साथ चिंघाड़ को सुनेंगे वह निकलने का दिन होगा। बेशक हम ही जिलाते हैं और हम ही मारते हैं और हमारी ही तरफ़ लौटना है। जिस दिन ज़मीन उन पर से खुल जाएगी, वे सब दौड़ते होंगे, यह इकट्ठा करना हमारे लिए आसान है। (41-44)

हम जानते हैं जो कुछ ये लोग कह रहे हैं। और तुम उन पर जब्र करने वाले नहीं हो। पस तुम क़ुरआन के ज़रिए उस शख़्स को नसीहत करो जो मेरे डराने से डरे। (45)

सूरह-51. अज़्-ज़ारियात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम है उन हवाओं की जो गर्द उड़ाने वाली हैं फिर वे उठा लेती हैं बोझ। फिर वे चलने लगती हैं आहिस्ता। फिर अलग-अलग करती हैं मामला। बेशक तुमसे जो वादा किया जा रहा है वह सच है। और बेशक इंसाफ़ होना ज़रूर है। क़सम है जालदार आसमान की। बेशक तुम एक इख़्तेलाफ़ (बिखराव, मत-भिन्नता) में पड़े हुए हो। उससे वही फिरता है जो फेरा गया। (1-9)

मारे गए अटकल से बातें करने वाले। जो ग़फ़लत में भूले हुए हैं। वे पूछते हैं कि कब है बदले का दिन। जिस दिन वे आग पर रखे जाएंगे। चखो मज़ा अपनी शरारत का, यह है वह चीज़ जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे। बेशक डरने वाले लोग बाग़ों में और चशमों (स्रोतों) में होंगे। ले रहे होंगे जो कुछ उनके रब ने उन्हें दिया, वे इससे पहले नेकी करने वाले थे। वे रातों को कम सोते थे। और सुबह के वक़्तों में वे माफ़ी मांगते थे। और उनके माल में साइल (मांगने वाले) और महरूम (असहाय) का हिस्सा था। (10-19)

और ज़मीन में निशानियां हैं यक़ीन करने वालों के लिए। और ख़ुद तुम्हारे अंदर भी, क्या तुम देखते नहीं। और आसमान में तुम्हारी रोज़ी है और वह चीज़ भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है। पस आसमान और ज़मीन के रब की क़सम, वह यक़ीनी है जैसा कि तुम बोलते हो। (20-23)

क्या तुम्हें इब्राहीम के मुअज़्ज़ज़ मेहमानों की बात पहुंची। जब वे उसके पास आए। फिर उन्हें सलाम किया। उसने कहा तुम लोगों को भी सलाम है। कुछ अजनबी लोग हैं। फिर वह अपने घर की तरफ़ चला और एक बछड़ा भुना हुआ ले आया। फिर उसे उनके पास रखा, उसने कहा, आप लोग खाते क्यों नहीं। फिर वह दिल में उनसे डरा। उन्होंने कहा कि डरो मत। और उन्हें ज़ीइल्म (ज्ञानवान) लड़के की बशारत (शुभ सूचना) दी। फिर उसकी बीवी बोलती हुई आई, फिर माथे पर हाथ मारा और कहने लगी कि बूढ़ी, बांझ। उन्होंने कहा कि ऐसा ही फ़रमाया है तेरे रब ने। बेशक वह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला, जानने वाला है। (24-30)

इब्राहीम ने कहा कि ऐ फ़रिश्तो, तुम्हें क्या मुहिम दरपेश है। उन्होंने कहा कि हम एक मुजरिम क़ौम (क़ौमे लूत) की तरफ़ भेजे गए हैं। ताकि उस पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसाएं। जो निशान लगाए हुए हैं तुम्हारे रब के पास उन लोगों के लिए जो हद से गुज़रने वाले हैं। फिर वहां जितने ईमान वाले थे उन्हें हमने निकाल लिया। पस वहां हमने एक घर के सिवा कोई मुस्लिम (आज्ञाकारी) घर न पाया और हमने उसमें एक निशानी छोड़ी उन लोगों के लिए जो दर्दनाक अज़ाब से डरते हैं। (31-37)

और मूसा में भी निशानी है जबकि हमने उसे फ़िरऔन के पास एक खुली दलील के साथ भेजा तो वह अपनी क़ुव्वत के साथ फिर गया। और कहा कि यह जादूगर है या मजनून है। पस हमने उसे और उसकी फ़ौज को पकड़ा, फिर उन्हें समुद्र में फेंक दिया और वह सज़ावारे मलामत (निन्दनीय) था। और आद में भी निशानी है जबकि हमने उन पर एक बेनफ़ा हवा भेज दी। वह जिस चीज़ पर से भी गुज़री उसे रेज़ा-रेज़ा करके छोड़ दिया। और समूद में भी निशानी है जबकि उनसे कहा गया कि थोड़ी मुद्दत तक के

लिए फ़ायदा उठा लो। पस उन्होंने अपने रब के हुक्म से सरकशी की, पस उन्हें कड़क ने पकड़ लिया। और वे देख रहे थे। फिर वे न उठ सके। और न अपना बचाव कर सके। और नूह की क़ौम को भी इससे पहले, बेशक वे नाफ़रमान लोग थे। (38-46)

और हमने आसमान को अपनी क़ुदरत से बनाया और हम कुशादा (व्यापक) करने वाले हैं। और ज़मीन को हमने बिछाया, पस क्या ही ख़ूब बिछाने वाले हैं। और हमने हर चीज़ को जोड़ा जोड़ा बनाया है ताकि तुम ध्यान करो। पस दौड़ो अल्लाह की तरफ़, मैं उसकी तरफ़ से एक खुला डराने वाला हूं। और अल्लाह के साथ कोई और माबूद (पूज्य) न बनाओ, मैं उसकी तरफ़ से तुम्हारे लिए खुला डराने वाला हूं। (47-51)

इसी तरह उनके अगलों के पास कोई पैग़म्बर ऐसा नहीं आया जिसे उन्होंने साहिर (जादूगर) या मजनून न कहा हो। क्या ये एक दूसरे को इसकी वसीयत करने चले आ रहे हैं, बल्कि ये सब सरकश लोग हैं। पस तुम उनसे एराज़ (विमुखता) करो, तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं। और समझाते रहो क्योंकि समझाना ईमान वालों को नफ़ा देता है। (52-55)

और मैंने जिन्न और इंसान को सिर्फ़ इसीलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें। मैं उनसे रिज़्क़ नहीं चाहता और न यह चाहता हूं कि वे मुझे खिलाएं। बेशक अल्लाह ही रोज़ी देने वाला है, ज़ोरआवर (सशक्त), ज़बरदस्त है। पस जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उनका डोल भर चुका है जैसे उनके साथियों के डोल भर चुके थे, पस वे जल्दी न करें। पस मुंकिरों के लिए ख़राबी है उनके उस दिन से जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। (56-60)

सूरह-52. अत-तूर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम है तूर की। और लिखी हुई किताब की, कुशादा वरक़ में। और आबाद घर की। और ऊंची छत की। और उबलते हुए समुद्र की। बेशक तुम्हारे रब का अज़ाब वाक़ेअ होकर रहेगा। उसे कोई टालने वाला नहीं। जिस

दिन आसमान डगमगाएगा और पहाड़ चलने लगेंगे। पस ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए जो बातें बनाते हैं खेलते हुए। जिस दिन वे जहन्नम की आग की तरफ़ धकेले जाएंगे। यह है वह आग जिसे तुम झुठलाते थे। क्या यह जादू है या तुम्हें नज़र नहीं आता। इसमें दाख़िल हो जाओ। फिर तुम सब्र करो या सब्र न करो। तुम्हारे लिए यकसां (समान) है। तुम वही बदला पा रहे हो जो तुम करते थे। (1-16)

बेशक मुत्तक़ी (ईश-परायण) लोग बाग़ों और नेमतों में होंगे। वे ख़ुशदिल होंगे उन चीज़ों से जो उनके रब ने उन्हें दी होंगी, और उनके रब ने उन्हें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लिया। खाओ और पियो मज़े के साथ अपने आमाल के बदले में। तकिया लगाए हुए सफ़-ब-सफ़ तख़्तों के ऊपर। और हम बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूरें उनसे ब्याह देंगे। (17-20)

और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद भी उनकी राह पर ईमान के साथ चली, उनके साथ हम उनकी औलाद को भी जमा कर देंगे, और उनके अमल में से कोई चीज़ कम नहीं करेंगे। हर आदमी अपनी कमाई में फंसा हुआ है। और हम उनकी पसंद के मेवे और गोश्त उन्हें बराबर देते रहेंगे। उनके दर्मियान शराब के प्यालों के तबादले हो रहे होंगे जो लग़वियत (बेहूदगी) और गुनाह से पाक होगी। और उनकी ख़िदमत में लड़के दौड़ते फिर रहे होंगे। गोया कि वे हिफ़ाज़त से रखे हुए मोती हैं। वे एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बात करेंगे। वे कहेंगे कि हम इससे पहले अपने घरवालों में डरते रहते थे। पस अल्लाह ने हम पर फ़ज़्ल फ़रमाया और हमें लू के अज़ाब से बचा लिया। हम इससे पहले उसी को पुकारते थे, बेशक वह नेक सुलूक वाला, महरबान है। (21-28)

पस तुम नसीहत करते रहो, अपने रब के फ़ज़्ल से तुम न काहिन (भविष्य वक्ता) हो और न मजनून। क्या वे कहते हैं कि यह एक शायर है, हम इस पर गर्दिशे ज़माना (काल-चक्र) के मुंतज़िर हैं। कहो कि इंतज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करने वालों में हूं। क्या उनकी अक़्लें उन्हें यही सिखाती

हैं या ये सरकश लोग हैं। क्या वे कहते हैं कि यह क़ुरआन को ख़ुद बना लाया है। बल्कि वे ईमान नहीं लाना चाहते। पस वे इसके मानिंद कोई कलाम ले आएं, अगर वे सच्चे हैं। (29-34)

क्या वे किसी ख़ालिक़ (सृष्टा) के बग़ैर पैदा हो गए या वे ख़ुद ही ख़ालिक़ हैं। क्या ज़मीन व आसमान को उन्होंने पैदा किया है, बल्कि वे यक़ीन नहीं रखते। क्या उनके पास तुम्हारे रब के ख़ज़ाने हैं या वे दारोग़ा (संरक्षक) हैं। क्या उनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर वे बातें सुन लिया करते हैं, तो उनका सुनने वाला कोई खुली दलील ले आए। क्या अल्लाह के लिए बेटियां हैं और तुम्हारे लिए बेटे। (35-39)

क्या तुम उनसे मुआवज़ा मांगते हो कि वे तावान (अधिभार) के बोझ से दबे जा रहे हैं। क्या उनके पास ग़ैब है कि वे लिख लेते हैं। क्या वे कोई तदबीर करना चाहते हैं, पस इंकार करने वाले ख़ुद ही उस तदबीर में गिरफ़्तार होंगे। क्या अल्लाह के सिवा उनका और कोई माबूद (पूज्य) है। अल्लाह पाक है उनके शरीक बनाने से। (40-43)

और अगर वे आसमान से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो वे कहेंगे कि यह तह-ब-तह बादल है। पस उन्हें छोड़ो, यहां तक कि वे अपने उस दिन से दो चार हों जिसमें उनके होश जाते रहेंगे। जिस दिन उनकी तदबीरें उनके कुछ काम न आएंगी और न उन्हें कोई मदद मिलेगी। और उन ज़ालिमों के लिए इसके सिवा भी अज़ाब है, लेकिन उनमें से अक्सर नहीं जानते। (44-47)

और तुम सब्र के साथ अपने रब के फ़ैसले का इंतज़ार करो। बेशक तुम हमारी निगाह में हो। और अपने रब की तस्बीह करो उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ, जिस वक़्त तुम उठते हो। और रात को भी उसकी तस्बीह करो, और सितारों के पीछे हटने के वक़्त भी। (48-49)

सूरह-53. अन-नज्म

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम है सितारे की जबकि वह ग़ुरूब (अस्त) हो। तुम्हारा साथी न भटका है और न गुमराह हुआ है। और वह अपने जी से नहीं बोलता। यह एक 'वही' (ईश्वरीय वाणी) है जो उस पर भेजी जाती है। उसे ज़बरदस्त क़ुव्वत वाले ने तालीम दी है, आक़िल (प्रबुद्ध) व दाना (विवेकशील) ने। फिर वह नमूदार हुआ और वह आसमान के ऊंचे किनारे पर था। फिर वह नज़दीक हुआ, पस वह उतर आया। फिर दो कमानों के बराबर या इससे भी कम फ़ासला रह गया। फिर अल्लाह ने 'वही' (प्रकाशना) की अपने बंदों की तरफ़ जो 'वही' की। झूठ नहीं कहा रसूल के दिल ने जो उसने देखा। अब क्या तुम उस चीज़ पर उससे झगड़ते हो जो उसने देखा है। और उसने एक बार और भी उसे सिदरतुल मुंतहा के पास उतरते देखा है। उसके पास ही बहिश्त है आराम से रहने की, जबकि सिदरह पर छा रहा था जो कुछ कि छा रहा था। निगाह बहकी नहीं और न हद से बढ़ी। उसने अपने रब की बड़ी-बड़ी निशानियां देखीं। (1-18)

भला तुमने लात और उज़्ज़ा पर ग़ौर किया है। और तीसरे एक और मनात पर। क्या तुम्हारे लिए बेटे हैं और ख़ुदा के लिए बेटियां। यह तो बहुत बेढंगी तक़्सीम हुई। ये महज़ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं अल्लाह ने इनके हक़ में कोई दलील नहीं उतारी। वे महज़ गुमान की पैरवी कर रहे हैं। और नफ़्स की ख़्वाहिश की। हालाँकि उनके पास उनके रब की जानिब से हिदायत आ चुकी है। क्या इंसान वह सब पा लेता है जो वह चाहे। पस अल्लाह के इख़्तियार में है आख़िरत और दुनिया। (19-25)

और आसमानों में कितने फ़रिश्ते हैं जिनकी सिफ़ारिश कुछ भी काम नहीं आ सकती। मगर बाद इसके कि अल्लाह इजाज़त दे जिसे वह चाहे और पसंद करे। बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, वे फ़रिश्तों को औरतों के नाम से पुकारते हैं। हालाँकि उनके पास इस पर कोई दलील नहीं। वे महज़

गुमान पर चल रहे हैं। और गुमान हक़ बात में ज़रा भी मुफ़ीद नहीं। पस तुम ऐसे शख़्स से एराज़ (उपेक्षा) करो जो हमारी नसीहत से मुंह मोड़े। और वह दुनिया की ज़िंदगी के सिवा और कुछ न चाहे। उनकी समझ बस यहीं तक पहुंची है। तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कि कौन उसके रास्ते से भटका हुआ है। और वह उसे भी ख़ूब जानता है जो राहेरास्त (सन्मार्ग) पर है। (26-30)

और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, ताकि वह बदला दे बुरा काम करने वालों को उनके किए का और बदला दे भलाई वालों को भलाई से। जो कि बड़े गुनाहों से और बेहयाई से बचते हैं मगर कुछ आलूदगी (छोटी बुराई)। बेशक तुम्हारे रब की बख़्शिश की बड़ी समाई है। वह तुम्हें ख़ूब जानता है जबकि उसने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया। और जब तुम अपनी मांओं के पेट में जनीन (भ्रूण) की शक्ल में थे। तो तुम अपने को मुक़द्दस (पवित्र) न समझो। वह तक़वा (ईश-भय) वालों को ख़ूब जानता है। (31-32)

भला तुमने उस शख़्स को देखा जिसने एराज़ (उपेक्षा) किया। थोड़ा सा दिया और रुक गया। क्या उसके पास ग़ैब का इल्म है। पस वह देख रहा है। क्या उसे ख़बर नहीं पहुंची उस बात की जो मूसा के सहीफ़ों (ग्रंथों) में है, और इब्राहीम के, जिसने अपना क़ौल पूरा कर दिया। कि कोई उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और यह कि इंसान के लिए वही है जो उसने कमाया। और यह कि उसकी कमाई अनक़रीब देखी जाएगी। फिर उसे पूरा बदला दिया जाएगा। और यह कि सबको तुम्हारे रब तक पहुंचना है। (33-42)

और बेशक वही हंसाता है और रुलाता है। और वही मारता है और जिलाता है। और उसी ने दोनों क़िस्म, नर और मादा को पैदा किया, एक बूंद से जबकि वह टपकाई जाए। और उसी के ज़िम्मे है दूसरी बार उठाना। और उसी ने दौलत दी और सरमायादार बनाया। और वही शिअरा (नाम के तारे) का रब है। (43-49)

और अल्लाह ही ने हलाक किया आदे अव्वल को और समूद को। फिर

किसी को बाक़ी न छोड़ा। और क़ौमे नूह को उससे पहले, बेशक वे निहायत ज़ालिम और सरकश थे। और उलटी हुई बस्तियों को भी फेंक दिया। पस उन्हें ढांक लिया जिस चीज़ ने ढांक लिया। पस तुम अपने रब के किन-किन करिश्मों को झुठलाओगे। (50-55)

यह एक डराने वाला है पहले डराने वालों की तरह। क़रीब आने वाली क़रीब आ गई। अल्लाह के सिवा कोई उसे हटाने वाला नहीं। क्या तुम्हें इस बात से तअज्जुब होता है। और तुम हंसते हो और तुम रोते नहीं। और तुम तकब्बुर (घमंड) करते हो। पस अल्लाह के लिए सज्दा करो और उसी की इबादत करो। (56-62)

सूरह-54. अल-क़मर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़ियामत क़रीब आ गई और चांद फट गया। और वे कोई भी निशानी देखें तो वे एराज़ (उपेक्षा) ही करेंगे। और कहेंगे कि यह तो जादू है जो पहले से चला आ रहा है। और उन्होंने झुठला दिया और अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी की और हर काम का वक़्त मुक़र्रर है। और उन्हें वे ख़बरें पहुंच चुकी हैं जिसमें काफ़ी इबरत (सीख) है। निहायत दर्जे की हिक्मत (तत्वदर्शिता) मगर तंबीहात (चेतावनियां) उन्हें फ़ायदा नहीं देतीं। पस उनसे एराज़ करो, जिस दिन पुकारने वाला एक नागवार चीज़ की तरफ़ पुकारेगा। आंखें झुकाए हुए क़ब्रों से निकल पड़ेंगे। गोया कि वे बिखरी हुई टिड्डियां हैं, भागते हुए पुकारने वाले की तरफ़, मुंकिर कहेंगे कि यह दिन बड़ा सख़्त है। (1-8)

उनसे पहले नूह की क़ौम ने झुठलाया, उन्होंने हमारे बंदे की तक्ज़ीब की (झुठलाया) और कहा कि दीवाना है और झिड़क दिया। पस उसने अपने रब को पुकारा कि मैं मग़लूब (दबाव-ग्रस्त) हूं, तू बदला ले। पस हमने आसमान के दरवाज़े मूसलाधार बारिश से खोल दिए। और ज़मीन से चशमे (स्रोत) बहा दिए। पस सब पानी एक काम पर मिल गया जो मुक़द्दर हो चुका था। और हमने उसे एक तख़्तों और कीलों वाली पर उठा लिया, वह हमारी आंखों के

सामने चलती रही। उस शख़्स का बदला लेने के लिए जिसकी नाक़द्री की गई थी। और उसे हमने निशानी के लिए छोड़ दिया। फिर कोई है सोचने वाला। फिर कैसा था मेरा अज़ाब और मेरा डराना। और हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (9-17)

आद ने झुठलाया तो कैसा था मेरा अज़ाब और मेरा डराना। हमने उन पर एक सख़्त हवा भेजी मुसलसल नहूसत के दिन में। वह लोगों को उखाड़ फेंकती थी जैसे कि वे उखड़े हुए खजूरों के तने हों। फिर कैसा था मेरा अज़ाब और मेरा डराना। और हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया, तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (18-22)

समूद ने डर सुनाने को झुठलाया। पस उन्होंने कहा क्या हम अपने ही अंदर के एक आदमी के कहे पर चलेंगे, इस सूरत में तो हम ग़लती और जुनून में पड़ जाएंगे। क्या हम सब में से उसी पर नसीहत उतरी है, बल्कि वह झूठा है, बड़ा बनने वाला। अब वे कल के दिन जान लेंगे कि कौन झूठा है और बड़ा बनने वाला। हम ऊंटनी को भेजने वाले हैं उनके लिए आज़माइश बनाकर, पस तुम उनका इंतज़ार करो। और सब्र करो। और उन्हें आगाह कर दो कि पानी उन में बांट दिया गया है, हर एक बारी पर हाज़िर हो। फिर उन्होंने अपने आदमी को पुकारा, पस उसने वार किया और ऊंटनी को काट डाला। फिर कैसा था मेरा अज़ाब और मेरा डराना। हमने उन पर एक चिंघाड़ भेजी, तो वे बाढ़ वाले की रौंदी हुई बाढ़ की तरह होकर रह गए। और हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया, तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (23-32)

लूत की क़ौम ने डर सुनाने वालों को झुठलाया। हमने उन पर पत्थर बरसाने वाली हवा भेजी, सिर्फ़ लूत के घर वाले उससे बचे, उन्हें हमने बचा लिया सहर (भोर) के वक़्त। अपनी जानिब से फ़ज़्ल करके। हम इसी तरह बदला देते हैं उसे जो शुक्र करे। और लूत ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया, फिर उन्होंने उस डराने में झगड़े पैदा किए। और वे उसके मेहमानों को उससे

लेने लगे। पस हमने उनकी आंखें मिटा दीं। अब चखो मेरा अज़ाब और मेरा डराना। और सुबह सवेरे उन पर अज़ाब आ पड़ा जो ठहर चुका था। अब चखो मेरा अज़ाब और मेरा डराना। और हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (33-40)

और फ़िरऔन वालों के पास पहुंचे डराने वाले। उन्होंने हमारी तमाम निशानियों को झुठलाया तो हमने उन्हें एक ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) और क़ुव्वत वाले के पकड़ने की तरह पकड़ा। (41-42)

क्या तुम्हारे मुंकिर उन लोगों से बेहतर हैं या तुम्हारे लिए आसमानी किताबों में माफ़ी लिख दी गई है। क्या वे कहते हैं कि हम ऐसी जमाअत हैं जो ग़ालिब रहेंगे। अनक़रीब यह जमाअत शिकस्त खाएगी और पीठ फेरकर भागेगी। बल्कि क़ियामत उनके वादे का वक़्त है और क़ियामत बड़ी सख़्त और बड़ी कड़वी चीज़ है। बेशक मुजरिम लोग गुमराही में और बेअक़्ली में हैं। जिस दिन वे मुंह के बल आग में घसीटे जाएंगे। चखो मज़ा आग का। (43-48)

हमने हर चीज़ को पैदा किया है अंदाज़े से। और हमारा हुक्म बस यकबारगी आ जाएगा जैसे आंख का झपकना। और हम हलाक कर चुके हैं तुम्हारे साथ वालों को, फिर क्या कोई है सोचने वाला। और जो कुछ उन्होंने किया सब किताबों में दर्ज है। और हर छोटी और बड़ी बात लिखी हुई है। बेशक डरने वाले बाग़ों में और नहरों में होंगे। बैठे सच्ची बैठक में, क़ुदरत वाले बादशाह के पास। (49-55)

सूरह-55. अर-रहमान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

रहमान ने, क़ुरआन की तालीम दी। उसने इंसान को पैदा किया। उसे बोलना सिखाया। सूरज और चांद के लिए एक हिसाब है। और सितारे और दरख़्त सज्दा करते हैं। और उसने आसमान को ऊंचा किया और उसने तराज़ू रख दी। कि तुम तोलने में ज़्यादती न करो। और इंसाफ़ के साथ सीधी तराज़ू तोलो और तोल में न घटाओ। (1-9)

और ज़मीन को उसने ख़ल्क़ (प्राणियों) के लिए रख दिया। उसमें मेवे हैं और खजूर हैं जिनके ऊपर ग़िलाफ़ होता है। और भुस वाले अनाज भी हैं और ख़ुशबूदार फूल भी। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उसने पैदा किया इंसान को ठीकरे की तरह खंखनाती मिट्टी से और उसने जिन्नात को आग की लपट से पैदा किया। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। वह मालिक है दोनों मश्रिक़ (पूर्व) का और दोनों मग़्रिब (पश्चिम) का। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उसने चलाए दो दरिया, मिलकर चलने वाले। दोनों के दर्मियान एक पर्दा है जिससे वे आगे नहीं बढ़ते। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उन दोनों से मोती और मूंगा निकलता है। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। और उसी के हैं जहाज़ समुद्र में ऊंचे खड़े हुए जैसे पहाड़, फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (10-25)

जो भी ज़मीन पर है वह फ़ना होने वाला है। और तेरे रब की ज़ात बाक़ी रहेगी, अज़्मत वाली और इज़्ज़त वाली। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उसी से मांगते हैं जो आसमानों और ज़मीन में हैं। हर रोज़ उसका एक काम है। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (26-30)

हम जल्द ही फ़ारिग़ होने वाले हैं तुम्हारी तरफ़ से, ऐ दो भारी क़ाफ़िलो। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। ऐ जिन्नों और इंसानों के गिरोह, अगर तुमसे हो सके कि तुम आसमानों और ज़मीन की हदों से निकल जाओ तो निकल जाओ, तुम नहीं निकल सकते बग़ैर सनद के। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। तुम पर छोड़े जाएंगे आग के शोले और धुवां तो तुम बचाव न कर सकोगे। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (31-36)

फिर जब आसमान फटकर खाल की मानिंद सुर्ख़ हो जाएगा। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। पस उस दिन किसी इंसान

या जिन्न से उसके गुनाह की बाबत पूछ न होगी। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। मुजरिम पहचान लिए जाएंगे अपनी अलामतों से, फिर पकड़ा जाएगा पेशानी के बाल से और पांव से। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। यह जहन्नम है जिसे मुजरिम लोग झूठ बताते थे। वे फिरेंगे उसके दर्मियान और खौलते पानी के दर्मियान। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (37-45)

और जो शख़्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डरे उसके लिए दो बाग़ हैं। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। दोनों बहुत शाख़ों वाले। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनके अंदर दो चशमे (स्रोत) जारी होंगे। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। दोनों बाग़ों में हर फल की दो क़िस्में। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। वे तकिया लगाए ऐसे बिछौनों पर बैठे होंगे जिनके अस्तर दबीज़ (गाढ़े) रेशम के होंगे। और फल उन बाग़ों का झुक रहा होगा। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें नीची निगाह वाली औरतें होंगी। जिन्हें उन लोगों से पहले न किसी इंसान ने छुवा होगा न किसी जिन्न ने। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। वे ऐसी होंगी जैसे कि याक़ूत (लालमणि) और मरजान (मूंगा)। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। नेकी का बदला नेकी के सिवा और क्या है। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (46-61)

और उनके सिवा दो बाग़ और हैं। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। दोनों गहरे सब्ज़ स्याही मायल। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें दो चशमे (स्रोत) होंगे उबलते हुए। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें फल और खजूर और अनार होंगे। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें ख़ूबसीरत (सुशील), ख़ूबसूरत औरतें होंगी। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। हूरें ख़ेमों में रहने वालियां।

फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनसे पहले उन्हें न किसी इंसान ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। तकिया लगाए सब्ज़ मस्नदों (हरित आसनों) पर और क़ीमती नफ़ीस बिछौने पर। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। बड़ा बाबरकत है तेरे रब का नाम बड़ाई वाला और अज़्मत वाला। (62-78)

सूरह-56. अल-वाक़िअह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब वाक़ेअ (घटित) होने वाली वाक़ेअ हो जाएगी। उसके वाक़ेअ होने में कुछ झूठ नहीं। वह पस्त करने वाली, बुलन्द करने वाली होगी। जबकि ज़मीन हिला डाली जाएगी। और पहाड़ टूट कर रेज़ा-रेज़ा हो जाएंगे। फिर वे परागंदा ग़ुबार (मलिन धुंध) बन जाएंगे। और तुम लोग तीन क़िस्म के हो जाओगे। (1-7)

फिर दाएं वाले, पस क्या ख़ूब हैं दाएं वाले। और बाएं वाले कैसे बुरे लोग हैं बाएं वाले। और आगे वाले तो आगे ही वाले हैं। वे मुक़र्रब लोग हैं। नेमत के बाग़ों में। उनकी बड़ी तादाद अगलों में से होगी। और थोड़े पिछलों में से होंगे। जड़ाऊ तख़्तों पर। तकिया लगाए आमने सामने बैठे होंगे। फिर रहे होंगे उनके पास लड़के हमेशा रहने वाले। आबख़ोरे और कूज़े लिए हुए और प्याला साफ़ शराब का। उससे न सर दर्द होगा और न अक़्ल में फ़ुतूर आएगा। और मेवे कि जो चाहें चुन लें। और परिंदों का गोश्त जो उन्हें मरग़ूब (पसंद) हो। और बड़ी आंखों वाली हूरें। जैसे मोती के दाने अपने ग़िलाफ़ के अंदर। बदला उन कामों का जो वे करते थे। उसमें वे कोई लग़्व (घटिया, निरर्थक) और गुनाह की बात नहीं सुनेंगे। मगर सिर्फ़ सलाम-सलाम का बोल। (8-26)

और दाहिने वाले, क्या ख़ूब हैं दाहिने वाले। बेरी के दरख़्तों में जिनमें कांटा नहीं। और केले तह-ब-तह। और फैले हुए साये। और बहता हुआ

पानी। और कसरत (बहुलता) से मेवे। जो न ख़त्म होंगे और न कोई रोकटोक होगी। और ऊंचे बिछौने। हमने उन औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है। फिर उन्हें कुंवारी रखा है। दिलरुबा और हमउम्र। दाहिने वालों के लिए। अगलों में से एक बड़ा गिरोह होगा और पिछलों में से भी एक बड़ा गिरोह। (27-40)

और बाएं वाले, कैसे बुरे हैं बाएं वाले। आग में और खौलते हुए पानी में। और स्याह धुवें के साये में। न ठंडा और न इज़्ज़त का। ये लोग इससे पहले ख़ुशहाल थे। और भारी गुनाह पर इसरार करते रहे। और वे कहते थे, क्या जब हम मर जाएंगे। और हम मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हम फिर उठाए जाएंगे। और क्या हमारे अगले बाप दादा भी। कहो कि अगले और पिछले सब, जमा किए जाएंगे। एक मुक़र्रर दिन के वक़्त पर। फिर तुम लोग, ऐ बहके हुए और झुठलाने वाले। ज़क़्क़ूम के दरख़्त में से खाओगे। फिर उससे अपना पेट भरोगे। फिर उस पर खौलता हुआ पानी पियोगे। फिर प्यासे ऊंटों की तरह पियोगे। यह उनकी मेहमानी होगी इंसाफ़ के दिन। (41-56)

हमने तुम्हें पैदा किया है। फिर तुम तस्दीक़ (पुष्टि) क्यों नहीं करते। क्या तुमने ग़ौर किया उस चीज़ पर जो तुम टपकाते हो। क्या तुम उसे बनाते हो या हम हैं बनाने वाले। हमने तुम्हारे दर्मियान मौत मुक़द्दर की है और हम इससे आजिज़ नहीं कि तुम्हारी जगह तुम्हारे जैसे पैदा कर दें और तुम्हें ऐसी सूरत में बना दें जिन्हें तुम जानते नहीं। और तुम पहली पैदाइश को जानते हो फिर क्यों सबक़ नहीं लेते। क्या तुमने ग़ौर किया उस चीज़ पर जो तुम बोते हो। क्या तुम उसे उगाते हो या हम हैं उगाने वाले। अगर हम चाहें तो उसे रेज़ा-रेज़ा कर दें, फिर तुम बातें बनाते रह जाओ। हम तो तावान (दंड) में पड़ गए। बल्कि हम बिल्कुल महरूम हो गए। क्या तुमने ग़ौर किया उस पानी पर जो तुम पीते हो। क्या तुमने उसे बादल से उतारा है। या हम हैं उतारने वाले। अगर हम चाहें तो उसे सख़्त खारी बना दें। फिर तुम शुक्र क्यों नहीं करते। क्या तुमने ग़ौर किया उस आग पर जिसे तुम जलाते हो। क्या तुमने पैदा किया है उसके दरख़्त को या हम हैं उसके पैदा करने वाले। हमने

उसे याददिहानी बनाया है। और मुसाफ़िरों के लिए फ़ायदे की चीज़। पस तुम अपने अज़ीम (महान) रब के नाम की तस्बीह करो। (57-74)

पस नहीं, मैं क़सम खाता हूं सितारों के मवाक़ेअ (स्थितियों) की। और अगर तुम ग़ौर करो तो यह बहुत बड़ी क़सम है। बेशक यह एक इज़्ज़त वाला क़ुरआन है। एक महफ़ूज़ किताब में। इसे वही छूते हैं जो पाक बनाए गए हैं। उतारा हुआ है परवरदिगारे आलम की तरफ़ से। फिर क्या तुम इस कलाम के साथ बेएतनाई (बेपरवाही) बरतते हो। और तुम अपना हिस्सा यही लेते हो कि तुम उसे झुठलाते हो। (75-82)

फिर क्यों नहीं, जबकि जान हलक़ में पहुंचती है। और तुम उस वक़्त देख रहे होते हो। और हम तुमसे ज़्यादा उस शख़्स से क़रीब होते हैं मगर तुम नहीं देखते। फिर क्यों नहीं, अगर तुम महकूम (अधीन) नहीं हो तो तुम उस जान को क्यों नहीं लौटा लाते, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर वह मुक़र्रबीन (निकटवर्तियों) में से हो तो राहत है और उम्दा रोज़ी है और नेमत का बाग़ है। और अगर वह असहाबुलयमीन (दाईं तरफ़ वाले) में से हो तो तुम्हारे लिए सलामती, तू असहाबुलयमीन में से है। और अगर वह झुठलाने वाले गुमराह लोगों में से हो। तो गर्म पानी की ज़ियाफ़त (सत्कार) है, जहन्नम में दाख़िल होना। बेशक यह क़तई हक़ है। पस तुम अपने अज़ीम रब के नाम की तस्बीह करो। (83-96)

सूरह-57. अल-हदीद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की तस्बीह करती है हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है और वह ज़बरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। आसमानों और ज़मीन की सल्तनत उसी की है। वह जिलाता है और मारता है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। वही अव्वल भी है और आख़िर भी और ज़ाहिर (व्यक्त) भी है और बातिन (अव्यक्त) भी। और वह हर चीज़ का जानने वाला है। वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया छः दिनों में, फिर वह अर्श

पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ। वह जानता है जो कुछ ज़मीन के अंदर जाता है और जो उससे निकलता है और जो कुछ आसमान से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है, और वह तुम्हारे साथ है जहां भी तुम हो, और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो। आसमानों और ज़मीन की सल्तनत उसी की है, और अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं सारे मामले। वह रात को दिन में दाख़िल करता हे और दिन को रात में दाख़िल करता है, और वह दिल की बातों को जानता है। (1-6)

ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर और ख़र्च करो उसमें से जिसमें उसने तुम्हें अमीन (साधिकार) बनाया है। पस जो लोग तुम में से ईमान लाएं और ख़र्च करें उनके लिए बड़ा अज्र है। और तुम्हें क्या हुआ कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, हालाँकि रसूल तुम्हें बुला रहा है कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ और वह तुमसे अहद (वचन) ले चुका है, अगर तुम मोमिन हो। वही है जो अपने बंदे पर वाज़ेह आयतें उतारता है ताकि तुम्हें तारीकियों से रोशनी की तरफ़ ले आए और अल्लाह तुम्हारे ऊपर नर्मी करने वाला है, महरबान है। और तुम्हें क्या हुआ कि तुम अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करते हालाँकि सब आसमान और ज़मीन आख़िर में अल्लाह ही का रह जाएगा। तुम में से जो लोग फ़तह के बाद ख़र्च करें और लड़ें वे उन लोगों के बराबर नहीं हो सकते जिन्होंने फ़तह से पहले ख़र्च किया और लड़े, और अल्लाह ने सबसे भलाई का वादा किया है, अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (7-10)

कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे, अच्छा क़र्ज़, कि वह उसे उसके लिए बढ़ाए, और उसके लिए बाइज़्ज़त अज्र है। जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखोगे कि उनकी रोशनी उनके आगे और उनके दाएं चल रही होगी। आज के दिन तुम्हें ख़ुशख़बरी है बाग़ों की जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, यह बड़ी कामयाबी है। जिस दिन मुनाफ़िक़ (पाखंडी) मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें ईमान वालों से कहेंगे कि हमें मौक़ा दो कि हम भी तुम्हारी रोशनी से कुछ फ़ायदा उठा लें। कहा जाएगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ।

फिर रोशनी तलाश करो। फिर उनके दर्मियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा होगा। उसके अंदर की तरफ़ रहमत होगी। और उसके बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा। वे उन्हें पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे। वे कहेंगे कि हां, मगर तुमने अपने आपको फ़ितने में डाला और राह देखते रहे और शक में पड़े रहे और झूठी उम्मीदों ने तुम्हें धोखे में रखा, यहां तक कि अल्लाह का फ़ैसला आ गया और धोखेबाज़ ने तुम्हें अल्लाह के मामले में धोखा दिया। पस आज न तुमसे कोई फ़िदया (मुक्ति-मुआवज़ा) क़ुबूल किया जाएगा और न उन लोगों से जिन्होंने कुफ़्र किया। तुम्हारा ठिकाना आग है। वही तुम्हारी रफ़ीक़ (साथी) है। और वह बुरा ठिकाना है। (11-15)

क्या ईमान वालों के लिए वह वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की नसीहत के आगे झुक जाएं। और उस हक़ के आगे जो नाज़िल हो चुका है। और वे उन लोगों की तरह न हो जाएं जिन्हें पहले किताब दी गई थी, फिर उन पर लम्बी मुद्दत गुज़र गई तो उनके दिल सख़्त हो गए। और उनमें से अक्सर नाफ़रमान हैं। जान लो कि अल्लाह ज़मीन को ज़िंदगी देता है उसकी मौत के बाद, हमने तुम्हारे लिए निशानियां बयान कर दी हैं, ताकि तुम समझो। (16-17)

बेशक सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें। और वे लोग जिन्होंने अल्लाह को क़र्ज़ दिया, अच्छा क़र्ज़, वह उनके लिए बढ़ाया जाएगा और उनके लिए बाइज़्ज़त अज्र (प्रतिफल) है। और जो लोग ईमान लाए अल्लाह पर और उसके रसूलों पर। वही लोग अपने रब के नज़दीक सिद्दीक़ (सच्चे) और शहीद (सत्य के साक्षी) हैं, उनके लिए उनका अज्र (प्रतिफल) और उनकी रोशनी है, और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वे दोज़ख़ के लोग हैं। (18-19)

जान लो कि दुनिया की ज़िंदगी इसके सिवा कुछ नहीं कि खेल और तमाशा है और ज़ीनत (साज-सज्जा) और बाहमी (आपसी) फ़ख़्र और माल और औलाद में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करना है। जैसे कि बारिश की उसकी पैदावार किसानों को अच्छी मालूम होती है। फिर वह ख़ुश्क हो

जाती है। फिर तू उसे ज़र्द देखता है, फिर वह रेज़ा-रेज़ा हो जाती है। और आख़िरत में सख़्त अज़ाब है और अल्लाह की तरफ़ से माफ़ी और रिज़ामंदी भी। और दुनिया की ज़िंदगी धोखे की पूंजी के सिवा और कुछ नहीं। दौड़ो अपने रब की माफ़ी की तरफ़ और ऐसी जन्नत की तरफ़ जिसकी वुस्अत (व्यापकता) आसमान और ज़मीन की वुस्अत के बराबर है। वह उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाएं, यह अल्लाह का फ़ज़्ल (अनुग्रह) है। वह उसे देता है जिसे वह चाहता है और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है। (20-21)

कोई मुसीबत न ज़मीन में आती है और न तुम्हारी जानों में मगर वह एक किताब में लिखी हुई है इससे पहले कि हम उन्हें पैदा करें, बेशक यह अल्लाह के लिए आसान है ताकि तुम ग़म न करो उस पर जो तुमसे खोया गया। और न उस चीज़ पर फ़ख़्र करो जो उसने तुम्हें दिया, और अल्लाह इतराने वाले फ़ख़्र करने वाले को पसंद नहीं करता जो कि बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं और दूसरों को भी बुख़्ल की तालीम देते हैं। और जो शख़्स एराज़ (उपेक्षा) करेगा। तो अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है ख़ूबियों वाला है। (22-24)

हमने अपने रसूलों को निशानियों के साथ भेजा और उनके साथ उतारा किताब और तराज़ू, ताकि लोग इंसाफ़ पर क़ायम हों। और हमने लोहा उतारा जिसमें बड़ी क़ुव्वत (शक्ति) है और लोगों के लिए फ़ायदे हैं और ताकि अल्लाह जान ले कि कौन उसकी और उसके रसूलों की मदद करता है बिना देखे, बेशक अल्लाह ताक़त वाला, ज़बरदस्त है। (25)

और हमने नूह को और इब्राहीम को भेजा। और उनकी औलाद में हमने पैग़म्बरी और किताब रख दी। फिर उनमें से कोई राह पर है और उनमें से बहुत से नाफ़रमान हैं। फिर उन्हीं के नक़्शेक़दम पर हमने अपने रसूल भेजे और उन्हीं के नक़्शेक़दम पर ईसा बिन मरयम को भेजा और हमने उसे इंजील दी। और जिन लोगों ने उसकी पैरवी की हमने उनके दिलों में शफ़क़त (करुणा) और रहमत (दया) रख दी। और रहबानियत (सन्यास) को उन्होंने ख़ुद

ईजाद किया है। हमने उसे उन पर नहीं लिखा था। मगर उन्होंने अल्लाह की रिज़ामंदी के लिए उसे इख़्तियार कर लिया, फिर उन्होंने उसकी पूरी रिआयत (निर्वाह) न की, पस उनमें से जो लोग ईमान लाए उन्हें हमने उनका अज्र (प्रतिफल) दिया, और उनमें से अक्सर नाफ़रमान हैं। (26-27)

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और उसके रसूल पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हें अपनी रहमत से दो हिस्से अता करेगा। और तुम्हें रोशनी अता करेगा जिसे लेकर तुम चलोगे। और तुम्हें बख़्श देगा। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। ताकि अहले किताब जान लें कि वे अल्लाह के फ़ज़्ल (अनुग्रह) में से किसी चीज़ पर इख़्तियार नहीं रखते और यह कि फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है। वह जिसे चाहता है अता फ़रमाता है। और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (28-29)

सूरह-58. अल-मुजादलह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह ने सुन ली उस औरत की बात जो अपने शौहर के मामले में तुमसे झगड़ती थी और अल्लाह से शिकायत कर रही थी, और अल्लाह तुम दोनों की गुफ़्तगू सुन रहा था, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (1)

तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार (तलाक़ देने की एक सूरत जिसमें शौहर अपनी बीवी से कहता है कि तुम मेरी माँ की पीठ की तरह हो) करते हैं वे उनकी माएं नहीं हैं। उनकी माएं तो वही हैं जिन्होंने उन्हें जना। और ये लोग बेशक एक नामाक़ूल और झूठ बात कहते हैं, और अल्लाह माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है। और जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करें फिर उससे रुजूअ करें जो उन्होंने कहा था तो एक गर्दन को आज़ाद करना (ग़ुलाम आज़ाद करना) है, इससे पहले कि वे आपस में हाथ लगाएं। इससे तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। फिर जो शख़्स न पाए तो रोज़े हैं दो महीने के लगातार, इससे पहले कि आपस में हाथ लगाएं। फिर जो शख़्स न कर सके तो साठ मिस्कीनों को खाना खिलाना

है। यह इसलिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ। और ये अल्लाह की हदें हैं और मुंकिरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (2-4)

जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करते हैं वे ज़लील होंगे जिस तरह वे लोग ज़लील हुए जो इनसे पहले थे और हमने वाज़ेह (स्पष्ट) आयतें उतार दी हैं, और मुंकिरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा और उनके किए हुए काम उन्हें बताएगा। अल्लाह ने उसे गिन रखा है। और वे लोग उसे भूल गए, और अल्लाह के सामने है हर चीज़। (5-6)

तुमने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। कोई सरगोशी (गुप्त वार्ता) तीन आदमियों की नहीं होती जिसमें चौथा अल्लाह न हो। और न पांच की होती है जिसमें छठा वह न हो। और न इससे कम की या ज़्यादा की। मगर वह उनके साथ होता है जहां भी वे हों, फिर वह उन्हें उनके किए से आगाह करेगा क़ियामत के दिन। बेशक अल्लाह हर बात का इल्म रखने वाला है। क्या तुमने नहीं देखा जिन्हें सरगोशियों से रोका गया था, फिर भी वे वही कर रहे हैं जिससे वे रोके गए थे। और वे गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की सरगोशियां करते हैं, और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो तुम्हें ऐसे तरीक़े से सलाम करते हैं जिससे अल्लाह ने तुम्हें सलाम नहीं किया। और अपने दिलों में कहते हैं कि हमारी इन बातों पर अल्लाह हमें अज़ाब क्यों नहीं देता। उनके लिए जहन्नम ही काफ़ी है, वे उसमें पड़ेंगे, पस वह बुरा ठिकाना है। (7-8)

ऐ ईमान वालो जब तुम सरगोशी (गुप्त वार्ता) करो तो गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की सरगोशी न करो। और तुम नेकी और परहेज़गारी की सरगोशी करो। और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम जमा किए जाओगे। यह सरगोशी शैतान की तरफ़ से है ताकि वह ईमान वालों को रंज पहुंचाए, और वह उन्हें कुछ भी रंज नहीं पहुंचा सकता मगर अल्लाह के हुक्म से। और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (9-10)

ऐ ईमान वालो जब तुम्हें कहा जाए कि मज्लिसों में खुलकर बैठो तो तुम खुलकर बैठो, अल्लाह तुम्हें कुशादगी (खुलापन) देगा। और जब कहा जाए कि उठ जाओ तो तुम उठ जाओ। तुम में से जो लोग ईमान वाले हैं और जिन्हें इल्म दिया गया है, अल्लाह उनके दर्जे बुलन्द करेगा। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (11)

ऐ ईमान वालो, जब तुम रसूल से राज़दाराना बात करो तो अपनी राज़दाराना बात से पहले कुछ सदक़ा दो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है और ज़्यादा पाकीज़ा है। फिर अगर तुम न पाओ तो अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। क्या तुम डर गए इस बात से कि तुम अपनी राज़दाराना गुफ़्तगू से पहले सदक़ा दो। पस अगर तुम ऐसा न करो, और अल्लाह ने तुम्हें माफ़ कर दिया, तो तुम नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (12-13)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो ऐसे लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ। वे न तुम में से हैं और न उनमें से हैं और वे झूठी बात पर क़सम खाते हैं हालाँकि वे जानते हैं। अल्लाह ने उन लोगों के लिए सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है, बेशक वे बुरे काम हैं जो वे करते हैं। उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है, फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, पस उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। (14-16)

उनके माल और उनकी औलाद उन्हें ज़रा भी अल्लाह से बचा न सकेंगे। ये लोग दोज़ख़ वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा तो वे उससे भी इसी तरह क़सम खाएंगे जिस तरह तुमसे क़सम खाते हैं। और वे समझते हैं कि वे किसी चीज़ पर हैं, सुन लो कि यही लोग झूठे हैं। शैतान ने उन पर क़ाबू हासिल कर लिया है। फिर उसने उन्हें ख़ुदा की याद भुला दी है। ये लोग शैतान का गिरोह हैं। सुन लो कि शैतान का गिरोह ज़रूर बर्बाद होने वाला है। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त (विरोध) करते हैं वही ज़लील लोगों में हैं। अल्लाह ने लिख

दिया है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब रहेंगे। बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला, ज़बरदस्त है। (17-21)

तुम ऐसी क़ौम नहीं पा सकते जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो और वह ऐसे लोगों से दोस्ती रखे जो अल्लाह और उसके रसूल के मुख़ालिफ़ हैं। अगरचे वे उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनके ख़ानदान वाले क्यों न हों। यही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान लिख दिया है और उन्हें अपने फ़ैज़ से क़ुव्वत दी है। और वह उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनके राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए। यही लोग अल्लाह का गिरोह हैं और अल्लाह का गिरोह ही फ़लाह (कल्याण, सफलता) पाने वाला है। (22)

सूरह-59. अल-हश्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की पाकी बयान करती हैं सब चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं, और वह ज़बरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। वही है जिसने अहले किताब मुंकिरों को उनके घरों से पहली ही बार इकट्ठा करके निकाल दिया। तुम्हारा गुमान न था कि वे निकलेंगे और वे ख़्याल करते थे कि उनके क़िले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे, फिर अल्लाह उन पर वहां से पहुंचा जहां से उन्हें ख़्याल भी न था। और उनके दिलों में रौब डाल दिया, वे अपने घरों को ख़ुद अपने हाथों से उजाड़ रहे थे और मुसलमानों के हाथों से भी। पस ऐ आंख वालो, इबरत (सीख) हासिल करो। (1-2)

और अगर अल्लाह ने उन पर जलावतनी (देश निकाला) न लिख दी होती तो वह दुनिया ही में उन्हें अज़ाब देता, और आख़िरत में उनके लिए आग का अज़ाब है। यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त की। और जो शख़्स अल्लाह की मुख़ालिफ़त करता है तो अल्लाह सख़्त अज़ाब वाला है। खजूरों के जो दरख़्त तुमने काट डाले या उन्हें उनकी जड़ों

पर खड़ा रहने दिया तो यह अल्लाह के हुक्म से, और ताकि वह नाफ़रमानों को रुसवा करे। (3-5)

और अल्लाह ने उनसे जो कुछ अपने रसूल की तरफ़ लौटाया तो तुमने उस पर न घोड़े दौड़ाए और न ऊंट और लेकिन अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है तसल्लुत (प्रभुत्व) दे देता है। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। जो कुछ अल्लाह अपने रसूल को बस्तियों वालों की तरफ़ से लौटाए तो वह अल्लाह के लिए है और रसूल के लिए है और रिश्तेदारों और यतीमों (अनाथों) और मिस्कीनों (असहाय जनों) और मुसाफ़िरों के लिए है। ताकि वह तुम्हारे मालदारों ही के दर्मियान गर्दिश न करता रहे। और रसूल तुम्हें जो कुछ दे वह ले लो और वह जिस चीज़ से तुम्हें रोके उससे रुक जाओ और अल्लाह से डरो, अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है। उन मुफ़्लिस मुहाजिरों के लिए जो अपने घरों और अपने मालों से निकाले गए हैं। वे अल्लाह का फ़ज़्ल और रिज़ामंदी चाहते हैं। और वे अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं, यही लोग सच्चे हैं। (6-8)

और जो लोग पहले से दार (मदीना) में क़रार पकड़े हुए हैं और ईमान पर जमे किए हुए हैं, जो उनके पास हिजरत करके आता है उससे वे मुहब्बत करते हैं और वे अपने दिलों में उससे तंगी नहीं पाते जो मुहाजिरीन को दिया जाता है। और वे उन्हें अपने ऊपर मुक़द्दम (प्राथमिक) रखते हैं। अगरचे उनके ऊपर फ़ाक़ा हो। और जो शख़्स अपने जी के लालच से बचा लिया गया तो वही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। और जो उनके बाद आए वे कहते हैं कि ऐ हमारे रब, हमें बख़्श दे और हमारे उन भाइयों को जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं। और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कीना (द्वेष) न रख, ऐ हमारे रब, तू बड़ा शफ़ीक़ (करुणामय) और महरबान है। (9-10)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो निफ़ाक़ (पाखंड) में मुब्तिला हैं। वे अपने भाइयों से कहते हैं जिन्होंने अहले किताब में से कुफ़्र किया है, अगर तुम निकाले गए तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जाएंगे। और तुम्हारे

मामले में हम किसी की बात न मानेंगे। और अगर तुमसे लड़ाई हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे। और अल्लाह गवाही देता है कि वे झूठे हैं। अगर वे निकाले गए तो ये उनके साथ नहीं निकलेंगे। और अगर उनसे लड़ाई हुई तो ये उनकी मदद नहीं करेंगे। और अगर उनकी मदद करेंगे तो ज़रूर वे पीठ फेरकर भागेंगे, फिर वे कहीं मदद न पाएंगे। (11-12)

बेशक तुम लोगों का डर उनके दिलों में अल्लाह से ज़्यादा है, यह इसलिए कि वे लोग समझ नहीं रखते। ये लोग सब मिलकर तुमसे कभी नहीं लड़ेंगे। मगर हिफ़ाज़त वाली बस्तियों में या दीवारों की आड़ में। उनकी लड़ाई आपस में सख़्त है। तुम उन्हें मुत्तहिद (एकजुट) ख़्याल करते हो और उनके दिल जुदा-जुदा हो रहे हैं, यह इसलिए कि वे लोग अक़्ल नहीं रखते। (13-14)

ये उन लोगों की मानिंद हैं जो उनके कुछ ही पहले अपने किए का मज़ा चख चुके हैं, और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। जैसे शैतान जो इंसान से कहता है कि मुंकिर हो जा, फिर जब वह मुंकिर हो जाता है तो वह कहता है कि मैं तुमसे बरी हूं। मैं अल्लाह से डरता हूं जो सारे जहान का रब है। फिर अंजाम दोनों का यह हुआ कि दोनों दोज़ख़ में गए जहां वे हमेशा रहेंगे, और ज़ालिमों की सज़ा यही है। (15-17)

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो, और हर शख़्स देखे कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बाख़बर है जो तुम करते हो। और तुम उन लोगों की तरह न बन जाओ जो अल्लाह को भूल गए तो अल्लाह ने उन्हें ख़ुद उनकी जानों से ग़ाफ़िल कर दिया, यही लोग नाफ़रमान हैं। दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं हो सकते। जन्नत वाले ही अस्ल में कामयाब हैं। (18-20)

अगर हम इस क़ुरआन को पहाड़ पर उतारते तो तुम देखते कि वह ख़ुदा के ख़ौफ़ से दब जाता और फट जाता, और ये मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वे सोचें। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, पोशीदा और ज़ाहिर को जानने वाला, वह बड़ा महरबान है। निहायत रहम वाला है। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। बादशाह,

सब ऐबों से पाक, सरासर सलामती, अम्न देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, ज़ोरआवर, अज़्मत वाला, अल्लाह उस शिर्क से पाक है जो लोग कर रहे हैं। वही अल्लाह है पैदा करने वाला, वुजूद में लाने वाला, सूरतगरी (संरचना) करने वाला, उसी के लिए हैं सारे अच्छे नाम। हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है उसकी तस्बीह कर रही है, और वह ज़बरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (21-24)

सूरह-60. अल-मुमतहिनह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ ईमान वालो, तुम मेरे दुश्मनों और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उनसे दोस्ती का इज़्हार करते हो हालाँकि उन्होंने उस हक़ (सत्य) का इंकार किया जो तुम्हारे पास आया, वे रसूल को और तुम्हें इस वजह से जलावतन (निर्वाहित) करते हैं कि तुम अपने रब, अल्लाह पर ईमान लाए। अगर तुम मेरी राह में जिहाद और मेरी रिज़ामंदी की तलब के लिए निकले हो, तुम छुपाकर उन्हें दोस्ती का पैग़ाम भेजते हो। और मैं जानता हूं जो कुछ तुम छुपाते हो। और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो। और जो शख़्स तुम में से ऐसा करेगा वह राहेरास्त से भटक गया। अगर वे तुम पर क़ाबू पा जाएं तो वे तुम्हारे दुश्मन बन जाएंगे। और अपने हाथ और अपनी ज़बान से तुम्हें आज़ार (पीड़ा) पहुंचाएंगे। और चाहेंगे कि तुम भी किसी तरह मुंकिर हो जाओ। तुम्हारे रिश्तेदार और तुम्हारी औलाद क़ियामत के दिन तुम्हारे काम न आएंगे, वह तुम्हारे दर्मियान फ़ैसला करेगा, और अल्लाह देखने वाला है जो कुछ तुम करते हो। (1-3)

तुम्हारे लिए इब्राहीम और उसके साथियों में अच्छा नमूना है, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि हम अलग हैं तुमसे और उन चीज़ों से जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो, हम तुम्हारे मुंकिर हैं और हमारे और तुम्हारे दर्मियान हमेशा के लिए अदावत (बैर) और बेज़ारी (दुराव) ज़ाहिर हो गई यहां तक कि तुम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाओ। मगर इब्राहीम का

अपने बाप से यह कहना कि मैं आपके लिए माफ़ी मांगूंगा, और मैं आपके लिए अल्लाह के आगे किसी बात का इख़्तियार नहीं रखता। ऐ हमारे रब, हमने तेरे ऊपर भरोसा किया और हम तेरी तरफ़ रुजूअ हुए और तेरी ही तरफ़ लौटना है। ऐ हमारे रब, हमें मुंकिरों के लिए फ़ितना न बना, और ऐ हमारे रब, हमें बख़्श दे, बेशक तू ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है। बेशक तुम्हारे लिए उनके अंदर अच्छा नमूना है, उस शख़्स के लिए जो अल्लाह का और आख़िरत के दिन का उम्मीदवार हो। और जो शख़्स रूगर्दानी (अवहेलना) करेगा तो अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है, तारीफ़ों वाला है। उम्मीद है कि अल्लाह तुम्हारे और उन लोगों के दर्मियान दोस्ती पैदा कर दे जिनसे तुमने दुश्मनी की। और अल्लाह सब कुछ कर सकता है, और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (4-7)

अल्लाह तुम्हें उन लोगों से नहीं रोकता जिन्होंने दीन के मामले में तुमसे जंग नहीं की। और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला कि तुम उनसे भलाई करो और तुम उनके साथ इंसाफ़ करो। बेशक अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को पसंद करता है। अल्लाह बस उन लोगों से तुम्हें मना करता है जो दीन के मामले में तुमसे लड़े और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला। और तुम्हारे निकालने में मदद की कि तुम उनसे दोस्ती करो, और जो उनसे दोस्ती करे तो वही लोग ज़ालिम हैं। (8-9)

ऐ ईमान वालो, जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें हिजरत (स्थान-परिवर्तन) करके आएं तो तुम उन्हें जांच लो, अल्लाह उनके ईमान को ख़ूब जानता है। पस अगर तुम जान लो कि वे मोमिन हैं तो उन्हें मुंकिरों की तरफ़ न लौटाओ। न वे औरतें उनके लिए हलाल हैं और न वे उन औरतों के लिए हलाल हैं। और मुंकिर शोहरों ने जो कुछ ख़र्च किया वह उन्हें अदा कर दो। और तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम उनसे निकाह कर लो जबकि तुम उनके महर उन्हें अदा कर दो। और तुम मुंकिर औरतों को अपने निकाह में न रोके रहो। और जो कुछ तुमने ख़र्च किया है उसे मांग लो। और जो कुछ मुंकिरों ने ख़र्च किया वे भी तुमसे मांग लें। यह अल्लाह का हुक्म है, वह तुम्हारे दर्मियान

फ़ैसला करता है, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। और अगर तुम्हारी बीवियों के महर में से कुछ मुंकिरों की तरफ़ रह जाए, फिर तुम्हारी नौबत आए तो जिनकी बीवियां गई हैं उन्हें अदा कर दो जो कुछ उन्होंने ख़र्च किया। और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाए हो। (10-11)

ऐ नबी जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें इस बात पर बैअत (प्रतिज्ञा) के लिए आएं कि वे अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न करेंगी। और वे चोरी न करेंगी। और वे बदकारी न करेंगी। और वे अपनी औलाद को क़त्ल न करेंगी। और वे अपने हाथ और पांव के आगे कोई बोहतान गढ़कर न लाएंगी। और वे किसी मारूफ़ (सत्कर्म) में तुम्हारी नाफ़रमानी न करेंगी तो उनसे बैअत ले लो और उनके लिए अल्लाह से बख़्शिश की दुआ करो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (12)

ऐ ईमान वालो तुम उन लोगों को दोस्त न बनाओ जिनके ऊपर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, वे आख़िरत से नाउम्मीद हो गए हैं जिस तरह क़ब्रों में पड़े हुए मुंकिर नाउम्मीद हैं। (13)

सूरह-61. अस-सफ़्फ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की तस्बीह करती है हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है। और वह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हकीम (तत्वदर्शी) है। ऐ ईमान वालो, तुम ऐसी बात क्यों कहते हो जो तुम करते नहीं। अल्लाह के नज़दीक यह बात बहुत नाराज़ी की है कि तुम ऐसी बात कहो जो तुम करो नहीं। अल्लाह तो उन लोगों को पसंद करता है जो उसके रास्ते में इस तरह मिलकर लड़ते हैं गोया वे एक सीसा पिलाई हुई दीवार हैं। (1-4)

और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम, तुम लोग क्यों मुझे सताते हो, हालाँकि तुम्हें मालूम है कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं। पस जब वे फिर गए तो अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया। और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (5)

और जब ईसा बिन मरयम ने कहा कि ऐ बनी इस्राईल मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं, तस्दीक़ (पुष्टि) करने वाला हूं उस तौरात की जो मुझसे पहले से मौजूद है, और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद होगा। फिर जब वह उनके पास खुली निशानियां लेकर आया तो उन्होंने कहा, यह तो खुला हुआ जादू है। और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे हालाँकि वह इस्लाम की तरफ़ बुलाया जा रहा हो, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। वे चाहते हैं कि अल्लाह की रोशनी को अपने मुंह से बुझा दें, हालाँकि अल्लाह अपनी रोशनी को पूरा करके रहेगा, चाहे मुंकिरों को यह कितना ही नागवार हो। वही है जिसने भेजा अपने रसूल को हिदायत और दीने हक़ के साथ ताकि उसे सब दीनों पर ग़ालिब कर दे चाहे मुश्रिकों (बहुदेववादियों) को यह कितना ही नागवार हो। (6-9)

ऐ ईमान वालो, क्या मैं तुम्हें एक ऐसी तिजारत बताऊं जो तुम्हें एक दर्दनाक अज़ाब से बचा ले। तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने माल और अपने जान से जिहाद (जद्दोजहद) करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। अल्लाह तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, और उम्दा मकानों में जो हमेशा रहने के बाग़ों में होंगे, यह है बड़ी कामयाबी और एक और चीज़ भी जिसकी तुम तमन्ना रखते हो, अल्लाह की मदद और फ़तह जल्दी, और मोमिनों को बशारत (शुभ सूचना) दे दो। (10-13)

ऐ ईमान वालो, तुम अल्लाह के मददगार बनो, जैसा कि ईसा बिन मरयम ने हवारियों (साथियों) से कहा, कौन अल्लाह के वास्ते मेरा मददगार बनता है। हवारियों ने कहा हम हैं अल्लाह के मददगार, पस बनी इस्राईल में से कुछ लोग ईमान लाए और कुछ लोगों ने इंकार किया। फिर हमने ईमान लाने वालों की उनके दुश्मनों के मुक़ाबले में मदद की, पस वे ग़ालिब हो गए। (14)

सूरह-62. अल-जुमुअह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर वह चीज़ जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है। जो बादशाह है, पाक है, ज़बरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। वही है जिसने उम्मियों के अंदर एक रसूल उन्हीं में से उठाया, वह उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है। और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब और हिक्मत (तत्वदर्शिता) की तालीम देता है, और वे इससे पहले खुली गुमराही में थे और दूसरों के लिए भी उनमें से जो अभी उनमें शामिल नहीं हुए, और वह ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है। यह अल्लाह का फ़ज़्ल (अनुग्रह) है, वह देता है जिसे चाहता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (1-4)

जिन लोगों को तौरात का हामिल (धारक) बनाया गया फिर उन्होंने उसे न उठाया, उनकी मिसाल उस गधे की सी है जो किताबों का बोझ उठाए हुए हो। क्या ही बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। कहो कि ऐ यहूदियो, अगर तुम्हारा गुमान है कि तुम दूसरों के मुक़ाबले में अल्लाह के महबूब हो तो तुम मौत की तमन्ना करो, अगर तुम सच्चे हो। और वे कभी इसकी तमन्ना न करेंगे उन कामों की वजह से जिन्हें उनके हाथ आगे भेज चुके हैं। और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। कहो कि जिस मौत से तुम भागते हो वह तुम्हें आकर रहेगी, फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले के पास ले जाए जाओगे, फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते रहे हो। (5-8)

ऐ ईमान वालो, जब जुमा के दिन की नमाज़ के लिए पुकारा जाए तो अल्लाह की याद की तरफ़ चल पड़ो और ख़रीद व फ़रोख़्त छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो, और अल्लाह को कसरत (अधिकता) से याद करो, ताकि तुम फ़लाह पाओ। और जब वे कोई तिजारत या खेल तमाशा देखते हैं तो उसकी तरफ़ दौड़ पड़ते हैं। और तुम्हें

खड़ा हुआ छोड़ देते हैं, कहो कि जो अल्लाह के पास है वह खेल तमाशे और तिजारत से बेहतर है, और अल्लाह बेहतरीन रिज़्क़ देने वाला है। (9-11)

सूरह-63. अल-मुनाफ़िक़ून

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब मुनाफ़िक़ (पाखंडी) तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि आप बेशक अल्लाह के रसूल हैं, और अल्लाह जानता है कि बेशक तुम उसके रसूल हो, और अल्लाह गवाही देता है कि ये मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) झूठे हैं। उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है, फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, बेशक निहायत बुरा है जो वे कर रहे हैं। यह इस सबब से है कि वे ईमान लाए फिर उन्होंने कुफ़्र किया, फिर उनके दिलों पर मुहर कर दी गई, पस वे नहीं समझते। (1-3)

और जब तुम उन्हें देखो तो उनके जिस्म तुम्हें अच्छे लगते हैं, और अगर वे बात करते हैं तो तुम उनकी बात सुनते हो, गोया कि वे लकड़ियां हैं टेक लगाई हुई। वे हर ज़ोर की आवाज़ को अपने ख़िलाफ़ समझते हैं। यही लोग दुश्मन हैं, पस उनसे बचो। अल्लाह उन्हें हलाक करे, वे कहां फिरे जाते हैं। और जब उनसे कहा जाता है कि आओ, अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए इस्तिग़फ़ार (माफ़ी की दुआ) करे तो वे अपना सर फेर लेते हैं। और तुम उन्हें देखोगे कि वे तकब्बुर (घमंड) करते हुए बेरुख़ी करते हैं। उनके लिए यकसां (समान) है, तुम उनके लिए मग़्फ़िरत (माफ़ी) की दुआ करो या मग़्फ़िरत की दुआ न करो, अल्लाह हरगिज़ उन्हें माफ़ न करेगा। अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (4-6)

यही हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं उन पर ख़र्च मत करो यहां तक कि वे मुंतशिर (तितर-बितर) हो जाएं। और आसमानों और ज़मीन के ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं लेकिन मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) नहीं समझते। वे कहते हैं कि अगर हम मदीना लौटे तो इज़्ज़त वाला वहां से ज़िल्लत वाले को निकाल देगा। हालाँकि इज़्ज़त अल्लाह के लिए और उसके रसूल के लिए

और मोमिनीन के लिए है, मगर मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) नहीं जानते। (7-8)

ऐ ईमान वालो, तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न करने पाएं, और जो ऐसा करेगा तो वही घाटे में पड़ने वाले लोग हैं। और हमने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से ख़र्च करो इससे पहले कि तुम में से किसी की मौत आ जाए, फिर वह कहे कि ऐ मेरे रब, तूने मुझे कुछ और मोहलत क्यों न दी कि मैं सदक़ा (दान) करता और नेक लोगों में शामिल हो जाता। और अल्लाह हरगिज़ किसी जान को मोहलत नहीं देता जबकि उसकी मीआद (नियत समय) आ जाए, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (9-11)

सूरह-64. अत-तग़ाबून

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर चीज़ जो आसमानों में है और हर चीज़ जो ज़मीन में है। उसी की बादशाही है और उसी के लिए तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। वही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम में से कोई मुंकिर है और कोई मोमिन, और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। उसने आसमानों और ज़मीन को ठीक तौर पर पैदा किया और उसने तुम्हारी सूरत बनाई तो निहायत अच्छी सूरत बनाई, और उसी की तरफ़ है लौटना। वह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो। और अल्लाह दिलों तक की बातों का जानने वाला है। (1-4)

क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जिन्होंने इससे पहले इंकार किया, फिर उन्होंने अपने किए का वबाल चखा और उनके लिए एक दर्दनाक अज़ाब है। यह इसलिए कि उनके पास उनके रसूल खुली दलीलों के साथ आए, तो उन्होंने कहा कि क्या इंसान हमारी रहनुमाई करेंगे। पस उन्होंने इंकार किया और मुंह फेर लिया, और अल्लाह उनसे बेपरवाह हो गया, और अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है, तारीफ़ वाला है। (5-6)

इंकार करने वालों ने दावा किया कि वे हरगिज़ दुबारा उठाए न जाएंगे, कहो कि हां, मेरे रब की क़सम तुम ज़रूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें बताया जाएगा जो कुछ तुमने किया है, और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है। पस अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल पर और उस नूर (प्रकाश) पर जो हमने उतारा है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। जिस दिन वह तुम सबको एक जमा होने के दिन जमा करेगा, यही दिन हार जीत का दिन होगा। और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाया होगा और उसने नेक अमल किया होगा, अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे हमेशा उनमें रहेंगे। यही है बड़ी कामयाबी। और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही आग वाले हैं, उसमें हमेशा रहेंगे, और वह बुरा ठिकाना है। (7-10)

जो मुसीबत भी आती है अल्लाह के इज़्न (अनुज्ञा) से आती है। और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान रखता है अल्लाह उसके दिल को राह दिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। और तुम अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर तुम एराज़ (उपेक्षा) करोगे तो हमारे रसूल पर बस साफ़-साफ़ पहुंचा देना है। अल्लाह, उसके सिवा कोई इलाह (पूज्य-प्रभु) नहीं, और ईमान लाने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (11-13)

ऐ ईमान वालो, तुम्हारी कुछ बीवियां और कुछ औलाद तुम्हारे दुश्मन हैं, पस तुम उनसे होशियार रहो, और अगर तुम माफ़ कर दो और दरगुज़र करो और बख़्श दो तो अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आज़माइश की चीज़ हैं, और अल्लाह के पास बहुत बड़ा अज्र है। पस तुम अल्लाह से डरो जहां तक हो सके। और सुनो और मानो और ख़र्च करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और जो शख़्स दिल की तंगी से महफ़ूज़ रहा तो ऐसे ही लोग फ़लाह (कल्याण, सफलता) पाने वाले हैं। अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दोगे तो वह उसे तुम्हारे लिए कई गुना बढ़ा

देगा और तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह क़द्रदां है, बुर्दबार (उदार) है। ग़ायब और हाज़िर को जानने वाला है, ज़बरदस्त है, हकीम (तत्वदर्शी) है। (14-18)

सूरह-65. अत-तलाक़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैग़म्बर, जब तुम लोग औरतों को तलाक़ दो तो उनकी इद्दत पर तलाक़ दो और इद्दत को गिनते रहो, और अल्लाह से डरो जो तुम्हारा रब है। उन औरतों को उनके घरों से न निकालो और न वे ख़ुद निकलें, इल्ला यह कि वे कोई खुली बेहयाई करें, और ये अल्लाह की हदें हैं, और जो शख़्स अल्लाह की हदों से तजावुज़ करेगा तो उसने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, तुम नहीं जानते शायद अल्लाह इस तलाक़ के बाद कोई नई सूरत पैदा कर दे। फिर जब वे अपनी मुद्दत को पहुंच जाएं तो उन्हें या तो मारूफ़ (भली रीति) के मुताबिक़ रख लो या मारूफ़ के मुताबिक़ उन्हें छोड़ दो और अपने में से दो मोतबर गवाह कर लो और ठीक-ठीक अल्लाह के लिए गवाही दो। यह उस शख़्स को नसीहत की जाती है जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो। और जो शख़्स अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए राह निकालेगा, और उसे वहां से रिज़्क़ देगा जहां उसका गुमान भी न गया हो, और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह उसके लिए काफ़ी है, बेशक अल्लाह अपना काम पूरा करके रहता है, अल्लाह ने हर चीज़ के लिए एक अंदाज़ा ठहरा रखा है। (1-3)

और तुम्हारी औरतों में से जो हैज़ (मासिक धर्म) से मायूस हो चुकी हैं, अगर तुम्हें शुबह हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है। और इसी तरह उनकी भी जिन्हें हैज़ नहीं आया, और हामिला (गर्भवती) औरतों की इद्दत उस हमल का पैदा हो जाना है, और जो शख़्स अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए उसके काम में आसानी कर देगा। यह अल्लाह का हुक्म है जो उसने तुम्हारी तरफ़ उतारा है, और जो शख़्स अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बड़ा अज्र देता। (4-5)

तुम उन औरतों को अपनी वुस्अत (हैसियत) के मुताबिक़ रहने का मकान दो जहां तुम रहते हो और उन्हें तंग करने के लिए उन्हें तकलीफ़ न पहुंचाओ, और अगर वे हमल (गर्भ) वालियां हों तो उन पर ख़र्च करो यहां तक कि उनका हमल पैदा हो जाए। फिर अगर वे तुम्हारे लिए दूध पिलाएं तो उनकी उजरत (पारिश्रमिक) उन्हें दो। और तुम आपस में एक दूसरे को नेकी सिखाओ। और अगर तुम आपस में ज़िद करो तो कोई और औरत दूध पिलाएगी। चाहिए कि वुस्अत वाला अपनी वुस्अत के मुताबिक़ ख़र्च करे और जिसकी आमदनी कम हो उसे चाहिए कि अल्लाह ने जितना उसे दिया है उसमें से ख़र्च करे। अल्लाह किसी पर बोझ नहीं डालता मगर उतना ही जितना उसे दिया है, अल्लाह सख़्ती के बाद जल्द ही आसानी पैदा कर देगा है। (6-7)

और बहुत सी बस्तियां हैं जिन्होंने अपने रब और उसके रसूलों के हुक्म से सरताबी (विमुखता) की, पस हमने उनका सख़्त हिसाब किया और हमने उन्हें हौलनाक सज़ा दी। पस उन्होंने अपने किए का वबाल चखा और उनका अंजामकार ख़सारा (घाटा) हुआ। अल्लाह ने उनके लिए एक सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है। पस अल्लाह से डरो, ऐ अक़्ल वालो जो कि ईमान लाए हो। अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ एक नसीहत उतारी है, एक रसूल जो तुम्हें अल्लाह की खुली-खुली आयतें पढ़कर सुनाता है। ताकि उन लोगों को तारीकियों से रोशनी की तरफ़ निकाले जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया। और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाया और नेक अमल किया उसे वह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वे उनमें हमेशा रहेंगे, अल्लाह ने उसे बहुत अच्छी रोज़ी दी। (8-11)

अल्लाह ही है जिसने बनाए सात आसमान और उन्हीं की तरह ज़मीन भी। उनके अंदर उसका हुक्म उतरता है, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। और अल्लाह ने अपने इल्म से हर चीज़ का इहाता (आच्छादन) कर रखा है। (12)

सूरह-66. अत-तहरीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ नबी तुम क्यों उस चीज़ को हराम करते हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की है, अपनी बीवियों की रिज़ामंदी चाहने के लिए, और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी क़समों का खोलना मुक़र्रर कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा कारसाज़ है, और वह जानने वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (1-2)

और जब नबी ने अपनी किसी बीवी से एक बात छुपा कर कही, तो जब उसने उसे बता दिया और अल्लाह ने नबी को उससे आगाह कर दिया तो नबी ने कुछ बात बताई और कुछ टाल दी, फिर जब नबी ने उसे यह बात बताई तो उसने कहा कि आपको किसने इसकी ख़बर दी। नबी ने कहा कि मुझे बताया जानने वाले ने, बाख़बर ने। अगर तुम दोनों अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करो तो तुम्हारे दिल झुक पड़े हैं, और अगर तुम दोनों नबी के मुक़ाबले में कार्रवाइयां करोगी तो उसका रफ़ीक़ (साथी) अल्लाह है और जिब्रील और सालेह (नेक) अहले ईमान और इनके अलावा फ़रिश्ते उसके मददगार हैं। अगर नबी तुम सबको तलाक़ दे दे तो उसका रब तुम्हारे बदले में तुमसे बेहतर बीवियां उसे दे दे, मुस्लिमा, बाईमान, फ़रमांबरदार, तौबा करने वाली, इबादत करने वाली, रोज़ेदार, विधवा और कुंवारी। (3-5)

ऐ ईमान वालो अपने आपको और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन आदमी और पत्थर होंगे, उस पर तुंदख़ू (कठोर) और ज़बरदस्त फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं, अल्लाह उन्हें जो हुक्म दे उसमें वे उसकी नाफ़रमानी नहीं करते, और वे वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म मिलता है। ऐ लोगो जिन्होंने इंकार किया, आज उज़्र न पेश करो, तुम वही बदले में पा रहे हो जो तुम करते थे। (6-7)

ऐ ईमान वालो, अल्लाह के आगे सच्ची तौबा करो। उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हारे गुनाह माफ कर दे और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे

जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जिस दिन अल्लाह नबी को और उसके साथ ईमान लाने वालों को रुसवा नहीं करेगा। उनकी रोशनी उनके आगे और उनके दाईं तरफ दौड़ रही होगी, वे कह रहे होंगे कि ऐ हमारे रब हमारे लिए हमारी रोशनी को कामिल कर दे और हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा, बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है। (8)

ऐ नबी मुंकिरों और मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) से जिहाद करो और उन पर सख़्ती करो, और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरा ठिकाना है। अल्लाह मुंकिरों के लिए मिसाल बयान करता है नूह की बीवी की और लूत की बीवी की, दोनों हमारे बंदों में से दो नेक बंदों के निकाह में थीं, फिर उन्होंने उनके साथ ख़ियानत की तो वे दोनों अल्लाह के मुक़ाबले में उनके कुछ काम न आ सके, और दोनों को कह दिया गया कि आग में दाख़िल हो जाओ दाख़िल होने वालों के साथ। (9-10)

और अल्लाह ईमान वालों के लिए मिसाल बयान करता है फ़िरऔन की बीवी की, जबकि उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना दे और मुझे फ़िरऔन और उसके अमल से बचा ले और मुझे ज़ालिम क़ौम से नजात दे। और इमरान की बेटी मरयम, जिसने अपनी अस्मत (सतीत्व) की हिफ़ाज़त की, फिर हमने उसमें अपनी रूह फूंक दी और उसने अपने रब के कलिमात की और उसकी किताबों की तस्दीक़ की, और वह फ़रमांबरदारों में से थी। (11-12)

सूरह-67. अल-मुल्क

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

बड़ा बाबरकत है वह जिसके हाथ में बादशाही है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। जिसने मौत और ज़िंदगी को पैदा किया ताकि तुम्हें जांचे कि तुम में से कौन अच्छा काम करता है, और वह ज़बरदस्त है, बख़्शने वाला है। जिसने बनाए सात आसमान ऊपर तले, तुम रहमान के बनाने में कोई ख़लल (असंगति) नहीं देखोगे, फिर निगाह डाल कर देख लो, कहीं तुम्हें कोई ख़लल

नज़र आता है। फिर बार-बार निगाह डाल कर देखो, निगाह नाकाम थक कर तुम्हारी तरफ़ वापस आ जाएगी। (1-4)

और हमने क़रीब के आसमान को चराग़ों से सजाया है। और हमने उन्हें शैतानों के मारने का ज़रिया बनाया है। और हमने उनके लिए दोज़ख़ का अज़ाब तैयार कर रखा है। और जिन लोगों ने अपने रब का इंकार किया, उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है। और वह बुरा ठिकाना है। जब वे उसमें डाले जाएंगे, वे उसका दहाड़ना सुनेंगे और वह जोश मारती होगी, मालूम होगा कि वह ग़ुस्से में फट पड़ेगी। जब उसमें कोई गिरोह डाला जाएगा, उसके दारोग़ा उससे पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया। वे कहेंगे कि हां, हमारे पास डराने वाला आया। फिर हमने उसे झुठला दिया और हमने कहा कि अल्लाह ने कोई चीज़ नहीं उतारी, तुम लोग बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो। और वे कहेंगे कि अगर हम सुनते या समझते तो हम दोज़ख़ वालों में से न होते। पस वे अपने गुनाह का इक़रार करेंगे, पस लानत हो दोज़ख़ वालों पर। (5-11)

जो लोग अपने रब से बिन देखे डरते हैं, उनके लिए मग़्फ़िरत (क्षमा) और बड़ा अज्र (प्रतिफल) है। और तुम अपनी बात छुपाकर कहो या पुकार कर कहो, वह दिलों तक की बातों को जानता है। क्या वह न जानेगा जिसने पैदा किया है, और वह बारीकबीं (सूक्ष्मदर्शी) है, ख़बर रखने वाला है। (12-14)

वही है जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिए पस्त (वशीभूत) कर दिया तो तुम उसके रास्तों में चलो और उसके रिज़्क़ में से खाओ और उसी की तरफ़ है उठना। क्या तुम उससे बेख़ौफ़ हो गए जो आसमान में है कि वह तुम्हें ज़मीन में धंसा दे, फिर वह लरज़ने लगे। क्या तुम उससे जो आसमान में है बेख़ौफ़ हो गए कि वह तुम पर पथराव करने वाली हवा भेज दे, फिर तुम जान लो कि कैसा है मेरा डराना। और उन्होंने झुठलाया जो उनसे पहले थे। तो कैसा हुआ मेरा इंकार। (15-18)

क्या वे परिंदों को अपने ऊपर नहीं देखते पर फैलाए हुए और वे उन्हें

समेट भी लेते हैं। रहमान के सिवा कोई नहीं जो उन्हें थामे हुए हो, बेशक वह हर चीज़ को देख रहा है। आख़िर कौन है कि वह तुम्हारा लश्कर बनकर रहमान के मुक़ाबले में तुम्हारी मदद कर सके, इंकार करने वाले धोखे में पड़े हुए हैं। आख़िर कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे अगर अल्लाह अपनी रोज़ी रोक ले, बल्कि वे सरशकी पर और बिदकने पर अड़ गए हैं। (19-21)

क्या जो शख़्स औंधे मुंह चल रहा है वह ज़्यादा सही राह पाने वाला है या वह शख़्स जो सीधा एक सीधी राह पर चल रहा है। कहो कि वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आंख और दिल बनाए। तुम लोग बहुत कम शुक्र अदा करते हो। कहो कि वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैलाया और तुम उसी की तरफ़ इकट्ठा किए जाओगे। (22-24)

और वे कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो कि यह इल्म अल्लाह के पास है और मैं सिर्फ़ खुला हुआ डराने वाला हूं। पस जब वे उसे क़रीब आता हुआ देखेंगे तो उनके चेहरे बिगड़ जाएंगे जिन्होंने इंकार किया, और कहा जाएगा कि यही है वह चीज़ जिसे तुम मांगा करते थे। कहो कि अगर अल्लाह मुझे हलाक कर दे और उन लोगों को जो मेरे साथ हैं, या हम पर रहम फ़रमाए तो मुंकिरों को दर्दनाक अज़ाब से कौन बचाएगा। कहो, वह रहमान है, हम उस पर ईमान लाए और उसी पर हमने भरोसा किया। पस अनक़रीब तुम जान लोगे कि खुली हुई गुमराही में कौन है। कहो कि बताओ, अगर तुम्हारा पानी नीचे उतर जाए तो कौन है जो तुम्हारे लिए साफ़ पानी ले आए। (25-30)

सूरह-68. अल-क़लम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

नून०। क़सम है क़लम की और जो कुछ लोग लिखते हैं। तुम अपने रब के फ़ज़्ल से दीवाने नहीं हो। और बेशक तुम्हारे लिए अज्र (प्रतिफल) है कभी ख़त्म न होने वाला। और बेशक तुम एक आला अख़्लाक़ (उच्च चरित्र-आचरण) पर हो। पस अनक़रीब तुम देखोगे और वे भी देखेंगे, कि तुम में

से किसे जुनून था। तुम्हारा रब ही ख़ूब जानता है, जो उसकी राह से भटका हुआ है, और वह राह पर चलने वालों को भी ख़ूब जानता है। (1-7)

पस तुम इन झुठलाने वालों का कहना न मानो। वे चाहते हैं कि तुम नर्म पड़ जाओ तो वे भी नर्म पड़ जाएं। और तुम ऐसे शख़्स का कहना न मानो जो बहुत क़समें खाने वाला हो, बेवक़्अत (हीन) हो, ताना देने वाला हो, चुग़ली लगाता फिरता हो, नेक काम से रोकने वाला हो, हद से गुज़र जाने वाला हो, हक़ मारने वाला हो, संगदिल हो, साथ ही बेनस्ब (अधम) हो। इस सबब से कि वह माल व औलाद वाला है। जब उसे हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहता है कि ये अगलों की बेसनद बातें हैं। अनक़रीब हम उसकी नाक पर दाग़ लगाएंगे। (8-16)

हमने उन्हें आज़माइश (परीक्षा) में डाला है जिस तरह हमने बाग़ वालों को आज़माइश में डाला था। जबकि उन्होंने क़सम खाई कि वे सुबह सवेरे ज़रूर उसका फल तोड़ लेंगे। और उन्होंने इंशाअल्लाह नहीं कहा। पस उस बाग़ पर तेरे रब की तरफ़ से एक फिरने वाला फिर गया और वे सो रहे थे। फिर सुबह को वह ऐसा रह गया जैसे कटी हुई फ़स्ल। पस सुबह को उन्होंने एक दूसरे को पुकारा कि अपने खेत पर सवेरे चलो अगर तुम्हें फल तोड़ना है। फिर वे चल पड़े और वे आपस में चुपके-चुपके कह रहे थे। कि आज कोई मोहताज तुम्हारे बाग़ में न आने पाए। और वे अपने को न देने पर क़ादिर समझ कर चले। फिर जब बाग़ को देखा तो कहा कि हम रास्ता भूल गए। बल्कि हम महरूम (वंचित) हो गए। उनमें जो बेहतर आदमी था उसने कहा, मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम लोग तस्बीह क्यों नहीं करते। उन्होंने कहा कि हमारा रब पाक है। बेशक हम ज़ालिम थे। फिर वे आपस में एक दूसरे को इल्ज़ाम देने लगे। उन्होंने कहा, अफ़सोस है हम पर, बेशक हम हद से निकलने वाले लोग थे। शायद हमारा रब हमें इससे अच्छा बाग़ इसके बदले में दे दे, हम उसी की तरफ़ रुजूअ होते हैं। इसी तरह आता है अज़ाब, और आख़िरत का अज़ाब इससे भी बड़ा है, काश ये लोग जानते। (17-33)

बेशक डरने वालों के लिए उनके रब के पास नेमत के बाग़ हैं। क्या

हम फ़रमांबरदारों (आज्ञाकारियों) को नाफ़रमानों के बराबर कर देंगे। तुम्हें क्या हुआ, तुम कैसा फ़ैसला करते हो। क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें तुम पढ़ते हो। उसमें तुम्हारे लिए वह है जिसे तुम पसंद करते हो। क्या तुम्हारे लिए हमारे ऊपर क़समें हैं क़ियामत तक बाक़ी रहने वाली कि तुम्हारे लिए वही कुछ है जो तुम फ़ैसला करो। उनसे पूछो कि उनमें से कौन इसका ज़िम्मेदार है। क्या उनके कुछ शरीक हैं, तो वे अपने शरीकों को लाएं अगर वे सच्चे हैं। (34-41)

जिस दिन हक़ीक़त से पर्दा उठाया जाएगा और लोग सज्दे के लिए बुलाए जाएंगे तो वे न कर सकेंगे। उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी, उन पर ज़िल्लत छाई होगी, और वे सज्दे के लिए बुलाए जाते थे और सही सालिम थे। पस छोड़ो मुझे और उन्हें जो इस कलाम को झुठलाते हैं, हम उन्हें आहिस्ता-आहिस्ता ला रहे हैं जहां से वे नहीं जानते। और मैं उन्हें मोहलत दे रहा हूं, बेशक मेरी तदबीर मज़बूत है। (42-45)

क्या तुम उनसे मुआवज़ा मांगते हो कि वे उसके तावान से दबे जा रहे हैं। या उनके पास ग़ैब है पस वे लिख रहे हैं। पस अपने रब के फ़ैसले तक सब्र करो और मछली वाले की तरह न बन जाओ, जब उसने पुकारा और वह ग़म से भरा हुआ था। अगर उसके रब की महरबानी उसके शामिलेहाल न होती तो वह मज़्मूम (निंदित) होकर चटयल मैदान में फेंक दिया जाता। फिर उसके रब ने उसे नवाज़ा, पस उसे नेकों में शामिल कर दिया। और ये मुंकिर लोग जब नसीहत को सुनते हैं तो इस तरह तुम्हें देखते हैं गोया अपनी निगाहों से तुम्हें फिसला देंगे। और कहते हैं कि यह ज़रूर दीवाना है। और वह आलम वालों के लिए सिर्फ़ एक नसीहत है। (46-52)

सूरह-69. अल-हाक़्क़ह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

वह होने वाली। क्या है वह होनी वाली। और तुम क्या जानो कि क्या है वह होने वाली। समूद और आद ने उस खड़खड़ाने वाली चीज़ को झुठलाया।

पस समूद, तो वे एक सख़्त हादसे से हलाक कर दिए गए। और आद, तो वे एक तेज़ व तुंद हवा से हलाक किए गए। उसे अल्लाह ने सात रात और आठ दिन उन पर मुसल्लत रखा, पस तुम देखते हो कि वहां वे इस तरह गिरे हुए पड़े हैं गोया कि वे खजूरों के खोखले तने हों। तो क्या तुम्हें उनमें से कोई बचा हुआ नज़र आता है। और फ़िरऔन और उससे पहले वालों और उल्टी हुई बस्तियों ने जुर्म किया। उन्होंने अपने रब के रसूल की नाफ़रमानी की तो अल्लाह ने उन्हें बहुत सख़्त पकड़ा। और जब पानी हद से गुज़र गया तो हमने तुम्हें कश्ती में सवार कराया। ताकि हम उसे तुम्हारे लिए यादगार बना दें, और याद रखने वाले कान उसे याद रखें। (1-12)

पस जब सूर में यकबारगी फूंक मारी जाएगी। और ज़मीन और पहाड़ों को उठाकर एक ही बार में रेज़ा-रेज़ा कर दिया जाएगा। तो उस दिन वाक़ेअ (घटित) होने वाली वाक़ेअ हो जाएगी। और आसमान फट जाएगा तो वह उस रोज़ बिल्कुल बोदा होगा। और फ़रिश्ते उसके किनारों पर होंगे, और तेरे रब के अर्श को उस दिन आठ फ़रिश्ते अपने ऊपर उठाए होंगे। उस दिन तुम पेश किए जाओगे, तुम्हारी कोई बात पोशीदा (छुपी) न होगी। (13-18)

पस जिस शख़्स को उसका आमालनामा (कर्म-पत्र) उसके दाएं हाथ में दिया जाएगा तो वह कहेगा कि लो मेरा आमालनामा पढ़ लो। मैंने गुमान रखा था कि मुझे मेरा हिसाब पेश आने वाला है। पस वह एक पसंदीदा ऐश में होगा। ऊंचे बाग़ में उसके फल झुके पड़ रहे होंगे। खाओ और पियो मज़े के साथ, उन आमाल के बदले में जो तुमने गुज़रे दिनों में किए हैं। और जिस शख़्स का आमालनामा उसके बाएं हाथ में दिया जाएगा, तो वह कहेगा काश मेरा आमालनामा मुझे न दिया जाता। और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है। काश वही मौत फ़ैसलाकुन होती। मेरा माल मेरे काम न आया। मेरा इक़्तेदार (सत्ता-अधिकार) ख़त्म हो गया। इस शख़्स को पकड़ो, फिर इसे तौक़ पहनाओ। फिर इसे जहन्नम में दाख़िल कर दो। फिर एक ज़ंजीर में जिसकी पैमाइश सत्तर हाथ है इसे जकड़ दो। यह शख़्स ख़ुदाए अज़ीम पर ईमान न रखता था। और वह ग़रीबों को खाना खिलाने पर नहीं उभारता था। पस आज

यहां इसका कोई हमदर्द नहीं। और ज़ख़्मों के धोवन के सिवा उसके लिए कोई खाना नहीं। उसे गुनाहगारों के सिवा कोई और न खाएगा। (19-37)

पस नहीं, मैं क़सम खाता हूं उन चीज़ों की जिन्हें तुम देखते हो, और जिन्हें तुम नहीं देखते हो। बेशक यह एक बाइज़्ज़त रसूल का कलाम है। और वह किसी शायर का कलाम नहीं। तुम बहुत कम ईमान लाते हो। और यह किसी काहिन (भविष्यवक्ता) का कलाम नहीं, तुम बहुम कम ग़ौर करते हो। ख़ुदावंद आलम की तरफ़ से उतारा हुआ है। और अगर वह कोई बात गढ़कर हमारे ऊपर लगाता तो हम उसका दायां हाथ पकड़ते। फिर हम उसकी रगे दिल काट देते। फिर तुम में से कोई इससे हमें रोकने वाला न होता। और बिलाशुबह यह याददिहानी है डरने वालों के लिए। और हम जानते हैं कि तुम में इसके झुठलाने वाले हैं और वह मुंकिरों के लिए पछतावा है। और यह यक़ीनी हक़ है। पस तुम अपने अज़ीम रब के नाम की तस्बीह करो। (38-52)

सूरह-70. अल-मआरिज

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

मांगने वाले ने अज़ाब मांगा वाक़ेअ (घटित) होने वाला, मुंकिरों के लिए कोई उसे हटाने वाला नहीं। अल्लाह की तरफ़ से जो सीढ़ियों का मालिक है। उसकी तरफ़ फ़रिश्ते और जिब्रील चढ़कर जाते हैं, एक ऐसे दिन में जिसकी मिक़्दार पचास हज़ार साल है। पस तुम सब्र करो, भली तरह का सब्र। वे उसे दूर देखते हैं, और हम उसे क़रीब देख रहे हैं। जिस दिन आसमान तेल की तलछट की तरह हो जाएगा। और पहाड़ धुने हुए ऊन की तरह। और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा। वे उन्हें दिखाए जाएंगे। मुजरिम चाहेगा कि काश उस दिन के अज़ाब से बचने के लिए अपने बेटों और अपनी बीवी और अपने भाई और अपने कुंबे को जो उसे पनाह देने वाला था और तमाम अहले ज़मीन को फ़िदये (मुक्ति मुआवज़ा) में देकर अपने को बचा ले। (1-14)

हरगिज़ नहीं। वह तो भड़कती हुई आग की लपट होगी जो खाल उतार देगी। वह हर उस शख़्स को बुलाएगी जिसने पीठ फेरी और एराज़ (उपेक्षा)

किया। जमा किया और सेंत कर रखा। बेशक इंसान कमहिम्मत पैदा हुआ है। जब उसे तकलीफ़ पहुंचती है तो वह घबरा उठता है। और जब उसे फ़ारिग़ुलबाली (सम्पन्नता) होती है तो वह बुख़्ल (कंजूसी) करने लगता है। मगर वे नमाज़ी जो अपनी नमाज़ की पाबंदी करते हैं। और जिनके मालों में साइल (मांगने वाले) और महरूम (वंचित) का मुअय्यन हक़ है। और जो इंसाफ़ के दिन पर यक़ीन रखते हैं। और जो अपने रब के अज़ाब से डरते हैं। बेशक उनके रब के अज़ाब से किसी को निडर न होना चाहिए। और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं— मगर अपनी बीवियों से या अपनी ममलूका (अधीन) औरतों से, पस इन पर उन्हें कोई मलामत नहीं, फिर जो शख़्स इसके अलावा कुछ और चाहे तो वही लोग हद से तजावुज़ (उल्लंघन) करने वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपने अहदों की निभाते हैं। और जो अपनी गवाहियों पर क़ायम रहते हैं। और जो अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं। यही लोग जन्नतों में इज़्ज़त के साथ होंगे। (15-25)

फिर इन मुंकिरों को क्या हो गया है कि वे तुम्हारी तरफ़ दौड़े चले आ रहे हैं, दाएं से और बाएं से गिरोह दर गिरोह। क्या उनमें से हर शख़्स यह लालच रखता है कि वह नेमत के बाग़ में दाख़िल कर लिया जाएगा। हरगिज़ नहीं, हमने उन्हें पैदा किया है उस चीज़ से जिसे वे जानते हैं। (36-39)

पस नहीं मैं क़सम खाता हूं मश्रिक़ों (पूर्वों) और मग़्रिबों (पश्चिमों) के रब की, हम इस पर क़ादिर हैं कि बदल कर उनसे बेहतर ले आएं, और हम आजिज़ नहीं हैं। पस उन्हें छोड़ दो कि वे बातें बनाएं और खेल करें। यहां तक कि अपने उस दिन से दो चार हों जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। जिस दिन क़ब्रों से निकल पड़ेंगे दौड़ते हुए। जैसे वे किसी निशाने की तरफ़ भाग रहे हों। उनकी निगाहें झुकी होंगी। उन पर ज़िल्लत छाई होगी, यह है वह दिन जिसका उनसे वादा था। (40-44)

सूरह-71. नूह़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा कि अपनी क़ौम के लोगों को ख़बरदार कर दो इससे पहले कि उन पर एक दर्दनाक अज़ाब आ जाए। उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो, मैं तुम्हारे लिए एक खुला हुआ डराने वाला हूं कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो और मेरी इताअत (आज्ञापालन) करो। अल्लाह तुम्हारे गुनाहों से दरगुज़र करेगा और तुम्हें एक मुअय्यन वक़्त तक बाक़ी रखेगा। बेशक जब अल्लाह का मुक़र्रर किया हुआ वक़्त आ जाता है तो फिर वह टाला नहीं जाता। काश कि तुम उसे जानते। (1-4)

नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, मैंने अपनी क़ौम को शब व रोज़ पुकारा। मगर मेरी पुकार ने उनकी दूरी ही में इज़ाफ़ा किया। और मैंने जब भी उन्हें बुलाया कि तू उन्हें माफ़ कर दे तो उन्होंने अपने कानों में उंगलियां डाल लीं और अपने ऊपर अपने कपड़े लपेट लिए और ज़िद पर अड़ गए और बड़ा घमंड किया। फिर मैंने उन्हें बरमला (खुलकर) पुकारा। फिर मैंने उन्हें खुली तब्लीग़ की और उन्हें चुपके से समझाया। मैंने कहा कि अपने रब से माफ़ी मांगो, बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला है। वह तुम पर आसमान से ख़ूब बारिश बरसाएगा और तुम्हारे माल और औलाद में तरक़्क़ी देगा। और तुम्हारे लिए बाग़ पैदा करेगा। और तुम्हारे लिए नहरें जारी करेगा। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के लिए अज़्मत (महानता) की उम्मीद नहीं रखते। हालाँकि उसने तुम्हें तरह-तरह से बनाया। क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने किस तरह सात आसमान तह-ब-तह बनाए। और उनमें चांद को नूर और सूरज को चराग़ बनाया। और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से ख़ास एहतिमाम से उगाया। फिर वह तुम्हें ज़मीन में वापस ले जाएगा। और फिर उससे तुम्हें बाहर ले जाएगा। और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को हमवार (समतल) बनाया ताकि तुम उसके खुले रास्तों में चलो। (5-20)

नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, उन्होंने मेरा कहा न माना और ऐसे आदमियों की पैरवी की जिनके माल और औलाद ने उनके घाटे ही में इज़ाफ़ा किया। और उन्होंने बड़ी तदबीरें कीं। और उन्होंने कहा कि तुम अपने माबूदों (पूज्यों) को हरगिज़ न छोड़ना। और तुम हरगिज़ न छोड़ना वद को और सुवाअ को और यग़ूस को और यऊक़ और नस्र को। और उन्होंने बहुत लोगों को बहका दिया। और अब तू उन गुमराहों की गुमराही में ही इज़ाफ़ा कर। अपने गुनाहों के सबब से वे ग़र्क़ किए गए। फिर वे आग में दाख़िल कर दिए गए। पस उन्होंने अपने लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई मददगार न पाया। (21-25)

और नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, तू इन मुंकिरों में से कोई ज़मीन पर बसने वाला न छोड़। अगर तूने इन्हें छोड़ दिया तो ये तेरे बंदों को गुमराह करेंगे और उनकी नस्ल से जो भी पैदा होगा बदकार और सख़्त मुंकिर ही होगा। ऐ मेरे रब, मेरी मग़्फ़िरत (माफ़ी) फ़रमा। और मेरे मां बाप की मग़्फ़िरत फ़रमा। और जो मेरे घर में मोमिन होकर दाख़िल हो तू उसकी मग़्फ़िरत फ़रमा। और सब मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को माफ़ फ़रमा दे और ज़ालिमों के लिए हलाकत (नाश) के सिवा किसी चीज़ में इज़ाफ़ा न कर। (26-28)

सूरह-72. अल-जिन्न

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि मुझे 'वही' (प्रकाशना) की गई है कि जिन्नात की एक जमाअत ने क़ुरआन सुना तो उन्होंने कहा कि हमने एक अजीब क़ुरआन सुना है जो हिदायत की राह बताता है तो हम उस पर ईमान लाए और हम अपने रब के साथ किसी को शरीक न बनाएंगे। और यह कि हमारे रब की शान बहुत बुलन्द है। उसने न कोई बीवी बनाई है और न औलाद। और यह कि हमारा नादान अल्लाह के बारे में बहुत ख़िलाफ़े हक़ बातें कहता था। और हमने गुमान किया था कि इंसान और जिन्न ख़ुदा की शान में कभी झूठ बात न कहेंगे। और यह कि इंसानों में कुछ ऐसे थे जो जिन्नात में से कुछ की पनाह लेते थे, तो उन्होंने जिन्नों का ग़ुरूर (अभिमान) और बढ़ा दिया। और यह

कि उन्होंने भी गुमान किया जैसा तुम्हारा गुमान था कि अल्लाह किसी को न उठाएगा। (1-7)

और हमने आसमान का जायज़ा लिया तो हमने पाया कि वह सख़्त पहरेदारों और शोलों से भरा हुआ है। और हम उसके कुछ ठिकानों में सुनने के लिए बैठा करते थे सो अब जो कोई सुनना चाहता है तो वह अपने लिए एक तैयार शोला पाता है। और हम नहीं जानते कि यह ज़मीन वालों के लिए कोई बुराई चाही गई है या उनके रब ने उनके साथ भलाई का इरादा किया है। और यह कि हम में कुछ नेक हैं और कुछ और तरह के। हम मुख़्तलिफ़ तरीक़ों पर हैं। और यह कि हमने समझ लिया कि हम ज़मीन में अल्लाह को हरा नहीं सकते। और न भाग कर उसे हरा सकते हैं। और यह कि हमने जब हिदायत की बात सुनी तो हम उस पर ईमान लाए, पस जो शख़्स अपने रब पर ईमान लाएगा तो उसे न किसी कमी का अंदेशा होगा और न ज़्यादती का। और यह कि हम में कुछ फ़रमांबरदार (आज्ञाकारी) हैं और हम में कुछ बेराह हैं, पस जिसने फ़रमांबरदारी की तो उन्होंने भलाई का रास्ता ढूंढ लिया। और जो लोग बेराह हैं तो वे दोज़ख़ के ईंधन होंगे। (8-15)

और मुझे 'वही' (प्रकाशना) की गई है कि ये लोग अगर रास्ते पर क़ायम हो जाते तो हम उन्हें ख़ूब सैराब (तृप्त) करते। ताकि इसमें उन्हें आज़माएं, और जो शख़्स अपने रब की याद से एराज़ (उपेक्षा) करेगा तो वह उसे सख़्त अज़ाब में मुब्तिला करेगा। और यह कि मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं पस तुम अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो। और यह कि जब अल्लाह का बंदा उसे पुकारने के लिए खड़ा हुआ तो लोग उस पर टूट पड़ने के लिए तैयार हो गए। कहो कि मैं सिर्फ़ अपने रब को पुकारता हूं और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता। कहो कि मैं तुम लोगों के लिए न किसी नुक़सान का इख़्तियार रखता हूं और न किसी भलाई का। कहो कि मुझे अल्लाह से कोई बचा नहीं सकता। और न मैं उसके सिवा कोई पनाह पा सकता हूं। पस अल्लाह ही की तरफ़ से पहुंचा देना और उसके पैग़ामों की अदायगी है और

जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी (अवज्ञा) करेगा तो उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वे हमेशा रहेंगे। (16-23)

यहां तक कि जब वे देखेंगे उस चीज़ को जिसका उनसे वादा किया जा रहा है तो वे जान लेंगे कि किसके मददगार कमज़ोर हैं और कौन तादाद में कम है। कहो कि मैं नहीं जानता कि जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जा रहा है वह क़रीब है या मेरे रब ने उसके लिए लम्बी मुद्दत मुक़र्रर कर रखी है। ग़ैब का जानने वाला वही है। वह अपने ग़ैब पर किसी को मुतलअ (प्रकट) नहीं करता। सिवा उस रसूल के जिसे उसने पसंद किया हो, तो वह उसके आगे और पीछे मुहाफ़िज़ लगा देता है। ताकि अल्लाह जान ले कि उन्होंने अपने रब के पैग़ामात पहुंचा दिए हैं और वह उनके माहौल का इहाता (आच्छादन) किए हुए है और उसने हर चीज़ को गिन रखा है। (24-28)

सूरह-73. अल-मुज़्ज़म्मिल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ कपड़े में लिपटने वाले, रात में क़ियाम (नमाज़ के लिए खड़ा होना) कर मगर थोड़ा हिस्सा। आधी रात या उससे कुछ कम कर दो। या उससे कुछ बढ़ा दो, और क़ुरआन को ठहर-ठहर कर पढ़ो। हम तुम पर एक भारी बात डालने वाले हैं। (1-5)

बेशक रात का उठना सख़्त रौंदता है और बात ठीक निकलती है। बेशक तुम्हें दिन में बहुत काम रहता है। और अपने रब का नाम याद करो और उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो जाओ सबसे अलग होकर। वह मश्रिक़ (पूर्व) और मग़्रिब (पश्चिम) का मालिक है, उसके सिवा कोई इलाह (पूज्य-प्रभु) नहीं, पस तुम उसे अपना कारसाज़ बना लो। और लोग जो कुछ कहते हैं उस पर सब्र करो। और भली तरह उनसे अलग हो जाओ और झुठलाने वाले ख़ुशहाल लोगों का मामला मुझ पर छोड़ दो और उन्हें थोड़ी ढील दे दो। हमारे पास बेड़ियां हैं और दोज़ख़ है। और गले में फंस जाने वाला खाना है और

दर्दनाक अज़ाब है। जिस दिन ज़मीन और पहाड़ हिलने लगेंगे और पहाड़ रेत के फिसलते हुए तोदे (ढेर) हो जाएंगे। (6-14)

हमने तुम्हारी तरफ़ एक रसूल भेजा है, तुम पर गवाह बनाकर, जिस तरह हमने फ़िरऔन की तरफ़ एक रसूल भेजा। फिर फ़िरऔन ने रसूल का कहा न माना तो हमने उसे पकड़ा सख़्त पकड़ना। पस अगर तुमने इंकार किया तो तुम उस दिन के अज़ाब से कैसे बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा जिसमें आसमान फट जाएगा, बेशक उसका वादा पूरा होकर रहेगा। यह एक नसीहत है, पस जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह इख़्तियार कर ले। (15-19)

बेशक तुम्हारा रब जानता है कि तुम दो तिहाई रात के क़रीब या आधी रात या एक तिहाई रात क़ियाम (नमाज़ के लिए खड़ा होना) करते हो, और एक गिरोह तुम्हारे साथियों में से भी। और अल्लाह ही रात और दिन का अंदाज़ा ठहराता है, उसने जाना कि तुम उसे पूरा न कर सकोगे पस उसने तुम पर महरबानी फ़रमाई, अब क़ुरआन से पढ़ो जितना तुम्हें आसान हो, उसने जाना कि तुम में बीमार होंगे और कितने लोग अल्लाह के फ़ज़्ल की तलाश में ज़मीन में सफ़र करेंगे। और दूसरे ऐसे लोग भी होंगे जो अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, पस उसमें से पढ़ो जितना तुम्हें आसान हो, और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह को क़र्ज़ दो अच्छा क़र्ज़। और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहां मौजूद पाओगे, वह बेहतर है और सवाब में ज़्यादा, और अल्लाह से माफ़ी मांगो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (20)

सूरह-74. अल-मुद्दस्सिर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ कपड़े में लिपटने वाले, उठ और लोगों को डरा। और अपने रब की बड़ाई बयान कर। और अपने कपड़े को पाक रख। और गंदगी को छोड़ दे। और ऐसा न करो कि एहसान करो और बहुत बदला चाहो और अपने रब के लिए सब्र करो। (1-7)

फिर जब सूर फूंका जाएगा तो वह बड़ा सख़्त दिन होगा। मुंकिरों पर आसान न होगा। छोड़ दो मुझे और उस शख़्स को जिसे मैंने पैदा किया अकेला। और उसे बहुत सा माल दिया और पास रहने वाले बेटे। और सब तरह का सामान उसके लिए मुहय्या कर दिया। फिर वह तमअ (लालच) रखता है कि मैं उसे और ज़्यादा दूं। हरगिज़ नहीं, वह हमारी आयतों का मुख़ालिफ़ (विरोधी) है। अनक़रीब मैं उसे एक सख़्त चढ़ाई चढ़ाऊंगा। (8-17)

उसने सोचा और बात बनाई। पस वह हलाक हो उसने कैसी बात बनाई। फिर वह हलाक हो उसने कैसी बात बनाई, फिर उसने देखा। फिर उसने त्योरी चढ़ाई और मुंह बनाया। फिर पीठ फेरी और तकब्बुर (घमंड) किया। फिर बोला यह तो महज़ एक जादू है जो पहले से चला आ रहा है। यह तो बस आदमी का कलाम है। (18-25)

मैं उसे अनक़रीब दोज़ख़ में दाख़िल करूंगा। और तुम क्या जानो कि क्या है दोज़ख़। न बाक़ी रहने देगी और न छोड़ेगी। खाल झुलसा देने वाली। उस पर 19 फ़रिश्ते हैं। और हमने दोज़ख़ के कारकुन सिर्फ़ फ़रिश्ते बनाए हैं। और हमने उनकी जो गिनती रखी है वह सिर्फ़ मुंकिरों को जांचने के लिए ताकि यक़ीन हासिल करें वे लोग जिन्हें किताब अता हुई। और ईमान वाले अपने ईमान को बढ़ाएं और अहले किताब (पूर्ववर्ती ग्रंथों के धारक) और मोमिनीन शक न करें, और ताकि जिन लोगों के दिलों में मर्ज़ है और मुंकिर लोग कहें कि इससे अल्लाह की क्या मुराद है। इस तरह अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहता है और हिदायत देता है जिसे चाहता है, और तेरे रब के लश्कर को सिर्फ़ वही जानता है, और यह तो सिर्फ़ समझाना है लोगों के वास्ते। (26-31)

हरगिज़ नहीं, क़सम है चांद की। और रात की जबकि वह जाने लगे। और सुबह की जब वह रोशन हो जाए, वह दोज़ख़ बड़ी चीज़ों में से है, इंसान के लिए डरावा, उनके लिए जो तुम में से आगे की तरफ़ बढ़े या पीछे की तरफ़ हटे। हर शख़्स अपने आमाल के बदले में रहन (गिरवी) है, दाएं वालों के सिवा, वे बाग़ों में होंगे, पूछते होंगे, मुजरिमों से, तुम्हें क्या चीज़ दोज़ख़

में ले गई। वे कहेंगे, हम नमाज़ पढ़ने वालों में से न थे। और हम ग़रीबों को खाना नहीं खिलाते थे। और हम बहस करने वालों के साथ बहस करते थे। और हम इंसाफ़ के दिन को झुठलाते थे। यहां तक कि वह यक़ीनी बात हम पर आ गई तो उन्हें शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करने वालों की शफ़ाअत कुछ फ़ायदा न देगी। (32-48)

फिर उन्हें क्या हो गया है कि वे नसीहत से रूगर्दानी (अवहेलना) करते हैं। गोया कि वे वहशी गधे हैं जो शेर से भागे जा रहे हैं। बल्कि उनमें से हर शख़्स यह चाहता है कि उसे खुली हुई किताबें दी जाएं। हरगिज़ नहीं, बल्कि ये लोग आख़िरत (परलोक) से नहीं डरते। हरगिज़ नहीं, यह तो एक नसीहत है। पस जिसका जी चाहे, इससे नसीहत हासिल करे। और वे इससे नसीहत हासिल नहीं करेंगे मगर यह कि अल्लाह चाहे, वही है जिससे डरना चाहिए और वही है बख़्शने के लायक़। (49-56)

सूरह-75. अल-क़ियामह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

नहीं, मैं क़सम खाता हूं क़ियामत के दिन की। और नहीं, मैं क़सम खाता हूं मलामत करने वाले नफ़्स की। क्या इंसान ख़्याल करता है कि हम उसकी हड्डियों को जमा न करेंगे। क्यों नहीं, हम इस पर क़ादिर हैं कि उसकी उंगलियों की पोर-पोर तक दुरुस्त कर दें। बल्कि इंसान चाहता है कि ढिठाई करे उसके सामने। वह पूछता है कि क़ियामत का दिन कब आएगा। पस जब आंखें ख़ीरह (चौंधिया जाना) हो जाएंगी। और चांद बेनूर हो जाएगा। और सूरज और चांद इकट्ठा कर दिए जाएंगे। उस दिन इंसान कहेगा कि कहां भागूं। हरगिज़ नहीं, कहीं पनाह नहीं। उस दिन तेरे रब ही के पास ठिकाना है। उस दिन इंसान को बताया जाएगा कि उसने क्या आगे भेजा और क्या पीछे छोड़ा। बल्कि इंसान ख़ुद अपने आपको जानता है, चाहे वह कितने ही बहाने पेश करे। (1-15)

तुम उसके पढ़ने पर अपनी ज़बान न चलाओ ताकि तुम उसे जल्दी

सीख लो। हमारे ऊपर है उसे जमा करना और उसे सुनाना। पस जब हम उसे सुनाएं तो तुम उस सुनाने की पैरवी करो। फिर हमारे ऊपर है उसे बयान कर देना। (16-19)

हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम चाहते हो जो जल्द आए। और तुम छोड़ते हो जो देर में आए। कुछ चेहरे उस दिन बारौनक़ होंगे। अपने रब की तरफ़ देख रहे होंगे। और कुछ चेहरे उस दिन उदास होंगे। गुमान कर रहे होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला मामला किया जाएगा। हरगिज़ नहीं, जब जान हलक़ तक पहुंच जाएगी। और कहा जाएगा कि कौन है झाड़ फूंक करने वाला। और वह गुमान करेगा कि यह जुदाई का वक़्त है। और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी। वह दिन होगा तेरे रब की तरफ़ जाने का। (20-30)

तो उसने न सच माना और न नमाज़ पढ़ी। बल्कि झुठलाया और मुंह मोड़ा। फिर अकड़ता हुआ अपने लोगों की तरफ़ चला गया। अफ़सोस है तुझ पर अफ़सोस है। फिर अफ़सोस है तुझ पर अफ़सोस है। क्या इंसान ख़्याल करता है कि वह बस यूं ही छोड़ दिया जाएगा। क्या वह टपकाई हुई मनी (वीर्य) की एक बूंद न था। फिर वह अलक़ा (जोंक की तरह) हो गया, फिर अल्लाह ने बनाया, फिर आज़ा (शरीरांग) दुरुस्त किए। फिर उसकी दो क़िस्में कर दीं, मर्द और औरत। क्या वह इस पर क़ादिर नहीं कि मुर्दों को ज़िंदा कर दे। (31-40)

सूरह-76. अद-दह्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कभी इंसान पर ज़माने में एक वक़्त गुज़रा है कि वह कोई क़ाबिले ज़िक्र चीज़ न था। हमने इंसान को एक मख़्लूत (मिश्रित) बूंद से पैदा किया, हम उसे पलटते रहे। फिर हमने उसे सुनने वाला, देखने वाला बना दिया। हमने उसे राह समझाई, चाहे वह शुक्र करने वाला बने या इंकार करने वाला। (1-3)

हमने मुंकिरों के लिए ज़ंजीरें और तौक़ और भड़कती आग तैयार कर रखी है। नेक लोग ऐसे प्याले से पियेंगे जिसमें काफ़ूर की आमेज़िश होगी।

उस चशमे (स्रोत) से अल्लाह के बंदे पियेंगे। वे उसकी शाख़ें निकालेंगे। वे लोग वाजिबात (दायित्वों) को पूरा करते हैं और ऐसे दिन से डरते हैं जिसकी सख़्ती आम होगी। और उसकी मुहब्बत पर खाना खिलाते हैं मोहताज को और यतीम को और क़ैदी को। हम जो तुम्हें खिलाते हैं तो अल्लाह की ख़ुशी चाहने के लिए। हम न तुमसे बदला चाहते और न शुक्रगुज़ारी। हम अपने रब की तरफ़ से एक सख़्त और तल्ख़ (कटु) दिन का अंदेशा रखते हैं। पस अल्लाह ने उन्हें उस दिन की सख़्ती से बचा लिया। और उन्हें ताज़गी और .ख़ुशी अता फ़रमाई और उनके सब्र के बदले में उन्हें जन्नत और रेशमी लिबास अता किया। टेक लगाए होंगे उसमें तख़्तों पर, उसमें न वे गर्मी से दो चार होंगे और न सर्दी से। जन्नत के साये उन पर झुके हुए होंगे और उनके फल उनके बस में होंगे। और उनके आगे चांदी के बर्तन और शीशे के प्याले गर्दिश में होंगे। शीशे चांदी के होंगे, जिन्हें भरने वालों ने मुनासिब अंदाज़ से भरा होगा। (4-16)

और वहां उन्हें एक और जाम पियाला जाएगा जिसमें सौंठ की आमेज़िश होगी। यह उसमें एक चश्मा (स्रोत) है जिसे सलसबील कहा जाता है। और उनके पास फिर रहे होंगे ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, तुम उन्हें देखो तो समझो कि मोती हैं जो बिखेर दिए गए हैं। और तुम जहां देखोगे वहीं अज़ीम नेमत और अज़ीम बादशाही देखोगे। उनके ऊपर बारीक रेशम के सब्ज़ कपड़े होंगे और दबीज़ (गाढ़े) रेशम के सब्ज़ कपड़े भी, और उन्हें चांदी के कंगन पहनाए जाएंगे। और उनका रब उन्हें पाक़ीज़ा मशरूब (पेय) पिलाएगा। बेशक यह तुम्हारा सिला (प्रतिफल) है और तुम्हारी कोशिश मक़बूल (माननीय) हुई। (17-22)

हमने तुम पर क़ुरआन थोड़ा-थोड़ा करके उतारा है। पस तुम अपने रब के हुक्म पर सब्र करो और उनमें से किसी गुनाहगार या नाशुक्र की बात न मानो। और अपने रब का नाम सुबह व शाम याद करो। और रात को भी उसे सज्दा करो। और उसकी तस्बीह करो रात के लंबे हिस्से में। ये लोग जल्दी मिलने वाली चीज़ को चाहते हैं और उन्होंने छोड़ रखा है अपने पीछे एक भारी दिन

को। हम ही ने उन्हें पैदा किया और हमने उनके जोड़बंद मज़बूत किए, और जब हम चाहेंगे उन्हीं जैसे लोग उनकी जगह बदल लाएंगे। यह एक नसीहत है, पस जो शख़्स चाहे अपने रब की तरफ़ रास्ता इख़्तियार कर ले। और तुम नहीं चाह सकते मगर यह कि अल्लाह चाहे। बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है, और ज़ालिमों के लिए उसने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। (23-31)

सूरह-77. अल-मुरसलात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम है हवाओं की जो छोड़ दी जाती हैं। फिर वे तूफ़ानी रफ़्तार से चलती हैं। और बादलों को उठाकर फैलाती हैं। फिर मामले को जुदा करती हैं। फिर याददिहानी डालती हैं। उज़्र के तौर पर या डरावे के तौर पर। जो वादा तुमसे किया जा रहा है वह ज़रूर वाक़ेअ (घटित) होने वाला है। (1-7)

पस जब सितारे बेनूर हो जाऐंगे। और जब आसमान फट जाएगा। और जब पहाड़ रेज़ा-रेज़ा कर दिए जाएंगे। और जब पैग़म्बर मुअय्यन (निश्चित) वक़्त पर जमा किए जाएंगे। किस दिन के लिए वे टाले गए हैं। फ़ैसले के दिन के लिए। और तुम्हें क्या ख़बर कि फ़ैसले का दिन क्या है। तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। क्या हमने अगलों को हलाक नहीं किया। फिर हम उनके पीछे भेजते हैं पिछलों को। हम मुजरिमों के साथ ऐसा ही करते हैं। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (8-19)

क्या हमने तुम्हें एक हक़ीर (तुच्छ) पानी से पैदा नहीं किया। फिर उसे एक महफ़ूज़ जगह रखा, एक मुक़र्रर मुद्दत तक। फिर हमने एक अंदाज़ा ठहराया, हम कैसा अच्छा अंदाज़ा ठहराने वाले हैं। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों की। क्या हमने ज़मीन को समेटने वाला नहीं बनाया, ज़िंदों के लिए और मुर्दों के लिए। और हमने उसमें ऊंचे पहाड़ बनाए और तुम्हें मीठा पानी पिलाया। उस रोज़ ख़राबी है झुठलाने वालों के लिए। (20-28)

चलो उस चीज़ की तरफ़ जिसे तुम झुठलाते थे। चलो तीन शाख़ों वाले

साये की तरफ़। जिसमें न साया है और न वह गर्मी से बचाता है। वह अंगारे बरसाएगा जैसे कि ऊंचा महल, ज़र्द ऊंटों की मानिंद, उस दिन ख़राबी है झुठलाने वालों के लिए। यह वह दिन है जिसमें लोग बोल न सकेंगे। और न उन्हें इजाज़त होगी कि वे उज़्र पेश करें। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। यह फ़ैसले का दिन है। हमने तुम्हें और अगले लोगों को जमा कर लिया। पस अगर कोई तदबीर हो तो मुझ पर तदबीर चलाओ। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (29-40)

बेशक डरने वाले साये में और चशमों (स्रोतों) में होंगे, और फलों में जो वे चाहें। मज़े के साथ खाओ और पियो। उस अमल के बदले में जो तुम करते थे। हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। खाओ ओर बरत लो थोड़े दिन, बेशक तुम गुनाहगार हो। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। और जब उनसे कहा जाता है कि झुको तो वे नहीं झुकते। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। अब इसके बाद वे किस बात पर ईमान लाएंगे। (41-50)

सूरह-78. अन-नबा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

लोग किस चीज़ के बारे में पूछ रहे हैं। उस बड़ी ख़बर के बारे में, जिसमें वे लोग मुख़्तलिफ़ हैं। हरगिज़ नहीं, अनक़रीब वे जान लेंगे। हरगिज़ नहीं, अनक़रीब वे जान लेंगे। क्या हमने ज़मीन को फ़र्श नहीं बनाया, और पहाड़ों को मेख़ें। और तुम्हें हमने बनाया जोड़े जोड़े, और नींद को बनाया तुम्हारी थकान दूर करने के लिए। और हमने रात को पर्दा बनाया, और हमने दिन को मआश (जीविका) का वक़्त बनाया। और हमने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए। और हमने उसमें एक चकमता हुआ चराग़ रख दिया। और हमने पानी भरे बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया, ताकि हम उसके ज़रिए से उगाएं ग़ल्ला और सब्ज़ी और घने बाग़। बेशक फ़ैसले का दिन एक मुक़र्रर वक़्त है। (1-17)

जिस दिन सूर फूंका जाएगा, फिर तुम फ़ौज दर फ़ौज आओगे। और आसमान खोल दिया जाएगा, फिर उसमें दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएंगे। और पहाड़ चला दिए जाएंगे तो वे रेत की तरह हो जाएंगे। बेशक जहन्नम घात में है, सरकशों का ठिकाना, उसमें वे मुद्दतों पड़े रहेंगे। उसमें वे न किसी ठंडक को चखेंगे और न पीने की चीज़, मगर गर्म पानी और पीप, बदला उनके अमल के मुवाफ़िक़। वे हिसाब का अंदेशा नहीं रखते थे। और उन्होंने हमारी आयतों का बिल्कुल झुठला दिया। और हमने हर चीज़ को लिखकर शुमार कर रखा है। पस चखो कि हम तुम्हारी सज़ा ही बढ़ाते जाऐंगे। (18-30)

बेशक डरने वालों के लिए कामयाबी है। बाग़ और अंगूर। और नौख़ेज़ हमसिन लड़कियां। और भरे हुए जाम। वहां वे लग़्व (घटिया, निरर्थक) और झूठी बात न सुनेंगे। बदला तेरे रब की तरफ़ से होगा, उनके अमल के हिसाब से रहमान की तरफ़ से जो आसमानों और ज़मीन और उनके दर्मियान की चीज़ों का रब है, कोई क़ुदरत नहीं रखता कि उससे बात करे। जिस दिन रूह और फ़रिश्ते सफ़बस्ता (पंक्तिबद्ध) खड़े होंगे, कोई न बोलेगा मगर जिसे रहमान इजाज़त दे, और वह ठीक बात कहेगा। यह दिन बरहक़ है, पस जो चाहे अपने रब की तरफ़ ठिकाना बना ले। हमने तुम्हें क़रीब आ जाने वाले अज़ाब से डरा दिया है, जिस दिन आदमी उसको देख लेगा जो उसके हाथों ने आगे भेजा है, और मुंकिर कहेगा, काश मैं मिट्टी होता। (31-40)

सूरह-79. अन-नाज़िआत

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम है जड़ से उखाड़ने वाली हवाओं की। और क़सम है आहिस्ता चलने वाली हवाओं की। और क़सम है तैरने वाले बादलों की। फिर सबक़त (अग्रसरता) करके बढ़ने वालों की। फिर मामले की तदबीर करने वालों की। जिस दिन हिला देने वाली हिला डालेगी। उसके पीछे एक और आने वाली चीज़ आएगी। कितने दिल उस दिन धड़कते होंगे। उनकी आंखें झुक रही होंगी। वे कहते हैं क्या हम पहली हालत में फिर वापस होंगे। क्या जब हम

बोसीदा हड्डियां हो जाएंगे। उन्होंने कहा कि यह वापसी तो बड़े घाटे की होगी। वह तो बस एक डांट होगी, फिर यकायक वे मैदान में मौजूद होंगे। (1-14)

क्या तुम्हें मूसा की बात पहुंची है। जबकि उसके रब ने उसे तुवा की मुक़द्दस (पवित्र) वादी में पुकारा। फ़िरऔन के पास जाओ, वह सरकश हो गया है। फिर उससे कहो क्या तुझे इस बात की ख़्वाहिश है कि तू दुरुस्त हो जाए। और मैं तुझे तेरे रब की राह दिखाऊं फिर तू डरे। पस मूसा ने उसे बड़ी निशानी दिखाई। फिर उसने झुठलाया और न माना। फिर वह पलटा कोशिश करते हुए। फिर उसने जमा किया, फिर उसने पुकारा। पस उसने कहा कि मैं तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूं। पस अल्लाह ने उसे आख़िरत और दुनिया के अज़ाब में पकड़ा। बेशक इसमें नसीहत है हर उस शख़्स के लिए जो डरे। (15-26)

क्या तुम्हारा बनाना ज़्यादा मुश्किल है या आसमान का, अल्लाह ने उसे बनाया। उसकी छत को बुलन्द किया फिर उसे दुरुस्त बनाया। और उसकी रात को तारीक (अंधकारमय) बनाया और उसके दिन को ज़ाहिर किया। और ज़मीन को इसके बाद फैलाया। उससे उसका पानी और चारा निकाला। और पहाड़ों को क़ायम कर दिया, सामाने हयात (जीवन-सामग्री) के तौर पर तुम्हारे लिए और तुम्हारे मवेशियों के लिए। (27-33)

फिर जब वह बड़ा हंगामा आएगा। जिस दिन इंसान अपने किए को याद करेगा। और देखने वालों के सामने दोज़ख़ ज़ाहिर कर दी जाएगी। पस जिसने सरकशी की और दुनिया की ज़िंदगी को तरजीह दी, तो दोज़ख़ उसका ठिकाना होगा और जो शख़्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका, तो जन्नत उसका ठिकाना होगा। वे क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब खड़ी होगी। तुम्हें क्या काम उसके ज़िक्र से। यह मामला तेरे रब के हवाले है। तुम तो बस डराने वाले हो उस शख़्स को जो डरे। जिस रोज़ ये उसे देखेंगे तो गोया वे दुनिया में नहीं ठहरे मगर एक शाम या उसकी सुबह। (34-46)

सूरह-80. अबस

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

उसने त्यौरी चढ़ाई और बेरुख़ी बरती इस बात पर कि अंधा उसके पास आया। और तुम्हें क्या ख़बर कि वह सुधर जाए या नसीहत को सुने तो नसीहत उसके काम आए। जो शख़्स बेपरवाही बरतता है, तुम उसकी फ़िक्र में पड़ते हो। हालाँकि तुम पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं अगर वह न सुधरे। और जो शख़्स तुम्हारे पास दौड़ता हुआ आता है और वह डरता है, तो तुम उससे बेपरवाही बरतते हो। हरगिज़ नहीं, यह तो एक नसीहत है, पस जो चाहे याददिहानी हासिल करे। वह ऐसे सहीफ़ों (ग्रंथों) में है जो मुकर्रम हैं, बुलन्द मर्तबा हैं, पाकीज़ा हैं, मुअज़्ज़ज़, नेक कातिबों के हाथों में। (1-16)

बुरा हो आदमी का, वह कैसा नाशुक्र है। उसे किस चीज़ से पैदा किया है, एक बूंद से। उसे पैदा किया। फिर उसके लिए अंदाज़ा ठहराया। फिर उसके लिए राह आसान कर दी। फिर उसे मौत दी, फिर उसे क़ब्र में ले गया। फिर जब वह चाहेगा उसे दुबारा ज़िंदा कर देगा। हरगिज़ नहीं, उसने पूरा नहीं किया जिसका अल्लाह ने उसे हुक्म दिया था। पस इंसान को चाहिए कि वह अपने खाने को देखे। हमने पानी बरसाया अच्छी तरह, फिर हमने ज़मीन को अच्छी तरह फाड़ा। फिर उगाए उसमें ग़ल्ले और अंगूर और तरकारियां और ज़ैतून और खजूर और घने बाग़ और फल और सब्ज़ा, तुम्हारे लिए और तुम्हारे मवेशियों के लिए सामाने हयात (जीवन-सामग्री) के तौर पर (17-32)

पस जब वह कानों को बहरा कर देने वाला शोर बरपा होगा। जिस दिन आदमी भागेगा अपने भाई से, और अपनी मां से और अपने बाप से, और अपनी बीवी से और अपने बेटों से। उनमें से हर शख़्स को उस दिन ऐसा फ़िक्र लगा होगा जो उसे किसी और तरफ़ मुतवज्जह न होने देगा। कुछ चेहरे उस दिन रोशन होंगे, हंसते हुए, ख़ुशी करते हुए। और कुछ चेहरों पर उस दिन ख़ाक उड़ रही होगी, उन पर स्याही छाई हुई होगी। यही लोग मुंकिर हैं, ढीठ हैं। (33-42)

सूरह-81. अत-तकवीर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब सूरज लपेट दिया जाएगा। और जब सितारे बेनूर हो जाएंगे। और जब पहाड़ चलाए जाएंगे। और जब दस महीने की गाभन ऊंटनियां आवारा फिरेंगी। और जब वहशी जानवर इकट्ठा हो जाएंगे। और जब समुद्र भड़का दिए जाएंगे। और जब एक-एक क़िस्म के लोग इकट्ठा किए जाएंगे। और जब ज़िंदा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा कि वह किस क़ुसूर में मारी गई। और जब आमालनामे (कर्म-पत्र) खोले जाएंगे। और जब आसमान खुल जाएगा। और दोज़ख़ भड़काई जाएगी। और जब जन्नत क़रीब लाई जाएगी। हर शख़्स जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है। (1-14)

पस नहीं, मैं क़सम खाता हूं पीछे हटने वाले, चलने वाले और छुप जाने वाले सितारों की। और रात की जब वह जाने लगे। और सुबह की जब वह आने लगे कि यह एक बाइज़्ज़त रसूल का लाया हुआ कलाम है। क़ुव्वत वाला, अर्श वाले के नज़दीक बुलन्द मर्तबा है। उसकी बात मानी जाती है, वह अमानतदार है। और तुम्हारा साथी दीवाना नहीं। और उसने उसे खुले उफ़ुक़ (क्षितिज) में देखा है। और वह ग़ैब की बातों का हरीस (हिर्स रखने वाला) नहीं। और वह शैतान मरदूद का क़ौल नहीं। फिर तुम किधर जा रहे हो। यह तो बस आलम (संसार) वालों के लिए एक नसीहत है, उसके लिए जो तुम में से सीधा चलना चाहे। और तुम नहीं चाह सकते मगर यह है कि अल्लाह रब्बुल आलमीन चाहे। (15-29)

सूरह-82. अल-इनफ़ितार

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब आसमान फट जाएगा। और जब सितारे बिखर जाएंगे। और जब समुद्र बह पड़ेंगे। और जब क़ब्रें खोल दी जाएंगी। हर शख़्स जान लेगा कि उसने क्या आगे भेजा और क्या पीछे छोड़ा। ऐ इंसान तुझे किस चीज़ ने अपने

रब्बे करीम की तरफ़ से धोखे में डाल रखा है। जिसने तुझे पैदा किया। फिर तेरे आज़ा (शरीरांग) को दुरुस्त किया, फिर तुझे मुतनासिब (संतुलित) बनाया। जिस सूरत में चाहा तुम्हें तर्तीब दे दिया। हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम इंसाफ़ के दिन को झुठलाते हो। हालाँकि तुम पर निगहबान मुक़र्रर हैं। मुअज़्ज़ज़ लिखने वाले। वे जानते हैं जो कुछ तुम करते हो। बेशक नेक लोग ऐश में होंगे। और बेशक गुनाहगार दोज़ख़ में। इंसाफ़ के दिन वे उसमें डाले जाएंगे। वे उससे जुदा होने वाले नहीं। और तुम्हें क्या ख़बर कि इंसाफ़ का दिन क्या है। फिर तुम्हें क्या ख़बर इंसाफ़ का दिन क्या है। उस दिन कोई जान किसी दूसरी जान के लिए कुछ न कर सकेगी। और मामला उस दिन अल्लाह ही के इख़्तियार में होगा। (1-19)

सूरह-83. अल-मुतफ़्फ़िफ़ीन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ख़राबी है नाप तौल में कमी करने वालों की। जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लें। और जब उन्हें नाप कर या तौल कर दें तो घटा कर दें। क्या ये लोग नहीं समझते कि वे उठाए जाने वाले हैं, एक बड़े दिन के लिए जिस दिन तमाम लोग ख़ुदावंदे आलम के सामने खड़े होंगे। हरगिज़ नहीं, बेशक गुनाहगारों का आमालनामा (कर्म-पत्र) सिज्जीन में होगा। और तुम क्या जानो कि सिज्जीन क्या है। वह एक लिखा हुआ दफ़्तर है। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों की। जो इंसाफ़ के दिन को झुठलाते हैं। और उसे वही शख़्स झुठलाता है जो हद से गुज़रने वाला हो, गुनाहगार हो। जब उसे हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह कहता है कि ये अगलों की कहानियां है। हरगिज़ नहीं, बल्कि उनके दिलों पर उनके आमाल का ज़ंग चढ़ गया है। हरगिज़ नहीं, बल्कि उस दिन वे अपने रब से ओट में रखे जाएंगे। फिर वे दोज़ख़ में दाख़िल होंगे। फिर कहा जाएगा कि यही वह चीज़ है जिसे तुम झुठलाते थे। (1-17)

हरगिज़ नहीं, बेशक नेक लोगों का आमालनामा इल्लिय्यीन में होगा। और तुम क्या जानो इल्लिय्यीन क्या है। लिखा हुआ दफ़्तर है, मुक़र्रब फ़रिश्तों की

निगरानी में। बेशक नेक लोग आराम में होंगे। तख़्तों पा बैठे देखते होंगे। उनके चेहरों में तुम आराम की ताज़गी महसूस करोगे। उन्हें शराबे ख़ालिस मुहर लगी हुई पिलाई जाएगी, जिस पर मुश्क की मुहर होगी। और यह चीज़ है जिसकी हिर्स करने वालों को हिर्स करना चाहिए। और उस शराब मे तस्नीम की आमेज़िश होगी। एक ऐसा चशमा (स्रोत) जिससे मुक़र्रब लोग पियेंगे। बेशक जो लोग मुजरिम थे वे ईमान वालों पर हंसते थे। और जब वे उनके सामने से गुज़रते तो वे आपस में आंखों में इशारे करते थे। और जब वे अपने लोगों में लौटते तो दिल्लगी करते हुए लौटते। और जब वे उन्हें देखते तो कहते कि ये बहके हुए लोग हैं। हालाँकि वे उन पर निगरां बनाकर नहीं भेजे गए। पस आज ईमान वाले मुंक्रिरों पर हंसते होंगे, तख़्तों पर बैठे देख रहे होंगे। वाक़ई मुंकिरों को उनके किए का ख़ूब बदला मिला। (18-36)

सूरह-84. अल-इनशिक़ाक़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब आसमान फट जाएगा। और वह अपने रब का हुक्म सुन लेगा और वह इसी लायक़ है। और जब ज़मीन फैला दी जाएगी। और वह अपने अंदर की चीज़ों को उगल देगी और ख़ाली हो जाएगी। और वह अपने रब का हुक्म सुन लेगी और वह इसी लायक़ है। ऐ इंसान तू कशां-कशां (सश्रम) अपने रब की तरफ़ जा रहा है। फिर उससे मिलने वाला है। तो जिसे उसका आमालनामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा। उससे आसान हिसाब लिया जाएगा। और वह अपने लोगों के पास ख़ुश-ख़ुश आएगा। और जिसका आमालनामा उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा, वह मौत को पुकारेगा, और जहन्नम में दाख़िल होगा। वह अपने लोगों में बेग़म रहता था। उसने ख़्याल किया था कि उसे लौटना नहीं है। क्यों नहीं। उसका रब उसे देख रहा था। पस नहीं, मैं क़सम खाता हूं शफ़क़ (सांध्य-लालिमा) की। और रात की और उन चीज़ों की जिन्हें वह समेट लेती है। और चांद की जब वह पूरा हो जाए। कि तुम्हें ज़रूर एक हालत के बाद दूसरी हालत पर पहुंचना है। तो उन्हें क्या हो गया है कि वे

ईमान नहीं लाते। और जब उनके सामने क़ुरआन पढ़ा जाता है तो वे ख़ुदा की तरफ़ नहीं झुकते। बल्कि मुंकिरीन झुठला रहें हैं। और अल्लाह जानता है जो कुछ वे जमा कर रहे हैं। पस उन्हें एक दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो। लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अमल किए उनके लिए कभी न ख़त्म होने वाला अज्र (प्रतिफल) है। (1-25)

सूरह-85. अल-बुरूज

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम है बुर्जों वाले आसमान की। और वादा किए हुए दिन की। और देखने वाले की और देखी हुई की। हलाक हुए खन्दक़ वाले, जिसमें भड़कते हुए ईंधन की आग थी। जबकि वे उस पर बैठे हुए थे। और जो कुछ वे ईमान वालों के साथ कर रहे थे उसे देख रहे थे। और उनसे उनकी दुश्मनी इसके सिवा किसी वजह से न थी कि वे ईमान लाए अल्लाह पर जो ज़बरदस्त है, तारीफ़ वाला है। उसी की बादशाही आसमानों और ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है। जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को सताया, फिर तौबा न की तो उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है। और उनके लिए जलने का अज़ाब है। बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनके लिए बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, यह बड़ी कामयाबी है। बेशक तेरे रब की पकड़ बड़ी सख़्त है। वही आग़ाज़ करता है और वही लौटाएगा। और वह बख़्शने वाला है, मुहब्बत करने वाला है, अर्शबरीं (सिंहासन) का मालिक, कर डालने वाला जो चाहे। क्या तुम्हें लश्करों की ख़बर पहुंची है, फ़िरऔन और समूद की। बल्कि ये मुंकिर झुठलाने पर लगे हुए हैं। और अल्लाह उन्हें हर तरह से घेरे हुए है। बल्कि वह एक बाअज़्मत (गौरवशाली) क़ुरआन है, लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) में लिखा हुआ। (1-22)

सूरह-86. अत-तारिक़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम है आसमान की और रात को नुमूदार (प्रकट) होने वाले की। और तुम क्या जानो कि वह रात को नुमूदार होने वाला क्या है, चमकता हुआ तारा। कोई जान ऐसी नहीं है जिसके ऊपर निगहबान न हो। तो इंसान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है। वह एक उछलते पानी से पैदा किया गया है। जो निकलता है पीठ और सीने के दर्मियान से। बेशक वह उसे दुबारा पैदा करने पर क़ादिर है। जिस दिन छुपी बातें परखी जाएंगी। उस वक़्त इंसान के पास कोई ज़ोर न होगा और न कोई मददगार। क़सम है आसमान चक्कर मारने वाले की। और फूट निकलने वाली ज़मीन की। बेशक यह दोटूक बात है और वह हंसी की बात नहीं। वे तदबीर (युक्ति) करने में लगे हुए हैं। और मैं भी तदबीर करने में लगा हुआ हूं। पस मुंकिरों को ढील दे, उन्हें ढील दे थोड़े दिनों। (1-17)

सूरह-87. अल-आला

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अपने रब के नाम की पाकी बयान कर जो सबसे ऊपर है। जिसने बनाया फिर ठीक किया। और जिसने ठहराया, फिर राह बताई। और जिसने चारा निकाला। फिर उसे स्याह कूड़ा बना दिया। हम तुम्हें पढ़ाएंगे फिर तुम नहीं भूलोगे। मगर जो अल्लाह चाहे, वह जानता है खुले को भी और उसे भी जो छुपा हुआ है। और हम तुम्हें ले चलेंगे आसान राह। पस नसीहत करो अगर नसीहत फ़ायदा पहुंचाए। वह शख़्स नसीहत क़ुबूल करेगा जो डरता है। और उससे गुरेज़ (विमुखता) करेगा वह जो बदबख़्त होगा। वह पड़ेगा बड़ी आग में। फिर न उसमें मरेगा और न जिएगा। कामयाब हुआ जिसने अपने को पाक किया। और अपने रब का नाम लिया। फिर नमाज़ पढ़ी। बल्कि तुम दुनियावी ज़िंदगी को मुक़द्दम रखते हो। और आख़िरत बेहतर है और पाएदार है। यही अगले सहीफ़ों (ग्रंथों) में भी है, मूसा और इब्राहीम के सहीफ़ों में। (1-19)

सूरह-88. अल-ग़ाशियह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क्या तुम्हें उस छा जाने वाली की ख़बर पहुंची है। कुछ चेहरे उस दिन ज़लील होंगे, मेहनत करने वाले थके हुए। वे दहकती आग में पड़ेंगे। खौलते हुए चशमे (स्रोत) से पानी पिलाए जाएंगे। उनके लिए कांटों वाले झाड़ के सिवा और कोई खाना न होगा, जो न मोटा करे और न भूख मिटाए। कुछ चेहरे उस दिन बारौनक़ होंगे। अपनी कमाई पर ख़ुश होंगे। ऊंचे बाग़ में। उसमें कोई लग़्व (घटिया, निरर्थक) बात नहीं सुनेंगे। उसमें बहते हुए चशमे होंगे। उसमें तख़्त होंगे ऊंचे बिछे हुए। और आबख़ोरे सामने चुने हुए। और बराबर बिछे हुए गद्दे। और क़ालीन हर तरफ़ पड़े हुए। तो क्या वे ऊंट को नहीं देखते कि वह कैसे पैदा किया गया। और आसमान को कि वह किस तरह बुलन्द किया गया। और पहाड़ों को कि वह किस तरह खड़ा किया गया। और ज़मीन को कि वह किस तरह बिछाई गई। पस तुम याददिहानी कर दो, तुम बस याददिहानी करने वाले हो। तुम उन पर दारोग़ा नहीं। मगर जिसने रूगर्दानी (अवहेलना) की और इंकार किया, तो अल्लाह उसे बड़ा अज़ाब देगा। हमारी ही तरफ़ उनकी वापसी है। फिर हमारे ज़िम्मे है उनसे हिसाब लेना। (1-26)

सूरह-89. अल-फ़ज्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम है फ़ज्र (उषाकाल) की। और दस रातों की। और जुफ़्त (सम) और ताक़ (विषम) की। और रात की जब वह चलने लगे। क्यों, इसमें अक़्लमंद के लिए काफ़ी क़सम है। तुमने नहीं देखा, तुम्हारे रब ने आद के साथ क्या मामला किया, सुतूनों (स्तंभों) वाले इरम के साथ। जिनके बराबर कोई क़ौम मुल्कों में पैदा नहीं की गई। और समूद के साथ जिन्होंने वादी में चट्टानें तराशीं। और मेख़ों वाले फ़िरऔन के साथ, जिन्होंने मुल्कों में सरकशी की।

फिर उनमें बहुत फ़साद फैलाया। तो तुम्हारे रब ने उन पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया। बेशक तुम्हारा रब घात में है। पस इंसान का हाल यह है कि जब उसका रब उसे आज़माता है और उसे इज़्ज़त और नेमत देता है तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी। और जब वह उसे आज़माता है और उसका रिज़्क़ उस पर तंग कर देता है तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे ज़लील कर दिया। हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम यतीम की इज़्ज़त नहीं करते। और तुम मिस्कीन को खाना खिलाने पर एक दूसरे को नहीं उभारते। और तुम विरासत को समेटकर खा जाते हो। और तुम माल से बहुत ज़्यादा मुहब्बत रखते हो। हरगिज़ नहीं, जब ज़मीन को तोड़कर रेज़ा-रेज़ा कर दिया जाएगा। और तुम्हारा रब आएगा और फ़रिश्ते आएंगे क़तार (पंक्ति) दर क़तार। और उस दिन जहन्नम लाई जाएगी, उस दिन इंसान को समझ आएगी, और अब समझ आने का मौक़ा कहां। वह कहेगा, काश मैं अपनी ज़िंदगी में कुछ आगे भेजता। पस उस दिन न तो ख़ुदा के बराबर कोई अज़ाब देगा, और न उसके बांधने के बराबर कोई बांधेगा। ऐ नफ़्से मुतमइन (संतुष्ट आत्मा) चल अपने रब की तरफ़। तू उससे राज़ी, वह तुझसे राज़ी। फिर शामिल हो मेरे बंदों में और दाख़िल हो मेरी जन्नत में। (1-30)

सूरह-90. अल-बलद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

नहीं, मैं क़सम खाता हूं इस शहर (मक्का) की। और तुम इसमें मुक़ीम (रह रहे) हो। और क़सम है बाप की और उसकी औलाद की। हमने इंसान को मशक़्क़त (सश्रम स्थिति) में पैदा किया है। क्या वह ख़्याल करता है कि उस पर किसी का ज़ोर नहीं। कहता है कि मैंने बहुत सा माल ख़र्च कर दिया। क्या वह समझता है कि किसी ने उसे नहीं देखा। क्या हमने उसे दो आंखें नहीं दीं। और एक ज़बान और दो होंट। और हमने उसे दोनों रास्ते बता दिए। फिर वह घाटी पर नहीं चढ़ा। और तुम क्या जानो कि क्या है वह घाटी। गर्दन को छुड़ाना। या भूख के ज़माने में खिलाना, क़राबतदार यतीम

को, या ख़ाकनशीं (धूल-धूसरित) मोहताज को। फिर वह उन लोगों में से हो जो ईमान लाए और एक दूसरे को सब्र की और हमदर्दी की नसीहत की। यही लोग नसीब वाले हैं। और जो हमारी आयतों के मुंकिर हुए वे बदबख़्ती (दुर्भाग्य) वाले हैं। उन पर आग छाई हुई होगी। (1-20)

सूरह-91. अश-शम्स

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम है सूरज की और उसकी धूप चढ़ने की। और चांद की जबकि वह सूरज के पीछे आए। और दिन की जबकि वह उसे रोशन कर दे। और रात की जब वह उसे छुपा ले। और आसमान की और जैसा कि उसे बनाया। और ज़मीन की और जैसा कि उसे फैलाया। और जान की जैसा कि उसे ठीक किया। फिर उसे समझ दी, उसकी बदी की और उसकी नेकी की। कामयाब हुआ जिसने उसे पाक (शुद्ध) किया और नामुराद हुआ जिसने उसे आलूदा (अशुद्ध) किया। समूद ने अपनी सरकशी की बिना पर झुठलाया। जबकि उठ खड़ा हुआ उनका सबसे बड़ा बदबख़्त। तो अल्लाह के रसूल ने उनसे कहा कि अल्लाह की ऊंटनी और उसके पानी पीने से ख़बरदार। तो उन्होंने उसे झुठलाया। फिर ऊंटनी को मार डाला। फिर उनके रब ने उन पर हलाकत नाज़िल की। फिर सबको बराबर कर दिया। वह नहीं डरता कि उसके पीछे क्या होगा। (1-15)

सूरह-92. अल-लैल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम है रात की जबकि वह छा जाए। और दिन की जबकि वह रोशन हो और उसकी जो उसने पैदा किए नर और मादा। कि तुम्हारी कोशिशें अलग-अलग हैं। पस जिसने दिया और वह डरा और उसने भलाई को सच माना। तो उसे हम आसान रास्ते के लिए सुहूलत देंगे। और जिसने बुख़्ल (कंजूसी) किया और बेपरवाह रहा, और भलाई को झुठलाया, तो हम उसे

सख़्त रास्ते के लिए सुहूलत देंगे। और उसका माल उसके काम न आएगा जब वह गढ़े में गिरेगा। बेशक हमारे ज़िम्मे है राह बताना। और बेशक हमारे इख़्तियार में है आख़िरत और दुनिया। पस मैंने तुम्हें डरा दिया भड़कती हुई आग से। उसमें वही पड़ेगा जो बड़ा बदबख़्त है। जिसने झुठलाया और रूगर्दानी (अवहेलना) की। और हम उससे बचा देंगे ज़्यादा डरने वाले को। जो अपना माल देता है पाकी हासिल करने के लिए और उस पर किसी का एहसान नहीं जिसका बदला उसे देना हो। मगर सिर्फ़ अपने ख़ुदाए बरतर की ख़ुशनूदी के लिए। और अनक़रीब वह ख़ुश हो जाएगा। (1-21)

सूरह-93. अज़-ज़ुहा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम है रोज़े रोशन (चढ़ते दिन) की। और रात की जब वह छा जाए। तुम्हारे रब ने तुम्हें नहीं छोड़ा। और न वह तुमसे बेज़ार (अप्रसन्न) हुआ। और यक़ीनन आख़िरत तुम्हारे लिए दुनिया से बेहतर है। और अनक़रीब अल्लाह तुझे देगा। फिर तू राज़ी हो जाएगा। क्या अल्लाह ने तुम्हें यतीम (अनाथ) नहीं पाया फिर ठिकाना दिया। और तुम्हें मुतलाशी पाया तो राह दिखाई। और तुम्हें नादार (निर्धन) पाया तो तुम्हें ग़नी (समृद्ध) कर दिया। पस तुम यतीम पर सख़्ती न करो। और तुम साइल (मांगने वाले) को न झिड़को। और तुम अपने रब की नेमत बयान करो। (1-11)

सूरह-94. अश-शरह़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क्या हमने तुम्हारा सीना तुम्हारे लिए खोल नहीं दिया। और तुम्हारा वह बोझ उतार दिया जिसने तुम्हारी पीठ झुका दी थी। और हमने तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द किया। पस मुश्किल के साथ आसानी है। बेशक मुश्किल के साथ आसानी है। फिर जब तुम फ़ारिग़ हो जाओ तो मेहनत करो। और अपने रब की तरफ़ तवज्जोह रखो। (1-8)

सूरह-95. अत-तीन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम है तीन की और ज़ैतून की। और तूरे सीना की। और इस अम्न वाले शहर की। हमने इंसान को बेहतरीन साख़्त (संरचना) पर पैदा किया। फिर उसे सबसे नीचे फेंक दिया। लेकिन जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए तो उनके लिए कभी ख़त्म न होने वाला अज्र (प्रतिफल) है। तो अब क्या है जिससे तुम बदला मिलने को झुठलाते हो। क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं। (1-8)

सूरह-96. अल-अलक़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

पढ़ अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया। पैदा किया इंसान को अलक़ (ख़ून के लोथड़े) से। पढ़ और तेरा रब बड़ा करीम है जिसने इल्म सिखाया क़लम से। इंसान को वह कुछ सिखाया जो वह जानता न था। हरगिज़ नहीं, इंसान सरकशी करता है। इस बिना पर कि वह अपने को आत्मनिर्भर देखता है। बेशक तेरे रब ही की तरफ़ लौटना है। क्या तुमने देखा उस शख़्स को जो मना करता है, एक बंदे को जब वह नमाज़ अदा करता हो तुम्हारा क्या ख़्याल है, अगर वह हिदायत पर हो। या डर की बात सिखाता हो। तुम्हारा क्या ख़्याल है, अगर उसने झुठलाया और रूगर्दानी (अवहेलना) की। क्या उसने नहीं जाना कि अल्लाह देख रहा है। हरगिज़ नहीं, अगर वह बाज़ न आया तो हम पेशानी के बाल पकड़कर उसे खींचेंगे। उस पेशानी को जो झूठी गुनाहगार है। अब वह बुला ले अपने हामियों को। हम भी दोज़ख़ के फ़रिश्तों को बुलाएंगे। हरगिज़ नहीं, उसकी बात न मान और सज्दा कर और क़रीब हो जा। (1-19)

सूरह-97. अल-क़द्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हमने इसे उतारा है शबे क़द्र (गौरवपूर्ण रात) में। और तुम क्या जानो कि शबे क़द्र क्या है। शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। फ़रिश्ते और रूह उसमें अपने रब की इजाज़त से उतरते हैं। हर हुक्म लेकर। वह रात सरासर सलामती है, सुबह निकलने तक। (1-5)

सूरह-98. अल-बय्यिनह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अहले किताब (पूर्ववर्ती-ग्रंथ धारक) और मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) में से जिन लोगों ने इंकार किया वे बाज़ आने वाले नहीं जब तक उनके पास वाज़ेह दलील न आ जाए। अल्लाह की तरफ़ से एक रसूल जो पाक सहीफ़े (ग्रंथ) पढ़कर सुनाए। जिनमें दुरुस्त मज़ामीन लिखे हों। और जो लोग अहले किताब थे वे वाज़ेह दलील आ जाने के बाद ही मुख़्तलिफ़ हो गए। हालाँकि उन्हें यही हुक्म दिया गया था कि वे अल्लाह की इबादत करें। उसके लिए दीन को ख़ालिस कर दें, यकसू (एकाग्रचित्त) होकर और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें, और यही दुरुस्त दीन है। बेशक अहले किताब और मुश्रिकीन में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया वे जहन्नम की आग में पड़ेंगे, हमेशा उसमें रहेंगे, ये लोग बदतरीन ख़लाइक़ (निकृष्ट प्राणी) हैं। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए, वे लोग बेहतरीन ख़लाइक़ (सर्वोत्तम प्राणी) हैं। उनका बदला उनके रब के पास हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी और वे उससे राज़ी, यह उस शख़्स के लिए है जो अपने रब से डरे। (1-8)

सूरह-99. अज़्-ज़िलज़ाल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब ज़मीन शिद्‌दत से हिला दी जाएगी। और ज़मीन अपना बोझ निकाल कर बाहर डाल देगी। और इंसान कहेगा कि इसे क्या हुआ। उस दिन वह अपने हालात बयान करेगी। क्योंकि तुम्हारे रब का उसे यही हुक्म होगा। उस दिन लोग अलग-अलग निकलेंगे ताकि उनके आमाल उन्हें दिखाए जाएं। पस जिस शख़्स ने ज़र्रा बराबर नेकी की होगी वह उसे देख लेगा और जिस शख़्स ने ज़र्रा बराबर बदी की होगी वह उसे देख लेगा। (1-8)

सूरह-100. अल-आदियात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम है उन घोड़ों की जो हांपते हुए दौड़ते हैं। फिर टाप मारकर चिंगारी निकालने वाले। फिर सुबह के वक़्त छापा मारने वाले। फिर उसमें ग़ुबार उड़ाने वाले। फिर उस वक़्त फ़ौज में घुस जाने वाले। बेशक इंसान अपने रब का नाशुक्र है। और वह ख़ुद इस पर गवाह है। और वह माल की मुहब्बत में बहुत शदीद है। क्या वह उस वक़्त को नहीं जानता जब वह क़ब्रों से निकाला जाएगा। और निकाला जाएगा जो कुछ दिलों में है। बेशक उस दिन उनका रब उनसे ख़ूब बाख़बर होगा। (1-11)

सूरह-101. अल-क़ारिअह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

खड़खड़ाने वाली। क्या है खड़खड़ाने वाली। और तुम क्या जानो कि क्या है वह खड़खड़ाने वाली। जिस दिन लोग पतंगों की तरह बिखरे हुए होंगे। और पहाड़ धुनके हुए रंगीन ऊन की तरह हो जाएंगे। फिर जिस शख़्स का पल्ला भारी होगा वह दिलपसंद आराम में होगा। और जिस शख़्स का पल्ला हल्का होगा तो उसका ठिकाना गढ़ा है। और तुम क्या जानो कि वह क्या है, भड़कती हुई आग। (1-11)

सूरह-102. अत-तकासुर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

बोहतात (विपुलता) की हिर्स ने तुम्हें ग़फ़लत में रखा। यहां तक कि तुम क़ब्रों में जा पहुंचे। हरगिज़ नहीं, तुम बहुत जल्द जान लोगे। फिर हरगिज़ नहीं, तुम बहुत जल्द जान लोगे। हरगिज़ नहीं, अगर तुम यक़ीन के साथ जानते, कि तुम ज़रूर दोज़ख़ को देखोगे। फिर तुम उसे यक़ीन की आंख से देखोगे। फिर उस दिन तुमसे नेमतों के बारे में पूछा जाएगा। (1-8)

सूरह-103. अल-अस्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम है ज़माने की। बेशक इंसान घाटे में है। मगर जो लोग कि ईमान लाए और नेक अमल किया और एक दूसरे को हक़ की नसीहत की और एक दूसरे को सब्र की नसीहत की। (1-3)

सूरह-104. अल-हुमज़ह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

तबाही है हर ताना देने वाले, ऐब निकालने वाले की। जिसने माल को समेटा और गिन-गिन कर रखा। वह ख़्याल करता है कि उसका माल हमेशा उसके साथ रहेगा। हरगिज़ नहीं, वह फेंका जाएगा रौंदने वाली जगह में। और तुम क्या जानो कि वह रौंदने वाली जगह क्या है। अल्लाह की भड़काई हुई आग जो दिलों तक पहुंचेगी। वह उन पर बंद कर दी जाएगी, ऊंचे-ऊंचे सुतूनों (स्तंभों) में। (1-9)

सूरह-105. अल-फ़ील

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया। क्या उसने उसकी तदबीर को अकारत नहीं कर दिया। और उन पर चिड़ियां

भेजीं झुंड की झुंड। जो उन पर कंकर की पथरियां फेंकती थीं। फिर अल्लाह ने उन्हें खाए हुए भुस की तरह कर दिया। (1-5)

सूरह-106. क़ुरैश

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

इस वास्ते कि क़ुरैश मानूस (अभ्यस्त) हुए, जाड़े और गर्मी के सफ़र से मानूस। तो उन्हें चाहिए कि इस घर के रब की इबादत करें जिसने उन्हें भूख में खाना दिया और ख़ौफ़ से उन्हें अम्न दिया। (1-4)

सूरह-107. अल-माऊन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क्या तुमने देखा उस शख़्स को जो इंसाफ़ के दिन को झुठलाता है। वही है जो यतीम (अनाथ) को धक्के देता है। और मिस्कीन का खाना देने पर नहीं उभरता। पस तबाही है उन नमाज़ पढ़ने वालों के लिए जो अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं। वे जो दिखलावा करते हैं। और मामूली ज़रूरत की चीज़ें भी नहीं देते। (1-7)

सूरह-108. अल-कौसर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हमने तुम्हें कौसर दे दिया। पस अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ो और क़ुर्बानी करो। बेशक तुम्हारा दुश्मन ही बेनाम व निशान है। (1-3)

सूरह-109. अल-काफ़िरून

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि ऐ मुंकिरो, मैं उनकी इबादत नहीं करूंगा जिनकी इबादत तुम करते हो। और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूं। और मैं उनकी इबादत करने वाला नहीं जिनकी इबादत तुमने की

है। और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूं। तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन (धर्म) और मेरे लिए मेरा दीन। (1-6)

सूरह-110. अन-नस्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब अल्लाह की मदद आ जाए और फ़तह। और तुम देखो कि लोग ख़ुदा के दीन में दाख़िल हो रहे हैं फ़ौज दर फ़ौज। तो अपने रब की तस्बीह (गुणगान) करो उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ और उससे बख़्शिश (क्षमा) मांगो, बेशक वह माफ़ करने वाला है। (1-3)

सूरह-111. अल-मसद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अबू लहब के हाथ टूट जाएं और वह बर्बाद हो जाए। न उसका माल उसके काम आया और न वह जो उसने कमाया। वह अनक़रीब भड़कती आग में पड़ेगा। और उसकी बीवी भी जो ईंधन लिए फिरती है सर पर। उसकी गर्दन में रस्सी है बटी हुई। (1-5)

सूरह-112. अल-इख़्लास

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो वह अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है। न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद। और कोई उसके बराबर का नहीं। (1-4)

सूरह-113. अल-फ़लक़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो, मैं पनाह मांगता हूं सुबह के रब की। हर चीज़ के शर (बुराई) से जो उसने पैदा की। और तारीकी (अंधकार) के शर से जबकि वह छा जाए।

और गिरहों (गांठों) में फूंक मारने वालों के शर से और हासिद (ईर्यालु) के शर से जबकि वह हसद करे। (1-5)

सूरह-114. अन-नास

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो, मैं पनाह मांगता हूं लोगों के रब की, लोगों के बादशाह की, लोगों के माबूद (पूज्य) की। उसके शर (बुराई) से जो वसवसा डाले और छुप जाए। जो लोगों के दिलों में वसवसा डालता है, जिन्न में से और इंसान में से। (1-6)

क़ुरआन अल्लाह की तरफ से उतारी हुई एक दावती किताब है। अल्लाह ने पैग़म्बर मुहम्मद (स.) को सातवीं सदी ईस्वी में अपना नुमाइंदा बनाकर खड़ा किया और आपको अपने पैग़ाम के संदेशवाहन पर नियुक्त किया। पैग़म्बर मुहम्मद (स.) ने अपने माहौल में यह काम शुरू किया। इसी के साथ क़ुरआन का थोड़ा-थोड़ा हिस्सा ज़रूरत के मुताबिक़, पैग़म्बर के ऊपर उतरता रहा, यहाँ तक कि 23 वर्ष में ख़ुदा की तरफ़ से पैग़म्बर के ऊपर पूरा क़ुरआन उतार दिया गया।

क़ुरआन ख़ुदाई नेमतों का अबदी ख़ज़ाना है। क़ुरआन ख़ुदा का परिचय है। क़ुरआन बंदे और ख़ुदा का मिलन-स्थल है।

Scan the QR Code to download the Quran in Hindi

ISBN 978-81-7898-992-1

www.goodwordquran.com www.cpsglobal.org